।। चोर्यासी वैष्णवकी वार्ता ।।

।। श्री हरिः ।।

।। श्रीकृष्णाय नमः श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः ।।

।। चौरासी वैष्णवनकी वार्ता ।।

१-दामोदरदास हरसानीजी

अब चौरासी वैष्णवनकी वार्ता श्रीगोकुलनाथजी प्रकट किये ताकौ भाव श्रीहरिरायजी कहत हैं सो लिख्यते

श्रीहरिरायजी कृत भावप्रकाश : चौरासी वैष्णवनकौ कारन यह है, जो दैवी जीव चौरासी लक्ष योनिमें परे हैं, तिनमें तें निकासिवेके अर्थ चौरासी वैष्णव किये. सो जीव चौरासी प्रकारके हैं. राजसी, तामसी, सात्विकी, निर्गुण. ये चार प्रकारके (भूतलमें) गिरे तामें तें गुणमय राजसी, तामसी, सात्विकी रहन दिये, सो श्रीगुसांईजी उद्धार करेंगे.

श्रीआचार्यजी बिना श्रीगोवर्द्धनधर रहि न सके, तातें अपने अन्तरंगी निर्गुण पक्षवारे चौरासी वैष्णव (प्रकट) किये. सो एक - एक लक्ष योनिमें तें एक - एक वैष्णव निर्गुण वारेको उद्धार (इन) वैष्णवन द्वारा किये.

और रसशास्त्रमें रसादिक बिहारके आसन चौरासी वर्णन किये हैं. सो न्यारे - न्यारे अङ्गके भावरूप ये चौरासी वैष्णव रसलीला सम्बन्धी निर्गुण हैं,

श्रीठाकुरजीके अङ्गरूप. तातें शास्त्र रीति सों आसन चौरासी या भाव सों अलौकिक हैं.

और श्रीआचार्यजीके अङ्ग द्वादस हैं. सो स्वरूपात्मक हैं एक - एक अङ्गमें सात - सात धर्म हैं ऐश्वर्य, वीर्य, यश, श्री, ज्ञान, वैराग्य ये छह धर्म, एक धर्मी सातमो. या प्रकार बारह सत्ते चौरासी वैष्णव, श्रीआचार्यजीके अङ्ग रूप अलौकिक सर्व सामर्थ्य रूप हैं.

और साक्षात् पूर्ण पुरूषोत्तमकी लीला चौरासी कोस ब्रजमें है. सो एक - एक जीवकों अङ्गीकार करि, दैवी जीव जो चौरासी लक्ष योनिमें गिरे हैं, तिनकौ उद्धार करि, चौरासी कोस ब्रजमें जो जीव (जा) लीला सम्बन्धी है, तिनकों तहां प्राप्त करिवेके अर्थ चौरासी वैष्णव अलौकिक प्रकट किये.

इह भाव तें चौरासी वैष्णव श्रीआचार्यजीके हैं.

सो एक दिन श्रीगोकुलनाथजी चौरासी वैष्णवनकी वार्ता करत कल्याणभटट आदि वैष्णवनके सङ्ग रसमग्न होइ गये, सो श्रीसुबोधिनीजीकी कथा कहन की सुधि नाहीं, सो अर्द्ध रात्रि होइ गई. तब एक वैष्णवने श्रीगोकुलनाथजीसों बिनती करी, जो महाराजाधिराज आज कथा कब कहोगे ? अर्धरात्रि गई तब श्रीमुखतें श्रीगोकुलनाथजीने कही, (जो) आज कथाको फल कहत हैं. वैष्णवकी वार्तामें सगरो फल जानियो. वैष्णव उपरान्त और कछु पदारथ नाहीं है. यह पुष्टिमार्ग है सो वैष्णव द्वारा फलित होयगो. श्रीआचार्यजी हू यही कहते, जो दमला ! तेरे लिये मार्ग प्रकट कियो है. तातें वैष्णवकी वार्ता है सो सर्वोपरि जानियो. या प्रकार चौरासी वैष्णव श्रीआचार्यजीके निर्गुण पक्षके मुखिया जाननें.

अब रहे राजसी, तामसी, सात्विकी, गुणमय तिनके उद्धारार्थ श्रीगुसांईजीने चौरासी वैष्णव राजसी किये, चौरासी वैष्णव तामसी किये (और) चौरासी वैष्णव सात्विकी किये ये तीनों जूथ मिलिके दोयसौ बावन श्रीगुसांईजीके अङ्ग सम्बन्धी हैं.

या प्रकार श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजीके सेवकनको भाव कहे.

अब श्रीआचार्यजीके चौरासी वैष्णवन की वार्तान् में गूढ़ आसय श्रीगोकुलनाथजी कहे हैं, तहां श्रीहरिरायजी कछुक भाव प्रकट करत हैं, पुष्टिमार्गीय वैष्णवनके जनाइवेके अर्थ.

अब प्रथम सेवक सो श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके दामोदरदास, जिनकों श्रीआचार्यजी 'दमला' कहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं.

भावप्रकाश : श्रीआचार्यजी महाप्रभु दामोदरदासकों 'दमला' कहते. सो याते, जो दमला सो 'अमला', मल करि कै रहति. तहां यह सन्देह होय, जो साधरण वैष्णवमें मल नाहीं, तो दामोदरदासके दरसनतें इनके नाम लियेतें पाप जाय तो इनको नाम दमला सो अमला कहे, ताको प्रयोजन कहा ? यह सन्देह होय तहां कहत हैं जो यह भक्तिमारगमें श्रीठाकुरजीमें प्रीति होइ तहां तांई अमल है. जब श्रीठाकुरजीतें अधिक श्रीआचार्यजीमें प्रीति होय तब तासों अमला कहिये दामोदरदासको एक दृढ़ भाव श्रीआचार्यजीमें है क्यों जो दामोदरदासकी गोदिमें माथो धरि कै श्रीआचार्यजी पोढें हते, सो गोवर्द्धनधर साक्षात् पधारे तब बरजे ''निकट मति आवो, महाप्रभुजी जागेंगे'' ऐसो दृढ भाव है, जो उठि कै श्रीठाकुरजीको दंडोत हू न किये.

ओर श्रीगुसांईजी पूछे, जो श्रीठाकुरजीसों बडे क्यों कहे ? तब दामोदरदासने कही, जो दान बडोके दाता बडो ? दाता जहां चाहे तहां दान चल्यो जाय जहां चाहे तहा दाता दानकूं राखे यह भाव दृढ़ है तातें श्रीआचार्यजी 'दमला' कहते. जो कोई प्रकारसों अन्य सन्बम्धकौ गन्ध हू नाही है ताते अमला है.

और इनकौ नाम दामोदरदास याते हैं, जो 'पुरूषोत्तम सहस्त्रनाम' में श्रीआचार्यजी कहे हैं, 'दामोदरो भक्तवश्यो' और श्रीसुबोधिनीजीमें विस्तार करिके लिखे हैं जो पुरूषोत्तम साक्षात् भक्तनके बस दिखाये. सो अपनो बन्धन छोडि न सके और जसोदाजीकों ब्रजभक्तनको स्वरूप दिखाये. जसोदाजी इतने भक्त हैं, जो श्रीठाकुरजीकों बान्धे सो उन भक्तनकी सम्मति देखिकै बन्धाने, जो दाम ब्रजभक्त लाये हैं परन्तु जसोदाजीको बन्धन छुडायवेकी सामर्थ नाहीं है ताते यमलार्जुन वृक्ष गिरे, तब सोर भयो, तब ब्रजभक्तनने दाम छोरे हैं तातें श्रीठाकुरजीसों जसोदाजी बडे, श्रीदामोदरजीसों ब्रजभक्त बडे सो भक्तवत्सलता प्रकट

करी.

तैंसे ही दामोदरदासको नाम करि, दामोदर जो अनन्य भक्त हैं तिनके बस श्रीआचार्यजी हैं तातें कहते, ''दमला ! यह मार्ग तेरे लिये प्रकट कियो हैं'' तामें यह आयो, जो और भक्त बहोत हैं परन्तु तेरे मैं बस हों, यह जताये.

और दामोदरदासको अलौकिक स्वरूप है सो ललिताजीको प्राकट्य है उहां सिगरी रहस्यलीलामें श्रीस्वामिनीजीकी आज्ञाकारी जैसे ललिताजी, तैसे ही इहां आचार्यजीकी आज्ञाकारिनी ललितारूप दामोदरदास जो जनम ही तें बाल ब्रह्मचारी सखी रूप, गृहस्थाश्रमकों जानत नाहीं

सो ललिताजीको भाव यह कीर्तनमें जाननो -

राग केदारो

हंसि हंसि दूध पीवत नाथ ।
मधुर कोमल बचन कहि कहि, प्रानप्यारी साथ ।।१।।

कनक कटोरा भर्यो अमृत, दियो ललिता हाथ।
लाडिली अचवाय पहले, पाछें आप अघात ।।२।।

चिंतामनि चित्त वस्यो सजनी, निरखि पिय मुसिकात ।
स्यामा स्याम की नवल छवि परि, 'रसिक' बलि बलि जात ।।३।।

याको यह भाव है, जो दोऊ स्वरूप रतन खचित सज्या ऊपर बिराजे हैं, तहां ललिताजी कनक कटोरामें दूध ओटीके मिश्री सुगन्ध डारी लेआई तब ललिताजीने बिचार कियो, जो दोऊ स्वरूप बिराजे हैं ताते पहले मैं श्रीस्वामिनीजीके हाथमें दउंगी तो श्रीठाकुरजीकों पान कराय कै पान करेगी तहां मनोरथ सिद्ध न होयगो तातें श्रीठाकुरजीके हाथमें दऊंगी तब पहले पान श्रीस्वामिनीजी करेगी तातें दूधको कटोरा श्रीठाकुरजीके हाथमें दियो तब ''लाडिली अचवाय पहलें पाछें आप अघात'' काहेतें उनके हाथ सों वे आरोगे उनके हाथ सों चिंतामनि रूप श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजीके हृदयमें वे आरोगे ताते श्रीस्वामिनीजीके पान किये तें श्रीठाकुरजी तृप्त होत हैं या प्रकार ललिताजीको प्रीति चातुर्य देखिकैं श्रीठाकुरजी मुसिकाने यह नवल छवि दूध पान करिवेके समयकी शोभा ऊपर मैं श्रीहरिरायजी बलिहारी जात हों

या प्रकार कौ भाव दामोदरदासको श्रीआचार्यजी महाप्रभुनमें है तातें न्यारी श्रीठाकुरजीकी सेवा नाहीं पधराई श्रीआचार्यजी महाप्रभु ठाकुर हैं यह 'मानसी सा परामता' मानसी सेवाके अधिकारी हैं लीला रसमें मगन रहत हैं

वार्ताप्रसङ्ग १ : पाछें एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप ब्रजमें पांउधारे तब दामोदरदास साथ हे श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप दामोदरदासकों दमला कहते और कहते, जो ''दमला ! यह मार्ग तेरे लिये प्रकट कियो है''

सो श्रीगोकुलमें चोंतरा एक गोविन्दघाट ऊपर हतो, सो ता ठोर छोंकरके नीचे श्रीआचार्यजी आप विश्राम करते ताके पास श्रीद्वारिकानाथजीको मन्दिर है तहां श्रीआचार्यजीकों चिन्ता उपजी क्यों जो श्रीठाकुरजीने आज्ञा दीनी है, जो जीवनकों ब्रह्मसम्बन्ध करवाओ तातें श्रीआचार्यजीने बिचारयो, जो जीव तो दोष सहित हैं, और श्रीपूर्णपुरुषोत्तम तो गुण निधान हैं, ऐसे सम्बन्ध कैसे होय ? तातें चिन्ता उपजी, सो अत्यन्त आतुर भये.

ता समें श्रीठाकुरजी तत्काल प्रकट होइके श्रीआचार्यजीसों पूछी, जो तुम चिन्तातुर क्यों हो ? तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप कहे, जो जीवको स्वरूप तो तुम जानत ही हो, दोषवन्त है जो तुमसों जीवनको सम्बन्ध कैसे होय ? तब श्रीठाकुरजी कहें, जो ''तुम (जा)

जीवकों नाम देउगे तिनके सकल दोष निवृत्त होइंगे, तातें तुम जीवनकों अङ्गीकार करो.''

भावप्रकाश : जीवनके उद्धाररिवेकी चिन्ता भी ताको कारन यह जो उत्तम वस्तुकों अङ्गीकार कराइ सुख लेय, प्रीतमकों मध्यम वस्तु दोष सहित जीव कैसे अङ्गीकार कराइये ? यह मारगकी रीति है.

तथा जगतमें महात्मी जीव हैं, जो आप ब्रह्मसम्बन्ध करावें तो लोकमें जीवकों दृढ़ विश्वास होइ एक कों होय तातें श्रीठाकुरजीके श्रीमुखतें ब्रह्मसम्बन्धकी आज्ञा कराये तामें जीवनकों दृढ़ विश्वास कराये, जो श्रीआचार्यजीकों वचन दिये हैं, जाको ब्रह्मसम्बन्ध होइगो ताकों न छोडेंगे यह महात्म्य तें जीव ब्रह्मसम्बन्ध करेगे, तातें श्रीठाकुरजी सों कहवाये

ये बातें श्रावण सुदि एकादसीके दिन मध्यरात्रकों भई प्रातःकाल पवित्रा द्वादसी हती तातें पवित्रा सूतको सिद्ध करि राख्यो हतो, सो पवित्रा धराये ता समेके अक्षर हैं, ताको श्रीआचार्यजीने 'सिध्दान्त - रहस्य' ग्रन्थ कियो है.

ता समें दामोदरदास नेक दूरि सोये हते तातें दामोदरदास सों श्रीआचार्यजीने पूछी, जो दमला ! तें कछु सुन्यो ? तब दामोदरदासने कह्यो, जो महाराज मैंने श्रीठाकुरजीके बचन सुनै तो सही परि समुझ्यो नाहीं.

तब श्रीआचार्यजी आप कहे, जो मोकों श्रीठाकुरजीने आज्ञा कीनी है, जो तुम जीवनको ब्रह्मसम्बन्ध करवा, तिनकों हों अङ्गीकार करूंगो और जिनकों तुम नाम देउगे तिनके सकल दोष निवृत्त होइंगे, तातें ब्रह्मसम्बन्ध अवश्य करनो.

भावप्रकाश : दामोदरदासने कही, जो मैंने श्रीठाकुरजीके बचन सुने परि समुझ्यो नाहीं ताको कारन यह जताये, जो एकादशाध्यायमें भगवदगीतामें श्रीठाकुरजीके बचन हैं, जो अपुने पढ़िकै समुझो चाहे सो समुझे न जाय, जब गुरु कृपा करें तब समुझो जाय. तातें श्रीठाकुरजीके कहेतें दामोदरदास समुझे

तब श्रीठाकुरजीके सेवक भये. तातें दामोदरदास तो श्रीआचार्यजीके सेवक हैं, जब श्रीआचार्यजी समुझावें तब ही समुझे.

यह कहि यह जताये, जो हृदयमें दृढ़ ज्ञान गुरुकी कृपा ही तें होय स्वामी - सेवक भाव प्रकट दिखाये. जो दामोदरदास समुझे तो श्रीआचार्यजीकी बराबरी ज्ञान कह्यो जाई, तातें कहे मैं समुझ्यो नाहीं. अथवा कहे, जो मैं समुझ्यो नाहीं, सो मेरे समुझिवेको कहा प्रयोजन हैं ? आप कहें ताके समुझिवेको प्रयोजन मोकों हैं.

और कथा कहत में श्रीआचार्यजी दामोदरदास सों कहते, जो दमला ! बड़ी बार भई हैं, श्रीठाकुरजीकी वार्ता नाहीं करी.

भावप्रकाश : ताकों तात्पर्य यह है, जो श्रीठाकुरजीकी वार्ता आपु श्रीस्वामिनीरूप दामोदरदास ललिता सखीरूप सों नाहीं करी. ललिता सो एकांत रहस्य वार्ता श्रीठाकुरजीके मिलनको प्रसङ्ग प्रथम जा प्रकार लीला करी है सो नाहीं करी. सो करनकेलिये सबनके आगे ऐसे कहते, कथा कहत समय, जो ठाकुरजीकी वार्ता नाहीं करी.

वार्ताप्रसङ्ग २ : और श्रीआचार्यजीने श्रीठाकुरजीकी पास तीन बार यह मांग्यो, जो मेरे आगे दामोदरदासकी देह न छूटे. ताको हेतु यह है, जो श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप सन्यास ग्रहण करिवेको विचार मनमें करे. ता समे श्रीगोपीनाथजी तथा श्रीगुंसाईजी दोऊ भाई बालक हते. तातें मारगकी वार्ता श्रीआचार्यजी महाप्रभु दामोदरदासकों समझाइके थापी. दामोदरदाससों कछु गोप्य न राख्यो.

और श्रीआचार्यजी श्रीभागवत् अहर्निस देखते, कथा कहते और दामोदरदास सुनते. और मारगको सब सिद्धान्त भगवल्लीला - रहस्य श्रीआचार्यजीने दामोदरदासके हृदय विषे स्थाप्यो.

दामोदरदासके हृदय विषे मारग स्थापि कितेक दिन पाछे श्रीआचार्यजी आप सन्यास ग्रहण किये. तब कितेक दिन पाछे श्रीगुसांईजीने

श्रीअक्काजीसों पूछी, जो श्रीआचार्यजीने मार्ग प्रगट कियो है सो उत्सवको कहा प्रकार है ? हम तो कछु जानत नाहीं. तब अक्काजीने कह्यो जो मार्ग तथा उत्सवको प्रकार सब दामोदरदास सों कह्यो है, सो उनसों तुम पूछो तुमसों दामोदरदास सब कहेंगे.

तब श्रीगुसांईजी दामोदरदासके घर पधारे. तब दामोदरदासने बहुत सन्मान करि भक्तिभावसों घरमें पधराये. ता पाछे श्रीगुसांईजीने उत्सवके प्रकार पूछे, सो सब दामोदरदासने कहे.

भावप्रकाश : यामें सन्देह बहोत हैं, जो श्रीआचार्यजी ''कर्तुम्, अकर्तुम् अन्यथाकर्तुम्'', सर्वसामर्थ्ययुक्त हैं सो श्रीठाकुरजी ग्रास क्यों मांगे ?

ताको अभिप्राय यह है, जो दामोदरदासकों प्रेमलक्षणा भक्ति दृढ़ होय चुकी है और ललिताजीको स्वरूप है. सो श्रींठाकुरजीकों परम प्रिय हैं. ललिताजी मध्या हैं, दोउ स्वरूपकी सेवामें मगन हैं. सों इनकों श्रीआचार्यजीके दर्शन और श्रीठाकुरजीके दर्शन दोउ में भाव हैं. जाते श्रीआचार्यजी श्रीठाकुरजी सों कहे, जो मैं दामोदरदासकों जैसे नित्य अनुभव करावत हों तैसे तुमहू नित्य अपने स्वरूपको अनुभव कराइयो. यह कहिके यह जताये, जों दामोदरदास पर अत्यन्त प्रीति श्रीआचार्यजीकी हैं. तातें जाने, जो मति कहूं मेरे पाछें दमला कोई बात सों दुःख पावे, तातें श्रीठाकुरजीसों कहे.

और मार्ग दामोदरदासके हृदयमें स्थापन किये सो श्रीगुसांईजीकेलिये. ताको तात्पर्य यह है, जो यद्यपि श्रीगुसांईजी ईश्वर हैं, बालक हैं, तो कहा भयो ? परन्तु श्रीआचार्यजी महाप्रभु अपनो भक्तिमार्ग दामोदरदासके हृदयमें स्थापन करतें आपु श्रीमुखतें कहते, ''यह मार्ग दमला तेरे लिये प्रगट कियो है''. तातें वैष्णवके हृदयमें स्थापन करें तो आगे वैष्णवनमें फैली जो श्रीगुसांईजीके हृदय प्रथम धर्म रहे, तो गोकुलमें ही धर्म रहतो. गोकुलमें तो पहले ही सों शेष - अशेष माहात्म्य धारण किये हैं. काहेतें, बिन्दु सृष्टि है और वैष्णव सो तो नादसृष्टि है. तोतें इनकों तो भक्ति दियेतें होइ. यातें गोपालदास गाये हैं -

भक्तिमारगीय जीव स्वतन्तर केवल भक्त न थाय ।

तातें भक्तिमार्गीय जीव स्वतन्त्र है, दैवी, परन्तु केवल आप तें भक्ति न बढ़े. तातें श्रीआचार्यजी 'नवरत्न' में कहे हैं, जो -

निवेदनं तु स्मर्तव्यं सर्वथा तादृशैर्जनैः ।

या प्रकार भक्तनके हृदयमें राखें, तातें भक्तिमार्ग प्रगट भयो. नहीं तो ईश्वरमार्ग कहावतो (तहां) केवल ईश्वरमार्ग कहावे, भक्तिमार्गमें ईश्वर मार्ग हू कहावे. जहां भक्ति तहां भगवान्, जहां भक्ति नाहीं तहां भक्तिमार्गकी रीति सों भगवान् न रहें, अन्तरयामी ह्वे रहें. तातें भक्तनको उत्कर्ष जामें होइसो भक्तिमार्ग कहावे.

वार्ताप्रसङ्ग ३ : बहुरि एक समय दामोदरदास और श्रीगुसांईजी एकांतमें बैठे हते. तब श्रीगुसांईजी दामोदरदाससों पूछे. जो तुम श्रीआचार्यजीकों कहा करिके जानत हो ? तब दामोदरदासने कह्यो, जो हम तो श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकों जगदीस सों संसारमें सब कोऊ कहत हैं जो सबतें बड़े जगदीस श्रीठाकुरजी हैं, तिनतें अधिक करि जानत हैं. तब श्रीगुसांईजी दामोदरदाससों कहे, जो तुम ऐसे क्यों कहत हो. जो श्रीठाकुरजी तो बड़े हैं ? तब दामोदरदासने श्रीगुसांईजीसों कह्यो, ''जो महाराज ! दान बड़ोके दाता बड़ो ?'' काहूके पास धन बहोत है तो कहा करे? देई ताको जानिये. और श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको सर्वस्व धन श्रीनाथजी हैं. सो हम जैसे जीवनकों आपु दान कियो है. तातें हम श्रीआचार्यजीकों सर्व ते बड़े करि जानत हैं.

वार्ताप्रसङ्ग ४ : बहुरी एक समय श्रीगुसांईजी बैठकमें बैठे हते. द्वै - चार वैष्णव कुम्भनदास, गोविन्ददास आदि एकान्त हसिवे खेलिवेके लिये पास बैठे हते. आपु उनसों हंसत खेलत मसकरी करत बहोत ही प्रसन्नतामें खेलकी वार्ता करत हते. ता समैं दामोदरदास तहां आये. तब श्रीगुसांईजी बहोत आदर सन्मान किये पाछै दामोदरदास तहां आयके दण्डवत् करिके बैठे. तब श्रीगुसांईजीसों दामोदरदासने कह्यो, ''जो महाराज ! अपनो मारग निश्चिन्तताको नही. यह मार्ग है सो तो अत्यन्त कष्ट आतुरताको है, दुःखको है''. तब श्रीगुसांईजी कहे, ''जो तुम धन्य हो साञ्ची कहत हो परि हमको जब श्रीआचार्यजीकी कृपा होइगी तब कष्ट आतुरता होइगी. यह मार्ग तो

श्रीआचार्यजीके अनुग्रह बिना न होई''.

तब दामोदरदास दण्डवत् किये और कहें, जो हमकों राजसों एक बेर बिनती करनी सो करी. पाछे आप प्रभु हो, भली जानोगेसो करोगे. परि यह मारग तो या भान्तिको है. तब श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये और कहैं, जो हमकों यह वार्ता श्रीआचार्यजी महाप्रभु तुम द्वारा कहे. जो तुम न कहोगे तो और कौन कहेगो ? तुमकों देखत हैं तब चित्त अति प्रसन्न होत है, तातें सुखेन कहो. आप सारिखे श्रीआचार्यजीके सेवक जानिके कहत हैं. पाछें दामोदरदासकी शिक्षा अङ्गीकारि करत भये. तातें बड़े सो बड़े.

भावप्रकाश : यह लोकरीतिसों विरूद्ध है जो सेवक स्वामीसों सिक्षा करें यह सन्देह होय तहां कहत हैं, दामोदरदास ललितारूप हैं सो श्रीचन्द्रावलीजीकों (गुसांईजीकों) परकीया रसभाव है परकीयारसमें प्रीति बहोत हैं, अष्टप्रहर चित्त प्यारेसों लग्यो रहत है सो जारभावको प्रकार दिखाये जो औरके सङ्ग हांसी कैसी ?

तथा दामोदरदासकी देह मात्र दीसत है, परन्तु श्रीआचार्यजीको आवेस अष्ट प्रहर रहत है. जो मुखसों श्रीआचार्यजी बोलत हैं तातें श्रीगुसांईजी कहत हैं, जो हमकों यह वार्ता श्रीआचार्यजी महाप्रभु तुम द्वारा कहे.

वार्ताप्रसङ्ग ५ : और एक दिन दामोदरदासके पिताको श्राद्धदिन हतो. ता दिन श्रीगुसांईजी तहां पधारे. वाके पिताको श्राद्ध करवायो. पाछें उत्थापनके समें दामोदरदास दरसनकों आये. तब श्रीगुसासईजीने कही, जो मोकों श्राद्धकी दक्षिणा देउ. तब दामोदरदासने कही, जो दक्षिणामें एक बात कहूंगो. सो 'सिद्धान्तरहस्य' के डेढ़ श्लोकको व्याख्यान कहे यह ऐसी बात है. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो आगे कहो तब दामोदरदासने कही, जो मैंने तो इतनो सङ्कल्प कियो है. तब श्रीगुसांईजी चुप करि रहें. पाछें दामोदरदासने मारगकी प्रणालिका कही. श्रीभागवतकी टीका श्रीसुबोधिनीजी, श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके ग्रन्थनकी टीका और रहस्यवार्ता श्रीगुसांईजीकी आगे सब कहें.

ता पाछें श्रीगुसांईजी दामोदरदासकों नमस्कार करन न देते. यातें, जो श्रीगुसांईजी अपने मनमें यों विचारे, जो श्रीआचार्यजी महाप्रभु दामोदरदासके हृदे विषे (सदा) सर्वदा बसत हैं. तो इन पास क्यों नमस्कार करन दीजे ? यातें नमस्कार न करन देते. और दामोदरदासकों श्रीगुसांईजी अपनो चरणोदक हू न देते.

पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनने दामोदरदासकों दरसन दीनो और आज्ञा दीनी, जो तू श्रीगुसांईजीको चरणोदक नित्य लीजियो. तब प्रातःकाल दामोदरदास श्रीगुसांईजीके पास आये. चरणोदक मांग्यो. तब श्रीगुसांईजीने चरणोदककी नाहीं कीनी. तब दामोदरदासने श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो मोकों श्रीआचार्यजीकी आज्ञा भई है और श्रीआचार्यजीको दरसन भयो है. और कह्यो है, जो चरणोदक लीजियो. तब श्रीगुसांईजीने चरणोदक दीनो.

भावप्रकाश : श्राद्ध करायवेको अभिप्राय यह (है) जो दामोदरदासके पितरनको उद्धार तो होइ चुक्यो. जब ए भक्तमें (है). मर्यादामारगमें नृसिंहजीने प्रह्लाद सो कह्यो है. एकीस पुरषा भक्तके तरे. सो दामोदरदास तो पुष्टिमार्गीय है. तातें इनके पितर तरे यामें कहा सन्देह है ? परन्तु पुष्टिमार्गके सम्बन्ध बिना पुष्टिमार्गमें अङ्गीकार न होई. तातें श्रीगुसाईजीको सम्बन्ध श्राद्ध द्वारा पाय पुष्टिमार्गमें अङ्गीकार भयो. जो दामोदरदासके श्राद्ध तें पुष्टिमार्गमें अङ्गीकार होई. परन्तु गुरुकी अपेक्षा है. गुरु बिना अङ्गीकारमें दृढ अङ्गीकार नाहीं. तातें श्रीगुसांईजीको सम्बन्ध कराये.

तहां यह सन्देह होय, जो दामोदरदासकों श्राद्ध कराये. इनके पितरनको पुष्टिको सम्बन्ध भयो. और भगवदीयको नाहीं कराये. सो उनके पितरनको कैसें होयगो ? यह सन्देह होय तहां कहत हैं. यह पुष्टिमार्गीय दैवी जीवके आधिदैविक (मूलभूत) दामोदरदास हैं. जहां इनके पितरनको पुष्टि सम्बन्ध भयो तब सगरे पुष्टिमार्गीयके पितरनको पुष्टि सम्बन्ध भयो. जैसे मारग, दामोदरदासके पितरनको पुष्टि सम्बन्ध (भयो) ऐसे मारग दामोदरदासकेलिये. तामें सगरे पुष्टिमारगके (जीवनके)लिये. या प्रकार मूलमें भक्तिता करिके सबमें फेले. या प्रकार दामोदरदासकी भक्ति करिके जीवमें भक्ति बढ़ी हैं. जीवको सामर्थ्य नाहीं है जो पुष्टिमारगकी भक्ति एक छिन करि सके.

और दक्षिणामें दामोदरदासने 'सिद्धान्तरहस्य' के डेढ़ श्लोकको व्याख्यान कियो. तब श्रीगुसांईजी कहें आगे कहो. तब दामोदरदासने कही, जो मैंने तो इतनो (ही) सङ्कल्प कियो है. ताको कारन यह है, जो सत्य सङ्कल्प (तो) इतने ही में सगरो मारग है.

श्रीगुंसाईजी चरणोदक दामोदरदासकों न देते, दण्डोत् करन न देते. सो यातें, जो श्रीस्वामिनीजीको अनन्य सखी है. उनहीकों करे. तातें दामोदरदासने हठ नाहीं कियो. चरणोदक न लियो. तातें श्रीआचार्यजी(ने) दामोदरदासकों समझायो. जो तू श्रीगुसांईजीको चरणोदक लीजियो, दण्डोत् करियो. मैं श्रीगुसांईजीके हृदयमें बिराजत हूं. मेरो स्वरूप मोतें प्रगट हैं. तब दामोदरदास श्रीगुसांईजीसों यह भेद कहें. तब श्रीगुसांइजी कहे, लेहू. प्रसन्न होइके चरणोदक दिये. जाने, जो श्रीआचार्यजीके भावतें लेत हैं. मेरे भाव तें नाहीं.

याही तें श्रीगोपीनाथजी (श्रीआचार्यजीके बड़े पुत्र) यद्यपि श्रीगुसांइजीके बड़े भाई हैं. परन्तु काहू वैष्णवने चरणोदक नाहीं लियो. या भाव तें श्रीगुसाईजीके सात बालक और वल्लभकुलके चरणोदकमें श्रीआचार्यजीको भाव जनायो. तातें चरणोदक लेनो. दण्डोत् करनो. यह सिद्धान्त जनायो.

वार्ताप्रसङ्ग ६ : और दामोदरदासकों श्रीआचार्यजी तीसरे दिन दरसन देते. मारगकी रहस्यवर्ता कहते. ऐसी कृपा करते. और कदाचित तीसरे दिन दरसन न होतो तो ता दिन दामोदरदासके पेटमें पीड़ा बहुत होती, अत्यन्त कष्ट पावते. और पाछे दरसन होतो तब तत्काल कष्ट निवर्त्त होई जातो. ऐसी भान्ति केतेक वर्ष पर्यन्त श्रीआचार्यजी दरसन दीनो, ऐसी कृपा करते. जो बात होती सो सब दामोदरदास श्रीगुसांईजीकी आगे कहते. और मारगके प्रकार (प्रकाश ?)की वार्ता अहर्निस करते. श्रीगुसांईजी दामोदरदासकी ऊपर बहोत कृपा करते और कहते, जो दामोदरदासके हृदयमें श्रीआचार्यजी महाप्रभु सदा बिराजे हैं.

भावप्रकाश : दामोदरदासकों तीसरे दिन श्रीआचार्यजी दरसन देतें. ताको हेतु यह जो तीन दिन लों दरसनको आवेस तामें मगन रहते. तीसरे दिन सरीरकी सुधि होती. सो विरह कष्ट होतो. सो दरसन करि फेरि स्वरूपानन्दमें मगन होई जातें.

वार्ताप्रसङ्ग ७ : और पहले दामोदरदास श्रीगुसांईजीकी आधी गादी दाबिके बैठते. सो एक दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभुने देख्यो. तब श्रीआचार्यजीने दामोदरदाससों पूछी, जो दमला ! तू श्रीगुसांईजीकों कहा करिके जानत है ? तब दामोदरदासने कही, जो महाराज हों तो इनकों तुमारे पुत्र करिकें जानत हूं. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु दामोदरदाससों कहें, जो जैसें तू मोकों जानत है. तैसे इनको स्वरूप जानियो.

वार्ताप्रसङ्ग ८ : एक समें श्रीगुसांईजी बैठे हे. तब दामोदरदासने कही महाराज ! अपनो मारग निसङ्गताको नाहीं. रूप प्रकट कर्ता (है). (और कहीं, जो) एक समें श्रीमहाप्रभुजी पौढ़े हते. तब श्रीगोवर्द्धनजी आप कहे, जो जीवको उद्धार करो. लीलाकर्त्ता अवलम्बन, सुद्धि करता उद्दीपनभाव, या प्रकार डेढ़ श्लोक कहे -

श्रावणस्यामले पक्षे एकादश्यां महानिशि ।
साक्षात् भगवता प्रोक्तं तदक्षरश उच्यते ।।१।।
ब्रह्मसम्बन्धकरणात् सर्वेषां देहजीवयोः ।

यह डेढ़ श्लोक में सब आयो.

भावप्रकाश : सो (अभिप्राय) कहत हैं. श्रावण महिनाके पति भगवान् हैं. एक अमल जो उजयारो पक्ष भक्तजननको हैं. तिन एकादशिको दिन प्रभुनको है. एकादश्याम्. एकादस इन्द्रियकी सुद्धि भक्तजननकों करायवेकों. महानिशि, जो अर्द्धरात्रि, रासलीलामें साक्षात् भगवान् (भक्तन) सों निसङ्क होई रहस्यवार्ता करत हैं लीलामें, तेसे ही श्रीआचार्यजीसों बोले. सगरे अक्षर कहत हैं. यहां तांई श्रीआचार्यजी ऊपर भाव. श्रीगोवर्द्धननाथजी अब कहें. ब्रह्मसम्बन्ध करावो. सबकों देह जीवकों. तातें (दामोदरदासने श्रीगुसांईजी सों कह्यो) जो भक्ति - मारगके विस्तारकी आज्ञा हैं, सो तुम करो. अज्ञान जीव हैं. याही

ब्रह्मसम्बन्धतें दोष जांइगे अङ्गीकार कराये. एक श्लोकमें लीला. आधे श्लोकमें मारगकी रीति. सब इनमें आयो. या प्रकार श्रीगुसांईजीसों दामोदरदासने कह्यो.

और ता पाछे दामोदरदासकी सहायतासों आपने 'शृङ्गाररसमण्डन' ग्रन्थ कियो.

वार्ताप्रसङ्ग ९ : और प्रथम श्रीआचार्यजी महाप्रभु दामोदरदाससों कह्यो, जो यह मारग तेरे लिये प्रगट कियो हैं. जो जहां लगि श्रीआचार्यजीके मारगकी स्थिति है तहां तांई दामोदरदासकी (भी) मारगमें स्थिति गोप्य है.

और दामोदरदासने कह्यो, जो मैंने श्रीठाकुरजीके बचन सुने परि समुझ्यो नहीं. ता समें श्रीआचार्यजीने कह्यो अज हू, दस जन्मको अन्तराय है.

भावप्रकाश : ताको हेतु यह, जो जब लगि श्रीआचार्यजी महाप्रभुके मारगकी स्थिती है तब लगि दामोदरदासको प्रागट्य फेरि - फेरि हैं. (गोप्य रीति सों) मारगको स्तम्भ यातें हैं, जो श्रीआचार्यजीने दामोदरदासके हृदयमें भगवदलीला स्थापी. सो सम्पूर्ण सृष्टिके उद्धारके निमित्त. दामोदरदासके जनम दसलों मारगकी स्थिति है, जैसे बल्लभकुलको प्रागट्य है. तेसें हि भक्ति दृढ करनेकेलिए दामोदरदासको हू अनेक वैष्णवनमें प्रागट्य है.

वार्ताप्रसङ्ग १० : एक समें श्रीआचार्यजी 'सुन्दर' सिलाके पास (जाकों 'पूजनी' सिला कहें तहां छोंकरके नीचे श्रीआचार्यजीकी बैठक है तहां) दामोदरदासकी गोदीमें मस्तक धरि आप पौढ़े हे. ता समय श्रीगोवर्द्धननाथजी मन्दिरतें श्रीआचार्यजीके पास पधारे. तब दामोदरदासने सेनहीमें श्रीगोवर्द्धननाथजीसों कह्यो जो तुम अबहि यहां मति आवो. तुम चञ्चलहो (तातें) श्रीआचार्यजी जागि उठेंगे. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी ठाड़े होय रहे. तब श्रीआचार्यजी जागि उठे. कहे, बाबा ! उहां क्यों ठाड़े होय रहे हो ? पास पधारो. तब श्रीगोवर्द्धनधर पास आय श्रीआचार्यजीसों कहे. जो तुम्हारो सेवक(ने) मोकुं बरज्यो, जो यहां मति आवो. श्रीआचार्यजी जागि उठेंगे. तातें मैं दूरि ठाढ़ो रह्यो. तब श्रीआचार्यजी दामोदरदास उपर खीजने लागें. जो तैं श्रीगोवर्द्धननाथजीकों क्यों बरजे ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहें इनसों क्यों

खीजत हो ? इननें अपनो धर्म राख्यो. इनकों ऐसेहि चाहियें. तब श्रीआचार्यजी श्रीगोवर्द्धनधरकों गोदिमें बैठाय कपोल परस करि कहैं, बाबा, कछू आज्ञा करो. तब श्रगोवर्द्धनधर कहें. मोकों गाय बहुत प्रिय हैं. तब श्रीआचार्यजी सदूपाण्डेकों बुलाय वेदकर्म करिवेकी पवित्री हती सो दे कहे, याके दाम करि श्रीगोवर्द्धननाथजीकों गाय ल्याय देउ.

२-कृष्णदास मेघन

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके सेवक कृष्णदास मेघन क्षत्री, सोरोंमें रहते, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : सो कृष्णदास विसाखा सखी तें प्रगटे हैं. विसाखाजी श्रीस्वामिनीजीकी छायारूप है. जैसे छाया सरीरकें सङ्ग लागी डोले तैसें विसाखाजी श्रीस्वामिनीजीके सङ्ग रहते हैं. ताही प्रकारसों कृष्णदास हू श्रीआचार्यजीके सङ्ग रहत हैं. कृष्णदासमें ऐश्वर्यको आवेश बहोत है. सो आगे (वार्तामें) वरनन करत हैं.

वार्ताप्रसङ्ग १ : श्रीआचार्यजी महाप्रभुनें पृथ्वी परिक्रमा करी. तीनों बेर कृष्णदास सङ्ग रहे. प्रथम परिक्रमामें बदरीनारायनके 'परली' ओर 'किरणी' नाम पर्वत हैं, तहांते एक बड़ी शिला गिरी. सो कृष्णदास मेघनने हाथसों थाम्भी. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप बहुत प्रसन्न भये. सो अलौकिक फल देते. परन्तु परीक्षा देखन अर्थ कृष्णदाससों कह्यो, जो तु मांगि कहा मांगत है ? तब कृष्णदास तीन वस्तु मांगे. १ - मारगको सिद्धान्त हृदयारूढ होइ. २ - मुखरता दोष जाई. ३ - मेरे गुरुके घर पधारो और उनकों अङ्गिकार करो. तामें दोइ वस्तु दीनी. गुरुके घर पधारिवेकी नाहीं कीनी.

भावप्रकाश : यह पहलेको गुरुभाव हृदयमें हतो सो बाहिर प्रकटयो. तातें अलौकिक दान श्रीआचार्यजीने छिपाय लियो. दो वस्तु दिये. गुरुकी नाहीं किये. सो दैवी न हतो. दैवी बिना एतन्मारगमें अङ्गीकार नाहीं. या प्रकार दो वस्तु दिये. परन्तु और को गुरुभाव रहे. तातें मारगको अनुभव हू न भयो.

मुखरता दोष हू न गयो. प्रथम सामर्थ्य तें कछुक सामर्थ्य हू घटी.

वार्ताप्रसङ्ग २ : बहुरू श्रीआचार्यजी श्रीबदरिकाश्रम तें आगें व्यासजीकी गुफामें पधारे. सो तहां जीवकी गम्य नाहीं. तातें कृष्णदाससों श्रीआचार्यजीने कह्यो, जो ठाडो रहियो. (सो) जब श्रीआचार्यजी आगेकों पधारे. तब वेदव्यासजी सामें ही आये. सो श्रीआचार्यजीकों पधारिके अपने धाम ले गये. पाछें वेदव्यासजीने श्रीआचार्यजीसों कह्यो. जो तुमने श्रीभागवतकी टीका करी है सो मोकों सुनावो. तब श्रीआचार्यजी 'युगलगीत'के अध्यायको एक श्लोक कहे, सो श्लोक -

वामबाहुकृतबामकपोलो वल्गितभ्रूरधरार्पितवेणुम्.
कोमलाङ्गुलीभिराश्रितमार्गं गोप्य ईरयति यत्र मुकुन्दः ।।१।।

या श्लोकको व्याख्यान कियो, सो तीन दिनमें सम्पूर्ण भयो. तब वेदव्यासजीने कह्यौ, जो मैं यह व्याख्यानकी अवधारना नाहीं करि सकत, तातें अब क्षमां करो. पाछें श्रीआचार्यजी कह्यौ, जो तुम वेदान्तके ऐसे सूत्र कहा किये, जो मायावाद पर अर्थ लग्यो. तब व्यासजीने कह्यो, जो मैं कहा करूं? मोकूं आज्ञा ही एसी हती. जो ऐसे करियो. जामें दोइ अर्थ प्राप्त होइ. तब श्रीआचार्यजीने कह्यो, जो हमने तो ब्रह्मवाद पर अर्थ कियो है, सो सुनायो सो सुनके वेदव्यासजी बहोत प्रसन्न भये. ता पाछें वेदव्यासजी सों विदा होइके श्रीआचार्यजी तीसरे दिन पधारे. तब कृष्णदासकों ठाडो देखी प्रसन्न भये. कहे, ''तू ठाडो है. तू गयौ नाहीं. सो काहेते?'' तब कृष्णदासने कह्यो, ''जो महाराज! हौं कहां जाउं. मोकों तुमारे चरणारविन्द बिना कछू और आश्रय नहीं है''. तब यह सुनिके श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप बहुत प्रसन्न भये. और कह्यो, जो मांगि. तब फेरि वेई तीनि वस्तु मांगी. तामें दोई तो दीनी गुरुके घरकी नाहीं कीनी.

भावप्रकाश : औरको गुरुभव हतो. तातें प्रथमतें कछुक सामर्थ्य हू घटी. सो व्यासजीकी गुफामें श्रीआचार्यजी कृष्णदाससो सङ्ग नहि ले गये. सो यातें 'युगलगीत' को प्रसङ्ग कहनो हैं. ताकी धारना अब ही कृष्णदाससों होईगी नाहीं. व्यासजीसों हूं धारना ना भई. सो यातें व्यासजी कला अवतार ह-.

पुरूषोत्तमकी बानी भावरूपकी धारना कैसें होइ ? यह श्रीभागवत् व्यासजीमें श्रीपुरूषोत्तम आप विराजकें कहि गये. व्यासजी द्वारा मात्र हैं. श्रीभागवतके रसको अनुभव नाहि है. सो रहस्य हरजीवनदासने या पदमें कह्यो है.

राग केदारो

जोंलो हरि आपुनपों न जनावें ।
तोंलों वेद पुरान स्मृति सब पढे सुनें नहिं आवें ।।१।।

सुनि विरञ्चि नारायण मुखसों नारदसों कहि दीनो ।
नारद कहि वेदव्याससों आप सोध नहि कीनो ।।२।।

वेदव्यास औषधकी नांई पढि तन ताप नसायो ।
तिनतें पढे मुनि सुकदेवा परिक्षितकों जु सुनायो ।।३।।

जदपि नृपति सुनि ब्रजकी लीला दसम कही सुकदेवा ।
तोऊ सर्वात्मभाव न उपज्यो तातें करी न सेवा ।।४।।

श्रीभागवत अमृत दधि मथिके श्रीवल्लभ सर्वोत्तम ।
करि आवरन दूरी निजजनके हाथ दिये पुरूषोत्तम ।।५।।

सेवा अरु शृङ्गार विविध रस श्रीवल्लभ प्रगटायो ।

करि कृपा निज दैवी जीवन पर हरिजीवन स्वाद चखायो ।।६।।

या प्रकार श्रीआचार्यजीकी कृपा तें रसकी प्राप्तिकी है.

वार्ताप्रसङ्ग ३ : बहूरि एक समय श्रीआचार्यजी गङ्गासागर पधारे. तहां श्रीआचार्यजी आप पौढे हते. और कृष्णदास पांव दाबत हते. तब श्रीआचार्यजी आप मनमें बिचारे, जो धानके मुरमुरा होइ तो आरोगें. तब यह बात श्रीआचार्यजीके मनकी कृष्णदास मेघनने जानी. सो इतनेमें श्रीआचार्यजीको निद्रा आई. तब कृष्णदास उठिकें गङ्गासागर उपर आये. तब देखे तो पार एक दीया बरत है. ताकी अटकर तें पेरिकें गङ्गाजीके पार गये. तहां एक गांव हतो. तहां खेतमें तें गीलों धान कटवायो. टकाकी जगे द्वै टका देके मुरमुरा सिद्ध करवाये. पाछे कृष्णदास श्रीगङ्गाजीमें पैरिकें श्रीआचार्यजीके पास आये. तब श्रीआचार्यजीके चरणारविन्द दाबिकें जगाये. मुरमुरा आगे राखे. कह्यो, ''जो महाराज आरोगो''. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुननें पूछी, ''जो तू कहांतें लायो ?'' तब कृष्णदास सब वृतान्त कह्यो. तब श्रीआचार्यजी प्रसन्न होई कहें, जो कछु मांगि. तब बेई तीन वस्तु मांगी. तब श्रीआचार्यजीने कह्यो, ''जो जीव कहा मांगि जानें ? या समें जो मांगतो सोई देतो. जो कहेतो तो श्रीठाकुरजीको स्वरूप दिखावतो''.

पाछे श्रीआचार्यजी आप सोरों पधारे. तब कृष्णदासने बिनती करिकें कह्यो, जो मेरे गुरुकों ले आउं ? तब श्रीआचार्यजीनें कह्यो, जो तू खेद पावेगो. पाछे कृष्णदास इकेलेई गुरुके इहां गये. सो जब गुरुने कृष्णदासकों देख्यो तब कह्यो, जो तेनें और गुरु किये ? तब कृष्णदासनें कह्यो, जो मैंने तो और गुरु नाहीं किये. मेरे गुरु तो आप ही हो. परि तुम्हारे प्रताप तें मैंने पूर्ण पुरूषोतम पाये है. तब वाने कह्यो, जो पूर्ण पुरूषोतम कैसें जानिये ? तब गुरुके आगे अग्निकी अंगीठी धकधाकात हती. तामेंते कृष्णदासने दो हाथकी अंजुली भरिके अंगार हाथमें लिये और कहैं, जो श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप पूर्ण पूरूषोतम होइ तो मेरे हाथ मति जरियो. और, जो अन्यथा होई तो मेरे हाथ जरि करि भस्म होइ जैयो. सो एक मुहूर्त लो अग्निमें राखी. तब उन गुरुने भय खाई. तब कह्योके डारि दे. पाछें उन गुरुने कृष्णदासके हाथ पकरिके अपने हाथसों अग्नि डारि दीनी. तब कृष्णदास तहांते खेद पाइके उठि आये.

यह प्रसङ्ग सब वल्लभाष्टककी टीकामें श्रीगोकुलनाथजीने विस्तार पूर्वकर कह्यो है.

भावप्रकाश : सो गङ्गासागरके तीर पधारे. सो रात्रिकों पोढे हते. सो अर्धरात्रिकों मुरमुराकी मनमें आईजो भोग धरिये. सो कृष्णदास पर कृपा करनकेलिये. काहेतें, पुरूषोतमको कछू वस्तुकी अपेक्षा होइ नाहीं. कदाचित होई तो काहूके ऊपर कृपा करनके अर्थ. सो कृष्णदासकों जनाई. तब कृष्णदास तैरिके पार जाय ले आये. यह ईश्वरकार्य है. जीवसों न होइ. तब कृष्णदास चरन दाबिके जनाये (जगाये) तब श्रीआचार्यजी आप आरोगिके बहोत प्रसन्न भये. तब कहे मांगि. पाछे वही तीन वस्तु मांगे.

तब श्रीआचार्यजी कहे, जीव कहा मांगे ? जीवको मांगनो ही बाधक है. तातें परमानन्ददासने गायो है -

मांगे सर्वस्व जात हैं परमानन्द भाखे ।

और गुरुको भाव चित्तमें हतो. ता करि महाप्रभुके वचनको विश्वास न भयो. जरा एकबार दियेसो द्दढ हैं. फेरि कहा मांगनो ? और मारगकी दुर्लभता दिखाये. श्रीमहाप्रभुजीके मनकी बात मुरमुराकी जाने परन्तु मारग हृदयारूढ कृपा ही तें होइ. दोषको स्वरूप है, जो मुखरता दोष, जीवको स्वभाव हू जीवके हाथ नाहीं. जब श्रीआचार्यजी छोडावें तब ही छूटे. तातें श्रीआचार्यजी बिना औरमें ईश्वरबुद्धि तथा गुरुबुद्धि करे ताकों एतन्मारगको फल कबहू सिद्ध न होइ. यह भाव जताये. पाछें कृष्णदास गुरुके यहांसूं दुःख पाय, अन्याश्रय छोडि महाप्रभुके पास आये. तब मारगको सिद्धान्त हृदयारूढ भयो और मुखरता दोष हू गयो. तातें फेरी श्रीआचार्यजीसों नाही मांग्यो. अन्याश्रय एसो बाधक है.

वार्ताप्रसङ्ग ४ : बहुरि मार्ग हृदयारूढ भये पाछे कदाचित् गोप्य वार्ता होइ सो सबनके आगे कहें. तब काहू वैष्णवने श्रीआचार्यजीसों कही, ''जो महाराज ! कृष्णदास गोप्य वार्ता सबनके आगे कहत है''. तब श्रीआचार्यजीने कृष्णदाससों पूछी, ''जो तू गोप्य वार्ता सबनके

आगे क्यों कहत है ?'' तब कृष्णदासने कह्यो, ''जो महाराज ! आप उनहींसो पूछीये, जो मैंने कहा कह्यो है ?'' तब उन वैष्णवसों श्रीआचार्यजीने पूछी, ''जो तुमसों इन कृष्णदासने कहा वार्ता कही ?'' तब उन वैष्णवनें कह्यौ, ''जो महाराज ! हमकों तो कछु सुधि रही नाहीं''. तब श्रीआचार्यजी मुसिकाईके चुप करि रहे.

भावप्रकाश : मारग ह्रदयारूढ भयो. सो रसके भरते रह्यो न जाई. सो रहस्यवार्ता वैष्णवसों करे. तामें यह जताये, कृष्णदास अपुने अनुभव करन अर्थ कहते. परन्तु पात्र बिना रस ठेरे नाहीं. (तातें वैष्णवने कही, कछु सुधि रही नाहीं). और कृष्णदासकी कछू दामोदरदासतें उतरती दसा. जो कहे बिना रह्यो न जातो. यह दोऊ भाव जताये.

वार्ताप्रसङ्ग ५ : और एक समें श्रीआचार्यजीसों कृष्णदासने प्रश्न पूछ्यो, जो महाराज ! श्रीठाकुरजीकों प्रिय वस्तु कहा है ? ताको प्रतिउत्तर श्रीआचार्यजी कहत हैं, जो श्रीठाकुरजी उत्तमतें उत्तम वस्तुको भोक्ता हैं. परन्तु गोरस अति प्रिय है. गोरस शब्देन वाणी कहियत है. ताको भाव अनिर्वचनीय है. और सबनतें भक्तको स्नेहमय प्रभाव अतिप्रिय है. जातें भक्तवत्सल कहवावत हैं.

तब कृष्णदासने फेर पूछी, जो श्रीठाकुरजीकों अप्रिय वस्तु कहा है ? तब श्रीआचार्यजीनें कह्यो. जो श्रीठाकुरजीकों धुंआ समान अप्रिय और नाहीं है. ताहूतें अप्रिय श्रीठाकुरजीकों भक्तको द्वेषी है.

भावप्रकाश : गोरस सो वैष्णवको स्नेह परस्पर और वैष्णवको क्लेश सो धुंआ. जहां स्नेह तहां श्रीठाकुरजी पधारे जानिये. जहां क्लेश तहांतें श्रीठाकुरजी दूरि जानिये.

फेरी कृष्णदासने प्रश्न पूछ्यो, जो महाराज ! श्रीरघुनाथजी सम्पूर्ण सृष्टिकों लेके स्वधाम पधारे और राजा दशरथकों स्वर्ग दियो. सो काहेते ? ताको प्रतिउत्तर श्रीआचार्यजी कहे, जो श्रीरघुनाथजी तो परमदयाल हैं. तातें स्वर्ग दीनो नान्तर स्वर्गकी (हू) योग्यता राजा

दशरथकों न हती. काहेते, जो अपनो वचन सत्य करिवेकों श्रीरामचन्द्रजीकों बनवास पठाये. ऐसो कर्म कियो.

भावप्रकाश : यह प्रश्न हीनाधिकारीको है, काहेते साक्षात् पुरुषोत्तमकी लीला तें मन बाहर करि यह प्रश्न कहा ? यामें यह जतायो. (कृष्णदासकों अब ही ''मानसी सा परा मता'' यह फल नाहीं भयो. तब कृष्णदासके समाधानके अर्थ आप कहे, जो रामचन्द्रजी दयाल हैं.

यह कहि अपने मारगको सिद्धान्त जताये. जो अपने हठधर्म करि धर्मी, जो श्रीठाकुरजी तिनकों श्रम करावेतो हीन फल धर्मको स्वर्ग ही मिले. श्रीठाकुरजीको फल न मिले.

वार्ताप्रसङ्ग ६ : और एक समे श्रीआचार्यजीसों कृष्णदासनें फेर प्रश्न पूछ्यो, जो भक्त होइके श्रीठाकुरजीकी लीलाको भेद नाहीं जानत सो काहेतें ? तब श्रीआचार्यजीने कह्यो, जो ये विधि पूर्वक समर्पन ज्यों कह्यो है त्यों नाहीं करत.

विधि, सो समर्पन पदार्थको ज्ञान नाहीं. अहन्ता - ममता अपनी सत्ता अहङ्कारको समर्पन. जो अब दास भयो. प्रभु आधीन हों. प्रभु करेंसो सर्वोपर सिद्धान्त है. यह भेद अपनेमें नाहीं. और अपनी योग्यता मानी भगवदीयको सङ्ग नाहीं करत है. तातें योग्यता मांने तब प्रभु अप्रसन्न होई जात है. यह मारग दैन्यको है. सो दैन्य नाहीं है. इत्यादिक अन्तरायतें अपनो स्वरूप और भगवदीयको स्वरूप, श्रीठाकुरजीको स्वरूप नाहीं जानत है. और भगवद्भक्तको सङ्ग करेतो श्रीठाकुरजीकी लीलाको भेद जाने. सो तो योग्यता समज नाहीं करत है. और जो कछू करत है सो अन्तःकरण पूर्वक नाहीं करत है. तातें श्रीठाकुरजीको स्वरूप और लीलाको भेद नाहीं जानत है.

उत्तम भक्तको सङ्ग करे. श्रीभागवत् श्रीसुबोधिनीजी आदि ग्रन्थको अहर्निस अवगाहन करे. तब भगवद्भाव उत्पन्न होई. श्रीठाकुरजी व्रजभक्तन बिषे सदैव रहत हैं. तहां सेवा करिके बन्धे हैं. तहां एतन्मार्गीय वैष्णव ताके हृदयमें श्रीठाकुरजी बिराजत हैं. ताको सङ्ग करनो. तहां गजनधावन आदि वैष्णवको दृष्टान्त दीनों. जिन - जिनने भावपूर्वक सेवा करी तिन - तिनके सकल मदोरथ सिद्ध भये. जातें

लीलास्थ ब्रजभक्तनके भावको विचार करनो.

जो वैष्णव श्रीठाकुरजीको स्वरूप जानत है. तिनको स्वरूप अलौकिक दृष्टिसों जान्यो जाय. जो आज्ञा होइ सो जाने. जो वैष्णव श्रीठाकुरजीकों जानत है, सो जो कछू काज करत है सो श्रीठाकुरजीके अर्थ करत हैं, और श्रीठाकुरजी विषे विरह ताप भाव करत हैं. अपुने स्वदोषको विचार करत हैं. (ऐसेजीव) अपुने स्वरूप विचारे, जो हों कौन हों ? पहले कहा हतो. भगवद सम्बन्ध किये तें हों कौन हो गयो ? अब मोकों कहा कर्तव्य ? रात्रिदिवस ऐसे विचार करत रहे तब अपनो स्वरूप जानो. ये प्रागटय श्रीब्रजभक्तनके अर्थ है. तातें उतम सङ्ग होइ तो एतन्मार्गीय ठाकुरकों जाने. और शास्त्र पुरान अनेक इतिहास हैं. तातें ब्रजराजके घर प्रगटेसो स्वरूप जान्यो न जाय. ये ठाकुर तो तब ही जाने जाय जब भगवद्भक्तको सङ्ग करे. सेवाको प्रकार एतन्मार्गीय वैष्णव जानत हैं. तिनसों मिलि, भाव पूछिके सेवा करनी. तब भगवद्भाव उत्पन्न होइ. श्रीठाकुरजीकी लीलाको सब भेद जाने.

वार्ताप्रसङ्ग ७ : और एक समें श्रीआचार्यजी श्रीबद्रीनाथजीके मन्दिर पांउधारे. तब वेदव्यासजी साथ हे. तब श्रीआचार्यजी वेदव्यासजीसों पूछी, जो भ्रमरगीतके अध्यायमें उद्धवकों ब्रजभक्त पास पठाये. ता प्रसङ्ग में आधो श्लोक घटत है. तब वेदव्यासजी ने अर्द्धश्लोक कह्यो, सो श्लोक -

आत्मत्वाद्भक्तवश्यत्वात्सत्यवाक्तवात्स्वभावत:

सो याकी टीका श्रीआचार्यजीनें पहले ही कीनी ही. सो सुनिके वेदव्यासजी कहै, जो तुम धन्य हो. ता पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीबद्रीनाथजीके मन्दिरमें पधारे. ता दिन वामनद्वादसी हती. ता दिन श्रीआचार्यजी व्रत करते. सो फलाहार व्यासजी हू ढूढें. और कृष्णदास हू ढूढें. परन्तु मिल्यो नाहीं. तब बद्रीनाथजीने श्राआचार्यजीसों कह्यो. जो मैंने फलाहारको सर्वत्र खोज कियो. परि पावत नाहीं. ताते तुम रसोई करिके श्रीठाकुरजीकों भोग समर्पिके भोजन करो. तब श्रीआचार्यजी विचारे, जो श्रीठाकुरजीकी इच्छा ऐसी ही दीसत है. इतनेमें

कृष्णदासने आइके कह्यो, जो महाराज ! इहां कछु फलाहार पाइयत नाहीं. तब वेदव्यासजी द्वारा श्राठाकुरजीने कही, जो सामग्री करि भोजन करो. ''उत्सवान्ते च पारणा'' यहू वचन है. ता पाछे श्रीआचार्यजी आपु रसोई करिके श्रीठाकुरजीकों भोग समर्पिके आप भोजन कियो.

पाछें ता दिनतें वामनद्वादसीके दिना व्रत न करते. पाछे श्रीआचार्यजी श्रीबद्रीनाथजी तें विदा होइके कृष्णदासकों साथ लैकें पधारे.

भावप्रकाश : फलहार ना मिल्यो. ताको प्रयोजन यह, जो श्रीआचार्यजी चाहें सो सबहि मिले. व्यासजी कृष्णदास सारिखे ढूंढनहारे. सो फलाहार यातें न मिल्यो, जो श्रीआचार्यजीके मनमें सामग्री उत्सवकी करनी. ऊपर तें मर्यादा राखिकेलिये फलाहार की कही. सो फलाहार न मिल्यो. तातें वेदव्यासजी द्वारा श्रीठाकुरजीने कहवाई.

तातें श्रीगुसांईजीने सात लालजीनमें, बडे घर (प्रथम पुत्र गिरिधरजीके घर)यह रीति राखी. उपवास और ठौर ''उत्सवान्ते च पारणा'' श्रीठाकुरजी सब सामग्री अरोगे.

वार्ताप्रसङ्ग ८ : (पाछें) श्रीआचार्यजीने जब आसुरव्यामोह लीला करी, तब कृष्णदास ने हू विप्रयोग करि देहको त्याग कियो. .....वार्ता ।।२।।

३-दामोदरदास सम्भलवारे

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके सेवक दामोदरदास सम्भलवारे खत्री कन्नोजके वासी, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : दामोदरदासकों बालपनें तें विरह हतो, जो श्रीठाकुरजीकी प्राप्ति कौन प्रकारसों होई ? सो दामोदरदास एक समय प्रयागमें आये हते मकर स्नानकों. सो कृष्णदाससों लाप भयो. तब चर्चा करत कृष्णदास (मेघन) ने कही, श्रीवल्लभाचार्यजी प्रकट भये हैं. सो दक्षिणमें पधारे हैं. कृष्णदेव राजाके समीप मायावाद खण्डन किये हैं. उनकी कृपा तें निश्चय श्रीठाकुरजी मिलेंगे. मेरे गुरुसों नेह है तिनसों कछू कार्य मेरो भयो नाहीं तातें अब मैं जहां श्रीआचार्यजी होइंगे तहां जाऊंगो. यह दामोदरदाससों कहिकें कृष्णदास दक्षिण देस गये.

जब तें दामोदरदासके पास तें कृष्णदास मेघन श्रीआचार्यजीके पास गये. तबतें दामोदरदासकों विरह बहोत रहे. जो मोकों श्रीआचार्यजी कौन प्रकार मिलेंगे ? या प्रकार विरह करत महा महीनामें मकरस्नान दामोदरदास किये. सो महा सुदी १५ कों दामोदरदास मकरस्नान करत हते. ता समय एक ताम्बेको पत्र गङ्गा - यमुनाके सङ्गम मेंते दामोदरदासके हाथ हायो. सो दामोदरदास घर लाये. जब रात्रिकों दामोदरदास सोये. तब दामोदरदासकों स्वप्न भयो. यह पत्र बांचे ताकी तू सरन जैयो. तब सबारे उठिके प्रयागमें बडे - बडे पण्डित ब्राह्मण महापुरूष मकरस्नानकों आये हते. तिन सबनको बंचायो. कोई बांचि न सके. तब दामोदरदास कासीमें शेठ पुरूषोतमदासके यहां व्यौहार हतो. (तहां गये) खरचकी हूण्डी शेठ पुरूषोतमदासके यहां ले गये हते. तिनसों सगरी बात दामोदरदास ने कही, जो यह पत्र श्रीआचार्यजी बांचेंगे. और काहूकी सामर्थ्य नाहीं. मोसों कृष्णदास मेघन कहि गये हैं. जो श्रीआचार्यजीकी सरन तें श्रीठाकुरजी मिलेंगे. (सो) यह सुनिके शेठ पुरूषोतमदासकों चटपटी लागी, जो मोकों कब श्रीआचार्यजीको दरसन होइगो ? सो शेठ पुरूषोतमकी वार्ताके भावमें वर्णन करेगें. या प्रकार दामोदरदास दिन १५ कासी रहे. परन्तु पत्र कोऊ न बांच्यो. तब कनोजमें अपने घर आये. एसे विरह करत कछूक महिनामें श्रीआचार्यजी महाप्रभु कनोज पधारे. तब गामके बाहर बागमें उतरे.

वार्ताप्रसङ्ग १ : जब श्रीआचार्यजी कन्नोज पधारे तहां गामके बाहिर एक बाग हतो तहां आप उतरे और कृष्णदासकों गाममें पठायो. जो सीधो सामग्री ले आउ. परि काहूसों कहियो मति. जो श्रीआचार्यजी आप पधारे हैं.

भावप्रकाश : यह कहे ताको अभिप्राय यह है, जो दामोदरदास कृष्णदासकों मिलेगो सो दामोदरदाससों पहिले आपहि कहे, जो श्रीआचार्यजी पधारे हैं. सो दामोदरदास द्रव्यपात्र है. तातें इनके बुलायवेकी अपेक्षा यह मनमें आवेतो कृष्णदासको बिगार होइ. सो ताते बरजि दिय, जो काहूसों कहियो मति.

प्रीति होइगी तो आपु ही आवेगो. यह अभिप्राय जाननो.

और दूसरो अभिप्राय यह है, जो जा दिन श्रीआचार्यजी कन्नोज पधारे तातें पहेलेई श्रीआचार्यजी आपकों (श्रीठाकुरजीकी) आज्ञा भी हती. जो यहांके (कन्नोजके) जीव पावन करने हैं तातें श्रीआचार्यजी आप बिचारे, जो आग्या भई है तो आप ही होइगो ताकेलिये नाहीं करी हती.

तब कृष्णदास गाममें गये. सीधो सामग्री सब लीनी. सो सब लेके चले. तहां दामोदरदास राजद्वार तें आवत हते. सो मारगमें जात कृष्णदासकों पहचानें. तब दामोदरदास घोडा तें उतरीके पास आये. तब दण्डवत् करिके कह्यो और पूछ्यो जो श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधारे हैं ? तब कृष्णदासने बिचार्यो तातें कछु उतर दियो नाहीं.

तब दामोदरदासने बिचार्यो, जो आचार्यजी बिना एकाहे कों आवे ? सो जब कृष्णदास चले तब दामोदरदास पाछे - पाछे आये. घोडा घर पठवाइ दियो.

तब कृष्णदासकों ओर दामोदरदासकों दूरिते आवत श्रीआचार्यश्रीने देखें. तब दामोदरदासने दण्डवत् किये. तब कृष्णदाससों श्रीआचार्यजीने पूछी, जो तेने वासों क्यों कह्यो ? तब इनने (कृष्णदासनें) कही. महाराज ! मैंने तो इनसों नाहीं कही. तब दामोदरदासनें श्रीआचार्यजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! इननें तो मोसों नाहीं कही. हो तो इनके पाछे चल्यो आयो हूं..

पाछे श्रीआचार्यजी(ने) दामरादरदाससों पूछी, जो पत्र पायो है सो लायो है ? तब दामोदरदासने बिनती कीनी, जो महाराज ! पत्र को कहा काम है ? तब श्रीआचार्यजी आप कही, जो तोकों आज्ञा भई है. जो पत्र बांचे ताकी सरन जैयो. तातें पत्र ल्याऊ. तब पत्र मंगवायो.

भावप्रकाश : श्रीआचार्यजीने कृष्णदाससों कह्यों, जो तेनें इनसौं क्यों कह्यो ? यह कहे ताको कारन यह जो 'तेने आज्ञा नांही' यह कह्यो तामें हमारे पधारनो तो कह्यो. तब दामोदरदासने कही, जो इनने नाहीं कह्यो. मैं इनके पाछे चल्यो आयो हूं. या प्रकार दैन्यता सिद्ध किये.

और दामोदरदासने कह्यो, पत्रको कहा काम है? यह कहि दामोदरदासने यह जतायो, जो आप ईश्वर हो. मोकों अनुभव भयो है. तब (श्रीआचार्यजी) कहे ल्याव, भगवद् आज्ञा होय तेसे हि करनो.

तब श्रीआचार्यजीने पत्र मंगवायो हतो सो बांच्यो. पाछें वाको अभिप्राय दामोदरदाससों कह्यो. पाछें दामोदरदासकों नाम सुनायो. पाछें श्रीआचार्यजीको दामोदरदासनें अपने घर पधराये. पाछें दामोदरदासकी स्त्री हू सरनि आई. तब दामोदरदासकों और उनकी स्त्रीकों समर्पन करवायो. एक लोण्डी दैवी जीव हती, सोउ सरन आई.

तब दामोदरदासने विनती करी, जो महाराज '! अब कहा आज्ञा होत हैं अब हम कहा करें ? तब श्रीआचार्यजी श्रीमुख तें आज्ञा किये, जो अब तुम सेवा करो. तब दामोदरदासनें कही, जो महाराज ! सेवा कौन प्रकार करे ? तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुने कही, जो कहूं श्रीठाकुरजीको स्वरूप होय सो देखो. सो एक दरजीके यहां श्रीठाकुरजीको स्वरूप हतो. ताकों द्रव्य देके स्वरूप अपने घर ले आये. पाछें घर सब पोते पात्र सब बदलाये. पाछे श्रीआचार्यजीने वा स्वरूपकों पञ्चामृत करवायो. श्रीद्वारकानाथजी नाम धर्यो.

भावप्रकाश : श्रीद्वारकानाथजी नाम यातें धर्यो, जो राजनीतिसो प्रथम सेवाको विस्तार दामोदरदासके माथे सोपे हैं.

पाछे सिंहासन पाट बैठाये. दामोदरदासके माथे सेवा पधरायके पाछें श्रीआचार्यजी आप रसोई करिके भोग समर्प्यो. समयानुसार भोग सरायो. तब बीडा समर्पन लागे. तब देखें तो पान हरे हैं. तब श्रीआचार्यजी दामोदरदाससों खीजके कहें, जो हरे पान श्रींठाकुरजीकों न समर्पिये. उतम तें उतम सामग्री होइसो श्रीठाकुरजीकों समर्पिये. श्रीठाकुरजी तो उतम तें उतम वस्तुके भोक्ता हैं. (तातें) उतम तें उतम

सामग्री होइसो श्रीठाकुरजीकों समर्पिये. ता पाछें स्त्री - पुरुष भली भान्तिसों सेवा करन लागे. सो श्रीद्वारकानाथजीकी सेवा भली भान्तिसों होन लागी. और श्रीआचार्यजीनें आज्ञा दीनी, जो उतर्यो परकालो (वस्त्रको थान) होय तामें ते श्रीठाकुरजीकों न समर्पिये. सारे परकालेंमें तें प्रथम श्रीठाकुरजीको लीजिये. और उतम सामग्री होइ तामें ते और ठौर न खरचिये. ता पाछे स्त्रीपुरूष नीकी भान्तिसों सेवा करन लागे.

और सेवा सामग्री ऐसी होती जो सोनेके कटोरामें अमरस राखते, सो ऐसो उच्यतातें सो और कोई न जानें, जो यामें कछु सामग्री धरी है. या भान्तिसों दामोदरदास सेवा करन लागे.

भावप्रकाश : पाछे वस्त्रादिककी रीति बताये. जो और कार्यमें कछु आयो होय तो (सो वस्तु) श्रीठाकुरजीके काम न आवें. जाके अर्थ उठे तिनकों प्रसादी कहावे. तातें पहले श्रीठाकुरजीकों सब सामग्रीमें ते लेनो. श्रीठाकुरजीकी सामग्रीमें ते अन्य ठौर खरच न करनो. या प्रकार पुष्टिमारगकी रीति सबकों बताये.

सामग्री पोरी सोनेके पात्रमें मिलि जाइ. उज्ज्वल सामग्री रूपेके पात्रमें मिलि जाइ. यह गूढ भाव जनाये. सोनेके मिष श्रीस्वामिनीजीके भाव तें, रूपेके मिष श्रीचन्द्रावलीजीके भावसों सेवा करते.

पाछें श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमाकों पधारे.

और दामोदरदास श्रीठाकुरजीको जल आप भरतें. सो एक दिन दामोदरदासको सुसर दामोदरदासके घर आइकें दामोदरदास सो कहन लागे, जो तुम जल भरि लावत हो, सो हमकों जातिमें लज्जा आवति है. तातें तुम मति भरो. लोण्डी पास जल भराओ.

तब दामोदरदास बिचारे, जो सूरदासजी गाय हैं. -

सूर भजन कलि केवल कीजे लज्जा का'न निवारी

और कीर्तनमें गाये हैं. -

कानन काहुकी मन धरिये व्रत अनन्य एक लहीए हो

यह विचारी स्त्रीसों कहे तुमहू जल लेंन चलो. तब दामोदरदासने दूसरे दिन एक घडा तो आप लियो, एक घडा स्त्रीके हाथमें दीनो. तब स्त्री भगवदीसो घडा(गागरी)ले ससुरके (दामोदरदासके)हाट आगे तें चले . तब दोऊ जने (फेर) बाकी हाटके नीचे होयके निकसे. तब जल लैके आये. तब पाछे दामोदरदासको ससुर आयो. सो आइके दामोदरदासके पाइन पर्यो. और कह्यो, जो मैं चूक्यो, जो तुमसों कह्यौ. अबतें तुम ही जल भरो, परि स्त्रीजन पास जल मति भरावो. आज पाछे हम कछू न कहेंगे. तब आपहि जल भरन लागे. श्रीठाकुरजी दामोदरदाससों सानुभावता जनावन लागे. जो कछु चाहिये सो दामोदरदास पास मांगि लेइ. बातें करे. सेवा करिके दामोदरदासने श्रीठाकुरजीकों ऐसे प्रसन्न किये. सो इनकी सेवा देखिके श्रीआचार्यजी बहोत प्रसन्न भये. तब आप अपने श्रीमुखतें कहें, जो जिन राजा अम्बरीष न देख्यो होइसो दामोदरदासकों देखो, राजा अम्बरीष तो मर्यादामार्गीय हुतो. और ये पुष्टिमार्गीय है. इनमें इतनी अधिकताई है.

भावप्रकाश : दामोदरदास जलकी सेवा श्रीयमुनाजीके भावतें करते. तातें श्रीआचार्यजी कहें. मर्यादामें अम्बरीष पुष्टिमें दामोदरदास राजसेवा किये. तब ततहरा रूपके, अम्बरीषकी उपमा कैसे जानियें ? जैसे श्रीठाकुरजीकी मुखकी उपमा चन्द्रमांकी. काहेतें ? कहां मर्यादा कहां पुष्टि ? कोटि गुनो तारतम्य जाननो.

जब दामोदरदासके सुसरने कही, स्त्रीसों जल मति भरावो. तब दामोदरदास कहे, जल न भरावेंगे. पाछे ससुर गयो. तब दामोदरदासनें बिचार्यो, जो जलकी सेवा(स्त्री जनसों) कराई. सो जो अब मैं छुडाऊं तो मोकों ससुरकीका'नको दोष परे. परन्तु एक बार बरजोंगो, प्रीति होइगी तो स्त्री आपुहि न छोडेगी. (यों बिचारके) जो एकबार भर्यो सो सौ बार भर्यो. अब गामके (लोग तो) जान चुके. अब मैं सेवा क्यो छोडों ? प्रीति होइगी तो या भांति (बिचारके) भरेगी. तातें मैं हठ करिके भराऊं तो प्रीति बिना श्रीठाकुरजी अङ्गीकार न करेंगे. तातें एकबार बरजों तो सही. तब (स्त्रीसों) कहें. अब मैं ही जल भरोंगो. तुम मति भरो. तिहारे पिताको लाज लागत है. तब स्त्रीनें कही तुमहि भरो. या प्रकार पिताकी कानको दोष भयो. सो आगें जायके अन्याश्रय भयो. जो दामोदरदास ससुरके आग्रह का'न तें जलकी सेवा छुडावते (छोडते ?) तो इनहूकों बाधक होतो. तासों फेर सेवा करन लागे.

वार्ताप्रसङ्ग २ : और एक समें उष्णकालके दिन हते. तब दामोदरदास श्रीठाकुरजीकों मन्दिरमें पधराइ पोढाइके आप चौबारे जाइ सोये. तब श्रीद्वारकानाथजीने लोण्डीकों आज्ञा दीनी, जो तू किंवाड खोले मोकों गरमी बोहोत होत है. तब लोण्डीने मन्दिरके किंवाड खोलि. तब श्रीद्वारकानाथजीने लोण्डीसों कह्यो, जो पंखा करि. तब लोण्डीने कियो. तब श्रीठाकुरजीने लोण्डीसों कह्यो, जो तू जा, रहन दे. तब लोण्डी किंवाड खुले छोडिके सोयवे गई. तब सवारो भयो. तब दामोदरदास देखे तो मन्दिरके किंवाड खुले हैं. तब पूछे, जो किंवाड कौन ने खोले हैं ? तब लोण्डीने दामोदरदाससों कह्यो, जो मोकूं श्रीठाकुरजीने आज्ञा दीनी, जो तू किंवाड खोलि. तब मैंने किंवाड खोले हैं. तब दामोदरदासने कही, जो मोसूं खोलिवेकी क्यों न कही ? आप खोले . फेर दामोदरदासके मनमें आई जो श्रीठाकुरजीने मोसों किंवाड खोलिवेकी क्यो न कही ? और लोण्डीसों क्यों कहैं ? पर प्रभु बडे दयाल हैं. जाके विषे स्नेह होइ, ताहीसों सम्भाषन करे. श्रीआचार्यजीके अङ्गीकारमें सब समान हैं. लौकिकमें कोऊ उञ्च - नीच कहियो.(परि) श्रीठाकुरजी स्नेहके बस हैं. पाछें श्रीठाकुरजीने दामोदरदाससों कह्यो, जो मैंने खुलाए हैं और इन (नें) खोले हैं. जो तू यासों क्यों खीजत हैं ? तूतो चौबारे जाय सोयो. और मोकों भीतर सुवायो. तब दामोदरदासनें कह्यौ, जौ प्रसाद तब लेहूं (जब) मन्दिर नयो समराऊं. तब स्त्रीनें कह्यो, जो ऐसे क्यों बने ? यह तो कछु पांच - सात दिनको तो काम नाहीं. तब दामोदरदासने कह्यो, जो सखडी महाप्रसाद तो नहीं लेऊंगो. फलाहार करूंगो. तब त्योंही करत मन्दिर सिद्ध भयो. तब आछो दिन देखिके श्रीद्वारकानाथजीकों मन्दिरमें बैठाये. तब बडो उत्सव कियो. पाछें सब

वैष्णवनकों महाप्रसाद लिवायो. ता पाछें आपु महाप्रसाद लियो.

भावप्रकाश : श्रीठाकुरजीने लोण्डीकी पास पंखा कराये, परि स्त्रीकों नाहिं जताये. सोउ जलकी सेवा छोडी, तातें इनकों न कहे. काहें तें ? पहले स्त्री जलकी सेवा न करती तो चिन्ता नाही. (सेवा) करिके छोरनो हतो तो दस - पांच दिन जल भरिकें. पाछें अपने मनते न भरते तो चिन्ता नाहीं. ससुरके कहतें छोडे, तातें श्रीठाकुरजी लोण्डीसों किंवाड खोलाय पंखाकी सेवा कराये.

और श्रीआचार्यजीकी यह आज्ञा हैं जहां तांइ पूरन स्नेहको प्रकार हृदयारूढ न होई तहां तांई सेवा (यथा देहे तथा देवे) अपनी देहकों सीत - उष्ण बिचारीकें करे. सो दामोदरदास चौबारें सोये. श्रीठाकुरजीकों बियारि आयवेको मारग न हतो. तातें मन्दिरकी रीति प्रकट कराईवेकेलिये श्रीठाकुरजीने लोण्डीसों किंवाड खुलाये. लोण्डीकों मानसी सेवाको अधिकार हतो. अष्ट प्रहर गोप्य रीतिसों मानसी करती. कोई जानतो नाहीं. तातें श्रीठाकुरजी उह लोण्डी सङ्ग उपर बहोत पसन्न हते.

जब दामोदरदास लोण्डी पर खीजे. सो श्रीठाकुरजी सहि न सके. जो मोकों प्रिय है ता पर खीजत है ? सो लोण्डीकी पक्ष श्रीठाकुरजीने करी. तथा दामोदरदासकों अपराध तें छोडाइवेकों बोले, जो मैंनें यासों खुलाए. तू क्यों खीजत है ? आज पाछें या पर प्रीति राखियो. याको स्वरूप अलौकिक जानियो. तू जाय चौबारे पर सोयो. मोकों वियारि आयवेकी ठौर नाहीं. चित्रा सखी होइ अपनी सेवा भूलि गयो ? मन्दिर संवारनो. तब दामोदरदास चौंकि परे, सो यह, जो अपने स्वरूपको अनुभव भयो. तब कहे मन्दिर बने तब खानपान करूं, यह टेक चित्राके आवेसमें कहे. पाछें कारीगर बुलाय काम लगायो. पाछें स्त्रीनें कही खानपान बिना कैसें चलेगो ? एक दिनको काम नाहीं है. तातें खानपान बिना रह्यो न जायगो. वह आवेस रहेतें, तब खानपान मति करियो. अब तो करो. तब कहे फलाहार लेऊंगो. या प्रकार मन्दिर संवराये. जारी, झरोखा, निजमन्दिर, तिबारी, चोक, टेरा, परदा, जैसें लीलासृष्टिमें करत हतें ताही भावसों सगरे मन्दिरकों व्योंत किये. मुहूरत देखि पधराये. बडो उत्सव (कियो) वैष्णवको समाधान श्रीआचार्यजीकी भेट काढे.

वार्ताप्रसङ्ग ३ : बहुरि एक दिन दामोदरदास श्रीठाकुरजीकों राजभोग समर्पि सैय्या मन्दिरमें सैय्या संवारन गये. तब देखेतो दुलीचा

उपर बिलाईने बिगाडयो है. तब दामोदरदासने कह्यो, जो श्रीठाकुरजीतो अपनी सैया हू राखि सकत नाहीं. ऐसें कह्यो, तब श्रीठाकुरजीने थार चौकी उपरसूं लात मारि डारि दीनों और दामोदरदाससो श्रीठाकुरजीनें कह्यो, जो सेवक तू के सेवक मैं ? सेवक होइके ऐसें बोलत है ? ऐसे बहुत खीजे. पाछें दामोदरदासनें बिनती कीनी ओर बहुत मनुहार करी. सब सामग्री सिद्ध करिके श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो. श्रीठाकुरजी अरोगे. परि तोहू दोय मास लों बोले नाहीं. पाछें बहोत बिनती करन लागे. तब बोलन लागे.

भावप्रकाश : श्रीठाकुरजीने राजभोगको थार लात मारिके डारि दियो. सो या भाव ते, जो श्रीआचार्यजीनें अब ही दासभावको अधिकार दियो है. और यह हांसी तो सख्य भावको अधिकार भयो होइ तब ही बने. ताते बिना श्रीआचार्यजीके दिये तू (तें) विशेष भाव कर्यो तातें तेरो धर्यो भोग नाहीं अङ्गीकार करूंगो. या प्रकार सिक्षा किये. तातें अधिकार बिना विशेष विचार किये वैष्णवको इतनो अन्तराय जताये, वैष्णवकों.

वार्ताप्रसङ्ग ४ : बहुरि एक समय दामोदरदास हरसानी इनके घर पाहुने आये. सों सम्भलवारेके घर दिन पांच सात रहे. तब इन बहुत भली भांतिसों समाधान कियो. पाछें दामोदरदास हरसानी इनसों बिदा होइके अडेल आये. तब श्रीआचार्यजी दामोदरदाससों पूछे, जो दमला ! तू कहां उतर्यो हो ? कहा प्रसाद लियो हो ? तब दामोदरदास हरसानीनें श्रीआचार्यजीसों बिनती करी, जो महाराज ! कन्नोजमें दामोदरदास सम्भलवारेके घर उतर्यो हो. अनसखडी महाप्रसाद लेतो. तब श्रीआचार्यजी दामोदरदास सम्भलवारे उपर अप्रसन्न भये और कहे, (मनमें विचारे जो) यह मेरो अन्तरङ्ग सेवक याकों सखडी महाप्रसाद क्यों न लिवायो ? यह बात श्रीआचार्यजीके मनकी दामोदरदास सम्भलवारेनें घर बेठे जानी. जो श्रीआचार्यजी महाप्रभु मेरे ऊपर अप्रसन्न भये हैं. तब स्त्रीसों कही, जो तू श्रीठाकुरजीकी सेवा नीकी भांतिसों करियो. और मैं तो श्रीआचार्यजीकें दरसनकों अडेल जात हों. तब दामोदरदास अडेलकों चले. सों अडेल जाइ पहोंचे. तब श्रीआचार्यजीके दरसन किये. साष्टाङ्ग दण्डवत् किये. तब श्रीआचार्यजी पीठ दे बेठे. तब दामोदरदास सम्भलवारे ने श्रीआचार्यजीसों विनती करिके कह्यो, जो महाराज ! मेरो अपराध कहा है ? और जीव तो अपराध करत ही आयो है. परि अपराध कर्यो जानिए तो भली बात है. तब श्रीआचार्यजीनें कह्यो, जो तेनें दामोदरदास हरसानीकों सखडी महाप्रसाद क्यों न लिवायो ? और अनसखडी प्रसाद क्यों लिवायो ? तब दामोदरदास सम्भलवारेनें श्रीआचार्यजीसों बिनती कीनी, जो महाराज दामोदरदाससों पूछिये ! तब श्रीआचार्यजीनें दामोदरदास

हरसानीसों पूछी, जो दमला ! तेने दामोदरदास सम्भलवारेके यहां सखडी महाप्रसाद क्यों न लियो ? तब दामोदरदासनें कह्यो जो महाराज ! श्रीठाकुरजी प्रातःकाल बाल भोग अरोगते सोई लेतो. सो सखडीकी रुचि रहती नाहीं, तातें न लेतो. तब श्रीआचार्यजीने कह्यो, जो तू तो तेरी इच्छा तें न लेतो. परि मोकों तो याके ऊपर बडी खुनस भई हती. सो भक्तनके अन्तःकरणकी भक्ति देखिवेको प्रभूको नाट्य है. काहे तें जो दामोदरदास सम्भलवारेने कन्नोजमें अपने घर बैठे श्रीआचार्यजीके अन्तःकरणकी जानी. सों श्रीआचार्यजी तो भक्तके हृदयमें सदा स्थित हैं. वह भक्त हृदेकी बात कहा न जाने ? परि भक्त परीक्षार्थ यह प्रभु नाट्य है. पाछें दामोदरदासकों बहुत सन्मान करिके श्रीआचार्यजीने घर पठाये. तब दामोदरदास अपने घर कन्नोज आइ पहोचे. पाछें स्त्री - पुरूष भली भांतिसों सेवा करन लागे.

भावप्रकाश : दामोदरदास हरसानी सम्भलवारेके ऊपर कृपा करनके अर्थ इनके घर पाहुने आये. दामोदरदास सम्भलवारे तनुजा वित्तजा भली भांतिसों राजसेवा करे हैं और जो वैष्णव (इनके यहां होयके) श्रीआचार्यजीके दरसनकों जाते तिन सबनके सङ्ग न्यारी - न्यारी भेट पठावते. वैष्णवको समाधान बहोत करते. खडियामे बिना कहें खरची वैष्णव को भरि देते. सो आचार्यजीके आगे बडाई बहोत भई. जो आवे सो (बडाई) करे. तब श्रीआचार्यजीके मनमें यह आई. जो हृदयके भीतरको भाव सुद्ध होइ तब काम होइ. जो अन्याश्रय न होइ. यह श्रीआचार्यजीके हृदयकी जानिके दामोदरदास हरसानी इनके यहां पाहुने आये (कृपा करनके अर्थ). सो दामोदरदास के हृदयकी सगरी रीति आछी देखी परन्तु स्त्रीमें रंच पिताकी का'नि जानि सखडी महाप्रसाद न लिये. दिन पांच - सात रहे. परन्तु अपने हृदयको अभिप्राय कछू दामोदरदाससों मार्गकी वार्ता नाही कहे. पाछें श्रीआचार्यजी पास आये. तब श्रीआचार्यजी पूछें कहांते आये ? तब विनती करी जो दामोदरदास सम्भलवारेके यहां पाहुने गयो हतो सो सखडी नाहीं लियो, अनसखडी लियो. यह कहिके यह जताये, जो दामोदरदासको भाव दृढ है. ताते अनसखडी लीनी. स्त्रीको भाव दृढ नाहीं है तातें सखडी (महाप्रसाद) नाहीं लियो. तब श्रीआचार्यजी दामोदरदास सम्भलवारेके उपर अप्रसन्न भये. जो मेरे अतरङ्ग सेवककों पायके स्त्रीकूं अन्याश्रय न छूडायो ? फेर ऐसो समें कब पावेगो ? सो यह बात श्रीआचार्यजीके हृदयकी सम्भलवारेने जानी. स्त्रीको पराश्रय है तातें नाही जानी.

वार्ताप्रसङ्ग ५ : और सिंहनन्दके वैष्णव श्रीआचार्यजीके दरसनको जाते सो कन्नोजमें दामोदरदासके घर उतरते. सो दामोदरदास सबनकों प्रसाद लिवावते. ता पाछें जब वैष्णव अडेल कों विदा होते तब जितने वैष्णव होते तिन सबन प्रति एक - एक नारियल, श्री

आचार्यजीकी भेटकों पठावते. काहेते ? जो मेरी दण्डवत खाली हाथ कैसे करोगे ? सो वे दामोदरदास एसे भगवदीय है.

वार्ताप्रसङ्ग ६ : और दामोदरदासको ससुर बहुत सम्पन्न हतो. तिनमे एक सौ लोण्ड़ी बेटीके दायजेमें दीनी हती. जो मेरी बेटी बेठी रहेगी. और कामकाज सब लोण्ड़ी करेंगी. परि वह लोण्ड़ी पास काम न करावती. सेवा सम्बन्धी कार्य सब आपुही करती. और लोण्ड़ी सब और कामकाज करती. सो वह एसी भगवदीय ही.

वार्ताप्रसङ्ग ७ : बहुरि एक समें श्रीआचार्यजी आप दामोदरदास सम्भलवारेके घर पौढ़े हते. और दामोदरदास सम्भलवारे पांव दाबत हते. तब श्रीआचार्यजी इनसों पूछे, जो ताकों. तेरे मनमें काहू बात को मनोरथ है ? तब दामोदरदासने कह्यो जो महाराज ! मोकों तो आपके अनुग्रह तें काहू बातको मनोरथ रह्यो नाहीं ! तब श्रीआचार्यजीने कह्यौ, जो तू जाइके अपनी स्त्रीसों पूछि आउ. तब दामोदरदास अपनी स्त्रीसों पूछी, जो तेरे काहू बातको मनोरथ है ? तब स्त्रीने कह्यो जो और तो कछु मनोरथ रह्यौ नाहीं. एक पुत्रको मनोरथ है. तब श्रीआचार्यजीसों आइके दामोदरदासने कह्यौ, जो महाराज ! स्त्रीको तो एक पुत्रको मनोरथ है. तब श्रीआचार्यजी आप श्रीमुख ते आज्ञा करे, जो पुत्र होइगो. पाछें श्रीआचार्यजी आप श्रीनाथजीद्वार (जतीपुरा) पधारे. ता पाछें एक लोण्ड़ीने समय भयो तब वाके गर्भकी स्थिति भई. ता पाछे केतेक दिनमें वा बाखरिमें एक डाकेतिया आयो. तब ताको सब स्मार्तकी स्त्री पूछन लागी. तब तामें तें काहूने दामोदरदासकी स्त्रीसों कही, जो अमूकी तु हू पूंछि, तेरे कहा होइगो ? पाछें एक लोण्ड़ीने जाइके वा डाकोतियासों पूछी, जो कहा होइगो ? बेटा होइगो कि बेटी होइगी ? तब वा डाकोतियाने कह्यो, जो बेटा होइगो.

तो पाछे केतके दिनमें श्रीआचार्यजी कन्नौज पधारे. तब दामोदरदास चरन छूवन लागे. तब श्रीआचार्यजीने कह्यौ, जो तू मोको छूवे मति. तोकों अन्याश्रय भयो है. तब दामोदरदासने कह्यौ, जो तू अपनी स्त्रीको पूछी. तब दामोदरदासने अपनी स्त्रीसों पूछी. तब स्त्रीने जो प्रकार भयो हतो सो सब कह्यो. सो सब बात दामोदरदासने श्रीआचार्यजीसों आय कही. तब श्रीआचार्यजी दामोदरदाससों कहे, जो पुत्र तो होइगो परि म्लेच्छ होइगो. पाछे श्रीआचार्यजी आप अडेल पधारे.

पाछे यह बात दामोदरदासकी स्त्रीने सुनी, तब ते श्रीठाकुरजीकी सामग्री तथा पात्रन कों आप स्पर्श न करती. कहेती, जो मेरे पेटमें म्लेच्छ है, तो मैं ठाकुरजीकी सामग्री तथा पात्र कैसें छूओं ? या भांतिसों रहे. पाछें जब प्रसूतिके दिन आये. तब दामोदरदासकी स्त्रीने अपनी महतारीसों कह्यौ, जो मेरे पुत्र होय तो होत मात्र ही तू तत्काल ले जैयो. मैं वाको मुख न देखोंगी. जो वाको महोडो हम देखें तो हमारो अनिष्ट होइ. तातें वाको महोडो नाहीं दीखे एसो उपाइ तू करियो. पाछें बाकी महतारीनें त्योंही कियो. प्रसूत होत मात्र तत्काल अपने घर ले गई. सो धाइको देकें बड़ो कियो.

भावप्रकाश : एक समें जब श्रीआचार्यजी कन्नौज पधारे तब दामोदरदाससों आज्ञा करी. कछू मनोरथ होइ सो मांगि ले. या प्रकार फेरि दामोदरदासकी परीक्षा किये. (काहतें ?) जो स्त्रीकों पराश्रय है. ताके सङ्गते याहुकों पराश्रय होई. तो कछू वर दीजे. इतने पुष्टिमार्गके फलसों रहित होई. परि दामोदरदास तो दृढ है. तातें कहे, महाराज ! आपुके चरणारविन्दकी सेवा मिली अब मोको काहू बात को मनोरथ नाहीं है. तब श्रीआचार्यजीने दामोदरदाससों कह्यो, स्त्रीकों पूछी आउ. यामें यह जानिये, श्रीआचार्यजी दामोदरदाससों बोले परिस्त्रीसों कछु बोले नाहीं. और स्त्री हूं आप आय श्रीआचार्यजीसों बिनती नाहीं कीनी. यामें यह जानिये, जो (स्त्री) बहोत श्रीमहाप्रभुजीकी निकट हूं नाहीं आवती और मनमें अन्याश्रय हतो. तातें कह्यो. एक पुत्र सेवा अर्थ होय. सो यह विचार नाही आयो, जो पुष्टिमार्गकी सेवा मांगे ते मिले. पुत्रको कहा प्रमान है, जो सेवा करेगो ? इतने यह वचनमें (श्रीआचार्यजीने जान्यो) जो मेरो आश्रय छूट्यो. जाउ. पुत्र लेके सगरी भक्ति सकामी होइ गई. तातें मुकुन्ददासने सप्तमस्कन्धमें प्रह्लाद नृसिंहजीसों कहे हैं.

स्वामिसों, निज अर्थ हि चाहे ।
निन्दन भक्ति अवगाहें ।

स्वामीसों लौकिक वैदिक अपनो सुख कछू चाहे सो निन्दित है. वाको भक्ति न मिले. या प्रकार पुत्र दे आप श्रीगोवर्धनघर पास गिरिराज पधारे. फेरि जब स्त्रीने अन्याश्रय कियो तब आप कन्नौज पधारे. और दामोदरदासकों चरन यातें छूवन नहीं दिये जो स्त्रीके हाथको खानपान दामोदरदासने कियो है. तातें

चरनपरस करिवेको अधिकार नाहीं है. यह दामोदरदासकूं जतायो.

तातें अन्याश्रय बराबरि दोष दूसरो नाहीं है. जैसे, एक पति छोडिकें दूसरो पति करे तब स्त्रीको सगरो धर्म जाई. ताही प्रकार अन्याश्रय रञ्च करे तो वैष्णवको धर्म नाश होई. यह सिद्धान्त दिखाये. फेरि स्त्रीकों अनन्यता भई, तातें श्रीठाकुरजी की सामग्री - सेवा परस नाहीं करती. तब वह अन्याश्रय पुत्रद्वारा हृदय तें निकर्यो. काहे तें. श्रीभागवतमें कहे हैं भक्तको श्रीठाकुरजी बिना और ठौर ममत्व होई सो वस्तुकों श्रीठाकुरजी तत्काल नाश करे. तब ज्ञान वैराग्य दृढ होइके आश्रय सिद्ध होई. भक्ति न होइ तो वस्तु गये और हू अन्याश्रय सदा करे. सो स्त्रीको पुत्रमें ममता देखिकें नष्ट श्रीआचार्यजीने अपने जानिके किये. तब स्त्रीकों ज्ञान भयो. तब अपनी मातासों कहे, जो मैं पुत्रको मुख न देखोंगी. सो पुत्र होन समय नेत्रनसों पट्टी बांधि लीनी. सों उनकी माता पुत्रको जन्मत ही अपने घर ले गइ. तहां पुत्र बरस १० को ह्वे पाछें म्लेच्छ भयो. स्त्री - पुरुष मन लगाइकें श्रीद्वारकानाथजीकी सेवा करी.

वार्ताप्रसङ्ग ८ : बहुरि एक समय दामोदरदासकी देह छूटी. तब स्त्रीनें घरमें छिपाय राखी. पाछें वैष्णव सो कह्यो, जो तुम एक नाव अडेलकों भाडे करि लावो. सो वैष्णव नाव भाडे करि लाये. तब नावमें श्रीद्वारकानाथजी और घरमेंकी सब सामग्री तृण पर्यन्त कछु घरमें राख्यो नाहीं. घरमें हतो सो सब नावमें धर्यो. तब वैष्णवनसों कह्यो, जो यह नाव अडेल ले जाउ. सब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके मन्दिरमें पहोंचाओ. सो वैष्णव नाव लेके चले. सो कोस तीस - चालीस उपर नाव गई. पाछें स्त्रीनें प्रगट कियो. जो दामोदरदासकी देह छूटि है. तब वैष्णव सब आये. संस्कार कियो. तब दामोदरदासको बेटा तुरक भयो, सो आयो. सो आयके देखे तो घरमे कछू नाहीं. जलको करवा भर्यो है. सो देखिके मूण्ड पटकि रह्यो. पाछें दामोदरदासको ससुर आयो. तिनने बेटीसों कह्यो, जो बेटी तेनें घरमें कछू राख्यो नाहीं ? जो अब तू कहा खायगी ? तब वानें कही, जो तुम देउगे सो खाऊंगी. क्षत्री लोगनके या समें सगे सहोदरे कछू देत हैं. एसी ज्ञातिकी रीति है. तब दामोदरदासकी स्त्रीने जलपान न कर्यो. सो थोरे ही दिनमें देह छूटी. कृति दोउनकी साथ भई. तब यह बात केतेक दिन पाछे काहू वैष्णवनें श्रीआचार्यजी आगे कही. तब श्रीआचार्यजीनें कह्यो, जो इनकों एसो ही चाहिये. सो वे दामोदरदास तथा उनकी स्त्री ये दोउ श्रीआचार्यजीके सेवक एसे कृपापात्र भगवदीय हे. तातें इनकी वार्ताको पार नाहीं, सो कहां ताई कहिये.

भावप्रकाश : पाछें दामोदरदासकी देह छूटी. तब स्त्रीने देह छिपाइ यातें राखे. जो पुत्र म्लेच्छ है. सगरी वस्तु श्रीजीकी है सो ले जायगो. तातें नाव भरिकें सब वस्तु श्रीआचार्यजीके यहां पहुंचाई. जब कोस चालीस नाव गई तब स्त्रीने जाहेर कियो. ससुर आदि ज्ञातिके सबने दामोदरदासकी देहको संस्कार कियो. पाछें बेटा दोरिके आयो सो देखे तो माटीको करुवा जलसों भर्यो है. और कछू है नाहीं. जब खबर पाई तब नाव लेके दोर्यो. परन्तु पायो नाहीं. तब माथो पीटि रह्यो. यामे यह जतायो, जो लौकिक होइके अलौकिक वस्तु लेनको उपाय करे सो दुख ही पावे. परन्तु हाथ लागे नाहीं.

और ससुरने कह्यो, कछू राख्यो नाहीं. अब तू कहा खायगी ? यह लौकिक पूछयो. तब स्त्रीने अलौकिक बात कही, जो अब तुम देउगे सो खाऊंगी. या समें क्षत्री लोगनमें देत हैं. तासों निर्वाह करूंगी. ताको अर्थ यह, श्रीठाकुरजी पधारे सो सेवा बिना घरकी वस्तु कैसे लेऊं ?

अलौकिक वस्तुके सङ्ग गई. सेवा बिना मैं लौकिक हों. सो लौकिकसों निर्वाह करूंगी. या प्रकार स्त्रीने हू देह छोडि दियो. क्रिया - कर्म सब दामोदरदासके सङ्ग भयो.

लोण्ड़ीकी वार्ता

और वह लोण्ड़ी बड़ी भगवदीय हती. ताकी वार्ता नाहीं लिखी. सो याते श्रीजमुनाजीकी सखी है. लीलामें इनको नाम कृष्णावेसनि है. सदा कृष्णके स्वरूपको आवेस रहेतो. सो द्वापरमें विदुरजीकी स्त्री यह लोण्ड़ी हती. सो श्रीठाकुरजीमें अतयन्त स्नेहा विदुरजीके घर बिना बुलाये जाते. सो अब दामोदरदासके यहां आई. सो लोण्ड़ी दामोदरदासके ब्याहमें आई. सो लोण्ड़ी दामोदरदासके ब्याहमें आई. याको पुष्टि सम्बन्ध भयो. मानसीमें मगन रहती.

एक दिना दामोदरदास(के) सेवा करतमें मनमें आई, जो नकासमें जाइ घोड़ा खरीदिये. ताही समय एक वैष्णव दामोदरदासको मिलनकों आयो. तब लोण्ड़ीने कही, नकासमें घोड़ा खरीदन गये हैं. तब वह वैष्णव चल्यो गयो. पाछे. यह बात काहूने दामोदरदाससों कहीं, जो तुम सेवामें हते (तब) लोंण्ड़ीने ऐसे कही. तब दामोदरदास लोण्ड़ी सो पूछी. तब लोण्ड़ीने कही, तिहारो मन वा समय कहां हतो ? जहां मन तहां देह जानियो. तब दामोदरदास चुप हाइ

रहे.

सो जब नावमें सगरी सामग्री धरी. तामे सामग्री सहत लोण्ड़ी हूं है. सो वह नाव पर श्रीद्वारकानाथजीके सङ्ग गई. तब श्रीआचार्यजीसों वैष्णवने आइ कही, महाराज ! श्रीद्वारकानाथजी वैभव सहित पधारे हैं. ता समें श्रीगोपीनाथजी ठाड़े हते. (तब) श्रीगोपीनाथजी कहे लक्ष्मी सहित नारायर पधारे हैं. तब श्रीआचार्यजी कहे वैभव ठाकुर देखिके तिहारो मन प्रसन्न भयो है ? (तब) श्रीगोपीनाथजी कहे तिहारो कहाइके श्रीठाकुरजीकी वस्तुमें अपनो मन करेगो ताको निरमूल नास जायगो. तब श्रीआचार्यजी कहे. हमारो मारग तो ऐसोई है. सो द्रव्य तें कछुक गोपीनाथजी प्रसन्न भये हते. सो एक पुत्र भयो. परन्तु वंस नाही चल्यो. पाछे श्रीआचार्यजी वैष्णवसों आज्ञा किये. सगरी सामग्री श्रीजमुनाजीमें पधराई. श्रीद्वारकानाथजीकों हमारे घर पधराई लावो. तब वह लोण्ड़ी हू सामग्री रूप है. सो देह सहित श्रीजमुनाजीमें पधराई. श्रीद्वारकानाथजी श्रीआचार्यजीके घर बिराजे यह लोण्ड़ीकी अलौकिक बात हती. सो लोगनमें विरुद्ध सी लागी. तातें श्रीगोकुलनाथजी प्रकास नाहीं किये. सामग्री रूप कहें. पाछे काहू वैष्णवने श्रीआचार्यजीसों विनती कीनी, महाराज ! सामग्री तो दामोदरदासकी स्त्री वैष्णवने पठाई. सो आप अङ्गीकारि क्यों नाहीं किये ? तब श्रीआचार्यजी कहे, जो बेटा म्लेच्छ है. सुनके आवे झगरो करे. द्रव्य दुःखको मूल है. दामोदरदासकी स्त्रीने पठायो. श्रीमहारानीजी(कों) अङ्गीकार हू करायो. लौकिक झगरो हू मिटायो. पाछें दामोदरसादकी स्त्रीने हू देह छोड़ी काहू वैष्णवनें इनकी बात कही. तब श्रीआचार्यजी कहे स्त्री - पुरुष भले वैष्णव टेकके हते.

४-पद्मनाभदास कन्नौजिया

अब श्रीआचार्यजी महाप्रमुखके सेवक पद्मनाभदास कन्नौजिया कन्नौजके वासी, तिनकी वार्ताको भाव कहत है ’-

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो प्रथम पद्मपाभदास व्यासासन बैठते. सो कन्नौजमें आप अपने घर कथा कहते. ऊंचे आसन बैठते. काहू के घर जानो न परतो. वृत्ति घर बैठे चली आवती. या भांति रहते. सो एक समय श्रीआचार्यजी आप कन्नौज पधारे. पद्मनाभदास दरसनकों आये. तब पद्मनाभदासने श्रीआचार्यजी महाप्रभुके श्रीमुखतें भगवद् वार्ताको प्रसङ्ग सुन्यो. तब जानी, जो ए साक्षात ईश्वर हैं. श्रीपूर्ण

पुरुषोत्तम यही है. सो पुरुषोत्तम जानिके पद्मनाभदास श्रीआचार्यजीकी सरनि आये. नाम पायो. पाछे समर्पन करवायो. पाछे उत्थापनके समे श्रीआचार्यजीने पोथी खोली. तहां दामोदरदास सम्लवारेके घर बिराजे हते. सो पद्मनाभ अपने घर तें आये, श्रीआचार्यजीकों दण्डवत् करिके बैठे. तब आचार्यजी ने निबन्धको श्लोक कह्यो, सो श्लोक

पठनीयं प्रयत्नेन सर्वहेतुविवर्जितम् ।।
वृत्त्यर्थं नैव युंजीत प्राणैः कण्ठगतैरपि ।।१।।

तदभावे यथैव स्यात् तथा निर्वाहचरेत् ।
त्रयाणां येन केनापि भजन् कृष्णमवाप्नुयात् ।।२।।

यह श्लोक पढ़े. सो पद्मनाभदासजीने अंजुली भरिके सङ्कल्प कियो, जो कथा कहिके वृत्ति न करूंगो. ऐसे श्रीआचार्यजीके आगे सङ्कल्प कियो. तब श्रीआचार्यजी कहे, जो श्रीभागवत् वृत्त्यर्थ न कहनो और तो तुम्हारि वृत्ति है तुम ब्राह्मन हो. तातें और महाभारत इत्यादिक तो कहनो. तब पद्मनाभदासने कह्यो, जो महाराज ! अब तो सङ्कल्प कियौ सो तौ कियौ. तातें कछू न कहनो. तब श्रीआचार्यजीनें कही, जो तुम तो ग्रहस्थ हो. कौन भांतिसों निर्वाह करोगे ? तब पद्मनाभनें श्रीआचार्यजी सो कह्यौ, जो श्रीभागवत् वृत्यर्थ न कहूंगो. पाछे जिजमानके घर वृत्यर्थ न कहूंगो. पाछे जिजमानके घर वृत्यर्थ गये. तिननें आदर बहुत कियो. तब पद्मनाभदासके मनमें ग्लानी आई. जो पहिले तो कबहू भिक्षा करी नाहीं. अब वैष्णव भये पाछे भिक्षा मांगन निकस्यो. सो उचित नाहीं. पहले तो उपवीत गरेमें हतो. ताको तो उचित है, जो भिक्षावृत्ति करें. परि अब तो गरेमें माला पहरी. ताकों तो यह भिक्षा - वृत्ति उचित नाहीं. तब फेरि सङ्कल्प कियो, जो भिक्षावृत्ति न करूंगो. तब फेरि श्रीआचार्यजीने पूछी, जो अब निर्वाह कैसे करोगे ? तब पद्मनाभदासने कही, जो वैश्यवृत्ति करि निर्वाह करूंगो. पाछे कोड़ी बेचते, लकड़ी लै आवते. परि और बात न विचारी. देहादि पर्यन्त सेवा कीनी. ऐसे टेकी.

भावप्रकाश : सो पद्मनाभदास श्रीस्वामिनीजीकी चंपकलता सखी है. जब पद्मनाभदासने श्रीआचार्यजीसों बिनती करी, जो हम ब्राह्मन हैं. भिक्षावृत्ति करेंगे. यह टेक देखि श्रीआचार्यजी बहोत प्रसन्न भये. (और कह्यो) जो वैष्णवकों टेक ही बड़ो धर्म है.

पाछें पद्मनाभदासके सगरे कुटुम्बकों (जब) अङ्गीकार किये तब पद्मनाभदासने कही, महाराज ! हमको कहा कर्तव्य है ? तब श्रीआचार्यजी कहे भगवत्सेवा करो. तब पद्मनाभदास ने कही, महाराज ! मेंने तो पुराण, महाभारत आदि शास्त्र बहोत देखे हैं. सो मो कों श्रीठाकुरजीके स्वरूपमें विश्वास आवनो कठिन है. जो स्वरूपको माहात्म्य प्रगट होत ही देखूं तब मेरो विश्वास दृढ़ होई. काहेतें विश्वास ही फलरुप है. तब श्रीआचार्यजी कहें, हमारे सङ्ग ब्रज चलो. तुमको (माहात्म्य) दिखावेंगे. तब पद्मनाभदास ब्रजकूं चले. सो महावनकेपास रमनस्थल है. तहां श्रीजमुनाजीके किनारे (सामने पार कर्णावलमें) श्रीआचार्यजी बिराजे हते. प्रातःकालको समय है और श्रीजमुनाजीको कराड़ो टूट्यो. तामें ते एक भगवत्स्वरूप जैसे ताड़को वृक्ष (होय) इतने बड़े, श्रीआचार्यजीके आगें आइ कहें, मेरी सेवा करो. तब श्रीआचार्यजी कहे, महाराज ! या कालमें वैष्णवकी सामर्थ्य नाहीं जो आपकी सेवा - शृङ्गार करे. सेवा कराइवेको मनोरथ होइ तो भक्तनसों पधराये जाय (एसे) गोदमें बेठो. तब सेवा होई. तब छोटो स्वरूप करि श्रीआचार्यजीके चिबुकसों मस्तक श्रीठाकुरजीको लग्यो इतने बड़े भये. सो स्वरूप श्रीयमुनाजी, गिरिराज सखा सखी गांऊ, कुंज, चौरासी कोस सगरो स्वरूपात्मक चिह्न सहित है. तातें श्रीआचार्यजी श्रीमथुराजी नाम करे. (और) पद्मनाभदाससों कहै. कयों तेरो मनोरथ भयो ? तब पद्मनाभदास प्रेममें विह्वल होइ कहै. महाराज ! आपु सारीखे मेरे धनी हो. आपकी कृपाते कहा न होइ ? तब आचार्यजी कहे, ''यथा लाभ सन्तोष'' करि भाव पूर्वक सेवा करियो. तब आज्ञा मांगि श्रीमथुरानाथजीकों कन्नौजमें अपने घर पधराइ लाये. प्रीतिपूर्वक सेवा करन लागे. (पहले) भिक्षावृत्ति करतें. तब पद्मनाभदासके मनमें आई, जो मैं वैष्णव कहाईके भीख मांगौ ! श्रीआचार्यजी ''यथा लाभ सन्तोष'' सों कहे हैं. और उत्तम पक्ष यही है. -

अव्यावृत्तो भजेत् कृष्णं पूजया श्रवणादिभिः ।।२।।

या प्रकार अव्यावृत्तको नेंम ले सेवा मन लगाईके करन लागे.

वार्ताप्रसङ्ग २ : एक समे श्रीआचार्यजी प्रयागमें हते. तहां पद्मनाभदास पास है. तब रात्र प्रहर एक गई हती. तब पद्मनाभदाससों श्रीआचार्यजीने कह्यो, जो श्रीअक्काजी पार है. सो पारते पधराय लाओ. सो इतनो सुनिकें उठि चले. तब पांच सात वैष्णव उहां सोये हते. सो कहन लागे, जो ब्राह्मण बावरो भयो है. या समे कहां जायेगो ? नाव सब बन्धी है. घटवारे सब घर गये हैं. तातें या बिरियां जायवेकी नाहीं. परि याकों (पद्मनाभदासकों) श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी आज्ञाको विश्वास है. जो यह बात अवश्य होइगी. सो घाट उपर आये. तब इत उत देखन लागे. इतनेमें अकस्मात् एक लरिका एक डोंगी लेके आये. तब वानें पद्मनाभदाससों पूछी, जो तू पार जाइगो ? तब पद्मनाभदासने कह्यो, जो हां, हां, जाउंगो. सो उन पार उतार दीनों पाछे फेरि पूछ्यो, जो तू फेरि आवेगो ? तब पद्मनाभदासने कह्यो, जो घड़ी दो में आऊंगो. तब उन लरिकाने कह्यो जो ड़ोंगी राखत हों, बेग आईयो. पाछे अड़ेलमें आइके श्रीअक्काजीकों पधराइ ल्याये. वाही ड़ोंगीमें बैंठारि पार उतरे. तब पाछें फेरि देखें तो ड़ोंगी नाहीं और लरिका हू नाहीं. पाछे श्रीअक्काजीकों पधरायके लाये. तब श्रीआचार्यजी पद्मनाभदासकों आज्ञा दीनी, जो जाउ, सोय रहो. तब पद्मनाभदास जहां वैष्णव सब जाइ के सोये हते, तहां आये. तब वैष्णव पूछन लागे, जो तुम कहा करि आये. तब पद्मनाभदासने कह्यो, जो ऐसे श्रीअक्काजीकों पधराय लायो हूं. तब सब वैष्णवनें कह्यो, जो तुमने श्रीठाकुरजीको श्रम बहुत करायो. पाछे उन वैष्णवनें (जब) श्रीआचार्यजीसों कह्यो, जो - महाराज ! पद्मनाभदासने श्रीठाकुरजीको श्रम बहुत करवायो. तब श्रीआचार्यजीने कह्यो, (जो) यह, जो कछू भयो है, सो मेरी इच्छासों भयो है. तातें तुम इन पद्मनाभदाससों कछु मति कहो.

भावप्रकाश : यह वार्तामें यह सिद्धान्त भयो, जो गुरुके कार्यार्थ प्रभुको कष्ट (श्रम) करावे तो वैष्णवकों बाधक नाहीं. गुरुके प्रसन्न भये सब कार्य सिद्ध होइ और उह रात्रि श्रीगुंसाईजीके प्रागट्यके गर्भ - स्थितिको मुहूरत हतो. तातें श्रीआचार्यजी आज्ञा किये. श्रीठाकुरजी ड़ोंगी लाये. तातें यह जताए, जो गुसाईजीके लिये सगरो कार्य करें यामें कहा कहनो ? यामें श्रीश्रीगुसांईजीके स्वरूपकी श्रीठाकुरजी तें अधिकता दिखाये और पद्मनाभदासको पूरन विश्वास दिखाए. जो श्रीआचार्यजीके बचन खाली कबहूं न जाइ. सर्वथा कार्य सिद्ध होयगो.

वार्ताप्रसङ्ग ३ : बहुरि एक समें श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीगोकुल तें अडेलकों जात हते. तब एक व्यौपारी क्षत्री कछुक वस्तु लेके

साथमें चल्यो. सो कन्नोजके उरे रह्यो श्रीआचार्यजी तो कन्नोज बीच पधारे व्यौपारी पाछे रह्यो सो ताके उपर चोर परे. वस्तु सब लूटि लीनी. श्रीआचार्यजी आप रसोई करिके श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो. इतने में ही पोछेंतें व्योपारी रोवत पीटत आयो. तब पूछी, जो आचार्यजी कहा करत है ? तब पद्मनाभदासने कह्यो, जो भोजन करत होईगे. तब व्यौपारीने कह्यो जो हमारो माल सगरो लूटि गयो है. और श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप भोजन करत हैं ! तब पद्मनाभदासने मनमें विचार्यो, जो यह बात श्रीआचार्यजी सुनेंगे तो भोजन न करेंगे. ताते आप सुने नहीं (एसें करनो).

तब पद्मनाभदास वा व्यौपारीकी बांह पकरिके बाहिर ले आये. तब पूछी, जो सांच कहे. तेरो माल कितनो गयो है ? तब उन व्यौपारिने बतायो. तब वा व्यापारी की बांह पकरि के पद्मनाभदास एक साहकी दूकानपे ले गये. ता साहनें पद्मनाभदासकी बहुत आगतासागता करी. पाछे वा साहनें कह्यो, जो आज्ञा करो, कैसे पधारे हो ? तब पद्मनाभदासनें साहसों कह्यो, जो या व्यौपारीकों इतनो द्रव्य देनो चाहिये. या द्रव्यको खतपत्र ब्याज हम लिखि देइंगे. तब या साहनें कही, जो पद्मनाभदासजी ! तुमको जीतनो द्रव्य चाहिये. तितनो द्रव्य लेउ. खतपत्रकी कहा बात है ? तब पद्मनाभदासने कह्यो, जो पहिले तो खतपत्र लिखूंगो. और पाछे द्रव्य लेउंगो. बिना खतपत्र लिखे तो मैं लेउंगो नाहीं. तब साहने कही. जो तुम्हारी इच्छा. पाछे पद्मनाभदासने खतपत्र ब्याज लिखि अपनो धरम गहने लिखि दीनो. पाछे ब्यौपारी तो द्रव्य लेके अपने घर गयो. तब पद्मनाभदाससों श्रीआचार्यजीने पूछी, जो तू कहां गयो हो ? तब पद्मनाभदासनें कह्यो, जो महाराज ! एक काम हो तहां गयो हो. सो श्रीआचार्यजी आपु तो ईश्वर हैं. तत्काल बातको जानि गये. तब पद्मनाभदाससों श्रीआचार्यजीनें कह्यो, जो हमको वा व्यौपारीके सङ्ग कछू बिसावनों हतो कहा ? जो वाको माल देते ? वह पाछें रह्यो तो हम कहा करें ? परि तेनें बुरी करी. जो रिन काढ़िके पैसा दीनो. तब पद्मनाभदासने कह्यो, जो महाराज ! रिन तो काल्हि देऊंगो. यह कितनीक बात है. परि वह व्यौपारी पुकारतो तो राज भोजन घड़ी दोय अवेरो करते. तो मेरो सगरो जन्मारो बृथा होय जातो. तब श्रीआचार्यजीने कह्यो, जो तेने धर्म गहने लिखि देनो सो कहा है ? तब पद्मनाभदासने कह्यो, जो महाराज ! ऐसे गाढ़ो लिखे बिना दियो न जाय. पाछे श्रीआचार्यजी आप तो अड़ेल पधारे. पाछे पद्मनाभदास एक राजा हतो ताके पास गये. पाछें राजाने कह्यो, जो मोको कृपा करिके कथा सुनावो. तब पद्मनाभदासने कह्यो, जो राजा ! श्रीभागवत् तो न कहूंगो. कहो तो महाभारत सुनाउं. तब राजानें कह्यो, जो भलो, महाभारत

ही सुनावो. तब महाभारत कहन लागे. सो जब युद्धको प्रसङ्ग आयो, तब सबनके हथियार छुड़ाइ धरे. तब आगे कहन लागे. सो कथामें कोऊ (ऐसो) वीररस उपज्यो सो आपुसमें लात मुक्किनसों लरन लागे. पाछें केतेक दिनमें महाभारत समाप्त भयो. तब राजा बहुत दक्षिणा देने लाग्यो. तब पद्मनाभदासने कह्यौ, जो इतनो द्रव्य नाहीं लेऊंगो. मेरे माथै रिन है. सो तितनो लेऊंगो. पाछे वा साहको जीतनो मूल ब्याज देनो हतो तितनो लीनो. बाकी सब फेरि डार्यो. सो वे पद्मनाभदास एसे भगवदीय हे.

भावप्रकाश : तब व्यौपारीने कह्यो, जो हमारो माल सब लूटि गयो. आप भोजनको पधारे हैं ? यह कह्यो ताको कारन यह, जो आपु दयाल व्हैके जीव दुःखी जानिके भेजन कैसें करत हैं ? जो दयाल है सो परायो दुःख दूरि करिकें भोजन करत है. श्रीआचार्यजीने कही (जो तैने) व्यौपारीकों द्रव्य क्यों दिवायो ? रिन काढ़िके. कछू हम बीमा कियो हतो ? पाछें रह्यो लूटी गयो. तें बूरी करी. ताको कारन यह, जो रिनहत्या माथें लीनी. सो बुरी करी, शरीरको कहा भरोसो है ? देहि छूटि जाय तो रिन माथे रहे.

तब पद्मनाभदास न कही. या व्यौपारीको रुदन सुन धरी दोय आप भोजन अवेरो करते. मेरो जन्म वृथा होइ जातो (ताको अभिप्राय) सेदकके आगे स्वामीकों कछू श्रम होइ सेवक श्रम दूरि न करे, तो धर्म जाइ. पाछे धिक्कार वह सेवककों जीवे सो वृथा है. और रिनकी केतिक बात है ? अब चुकाई देऊंगो. ताको कारन यह, जो कालकी कहा सामर्थ्य है ? आपुकी कृपातें बाधक न होइगो. और धर्म गहने धर्यो तामें एक भाव यह है, (जो) अपनो वैदिक ब्राह्मनको धर्म गहने धर्यो होइगो यह गौन भाव है. काहेतें, श्रीआचार्यजीकी सरन आये. तब (सब) समर्पन कियो. जो वैदिक धर्म न्यारो रहे, तो पुन्यको फल स्वर्ग भोगनो परे. तातें इनने तो सर्व समर्पन करि एक पुष्टि भक्तिरूप धर्म राखे है. ताहीतें श्रीआचार्यजी हू पूछ्यो, (जो) एसो धर्म साहके इहां. गहने धर्यो ? परन्तु पद्मनाभदासकों श्रीआचार्यजीको स्वरूप हृदयारुढ़ हतो. श्रीआचार्यजीके सुखकेलिये धर्महूकी अपेक्षा राखें नाहीं. गहने धरे. और व्यौपारीकों द्रव्य देके बहोत मनमें प्रसन्न भये. भली भई (व्यौपारी) इहां आये. जो चल्यो जातो तो जहां तहां देसमें निन्दा करतो. जो मैं श्रीआचार्यजीकी सङ्ग लुटि गयो. कोहेतें ? लौकिक राजाके सङ्ग लूट्यो न जाइ तो ऐसे ईश्वके सङ्ग लूटि गयो ? सो पद्मनाभदास कहे, मेरे धर्मकी परीक्षा अर्थ लूट्यो गयो. सो व्यौपारीकों द्रव्य दियो. अब जहां जाईगो तहां श्रीआचार्यजीकी बड़ाई करेगो. मोकों नफा सहित द्रव्य दिये. या भावसों पद्मनाभदासकी श्रीआचार्यजीमें अनिर्वचनीय प्रीति है.

और राजा जादा द्रव्य देने लाग्यो सो आप (पद्मनाभदास) यातें न लिये, जो इनकों अव्यावृतको नेम है. वृत्तिके अर्थ कथा नाहीं कहनी. यह सङ्कल्प है. यह सगरो काम श्रीआचार्यजीके सुखके अर्थ किये. सो साहकों रुपैया दिवाय धर्मको कागद लिखे हते सो ले आये. पाछें घर आये सेवा करन लागे.

वार्ताप्रसङ्ग ४ : और पद्मनाभदासके घर बेटी कुमारी हती. ताके निमित्त एक वर श्रीआचार्यजीको सेवक चहियत हतो. सो वैष्णवसों पूछन लागे. तब वैष्णवने कह्यो, जो एक वर श्रीआचार्यजीको सेवक है. परि सेनोढ़िया ब्राह्मण है. सो पद्मनाभदासकों सेवक सुनत ही लौकिक व्यवहारकी तो सुधि नाहीं आई. वैष्णवने कह्यौ, जो भलो वैष्णव है. याकों कन्या दीजिये. तब पद्मनाभदासनें कह्यों, जो भलो. तब पद्मनाभदासने वा वैष्णवनेकों कुंकुम मंगाई तिलक कियो और कह्यो, मैं बेटी तुमकों दे चुक्यो. लगनको दिन तुम पूछो ता दिन ब्याह करूं. विवाह सही करि प्रसन्न होइ अपने घर आये. तब बड़ी बेटी एक तुलसां हती, सो ब्याह होत ही विधवा भई. लौकिक पतिको मुख नाहीं देख्यो. सो श्रीमथुरानाथजीकी सेवामें तत्पर हती, तासों कह्यौ, जो अपनी बेटीको विवाह अमुके वैष्णवसों सही करि आयो हूं. तब तुलसांने कह्यौ, जो वह तो सनोढ़िया ब्राह्मण है. हम कन्नौजिया ब्राह्मण हैं. सो ऐसे कैसे होइ ? तब पद्मनाभदासने कह्यो, जो अब तो भई सो भई. तब तुलसांने कही, जो सगाई फेरो. तब पद्मनाभदासने कही, जो छुरी लाओ. अंगूठा काटो. जा अंगूठा करि तिलक कियो है. तब तुलसांने कह्यो, जो अंगूठा कैसे काटिये ? तब पद्मनाभदासने कही, तो सगाई कैसे फेरिये ? अंगूठा कटे तो सगाई फिरे. पाछें पद्मनाभदासनें विवाह करि दीनों. जातिके सब झख मारि रहे. वैष्णवके कहे को एसो विश्वास, तातें सगाई न फेरी.

भावप्रकाश : जब तुलसांने कह्यो, अंगूठा कैसे काट्यो जाय ? तब पद्मनाभदासने कह्यौ, श्रीआचार्यजीके सेवक पर तन, मन, धन न्योछावरि करिये. सो सगाई कैसे फेरी जाइ ? या प्रकार तुलसांको मारगको अभिप्राय बताए.

ता दिनतें तुलसांको प्रेम वैष्णवनमें पद्मनाभदासके सङ्गतें भयो. सो श्रीठाकुरजी तुलसांहूकों अनुभव जतावन लागे. पाछे प्रसन्न होइके वैष्णवकों अपनी बेटी ब्याह दिये. जाति सगरी झखि मारि रही. ताको कारन यह है, (जो) जहां तांई दृढ़ स्नेह नाहीं, तहां तांई लौकिक वैदिकको डर है. जब दृढ़ स्नेह

प्रभुमें भयो. तब सगरी चिन्ता मिटी. लौकिक वैदिक बाधा हू न करि सके. ऐसे एक वैष्णव पद्मनाभदास भये.

वार्ताप्रसङ्ग ५ : और एक क्षत्राणी पद्मनाभदासके घर नित्य आवती. तब पद्मनाभदासकी बेटी तुलसांने एक दिन वासों कह्यो, जो क्षत्राणी ! तु नित्य क्यों आवत है ? तब वा क्षत्राणीने कही, जो ए महापुरुष हैं. बड़े भगवदीय हैं. और मेरे सन्तति नाहीं होति है. तातें आवति हों. तुम मेरी बिनती पद्मनाभदासजीसों करियो. तब एक दिन तुलसांने पद्मनाभदाससों कह्यौ, जो या क्षत्राणीके सन्तति नाहीं. ताके लिये तुमसों बिनती करत है. तब पद्मनाभदासने तुलसांसों कह्यौ, जो जल लाउ. तब तुलसांने जल आगे लाई धर्यो. तब वह जल लेके चरणोदक करि वा क्षत्राणीको दियो और कह्यौ, जो जा, तेरे पुत्र होइगो. ताको नाम मथुरादास धरियो. पाछें वाके पुत्र भयो. (ताको) नाम मथुरादास धर्यो.

भावप्रकाश : अपनो चरणोदक क्यों दिये ? भगवदीय अपनी बड़ाई तो करावत नाहीं. तातें श्रीठाकुरजीको चरणोदक दियो होयगो. तहां कहत हैं, जो पद्मनाभदासनें बिचारी, जो तुच्छ कामना पुत्रादिककी है. याके लिये श्रीठाकुरजीको चरणोदक कहा ? श्रीठाकुरजीकों श्रम काहेकों कराऊं ? तातें अपनो चरणोदक दिये. परन्तु पद्मनाभदास सदा श्रीआचार्यजीके स्वरूपमें मगन रहत हैं. सो जल ले श्रीआचार्यजीके भाव तें दिये और इनकों कछू कामनाकी बड़ाईकी अपेक्षा नाहीं है. भगवदीयको आश्रय करें. सो सगरो मनोरथ वाको पूरन होइ. यह पुत्रकी कहा बात है ? ताकों (क्षत्राणीको) पुत्रकामना हती सो पुत्र दिये. परन्तु बाधक नाहीं. जो अपने कियेको अहङ्कार नाहीं. ता समय, जो बुद्धिकी प्रेरणा भई. सो भगवद इच्छा तें कार्य करत हैं. अपनो कियो जानत नाहीं है. श्रीगुंसाईजी लिखे हैं -

बुद्धि प्रेरक कृष्णस्य पादपद्मं प्रसीदतु

जो कार्य होत है. जैसी ताकी बुद्धि प्रेरक होई करत है सो कार्य सब कृष्ण ही को जाननो. जो अपनो, और को जाने सोई संसार समुद्रमें भ्रमत हैं. तातें पद्मनाभदासने अपनो चरणोदक दियो. परन्तु यह भाव नाहीं, जो मेरे चरणोदकसों पुत्र होइगो. भगवद्इच्छा तें सब होत है. यह सिद्धान्त दिखाए.

वार्ताप्रसङ्ग ६ : और एक समें बड़े रामदासजी अपने सेव्य श्रीठाकुरजीकों पद्मनाभदासके घर पधराइके श्रीनाथजीके दरसनकों गये. सो श्रीनाथजीकी सेवामें श्रीआचार्यजीकी आज्ञा तें रहे और श्रीनाथजीकी सेवा करन लागे. श्रीनाथजीके भीतरिया भये. तब पद्मनाभदास श्रीठाकुरजीकी सेवा करन लागे. कितनेक दिन पाछें मुगलकी फौज आई. सो ताने गाम लूट्यो, श्रीठाकुरजीकों एक मुगल ले गयो. तब पद्मनाभदास वा मुगलके साथ दिन सातलों रहे. जलपान हू न कर्यो. तब आठमे दिन मुगलसों मुगलानीने कह्यो, जो यह ब्राह्मन जलपान नाहिं करत है. याकों सात दिन भये हैं. अन्नजल छोड़े. सो जो यह मरेगो. तो तेरे माथे हत्या चढ़ेगी. तातें याको देवता है. सो वाकों देउ. तब मुगलने श्रीठाकुरजी पद्मनाभदासकों दिये. सो लेके पद्मनाभदास अपने घर आये. ता पाछें आप स्नान करि श्रीठाकुरजीकों पञ्चामृत स्नान करवायो. अङ्ग वस्त्र करि शृङ्गार कर्यो. रसोई करि भोग समर्प्यो. पाछें समयानुसार भोग सराय अनोसर करि पाछें वैष्णवनकों महाप्रसाद लिवायो. पाछें आप महाप्रसाद लियो. और जा दिन श्रीठाकुरजी कन्नौजमें मुगलके हाथ परे. ता दिन बड़े रामदासजीने हू यह बात जानी. सो ता दिन तें बडे रामदासजीने हू सात दिनलों भोजन नाहिं कियो. परि श्रीनाथजीकी सेवा सावधानतासों करत रहे. यह बात पद्मनाभदासजीने अपने घर बैठे जानी. सो - रामदासजीने हू या बातके ऊपर बहोत दुःख पाये. यह जानि पद्मनाभदास श्रीनाथजीके दरसनकों तथा रामदासजीके मिलिवेकों श्रीनाथजी द्वार गये. सो श्रीनाथजीके दरसन किये. पाछे रामदासजीकों मिले. तब रामदासजीसों पद्मनाभदासजीनें कह्यो, जो होंतो दुःख पाये सो तो न्याव है. जो तुम मेरे माथे सेवा पधराय आये. परि तुमने दिन सातलों प्रसाद न लियो, सो काहेते ? तब रामदासजीनें कह्यो, जो तुम कहत हो सो तो सांच, परि मैं हूं तो बहोत दिनलों सेवा करी है. तातें इतनो सम्बन्ध तो चाहिये. पाछें कितनेक दिन रहिके पद्मनाभदास श्रीनाथजीसों तथा रामदासजीसों बिदा होईके अपने घर कन्नौज आये. पाछें फेरि सेवा करन लागे.

भावप्रकाश : या वार्तामें यह सिद्धान्त दिखाये, जो पुष्टिमार्गीय वैष्णवके ठाकुर अपने घर पधारे तो भिन्न भाव न राखनो. श्रीआचार्यजीके सम्बन्धी जानि माथे पधारे जानि सेवा करनी. और रामदासजीके भावमें यह जताए. जो अपने सेव्य ठाकुर कहूं पधराइ निश्चिन्त न होई. उनके दुःखते दुःखी होई. उनके सुखतें सुख पावे. यह सिद्धान्त दिखाए.

वार्ताप्रसङ्ग ७ : बहुरि एक समय पद्मनाभदासने बिचारी, जो ठाकुरजी सहित कुटुम्ब सहित श्रीआचार्यजीके दरसन करिये. श्रीमुखके वचनामृत सुनिये. सो श्रीठाकुरजी सहित कुटुम्ब सहित अड़ेलमें आये. सो कछुक दिन रहे. परि द्रव्यको सङ्कोच बहुत हतो. तातें श्रीठाकुरजीकों भोग समर्पे. सो छोला तलिके समर्पे. सो छोला आछी रीतिसों बीनिके पहले दिन भिजोइ राखे, दूसरे दिन नीकी भांतिसों तलिके समर्पे. सो या भांति, पातरिमें एक मूठि दारिकी भावना करते. एक मूठि भातकी. एक मूठि खीरकी. सागादिक सबको नाम ले न्यारि - न्यारि मूठि धरते. सो श्रीठाकुरजी सगरी सामग्रीको भावसों अरोगते. या प्रकार नित्य करें. पाछें एक दिन एक वैष्णव श्रीआचार्यजीसों यह सब प्रकार कहे, जो महाराज ! पद्मनाभदास श्रीठाकुरजीकों या भांति छोला समर्पत हैं. सो एक दिना श्रीआचार्यजी भोग समर्पवेकी बिरियां पद्मनाभदासके घर पधारे. सो पद्मनाभदाससों पूछे, जो यह ढेरि न्यारे - न्यारे क्यों है ? तब पद्मनाभदासने कही, यह दारि है. यह भात है. यह खीर है. यह कढ़ि है. यह सागादिक है. या प्रकार सब ढेरिकों सामग्री बताए. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको हृदय भरि आयो. और जान्यो, जो याके द्रव्यको सङ्कोच है तातें यों करत है. परन्तु द्रव्यको उपाय नाहिं करत है. बड़ो धैर्य है. तातें याके ऊपर श्रीठाकुरजी बड़े प्रसन्न हैं. पाछें श्रीआचार्यजी घर पधारे भोजन किये. और श्रीअक्काजीसों कहे. जो पद्मनाभदासके घर द्रव्यको बहोत सङ्कोच है. सों छोला नित्य श्रीठाकुरजीकों धरत है. तब श्रीअक्काजीने संझा समय सगरी सामग्री सिद्ध करि एक वैष्णवके हाथ पठाई. तब तुलसांने पद्मनाभदाससों कह्यो, श्रीआचायजीके इहांसों सामग्री आई है. तब पद्मनाभदासने कह्यो, हम जाने अब हमकों काढ़िवेको उपाइ किये हैं. जतनसों धरि राखो. तब तुलसांने धरि राखी. पाछे दूसरे दिन फेरि सामग्री सांझकों श्रीअक्काजीने पठाई. तब तुलसांने फेरि पद्मनाभदाससों कही. तब पद्मनाभदासने कही, हमको बेगि बिदा दिये. तातें सबेरे चलेंगे. अब धरि राखो. पाछे प्रात:काल भयो. तब श्रीठाकुरजीकों बेगि ही राजभोगसों पहोंचि, श्रीमथुरानाथजीसों पूछे, जो महाराज ! आपको श्रीआचार्यजीके घर पधारिवेकी इच्छा होइ, तो उहां नाना प्रकारकी सामग्री हैं. मेरे इहां तो जो समय जैसो प्राप्त होइ, तेसो धरूंगो. तब श्रीमथुरानाथजीने कही, मोको तेरो कियो भावत है. तातें जो धरेगो सो प्रीति तें अरोगूंगो. तब अनोसर कराई, एक नाव भाड़े करि लाये. तुलसांसों कहे. दोउ दिनको सीधो सामग्री है. सो श्रीअक्काजीकों दे आव. तब तुलसां सारी सामग्री श्रीआचार्यजीके यहां दे आई.

पाछें सगरी वस्तु नाव पर धरि श्रीमथुरानाथजीकों नाव पर पधराई श्रीआचार्यजीके पास बिदा होन आये. और दण्डवत् करि विनती कीनी, जो महाराज आज्ञा होइ तो घर जांय. तब श्रीआचार्यजी पूछे. जो श्रीठाकुरजी कहां है ? तब पद्मनाभदासने कही, महाराज ! नाव पर पधारे हैं. तब श्रीआचार्यजी बिदा किये, और मनमें विचारे. जो ओंचको पद्मनाभदास क्यों गयो ? तब श्रीअक्काजीने कही, दोय दिन सीधो पठायो. सो फेरि दे गये. तब श्रीआचार्यजीने कह्यो, जो सीधो पठवायो तातें गयो. नाही तो न जातो. एसे श्रीआचार्यजीने श्रीमुख तें कह्यो. पाछें पद्मनाभदास घर जाय सेवा करन लागे.

भावप्रकाश : या वार्तामें यह जताये, जो गुरु - द्रव्य श्रीठाकुरजीके द्रव्य तें हू भारी है. तातें श्रीभागवतमें (स्कन्ध ११ अध्याय १७ श्लोक २८) में कहे हैं. भिक्षा मांगिके लाइ गुरुके आगे धरिये. जो गुरु आज्ञा देइ तो खाई. नाहीं तो भूख्यो रहि जाइ. परन्तु मांगे नाही. मांगी भिक्षा हू आज्ञा बिना नहिं लीनी जाय तो गुरुको (द्रव्य) कैसे लियो जाइ ? तातें श्रीआचार्यजी 'विवेकधैर्याश्रय' में लिखे हैं, जो ''त्रिदुःखसहनं धैर्यम्''.

जब मुगल ठाकुर ले गयो तब पद्मनाभदास चाहे तो भस्म करि डारे, परि पद्मनाभदास (कष्ट) सहे. आप सात दिन भूखे रहे. वासों कछू न कहे. (यह अलौकिक दुःख कह्यो) लौकिक दुःख जो बेटी परज्ञातकों दीनी. यह ज्ञातिमें निन्दा सो सहे. खानपादिकको दुःख सो सहे. परन्तु धर्म न छोड़े. तातें श्री गोकुलनाथजी श्रीसर्वोत्तमकी टीकामें लिखे हैं. कोटिन वैष्णवनमें दुर्लभ पद्मनाभदास सारिखे हैं. सो श्रीआचार्यजीके मारगको श्रीआचार्यजीके स्वरूपकों जानत है.

सो उन पद्मनाभदासकी ऊपर श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप सदा प्रसन्न रहते, तातें इनकी वार्ताको पार नाहीं. सो कहां तांई कहिये. .....वार्ता ।।४।।

५-तुलसा

अब श्रीआचार्यजीके सेवक पद्मनाभदासकी बेटी तुलसां तिनकी वार्ताकौ भाव कहते हैं -

भावप्रकाश : ए लीलामें पद्मनाभदासकी सखी है. पद्मनाभदास तो चम्पकलता अष्टसखीनमें. और चम्पकलताकी सखी मणिकुण्डला, जैसे मणिकी ज्योतिकी कुण्डाली चारों ओर फूले. सो (यह) तुलसां सात्त्विक भक्त है. पद्मनाभदासकी आज्ञामें तत्पर है.

वार्ताप्रसङ्ग १ : एक दिन तुलसांके घर वैष्णव आयो. सो श्रीआचार्यजीको सेवक हतो. सो मथुरानाथजीके दरसन राजभोग आरतीके किये. तब तुलसांने उन वैष्णवसों कह्यो, जो उठो स्नान करो. महाप्रसाद लेउ. तब उह वैष्णवने कह्यो, जो हों तो घर जाइ स्नान करूंगो. तब तुलसां चुप करि रही. पाछे वह वैष्णव उठिके अपने घर गयो. तुलसांके मनमें बहुत खेद भयो, जो मेरे घर तें वैष्णव भूख्यो गयो.

भावप्रकाश : ताको कारन यह, महाप्रसादकी नाहीं करी, जो ज्ञात व्यौहारके लिये लियो नाहीं. सो तुलसां समझ गई. तातें आग्रह नाहीं कियो. यह गौड़ ब्राह्मन हतो और लीलामें ललिताजीकी सखी है. सौरभा इनको नाम है. इनके अङ्गते अन्तर गुलाबकी सुगन्ध आवती. यह वैष्णव ललिताजीकी सखी है. और तुलसां चम्पकलताकी सखी है और तुलसांके बस श्रीमथुरानाथजी हैं. तातें यह वैष्णवने महाप्रसाद न लियो. जो ललिताजीकी आज्ञा बिना कैसें लेउ ? तातें यह वैष्णव अपने घर चल्यो गयो. तब तुलसांके मनमें खेद भयो.

तब मनमें आई जो ज्ञात व्यौहारके लिये सखड़ी न लीनी होइगी. तो भलो, परि सवेरे पूरी प्रसाद लिवाऊंगी. पाछे मेंदा छनि सिद्ध करि राख्यो. पाछे सोइ रही. ता दिन तुलसांने महाप्रसाद नाहीं लियो. पाछे रात्रिकों श्रीमथुरानाथजीने तुलसांसों स्वप्नमें कह्यो, जो सवारे वा वैष्णवकों महाप्रसाद लिवाइयो. वह वैष्णव अपने घर महाप्रसाद न लेइगो.

भावप्रकाश : यामें यह जताए, जो काल्हि उह वैष्णव महाप्रसाद लेइगो. तू चिन्ता मति करे. पाछें श्रीठाकुरजीनें उह वैष्णवकों जताये, जो तुलसांके इहां महाप्रसाद क्यों न लियो ? सवेरे लीजियो. ललिताजीकी हु आज्ञा हैं. सो ललिताजी हु कहे. तुलसांके इहां महाप्रसाद लीजो. हमारे उनके भावमें भेद

नाहीं.

वार्ताप्रसङ्ग २ : पाछे प्रातःकाल तुलसांने पूरी करी. श्रीठाकुरजीकूं जगाये. सेवा सिंगार करन लागी. इतने ही में उह वैष्णव सवारे नहायके श्रीठाकुरजीकी सेवासों पहोंचि तुलसांके घर आयो. जब तुलसां भोग समर्पिके बाहर आई. तब वा वैष्णवसों जयश्रीकृष्ण कियो. और तुलसांने कह्यो, जो उठो स्नान करो, भगवद्स्मरण करो. तब वा वैष्णवने कही, मैं स्नान करि अपरस ही में आयो हूं. (तथा कहुं वार्तामें यहू है, जो स्नान करि तिलक मुद्रा करि भगवद्स्मरण कियो) समय भये तुलसांने राजभोग सरायौ, आरती करी. वैष्णवने दरसन कियो. पाछे तुलसां श्रीठाकुरजीको अनोसर करि बाहर आई. और वा वैष्णवकों प्रसादकी पातर धरी. तामें पूरी, बूरा, दहीथरा, सन्धानो धर्यो. और कह्यो, जो प्रसाद लेउ. तब वा वैष्णवने कही, जो यह नाही लेऊंगो. सखड़ी महाप्रसाद धरो, लेऊगो. तब तुलसांने कह्यौ, कछू सङ्कोच मति करो, यह तो ज्ञातिको ब्यौहार है. तब वैष्णवने कह्यो, जो सो तो सांच. पहले तो मेरे मनमें एसी ही. परि अब तो आज्ञा भई है. तातें अब तो सखड़ी महाप्रसाद लेउंगो. तब तुलसां (ने) सखड़ी, अनसखड़ी दोऊ धरी, वैष्णवके आगे. पाछे वा वैष्णने सखड़ी प्रसाद लियो. प्रसाद ले वह वैष्णव अपने घर गयो. तब तुलसां मनमें बहोत प्रसन्न भई.

भावप्रकाश : यामे यह जताये. वैष्णव घर आवे तिनको यथाशक्ति सन्मान करनो. काहेते ? श्रीभागवतमें कहे हैं, जा घरमें जलादिनको हू सन्मान नाहीं है, वाको घर सर्पको घर बिला सो जाननो. सो तुलसांको वैष्णव पर एसो ममत्व हतो.

वार्ताप्रसङ्ग ३ : बहुरि एक समें तुलसांके घर श्रीगुसांईजी पधारे तब तुलसांने बहुत भली भांतिसों सेवा कीनी. श्रीठाकुरजी तें अधिक जानिके सेवा कीनी. तब श्रीगुंसाईजी बहुत प्रसन्न भये. और एक दिन श्रीगुसांईजी भोजन करिके पौढ़े हते. तुलसां भगवद्वार्ता करि श्रीगुसांईजीकों प्रसन्न किये. तब तुलसांसों अति प्रसन्नतामें भगवद्वार्ता करतमें श्रीगुसांईजीने श्रीमुखसों कह्यो, जो पद्मनाभदासकी सन्तति एसी ही चाहिये.

भावप्रकाश : याको अर्थ यह, जो लीलामें सखी है, एसी क्यों न होई ? तहां श्रीगुसांईजी चन्द्रावलीजी रूप हैं. सो इनको परकीया भाव श्रींठाकुरजीसों है. तातें हास्य बहोत प्रिय है. सो कटाक्षके वचन पूछे, जो श्रीठाकुरजी अपने स्वरूपानन्दको अनुभव जतावत हैं ? तुम हू तो सखी हो. श्रीठाकुरजीकी सेवा करिके वस किये हो तातें हमारे साझेमें तुमहू हो. या प्रकार व्यङ्गके वचन कहे. परन्तु तुलसां सुद्ध सात्त्विक है. इनको कटाक्ष बहोत नाहीं है. सुधी है.

पाछें श्रीगुसाईजीने तुलसांसों पूछी, जो श्रीठाकुरजी सानुभावता जतावत हैं ? तब तुलसांने कह्यो, जो महाराज ! अब तो (हम) पेट भरि खइयत है और नींद भरि सोइयत हैं. परि श्रीआचार्यजीके ग्रन्थको पाठ नित्य करियत हैं. तब श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये.

भावप्रकाश : पेट भरिके खइयत हैं. नींद भरिके सोइयत हैं. सो यह, जो जितनो रस हमारे पेटमें समात है, जैसें हम पात्र हैं, तितनो श्रीठाकुरजी अनुभव जतावत हैं. तातें श्रीठाकुरजीकी सङ्ग नींद भरि सोइयत हैं. काहेतें, हमारो स्वकीया भाव हैं. तातें सुखी हैं. चिन्ता नाही है. मुख्य अर्थ यह. और गुरु भावसों यह अर्थ, जो महाराज ! हम अनेक जन्म श्रीठाकुरजीसों विछुरिके पायो. परन्तु काहू योनिमें पेट नाहीं भर्यो. और सुखसों नींद नाहीं आई. अब आपु कृपा करिके सरन लिये. सो अबके जनममें पेट हू भर्यो. और ठाकुरजीको एक आश्रय करिके सोये हू. सगरे जनम अविधा करि दुःखमें बिताये. एक अर्थ यह.

और दैन्य पक्षमें यह, जो हमको कहा अनुभव करावें ? पेट भरिके खइयत हैं. नीन्द भरिके सोइयत हैं. जैसे पसुकों खाइबेको और सोइबेको काम. और काम परबसतें कोई लादे, जो मारे तब करे. तैसे हमहू प्रीति खानपानमें है. सेवा लोगनकी निन्दा भये तें है, जो बड़े पद्मनाभदासकी सन्तति, सेवा नाहीं करत, या प्रकार लोगनकी प्रतिष्ठा अर्थ. तातें हमको कहा अनुभव जतावें ? सूरदासजीनें गायो है. -

सूर अधमकी कौन चलावे उदर भरे अरु सोये ।

एसे अधम जो हैं, तिनकी बात नाहीं करनी. जो सरीरको सुख चाहत है. या प्रकारके हम है. परन्तु श्रीआचार्यजीके ग्रन्थनको पाठ सदा करियत हैं. ताको भाव यह, जो ऐसेहू अधमकों श्रीआचार्यजीके ग्रन्थ मात्र कहे. भावहु न जानत होइ तो पाठ ही के किये तें श्रीठाकुरजी सगरो अनुभव जतावे. तातें यह कहि अपनो पुरुषारथ नाहीं कहे. श्रीआचार्यजीको प्रताप कहे, जो उनके ग्रन्थके पाठतें कृपा प्रभु करत हैं. या प्रकार प्रेममें लपेटे बचन तुलसांके सुनिके श्रीगुंसाईजीको हृदय भरि आयो.

ऐसी भगवदीय तुलसां हती. जिनके ऊपर श्रीगुंसाईजी सदा प्रसन्न रहते तातें इनकी वार्ताको पार नाहीं. सो कहां तांई कहिये. ....वार्ता ।।४।१।।

६-पारवती

अब श्रीआचार्यजीके सेवक पद्मनाभदासके बेटा ताकी बहू पारवती तिनकी वार्ताको भाव कहते है -

भावप्रकाश : ए राजसी भक्त है. पद्मनाभदास तो चम्पकलता अष्टसखीनमें. तिनकी सखी सुचरिता, सो इहां पुरुषोत्तमदास मेहरा क्षत्री भये. सो सुन्दर चरित्र सबकों सुखरूप कार्यके करता हैं. ए. और सुचरिताकी सखी रूपविलासिनी है. सो यहां पारवती भई. सो लीलामें पारवतीको रूप बहोत सुन्दर हतो. सो राजसी है. अपनो रूप बहोत संवारती. सो रूपके गर्व तें लीलासों गिरी.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो पारवती श्रीठाकुरजीकी सेवा नीकी भांतिसों करती. पुरुषोत्तमदास मेहरा इनकों नीकी भांति सो जानते. सो जब कन्नौज जातें तब याके घर उतरते. सो एक समें पुरुषोत्तमदास मेहरा कन्नौज ते आइ. अड़ेल श्रीगुसांईजीके दरसनकों गये. यहां पारवतीके हाथ पांव सुफेद भये. तब ग्लानि दैन्यता भई. तब अपने पूर्व स्वरूपकी हू खबरि परी, जो मैं पुरुषोत्तमदासकी सखी हों. मेरो काम इन द्वारा होयगो. तब पत्र पुरुषोत्तदासकों लिख्यो, जो मेरी बिनती तुम श्रीगुसांईजीसों करियो. मेरी देहको यह प्रकार भयो है. तातें मोको सेवा

करत पाक करत बहुत ग्लानि आवति है.

भावप्रकाश : ताको आशय यह है, जो मैं (ने) श्रीठाकुरजीसों रूपको गर्व कियो ताको फल पायो. अब कब कृपा करेंगे सो श्रीगुंसाईजीसों बिनती करि लिखिये.

यह पत्र पठायो, एक मोहौर श्रीगुसांईजीकों भेट पठाई. सो पत्र पुरुषोत्तमदासनें श्रीगुसांईजीकों बांचि सुनायो. मोहौर आगे राखी. बिनती कीनी. तब श्रीगुंसाईजी पुरुषोत्तमदासकों कहे, जो दिन दोई चारिमें कहूंगो.

भावप्रकाश : सो यातें, जो लीलामें रूपको गर्व ता अपराध तें (यह) भयो. तथा और हूकोई अपराध न होइ. सो बिचारे तब और अपराध नाहीं देखे.

फेर तीन दिन पाछे श्रीगुसांईजीने पुरुषोत्तमदाससों कही. जो पारवतीकों पत्र लिखो, जो थोरे दिनमें सरीरको भोग निवृत्त होइगो. सेवामें ग्लानि मत करियो. श्रीठाकुरजी थोरे से दिनमें तेरो रोग निवृत्त करेंगे. तब पुरुषोत्तमदास मेहराने पारवतीकों पत्र लिख्यो. तामें श्रीगुसांईजीके श्रीमुखके वचन कहे सो लिखि पठाये. सो पत्र पारवतीके पास पहोंच्यो. सो पत्र बांचि पारवती प्रसन्नतासों सेवा करन लागी. सेवा करत ग्लानि मनमें न लावे. पाछे महिना तीन चारिमें. हाथ पांव नीके भये.

तब पारवती बहोत प्रसन्नतासों करन लागी. तब फेर श्रीगुसांईजीकों पत्र लिखि, पुरुषोत्तमदास मेहराकी पास पठायो. तामे लिखी, जो महाराजके प्रताप तें नीकी भई हों. और भेट पठाई. सो पुरुषोत्तमदास महेराने श्रीगुंसाईजीकों बांचि सुनायो. तब श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये. सो पारवती ऐसी भगवदीय हती. जो प्रभुनकी आज्ञा प्रमाण चलती, तातें श्रीगुसांईजी सदा इनके ऊपर प्रसन्न रहते. तातें इनकी वार्ताको पार नाहीं. सो कहां तांई कहिये. ...वार्ता ।।४।२।।

७-रघुनाथदास

अब श्रीआचार्यजीके सेवक पद्मनाभदासके नाती, पारवतीका बेटा रघुनाथदास तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं.

भावप्रकाश : पारवती लीलामें रूपविलासनी राजसी भक्त और रघुनाथदासको नाम गुनाभिरान्या. इनमें गुन बहोत, जो कोई औरसों एक दिनमें काम होइ सो एक घरिमें यह करें. सो ए तामसी है. सो दोऊ सुचरिताकी सखी बराबरिकी है. पुरुषोत्तमदास मेहराकी दोऊ आज्ञाकारिनी हैं.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो रघुनाथदास कासी गये. तहां बहोत शास्त्र पढ़िके श्रीगोकुल आये. श्रीगुसांईजीके दरसन किये. दण्डोत करी. तब श्रीगुसांईजी श्रीआचार्यजीके सेवक जानि (के) बहोत आदर सन्मान किये. आप कथा सुबोधिनीजीकी कहते. तब रघुनाथदासकों आगे बैठावते. सो एक दिन परमानन्द सोनीने रघुनाथदाससों पूछी, जो तू तो कासीमें बहोत शास्त्र पढ्यो है. सो आज श्रीगुसांईजीने कहा कथा कही है, सो कहो.

भावप्रकाश : श्रीगुसांईजी श्रीआचार्यजीके सेवक पद्मनाभदासकी सखी जानि रघुनाथदासको बहोत आदर करते. और परमानन्ददासको नाम लीलामें चन्द्रका है. चन्द्रमांकी उजियारीवत् इनकी देहकी कान्ति है. श्रीगुसांईजी (श्रीचन्द्रावलीजी) अनेक चन्द्रमारूप तिनकी अन्तरङ्गिनी यह है. तातें रघुनाथदाससों कटाक्षके वचन कहे.

तब रघुनाथदासने परमानन्द सोनीसों कह्यो, जो तुम सांच पूछो तो मैं कछू समुझत नाहीं. श्रीआचार्यजीके मारगकी परिपाटी और मारगकी बात नाहीं जानत हों. रघुनाथदासको मान सब मर्दन व्हे गयो.

भावप्रकाश : यामें यह जताए, जो शास्त्रादिक वेद पुरानके पढ़े तें श्रीआचार्यजी ग्रन्थको सिद्धान्त जान्यो न जाइ. कृपा ही की मारग है. सो कृपा हीतें जान्यो जाइ.

पाछे परमानन्द सोनीनें श्रीगुसांईजीसों कही, जो महाराज ! रघुनाथदास तो कछू समुझत नाहीं. तब श्रीगुसांईजीने रघुनाथदासकों चारि ग्रन्थ अर्थ सहित पढ़ाए (और) मारगकी प्रणालिका कही.

१. 'सिद्धान्तरहस्य' ग्रन्थमें सगरे मारगको सिद्धान्त बताए. २. 'कृष्णाश्रय' ग्रन्थमें एक आश्रय दृढ़ करि दिये. ३. 'नवरत्न' ग्रन्थमें लौकिक वैदिक चिन्ता दूर करि दीनी. ४. 'सेवाफल'में सेवाको फल बताइ दिये. पाछे रघुनाथदास समुझन लागे. श्रीगुसांईजीकी कथाको भेद लीलाको प्रकार सब जानन लागे. बड़े पण्डित भये.

वार्ताप्रसङ्ग २ : सो केतेक दिन पाछे कन्नौजमें अपने घर आज्ञा मांगिके आये भगवत् सेवामें ममत्व बढ्यो तब माता पारवतीसों कह्यो, होंतो न्यारो होउंगो. श्रीठाकुरजीकी सेवा करोंगो.

भावप्रकाश : यह कहेवेमें अभिप्राय यह है, जो पारवती और रघुनाथदास बराबरिकी सखी हैं. तामें पारवती राजसी है. और रघुनाथदास तामसी भक्त है. सो पारवतीने श्रीठाकुरजी बस किये है. सेवा करिके. सो भेद रघुनाथदासने देख्यो. सो एऊ बराबरिके तामसी. सो सह्यो न गयो. जो मेरे श्रीठाकुरजी इनने मन लगाइके बस किये है. सो अब मैं बस करों तातें पारवती तें कहे, मै न्यारो होइके सेवा करूंगो.

तब पारवतीने कही, जो भलेही सेवा करि. प्रीति काहूके बांटेमें नाहीं. श्रीआचार्यजीकी कृपा ते होइगी. पाछे रघुनाथदास न्यारे भये. सो बाकी माता पारवती जल भरि लावे. पात्र मांजे. श्रीठाकुरजीकी परचारगी सब करि पाछे अपने न्यारे घरमें आय अकेली लीटी करिके भावसों भोग धरे. पाछे जलके घूंटसों उतारके लेइ. श्रीठाकुरजीकी सेवा शृङ्गार बिना सगरो राजस खानपान देह सुख सब त्याग कियो.

या भांतिसों करत दिन द्वैचारि बीते. पाछे श्रीमथुरानाथजीने कह्यो, तू धन्य है, मेरी सेवा नाहीं छोड़े. अपनो सुख सब छोड़े. मनमें तापहू बहूत है कियो. अब तू कबहु तो दारि करि. मेरो गरो अकेली लीटी लेत खरखरात है. तब पारवतीने कह्यो, जो महाराज ! तुम तो रघुनाथदासके इहां दारि भात खीरि आदि सब सालन सामग्री नित्य अरोगत हो. गरो क्यों खरखरात है ? तब श्रीठाकुरजीने पारवतीसों कह्यो, जो मोको तो तेरो कियो भावत है. तातें लीटी अकेली अरोगत हों.

भावप्रकाश : यह कहि (यह) जताए, जो प्रीतिकी लीटी मोकों प्रिय है. अहङ्कार करि छप्पनभोग प्रिय नाहीं है. रघुनाथदासके इहां हू अरोगत हों. श्रीआचार्यजीकी का'नि तें. परन्तु तेरो कियो बहोत भावत है. यह कहि यह जताए, जो भक्तजन सुख लेइ श्रीठाकुरजी लिये जानिए. और इतनो कहे पारवतीसों, सो पारवतीके लिये. जो मैं अपने गरेको नाम लेउंगो, तब यह सगरी सामग्री करेगी. पाछें प्रसाद लेइगी. तब मोको सुख होइगो.

या प्रकार पारवतीको सुख विचारे. तब पारवती सगरी सामग्री अपने घर करनकों दौरी आवती दारि, भात, सालन सब करती. पारवतीने विचार्यो, जो ठाकुरजी सुखी होइ सो करनो.

पाछे रघुनाथदास कछूक दिन सेवा करी. पाछे ज्ञान भयो. जो पारवतीकी सेवा अहङ्कार करि छुड़ाई. तातें प्रभु मोपर अप्रसन्न हैं ! तातें भगवदीयसों मिलिके चलूंगो, तो श्रीठाकुरजी प्रसन्न होइंगे. अहङ्कार किये मेरी यहू सेवा जाइगी. यह ज्ञान श्रीगुसांईजीने मारगको सिद्धान्त बतायो हतो, तातें उनकी कृपा तें भयो. तब रघुनाथदास पारवतीसों कहे, माता ! अब तुम ही सेवा करो. तुम आज्ञा करोसों मैं करुं. मैं चूक्यो. तब पारवतीकों कछू ईरष्या तो नाहीं. सो प्रसन्न होइ रसोई करन लागी. रघुनाथदाससों शृङ्गारादि करावे. या प्रकार एसें करत पारवतीके सङ्ग करि रघुनाथदासकों प्रीति भई. तब दोऊनकों बराबर अनुभव होन लाग्यो. या प्रकार पद्मनाभदासको परिवार अलौकिक भयो. या प्रकार वैष्णव सात भये. परन्तु पद्मनाभदासके कुटुम्ब सहित वार्ता एक जाननी, तातें वैष्णव ४ भये. ....।।वार्ता।।४।।

८-रजो क्षत्राणी

अब श्रीआचार्यजी सेवक रजो क्षत्राणी तिनकी वार्ताको भाव कहत है -

भावप्रकाश : सो रजो क्षत्राणी लीलामें ललिताजीकी सखी हैं. इनको नाम रतिकला है. रति, जो प्रीति ताकी कला. अथवा रति, जो विहार ताकी कला, जो जिनकों श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजीको विहार सिद्ध हो. यही भावमें मगन है. और जानत ही नाहीं. श्रीस्वामिनीजीके लिये नाना प्रकारकी सामग्री करनी. निकुञ्जादिकमें रात्रिकों दुधादिक अरोगावनो. यह ललिताजीकी सेवा है. तातें यहां हू रजोकों यह नेम, जो रात्रकी सामग्री नित्य नेमसों श्रीआचार्यजीको अरोगावनो. सों लीलामें रतिकलाकों बहोत ताप हतो. जो स्वामिनीजीकों परोसो (एसो) भाग्य मेरो कब होय ? काहेतें, (जो) अरोगावनो सो ललिताकी सेवा है. सो कैसे मिले ? ललिताजी तो अत्यन्त प्रिय मध्याजी हैं. सगरी लीलाकी सिद्धि करता. सो ताप रतिकलाके हृदयको है. (सो) अब श्रीआचार्यजी (श्रीस्वामिनीजी) मनोरथ पूरन करें ताप मिटाए. काहेतें ? नारायणदास ब्रह्मचारी ब्राह्मन हते. तिनकी करी खीरि श्रीगोकुलचन्द्रमाजी खीरि लेवेकों श्रीआचार्यजीसों कहे. तब श्रीआचार्यजी कहे, पाक कैसे लियो जाइ ? पाछे श्रीगोकुलचन्द्रमाजीके ग्रन्थ (वाक्य) तें लिये.

और इहां रजो क्षत्राणी हती. ताकी अनसखड़ी आप नित्य नेमसों लेते. सो लीला सम्बन्धको भाव विचारिके. तथा रजो एकाङ्गी अनन्य भक्तके बस होइके सो प्रेमके भरतें मर्यादा छूटी जाय. यामें रजोको प्रेम जताए. रजोके प्रेमतें मर्यादा स्वरूपको तिरोधान होइ जातो. लीला रसमें मगन होइ सामग्री अङ्गीकार करें.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो रजो नित्य पकवान सामग्री करि रात्रकों ले आवती. सो श्रीआचार्यजी महाप्रभुन अरोगते. वाके नेम हतो.

सो एक दिन लक्ष्मन भटटको श्राद्ध दिन हतो. सो श्रीआचार्यजीने ब्राह्मण भोजनकों बुलाए हते. तहां घृत थोरो सो चहियत हतो. तब श्रीआचार्यजीने एक वैष्णवसों कह्यो, जो रजोके इहां ते घृत ले आवो. सो एक वैष्णव जाइके रजोसों कह्यो, जो श्रीआचार्यजी घृत मंगायो है. तब रजोने वा वैष्णवसों कह्यो, जो घृत काहेको मंगायो है ? तब वा वैष्णवने कह्यो, जो लक्ष्मण भटटजीको श्राद्ध दिन आज

है. सो ब्राह्मण भोजनकों बुलाए हैं तहां घृत घट्यो है. सो तातें मंगायो है. तब रजो न कह्यो, जो धृत मेरे नाहीं है, जाय कहियो. तब वैष्णव फिरि आयो. और श्रीआचार्यजीसों कह्यो. जो महाराज ! रजोके घृत नाहीं है. तब श्रीआचार्यजी कहे. जो एकबार तू फेरि जा. खीजिके कहियो जो घृत दे. तब वह वैष्णव फेरि आयो. रजोसों कह्यो, जो श्रीआचार्यजी खीझत हैं. तातें घी देउ. तोहू रजोने घृत दीनो नाहीं. कह्यो, मेरे घृत नाहीं है. कहां ते देऊं ? तब वैष्णव फिरि आय श्रीआचार्यजीसों कह्यो, जो महाराज ! रजो घृत नाहीं देत. पाछे और ठौरतें घी मंगाइ काम चलायो. पाछे रात्र भई. तब रजो सामग्री सिद्ध करि श्रीआचार्यजीके पास आई. तब श्रीआचार्यजी पीठि दे बैठे. तब रजोने कह्यो, जो महाराज, जीव तो दोष ते भर्यो है. अपराध कहा, जो आप दरसन नाही देत ? तब श्रीआचार्यजीने कह्यो, जो आज लक्ष्मण भटटजीको श्राद्ध हतो. सो तेंने घृत क्यों नाहीं दीनो ? तब रजोने कही, मेरे घी नाहीं हतो. तब श्रीआचार्यजीने कही, सामग्री कहां ते करि लाई ? तब रजोने कही महाराज ! आपुके घरमें घी हतो क्यों नाही लिये ? तब श्रीआचार्यजी कहे उह तो श्रीठाकुरजीको हतो. वामें ते कैसे लियो जाई ? तब रजोने कहा, मेरे घरमें कौन है ? श्रीठाकुरजी तें अधिक आपको स्वरूप है. सो आपकी लीला - सम्बन्धी सामग्रीमें ते श्राद्धमें कैसे देऊं ? और मैं लक्ष्मन भट्टकी लोण्ड़ी नाहीं हों. मैं तो आपकी लोण्ड़ी हों, आप मेरी परीक्षा लेन अर्थ घी मंगायो. सो पहले वैष्णव पठायो तब तो लौकिक आवेससों घी घट्यो. तब आपु कहे, रजोसों ले आवो. यह लौकिक प्रवाह आज्ञा जानिके मैंने घीकी नाहीं करी. सो पाछें आपु यह मनमें विचारे, जो श्राद्धके लिये ब्राह्मण भोजनमें बेगे चाहिये. फेरि जो उह वैष्णव आईके कह्यो, जो खीजिके कहे घी देहू. तब मैं मर्यादा जानी. जो पुष्टि कार्यमें क्रोधको प्रयोजन है नाहीं. काहेतें. भावहीसों सगरी वस्तु सिद्ध है. और मर्यादामें तो वेउ - वस्तु बिना कर्मको नास होई. (वस्तु तें) पूरनता है. तातें वस्तुके लिये क्रोध है. जो यह वस्तु आवश्यक चाहिये. तातें मर्यादाकी आज्ञा हु नाहीं माने. और मर्यादाके कार्यार्थ घी हू नाहीं दियो. पाछे तीसरे पुष्टिके आबेस ते मांगते तो मैं घी देती. और आपको घी मंगावनो हतो. (तो) इतनो उह वैष्णवसों कहि देते, जो रजोसों कहियो. तेरे पुष्टि - धर्ममें हानि नाहीं है, घी दीजो. तो में काहेकों फेरती ? और महाराज ! जानि बूझिके कूआमें कैसे परूं ? आपुकी कृपा तें इतनो ज्ञान भयो तब मैं घी नाहीं दियो. आपु तो बुद्धि प्रेरक हो. मेरे हृदयमें बैठिके घी देवेकी नाहीं कहे. उहांके घी मंगाये. सो मैं बिना मोलकी दासी हों. आपु कृपा करिये.

भावप्रकाश : याही ते शिक्षापत्रमें कह्यो है. श्रीठाकुरजीकी आज्ञा तीन प्रकारकी है. लौकिक आज्ञा प्रवाहसेके करन अर्थ. याही तें श्रीभागवतमें लौकिक आदि कार्य यह तीन ही बरनन हैं. अलौकिक कार्यमें श्रीठाकुरजीको आश्रय और भगवदीयको सङ्ग. वैदिक कार्यमें तीर्थ देव - पूजा कर्मादि. लौकिकमें कुटुम्ब पालनो खानपान सरीरको सुख. सो तीन्यों फलहू न्यारे - न्यारे कहें है. लौकिक तें संसार. वैदिक तें स्वर्गादिक. अलौकिक तें भगवद् प्राप्ति. या प्रकारके भेदसों घी नाहीं दियो.

तब श्रीआचार्यजी प्रसन्न होइके दरसन दिंये. तब रजोने सामग्री श्रीआचार्यजीके आगे राखी. और कह्यो, जो अरोगो. तब श्रीआचार्यजीने रजोसों कह्यो, जो आजु श्राद्ध दिन है. सो दूसरी बेर लेनो नाहीं. तब रजोने कह्यो, जो महाराज ! घरकी होइ सो लोगनके मर्यादाके लिये मति लेहू. यह तो लियो चाहिए.

भावप्रकाश : ताको अर्थ यह, जो लीलाके भावसों अपने निज स्वरूपसों अरोगो. अब मर्यादोको आवेस कहां राखोगे ? लीलाके आवेसमें मन दीजे. भक्तनको मनोरथ पूरन करो. इतनो सुनत ही आप (में) पुष्टिलीलाको आवेस व्हे गयो. मर्यादाकी आज्ञा सब जात रही. सामग्री अरोगे. जैसे परमानन्दजी गाये, ''हरि तेरी लीलाकी सुधि आवे''. इतनो सुनत ही तीन दिन लों सरीरको अनुसन्धान न रह्यो. एसे लीलामें आवेस होइ, रजोको मनोरथ पूरन किये. तातें रजो एकाङ्गी भगवदीय है.

तब रजोके आग्रह तें श्रीआचार्यजी ताहू दिन सामग्री अरोगे. सो वह रजो क्षत्राणी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी एसी कृपापात्र भगवदीय ही. तातें इनकी वार्ताको पार नाहीं ! सो कहां ताई कहिये. ....।।वार्ता।।५।।

९-सेठ पुरुषोत्तमदास

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके सेवक, सेठ पुरुषोत्तमदास काशीमें रहते तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : सेठ पुरुषोत्तमदासकों दामोदरदास सम्भलवारेको सङ्ग है. जब तांबेको पत्र बंचाइवेकों कासी गये ता दिन तें सेठकों आचार्यजीके दरसनकी आरती भई. सो श्रीआचार्यजी पहली पृथ्वी परिक्रमा करि कासी पधारे. तब सेठने मनिकर्निका घाट पर श्रीआचार्यजीके दरसन पाये. सो कृष्णदाससों पूछे, श्रीआचार्यजी दक्षिण देसमें कृष्णदेव राजाकी सभामें मायावाद खण्डन किये हैं, सोई हैं ? तब कृष्णदास मेघनने कही, एही हैं. तब सेठ पुरुषोत्तमदास श्रीआचार्यजीके सन्मुख जाइ दण्डोत् किये. बिनती करी, महाराज ! कृपा करके सरन लीजे. कृपा करि घर पावन करिए. तब श्रीआचार्यजी दैन्यता देखि सेठके बेटा गोपालदास आदि सबकों नाम सुनाए, ब्रह्मसम्बन्ध कराए. तब सेठनें बिनती करी, महाराज ! अब हमकों कहा कर्तव्य है ? तब श्रीआचार्यजी कहे, भगवत् सेवा पुष्टिमार्गकी रीतिसों करो. सो सेठके घर श्रीमदनमोहनजी ठाकुर हते.

पास हजार दस पन्द्रह रुपैया हतो सो घर बनाए. सो नींवमें तें श्रीमदनमोहनजी ठाकुर निकसे. और द्रव्य बहुत निकस्यो, करोड़धुजी कहाए. साठ करोड़ द्रव्य पाये. सो पिता कछुक दिन श्रीमदनमोहनजीकी पूजा करि देह छोड़े. पाछे सेठने पूजा बहोत दिन लों करी, द्रव्य बहोत कमाए. श्रीमदनमोहनजीकों आचार्यजीने पञ्चामृत स्नान कराए. पाट बैठाए. सेठके माथे पधराए.

सो सेठ पुरुषोत्तमदास लीलामें श्रीस्वामिनीजीकी सखी हैं. इन्दुलेखा इनको नाम है. और सेठकी बेटी रुक्मिनी इन्दुलेखाकी सखी, मोदनी नाम है. और गोपालदास सेठको बेटा, सो इन्दुलेखाकी सखी गानकला है. सो सेठ पुरुषोत्तमदास श्रीमदनमोहनजीकी राजसेवा करते. बावन बीड़ाको नेग हतो. याको कारन यह है, जो लीलामें बीड़ा अरोगाइवेकी सेवा इन्दुलेखाकी है. तातें पुरुषोत्तमदासने बावन बीड़ा राखे. सो श्रीठाकुरजीके भावतें बीस, और बतीस बीड़ा श्रीस्वामिनीजीके भावतें. याकौ आसय यह, जो श्रीठाकुरजीकों बिस्वास प्रिय है. तातें बीसों बीस्वा निश्चयात्मक दृढ़ विश्वास जताइवेकों बीस बीड़ा, श्रीठाकुरजीके भावतें. श्रीस्वामिनीजीकों शृङ्गार प्रिय हैं, तातें जुगल रूपके सिंगार सोरह दूने बत्तीस भये. या प्रकार श्रीस्वामिनीजीकों प्रसन्न किये. या प्रकार कहि(यह जताए, जो) जितनी सेवा सेठ पुरुषोत्तमदास करते, सो भावपूर्वक करते. सामग्री वस्त्र आभूषण हू में. और श्रीमदनमोहनजीकी सेवा श्रीठाकुरजीके भावतें अधिक श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके भावतें करतें. तातें श्रीआचार्यजी प्रसन्न होइकें श्रीमदनमोहनजीके दोऊ चरन स्याम दरसना कराए. तोको आसय यह, जो सर्वाङ्ग गौर, सो तो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुको निजस्वरूप - श्रीस्वामिनीजीको श्रीअङ्गवर्ण. तामें चरन स्यामको अभिप्राय, निकुञ्जादिक लीलामें श्रीठाकुरजी

दूसरे स्वरूप (श्रीस्वामिनीजी) के चरनाश्रित हैं. तातें श्रीठाकुरजीके भावतें श्रीआचार्यजीकी सेवा दिखाए. या प्रकार सेठ पुरुषोत्तमदास पर अनुग्रह श्रीआचार्यजी किये.

सो श्रीमदनमोहनजीको श्रीआचार्यजीने पञ्चामृत स्नान कराइ पाय बैठारे, सेठके माथे पधराए.

वार्ताप्रसङ्ग १ : और सेठ कासी मुख्य बिश्वेस्वर महादेव, सो कासीके राजा है, तिनके दरसनको कबहू नहिं जाते सो एक दिन बिस्वेस्वर महादेवने स्वप्नमें सेठ पुरुषोत्तमदाससों कह्यो, जो गांवको नातो तुम नाहीं राखत तो वैष्णवको नातो राखो, कबहू हमकों महाप्रसाद तो दिया करो. तब सबेरे सेठ पुरुषोत्तमदास सेवासों पहोंचिकें महाप्रसादको डबरा बीरा ले बिस्वेस्वर महादेवके देवालयकों चले. तब गांवके लोग सब आश्चर्य ह्वे रह, जो सेठ कबहू नाहीं आवते सो आजु क्यों आये ? सो कितने लोग सङ्ग सेठके चले. सो सेठ महाप्रसादको डबरा बीड़ा चारि धरे. श्रीकृष्णस्मरण करिके उठि चले. तब बड़े - बड़े सैव ब्राह्मण हते सो सेठ पुरुषोत्तमदाससों कहे, तुम दण्डवत् नमस्कार नाहीं किये ? श्रीकृष्णस्मरण करि उठि चले सो उचित नाहीं. तब सेठ पुरुषोत्तमादासने कही, हमारे इनके भगवत् स्मरणको व्यौहार है. तुम पूछि लीजो. तुमसों बिस्वेस्वर महादेवजी कहेंगे.

सो उन ब्राह्मणमें एक ब्राह्मण महादेवजीको कृपापात्र हतो. सो उन ब्राह्मणसों महादेवजीने कही, जो हमने सेठसों महाप्रसाद मांग्यो हतो. हमारे इनके भगवत् स्मरणको व्यौहार ही है. तातें इनसों और कछु मति कहियो, ता पाछें बड़े उत्सवके पाछें महाप्रसाद बिश्वेस्वर महादेवकों ले जाते.

भावप्रकाश : यह कहिवेको अभिप्राय यह, जो सेठ पुरुषोत्तमदास अब सेवक भये तब इनकी आज्ञामें सगरे लोग द्रव्य अर्थ रहें. सो महादेवजीने जाने, जो अब सगरे अनन्य होंइगे. तो हमारो माहात्म्य हू घटि जायगो, और भगवद् आज्ञा कलिकाल आयो, सो जीवनकों बहिर्मुख करने हैं. और सेठ पुरुषोत्तमदासने भक्ति फैलाईसों इनसों तों कछू चले नाहीं. तब महादेवजीने यह उपाइ कियो जो सेठजी तो महाप्रसाद देंन जाइ, ता करि सगरे लोग

महादेवजीके देवालय जान लागे, जो कोउ बरजे जो उत्तर करें, सेठजी सरीखे जात हैं तो हमारी कहा ? महादेवजी बड़े भगवदीय हैं. या प्रकार जीव बहिर्मुख भये. परन्तु यह न जाने, जो सेठकों आज्ञा भई सो गये, परन्तु रुक्मिनी गोपालदास कबहूं नाही गये, हम कैसे जाइ ! परन्तु सबकों उत्तम फल नाहीं देनो है. तातें सेठ पुरुषोत्तमदास हू गये.

वार्ताप्रसङ्ग २ : और एक दिन बिस्वेस्वर महादेवजीने कालभैरवकों, कोतवाल कासीके हते, तिनसों कह्यो, जो सेठ पुरुषोत्तमदास वैष्णवनके घरतें अर्द्धरात्रिकों आवत हैं अवेरे सवेरे, सो सेठ पुरुषोत्तमदासके घरकी चौकी दीजो. कोई छलावा, चोरादिक उपद्रव न करे. तब कालभैरव नित्य सेठ पुरुषोत्तमदासके घरकी चौकी पहरा देते.

सो एक दिन वैष्णवके घरतें अद्धरात्रि समें सेठ पुरुषोत्तमदास आवत हे. सो घरके द्वार ऊपर तब काहुकों देख्यो. सो पाछें फिरिकें देखें तब पूछे, जो तू कौन है ? तब कालभैरवने कह्यो, जो मोकों महादेवजीने तिहारे घरकी चौकी पहरा देवेकी कही है, सो नित्य चौकी देत हों. तब सेठ पुरुषोत्तमदास बोले नाहीं, किंवाड़ दै घरमें आये.

भावप्रकाश : यह कहिके यह जताये, जो सेठ ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते. परन्तु वैष्णवके सङ्ग अर्थ आपु चलाइके जाते. तातें वैष्णवको सङ्ग अवश्य करनों. काहेतें ? श्रीआचार्यजी लिखे है, ''पोषकाभावे तु शिथिलम्'' (अर्थात्) पोषकको अभाव होई तब मन सिथिल व्हे जाइ, भक्ति घटि जाइ. सो पोषण सत्सङ्ग तें होइ.

और कालभैरवकों महादेवजी राखे सो यातें, जो कासीमें भूत, छलावा बहोत, तथा चोरादिक. सो महादेवजी बिचारे, जो मोकों भगवानने कासीको राज दियो है, जातें या गांवमें अन्याव होइ सो मेरे माथें. तातें भगवदीयको कछू बिगार होइ तो भगवान् मोपर अप्रसन्न होइ जाई. और सेठजी हमकों महाप्रसाद (हू) कृपा करिकें दिये, हमारो तो कछू लेत नाहीं. तातें इतनी चौकसी तो करि चाहिये. तातें कालभैरवसों चौकी पहराकी कहे. (सो यातें), जो कदाचित् कछु बिगार हू होइ तो दण्ड कालभैरवके माथें. तातें आपु नांही देंय.

वार्ताप्रसङ्ग ३ : और एक दक्षिण देसको ब्राह्मण कासीमें आयो, सो सैवी महादेवजीको कृपापात्र हतो. जब महादेवजी दरसन देइ तब वह ब्राह्मण खानपान करे. सो एसें करत जन्माष्टमीको उत्सव आयो. सो सेठ पुरुषोत्तमदास बड़े मण्डानसों जन्माष्टमीको उत्सव करते. सो महादेवजी जन्माष्टमीके दिन सेठ पुरुषोत्तमदासके घर आये. सौ नौमीकों नन्दमहोत्सव पाछें दुपहरकों मन्दिरमें आये. वह तब ब्राह्मणकों दरसन भयो. तब वह ब्राह्मणनें विस्वेस्वर महादेवजीसों पूछ्यो, जो काल्हि तिहारो दरसन नाहीं भयो. आजु दुपहरकों भयो, ताको कारन कहा ? तब महादेवजीने कही, मैं जन्माष्टमीको उत्सव देखनकों (सेठके घर) गयो हो, काल्हि सवारे तें. सो आजु आयो. तब वह ब्राह्मणनें कही, जो एसे सेठ कौन हैं ? जिनके घर तुम उत्सव देखन जात हो ? तब विश्वेस्वर महादेवजीने कही, जो वे बड़े भगवद् भक्त हैं, हमसों श्रेष्ठ हैं.

भावप्रकाश : ताकौ यह अर्थ, जो सेठ पुष्टिमार्गीय भगवद् भक्त हैं, हम मर्यादामार्गीय हैं.

तब ब्राह्मणने कह्यो, जो ऐसे भगवद् भक्त हमहूकों करो. तब महादेवजीने कह्यो, सेठ पुरुषोत्तमदासके सेवक जाइके होइ. वे नाम सुनावत हैं, उनकों श्रीआचार्यजीकी आज्ञा है. तब वह ब्राह्मणने कही, जो तुम ही नाम सुनावो. तब महादेवजीने कही, जो हमारो दियो नाम फलेगो नाहीं.

भावप्रकाश : ताको अर्थ यह, हमारो नाम दिये मर्यादाभक्तिको अधिकारी होइगो. तातें पुष्टिमार्गको अधिकार उनहींको है.

तब वह ब्राह्मण सेठ पुरुषोत्तमदासके द्वार पर आइ सेठकों खबर कराई. तब मनुष्यननें कही, एक ब्राह्मण तुमसों मिलन आयो है. तब सेठनें कही, जो माथो खाली करन आयो होइगो.

भावप्रकाश : याको अर्थ यह, जो महादेवजीको भक्त है, नाम सुनेगो, परन्तु दृढ़ भक्ति बहुत दिन लों पचेंगे तब होइगी.

पाछें सेठ सेवा तें पहोंचिके बाहिर आये. तब वह ब्राह्मणने दण्डवत् कियो. तब सेठ पुरुषोत्तमदासने कही, तुम यह अनुचित क्यों करत हो ? हम क्षत्रिय हैं, तुम ब्राह्मण होइके दण्डवत करत हो ? तब उह ब्राह्मणने कही, जो हमकों नाम देहु, सेवक करो. तब सेठने कही, हम तो काहूकों नाम देत नाहीं. सेवक नाहीं करत.

भावप्रकाश : ताको अर्थ यह, नाम देवे वारे, सेवक करवे वारे तो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु हैं. यह बात तो वह ब्राह्मण समुज्यो नाहीं.

तब बहोत आग्रह किये, परन्तु सेठने नाम नाहीं दियो. तब महादेवजी पास फिरि आयो. कह्यो - सेठ तो नाम नाहीं देता. तब विश्वेस्वर महादेवने कह्यो, जो तू फेरि जाइकें सेठजीसों कहियो, जो मोकों महादेवजीने पठायो है. जो अबकें नाहीं फेरेंगे. तब वह ब्राह्मण फेरि आइकें सेठजीसों कही, जो मोकों महादेवजीने पठायो है, सो नाम देउ.

भावप्रकाश : ताको यह अर्थ, जो जीव पुष्टिमार्गको है. तातें नाम देऊ.

तब सेठने उह ब्राह्मणकों नाम सुनाय हाथ जोरिकें जैश्रीकृष्ण कियो. तब वह ब्राह्मणने कह्यो, तुम मोकों नाम सुनाए. अब हाथ जोरिकें नमस्कार क्यों करत हो ? तब सेठने कही, हम श्रीआचार्यजीकी आज्ञा तें नाम देत हैं. हमारे तिहारे गुरु श्रीआचार्यजीमहाप्रभु हैं. जब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु पधारें तब उनके पास फेरि नाम सुनियो. हमारे तिहारे भगवत् स्मरणको व्यौहार भयो. पाछें वह ब्राह्मण अड़ेलमें जाइ श्रीआचार्यजीके पास नाम निवेदन पाये. तब वह कछूक दिन रहि दक्षिण देस गयो. वैष्णव भयो.

भावप्रकाश : यह वार्तामें यह सन्देह हैं, जो महादेवजी जन्माष्टमीको उत्सव देखन सेठ पास आये. सो श्रीआचार्यजी सम्बन्धी लीला (है), सो

गोपालदास गाये हैं -

यह मारग श्रीबल्लभवर नो, जहां नहिं प्रवेश विधि हर नो ।

यहां यह भाव जाननो, जो सेठके घर सारस्वत कल्पकी पूर्णावतारकी लीला है. तहां सगरी लीला हैं. सो महादेवजीकों कल्पान्तरकी लीला, सो अंसकला है, ताको अनुभव भयो. यह कहि यह जताए. जो श्रीआचार्यजीके ठाकुर हैं, तहां पुष्टिमार्गीय वैष्णवको पूर्ण पुरुषोत्तमके स्वरूपका दरसन होइ. अन्यमार्गीकों ऐसे दरसन न होंइ. तातें महादेवजी उह ब्राह्मणसों कहे, जो सेठके सेवक होउ. तब तुमारो पुष्टिमार्गमें अङ्गीकार होइगो.

वार्ताप्रसङ्ग ४ : और सेठ पुरुषोत्तमदास एक दिन मन्दिरमें बैठे मन्दिर वस्त्र करत हते. सो दूरितें गोपालदास देखिके मनमें बिचार कियो, जो अब सेठजी वृद्ध भये है. तातें अब मैं सेवामें तत्पर होउं. तब गोपालदास न्हाइ आये. तब गोपालदासके मनकी जानिके बुलाए. बेटा ! आगे आउ. तब गोपालदास निकट आइकें देखे तो बीस पच्चीस बरसके सेठ हैं. तब सेठ पुरुषोत्तमदासने गोपालदाससों कही, जो भगवदीय सदा तरुन हैं. परन्तु जो अवस्था होइ ताको मान दियो चाहिए. तातें आजु पाछें ऐसी मनमें मति लाइयो.

भावप्रकाश : याको अर्थ यह, जो गोपालदासके मनमें यह आई, जो मैं तरुन हों, सेठजी वृद्ध हैं, अब मैं सेवामें तत्पर होउं. या बातमें गोपालदासको बिगार जान्यो, जो तू, हम कहा सेवा करेंगे ? श्रीआचार्यजी जापे कृपा करेंगे वासों ही श्रीठाकुरजी सेवा करावेंगे. सो तरुन कहा, वृद्ध कहा ? आजु पाछें कबहू मति लाइयो. सो या प्रकार मान मर्दन करि वेगिही, समुझाए. काहेतें ? गोपालदास लीलामें सेठकी सखी हैं, तातें ए न समुझावें तो और कौन समुझावें ?

वार्ताप्रसङ्ग ५ : और एक समय सेठ दक्षिणमें गये. तहां जारखण्डमें मन्दार पर्वत है, ताके ऊपर मन्दारमधुसूदन ठाकुर हैं. सो उह पर्वत तें मनुष्य गिरै तो चोट न लगै, अनजाने. और जानिके सगरे पार कहिकें ऊपर तें गिरे तो देह छूटे. पाछे दूसरे जनममें कामना सिद्ध

होय. एसो वा पर्वतको माहात्म्य लोकमें प्रसिद्ध है.

तहां एक बेर श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमा करत पधारे है. तहां एक समय सेठ पुरुषोत्तमदास और एक ब्राह्मण वैष्णव विरक्त सङ्ग दोउ जने गये. सो उहां रात्रि व्है गई. तातें पर्वत पर सोइ रहे. अर्द्ध रात्र समय एक ब्राह्मण - सिद्धको रूप धरि श्रीठाकुरजी आपु आये. तब सेठ बोले नाहीं. उह अैष्णव सेठके सङ्गको पूछे, जो तुम कौन हो ? तब उन कह्यो, जो मैं ब्राह्मण हों, या पर्वत पर रहत हों. तुम कौन हो ? तब वाने कही हम श्रीवल्लभाचार्यजीके सेवक हैं. तब उन ब्राह्मणने कही, हमारे पास मणि है, तु लेउगे ? तब वैष्णवने कही, मणिमें कहा गुण है ? तब उह ब्राह्मणने कही, जितनों द्रव्य चाहिए सो मणिसों मिलै. तब उह विरक्त वैष्णवने कही, जो मैं कहा करूंगो ? जगदीस सेर चून देइगो. तातें सेठ पुरुषोत्तमदास गृहस्थ हैं, इनकों बहोत खरच हैं, इनकों देउ. तब ब्राह्मणने कही, जो सेठजीकों जगावो. तब उह वैष्णवनें जगाइके सेठजीसों कही, यह मणि लेउ. यासों जितनों द्रव्य चाहिये तितनो होइगो. तब सेठ पुरुषोत्तमदासने कही, जो हमारे तो मणि नाहीं चाहिए. तब उह सिद्ध ब्राह्मण मणि लेके फिरि गयो. तब वैष्णवने सेठजीसों कहो, तुम मणि क्यों न लिये ? तब सेठने कही, तू क्यों न लियो ? पहले तो तोकों देत हो. तब उह वैष्णवने कही, मै विरक्त हों, मणि कहा करूंगो ? जगदीस सेर चून जहां तहां तें देइगें. तब सेठने कही, तोकों सेर चून देइगें तो मोकों दस सेर हू देइगें. कहा जगदीसके कछु टोटो है ? सो ब्राह्मण बावरे ! मैं श्रीठाकुरजीको आश्रय छोड़ि मणिको आश्रय करूं ? पाछे सेठ अपने घर आये.

भावप्रकाश : यह वार्तामें बहोत सन्देह हैं, जो सेठ सेवा छोड़िके दक्षिण क्यों गये ? इनके कछु कामना तो नांही. सो दक्षिणमें उहां मधुसूदन ठाकुरके वहां क्यों गये ? तहां कहत हैं, जो सेठके मनमें यह आई, जो दक्षिणमें श्रीआचार्यजीको जनम है. सो जनमस्थानके दरसन करि आऊं, ताके लिये दक्षिण गये. तब मन्दार मधुसूदन ठाकुर सेठजीसों कहे, जो तुम कृपा करिकें या पर्वतमें मेरे पास आओ तो या स्थलको पाप दूरि होय. काहेंते ? मेरे यहां अनेक पापी आवत हैं, सो कोऊ पर्वततें माहात्म्य सुनकें गिरत है. सो उनके पाप बहोत भये हैं. तातें सगरे तीर्थ गङ्गाजी आदि भगवदीयके आइवेको मार्ग देखत हैं. तातें तुम या देसमें आये हो तो पवित्र करो. और तुम आवोगे तो या तीरथको माहात्म्य बढैगो. तिहारो तो कछू बिगरे है नाहीं, प्रभुके आश्रयतें. या प्रकार मन्दार मधुसूदन कहे. तब सेठजी उह परवत पर गये. तब मणि लेइके लुभ्याए. परन्तु सेठजी निष्काम हैं, इनको कछु डर नाहीं. तातें, जो एसे

निष्काम होइ वामें तीर्थकों पवित्र करिवेको सामर्थ होय तिनको बाधक न परें. और सकामीकों तीर्थ हू बाधक है. यातें, जो उह स्थलके माहात्म्य तें पर्वत तें गिरै तब मनोरथके फल पावें. यह कहि जताये, जो मनोरथ कामना कछु वस्तुकी कामना भई तब पुष्टिमार्गसों गिरै. और निश्चय मणि न लिये ताकौ अभिप्राय यह जताए जो बिना मांगे (हू) कछु फल मिलै ताके लियेमें (भी) बाधक अन्य - सम्बन्ध होई, तो कामनातें तो निश्चय अन्याश्रय होय. तातें सेठनें विरक्त वैष्णवसों कही, जो ''बावरे'' ताकौ कारन यह, जो मणि आदि कछू फल देंन आवें, तासों बोलनो नाहीं, आपुहि चल्यो जाइ. या प्रकार सेठके दृढाश्रय हतो.

वार्ताप्रसङ्ग ६ : और एक समय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कासी पधारे. सो सेठ पुरुषोत्तमदासके घर उतरे. तब सेठ पुरुषोत्तमदासके ठाकुर श्रीमदनमोहनजीकों पञ्चामृत स्नान कराइ आपु भोग धरि भोजन किये. तब दामोदरदास हरसानीने श्रीआचार्यजीसों बिनती करी, जो महाराज ! यह कहा ? यहां पञ्चामृत ठाकुरकों न्हवाए ? तब श्रीआचार्यजी कहे, जदपि यह हमारी आज्ञा तें नाम देत है, तऊ इतनी मर्यादा राखी चाहिए.

भावप्रकाश : याको आसय यह, जो सेवक करें ताके सन्मुख शिष्यके पाप आवत हैं, सो गुरु सामर्थ्यवान होइ, सो पापकों जरावे. सो सेठ जदपि मेरी आज्ञातें नाम देत हैं, भगवदीय हैं, तातें पाप कहा करें याकों ? परन्तु तऊ मर्यादासों सेव्यकों पञ्चामृतके न्हवाएतें सेठके पञ्चतत्वको सरीर सुद्ध होय, एक यह गौणभाव. और उत्तम भाव यह, जो सेठ श्रीमदनमोहनजीकी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुके भावसों सेवा करत हैं. तातें श्रीआचार्यजी पञ्चामृत स्नान कराइ, श्रीगोवर्द्धनघर रूप करि भोग धरत हैं. यह मुख्य भाव जाननो.

वार्ताप्रसङ्ग ७ : बहुरि एक दिन कासीके राजाके मनमें आई, जो सेठ पुरुषोत्तमदाससों हम मिलिए. सो राजा गङ्गा पार रहत हतो. तहां ते प्रातःकाल आयो. ता समय सेठजी छोटी परदनी पहरे गोबर सङ्केलत हते. तब सेठके लोगननें सेठसों कह्यो, जो तुमसों मिलनकों राजा आवत हैं. सो आछे वस्त्र पहरिकें गादीपर बैठो. तब सेठ कहे, जो आवन दे. राजाको कहा डर है ? तब राजा आयो. तब सेठ गोबर भरे हाथ राजाके आगे आये. तब राजा चतुर हतो सो कहे, सेठजी ! तुम धन्य हो. या संसारमें मान बड़ाइ एक तिहारी छूटी है.

तब सेठनें कही, हम गृहस्थ हैं, घर को काम कर्यो चाहिए. तब राजा प्रसन्न होइके घर गयो. या प्रकार सेठकों प्रतिष्ठाकी चाह रञ्चक हू नाहीं. गायकी टहल, सो अपने घर को काम कहे.

भावप्रकाश : ताको आसय यह, जो जैसे श्रीठाकुरजीकी सेवा जैसे गायकी सेवा. यही घरको काम है. लौकिक वैदिक काम है सो बाहिरको काम हैं. या भांतितें सेठने कही.

वार्ताप्रसङ्ग ८ : **सो ऐसे सेवा करत जन्माष्टमी आई. तब श्रीआचार्यजीने नन्दरायजीके घर जन्म - उत्सव भयो तां लीलाके भावतें पालना नन्दमहोत्सव किये. तब नन्दरायजी, यशोदाजी, गोपी - ग्वालसों रह्यो न गयो. सो साक्षात् पधारे. नन्द - महोत्सव अनिर्वचनीय भयो. सो दरसन सेठ पुरुषोत्तमदासकों रुक्मिनीकों, गोपालदासकों भये.**

भावप्रकाश : काहेतें ? ये लीला सम्बन्धी पात्र हैं.

पाछें श्रीआचार्यजीने जसोदाजी गोपीग्वालसों कहे. जो या कालमें तुम साक्षात् पधारे सो उचित नाहीं. तब सबनने कह्यो, जहां तुम साक्षात् स्वामिनी रूप व्है उत्सव करो तहां हमसों क्यों रह्यो जाइ ? तब श्रीआचार्यजीने कही, जो (अबसों) हम सब तिहारे भेष धरावेंगे. तिनके भीतर व्है पधारियो. तब कहे, जो आछो भेषसों पधारेंगे. ता दिन तें श्रीआचार्यजीने भेषकी रीति जन्माष्टमीपें किये. या प्रकार प्रथम ही जन्म - उत्सव सेठ पुरुषोत्तमदासके घर कियो. ता पाछें सेठ पुरुषोत्तमदास नित्य श्रीमदनमोहनजीकों पालने झुलावते. जन्म - उत्सवके भावमें सदा मगन रहते.

वार्ताप्रसङ्ग ९ : **और श्रीआचार्यजीके पास वादी बहोत आवें. सो वाद करत संज्ञा ह्वै जाय. सो आपुके भोजन बिना किये वैष्णव महाप्रसाद लेइ नाहीं. तब श्रीआचार्यजी पत्रावलम्बन ग्रन्थ करिकें एक कागद पर लिखे, एक वैष्णवकों दिये, जो विश्वेस्वर महादेवजीके**

देवालयमें लगाइ भीतिसों, यह कहियो - जितने पण्डित सैव, ब्राह्मण वादी आवें सो सन्देह होइ, सो यामें देख लेउ. जो उत्तर न पावो तो श्रीआचार्यजी पास आइयो. तब वैष्णव 'पत्रावलम्बन' ग्रन्थ ले जाइ महादेवके पास भीतिमें लगाइ, सगरे मायावादी तो तहां आवें ही, तिनसों वैष्णवने कही, जो सन्देह श्रीआचार्यजीसों पूछनो होइ सो याकों बांचि लेउ. सो सबनकों उत्तर मिल्यो, सब चुप ह्वै रहे. और कहे, जो श्रीआचार्यजी ईश्वर हैं, इतने छोटे ग्रन्थमें हजारन मायावादीनकों निरुत्तर किये.

भावप्रकाश : महादेवजीके पास लगाइवेको आसय यह है, जो हमारो कियो तिहारे इष्ट महादेवकों प्रमाण है. तो तुमकों जीतनो कितनीक बात है. और इतने पर या कासीके राजा विश्वेस्वर हैं. उनके पास यह झगरो डारे है. खोटे खरेके महादेव साक्षी हैं. अब जो न मानोगे तो तुमकों महादेव दण्ड देइंगे. या प्रकार महादेवसों कहवाइ सगरे पण्डितनकों जीते. जैसे पुष्टिमार्गीयनकों इष्ट ब्रजभूमि और श्रीकृष्ण तैने सैवकों इष्ट कासी, महादेव. सो कासीमें माहात्म्य दृढ़ जताए बिना जगतमें भक्तिमार्गको विस्तार न होय, वैष्णवनकों पाछे ते सैव द्वेष करि दुख देइ. तातें श्रीआचार्यजी कासीमें या प्रकारकौ माहात्म्य पत्रावलम्बन द्वारा जताए, सबकों. यातें, जो कोई पण्डित बादी काहू वैष्णवसों बोलि न सके.

वार्ताप्रसङ्ग १० : और एक सेठके सगे सम्बन्धीमें मामा लगत हो. सो सेठजीसों कहे नित्य, जो गयाकों चलौ तो मैं तिहारे सङ्ग चलों. तब सेठ कहे, अवकास पाइके चलेंगे. सो चैत महिना आयो. तब उह मामाने बहोत - बहोत आग्रह कियो, जो गया चलो. तब सेठने दोइ गाड़ीकी तैयारी कराई. एक गाड़ी पर राजभोग पाछे सेठ चले. सो कोस पांच छह गये. तब एक बेंगनको खेत (आयो), तामे ते खेतवारेनें सुन्दर बेंगन चीनिकें बड़ो टोकरा भरिके धर्यो, सो सेठकी दृष्टि परी. तब सेठजीनें गाड़ी ठाड़ी कराई. यह विचारे, जो श्रीमदनमोहनजीके सेनभोग लायक साग होइगो. तब वासों कहे, जो यह बेंगनको कहा लेइगो ? तब उह कह्यो, एक रुपैया लगेगो. तब सेंठनें रुपैया दे बेंगन सब गाड़ीमें धरे गाड़ीवानसों कहे, बेगे गाड़ी पाछेंकों घरकों हांकि, तोकों एक रुपैया देउंगो. इहां श्रीमदनमोहनजी रुक्मिनीसों कहें, बेग तू उठिकै न्हाइकें पूरी करि, सेठ साक लेकें आवत हैं. तब रुक्मिनीने कही, महाराज ! सेठ तो गयाकों गये हैं. तब श्रीठाकुरजीने कही, सेठ गया करि आयो, उनकी गया पूरण भई. तू उठिके पूरी बेगे करि. तब रुक्मिनी न्हाइके, मैदा घरमें सिद्ध हतो, सो पूरी करन लागी. पहर एक रात्रि गई हती. कछुक पूरी बाकी रही, तब सेठ घर पर आई पुकारे. तब गोपालदासने किवाड़ खोलि

दिये. तब सेठ रुक्मिनीसों पूछे, कहा समय है ? तब रुक्मिनीने कही, पूरी करी हैं. साक नाहीं है. तब सेठजीने कही, मैं साक लायो हों. तब रुक्मिनी कही, बेगे संवारि देउ, थोरी सी पूरी रही है. तब सेठजी और गोपालदास मिलिकें बेंगन संवारि दिये. रुक्मिनीने सामग्री सिद्ध करी. सेठहू न्हाइकें भोग धरे. तब सेंठ गोपालदाससों कहे, दस पांच वैष्णव बेगे मिले सो लिवाइ लाउ. तब गोपालदास वैष्णवनकों बुलाइ लाये. इतने समय भयो भोग सराए. सेन आरती करि श्रीठाकुरजीकों पोढ़ाए. अनौसर कराइ वैष्णवनसों मिलिकें महाप्रसाद लिये. पाछें उह मामा कछूक दिनमें गया करि आयो. तब कह्यो, तुम पाछे तें क्यों फिरि आये ? तब सेठने कही, मोकों कहा पूछत हो, मेरे घरमें कछु काम हतो. तातें फिरि आयो.

भावप्रकाश : या वार्तामें यह सिद्धान्त भयो, जो सामग्री उत्तम देखिये तामें अपने प्रभुको स्मरण करिये. वाकों बहोत मोलमें (खरीदिये), झगरो न करिये. अपने सामर्थ प्रमान लिजिये. और भगवत् सेवा रूप यह धर्मके आगे सगरे वैदिक धर्म तुच्छ जानिये. तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न होंइ. सेठकी प्रीति अर्थ दूसरे फिरि सेनभोग श्रीठाकुरजी अरोगे. तातें स्नेह है सोई प्रभु प्रसन्नताको कारन है.

सो वे सेठ पुरुषोत्तमदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके एसे कृपापात्र भगवदीय है. तातें इनकी वार्ताको पार नाहीं, सो कहां ताइ करिए. ....वार्ता ।।६।।

१०-रुक्मिनी

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, सेठ पुरुषोत्तमदासकी बेटी रुक्मिनी, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ए रुक्मिनी लीलामें श्रीस्वामीजीकी सखी है इन्दुलेखा, तिनकी सखीमोदिनि है. श्रीठाकुरजीकी सेवामें तत्पर है. मोदिनी जो आनन्द ताकी उपजावनहारी हैं, ताते इनको नाम मोदिनी हैं.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो एक समें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी सरन रुक्मिनी आई. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनने वाको नाम सुनायो. ता पाछें निवेदन करवायो. सो उह रुक्मिनी बड़ी कृपापात्र हती.

सो एक समय श्रीगुसांईजी कासी पधारे हे. सो तहां सूर्य ग्रहण भयो. तब श्रीगुसांईजी मणिकर्णिका घाट स्नानकों पधारे तब रुक्मिनी (हू) श्रीमदनमोहनजीकों स्नान कराइकें आपु मणिकर्णिका स्नानकों आई, सो श्रीगुंसाइजी पधारे जानिके. सो स्नान करिकें वस्त्र पहिरे. तब एक वैष्णवने श्रीगुसाईजी सो कह्यो, महाराज ! सेठ पुरुषोत्तमदासकी बेटी गङ्गास्नानकों आई हैं. तब श्रीगुंसाईजी कहे रुक्मिनी. आगे आउ. तब रुक्मिनी आगे आई. तब श्रीगुसांईजी पूछे, तू कितने दिननमें गङ्गास्नानकों आई है ? तब रुक्मिनीने कही, महाराज ! चोबीस बरस पाछें गङ्गा - स्नानकों आई हों. यह रुक्मिनीके बचन सुनिके श्रीगुंसाईजीको हृदय भरि आयो. जो एसी सेवामें मगन है. जो गंगास्नानकों अवकास नाहीं है.

भावप्रकाश : तहां यह सन्देह होई, जो चोबीस बरस पहिलें तो गङ्गाजी स्नानकों आई हती. अब श्रीगुंसाईजी पधारे तातें आई. परन्तु गङ्गास्नान या आग्रह तें रुक्मिनी सेवक भये पाछें आई नहीं. एसी सेवामें मगन है.

सो श्रीगुंसाईजी रुक्मिनीकों देखिके कहतें, जो इनसो श्रीठाकुरजी उरिन कबहूं न होंइगे.

भावप्रकाश : ताको अर्थ यह, जैसे रास पञ्चाध्याईमें श्रीठाकुरजी ब्रजभक्तनसों कहे, जो तिहारो भजन एसो है, जो मैं सदा रिनि रहुंगो. तैसे रुक्मिनीसों श्रींठाकुरजी रहेंगे. या भावसों श्रीगुंसाईजीने कही.

वार्ताप्रसङ्ग २ : और क्षत्रिय लोगनमें बहुबेटी कासीमें कार्तिक, माह, वैशाख गङ्गागास्नान करति हैं. सो रुक्मिनीनें सेठ पुरुषोत्तमदाससों कह्यो, जो तुम कहो तो मैं कार्तिक - स्नान करूं. तब सेठने कही, करो जो चाहिये सो लेऊ. तब रुक्मिनीने कही, घृत,

खांड मंगाइ देहु, मैंदा तो घरमें हैं. तब सेठने घी, खांड मंगाइ दियो. सो रुक्मिनी पहर रात्रि पिछलीसों उठि नित्यनेगतें अधिक सामग्री करें. सो मङ्गलातें राजभोग पर्यन्त अरोगावे. पाछे उत्थापनके पहर एक पहले न्हाइ सामग्री करें. सो उत्थापन तें सयन पर्यन्त अरोगावे. एसे करत कितनेक दिन बीते. तब रुक्मिनी कही, मेरे कार्तिक न्हाइवेको कहा काम है. जाकों कछू कामना होइ सो कार्तिक न्हाइ. मैं तो याही भांति न्हात हों. तब सेठ पुरुषोत्तमदास बहुत प्रसन्नए भये.

भावप्रकाश : तहां यह सन्देह होइ, जो रुक्मिनीने कार्तिक न्हाइवेकको नाम लेके सेठ पास सामग्री क्यों लीनी, अरोगाइवेको नाम लेती तो कहा सेठ सामग्री न देते ? तहां कहत हैं, जो जैसे कुमारिकानको मन श्रीठाकुरजीसों लाग्यो तब न्यारे मनोरथ (कियो), (सो) जसोदाजीसों कह्यो चाहिये. तब जसोदाजीसों कहे, जो तुम कहो तो हम कात्यायनी देवीको पूजन करें, मागसिर महिना, श्रीयमुनाजी स्नान. तब श्रीजसोदाजीने श्रीनन्दरायजीसों कहि न्यारी सामग्री पूजनकी घी खांड सब कुमारिकानकों दिये. तब कात्यायनी देवीको मिस करी यमुनाजीको पूजन कियो. काहतें ? श्रीठाकुरजी श्रीयमुनाजी एक ही हैं. तातें 'पुरुषोत्तमसहस्रनाम' में श्रीआचार्यजी कहे हैं, -

कात्यायनी व्रत व्याज सर्वभावाऽऽश्रिताङ्गनः ।

कात्यायनी व्रतको व्याज, जो मिस करि सर्व प्रकारको भाव सगरे अङ्गमें आवेस करि प्रभुको आश्रय कियो, तेसे ही रुक्मिनीने हू कार्तिक, मार्गसिर, माह, वैसाख इत्यादिकको नाम ले ब्रजभक्तनके भाव पूर्वक सेवा करी. यामें यह जताये, जैसे ब्रजभक्तनके भावकी खबरि काहुकों न परी तैसे रुक्मिनीके भावकी खबरि काहुकों न परी. औरकी कहा ? सेठ पुरुषोत्तमदास हू रुक्मिनीके हृदयके भावकों पहोंचि न सकते, एसो अगाध हृदय हतो.

वार्ताप्रसङ्ग ३ : बहुरि एक समय रुक्मिनीकी देह असक्त भई. तब रुक्मिनीने कह्यो, अब देह छूटे ता आछो. जा देह तें भगवानकी सेवा न भई सो देह कौन कामकी ? पाछें भगवत् इच्छा तें देह छूटी. तब काहू वैष्णवने श्रीगुंसाईजीसों कही, महाराज ! रुक्मिनीने गङ्गा पाई. तब श्रीगुंसाईजी कहे, जो एसे मति कहो. एसे कहो. जो गङ्गाजीने रुक्मिनी पाई.

भावप्रकाश : काहेतें. जो गङ्गाजी किनारे तो अनेक जीव देह छोड़त हैं. परन्तु गङ्गाजीकों ऐसी भगवदीय कहां मिलै ? या प्रकार श्रीमुखते कहें. ताको कारन यह जो भगवदीय गङ्गाजी आदि तीरथकों पवित्र करत हैं. तातें नन्ददासजीनें (हू) पञ्चाध्याईमें गायो है -

गङ्गादिकन पवित्र करन अवनि पर डोलें ।

भगवदीयको प्रागट्य जीवनके उद्धारार्थ ही हैं. जैसे भगवान् प्रागट्य तैसेही भगवदीयको प्रागट्य हैं. सो 'पुष्टिप्रवाहमर्यादा' ग्रन्थमें श्रीआचार्यजी भगवदीयको स्वरूप लिखे हैं -

तस्माज्जीवाः पुष्टिमार्गे भिन्ना एव न संशयः ।
भगवद्रूपसेवार्थं तत्सृष्टिर्नान्यथा भवेत् ।।१२।।

स्वरूपेणावतारेण लिङ्गेन च गुणेन च ।
तारतम्यं न स्वरूपे देहे वा तत्क्रियासु वा ।।१३।।

पुष्टिमार्गीय जीव यह संसारके जीवन तें भिन्न हैं, यामें संसय नाहीं. भगवानको रूप ही हैं. भगवानकी सेवा ही के अर्थ जगतमें पुष्टि धर्म प्रगट करिवेके लिये जन्मे हैं. भगवानके स्वरूपमें. भगवानके अवतारमें, भगवानके जैसे गुन हैं, भगवानकी जैसी क्रिया हैं, तैसे ही भगवदीयमें लक्षण हैं तातें भगवानमें अरु भगवदीयमें तारतम्य नाहीं हैं. या प्रकार श्रीगुंसाईजी भगवदीयके गुण सब रुक्मिनीमें कहै.

सो यह रुक्मिनी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी सेवक ऐसी कृपापात्र भगवदीय ही. तातें इनकी वार्ताको पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए.

११-गोपालदास

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, सेठ पुरुषोत्तमदासके बेटा गोपालदास, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : सेठ पुरुषोत्तमदास लीलामें इन्दुलेखा श्रीस्वामिनीजीकी सखी हैं ताकी सखी गायनकला सो ये हैं. ब्रजभक्तनको विरह संयुक्त गायन तिनकी कला गोपालदासमें झलकत है. यह कहि जताए, जो गोपालदास विरहमें सदा मगन रहतें.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो गोपालदाससों श्रीमदनमोहनजी सानुभाव हते, सो जो चहिये सो मांगि लेते. ऐसे सदैव कृपा करते. और गोपालदास कीर्तन बहुत करते. सो एक समय होरीके दिननमें गोपालदासकों बहोत विरह भयो. होरीके भाव संयोग रसकी विस्मृति व्हे गई. तब नित्य जैसें ब्रजभक्त वेणुगीत जुगलगीत गावत हैं, ता भावसो दोइ कीर्तन ललना कहिकें गाये.

भावप्रकाश : सो ललनाको अर्थ यह, जो ब्रजकी ललना या प्रकार विरहमें गान करति हैं.

सो ललना गावत ही श्रीठाकुरजी लीला सहित दरसन दिये. तब गोपालदास बलिहारी लिये. तातें गाये, जो -

मदनमोहनके बारनें बलि - बलि दास गोपाल ।

वार्ताप्रसङ्ग २ : सो कितनेक दिन पाछे गोपालदासकी देह असक्त भई. तब भगवत् नामको उच्चार करते. तब श्रीमदनमोहनजी आप हुंकारी देते, एसी कृपा करते. ऐसे करत रात्रिकों गोपालदासकों नीन्द आवती, फेरि चोंकिकें विरहमें पुकारते. श्रीमदनमोहनजी ! तब

मन्दिरसों श्रीठाकुरजी कहते, क्यों पुकारत हो ? मैं तो तेरे निकट हों. तब गोपालदास कहते. महाराज ! आपु क्यों जागत हो ? मेरो तो पुकारिवेको सुभाव पर्यो है. तब मदनमोहनजी कहते, मोसों तेरो विरह सह्यो नाहीं जात. तातें तेरो समाधान करत हों. या प्रकार गोपालदास मन्दिरको अरु चौकको ताला लगाइ चौखटि पर माथो धरिके, एक वस्त्र बिछाइ विरहमें परे रहते. सरीरके सुखकी खबरि ही नाहीं रहती. तातें विरहके कीर्तन बहुत गाये हैं.

और श्रीआचार्यजीके ग्रन्थ सुबोधिनी, निबन्ध, श्रीगुसांईजीके रहस्य ग्रन्थ सो सब गोपालदास अनोसरमें देख्यो करते. समय पर भगवत् सेवा करते. व्यौपार - बनिज लौकिक वैदिक सर्व त्याग करि लीलारसमें मगन रहतें. सो श्रीगुसांईजी गोपालदास ऊपर बहोत प्रसन्न रहते. काहेतें, जो सेठ पुरुषोत्तमदासको परिवार ऐसो ही चाहिये. विरहकी दसा अनिवर्चनीय है. तातें गोपालदासकी वार्ताको विस्तार नाही किये. सेठ पुरुषोत्तमदासके परिवार सहित वार्ता एक. या प्रकार वैष्णव ग्यारह भये परन्तु परिवार सहित वार्ता एक गिनवे तें वैष्णव छै भये. .....वार्ता ।।६।।

१२-सेवक रामदासजी सास्वत

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक रामदासजी सास्वत ब्राह्मण, पूरबमें रहते, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : सो ए रामदासजी लीलामें राधा सहचरीकी सखी है. 'प्रेम मञ्जरी' इनको नाम है. ए कुमारिकाके जूथमें हैं.

सो रामदासके पिताके पास द्रव्य बहोत हतो. परन्तु पुत्र नाहीं हतो. सो सूर्यकी उपासना बहोत करी. तब सूर्य प्रसन्न होईके एक पुत्र दियो. सो रामदासजी बरस आठके भये तब पिताने विवाह रामदासको कियो. पाछें देह छोड़ी. सो रामदासकों एक मर्यादामार्गीय वैष्णवको सत्सङ्ग भयो. तब मर्यादामार्गीय वैष्णवने कही, कोई तीरथ करे हो ? तब रामदासजी कहे, पिताकी देह छूटी, अब घर छोड़िके कैसे जांइ ? तब वा मर्यादामार्गीय वैष्णवने

कही, भलो ! गङ्गासागर तो तिहारे निकट है. यहां तो न्हाइ आवो, चलो मैं सङ्ग चलूं. तब रामदास सङ्ग चले. तब रामदासजी उह मर्यादामार्गीयके सङ्ग गङ्गासागर जाइ न्हाए. तीन दिन तहां रहे. चौथे दिन तहां रहे, न्हाइके, गङ्गासागरके किनारे रसोइ करनके लिये थोरीसी रेती डारे. तब लालाजीको स्वरूप उहां ते निकस्यो, सो रामदासजी गङ्गासागरके जलसों न्हवाइ उह मर्यादामार्गीय वैष्णवसों कह्यो, मोकों भगवत्स्वरूप प्राप्ति भयो. तब वह मर्यादामार्गीय वैष्णवने कही, तिहारे बड़े भाग्य हैं. तुम इनकी पूजा करियो, परन्तु तुम सेवक काहूके हो ? तब रामदासजी बरस सोरहके हते. सो कहें, मैं सेवक तो अब ही नाही भयो. तब मर्यादामार्गीय वैष्णवने कह्यो मैं तुमकों सेवक करों जो तिहारो मन होय. तब रामदासजी कहै, घर जाइके स्त्री सहित सेवक होउंगो. तब उह मर्यादामार्गीय वैष्णवने कह्यो, जो श्रीवल्लभाचार्यजी, सो (जिनने) दक्षिणमें, कासीमें, मायावाद खण्डन किये हैं, सो पुरुषोत्तमपुरीमें पधारे हैं. उनकी सरन तोकों मिलै तो तेरे बड़े भाग्य हैं. तब यह सुनत ही रामदासजी श्रीठाकुरजीकों लेके घरको वेगे चले. उह मर्यादामार्गीय तो गङ्गासागर ऊपर रह्यो. चौथौ मञ्जिल करि अपने गामके बाहर एक बगीचा है, तहां रामदास मध्यान्ह समें आये. सो श्रीआचार्यजी हू पुरुषोत्तमपुरीसों एक दिन पहलेके आइ उतरे हते. तब श्रीआचार्यजी रामदासजीसों कहें, तुमकों गङ्गासागरमें भगवत् स्वरूप कैसो प्राप्त भयो है ? सो हमकों दिखाउ. तेरो नाम रामदास है. तब रामदास चक्रित होइ रहे.जो मैं अब ही चल्यो आवत हों, काहूकों भगवत् स्वरूप दिखायो नाहीं. तातें ए महापुरुष हैं. तब पास वैष्णव हे, तिनसों पूछे, ये महापुरुषको नाम कहा है ? तब कृष्णदास मेघनने कही, श्रीवल्लभाचार्यजी सगरें प्रसिद्ध हैं. मायावाद खण्डन करि भक्तिमार्गको स्थापन किये हैं. तब रामदास साष्टाङ्ग दण्डवत् करि विनती किये महाराज ! मेरे घर पधारिये. तब श्रीआचार्यजी कहे, तुम सास्वत ब्राह्मण हो, तिहारे क्षत्रीसों खानपानको व्यवहार कैसे छूटेगो ? तब रामदासजी कहे, आपुकी कृपा तें मेरे द्रव्य बहोत है. मैं तो काहूसों जलको व्यौहार हू न राखोंगो. आपु आज्ञा करोगे तेसें करूंगो. तब श्रीआचार्यजी प्रसन्न होइके रामदासके घर पधारे तब स्त्री सहित रामदासकों नाम - समर्पन कराए. श्रीठाकुरजीकों पञ्चामृतसों स्नान कराइ पाट बैठारें. श्रीठाकुरजीको नाम श्रीनवनीतप्रियजी धरें. पांच रात्रि रामदासके घर रहिके सगरी रीति सेवाकी बताए, आपु पृथ्वी परिक्रमाकों पधारें.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो रामदासजी अष्ट - प्रहर अपरसमें रहते जलपान बीड़ा अपरसमें लेते.

भावप्रकाश : यह कहि यह जताए, जो लौकिक काहूसों बोलते नाहीं. ब्यौपार - बनिज कछू न करते, स्त्री सङ्ग हू छोड़े.

या प्रकार भगवत् सेवा करते. श्रीठाकुरजीको नेगहू बहोत हतो. द्रव्य हू बहोत हतो. सो कछूक दिनमें द्रव्य थोरो सो आइ रह्यो.

भावप्रकाश : ताको अभिप्राय यह, जो रञ्च द्रव्यको अहङ्कार हतो. सो अन्याश्रय श्रीठाकुरजीकों छुड़ाय दैन्य करनो है. तातें द्रव्य थोरो सो रह्यो.

तब रामदासने विचार्यो, जो कछू द्रव्यको उपाइ कर्यो चहिए. तब पूरव देसमें पटवस्त्र बुनावत हैं तिनको तांती कहत हैं. सो तांतीनको ब्याज द्रव्य दिये. सो ब्याज बहोत आवन लाग्यो, तब रामदासजीके मनमे कछुक हरख भयो. तातें श्रीठाकुरजी आज्ञा किये, जो तू मोकों तांतीन उपर राख्यो ?

भावप्रकाश : ताकौ आसय यह, जो मैं भाव प्रीतिसों रहत हों. सो पहले द्रव्य पर राख्यो. जो द्रव्य घट्यो तब ब्याज पर राख्यो. जो तांतीसों ब्याज आवै. तामें मेरी सेवा (करी). ब्याजको द्रव्य महाहीन, द्रव्यको मैल. सो तासों (सेवा) करे, सो तापरमें कैसे रहूंगो ?

तब यह आज्ञा सुनिके रामदास चोंकि परे.

भावप्रकाश : सो यह, जो हाय - हाय ! मैं बुरो काम कियो. अब भगवत् इच्छा होइगी सो सही परन्तु एसो कार्य कब हूं न करनो.

तब तांतीन पास गये. कहे, मेरो सगरो द्रव्य देहु. तब तांतीनने कही, तुमकों ब्याज दिये जात हैं तो द्रव्य कहा देय ? कहा थोरे दिननमें (ही) मांगन लागे ? तब रामदासजी कहे, मोकों लरिका साथ काम पर्यो है, लरिका कहे सो करनो.

भावप्रकाश : यह कहि यह जताये, जो बालककौ ख्याल विरुद्ध है. कोई खिलोनाकों ऊंचे बैठारे. काहूकों नीचे बैठारे. काहूकों फोरि डारे. सोई प्रभुकौ स्वभाव, कर्तुं, अकर्तुं अन्यथा कर्तुंम सर्व सामर्थ्य. जो मनमे आवे सो करें यह सिद्धान्त कहे. परन्तु तांती जाने कोई बालक होइगो.

सो सगरो द्रव्य भेलो करिके रामदासजीकों दिये. सो घर लाये. सेवा करन लागे. सो कछूक दिनमें सगरो द्रव्य उठि गयो.

भावप्रकाश : तब द्रव्यकौ आश्रय तो छूट्यो. परन्तु पहलेको गर्व ताकौ बीज है, सो ठाकुरजी अब दूरि करेंगे.

तब रामदासजी एक बनियाके इहां उधारे उचापति करन लागे. तब माथे रिन भयो. बनिया इनकों टोके. तब वा बनियाकी उचापति छोड़ि और बनियाके इहां उचापति करन लागे.

तब एक दिन उह बनियाने बहोत तगादो कर्यो. और कह्यो, जो अब मेरे इहां उचापति नाहीं करत तो मेरो दाम चुकाई देहु. तब वाकों बहोत कहि सुनके विदा किये. परन्तु लज्जाके मारें बहुत दुःख भयो.

भावप्रकाश : तामें पाछलो अहङ्कार दोष दूरि भयो.

तब श्रीठाकुरजी रामदासको रूप करि, उह बनियाको करज सब चुकाइ दिये. रुपैया १००) अधिक दै अपने हस्तसों रामदासके जमा लिखि आये. रामदासजीको दुःख सह्यो न गयो.

भावप्रकाश : जो मेरे लिये इन इतनो दुःख पायो है यातें श्रीठाकुरजी करज चुकाये. परन्तु सौ रुपैया अधिक धरे ताको कारन यह जो अधिक धरे तें कदाचित् द्रव्य सम्बन्धी प्रसन्नता गर्व होइ तो पुष्टिमार्गीय फल न होय, दासभाव जात रहै. श्रीठाकुरजी करज चुकाये. रामदास बैठे रहे. तातें थोरेसे रुपैया १००) धरें. यह परीक्षा अर्थ. और कछू दूसरे बनियाको करज हू भयो है. कछू खरचके लिये.

पाछें एक दिन रामदासजीकों वैष्णव बुलावनकों आये. तिनके सङ्ग रामदासजी चलें. सो उह बनियाकी हाट आगे होइके निकसे. सो उह बनियाकी नजर बचाइ आनाकानी देइके निकसे, जो यह मांगेगो. सो बनियाने रामदासजीकों देखे. और विचार्यो, जो ये नजर बचाइकें यातें आगे निकसे, जो मैं इनसों तगादो बहोत कियो है. तब बनिया रामदासजीके आगे आइ पांवन पर्यो. कह्यो, मेरे अभाग्य, जो तुम उचापति अपनी हाटसों नाहीं करत. परन्तु सौ रुपैया अधिक धरे हैं सो तो ले जाउ. तब रामदासजीने कह्यो, मैं पाछें आउंगो. अब काम जात हों. तब बनिया हाट पर आयो. रामदासजीनें अपने मनमें विचार कियो, जो मैं तो याकों कछु द्रव्य दियो नाहीं. तातें मति कहूं श्रीठाकुरजी याकों दिये होई.

सो वैष्णवके इहां जाइ कछू छुवा - छाईको काम हतो सो बताइ पाछे रामदासजी उह बनियाके हाट पर आइ कहें, अपनो लेखो निकार. तब बनियाने कही. तुम लेखो चुकाइ रुपैया १००) अधिक धरि अपने हाथसों लिखि गये हो, फेरि देखि लेहु. सो वहीमें श्रीठाकुरजीके हस्ताक्षर देखे, तब चुप करि रहै. तब घरमें आइ बिचारे, जो अब घरमें रहनो नाहीं. चाकरी करूंगो.

भावप्रकाश : ताको कारन यह, जो घरमें रहों तो श्रीठाकुरजीको श्रम होय, द्रव्य खानो परें, स्त्रीकी प्रीति साधारण है. तातें यह खायगी.

तब एक घोरा लिये. हथियार बांधि चाकरि करन प्रयागमे आये. तब जलपान बीड़ा, बिना अपरसमें लेन लागे.

भावप्रकाश : ताको कारन यह, जो कछु अपरसको अहङ्कार हतो, जो औरसों ऐसी अपरस नाहीं बनत सोउ श्रीठाकुरजी छुड़ाई अहङ्कार मिटाये. और यह जताये, जो एसी अपरस कौन कामकी, जामें श्रीठाकुरजीकों श्रम करनो परै.

पाछें एक दिन रामदासजी प्रयाग तें अड़ेलमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके दरसन करन आये. सो पांचो कपरा पहरि हथियार बांधि दण्डवत् किये. तब श्रीआचार्यजी रामदाससों देखिकें कहे, धन्य है. तब वैष्णव पास बैठे है सो कहन लागे, महाराज ! अब याकों धन्य

क्यों कहत हो ? याकी अपरस तो छूटी, सिपाइनमें रहत है, हथियार बांधत है ? तब श्रीआचार्यजी कहे, यह धन्य है. श्रीठाकुरजीकों श्रम नाहीं करावत है. तातें या समान धीरज काहूकों नाहीं, यह श्रीमुख तें कहे.

भावप्रकाश : ताकों कारन यह, जो कहा बहोत अपरससों कार्य होत हैं ? पुष्टिमार्गीय धर्म बहोत कठिन है. द्रव्य सगरो गयो, रिन माथे भयो, परन्तु धीरज नाहीं छूट्यो. सो कहा ? जो मन श्रीठाकुरजीमें रह्यो. हृदयके भीतर चिन्ता रूप कष्ठ नाहीं भयो. पाछें श्रीठाकुरजी रिन चुकाये. सो मनमें प्रसन्न न भयो. चाकरीको कार्य कियो, अब दैन्यता याकों भई हे. मन श्रीठाकुरजीमें है. या आसयतें श्रीआचार्यजी धन्य कहे.

वार्ताप्रसङ्ग २ : और श्रीआचार्यजीके द्वार आगे एक खाड़ा हतो. सो आपु न्हाइवेकों पधारे, तब कहे, यह खाड़ा अजहू भर्यो नाहीं है ? यह कहिकें आपतो श्रीयमुनाजी - स्नानकों पधारे, सगरे वैष्णव खाड़ा भरन लागे. तब रामदासजी एक बड़ो टोकरा ले जहां तांइ श्रीआचार्यजी न्हाइके पधारें तहां तांइ खाड़ा पूरि बराबर धरति करि दिये. तब श्रीआचार्यजी आपु रामदासकों देखे खाड़ा भरते, सगरे कपड़े धूरिसों भरे देखिके फेरि श्रीआचार्यजी प्रसन्न होइके कहे, रामदास धन्य है.

भावप्रकाश : सो यातें, जो और वैष्णव आछे कपरा उतारि एक धोती पहरि खाड़ा भरें. रामदास श्रीआचार्यजीकी आज्ञा सुनिके परम भाग्य सेवा मानि खाड़ा भर्यो, सिपाइने की लाज सरम सब छोड़ी. ता पर श्रीआचार्यजी बहोत प्रसन्न भये. जो या प्रकार भगवत् सेवामें प्रतिष्ठा मनमें न आवे, छोटी मोटी हीन सेवा भाग्य मानिके करनी. यह सिद्धान्त जताए.

फेरि रामदासजी बरस एकमें द्रव्य बहोत कमाइ घर आये. पाछे भली भांतिसों सेवा करन लागे.

भावप्रकाश : सो ठाकुरजीकों धीरज देखनो हतो. पाछे द्रव्यकी कहा है ? जो चाहिये सो सब सिद्ध है.

वार्ताप्रसङ्ग ३ : पाछे एक दिन स्त्रीने कही, तुम दूसरो ब्याह करो तो सन्तति होइ.

भावप्रकाश : ताको कारन यह, जो स्त्रीकों रामदासके हृदयके अभिप्रायकी खबरि नाहीं. तातें जान्यो, जो मोसों राजी नहीं है, तो दूसरो ब्याह करो. ब्याह करें एक पुत्र होइ.

तब रामदासने कही, जो मोकों पुत्र की इच्छा नहीं है. तब स्त्रीने कही, मेरे एक पुत्रकी इच्छा है. तब रामदासने कही जो तिहारे इच्छा है तो श्रीनवनीतप्रियजीकी सेवा बालभावसों करि. जैसे खानपानसों लडावत है. तिहारो मनोरथ पूरन होइगो. पाछे कछुक दिननमें पुत्र भयो.

भावप्रकाश : सो रामदासजीने तो भावरूप अलौकिक बात कही, जो श्रीठाकुरजीको बालभावसों लड़ावोगी तो एई बालक होइगें. जसोदाजीके सौभाग्यकों पावोगी. सो तो स्त्री उत्तम अधिकारी होइ तो समुझे. तातें पुत्रकी कामना सहित श्रीठाकुरजीकी बालभावसों सेवा करी. सो श्रीठाकुरजीने पुत्र दियो. परन्तु रामदासजीके फलकों नहिं पायो रामदासकों कबहू लौकिक कामनामें मन न भयो. तातें श्रीआचार्यजी प्रसन्न रहते. तातें रामदासके भाव की कहां तांई कहिये.

सो रामदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके एसे कृपापात्र भगवदीय हते. सो इनकी वार्ताकी पार नहीं, सो कहां ताइ कहिये. ....वार्ता ।।७।।

१३-गदाधरदास कपिल सारस्वत

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, गदाधरदास कपिल सारस्वत ब्राह्मन, कडामें रहते, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : सो गदाधरदास मकरस्नानकों तीर्थराज प्रयाग बरसके बरस जाते. सो एक समय गदाधरदास प्रयागमें हते. तहां श्रीआचार्यजी पधारे. सो पण्डित सब श्रीआचार्यजीसों चर्चा करन आवते. सो गदाधरदासको काका प्रयाग रहेतो, तहां गदाधरदास उतरते. सो गदाधरदासको काका पण्डित हतो, परन्तु सैव हतो. सो काकाने गदाधरदाससों कही, श्रीबल्लभाचार्यजी पधारे हैं. तिनसों कछू सन्देह पूछनो है, सो मैं जात हों. तब गदाधरदास कहे, जो मैं हूं चलूगो, सो दाऊ आये. तब गदाधरदासके काकाने श्रीआचार्यजीसों पूछ्यो, जो महाराज ! ठाकुर तो एक हैं परन्तु वैष्णव सम्प्रदायमें न्यारे - न्यारे क्यों मानत हैं ? कोई कृष्णकों, काई रामकों, कोई नृसिंह, कोई नारायण आदि, तामें निश्चय कौन ठाकुर हैं ? तब श्रीआचार्यजी कहे, जैसे चक्रवर्ती राजाको राज तो सगरी पृथ्वी पर, और राजा देस - देसके गांव - गांवके, सोऊ राजा कहावें, परन्तु चक्रवर्तीके आज्ञाकारी. तैसे ही पूर्णपुरुषोत्तम श्रीकृष्ण, सो सर्वोपरि. और अवतार अंसकला करिके होइ, सब श्रीकृष्णके आज्ञाकारी. ठाकुर सबकों कहिए. तब गदाधरदासको काका चुप करि रह्यो. गदाधरदास दैवी जीव तिनके मनमें सिद्धान्त बैठि गयो, जो श्रीआचार्यजीकी सरन जइए तो श्रीकृष्णकी प्राप्ति होइगी. तब गदाधरदासने श्रीआचार्यजीवकों दण्डवत् प्रणाम करि बिनती किये. महाराज ! सरन लीजिए. मै संसारमें बहोत भटक्यो. तब श्रीआचार्यजीने कही, जो तुम अपने काकाकों तो पूछो. इनको चित्त दुख पावै तो सेवक काहेकों होउ ? तब गदाधरदासके काकाने कही, महाराज ! हमारे तो गायत्री मन्त्रसों काम है, और तो हम जानत नाहीं, गदाधरदासकी ए जाने. ना हम हां कहें, ना हम ना कहें. तब गदाधरदासने कही, अब मैं आपको दास भयो अब संसारी जीवसों व्यौहार मेरे नाहीं है. तातें मैं आपुके सरन आयो हों, कृपा करिके सरन लीजिये. और यह बहिर्मुख कब कहेगो, जो तू सेवक होउ. या प्रकार गदाधरदासके बचन सुनिके, गदाधरदासको काका उहांतें उठि बाहर आइ ठाड़ो भयो.

तब श्रीआचार्यजी गदाधरदासके ऊपर बहोत प्रसन्न भये. कहे, बिना सेवक ऐसी टेक है तो सेवक भये भलो वैष्णव होइगो. पाछे श्रीआचार्यजी कहे, जा, त्रिवेणी न्हाइ आव, तब गदाधरदास न्हाइके अपरसमें आये. तब श्रीआचार्यजीने नाम सुनाइ ब्रह्मसम्बन्ध करायो. पाछे गदाधरदासने बिनती कीनी, महाराज ! अब मोकों कहा कर्तव्य है ? सो आज्ञा दीजे. तब गदाधरदाससों श्रीआचार्यजी कहे, जो तुम भगवत्सेवा करो. स्वरूप कहूं तें लावो. तब गदाधरदासने विचार्यो, जो एक स्वरूप ये मेरे काकाके घर है, सो कैसे मिले ? मैं तो या बहिर्मुखसों बोलत नाहीं हों. यह बिचार करत बाहर निकसे, माला तिलक करिके. सो गदाधरदासके काकाने पूछी, जो सेवक भयो सो भली करी, परन्तु मेरे घर तो चलो. तब गदाधरदासने कही, मोकों तिहारे घरमें ठाकुर हैं सो

देउ तो मैं चलो. तब उन कही, जो ले जाउ. मेरे ठाकुरसों कहा काम है ? तब गदाधरदास काकाके सङ्ग वाके घर गये, श्रीठाकुरजी मांगे. तब उन कह्यो खान - पान तो करो, दुपहर भयो है, श्रीठाकुरजी पाछे ले जैयो. तब गदाधरदासने कही अब हमारे तिहारे जल व्यौहार नाहीं. श्रीठाकुरजी देउ, फेरि तुम श्रीठाकुरजीसों काम न राखो तो देउ. तब काकाने कही, हम सैवमार्गीय हैं. हमसों ठाकुरसों कहा ? हम तो महादेवजीकों जानें तातें बेगे ले जाउ.

श्रीठाकुरजी गदाधरदासके काकाको मन यातें फेरे जो भगवदीय जाको घर छोडे तहां श्रीठाकुरजी हू न रहें. यातें बेगि दिये. तब श्रीआचार्यजी पञ्चामृत स्नान कराइ श्रीमदनमोहनजी नाम घर्यो. गौर स्वरूप हैं. तब तीन दिन गदाधरदस श्रीआचार्यजी पास रहे. सेवाकी सगरी रीति सीखी. सो श्रीआचार्यजी 'भक्तिवर्द्धिनी' ग्रन्थ किये, ताको व्याख्यान किये. तामें यह कहे, जो -

अव्यावृत्तो भजेत्कृष्णं पूजया श्रवणादिभिः ।
व्यावृत्तोऽपि हरौ चित्तं श्रवणादो यतेत्सदा ।।

तामें मुख्य सेवा अव्यावृत होय करे, यह कहे. तासों उतरती व्यावृत्ति कहे. हरिमें मन राखे. यह सुनत ही गदाधरदासने सङ्कल्प किये, जो व्यावृत्ति कछू न करनी. पाछे श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों विदा होइ ओरछा वे अपने घर आये. सो इनको ब्याह तो भयो न हतो, मां बाप हू न हते. इनहूकी अवस्था बरस तीसकी हती. सगे सम्बन्धीनसों कहें, अब तुम और घरमें जाइ रहौ, मैं वैष्णव भयो. मेरे तिहारे जल - ब्यौहार नाहीं. तब और घरमें जाइ रहे. गदाधरदास सगरो घर खासा करि सेवा श्रीमदनमोहनजीकी प्रीतिसों करन लागे.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो गदाधरदासकों श्रीमदनमोहनजी सानुभावता जतावते. आगे जजमानके घर जाते, जो चाहिए सो ले आवते. वैष्णव भये पाछें अव्यावृत्त से रहते. सो सब ठौरको जानो छोड दियो. जो आवे तामें निर्वाह करें. चित्त मानसी सेवा फलरूपमें इनको लग्यो. ''चेतस्तत्प्रवणं सेवा'' या भावमें मगन रहें. तनुजा, वित्तजा जो बने सो करें. बहोत सङग्रह करे नाहीं. जो आवे ताकी सामग्री करि श्रीमदनमोहनजीकों भोग धरें. वैष्णवकों महाप्रसाद लिवाइ देते. यह प्रकार त्यागपूर्वक रहते.

सो एक दिन भगवद् इच्छा तें जजमानके घर तें कुछ आयो नाहीं.

भावप्रकाश : ताको कारन यह, जो श्रीठाकुरजीने इनकी परीक्षा लिये. जो अव्यावृतको सङ्कल्प तो होनो सहज ही है, परन्तु न मिले तब धीरज रहे यह महा कठिन है. ताते कछू न आयो.

तब मङ्गलामें जलकी लोटी भोग धरे. सिंगारमें, राजभोगमें जल ही धरे. पाछे उत्थापनमें सेन पर्यन्त जल ही धरे. परन्तु उधारो न लिये.

भावप्रकाश : काहे तें, यह व्यौहार हैं. और उधारो लेय जहां तांई वाको द्रव्य न देय तहां तांई वाकी सेवा है. इनकी नाहीं. और कालको प्रमाण नाहीं. उधारो लियो देह छूटि जाय तो रिन माथे रहे, जन्म लेनो होइ. यह शास्त्रमें कहे हैं. परन्तु इनके तो कालको डर नाहीं. अव्यावृत श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके ग्रन्थको आश्रय किये.

ऐसे करत रात्रि प्रहर डेढ़ गई, सोइ रहे ! परन्तु छातीमें आगिसी लागी, जो आजु मेरे ठाकुर भूखे रहे.

भावप्रकाश : याको हेतु यह, जो जदपि ये जल धरिकें मानसीमें सब अरोगाये हैं, श्रीठाकुरजी अरोगे हैं. काहेतें ? येहू श्रीराधा सहचरीकी सखी हैं. कलकण्ठी इनको नाम है. कुमारिकाके जूथमें हैं. इनकों श्रीयमुनाजीको आश्रय है. राधा सहचरीके गान समय ये सुर भरत हैं. इनहूंको कण्ठ बहोत सुन्दर है. तातें जमुनाजीके भावसों सगरे भोगमें जल ही धरे. तातें सगरी सामग्री भाव करि सिद्ध हैं. परन्तु या सामग्रीमें वैष्णवको समाधान नाहीं. सगरी इन्द्रियकी सेवा नाहीं, सामग्री हाथसों धर और ब्रजभक्तनकी मानसी हू करे. और श्रीठाकुरजीको न्यारो मनोरथ हू करे. यह पुष्टिमार्गकी रीति है, जो सामग्री हाथसों भोग धरनमें प्रीति न होइ तो ब्रजभक्तनके भाव हू छूटि जांइ. ज्ञान मार्गकी रीति व्है जाइ. ''पत्रं, पुष्पं, फलं, तोयं, यो मे भक्त्या प्रयच्छति'' या वाक्यमें बोध

अर्थ है. मर्यादामार्गीयके भावमें पत्र, पुष्प, फल, जल, जैसो बन्यो सो धर्यो. सामग्रीको आग्रह नाहीं है. और गीतामें कहे, जो भक्त धरें. यामें यह अर्थ, जो भक्त होई सो चारों वस्तु विवेक पूर्वक धरें. स्नेही होय ताको भक्त कहिये. तामें पत्र, जो पान तथा पोईके पात, अरईके पात तिनके पत्रोडा करि स्नेहसों संवारि धरें. ज्ञानीकों स्नेह नाहीं, सो मीठे करई सगरे पत्ता धरें. और फूलमें गुलाबके फूलकों खांडमें सामग्री करि प्रेमसों अरोगावे. फल सुन्दर मीठे करुवे चाखिके धरें. सो भक्त होय तो चाखै. जदपि मर्यादामें भीलनी सबरी हती, सो बनके फलकों खाईके धरे, जो फल जहरी कोई कीराको खायो होइ तो पहले मोकूं दुःख होइ. परन्तु श्रीरामचन्द्रजीकों मति होइ. तब श्रीरामचन्द्रजी सराहना किये, जो ऐसे फल दसरथ पिताके घर और जनक विदेहीके इहां ब्याहमें हू नाहीं खाये. सो वहां ऐसी प्रीति नाहीं. भक्त संवारिके घरे, ज्ञानी जैसे मिलें तैसे धरें. तातें गदाधरदास तो पुष्टिमार्गीय लीला सम्बन्धी हैं, जो भावपूर्वक जल धरें. परन्तु स्नेही हैं तातें छातीमें आगि लागी, जो आजु कछू न आयो. सो छातीमें विरह रूप आगि लागी, जो आजु कछु नाहीं धर्यो, जो वैष्णवके लिवाये बिना श्रीठाकुरजी भूखे ही हैं. या प्रकारको गूढ़भाव जिनके हृदयको है. और श्रीठाकुरजीकों विरहको दान करनो है. तातें कछू न आयो. सो छातीमें विरह रूपी अग्नि लागी. मुख्य अधिकारी भये. जिनकों विरह नाहीं उनकों पुष्टिमार्गको फल नाहीं. या प्रकार डेढ़ प्रहर रात्रि गई.

सो तब एक जजमान आयो. गदाधरदासकों पुकारि, किवाड़ खोलायके रुपैया ४) और कछू वस्त्रादिक दियो. और कह्यो, जो आजु मेरे सुद्ध श्राद्ध हतो ताकी दक्षिणा लेहु. यह कहि उह घर गयो. तब गदाधरदासकों हृदयमें विरह बहोत, जो बेगिही कछू धरिये. यह भावसों एक रुपैया ले सामग्री लेनकों बजारमें बेगे गये. सो एक हलवाई जलेबी करत हतो. सो देखत ही वासों पूछी, यामेंते काहूकों दीनो तो नाहीं ? तब उन कही, अब करी है, बेची नाहीं. तब रुपैया दै, कहे, बेगि तोल दें. सो लैके आइ धरमें न्हाइ, श्रीठाकुरजीकों भोग धरी. पाछें श्रीठाकुरजीकों पोढ़ाइ वैष्णवनकों बुलाइ महाप्रसाद सब लिवाइ दियो. आपु भूखेई सोई रहै. परन्तु मनमें सुख पाये, जो श्रीठाकुर आरोगे. और वैष्णवनको नागो न पर्यो. पाछें तीन रुपैयाको सीधो सामान लाइ सामग्री करि भोग धरि पाछें श्रीठाकुरजीकों पोढ़ाइ वैष्णवनकों बुलाइ. महाप्रसादकी पातरि धरी. तब वैष्णव महाप्रसाद लेत बोले, जो गदाधरदास ! रात्रिकों तुम महाप्रसाद दिये सो यह सामग्री तो हमहू करत हैं, परन्तु ऐसो स्वाद नाहीं होत. सो ऐसी क्रिया हमहूकों बतावो. कैसे करी हती ? तब गदाधरदासने कही, काल्हि मेरे घर कछू न हतो. सो रात्रिकों रुपैया चारि आये. एक रुपैयाकी जलेबी बजारसों लायो. या प्रकार सब कहे. तब सगरे वैष्णव गदाधरदासकी ऊपर प्रसन्न भये.

भावप्रकाश : ताको हेतु यह है, जो श्रीठाकुरजी श्रीआचार्यजी इनके ऊपर प्रसन्न हैं. सो सगरे वैष्णवनके हृदयमें हैं. बुद्धिके प्रेरक श्रीकृष्ण हैं तातें निष्कपट सुद्ध भाव वारे वैष्णव पर कोई अप्रसन्न न होय. या प्रकार वैष्णव प्रसन्न भये. तब गदाधरदासजीने एक कीर्तन गायो -

गोविन्द - पद - पल्लव सिर पर बिराजमान,
तिनको कहा कहि आवै सुखको प्रमान ।
ब्रज - दिनेस देस बसत कालानल हू न त्रसत,
बिलसत मन हुलसत करि लीला रस पान ।
भीजें नित नैन रहत, हरिके गुनगान कहत,
जानत नहिं त्रिविध ताप मानत नाहिं आन ।
तिनके मुख - कमल दरस, पावन पदरेंनु परस,
अधम जन 'गदाधर' से पावत सन्मान ।

जो मैं अधम जन हों, परन्तु तुम भगवदीय हो. सो मो सारिखेको सन्मान करत हो. या प्रकार वैष्णवनमें और श्रीठाकुरजीमें दृढ़ प्रीति एक रस हती. तातें श्रीठाकुरजी और वैष्णवन इनके बस हते. ऐसे गदाधरदास उत्तम भगवदीय हे.

वार्ताप्रसङ्ग २ : और एक दिन गदाधरदासने वैष्णव महाप्रसादकों बुलाए हते. सगरी सामग्री करी, परन्तु साग कछु न हतो. तब गदाधरदासने वैष्णव बैठे हते, तिनसों कही - ऐसो कोई वैष्णव है, जो साग लै आवे ! सो माधोदास, बैनीदासके भाई जिनने वेस्या घरमां राखी हती सो बोले, कहो तो मैं ले आऊं.

भावप्रकाश : ताको आसय यह, जो मैं वेस्या राखी है, मेरो लायो लेहुगे ?

तब गदाधर कहे, ले आवो.

भावप्रकाश : सो गदाधरदासके हृदयमें दोषदृष्टि नाहीं है. श्रीआचार्यजीको सम्बन्ध जानत हैं. तातें कहे ले आवो.

तब बथुवाकी भाजी ले आये. तब गदाधरदास प्रसन्न ह्वै कै कहे, बेगे संवारी देउ.

भावप्रकाश : यामें यह जताए, जो प्रीतिसों लाये, तब संबारिवेकी मुख्य सेवा हू दिये. तामें जताए, जो सेवा प्रीतिसों करै. कैसे हू होउ ताके हाथको श्रीठाकुरजी प्रीतिसों अङ्गीकार करें.

पाछें सामग्री सिद्ध करि श्रीठाकुरजीकों भोग धरें. समय भये भोग सराइ अनोसर करि सगरे वैष्णवनकों महाप्रसादकी पातरि धरें. सो सब वैष्णव महाप्रसाद लेत साग बखान्यो. तब गदाधरदास परोसत माधवदास पास आये, तब प्रसन्न होइकै माधोदाससों कहे, जो तिहारो लायो साग श्रीठाकुरजी आरोगे. तातें तोकों हरि - भक्ति दृढ़ होऊ. यह आसीर्वाद दिये.

भावप्रकाश : यामें यह जताए, जो रञ्च सेवा सागकी माधोदास दीनता सो किये. तातें श्रीठाकुरजी प्रतिसों आरोगे. यह तब जानिए, जो वैष्णव प्रसाद लेइ सराहना करें. तब होऊ सेवा सिद्धि होय और भगवदीय समान उदार कोऊ नाहीं, जो रञ्च सागकी सेवा किये जनम - जनमको संसार मिटाइ हरिभक्त करि दिये. ऐसे गदाधरदास भवदीय हे.

वार्ताप्रसङ्ग ३ : और एक दिन गांवके बाहिर बनजारा आइ उतर्यो. ताकों बैल चहिए. सो गाममें आइ दस - पन्द्रह गदाधरदासके

सगे ब्राह्मन बैठे हते. सो गदाधरदासकी ईर्ष्या करते, जो भगत भयो है. सो बनजारेने उन ब्राह्मणन सों पूछ्यो, हमकों बैल मोलकों लेने सो कहां मिलेंगे ? तब उन ब्राह्मणनने कही, गदाधर भगत है, उनके यहां जितने चाहिए तितने लेहु. परन्तु यों तो वे न देइंगे. उनके पास रुपैया दे आवो. कहियो, हमकों जहांसों चाहो तहांसों मंगवाइ देहु. पाछे दूसरे दिन जइयो. तब बैल तुमकों मिलेंगे. तब बनजारा १००) रुपैया लै गदाधरदासके पास गयो. कह्यो, हमकों बैल लेने हैं. सो तुम मंगाइ देहु. तब गदाधरदासने कही, बाबा ! हमारे बैल कहां ? गांवमें पूछो, हम तो जानत नाहीं. तब बनजारेने १००) रुपैया गदाधरदासके आगे धरि दिये. उठि चल्यो. कह्यो, काल्हि बैल लेन आऊंगो. मोसों गांवके लोगन ने या भांति बताए हैं. तब गदाधरदासने जानी, जो हमारी जातिकेने याकों बहकायो होइगो. तब गदाधरदासने कही, काल्हि मध्याह्न समे तो न देखोगे. तौउ बनजारा प्रसन्न होइके कहै, जो आछो. यह रुपैया राखो. पाछें गदाधरदास १००) रुपैयाकी सामग्री मंगाये. सगरे पाक सिद्ध करि दूसरे दिन भोग धरे. फेरि सगरे वैष्णवनकों परोसत हते मध्याह्न समे, तब बनजारा आयो. तब गदाधरदासने कही, भले समय आयो. ए सब ठाकुरजीके बैल हैं. यामें बछरा हू हैं, तरुन हू हैं. जैसे चाहिये तैसे देखि लेहु.

भावप्रकाश : याको आसय यह, बैल धर्मको रुप है. सो गदाधरदास कहे, आजुके कालमें धर्म इन वैष्णवनमें हैं. सो धर्म लेनो होइ तो देखि ले. बैलकों यह, जो जा कारजमें लगावै सोई करे. नाहीं न करे. जो खबावै सोई खावै. सन्तोष करे तैसे ये वैष्णव हैं. जो जा कार्यमें चलत हैं सो प्राप्त होय, तामें सन्तोष हैं.

सो बनजारेकी सामग्री श्रीठाकुरजी अरोगे. वैष्णव महाप्रसाद लिये. और गदाधरदास प्रसन्न होइके कहें. सो उह बनजारेकों ज्ञान होइ गयो. जो ए तो भगवद्‌भक्त हैं. गांवके लोगनने मसखरी करी, लराइबेको उपाय कर्यो हतो. परन्तु मेरे बड़े भाग्य हैं, जो या मिष मो सारिखे पापीकी सत्ता अङ्गीकार किये. अब मैं इनकी सरन जाऊंगो. कृतार्थ होऊं. तब साष्टाङ्ग दण्डवत् गदाधरदासकों करि कह्यो, मैं रात्रि - दिन संसार समुद्रमें भटकत हों. अब तिहारी सरन आयो हूं. मेरो उद्धार करो. तब गदाधरदासनें कही, हम तो सेवक करत नाहीं. परन्तु ए सगरे वैष्णव और हम श्रीआचार्यजीके सेवक हैं, सो अड़ेलमें बिराजत हैं, तिनके सेवक होउ. पाछें गदाधरदासने दैवी जीव जानि वाकों महाप्रसाद दिये. तब बनजारा अड़ेल आइ श्रीआचार्यजी पास नाम पाइ कृतार्थ भयो.

भावप्रकाश : यामें यह जताए, जो भगवदीयके एक क्षणके सङ्ग तें, जो उत्तम जीव होय तो वाको कार्य ह्वै जाइ. गदाधरदास एसे भगवदीय हे. इनके हृदयको अगाध भाव है, सो कैसे कह्यो जाय.

सो वे गदाधरदासजी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके एसे कृपापात्र भगवदीय हे. तातें इनकी वार्ताको पार नाहीं, सो कहां ताई कहिये. ... ।।वार्ता ८।।

१४-बेनीदास माधवदास

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक बेनीदास माधवदास, दोऊ भाई क्षत्री हते, कड़ामें रहते, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : बेनीदास वृषभानजीके गाड़ा को बैल है. सो ऋषभ सखाकों सींग मार्यो. सो तीन दिन ऋषभ सखा दुःख पायो. ताके शाप तें गिरे भूमि पर. और माधवदास रतनप्रभा ललिताजीकी सखी है. सो इहां भगवद् इच्छा तें दोउ भाई भये. परन्तु मन मिले नाहीं. सो माधोदासने वेस्या घरमें राखी हती, सो वैष्णव सब निंदा करते. परन्तु उह वैष्णव देवी हती. चन्द्रावलीकी सखी चन्द्रलता लीलामें इनकौ नाम हतो. सो अलौकिक सम्बन्ध बिना दैवी जीवकी दृढ़ प्रीति बंधे नाहीं.

वार्ताप्रसङ्ग १ : पाछें एक समय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कड़ामें पधारे. तब सगरे वैष्णव दरसनकों आये. पाछें माधवदास सुने. सोऊ आय श्रीआचार्यजीकों दण्डवत् कियो. तब सगरे वैष्णवन दरसनको आये. तब सगरे वैष्णवननें श्रीआचार्यजीसों कही, महाराज ! माधवदासने वेश्या राखी है. तब श्रीआचार्यजी पूछे, क्यों माधवदास ! वेश्या राखी है ? तब माधवदासने कही, महाराज ! मेरो मन वाके ऊपर आसक्त है. तातें राखी है. या प्रकार तीन बेर श्रीआचार्यजी पूछे. तीनों बेर माधवदासने कही, महाराज ! मेरो मन वा पर आसक्त

है, तातें राखी है. तब श्रीआचार्यजी चुप व्है रहे.

भावप्रकाश : याको अभिप्राय यह, जो प्रथम वैष्णव निंदा करते, सोउ माधोदासकों वेस्याको सङ्ग छुड़ावनकों. जो निंदा तें लाज पाइ छोड़ेंगे, याते करते. अपने भाई जानिकें, ईरष्या द्वेष भाव नाहीं हतो. जो द्वेष होइ तो सगरेनकों बाधक होई. पाछें श्रीआचार्यजीसों वैष्णवनने कही. सोउ माधोदासके लिये, जो श्रीआचार्यजीके कहे तें छूटै तो आछो. लौकिकमें वैष्णवकी निंदा होत हैं सा छूटै. सो श्रीआचार्यजी सर्व लीलाको प्रकार जानत हैं. तातें कहैं, क्योंरे माधवदास ! तू वेस्या राखे है ? यह कही. यह कहते, जो वैस्याको सङ्ग छोड़ दे तोकों बाधक है. तो माधवदास छोड़ि देते. आपु बड़ाई करी. क्योंरे माधवदास ! वेस्या सरीखी हीनकों अङ्गीकार करि राखे ? संसारमें यही जात हती ! लौकिक सोंउ न डरप्यो ? तब माधवदास कहे, मन वा पर आसक्त व्है गयो. जो याकों कहूं ठिकानो नाहीं है तातें संसारकी लाज सरम वैष्णवकी हू का'नि छोड़ि राखी है. सो मैं नहीं राखी, मनके प्रेरक आपु हो. आपही वा पर आसक्त कियो, सो आप ही राखी है. या प्रकार तीन बार कहे. सो यातें जो सांची प्रीति होइगी (तो) एक दृढ़ बचन सांचे निकसेंगे. सो सांच ही तीन बार माधवदासने कही. तब आपु प्रसन्न भये. जो एसे टेकके वैष्णव दुर्लभ हैं.

तब सगरे वैष्णव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों कहे, महाराज ! अब तांई तो आपुकी का'नि हती. अब आपुसों हू कहि छूट्यो. आपु वासों कछू कहे नाहीं ?

भावप्रकाश : यह कहे यातें, जो वैष्णवनकों बड़ी चिन्ता भई, जो आपु आगे कहि दियो. अब याको कैसे कल्यान होइगो ? यह चिन्ता करि फेरि वैष्णवने कही, आपु यासों कछू कहे नाहीं ? सो कही, यह जताये.

तब श्रीआचार्यजी वैष्णवनको समाधान कियो. तुम चिन्ता मति करो. याको मन वा पर आसक्त है, सो श्रीठाकुरजीकों फेरत कितनीक बार लगेगी ? और गदाधरदासने याकों आसीर्वाद दियो है, जो हरि - भक्ति दृढ़ होइगी सोई यह माधवदास है.

भावप्रकाश : यह कहि यह जताये, जो याकी चिन्ता तुम मति करो. यह संसारमें परिवेवारो नाहीं है. वेस्या आदि और हू कों संसार तें काढ़न वारो है. गदाधरदासने दृढ़ भक्ति दीनी सो मैंने दीनी. अब, जो मैं हठ करिके छुड़ाऊं तो गदाधरदास भगवदीयकी कृपा कैसें जानी जाय ? यातें गदाधरदासने हरि - भक्ति दीनी सो दृढ़ होइगी. तुम याकी चिन्ता मति करो.

तब सब वैष्णव प्रसन्न होइके चुप ह्वे रहे. ता पाछे माधवदासको मन फिर्यो. सो वेस्या दूरि कीनी. वैष्णवकी रीति मर्यादामें चलन लागे. वैष्णव भये.

भावप्रकाश : यामें यह जताये, जो वेस्याकों दूरि कीनी सो यह अर्थ वेस्याकों बताए, जो तू श्रीगुसांईजीकी सखी है. जब श्रीगुसांईजी पधारेंगे तब तेरो कार्य होइगो. तातें अब हमसो तोसों न बने. यह कहिके काढ़े. तब वह वेस्या बिना घीकी चुपरी रुखी अङ्गाखरी खाइके निर्वाह पन्द्रह वर्ष लौं कियो. पाछें श्रीगुसांईजी कड़ामें पधारे तब वेस्याने सुनी तब श्रीगुसांईजीसों आइ विनती करी, महाराज ! मेरो अङ्गीकार करिए. तब श्रीगुसांईजी कहे. हम वेस्याकों सेवक नाहीं करत. तब घर आइकें परि रही. अन्न जल छोड़ दियो. सो आठ दिन श्रीगुसांईजी कड़ामें रहे. दूरि तें वेस्या दरसन करि जाइ. पाछें नौमें दिन श्रीगुसांईजी पधारन लागे. तब वेस्या दोइ मनुष्यनके हाथ पकरिकें आई. कह्यो, महाराज ! आजु नौमो दिन है. बिना अन्नजल मेरे अब प्रान छूटेंगे. जो आप अङ्गीकार न करोंगे. तब श्रीगुसांईजीने जानी जो अब याको दोष दूरि भयो. सुद्ध भई. तब उह वेस्याकों नाम सुनायो. पाछें उह ब्रह्मसम्बन्धकी बिनती करी महाराज ! माधवदास कहि गये हैं. जो तू श्रीगुसांईजीकी दासी हैं. सो आपके लिये पन्द्रह बरस लों सखी अङ्गाकारी खाय देह राखी. अब नौमे दिन तें जल हू त्यागो है. और जो मोकों आज्ञा करो सो मैं करों. मैं तो दुष्ट हों. परन्तु माधवदासके सम्बन्ध तें मोकों श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके दरसन हू भये, और आपके हू भये. तातें मोकों ब्रह्मसम्बन्ध कराइ मेरे माथे भगवत् सेवा पधरावो, तो मेरे प्रान रहेंगे. तब श्रीगुसांईजी शुद्ध भाव देखिके ब्रह्मसम्बन्ध कराए. लालजी पधराय दिये. वैष्णवनसों कहे, याकों रीति भांति सब बताइ दीजो, ता प्रकार यह सेवा करै. ऐसे करत वेस्याको अटकाव भयो. सो वैष्णव तो बरजे, जो चारि दिन लों कछू मति जलादि छूवो. परन्तु वाको प्रेम बहोत सो रह्यो न जाइ, अटकावमें सेवा करै. पाछें पांचवे दिन अपरस काढ़ै. श्रीठाकुरजीकों पञ्चामृत स्नान करावै. सो वैष्णवनने उनसों व्यौहार छोड़ि दियो. पाछें कछुक दिनमें श्रीगुसांईजी कड़ा पधारे. तब सबनने श्रीगुसांईजीसों कही, महाराज ! वह वेस्या अटकावमें हू बहोत बरजे परन्तु मानत नाहीं, सेवा करत है. पाछें वेस्यासों, ऐसे सुनि श्रीगुसांईजी निकट बुलाइ कहे, अटकावमें लोटी

क्यों भरत हो ? तब वेस्याने कही, महाराज ! मेरे जीतने रोम हैं इतने घनी लौकिकमें किये. सब आपकी कृपा तें छूटे. अब एक घनी अलौकिक आपु करि दिये, तिन बिना कैसें चारि दिन रह्यो जाइ ? सो आपु तो अन्तर्यामी हो. एक क्षणको अन्तराइ सह्यो नहिं जात है. अरु पांचवे दिन अपरस हू काढ़ि पञ्चामृतसों श्रीठाकुरजीकों स्नान करावत हों. यह मर्यादा हू राखत हों. अब आप सबके अन्तरकी जानत हो, जो आज्ञा देउ सो करों. तब श्रीगुसांईजी याके ऊपर श्रीठाकुरजी प्रसन्न देखिकैं कहे, जैसे करति है तैसेई करियो. या प्रकार वाको समाधान करि घर पठाई. जो वेगि जा, तेरे लिये श्रीठाकुरजी बैठि रहे हैं. तब वह दण्डोत् करिके गई.

पाछें श्रीगुसांईजी वैष्णवनसों कहे, जो वह वेस्या करें, सो करन देऊ. वासों मति कछु कहियो. बाकी देखादेखी और कोई मति करियो. वा पर श्रीठाकुरजी वाही भांति प्रसन्न होंइगे. या प्रकार उह वेस्याकों माधवदासके सङ्ग तें प्रेम भयो.

वार्ताप्रसङ्ग २ : माधवदास, बेनीदाससों मिलके रहते. सो एक दिन मोतीकी माला बहोत मोलकी भारी बिकन आई. सो देखिकै माधवदासने बेनीदाससों कही, यह माला श्रीनवनीतप्रियजी लाइक है, सो लेहु. तब बेनीदासने कही, मालाकी कहा है ? हमारे जो कछू वस्तु है सो सब श्रीठाकुरजीकी ही है. यह कहिकैं बात टारि दिये.

भावप्रकाश : यामें यह जताए, जो संसारमें आसक्त, सो लोगनके दिखाइवेके लिये सब श्रीठाकुरजीको कहै. परन्तु श्रीठाकुरजीके लिये खर्च न करे.

तब माधवदासनें कही, जो सब श्रीठाकुरजीको है तो श्रीठाकुरजीके लिये माला क्यों नाहीं लेत ? तब भाई बेनीदासने कही, जो हमसों कैसे लीनी जाइ ? तब माधवदासने कही, जो मेरो द्रव्य बांटि देहु. मैं तुमसों न्यारो रहूंगो.

भावप्रकाश : यामें यह कहे, तुम बैल हो, सो केवल गृहस्थाश्रमको ब्यौहार लादो. हों तो न्यारो रहि मनोरथ करूंगो.

सो द्रव्य आधो बांटिके न्यारे भये. सो थोरो द्रव्य हतो, सो माला लीनी न गई. परन्तु मनमें यह, जो ऐसी श्रीनवनीतप्रियजीकों अङ्गीकार होई. सो द्रव्य लै के दक्षिण कमावन गये. और यह मालाकों माधवदासने अलौकिक अङ्गीगीकार विचारे. सो लौकिकमें जाय नाहीं, सो प्रयागमें बिकन आई. तब प्रयागके वैष्णव मोल ले श्रीआचार्यजीकों दिये. श्रीआचार्यजीने श्रीनवनीतप्रियजीकों पहराए. उहां माधवदासने द्रव्य बहोत कमायो, सो पहिली माला तें उत्तम माला लेके चले. सो मारगमें एक बड़ी नदी आई. तहां नाव पर बैठे, और हू बहुत लोग बैठे. और नाव मध्य धारामें जब आई तब श्रीनवनीतप्रियजी लाल छरी ले कैं आये. सो एक माधवदासकों दरसन भये तब श्रीमुख तें कहे, नाव डूबाऊं ? तब माधवदास कहे, ''निजेच्छातः करिष्यति.'' तब श्रीनवनीतप्रियजी कहै, तू कहां गयो हतो ? तब माधवदास कहे माला लेन गयो हो. तब श्रीनवनीतप्रियजी कहे, कहा हमारे माला नाहीं हैं ? देखि उहि माला श्रीआचार्यजी धराए् हैं. और मेरे बहोतेरी हैं. तब माधवदास कही, महाराज ! आपके बहोतेरी हैं. परि सेवकको यह धर्म नाहिं जो बैठे रहे. उद्यम करनो. तब नाव डूबत तें रही.

भावप्रकाश : श्रीठाकुरजी नाव पर आइकें कहें सो यातें, जो तेरे पीछे मोकों दक्षिण जानो पर्यो, सो तू क्यों गयो ? मेरे कहा माला नाही है ? तातें नाव डुबाऊं तो तू कहा करै ? मनोरथ तेरो धर्यो रहै. तब माधवदास कहै, ''निजेच्छातः करिष्यति'' सो ''निजानां सेवकानां तस्य (तेषाम्) इच्छातः करिष्यति.'' जो भक्तनकी इच्छा होइ सो ही सदा आपु करत आए हो. ''भक्त मनोरथपूरकाय नमः'' आपको नाम है. सो मालाको अङ्गीकारि श्रीआचार्यजीमहाप्रभुन द्वारा होइ. ता पाछे सरीर रूपी नाव डूबे ताकी मोकों कछू चिन्ता नाहीं है. जब तिहारी इच्छामें आवै तब डुबाइयो. और तिहारे माला बहोत हैं सो यामें मेरो कहा उद्यम ? जो तिहारो मनोरथ कछू बनि आवै तो उद्यम सुफल है. नाहीं तो गृहस्थाश्रम हू वृथा पचि मरनो है, तातें सेवकको धर्म यह, जो तिहारे अङ्गीकारको मनोरथ करत रहैं. तब श्रीठाकुरजी नाव डूबत तें राखी. नाहीं तो जैसे श्रीठाकुरजी नाव डुबावनकी कही. तैसे माधवदास हू भगवद् इच्छा कहते. भक्तकी आज्ञा होइ तो डूबे ही. परन्तु 'निजेच्छातः' कहे. निज जो भक्त तिनकी इच्छा माला अङ्गीकार करानेकी है. या प्रकार कहे. और माधवदासकों तो नाव डूबनकी चिन्ता नाहीं. परन्तु और हू नाव पर बैठे सो भक्तके सङ्ग बचे चहिये. वे कैसे डूबन माधवदास देहि ? तातें भगवदीयकी बानी गूढ़ है. भगवान् समुझें, के कृपा होइ सो सुमझें. और नाव हाली हती तब सबको मुख सूखि गयो. मलाहने कही, हमारे हाथ नाहीं है. ता समय माधवदासको मन प्रसन्न व्है सो नाव डूबन तें रही. तब सबननें कही, जो ए महापुरुष बैठे हैं तातें नाव बची. नाहीं तो सबरे डूबते.

पाछें पार उतरें. कछुक दिननमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके पास माधवदास आये. तब माधवदाससों श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनने कही, नाव डूबत तें कैसे रही ? तब माधवदासने सब समाचार श्रीआचार्यजीसों कहे. तब श्रीआचार्यजी सगरे वैष्णसों कहे, जो देखो, यह वही माधवदास है, कैसी टेकको वैष्णव भयो ? ता दिन तें मालाको नाम माधवदास कहे, सो सगरे कहत हैं.

भावप्रकाश : यह कहि यह जताए, जैसे लीलामें इनकौ नाम रत्नप्रभा तैसे ही रतन जैसो प्रकाश माधवदासकी वार्ताको है. ऐसे माधवदास भगवदीय हे. या वार्तामें भगवदीयके आशीर्वादको उत्कर्ष प्रगट कियो.

सो माधवदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे. तातें इनकी वार्ताको पार नाहीं, सो कहां तांई कहिये. ....वार्ता ।।१।।

१५-हरिवंस पाठक सारस्वत

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, हरिवंस पाठक सारस्वत ब्राह्मन कासीके, कड़ामें रहते, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ए लीलामें गति उत्तालिका विसाखाजीकी सखी हैं. सगरी सेवा तत्काल सामग्री सिद्ध करत हैं. तातें इनकी चाल, इनकी क्रिया, उतावलीसों बेग करत हैं. तातें विसाखाजी इन पर बहोत प्रसन्न रहते.

सो हरिवंस पाठक पहलें गनेशके उपासक हते. सो जब श्रीआचार्यजी 'पत्रावलम्बन' कासीमें किये. पण्डितनकों जीतें तब हरिवंस पाठकके मनमें आई, मैं हूं श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके दरसन करि आऊं. सो दरसनकों आये. तब विप्ररुप देखिकें मनमें आई, जो ए ऊ ब्राह्मण हैं, हम हूं ब्राह्मण हैं. ए पण्डित हैं.

सो मेरे कहा काम है ? मेरे गनेशके दरसनमें ढील लगे सो ठीक नाहीं हैं. यह बिचारी दूरि तें देखि पाछे फिरे. सो घरमें आइ गनेशकी पूजाकौ सामान लै चलन लागे. सो द्वार पर ठोकर लगी, गिरि परे, सो मूर्छा आइ गई. तब गनेशने सपनेमें हरिवंस पाठकसों कहे, तू श्रीआचार्यजीके दरसन करे बिना मेरे पास आवत हतो, सो मैं तेरो मुंह न देखोगे, श्रीआचार्यजीको अपराध कियो. श्रीआचार्यजी पूर्णपुरुषोत्तम हैं. तिनसों अपराध क्षमा कराइ मेरे पास आइयो. तब हरिवंस पाठककों सरीरकी सुधि भई. सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुन पास दोर्यो आयो. दण्डवत् करि बिनती करी, महाराज ! आप पूर्णरुषोत्तम हों, मैं नहिं जान्यो. अब मेरो अपराध क्षमा करि सरन लेहु. तब श्रीआचार्यजी कहे, हम हूं ब्राह्मण हैं. तुम हूं ब्राह्मण हो. सरन आइवेकी क्यों कहत हो ? तब हरिवंस पाठकने कही, महाराज ! हम तो अज्ञानी जीव हैं, संसार समुद्रमें पड़े हैं. सो आपके स्वरूपकों कहा जानें ? हम तो गनेशके उपासक हैं. सो गनेश हू आपके अपराधसों डरपत हैं. तातें मोकों तिहारे पास पठाये. जो अपराध क्षमा कराइ आव. सो मैं अब जान्यो, जो हमसों बड़े आप हो, अब मोकों सरन लेहु. तब श्रीआचार्यजी सेठ पुरुषोत्तमदासके इहां उतरे हते. तहां हरिवंश पाठककों नाम सुनाये. तब हरिवंस पाठकने बिनती करी, महाराज ! घरमें स्त्री है, एक बेटा, एक बेटी है. ताकों अङ्गीकार करिये. तब श्रीआचार्यजीने कही, तुम भगवत् स्वरुप कहूं ते लावो. तब तेरे घर पधारि सबकों नाम - निवेदन कराइ, श्रीठाकुरजी पधराइ देइंगे. तिनकी तुम सेवा करियो, औरकी सेवा मति करियो. तब हरिवंस पाठकने कही, महाराज ! पुरुषोत्तम पाये पाछे ऐसो को अभागो है, जो और देवताके पाचे द्वार भटकेगो. यह कहि बजारमें आइ कछू न्योछावर दे, एक छोटे से लालजीको स्वरुप लियो. सो श्रीआचार्यजीके पास आय बिनती करी, महाराज ! अब कृपा करिके वेगि पधारिये. काहेतें ? सरीरको भरोसो नाहीं. और कदाचित् कोई को काल आइ जाइ तो जीवको अकाज होइ. यह आरति देखि श्रीआचार्यजी महाप्रभुप्रसन्न होइ हरिवंस पाठकके घर पधारे. सगरी अपरस सिद्धि कराई. सगरे कुटुम्बकों नाम निवेदन कराइ श्रीठाकुरजीकों पञ्चामृतसों स्नान कराइ पाट बैठारे. पाछें आप पाक करि भोग धरि भोजन किये. सबनकों प्रसाद पातल धरि. पाछे आप सेठ पुरुषोत्तमदासके घर पांऊ धारे.

पाछें आप पृथ्वी - परिक्रमाकों पधारे. तब हरिवंस पाठकसों कहे, जो सन्देह होइ सो सेठ पुरुषोत्तमसों पूछि लीजो. सो हरिवंस पाठक सेवा भली भांतिसों करते श्रीठाकुरजी सानुभवता जनावन लागे.

सो एक समय हरिवंस पाठक पटना ब्यौपारकों गये हते. सो पटनाके हाकिमसों बहोत मिलाप हतो. सो वह हाकिम मनमें अपनेमें

जाने, जो ए कछू मांगे तो मैं इनकों देंऊं. सो एक दिन उह हाकिमने कही, मैं तुम ऊपर बहुत प्रसन्न हों, तातें तुम जो कुछ मांगो सो मैं देहुं. तब हरिवंस पाठकने कही, कोई दिन कछू काम परैगो तो कहूंगो. सो ऐसे करत डोल उत्सवके दिन निकट आये. तब श्रीठाकुरजीने हरिवंस पाठकसों जताई, जो तू डोल मोकों न झुलावेगो ? तब हरिवंस पाठक मनमें विचारे, अब कहा करिये ? दिन थोरे रहे, चले सो तो न पहोंचिये. तब वह हाकिम पास गये और कहें, कछू मांगत हैं, सो मोकों दियो चाहिए. तब वह हाकिमने कही, जो चाहो सो मांगो. तब हरिवंसने कही, जो मोकों दिन ३में कासी पहोंच्यो चाहिए. तब वह हाकिमने घोड़ाकी डाक पर चले जाई, घोड़ा और मनुष्य साथ दिये. सो मजली - मजली पर घोड़ाकी डाक पर चले जाई, घोड़ा मनुष्य पलटत जाई. सो ऐसे करत दूसरे दिन आइ पहोंचे. रात्रिकों सब डोलकी तैयारी सिद्ध करि राखी, दूसरे दिन झुलाए, बड़ो सुख भयो. पाछे दिन दस - पन्द्रह रहिके पटना आये. तब वह हाकिमने हरिवंस पाठकसों पूछी, ऐसो घरमें कहा जरुरी काम हतो ? जो यह मांग्यो. कछू द्रव्यादिक मांगते, तो लाख रुपैयेकी रीझि देतो. तब हरिवंस पाठकने कही, जो हम गृहस्थ हैं. अनेक काम घरके हैं. सो गयो हतो. या प्रकार अपनो धर्म गोप्य राखे. ऐसे भगवदीय हे. ता पाछे बड़े उत्सव, छोटे उत्सव, सगरे घर आइके करते.

भावप्रकाश : यामें यह सिद्धान्त जताए, जो - स्नेही होइ सो उत्सव अपने ठाकुर पास करे तो ठाकुर प्रसन्न रहें. और श्रीठाकुरजीकी सेवाको प्रकार काहूसों कहनो नाहीं, जैसे हरिवंस पाठक उह हाकिमसों कछु न कहे. घरहूमें जदपि वैष्णव हते तऊ श्रीठाकुरजीके अनुभवकी बात नाहीं कही.

सो हरिवंस पाठक श्रीआचार्यजीमहाप्रभुके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे. तातें इनकी वार्ताको पार नाहीं, सो कहां तांई कहिये. ....वार्ता ।।१०।।

१६-गोविन्ददास भल्ला क्षत्री

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, गोविन्ददास भल्ला क्षत्री, थानेश्वरमें रहते, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : सो गोविन्ददास थानेश्वरमें सिपाइगीरी करते, हथियार बांधते. थानेश्वरके हाकिम पास रहते. रुपैया पांच - सातको रोज पावते. सो थानेश्वरमें श्रीआचार्यजी पधारे. तब थानेश्वरमें बहोत जीव शरण आये. तब गोविन्दास भल्लाने श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों बिनती करी, जो महाराज ! मेरे द्रव्य बहोत है, कहा करुं ? तब श्रीआचार्यजीने कही, भगवद् सेवा करो. तब गोविन्ददास भल्लाने कही - महाज ! स्त्री अनुकूल नाहीं है. ताको आसय यह जो दैवी नाहीं है. तब श्रीआचार्यजी कहें, स्त्रीको त्याग कर. तब गोविन्ददासने स्त्रीको त्याग करि सगरो द्रव्य लाइ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों बिनती करी, महाराज ! द्रव्यको कहा करुं ? स्त्रीको त्याग कर्यो. तब श्रीआचार्यजीने कही, यह द्रव्यके चारि भाग कर. एक भाग श्रीनाथजीकी भेट कर. एक भाग स्त्रीकों दें यातें, जो ब्याह भयो ताको छोड़ेको दोष पूंजी दिये छूट्यो. दो भाग तू लेकें भगवत् सेवा करि. तब गोविन्ददास भल्लानें कही, महाराज ! कछू आपु अङ्गीकार करिए. तब श्रीआचार्यजीनें कही, भलो, एक भाग हमकों दे. तब गोविन्ददासने द्रव्यके चारि भाग करे. एक भाग श्रीनाथजीकों भेंट किये, एक भाग श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों भेट कियो. एक भाग स्त्रीको दियो. एक भागको द्रव्य ले महावनमें आइ रह्यो. सो यातें, जो गांवमें स्त्रीको प्रतिबन्ध परे. तातें महावन आइ, श्रीमथुरानाथजीकी सेवा करन लागे.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो गोविन्ददास महावनमें नित्यके चौबीस टकाकी सामग्री करें, भोग धरें. उहांई मर्यादामार्गीय वैष्णवकों लिवाइ देई, बचै सो गाइकों खवाइ देह. तामें तें आपु कछू न लेई. आपु न्यारि लीटी करि भोग धरि खांय.

भावप्रकाश : याको आसय यह, जो महावनमें नन्दरायजीको देवालय कराइ ब्राह्मनकों पूजा सोंपी हती. सो मर्यादा रीतिसों करते. खरच नन्दरायजी देते. सो ठाकुर हते. ब्राह्मन पूजा करते. सो देवालयकों आपु कैसे लेइ ? तातें न्यारी लीटी करि मानसीसों भोग धरि लेते.

ऐसे करत द्रव्य सब निघट्यो. तब श्रीनाथजीद्वारा आइ श्रीगोवर्द्धनधरकी परचारगी करन लागे. दोऊ समयके पात्र मांजे. रात्रि पहर डेढ़ रहे पाछली, तब उठि देह कृत्य करि न्हाइके गागरिले मथुरा आइ श्रीयमुना - जलकी गागर भरि राजभोग पहले आवते. पात्र सब मांजि रसोइ पोति अपने सब सेवासों पहोंचि पर्वत तें नीचे आइ, तिलक धोइ माला उतारि गांठि बांधि गोवर्द्धनके आसपाससों कोरि

भिक्षा मांगि लावते. सो सेर पांच - सातको आहार हू हतो. सो आहार लाइके आवे तब आइके अपने हाथसों पीस रोटी करि श्रीगोवर्द्धनधरकी ध्वजाकों दिखाइ चरणामृत मिलाइकें लेते. पाछें सेनभोगके पात्र मांजते. रसोई पोति सेवासों पहोंचि सेन करते. या प्रकार सेवा करते. परन्तु श्रीगोवर्द्धननाथजीकों आछो न लागतो.

भावप्रकाश : ताको कारन यह, जो भाव प्रीतिसों ऐसी सेवा करें, तो श्रीगोवर्द्धनधर वाके पाछे लगे डोलते. परन्तु गोविन्ददास भल्ला तामसी हते, सो अहङ्कारसों करते. स्त्रीको त्याग हू अहङ्कारसों कर्यो. महावनमें हू चौबीस टकाकी सामग्री नित्य करते. सो अहङ्कारसों करते. इहां हू सगरी सेवा अहङ्कार तें करते. सरीरको कष्ट पावते. परन्तु सगरे सेवकनकों नीचे करि दिये. जो मो बराबर कौन करेगो. तातें श्रीगोवर्द्धनधरकों आछो न लगतो.

तब श्रीगोवर्द्धनधरने अड़ेलमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों कह्यो, जो तिहारो सेवक मोकों बहुत खिजावत है.

भावप्रकाश : यामें यह जताए, जो अहङ्कारसों बहोत सेवा करत है, मोकों खिजावत है, अप्रसन्न करत है. और तिहारो सेवक यों कहे तामें यह जताए, जो हों तो वाकों दण्ड देतो परन्तु तिहारो सेवक है सो तुम ही समुझावो.

तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु अड़ेल तें आगरे पधारिकै सब वैष्णवनसों पूछे, श्रीठाकुरजी किन रुठाए हैं ?

भावप्रकाश : सो सबसों पूछिवेको कारन यह, जो आप तो जानत हैं, जो गोविन्ददास भल्लाने रुठाए. परन्तु सबसों पूछें, जो अहङ्कार सहित और हू कोई सेवा करै तो श्रीठाकुरजी अप्रसन्न होइंगे.

तब सगरे वैष्णवनने कही, महाराज ! हम तो कछु जानत नाहीं. अहङ्कार कौन बातको करै ? हमसों (तो) कछू बनत नाहीं. तब प्रसन्न होइ आगरे तें आपु मथुरा पधारे. तब यहांहू सब कहे, महाराज ! हम तो कछु जानत नाहीं. तब आप यहां ते हू प्रसन्न होइके

श्रीनाथजीद्वार पधारें. तब स्नान करिके मन्दिरमें पधारे. श्रीगोवर्द्धनधरके दोउ कपोलन पर हाथ फेरिकें पूछें, बाबा ! अनमने क्यों हो ? तब श्रीगोवर्द्धनधरनें कही, तिहारो सेवक मोकों बहोत खिजावत है ! तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनने सगरे सेवक बुलाइ, सेवा - टहल, महाप्रसादकी पूछे. सो सबकों शिक्षा दिये, जो अहङ्कार मति करियो. तब गोविन्ददाससों पूछे, सो वे सब कहें. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कहें, श्रीनाथजीकी रसोईमें सगरे सेवक महाप्रसाद लेत हैं. तुमहू लियो करो.

भावप्रकाश : यह कहि यह जताए, जो सगरेकी रीति चलो. अहङ्कार छोड़ो. और प्रभु अक्लिष्ट कर्मा हैं, दुःख पाय अहङ्कारसों करिये सो प्रभुकों भावे नाहीं.

तब गोविन्ददासने कही, महाराज ! देव - अंस कैसे लेहुं ?

भावप्रकाश : यामें यह भावसों कहें, जो सगरे देव - अंस लेत हैं मैं कैसे लेऊं ?

तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कहे, जो हमारी रसोईमें महाप्रसाद लेउ.

भावप्रकाश : ताको आसय यह जो आपकी रसोई होइ, यह कहि यह जताये, जो श्रीगोवर्द्धनघरकी सेवा छोड़ि हमारी करो. इहां रहो. सब सेवकनसों मिलेके चलो तो निर्वाह होय. नाहीं तो हमारे पास रहो महाप्रसाद लेहु.

तब गोविन्ददास फेरि अहङ्कार करि कहें, देव - अंस, गुरु - अंस कैसे लेहुं ? तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें कही, जो सेवा छोड़ि देउ.

भावप्रकाश : यामें यह जताए, जो श्रीनाथजीके यहां अहङ्कार किये तब सहजमें सेवा छूटि गई. सो सेवा छोड़ि दीनी. परन्तु आज्ञा न मानी. तातें श्रीगोकुलनाथजी कहे क्षत्री अङ्कारीने सेवा छोड़ि दिनी. वाको आसय यह, जो श्रीगोकुलनाथजीकों अहङ्कार प्रिय नाहीं है. ''तामसानां अधोगतिः ।'' काहेतें अहङ्कार दास - भावमें विरोधी है. तातें क्षत्री अहङ्कारी कहे. ताको आसय यह, और क्षत्री सेवक बहोत भये परन्तु अहङ्कार क्षत्रीपनेको छोड़ि दिये और इनको वैष्णव नाहीं कहें, क्षत्री अहङ्कारी कहें. सो क्षत्रीपनो दासहू भये पै नास न भयो, गुरु आगें. तातें उत्तम कुल - मद बाधक दिखाए. जो एक दिन अहङ्कारसों सेवा छूटे. सेवा ठाकुर न करावें. यह सिद्धान्त दिखाये.

तातें शिक्षापत्रमें लिखे हैं -

असाधनः साधनो वा न साधुः साधुरेव वा ।
शरणादेव निखिलं फलं प्राप्नोत्यसंशयः।।

या मार्गमें कितने असाधन हैं.जिनसों भगवद्धर्म नाहीं बनत. कितने साधन बहोत करत है, सेवा स्मरण, जप - पाठ. वामें कोई साधु, जो सात्विक है कोई असाधु राजसी - तामसी है. परन्तु सरन रात्रि दिन दृढ़ है प्रभुकी. तिनहीकों प्राप्ति निश्चय है. यह जताये.

वार्ताप्रसङ्ग २ : तब क्षत्री अहङ्कारीमें सेवा छोड़ि दीनी, पाछे मथुरा आयो. परन्तु बिना सेवा - पूजा रह्यो न जाइ, दैवी है. तब केसोरायजीकी सेवा इजारे लीनी. सो विपरीत किये.

भावप्रकाश : काहे तें, पहले महावनमें मथुरानाथजीकी सेवा छोड़ि दिये, श्रीगोवर्धनघरकी सेवा किये, सो तो ठीक किये. परन्तु श्रीगोवर्धननाथजीकी सेवा छोड़ि फेर मर्यादामें गये, तातें विपरीत भये, सो कहत हैं.

पाछे एक दिन गोविन्ददासने केसोरायजीकी सैया - निवार भराए. सो बुननवारेकों मेवा खवाइ बुनाये. सो बहोत सुन्दर भई. और मथुराके हाकिमने खाट - निवार, सो बुनाइ. तब काहू ने कही, केसोरायजीकी सैया भई तैसी न भई. यह सुनिकें वह हाकिम केसोरायजीके मन्दिरमें आयो. सो तिवारीमें केसोरायजीकी सैया धरी हती. तापर चढ़ि बैठ्यो. सो कोईने गोविन्ददास भल्लासों कही, जो मथुराको हाकिम आइ श्रीठाकुरजीकी सैया पे बैठ्यो है. तब गोविन्ददास गुपती लेत आये. सो हाकिमकों उहांई मार्यो पाछे हाकिमके मनुष्यनने गोविन्ददासको अपराध कियो. यह बात मथुराके वैष्णवनने सुनी. सो गोविन्ददासकी देहको अग्नि - संस्कार कियो.

पाछें यह बात एक वैष्णवननें श्रीआचार्यजीसों कहे, महाराज ! ऐसे वैष्णवनकी यह गति कैसे भई ? तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनने कही, याके परलोकमें तो कछु हानि नाहीं भई (परि) यह मेरी आज्ञा न मान्यो तातें ऐसो भयो. यह पहले जन्ममें नन्दरायजीको भेंसा हतो. सो याके ऊपर श्रीठाकुरजी चढ़ते सो याने एक दिन श्रीठाकुरजीके पूंछकौ मारी, ताको दण्ड भयो. और श्रीनन्दरायजीके इहां श्रीठाकुरजीको मन्दिर बन्यो तब याकी पीठ पर पानी - माटी बहोत ढोयो है.

भावप्रकाश : यह कहि यह जताए, जो तहांहू भार उठायो और यहांहू भार उठायो. परन्तु प्रीतिसों सेवा नाहीं करी, जैसो अधिकार पूर्वको होय तैसोई कार्य बने.

और गोविन्ददास सारस्वत कल्पमें नन्दरायजीके पास हथियार बांधिके रहते सो मथुरामें कंसको कर देते, सो इनके हाथ देते. लीलामें इनको नाम 'मनसुखा' गोप है. सो ठाकुरजीनें जब धोबीके वस्त्र लूटे मारे तब मनसुखा कंसको पैसा टका राखतो, ताको लूटिके मारगमें बहोतनकों मारे. सो सब अधमरे दस - पांच भये. सोऊ बैर भाव इनको चल्यो आयो.

पाछे ये स्वेतबाराह कल्प भयो, यामें यह नन्दरायजीके घर भैंसा भये. ता बातकों पांच हजार बरस भये. तहां श्रीठाकुरजीकों पूंछकी दीनी यह अपराध पर्यो. सो मथुराको हाकिम मलेच्छ हतो. सो कंसको तोषा - खाना करतो. ताकों गोविन्ददासने मारे, जो याने नन्दरायजी पास तें पैसा बहोत लियो है. और

अब श्रीठाकुरजीकी सैया पर बैठ्यो. यह मारन लायक है, तातें मारे. और दस - पांच अधमरे पहले किये, तिन सबन मिलिके गोविन्ददासकों मारे. सबको बैर छूट्यो. पाछे अब नन्दरायजी पास फेरि गोप भये. या प्रकार कहि यह जताए, जो पिछले बैरसों बैर होइ, पिछले स्नेहसों स्नेह होइ. सो गोविन्ददास भल्ला एसे भगवदीय हते. इनकी वार्तामें यह सिद्धान्त जताए, जो अहङ्कार न करनो. और अपुने हठ करि गुरुकी आज्ञा उलङ्घन न करनो. और पुष्टिमार्गीय श्रीठाकुरजीकी सेवा छोड़िके मर्यादामार्गीय श्रीठाकुरजीकी सेवा न करनी.

सो वे गोविन्ददास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे. ताते इनकी वार्ता कहां ताई कहिये. ....वार्ता ।।११।।

१७-अम्मा क्षत्राणी

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी सेवकनी, अम्मा क्षत्राणी, कड़ामें रहती, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ये लीलामें रोहिनी हती. सो श्रीनन्दरायजीके उहां रही. पाछें मथुरा गई. परन्तु ब्रजेमें इनको मन रह्यो. तातें अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको सम्बन्ध पाइ ब्रजलीलामें अङ्गीकार भयो. तातें इनको पुत्रभाव ही दृढ़ है. सो अम्मा क्षत्राणी कड़ामें रहती, कुटुम्ब बहोत हतो. सो अम्माके दोइ बेटा भये. एक वर्ष दोइ को. एक वर्ष चारि को. तब अम्माको पति, सास, सुसर, मा, बाप, सब मरि गये. अम्मा और दोऊ बेटाई रहे. सो गदाधरदास कड़ामें रहते. तहां श्रीआचार्यजी पधारे हे. सो अम्माके एक रात्र, सुपन श्रीठाकुरजीने दियो, जो तू श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी सरनि सबेरे जैयो. मैं श्रीआचार्यजीमहाप्रभुन पास हों. सो मोकों पधाराई सेवा करियो. तब अम्माकी नींद खुली. सो विरह बहोत भयो. जो कब सबेरो होइ ? कब मैं श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी सरनि जांउ ? सो सवेरो होत ही न्हाइके श्रीआचार्यजीमहाप्रभुन पास आई, दण्डवत् कियो. महाराज ! मोकों सरनि लीजिए, और आपके पास श्रीबालकृष्णजी हैं, सो मोकों कृपा करिकें रात्रकों या प्रकार आज्ञा करी है. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आपु अम्माको सुद्ध भाव देखिकें आपु नाम - निवेदन कराए. और एक ब्राह्मन दक्षिनसों आयो हतो, सो वाके पास छोटेसे लालजी हते. सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुकों दे, बद्रिकाश्रममें जाई कछू दिन तपस्या करि देह छोड़ी. सो ठाकुर अम्माके माथे पधराय दिये. आज्ञा किये, (जो) इनको नाम श्रीबालकृष्णजी है. इनकी बालभावसों पुत्रकी नांइ स्नेह करि सेवा करियो. या प्रकार कृपा

किये. और अम्माके दोइ बेटा. सो श्रीठाकुरजीके अन्तरङ्ग सखा हैं. बड़ो ‘अर्जुन’, छोटो ‘भोज’ तिनहूकों नाम निवेदन कराइ, अम्माकों आज्ञा दिये, जो इन दोऊ बेटानकों काहूके हाथको खान मति दीजो. ये ठाकुरकी महाप्रसादी दीजे. येऊ लीला सम्बन्धी हैं. महाप्रसाद बिना और खाइंगे तो इनकों अन्तराय होइगो. या प्रकार अम्माकों अङ्गीकार करि श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आपु कासी पधारे. सन्यास ग्रहण करि आसुरव्यामोह लीला करी.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो यह अम्मा क्षात्राणी सेवा बालभावसों प्रीतिसों करें. सो वाके दोऊ बेटा अम्मा कहते. सो श्रीठाकुरजी हू सानुभाव होइकें अम्मा कहते. सो ऐसे करत श्रीठाकुरजी हू दोऊ बेटाके सङ्ग खलते. ईंट घसिके आपुसमें लगावते, उड़ावते. सो देखिके अम्मा मनमें बहोत सुख पावती. पुत्रभावसों बरजती. जो यह कहा खेल ? कहूं नेत्रन हू में परेगो. ऐसे करत कछुक दिनमें एक बेटा वाको बड़ो मरि गयो. तब अम्मा श्रीठाकुरजीसों पहोंचिके रोवन बैठती. क्षत्रीनमें बहोत रोवत हैं. तब अम्माकों रोवति देखि श्रीठाकुरजी कहतें, अम्मा मति रोवे. या प्रकार बरजते. खेद करते. सो अम्मा मानती नाहीं. ऐसे करत अम्माको दूसरो बेटा छोटो हू मरि गयो. तब अम्मा बहोत रोवन लागी. तब श्रीठाकुरजी बरजते, अम्मा रोवे मति. परन्तु रोवत तें न रहेती. तब श्रीठाकुरजी अड़ेलमें श्रीगुसांईजीसों कहे, जो अम्मा रोवति है. सो मैं बहोत दुःख पावत हों. तातें तुम आयकें समुझावो.

भावप्रकाश : ये दोऊ बेटाकी देह यासों छूटी, जो बड़े होंइ तो संसारके कार्यमें लगें. अम्माको मन इनके व्याहादिकमें लगे. सो वे अन्तरङ्ग सखा हैं. तातें बेगि बुलाइ लिए. परन्तु अम्मा भगवदीय होइकें क्यों रोई ? ताको आसय यह है, जो लोगनमें पुत्र - सोक, सो तो अम्माके नाहीं है. परन्तु श्रीठाकुरजी दोऊ बेटानके सङ्ग खेलते, ईंट घसिकें परस्पर देहसों लगावते, उड़ावते. सो खेल अनेक प्रकारको अम्मा दर्शन करती. सो खेलको सुख गयो. दोऊ श्रीठाकुरजीके खिलौना बेटा हते. सों अब किनसों खलेंगे ? या भावसों अम्मा रोवती. तातें श्रीठाकुरजी अम्माके ऊपर प्रसन्न व्है कें बरजते. अम्माको दुःख सहि न सकते. और जो पुत्रको ममत्व करिके रोवती तो श्रीठाकुरजी न बोलते.

तब श्रीगुसांईजी अड़ेल तें कड़ा पधारिकें, अम्माके घर जाइ अम्मासों कहे, तू मति रोवे. श्रीठाकुरजी खेद पावत हैं.

भावप्रकाश : या प्रकार कहि अम्माके बेटानको स्वरूप दिखाए. जो अन्तरङ्ग सखा हैं. बड़े होइ तो संसारमें ठीक न परे. तातें तू रोवे मति.

तब अम्मा रोवत तें रही. सो अम्माको ऐसो स्नेह हतो. जो जब श्रीठाकुरजीकों उठावें तब दोऊ हाथसों सोंधो अतर आदि लगाइ श्रीअङ्ग परस करें. जो मेरे हाथ कठिन हैं. कोमल बालकको श्रीअङ्ग है. या प्रकार सगरी सेवा प्रीति पूर्वक करती.

भावप्रकाश : यह सोंधो है, सो श्रीस्वामिनीजीके स्नेह रुप सचिकन है. यह कहि यह जताये, जो ब्रजभक्तनके जसोदा - रोहिनीके भावसों सेवा करती. तातें श्रीठाकुरजी अम्माके ऊपर बहोत प्रसन्न रहतें.

वार्ताप्रसङ्ग २ : और एक समय श्रीठाकुरजीके आगें दूधको कटोरा भरिकें धर्यो. टेरा लगाइके अम्मा बाहर आई. ऐसे में श्रीगुसांईजी अम्माके घर पधारे. तब अम्मासों यह पूछे, जो श्रीठाकुरजीके कहा समय है ? तब अम्माने कही, बाबा, पधारो. आपुकों सदा समय है. तब श्रीगुसांईजी टेरा सरकाय भीतर गये. सो देखें तो श्रीठाकुरजी कटोरा हाथमें लिये दूधपान करत हैं. तब श्रीगुसांईजी टेरा लगाइ पाछें वैसेही फिरि आये. तब अम्माने कही, जो बाबा, पाछें क्यों फिरि आये ? तब श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो श्रीठाकुरजी आपु दूध पीवत हैं. तब अम्माने कही, यह तो लरिका है. कहा तुम नाहीं जानत हों ? तब श्रीगुसांईजीने कही, यह दूध हमारे डेरा पहोंचाय दीजो. तब अम्माने कही, तुमही अरोगनहारे हो. भावे यहां अरोगो, भावे ऊहां अरोगो. यह अम्माके स्नेहके बचन सुनिकें श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये. अपुने डेरा पधारे. पाछें अम्मा हू दूध लेकें आई, श्रीगुसांईजीकों पान करायो.

भावप्रकाश : याको कारन यह, जो अम्मा रोहिनीको स्वरूप है. सो श्रीबालकृष्णजी रोहिनीजीके भाव तें हैं. तातें श्रीबालकृष्णजी दूध अरोगत हते तब श्रीगुसांईजी पाछें फिरे. सो यातें, जो श्रीनवनीतप्रियजी श्रीगुसांईजीके ठाकुर हैं. वह होते तो आप पान करावतें. परन्तु रोहिनीजीसों और श्रीचन्द्रावलीजीसों स्नेह बहोत हैं. रोहिनीजी चन्द्रावलीजीको भाव जानत हैं. तातें श्रीगुसांईजी प्रसन्न होइकें कहें, यह प्रसादी दूध हमकों पठाईयो. सो यह पिछलो लीलाको स्नेह जतायो. तब अम्माने कही, चाहे यहां अरोगो चाहे उहां अरोगो. ताको कारन यह, जो तुमही अरोगनहारे हो. सो ये ठाकुरजीकों तुमही राखनहारे हो. ये

ठाकुर तिहारे हैं.

पाछें श्रीगुसांईजीने अम्माकी देह छूटे पाछें श्रीनवनितप्रियजीके पास पधराये.

भावप्रकाश : काहेतें ? रोहिनीजीसों श्रीगुसांईजीको भाव मिल्यो है. रोहिनीजी हू लीलाकी साधक है. यातें अम्माकी का'नि श्रीगुसांईजी बहोत राखते.

सो अम्मा ऐसी कृपापात्र भगदीय हती. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिये. ....वार्ता ।।१२।।

भावप्रकाश : या वार्तामें यह सिद्धान्त जताये, जो भक्तनको क्लेश श्रीठाकुरजीसों सह्यो न जाइ. तातें लौकिक वैदिक दुःख आनि पड़े तो वैष्णव धीरज राखि क्लेश न करे. जो क्लेश हू करे तो श्रीठाकुरजी सम्बन्धी क्लेश करे.

१८-गज्जनधावन क्षत्री

अब श्री आचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, गज्जनधावन क्षत्री, आगरेमें रहते, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

वार्ताप्रसङ्ग १ : इनके माथें श्रीनवनीतप्रियकजी श्रीआचार्यजीने पधराये. सो प्रकार एक क्षत्राणीकी वार्तामें कहेंगे.

भावप्रकाश : सो गज्जन श्रीचन्द्रावलीजीकी सखी, लीलामें 'सुभआनना' इनको नाम है. सो श्रीठाकुरजी प्रगटे ताके दूसरे दिन ये प्रगटे ताके दूसरे दिन ये प्रगटी है. दसमीं कों. तातें सुभआनना श्रीठाकुरजीके सङ्ग बाललीला खेल बहोत खेली हैं. श्रीचन्द्रावलीजीकों सगरे खेलके मिलापको भेद ये बतावती. ताते श्रीचन्द्रावलीजीकों अति प्रिय हैं. तातें श्रीआचार्यजी गज्जनके माथे श्रीनवनीतप्रियजी पधराये. जो ये श्रीगुसांईजीके ठाकुर हैं. गज्जन श्रीगुसांईजीकी सखी

हैं. सदा सङ्ग खेले हैं. सो सम्बन्ध अब फेरि खेलेंगे.

सो कुछक दिनमें गज्जनसों श्रीनवनीतप्रियजी सानुभावता जनावन लागे. गज्जनकों गाय करते, घोड़ा करते. आपु ऊपर चढ़ते. सो गज्जनके घोंटू घसि गये. परन्तु देहकी सुधि नाहीं. सो एक दिन गज्जनसों श्रीनवनीतप्रियजी कहें, मोकों श्रीआचार्यजीके इहां पधराइके तुमहू उहां रहो.

भावप्रकाश : ताको कारन यह, जो गज्जनको ऐसो स्नेह बढ्यो, जो सेवाकी रीति भूलि गये. खेलमें अनोसर आदि. तब श्रीठाकुरजी बिचारे, जो याकों व्यसन अवस्थाकी सिद्धि होइ चुकी है. अब यह अपने गाम घरमें रहेगो तो बाधक होइगो.

तब गज्जन तत्काल श्रीनवनीतप्रियजीकों गोकुल पधरायकें आये. श्रीआचार्यजीकों दण्डवत् करि कहें, जो महाराज ! श्रीनवनीतप्रियजी आपुके घर पधारे हैं. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कहें, सैया न्यारी नाहीं है. कछू पात्र नये नाहीं. या प्रकार ओंचका कैसे पधारे हैं ? तब गज्जननें कही, अब तो श्रीनवनीतप्रियजीकी इच्छा तो ऐसी है. तब श्रीआचार्यजी, जो कछू सामग्री बनि आई सो सिद्ध करि अरोगाय, अपने श्रीअङ्गमें सोंधो लगाई पास लै पौढ़े.

भावप्रकाश : सोंधो लगायवेको कारन यह, जो अत्तर आदि सुगन्ध श्रीस्वामिनीजीके श्रीअङ्गको गन्ध स्नेह रुप है, सो प्रगट नाहीं कहे. सो यों कहे, तामें जताए, जो श्रीस्वामिनी स्वरुप व्है सङ्ग लै पौढ़ै.

पाछें मर्यादा राखिवेके लिये छोटीसी पलंगडी बनवाये. ता पर दूसरे दिन श्रीनवनीतप्रियजीकों पौढ़ाए. तब श्रीनवनीतप्रियजीने कही, सैया छोटी है. मेरे पांव नीचे लटकत हैं. तातें मैं तिहारे सङ्ग पौढूगो.

भावप्रकाश : यामें यह जातए, जो कहा मैं बालक हों तिहारे भावसों ? तिहारे घर तो तरुण हो. और जसोदाजीके भावसों बालक हों. तातें तुम मेरो छोटो स्वरुप देखिकें सैया छोटी क्यों बनवाई ? तातें मैं तिहारे पास पोढ़ूगो. मोको भावत हैं.

तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु फेरि सोंधो श्रीअङ्गमें लगाई पास लै पौढ़े. पाछें सवारे श्रीआचार्यजीमहाप्रभुने बड़ी सैया संवराई, ता पर पौढ़ाये. तब फेरि श्रीनवनीतप्रियजी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुसों कहें, जो महाराज ! लोगनमें मर्यादा राखी चाहिये. और तिहारे पास मूंढाको साज सब राखि श्रीस्वामिनीजी स्वरुपसों मैं पास ही हों. ऐसे श्रीआचार्यजमहाप्रभु आप कहें.

भावप्रकाश : यामें यह जताये, जो ऊपरकी मर्यादा छोड़े तें जीवको बिगार होइ. देखादेखी कोई करे.

तब श्रीनवनीतप्रियजी सैयामें पोढ़न लागे.

वार्ताप्रसङ्ग २ : सो गज्जन मन्दिरके द्वारमें सन्मुख सेवा समय बैठे रहें. अनोसर में हूं मन्दिरमें रहें. श्रीनवनीतप्रियजी सङ्ग खेलें, न्यारे न रहें. सो एक दिन पान न हते. सो श्रीअक्काजीने गज्जनसों कहें, यह पैसा ले जाव, पान ले आवो.

भावप्रकाश : सो गज्जन अक्काजीसों कहि न सके, जो मोसों श्रीनवनीतप्रियजी हिलै हैं. यह सिद्धान्त बताए. जदपि श्रीठाकुरजी वैष्णवसों बोलें, पास राखें, तो हू गुरु आज्ञा देंय तों आज्ञा माथे धरिकें गुरुके कार्यकों जाय तो धरम रहें. ठाकुर प्रसन्न रहें. तातें गज्जन गये. परन्तु श्रीनवनीतप्रियजी हू बरजे नाहीं. वैष्णवको भाव देखिवेके लिये.

तब गज्जन पान लेनकों गये. सो बाहर निकसत ही विरह ज्वर ऐसो चढ्यो जो एक हाट पर परि रहे.

भावप्रकाश : काहे तें, इनको ब्यसन अवस्था व्है चुकी है. सो श्रीआर्चायजीसों कोई भगवदीय, जो भावमें मगन है, तिनसों बोलनो मिलनो. औरसों सब देह - सम्बन्ध छूटि गयो.

इहां श्रीआचार्यजीने श्रीनवनीतप्रियजीकों राजभोग धरे. तब श्रीनवनीतप्रियजीने कही, गज्जन आवें तब मैं अरोगों. तब श्रीआचार्यचजीने सबसों पूछी, जो गज्जन कहां गयो है ? तब श्रीअक्काजीने कही, मैं पान लेंन पठायो है. तब श्रीआचार्यजी कहें, गज्जनकों क्यों पठवाए ? गज्जनसों श्रीनवनीतप्रियजी हिले हैं. आजु पाछें इनसों कछू मति कहियो, कहूं मति पठाईयो.

भावप्रकाश : यामें यह जताए, जो फलदसाकों पाये. इनकों मानसी सिद्ध होइ चुकी हैं.

तब श्रीअक्काजीने कही, अब इनसों कछू टहल न कहोंगी. तब एक वैष्णवसों श्रीआचार्यजीने कही, गज्जनकों बेगि पठाइ दीजो. हाट पर पर्यो है. तुम पान लाइयो. तब वैष्णव जाइ देखें तो द्वारके पासई एक हाट पर परे हैं. तब कहें बेगि जाव तुमकों श्रीआचार्यजी बुलाये हैं. तब यह सुनत ही गज्जनकों विरह - ज्वर उतरि गयो. दोरिके आये. तब श्रीनवनीतप्रियजीसों कहे, बाबा ! भोजन क्यों नाहीं करत ? तब श्रीनवनीतप्रियजी कहें, तू आयो ! अब मैं भोजन करुंगो. यह प्रकार गज्जनके और श्रीनवनीतप्रियजीके स्नेह हतो. सो गज्जन ऐसे भगवदीय हते. सो तातें इनकी वार्ताको पार नाहीं, सो कहां तांई कहिये. ...वार्ता ।।१३।।

भावप्रकाश : इनकी वार्तामें यह सिद्धान्त जताए, जो व्यसन अवस्था सर्वोपरि है. जामें श्रीठाकुरजी बस होंई. सो कुम्भनदासजी गाये हैं -

जोपै विरह परस्पर व्यापे तो कछू जीय बनि आवें
सो गज्जनकी परस्पर प्रीति दिखाये. वैष्णव त्रयोदस.

१९-नारायनदास ब्रह्मचारी

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, नारायनदास ब्रह्मचारी, सारस्वत ब्राह्मन, महावनमें रहते, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो नारायणदास ब्रह्माचारीके माथे श्रीगोकुलचन्द्रमाजी पधराये. सो प्रकार एक क्षत्राणीकी वार्तामें कहेंगे. जहां चारि स्वरुप चारि वैष्णवनके माथे पधराये हैं.

भावप्रकाश : नारायणदास लीलामें सोरह हजार अग्निकुमारिका हैं, तिनमें मुख्य राधा सहचरी है. तिनकी सखी हैं, मधुरेक्षणा, सो इनको नाम है. मधुर है इक्षण (जो) द्दष्टि जिनकी. सो श्रीठाकुरजीके मुखकी सुन्दरता देखत देहकी सुधि भूलि जाती. ऐसे स्वरुपासक्ति. स्वरुपको चिन्तवन अष्ट - प्रहर करती.

सो नारायणदास श्रीगोकुलचन्द्रमकी सेवा भली भांतिसों करते. गायकों घास धोइकें खवावते जो मति कहूं दूधमें रज आवें. श्रीठाकुरजी अत्यन्त सुकुमार हैं.

भावप्रकाश : यह कहि यह जताये, जो दूधमें रजकों देह करते. सो सागसामग्री जल सबमें भली भांतिसों चौकसी राखते. जो प्रभुनको कोई वस्तुमें दुःख न होइ.

और नारायणदास त्याग दसामें रहते. उत्तम रीतिसों चुकटी लेते. सो कोरो अन्न न्यारो - न्यारो तथा बिना मांगे घर आवें तामें निरवाह करते. सो नारायनदास जहां तहां पांव धोइबेकों माटी लेते तहां द्रव्य देखते. सो वा पर माटी डारि उठि चलते. परन्तु द्रव्यको परस न करते. सो एक दिन रात्रिकों इनकी खाटके आसपास द्रव्य बहोत फैल्यो. सो सबेरे देखिके भतीजीसों कहें, घरमें बिगार पर्यो है.

सो बुहारि डारि आव. तब भतीजीने बुहारिसों बुहारिकें डारि दियो. जगे सब लींपि डारि.

भावप्रकाश : याको आसय यह, जो नारायणदासमें ब्रह्मचर्य बालपनेसों धारन करि द्रव्य मिलिवेको उपाइ बहोत किये. सो द्रव्य प्राप्त कछू न भयो. पाछें चालिस बरसके भये. तब श्रीआचार्यजीके सेवक भये. तब श्रीठाकुरजीके स्वरुपको ज्ञान भयो. तब द्रव्यकों अग्निकी विष्टा हू कहे हैं. सो या प्रकार जानन लागे. तब रिद्धि सिद्धि इनके छलिवेकों आई. तब जहां तहां द्रव्य दिखें. परन्तु बिगार विष्टावत् जानें. तातें वापर माटी डारें. सो यातें, जो औरके हाथ यह माया रूप द्रव्य परेगो तो वाहूको बिगार होइगो. तातें ऊपर माटी डारि देते. और जब घरमें द्रव्य फेल्यो देखे तब भतीजीसों कहें, जो बिगार पर्यो है. परन्तु आपु छूवे न बुहारे. तब भतीजी हू श्रीआचार्यजीकी सेवकनी कृपापात्र हती. नारायणदासके स्वरुपकों जानती.

नारायणदास तो 'मधुरेक्षणा' राधा सहचरीकी सखी हैं. इनकी सखी 'चतुरा' भतीजीको नाम है. सो नारायणदासकों बहोत प्रिय याते हैं, जो सामग्री करनमें बहोत चतुर हैं. बाल विधवा भई. तातें नारायणदासके इहां रहेती. सो लीलाको नाम इहां हू चतुरा हतो. सो चतुर भतीजीने नारायणदासके सब्द सुनत ही द्रव्य बुहारिकें बाहर डारि दियो. नारायणदासने बुहारिवेकी कही परन्तु इननें जान्यो, जो नारायणदास बिगार कहे सो जगे हू लींपनी. ऐसी बुद्धि भतीजीकी देखि श्रीठाकुरजी इनसों बहोत प्रसन्न रहते. या प्रकार दोऊ श्रीगोकुलचन्द्रमाजीकी सेवा करते.

वार्ताप्रसङ्ग २ : और एक दिन नारायनदास न्हाइके मन्दिरमें जाइ श्रीठाकुरजीकों मङ्गल - भोग धरि पाछें सिंगार किये. श्रीठाकुरजीके मुखचन्द्रकी सोभा देखि थकित ह्वे बड़ी बेरलों निहारी रहे. पाछें पूछी, जो महाराज ! इह घटा कहां बरसेगी ? तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न होइकें कहे, जो श्रीरधुनाथजीके ऊपर बरसेगी. तब नारायनदास बहोत प्रसन्न भये.

भावप्रकाश : ताको कारन यह, जो श्रीरघुनाथजीको प्रागट्य राधा सहचरीको है. इनको दण्डकाण्यमें श्रीरघुनाथजीको वरदान है, जो ब्रजमें मनोरत पूरन होइगो. तातें श्रीगुसांईजी हू नाम रघुनाथजी धरें, जो बहोत रमावे, सबके मनकों हरे तिनकों राम कहिये. तातें श्रीरघुनाथजी हू परम सुन्दर राधा सहचरी रुप. तैसें सुन्दर श्रीगोकुलचन्द्रमाजी, सो राधा सहचरीकी सखी नारायणदास. तातें श्रीरघुनाथजीके ऊपर घटाकी वृष्टि सुनिकें बहोत प्रसन्न भये, जो हमारे

स्वामीको सम्बन्ध सदा रहेगो.

वार्ताप्रसङ्ग ३ : और एक दिन नारायनदास श्री रजीकों राजभोग धरिकें बाहर आय बैठे. तब हृदय भरि आयो. तब भतीजीसों कहें, श्रीठाकुरजी कौन भांतिसों अरोगत होइंगे ? यह विचार करन लागे. तब भतीजीने कही, तुम यो विचारतें हो ? श्रीआचार्यजीके साधारन सेवक श्रीआचार्यजीकी का'नि तें भोग धरत है सो अरोगत हैं. तुम तो श्रीआचार्यजीके कृपापात्र हो. तातें तिहारो समर्प्यो तो अरोगेही. तब नारायनदासने कही, बेटी ! सुनि, श्रीठाकुरजी भली भांतिसों अरोगे तब जानिये, जो कोई वैष्णव अचानक आइ महाप्रसाद लेई. तब जानिये, भली भांतिसों अरोगे.

भावप्रकाश : यामें यह जताये, जो भोग धरिये सो तो अरोगेही, परन्तु अचानकको भाव यह है, जो वैष्णव न्यौते होइ तब तो वैष्णवके भाव करि अधिक सामग्री होई. तब तो श्रीठाकुरजी वैष्णवके भावसों अरोगें. परि न्यौते न होंइ तब नित, जो अपुने घर उठत होइ तितनी सामग्री होइ, तामें तें वैष्णवकों लिवावें तो अपुने भागमें ते वैष्णव लिये जानिये. यों तो श्रीठाकुरजी सबकों महाप्रसाद देत हैं. यह कहि वैष्णवमें प्रीति दिखाई, जो ओचकां वैष्णव आये वैष्णव पर प्रीति होइ, जो आपु भूखो रहे. वैष्णवकों भाग्य जानिके लिवावें. सो ठाकुर अरोगे जानिए. तातें शिक्षापत्र में कह्यो है -

तदीयाश्चेतस्वतस्तुष्टास्तुष्टः कृष्णो न संशयः ।

तदीय सन्तुष्ट होइ या भांति, तब श्रीठाकुर सन्तुष्ट प्रसन्न भये. जानिए. या प्रकार नारायणदासके हृदयमें अनिर्वचनीय प्रीति वैष्णव पर हू हती.

वार्ताप्रसङ्ग ४ : और एक समय नारायनदास श्रीगोकुलचन्द्रमाजीको शृङ्गार करि शृङ्गार - भोग खीर सिद्ध कियो. थारमें पधरायो. इतनेमें एक वैष्णव नारायनदासको बधाई दई, जो श्रीगोकुलमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु पधारे हैं. तब नारायनदास ताती खीर भर्यो थार श्रीगोकुलचचन्द्रमाजीकों भोग धरिकें श्रीआचार्यजीके दरसनकों श्रीगोकुल चले. सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु महावन पधारत हते. सो मारगमें

दरसन भयो. तब नारायनदासने दण्डवत् कियो. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु श्रीमुख तें कहें, नारायनदास ! श्रीठाकुरजीको कहा समय है ? तब नारायनदासने बिनती करी, महाराज ! शृङ्गार - भोग धरि आपुके दरसनकों आयो हों. तब श्रीआचार्यजी उतावलि पधारे. सो तत्काल अस्नान करि मन्दिरमें पधारे. झारी लिये. तब देखे तो श्रीगोकुलचन्द्रमाजी हाथ खेंचि रहे हैं. श्रीहस्त खीरसों भरे हैं. सिंघासन पर, वस्त्रन पर खीरके छांटा परे हैं. तब श्रीआचार्यजीने श्रीगोकुलचन्द्रमाजीसों पूछ्यो, जो बाबा ! हस्त क्यों खेंचि रहे हो तब श्रीगोकुलचन्द्रमाजीने कही, नारायनदास ताती खीर समर्पिके गयो. सो मैं हस्तसों खीर उठाई. सो ताती लागी. तब मैं हस्त झटकिकें आंगुरि चाटी है. सो मेरो ओष्ट हस्त दाझे है. और मन्दिरमें जहां तहां छांटा परे है. तब श्रीआचार्यजी श्रीहस्तसों ओष्ठ देखे तो अत्यन्त आरक्त हैं. तब खीर पंखासों सीरी करिके भोग समर्पि आपु बाहिर आये. तब नारायनदासकों खीजिके कहें, क्यों तू श्रीठाकुरजीकों ताती खीर समर्पि ? तब नारायनदासने कही, महाराज ! आपुकी बधाई सुनि उतावलिमें खीर समर्पी. तब श्रीआचार्यजी कहें, आजु पाछें एसो काम कबहू मति करियो.

भावप्रकाश : याको आसय यह, जो नारायनदास श्रीआचार्यजीकी बधाई सुनि परवस व्है गये. सो जाने, जो ताती होइगी तो श्रीठाकुरजी सीरी करि लेंइगे. परन्तु श्रीआचार्यजीके दरसनको ढील करनो धरम नाहीं. या भावसों गये. तब श्रीगोकुलचन्द्रमाजी, नारायनदासके हाथको धर्यो ताती हू अरोगत हों यह जताइवेके लिये सगरो हस्त खीरमें डारि झटकें. तथा उतावलिमें, जो कोई भोग धरे, शृङ्गार करें, तो कछु अपराध परे यह जताए. और नारायनदास श्रीआचार्यजीके पास जाइवेको मन कियो अलौकिक, तउ सेवामें इतनो श्रम श्रीठाकुरजीको भयो. जो लौकिक वैदिक कार्यके लिये उतावलि करें, ताको तो बहोत ही अपराध परे. तातें सेवा करन मन ठिकाने राखनो. अथवा खीरकी सामग्रीको स्वरूप प्रगट कियो, जो यह श्रीस्वामिनीजीके भावकी है. और शृङ्गार - भोग हू उनहिके भावको है. तातें खीरकों देखत श्रीठाकुरजी प्रेमसों प्रथम हस्त खीरमें डारत हैं. तातें खीर सीरी करि अंगुरी डारि देखिये. सुहाय तब भोग धरिये. यह सिद्धान्त दिखाये.

पाछें समय भय श्रीआचार्यजी आचमन, मुख - वस्त्र कराइ बीड़ी अरोगाई, भोग सराये. तब श्रीगोकुलचन्द्रमाजी श्रीआचार्यजीके दोउ श्रीहस्त पकरिके कहें, जो यह खीर महाप्रसाद आपु लेहु. तब श्रीआचार्यजी कहें, जो महाराज ! ज्ञाति - ब्यौहार कठिन हैं, तातें मर्यादा

राखी चाहिये. तब श्रीगोकुलचन्द्रमाजी कहें, मेरी आज्ञा है तातें लेहु. तब श्रीआचार्यजी खीर महाप्रसाद अरोगे. सो तब ताही दिनतें खीर अनसखड़ीमें होति है.

भावप्रकाश : यामें, या कारन तें श्रीगोकुलचन्द्रमाजी कहें, खीर एसी सामग्रीमें ज्ञातिकी मर्यादा अपने भक्तनमें मति राखो. तब अरोगे. ता दिन तें खीर अनसखड़ीमें करें. ताको कारन यह, जो अनसखड़ी श्रीठाकुरजी सगरे भोगमें अरोगत हैं. और खीर उत्सवके भोगेमें नाही राखे. नित्यमें राखे. ताको कारन यह, जो उत्सवमें राखे तो वैष्णव उत्सवमें करें. तातें खीर सदा प्रिय है. यामें रीतुके, उत्सवको विचार नाहीं. जब बने तबहि करिये.

वार्ताप्रसङ्ग ५ : या प्रकार नारायनदास सेवा बहोत करी. पाछे इनकी देह थकी. तब एक दिन नारायनदाससों श्रीठाकुरजीनें कही, कछू मांगि. तब नारायनदासने श्रीगोकुलचन्द्रमाजीसों कह्यो, मैं यह तुमसों मांगत हों श्रीगुसाईजीके घर पधारिके सेवा कराईयो.

भावप्रकाश : ताको कारन यह, जो श्रीगुसांईजीके घर बिना श्रीठाकुरजी सुख न पावेंगे.

तब श्रीगोकुलचन्द्रमाजी बहोत प्रसन्न भये, जो तू मेरो सुख मांग्यो. अपुनी सुख कछू न मांग्यो. पाछे नारायनदासकी भतीजीकी देह छूटी. ताके तिसरे दिन नारायनदासकी देह छूटी. ता पाछे कृष्णदास स्वामी महावनमें रहते. नारायनदासकी ज्ञातिके हते. श्रीगुसांईजीके सेवका तिन पास कछूक दिन श्रीगोकुलचन्द्रमाजी सेवा कराये.

भावप्रकाश : सों यातें, जो लीलामें येहू नारायनदासकी सखी है. मृदुबेनी इनको नाम है. तातें सेवा कराये. पाछे मथुरामें श्रीगुसांईजीके घर पधारें. इनकी वार्ताको यह सिद्धान्त भयो. जो ब्रह्मचारीके धर्म दिखाये. जो अपनी महाप्रसादकी पातरि धरि प्रसन्न होनों श्रीठाकुरजीसों अपुनो सुख न मांग्यो. प्रभुको सुख विचारे, यह पुष्टिमारगकी रीति हैं.

सो नारयनदासकी वार्ताको पार नाहीं सो कहां तांई कहिये. ...वार्ता ।।१४।।

२०-एक क्षत्रानी

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी सेवकनी, एक क्षत्रानी, महावनमें रहती, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : सो ये क्षत्रानी लीलामें श्रीस्वामिनीजीकी अन्तरङ्गिनी सखी, भद्रा इनको नाम है. सो एक क्षत्रीके घर जन्मी. सो ग्यारह बरसकी भई. तब माता - पिता ब्याह करिवेकी कहें. तब ये कहे, जो मेरो ब्याह मति करो. जा दिन मेरो ब्याह करोगे ता दिन वर मरेगो. और तुमहू मरोगे. तब वे डरपिके चुप ह्वै रहते. सो तेरह बरसकी भई तब माय - बापकी ज्ञातिमें निंदा होन लगी. सो एकसों सगाई करी. सो उह ब्याहन आयो. सो फेरा परत ही याके मा, बाप, उह वर, तीनों मरि गये. तब यह घरमें अकेली रहे. यासों गाममें सम्बन्धी कोऊ न बोले. जो इनने ब्याह होत ही मा - बाप और वर सबकों मारे. यामें प्रीति करेगो सो मरेगो. यह लोग कहते. सो नारायनदासके घर श्रीआचार्यजी पधारत हते, तब यह क्षत्रानीकों दरसन भयो. सो सुद्ध जीव हती सो जान्यो. इनकी सरनि जइये. तब श्रीआचार्यजीसों बिनती करि दण्डवत् कियो, महाराज ! मोकों अङ्गीकार करो. अब मेरे प्रतिबन्ध लौकिक सब छूटें. तब श्रीआचार्यजी नाम निवेदन कराये. तब यह क्षत्रानीने कही, महाराज ! अब मोकों कहा आज्ञा है ? तब श्रीआचार्यजीने कही, भगवत्सेवा करो. तब क्षत्रानीने कही, महाराज ! लीलामें सदा आपुकी सेवा करी है. अरु आपु भगवत्सेवाकी कही. सो भगवत्सेवा तो बहोत लोग करत हैं. परन्तु आपुके चरनारविन्द मिलनो बहोत दुर्लभ हैं. सो मोकों साधनमें मति डारो. मोकों सदा अपुनी सेवा देउ. सो सदा आपुके सङ्ग रहों. आपुके दरसन करों. मोकों एक आपुके चरनारबिन्दको आश्रय है. तब श्रीआचार्यजी प्रसन्न होइके कहें, जो तू सांच कही, परन्तु हमकों पृथ्वी - परिक्रमा करनी हैं. तातें स्त्रीजनको सङ्ग ठीक नाहीं. पाछें श्रीआचार्यजी कुमकुम मंगाइ एक वस्त्र पर दोऊ चरनमें कुमकुम लगाइ छाप करि वह क्षत्रानीकों दियो ? और कहे, इनकी सेवा करियो. मैं तोपर प्रसन्न हों. तेरो सगरो मनोरथ पूरन होइगो. तब उह क्षत्राणी श्रीआचार्यजीको भली भांतिसों घरमें पधाराय श्रीआचार्यजीकी श्रीस्वामिनीजीके भावसों सेवा करते. श्रीआचार्यजी दरसन देते. सब रसको अनुभव करावते. पाछें श्रीआचार्यजी पृथ्वी - परिक्रमा करत कासीमें पधारे.

इहां एक दिन उह क्षत्रानी श्रयमुना - जल भरन अपरसमें गागरि लेकें ब्रह्माण्डघाट गई. सो गागरि लें श्रीयमुनाजीमें पैठी. तब किनारे पर थोरे जलमें चारि स्वरुप देखे. तब क्षत्रानीने कही, तुम परम सुन्दर जलमें क्यों बिराजे हो ? तब चार्यो स्वरुपने कही, तू हमकों घर पधराव. अब कछूक दिनमें श्रीआचार्यजी पधारेंगे. तब उनकों दीजो. तब उन क्षत्रानीने कही, मैं घरमें श्रीआचार्यजीसों पूछि आउं, तब पधराऊं. तब गागरि भरिके बेगे दोरि आई, मन्दिरमें जाइ बिनती करी, महाराज ! चारि स्वरुप श्रीयमुनाजीके किनारे हैं. सो कहे, मोकों पधराव. सो कहा आज्ञा है ? तब श्रीआचार्यजीने कही, जा, बेगि पधराई लाव. तब आईके चारों स्वरूप पधराइ मन्दिरमें वस्त्र पहराइ भोग धर्यो. यामें जताये, जो वह क्षत्राणीको ममत्व श्रीआचार्यजीकी सेवाको हतो. भगवद् सेवा पर न हतो. परन्तु श्रीठाकुरजी चारि स्वरुप ह्वै आपु ही पधारे. तातें श्रीआचार्यजीकी सेवा है, ता वैष्णवके पास श्रीठाकुरजी बिनु जतन आपसों पधारत हैं.

यह बात कासीमें श्रीआचार्यजीने जानी. तहां तें ब्रजकों पधारे. सो प्रथम अड़ेल आये. पाछे कड़ामें पधारे. कडामें देवाकपूर क्षत्री हते. सो गदाधरके पास ही इनको घर हतो. सो एक दिन गदाधरदासके इहां वैष्णव महाप्रसाद लेत हते गदाधरदास परोसत हते. सो देवाकपूरको घर कछूक ऊंचो हतो. सो देवाकपूर ऊपर ते देखत हुते. सो एक वैष्णवके पास बैठे श्रीठाकुरजी भोजन करत हते. सो मूरछा खाये. सो घरि एकमें सावधान ह्वै गदाधरदास पास आइ कहें, सगरे वैष्णव कहां गये ? तब गदाधरदासने कही महाप्रसाद लें अपुने घर गये. तब देवाकपूरने कही, तिहारे वैष्णवके बीचमें श्रीठाकुरजी भोजन करत मैं देखे, सो मोकों मूरछा आई. सो अब दोर्यो आयो हों. सो अब मोकों श्रीठाकुरजीके दरसन कैसे होई. तब गदाधरदासने कही, तेरे बड़े भोग्य हैं, जो दरसन भये. अब कहां दरसन ? तब देवाकपूरने कही, कोई उपाव बतावो, मैं तिहारी सरनि हों. जो मोकों श्रीठाकुरजी मिलें. सगरो जनम योंही गमायो. तब गदाधरदासने कही, श्रीआचार्यजीकी सरनि जाव. श्रीआचार्यजीकी कृपा तें वैष्णवको श्रीठाकुरजी मिले हैं उनकी कृपा तें तुमहुकों मिलेंगे. अब काशी तें पधारे हैं. सो दोय चारि दिनमें इहां पधारेंगे. सो देवाकपूर नित्य गदाधरदासके इहां आइ पूछे. जो आरति बढ़ी. सो घरको कार्य भूलि गये. सो दोय चारि दिन पीछें श्रीआचार्यजी कडामें पधारे. तब देवाकपूर आइकें श्रीआचार्यजीकों दण्डवत् कियो. बिनती करी, महाराज ! कृपा करिकें सरनि लीजिये. तब गदाधरदासनें श्रीआचार्यजीसों देवाकपूरके समाचार कहें. या प्रकार याकों वैष्णवनमें श्रीठाकुरजीके दरसन करि आरति भई है. दैवी जीव है. तब श्रीआचार्यजी प्रसन्न ह्वे देवाकपूरकों नाम निवेदन करायो. तब देवाकपूरने विनती करी, अब हमकों कहा आज्ञा है ? तब श्रीआचार्यजी कहे, तुमहू हमारे सङ्ग ब्रज चलो. तहां श्रीठाकुरजी तिहारे माथे पधराइ देइगें. तुम सेवा करियो. तब देवाकपूरकी स्त्री घर रही. देवाकपूर सङ्ग चले.

पाछें श्रीआचार्यजी आगरें पधारे. सो आगरेमें गज्जनधावन क्षत्री हते. सो इनके पिता पास द्रव्य बहोत हतो. चारि बेटा हते. तामें गज्जन छोटो हतो, और घरमें गज्जनकी माता हती. स्त्रीजनमें कोई न हतो. सो गज्जनके पिताने नावके ऊपर भवैयाको नाच करायो. सो गज्जन सहित चार्यो बेटा पास और गांवके मिलापि सगे सम्बन्धी मिलि पचास - साठि मनुष्य हते. सो रात्रि अर्द्ध गई. इतने नाव अकस्मात् डूटी, सो सगरे डूबे. एक गज्जनके हाथ नावको टूक पर्यो, सो गज्जनने पकर्यो, सो वह टूक बहिके आगरे तें कोस चारि पर लग्यो. सवेरो भयो. तब गज्जन घर आये अपनी मांसों समाचार कहें. भाई पिता सब डूबे. तब गज्जनकी माता सती भई. गज्जन अकेले रहे. व्यौपार करनो छोड़ि दियो. दोई चार घरी श्रीयमुनाजी पर जाइ बैठे. पाछें अपने घर बैठे रहें. बहोत काहुसों बोलनो नाहीं, मनमें वैराग्य आयो. जो पिता, भाई सब मरें, हम हू मरेंगे. कहा करें ? भगवान् कृपा करें तो आछो है. या प्रकार सबसों उदास रहें.

और जीयदास सूरी क्षत्री हु आगरेमें रहें. सो जीयदास बरस साठिके भये. सो आगरेमें कोतवाली लिये. सगरे आगरेको न्याव करते. सो एक दिन एक ब्राह्मणीको, एक सूद्रको झगरो आयो. सो ब्राह्मणीके पास सूद्रने द्रव्य लीनो सो देय नाहीं. तब ब्राह्मणी पुकारी. तब सुद्रनें कछू रुपैया जीयदासकों दिये. और कह्यो, ब्राह्मणीकों झूठी करियो. तब जीयदासनें ब्राह्मणीकों लोभके बस झूठी किये. जोरावरि फारकती लिखाइ दिये. सो वह ब्राह्मणी कलपें. सो जीयदासके सगरे सरीरमें कोढ़ भयो. तब जीयदास दैवी हैं, तातें ज्ञान भयो. जो मैं ब्राह्मणीकों लोभके बस झूठी कीनी. तातें यह कोतवालीको काम महा बुरो है. तब कोतवाली छोड़ि वह ब्राह्मणीकों बुलाय कहें, माता ! मैं लोभके बस झूंठी तुमकों या रीतिसों कीनी. सो ब्याज सहित वाकों रुपैया दिये. और दस रुपैया और अपनी ओर तें दीनें. तब वह बहोत आसीरवाद देंन लगी. तब (तें) जीयदास हू वैराग्य करि श्रीयमुनाजीके किनारें जाइ बैठें. सो तीसरे पहर घर आइ खान पान करतें. कछुक दिनमें जीयदासकी देह आछी भई. कोढ़ सब जात रह्यो.

पाछें एक दिन गज्जन श्रीयमुनाजीके तीर बैठे हते. तहां जीयदास हू आइ बेठे, पास. तब परस्पर बतराये. तब गज्जनने अपनी बात सब कही. जो हमारे पिता भाई सब डूब मरे. माता सती भई. तब तें वैराग्य भयो है. तब जीयदासनें अपनी बात कही. जो मैं ब्राह्मणीको द्रव्य अन्याय करिके लियो. ताएं मेरी देह बिगरी. तब ज्ञान भयो. अब कोई प्रकार भगवानकी प्राप्ति होइ तो आछो. तब गज्जनने कही, चाह मेरे हू है. परन्तु हम महापापी ! हमकों

महापुरुष कहां मिलें ? तब जीयदासने कही, जो सो तो सांच, परन्तु हम महापापी ! हमकों महापुरुष कहां मिलें ? सो अब भगवानको आश्रय करि श्रीयमुनाजीको आश्रय किये हैं. जो बने सो सही. या प्रकार दोऊ जनें नित्य मिलैं, बातें करे.

सो ऐसे करत कडासों श्रीआचार्यजी आगरे पधारे. सो श्रीयमुनाजीके तीर सन्ध्यावन्दन करत हते. इतनेमें गज्जन और जीयदास आये. सो श्रीआचार्यजीको दरसन भयो. तब दोउ बतराये, ये महापुरुष हैं. इनकी सरनि जांय. पाछें गज्जनने कृष्णदास मेघनसों पूछ्यो, ये कौन हैं ? तब कृष्णदास मेघनने कही, श्रीवल्लभाचार्यजी हैं. दक्षिणमें, कासीमें, मायावाद खण्डन करि भक्तिमारग प्रगट किये हैं. तब गज्जननें और जीयदासनें दण्डोत् किये. और बिनती करी, जो महाराज ! हम संसार - समुद्रमें बूडत हैं. हमकों सरनि ले उद्धार करो. तब श्रीआचार्यजीने श्रीयमुनाजीमें न्हवायके नाम निवेदन कराये. पाछें जीयदासनें कही, महाराज ! हमारे घर पधारो. तब जीयदासके घर पधारि जीयदासके बेटा दोइ हते, पुरुषोत्तमदास, छबीलदास, तिनकों नाम - निवेदन कराये. पाछें गज्जनको घर खाली हतो. तहां पधारिकें सामग्री करि भोग धरि भोजन किये. गज्जनकों जीयदासकों जूठन दिये. तब गज्जननें, जीयदासनें बिनती करी, महाराज ! अब हमकों कहा कर्तव्य है ? तब श्रीआचार्यजी कहें, हमारे सङ्ग श्रीगोकुल चलो. दोऊ जनेनकों श्रीठाकुरजी पधराइ देइगे. सो सेवा करियो. तब गज्जन और जीयदास सङ्ग चलें. देवाकपूर कड़ा तें सङ्ग आये है.

और नारायनदास ब्रह्मचारी महावनमें रहतें. सो इनको पिता मथुरामें जाइ क्षत्री पास जीविका लावतो. तासों निर्वाह होतो. सो एक दिन नारायनदासकों सङ्ग लै मथुरा आयो. सो एक क्षत्रीके घर जाइ कछू मांग्यो. तब क्षत्रीने रिस करि कह्यो, जो धिक्कार है ब्राह्मणकों, नित सबेरे होत ही तेरो जनम मांगते बीत्यो. परन्तु कबहू पेट न भर्यो तातें तोकों कबहू लज्जा न आई. यह सुनत ही नारायनदासकों बुरी लागी, सो महावन चले आये. पिता और ठोर तें मांगिके महावन आयो. तब नारायनदासने कही, अब मेरो मुख मति देखो. मैं तेरो लायो भीख कछू न खाऊंगो. तब पिताने समुझावो. अपनो ब्राह्मणको यही कर्म है. मांगन जैये तहां तो अनादर होइगो. सो न मांगिये तो काम कैसे चले ? तब नारायनदासने कही, तिहारो कर्म मांगनको है, सो मांगो. मैं तो तिहारे न रहोंगो. सो श्रीयमुनाजीके तीर ब्रह्माण्डघाट जाई बैठें. जो आवे तामें निर्वाह करें. गायत्री जपें काहुसों बोले नाहीं. ऐसे करत नारायनदासके पिता - माताकी देह छूटी. ता पाछें घरमें आइ रहे. सो द्रव्यको उपाय साधन बहोत किये. परन्तु द्रव्य न पाये. तब एकादश स्कन्धमें अष्टसिद्धि कहे हैं. ताहूके साधन बहोत किये परन्तु साधन कछू सिद्ध न भयो. तब हार मानि रहें. ऐसे करत चालीस बरसके भये. तब वैराग्य आयो. जो द्रव्यके पीछें इतने दिन वृथा पचे. अब

मथुरा जाइ भगवानके लिये तप करों. जहां ध्रुवजी तप कर्यो है. सो आइके सगरो दिन गायत्री जपें रात्रिकों पावसेर दूध लेइ. या प्रकार दिन छै बीते. तब श्रीआचार्यजी आगरे तें मथुरा पधारे. सो ध्रुवघाट पर मध्याह्नकी सन्ध्या करत नारायनदासकी ओर देखे. तब नारायनदासके मनमें यह आई, जो इनके सेवक होंइ तो श्रीठाकुरजी कृपा करें. तब श्रीआचार्यजीकों दण्डौत् करि बिनती किये, महाराज ! मोकों कृपा करि सेवक करिये. तब श्रीआचार्यजी कहे, तुम ब्रह्मचारी हो. पहले तो द्रव्यके लिये बहोत उपाय कियो. सो सिद्ध न भयो. अब तू श्रीठाकुरजीके लिये तप करत है, तातें सेवक होइवेकी क्यों कहत हो ? तब नारायनदासने कही, महाराज ! आपु पूरणपुरुषोत्तम हो. मेरे जनमकी सगरी बात कहि दीनी. सो आपुकी कृपा बिना श्रीठाकुरजी दुर्लभ हैं तातें अब मैं बहोत भटक्यो. अब आपु मोपर कृपाकी दृष्टि करी, तब मेरो मन सेवक होंनकों भयो. तैसे कृपा करिके सरन लीजे.

तब श्रीआचार्यजी नारायनदासकों नाम निवेदन कराये. तब नारायनदासने बिनती करी, महाराज ! अब हमकों कहा कर्तव्य है ? सो आज्ञा दीजें. तब श्रीआचार्यजी कहे, हमारे सङ्ग महावन चलो. तिहारे माथे श्रीठाकुरजी पधराय देंइगे. तिनकी तुम सेवा करियो. तब नारायनदासने कही, मेरो घर महावन है. सो पधारिये. और मेरे एक भतीजी है ताकों सेवक करिये. सो श्रीआचार्यजी सांझकों श्रीगोकुल पधारे. रात्रिकों रहे. प्रातःकाल नारायनदासके घर महावन पधारिकें नारायनदासकी भतीजीको नाम निवेदन कराये. इतने उह महावनमें क्षत्रानीसों चारों स्वरूपने कही, श्रीआचार्यजी नारायनदासके घर पधारे हैं, तहां हमकों ले चलो.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो एक समय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु पृथ्वी - परिक्रमा करत महावन पधारे. सो तब वा क्षत्रानीने ब्रह्माण्डघाटमें श्रीयमुनाजीमें तें चारों स्वरूप प्राप्त भये हते, सो वे चारों स्वरूप लायकें श्रीआचार्यजीके पास राखे. सो श्रीआचार्यजीने चारों स्वरूप चारों वैष्णवनके माथे पधराये. श्रीनवनीतप्रियजी, गज्जनधावनके माथें पधराये. श्रीगोकुलचन्द्रमाजी, नारायनदासके माथे पधराये. श्रीलाडलेसजी, जीयदास सूरी क्षत्रीके माथे पधराये. श्रीललितत्रिभङ्गीजी, देवाकपूरके माथें पधराये. और चारों वैष्णवनसों श्रीआचार्यजीने कही, ये मेरे सर्वस्व हैं. सो तिहारे माथें पधराये हैं. सो सेवा प्रीतिसों नीकी भांतिसों करियो. और तुमसों न बनि आवें तब हमारे घर पधराइयो. सो चारोंकों सेवाकी रीति बताये. पाछें देवाकपूर और जीयदाससों कहे, तुम घर पधराइ ले जाव, गज्जन पाछें तें आवेगो. तब जीयदास घर आये. सेवा करन लागें, आगरेमें. सो इनकी वार्तामें आगें कहेंगे. और देवाकपूर कडामें आये. तिनकी सेवाको प्रकार देवाकपूरकी वार्तामें

कहेंगे. नारायनदासकों सेवाकी रीति बताये. सो नारायनदासने सेवा करी. सो नारायनदासकी वार्तामें पहलें कहि आये हैं.

वार्ताप्रसङ्ग २ : अब श्रीआचार्यजी गज्जनकों और श्रीनवनीतप्रियजीकों सङ्ग लेके श्रीगोकुल पधारें. सङ्गमें दामोदरदास हरसानी, कृष्णदास हैं. श्रीगोकुल आये. प्रातःकाल जन्माष्टमी ही. सो श्रीगोकुलमें उत्सव किये. एक दहेंडी दहींसों दधिकादो किये. एक उपरनामें श्रीनवनीतप्रियजीकों झुलाये. एक ओर दामोदरदास हरसानी. एक ओर कृष्णदास मेघन पकरे. गज्जनने नृत्य कियो. श्रीआचार्यजी पालने झुलाये. साक्षात् नन्दराय यसोदाजी, ब्रजभक्त, गोप गोपी सब नन्दालयकी लीला प्रगट करी. अनुभव सेवककों कराये. पाछें गज्जनकों श्रीनवनीतप्रियजी पधराइ आगरेको बिदा किये. सो गज्जन आगरे आइ सेवा किये. सो प्रकार गज्जनकी वार्तामें ऊपर कहि आये हैं.

पाछें श्रीआचार्यजी पृथ्वी - परिक्रमाकों पधारें. सो उह क्षत्रानी श्रीआचार्यजीकी ऐसी कृपापात्र ही. तिनकों श्रीआचार्यजीकी सेवापे दृढ़ भाव हो. चार स्वरूप प्रथम ही पधारें. परि श्रीआचार्यजीकी सेवामें ममत्व राखें. सो इनकी वार्ता गूढ़ है. सो बहोत प्रकास नाहीं कियो. ....वार्ता ।।१५।।

२१-जीयदास सूरी क्षत्री

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, जीयदास सूरी क्षत्री, आगरेमें रहते, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : जीयदास लीलामें श्रीयुमाजीकी सखी है. स्यामा इनको नाम है. सो स्यामाकी पांच सखी हैं. तिनके नाम कहत हैं. कावेरी सखी, इहां पुरुषोत्तमदास भये. मनोहर सखी, सो इहां छबीलदास भये. हीरा सखी, सो इहां कृष्णदास भये. छबिधामा सखी सो इहां हरजी भये. मंजुकि सखी, सो इहां मथुरामल्ल भये. अब छहो जने जा प्रकार श्रीलाडलेसजीकी सेवा करि लीलामें प्राप्त भये, सो प्रकार कहत हैं.

वार्ताप्रसङ्ग १ : अब जीयदास सूरी क्षत्रीके माथे श्रीआचार्यजी श्रीलाडलेसजी पधराये. सो आगरे आये. प्रातःकाल तें सन्ध्यालों सेवा मन लगाइकें तनुजा - वित्तजा मानसी करें. सो अनोसर करत विरह ऐसो भयो, जो देह छूट गई. या प्रकार श्रीलाडलेसजी चारि प्रहर जीयदाससों सेवा कराई.

भावप्रकाश : काहेतें, जीयदास उत्तम अधिकारी हैं. लीलामें मगन ह्वे गये. पाछें लौकिक - वैदिक न देखें.

पाछें जीयदासके दोय बेटा हते. पुरुषोत्तदास, छबीलदास, सो कोइ दिन सेवा करी. सो इन दोऊ भाईनकें सन्तति न भई.

भावप्रकाश : सो काहेतें, जीयदासकी देह छूटे पाछें दोउ भाई लौकिकमें ब्यौहार छोड़िकें श्रीठाकुरजीमें मन लगाइ सेवा करी.

सो जब जानें अब देह छूटेगी तब ये दोऊ भाईके मामा कृष्णदास चोपड़ा क्षत्री हते, तिनके माथें श्रीलाडलेसजी पधराये. सों कृष्णदास चोपड़ानें कछूक दिन भली भांतिसों सेवा कीनी. पाछें एक समय महामारी आई. सो तब कृष्णदासके सब कुटुम्बकी देह छूटी. कृष्णदास आपु अकेले रहे.

भावप्रकाश : सो काहेतें, जो कुटुम्ब दैवी न हतो. तातें कोई सेवक न भयो. और द्रव्य जितनो दैवी हतो, तितनो श्रीठाकुरजी अङ्गीकार किये. पाछें आसुरी रह्यो, सो आगरेमें पठान आयकें गाम लूटे, मारे. तामें कृष्णदास श्रीलाडलेसजी रहें. इनको द्रव्य सब लूटि गयो.

तब कृष्णदासके मित्र हरजी, मथुरामल्ल है. सो श्रीआचार्यजीके सेवक हे. तिनके घर कृष्णदास जाइकें रहें. मथुरामल्ल तो दिन तीन लों सेवा करि देह छोड़ी. भगवत्प्राप्ति भई. पाछें हरजी और कृष्णदास मिलिके सेवा करी. पाछें कृष्णदासकी देह छूटी, लीलामें प्राप्त भये. पाछें हरजीने डेढ़ बरस लों श्रीलाडलेसजीकी सेवा करी. ता पाछें श्रीगुसांईजीके घर श्रीगोकुल पधारे. सो जीयदास श्रीआचार्यजीके ऐसे

कृपा पात्र भगवदीय हते. इनकी वार्ताको पार नाहीं, सो कहां तांई कहिये. ....वार्ता ।।१६।।

भावप्रकाश : पाछें हरजीकी देह बिगरी सो बड़े श्रीगिरिधरजीके लालजी श्रीदामोदरजी, श्रीमुरलीधीरजी, श्रीगोपीनाथजी. इनके घर श्रीगोकुलमें श्रीठाकुरजीकी सगरी सामग्री वस्त्र - आभूषन सहित पधराइ, विरह करि देह छोड़ी. सो ये छेहों श्रीआचार्यजीके कृपापात्र भगवदीय हे. लीला सम्बन्धी हते, सो एकही जनममें प्रभुकों पाये.

२२-देवाकपूर क्षत्री

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, देवाकपूर क्षत्री, कड़ामें रहते, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : देवाकपूर और देवाकपूरकी स्त्री दोऊ श्रीजसोदाजीकी सखी हैं. देवाकपूरको नाम प्रवीना लीलामें, देवाकपूरकी स्त्रीको नाम लीलामें रसलीना है.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो देवाकपूरके माथे श्रीआचार्यजीने श्रीललितत्रिभङ्गीजीकी सेवा पधराये. सो देवाकपूरने स्त्री सहित बहोत दिन श्रीललितत्रिभङ्गीजीकी सेवा करी. पाछें देवाकपूरकी देह छूटी. तब देवाकपूरकी स्त्रीने बहोत दिन सेवा करी. कितनेक दिन पाछें देवाकपूरकी स्त्रीकी देह छूटी. सो तब वाके सगे सम्बन्धीननें याको अग्नि - संस्कार कियो. ता पाछें घर आइ मन्दिरके किंवाड़ खोलकें बेटानने देख्यो तो सगरो सामग्री ज्यों की त्यों स्थित हैं. और श्रीठाकुरजी नाहीं. सैया खाली परी हैं ! श्रीठाकुरजी अन्तरधान भये. सो काहूकों जानी न परी. ऐसे अन्तरधान भये. देवाकपूरके बेटा चारि हते. परि सेवा श्रीठाकुरजी उनतें न कराये.

भावप्रकाश : काहेतें, जदपि नाम श्रीगोपीनाथजी, श्रीगुसांईजीके बड़े भाईके पास पाये हते. परन्तु लौकिक वैदिक कार्यमें आसक्त हते. तातें सेवा

श्रीठाकुरजीने न कराई. और श्रीगोपीनाथजी जिनकों नाम दिये, सो मर्यादामार्गीय भये. ये बलदेबजी मर्यादा रूप हैं. और श्रीललितत्रिभङ्गीजी श्रीआचार्यजीके सेव्य पुष्टि पुरुषोत्तम, सो सम्बन्ध कैसे बनें ? और चारि बेटानके आगें वैष्णवकों सेवा कैसे मिले ? तातें श्रीठाकुरजी अन्तरधान व्है गये. पाछें सिंहनन्दमें एक श्रीगुसांईजीकी सेवकनी ब्राह्मणी हती, वाके घर प्रगट ह्वै सब बात ब्राह्मणीसों कही. गोप्यरीतिसों बहोत दिन लों सेवा कराये. सो श्रीगुसांईजीकी वार्ताके भावमें लिखे हैं. जा प्रकार श्रीगुसांईजीके कुलमें पधारे. सो

सो वह देवाकपूर और देवाकपूरकी स्त्री बड़े भगवदीय है. तातें इनकी वार्ता कहां ताई कहिये. ...वार्ता ।।१७।।

भावप्रकाश : इनकी वार्तामें यह सिद्धान्त जताए, जो देवी जीव बिनु श्रीठाकुरजीमें स्नेह न होइ. श्रीठाकुरजी सेवा हू न करावें.

२३-दिनकर सेठ क्षत्री

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, दिनकर सेठ क्षत्री, प्रयागमें रहते, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ये दिनकर सेठ लीलामें भगवद् सम्बन्धिनी सखी श्रीठाकुरजीकी है. सो श्रीस्वामिनीजीसों बहोत प्रीति है. श्रीठाकुरजीकी वार्ता सब पूछती. इनसों सगरी अपनी प्रीतिकी बात करती. सो लीलामें इनको नाम 'मनआतुरी' है. सदा श्रीस्वामिनीजीकी वार्ता सुनि श्रीठाकुरजीसों कहती. दोऊनकी वार्ता सुननमें मन आतुर जो मन रहि न सकतो सुनिवेको व्यसन हतो. तातें श्रीठाकुरजीकों, श्रीस्वामिनीजीकों परम प्रिय हैं. सो दिनकर सेठ प्रयागमें एक बड़ो द्रव्यमान क्षत्री हतो, वाके घर जन्में. सो पांच बरसके भये ता दिन तें श्रीठाकुरजीकी कथा - वारता होई, सो सुननमें इनको मन लाग्यो. पाछें बरस दस बारहके भये. तब गहना - कपड़ा अपुने तथा घरमें जो हाथ लगे सो कथा कहेनवारेकों दे आवें. तातें इनके मा - बाप, तीन भाई हते सो सब दिनकर सेठको चोर कहते. घरमें इनको विश्वास न करते, सो एक समय दिनकर सेठके बड़े भाईको ब्याह हतो. तातें इनहूंकों सुन्दरी जरीको बागा, चीरा पहराये. आभूषन पहराय. घोरा पर चढ़ाये. बरातमें ले चलें. तब दिनकर सेठके मनमें यह आई, जो आजु भाजिवेको दाब परें तो यह सब कथा कहनवारेंको दे

आऊं. सो जब बारात बेटीवारेके द्वारे गई तब सगरे कुटुम्बी ब्याहके कार्यमें लगें. दिनकर सेठ भाजिकै दस - पांच कथा कहनवारेके घर जाइ सगरे आभूषन - वस्त्र बांटि दिये. और कहें, जो हमारे भाई, पिता, कुटुम्बी, काहूसों कहियो मति. पाछें दिनकर सेठ एक धोती पहरे घरमें आई बैठे. तब माताने पूछी, आभूषन वस्त्र कहां हैं ? पाछें पिता ढूंढत - ढूंढत आइके दिनकर सेठकों बहोत मार्यो. तीन दिन लों कोठामें मूंदि राखे. परन्तु दिनकर सेठ बोले नाहीं. कछू न बताये. तब पिता, भाई हार मानिकें बैठि रहें. दिनकर सेठ सगरे दिन कथा वार्ता सुनें. जहां जाइ तहां श्रोता वक्ता इनकों सेठ कहें. इनकी सराहना करें. और लोगनमें ज्ञाति कुटुम्बीनमें याकों चोर कहें. सो दिनकर सेठ कहाये. सो सांझकों घर आवें. तब मा बाप खाइवेकों देइ सो खांय. जेसो पहिरवेको देइ सो पहरें. एक बार सांझको खाय. कथा कहनवारेके घर कहूं जागरन होई भगवद् वार्ता होइ, तहांई सोइ रहते. घरमें रहन न देते. जो कछू नजर परेगो सो नजर चुराइकें ले जाइगो. ज्ञातिमें चोर कहाये. तातें इनको ब्याह न भयो. एसे करत माता - पिता रहें तबलों खानपान चल्यो गयो. पाछे माता - पिता मरे. तब भाईसों न बने. तब दिनकर सेठने बिचार्यो. अब यह गांव छोड़िये तो आछो. सो प्रातःकाल त्रिवेनीमें न्हाइवेको घाट पर दिनकर सेठ आये. और श्रीआचार्यजीनें अड़ेल तें कृष्णदास मेघनसों कह्यो, जो सहरमें जाई खांड दोइ - चारि रुपैयाकी ले आउ. सो कृष्णदास मेघन त्रिवेनीमें आये. दोऊ स्नान करत है. तब दिनकर सेठनें कही, तुम कौन हो ? तब कृष्णदास पूछे, तुम कौन हो ? हमसों पूछो सो तुमकों कछू काम है ? तब दिनकर सेठने कही मोकों यह गांव छोड़नो है सो तुमकों परदेसी जानि पूछ्यो. जो काहूकों भगवद् वार्ता - कथा आवत होइ तो मैं उनके सङ्ग जाऊं. मेरे घरमें द्रव्य बहोत है. सो माता - पिता हते तबलों निर्वाह भयो. अब तीन भाई हैं, सो मोकों चोर कहि बुरें बचन बोलत हैं. मेरो ब्याह भयो नाहीं. सो ठाकुरने आछी करी. तब कृष्णदास दैवी जानि कहें, तुमकों (कथा) सुनिवेको व्यसन है तो अड़ेलमें श्रीआचार्यजीके श्रीमुखकी कथा तो एक दिन सुनो. पाछें जहां मन होई तहां जैयो. तब दिनकर सेठ इतनो सुनत ही उहां ते नाव पर चढ़ि अड़ेल आये. ता समय श्रीआचार्यजी पोढ़िकें उठे है. पहर सवा दिन पिछलो हतो. तब दिनकर सेठनें दण्डौत् कियो. तब श्रीआचार्यजीने कही, आवो दिनकर सेठ ! बैठो कथा सुनो. पाछें आपु दसमस्कन्धमें भ्रमरगीतको व्याख्यान किये. सो दिनकरदासके नैननसों आंसुके प्रवाह बहें, मनमें कहें, हाइ हाइ ! इतने दिन मेरे योंई बृथा गये. अब तो इनकी सरनि व्हें सदा इनके पास रहि कथा श्रुतिकों पान करों. पाछें कथा ब्है चुकी. तब दिनकर सेठने बिनती करी, महाराज ! मोकों कृपा करिकें सरनि लीजिये. तब श्रीआचार्यजीने कही, तू कथा तो बहोत सुनी. परन्तु अबलों सेवक नाहीं भयो ? तुमको बड़े - बड़े पण्डित स्वामी मिले तिनके सेवक क्यों नहीं भये ? तब दिनकर सेठने कही, महाराज ! जितने स्वामी पण्डित मिले तितने द्रव्यके सङ्गी मिले. जहांलों भेट करी तहांलों प्रीती बहुत करते. अब कोई मोसों बोलत नाहीं. परन्तु श्रीठाकुरजीने कृपा करी, जो आपुके दरसन भये. आपु साक्षात् भगवान् हो. मैं कहुं देसमें जातो तो जनम बिगरतो. अब मेरो उद्धार करो. मेरे कोई लौकिक प्रतिबन्ध नाहीं है. तब श्रीआचार्यजी

कहें, श्रीयमुनाजीमें सगरे कपरा सहित न्हाई आव ! तब दिनकर सेठ न्हाई आये. तब श्रीआचार्यजीने नाम निवेदन कराये. पाछे कहें, भगवद् सेवा करो. तब दिनकर सेठने कही, महाराज ! आपु तो अन्तःकरनकी जानत हो. मैं तो आपुके मुखकी कथा सुनोंगो. यामें सगरी सेवा है. तब श्रीआर्यजी कहे, आछो, हमारे सङ्ग रहो. सो दिनकर सेठ पास सौ रुपैया हते. तामें पचास श्रीआचार्यजीको भेट धरें. पचास रहें तामें नित अङ्गाकरि - दारि करतें.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो दिनकरदासकों कथा उपर बहोत आसक्ति हती. सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आपु अड़ेलमें कथा कहते. सो तब एक दिन दिनकर सेठ श्रीयमुनाजीके तीर रसोई करनकों गये. तहां न्हाइके चून सानि अङ्गाकरि गढि, पातरि पर धरि उपरा बराइ दियो. ताही समय श्रीआचार्यजीको एक जलघरिया जल भरन आयो. तब तासों दिनकरदासने पूछी, जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आपु कहा करत हैं ? तब वह जलघरियाने कही, श्रीआचार्यजी पोथी खोले हैं, अब कथा कहेंगे. तब दिनकर सेठ उन जलघरियाके बचन सुनत ही कच्ची लीटीले जलपान किये. सेके नाहीं. बेगि ही आय कथा सुने. पाछें कथा श्रीआचार्यजी कहि चुके तब जलघरियाने श्रीआचार्यजीसों कह्यो, महाराज ! दिनकर सेठ कच्ची अङ्गाकरि बिना सेकी खायकें आयो है. तब श्रीआचार्यजी दिनकर सेठ तें पूछे, तू बिना सेकी अङ्गाकरि क्यों खायो ? तब दिनकर सेठ बोल्यो, महाराज अङ्गाकरि तो नित्य सेकिकें लेऊंगो परन्तु यह आपुके मुखसों कथामृत कब सुनोगों ? जो अङ्गाकरि सेकतो तो यह अमृत कैसे मिलतो ? तब श्रीआचार्यजी बहोत प्रसन्न होइकें कहें, आजु पाछें रसोई संवारिकें भोग धरिकें महाप्रसाद लेकें आइयो. जब तू आवेगो तब कथा कहुंगो. तेरे आये बिना कथा न कहुंगो. आजु तें तू मुख्य कथाको श्रोता है. ता पाछें दिनकर सेठ हू बेगी रसोई करते. जो श्रीआचार्यजी मेरे लिये बैठि रहें सो आछो नाहीं. और कोई दिन रञ्च ढील हू लगेतो जब दिनकर सेठ आवें तब आपु कथा कहतें.

भावप्रकाश : यामें यह सिद्धान्त भयो, जो काची अङ्गाकरि असमर्पितको महादोष है. परन्तु श्रीआचार्यजीकी कथामें दृढ़ स्नेह है. ताके अर्थ लीनी. तातें बाधक नहीं भयो. और प्रसन्न भये. तातें श्रीआचार्यजीमें दृढ़ स्नेह होई ताकों कोई दोष बाधक न होई. यह जताये.

पाछे जहां लों जीये तहां लों श्रीआचार्यजीके मुखकी कथा सुनि. रात्रि दिन लीलाकी भावनामें मगन रहतें. लीलामें हू श्रीस्वामिनीजी इनसों सगरी वार्ता

करते. सो श्रीआचार्यजी कथा सुनाय अपने स्वरूपको अनुभव जतायो.

सो दिनकर सेठ ऐसे भगवदीय है. ....वार्ता ।।१८।।

भावप्रकाश : इनकी वार्तामें यह सिद्धान्त वैष्णवकों जताये, जो कथा सुनिवेको मन होइ (तो) पहलेंही बेगि रसोई करि श्रीठाकुरजीसों पहोंचिके जैये. तातें श्रीआचार्यजी 'भक्तवर्द्धिनी' में कहे हैं, ''सेवायां व कथायां वा यस्यासक्तिर्दृढा भवेत्'' प्रथम सेवा है, पाछे कथा है. दोऊ करिके प्रभुमें आसक्ति भई चाहिये. कोई प्रकारसों होउ, सर्वोपरि आसक्ति है. सो दिनकर सेठकी भई. ता करि लीलाकी पाति भई.

२४-दिनकरदास, मुकुन्ददास

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, दिनकरदास, मुकुन्ददास सहनिया कायस्थ, मालवा देसमें रहते, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ये लीलामें नन्दराजीके भाई हतें. दिनकरदास तो धरानन्द हैं और मुकुन्ददास ध्रुवनन्द हैं. सा ये मालवेमें एक कायस्थके जन्में. सो उनके पिता उज्जैनमें हाकिमके पास रहते. सो एक दिन हाकिमसों बोला - चालि ह्वे गई. तब दिनकरदास मुकुन्ददासको पिता चाकरि छोड़ि घर उठि आयो. सो दिन दस - पांचमें देह छोड़ी. तब दोऊ भाई बरस दस - बारहके भये. सो घरमें द्रव्यको सङ्कोच भयो. तब घरतें निकसिके कासी गये. तब द्रव्य बहोत कमाये. तब दोऊ जने घर चलन लागे. सो कासी तें कोस एक बाहर निकसे. तब एक सर्प निकस्या. सो मुकुन्ददासको काटीके बिलमें धसी गये. सो जहर चढ्यो. तब दिनकरदास कासीमें उठाय ल्याये. सो बहोत झारनवारे जतन किये. परन्तु विष उतरे नाहीं. तब दिनकरदासने पुकारिकै रुदन कियो. सो श्रीआचार्यजी कासीमें पुरुषोत्तमके घर बिराजत हते. कृष्णदास बाजार कछू कार्यार्थ आये हते. सो कृष्णदासने दिनकरदासको विलाप सुनि, भगवदीयको हृदय कोमल सो, पूछ्यो. ऐसो दुःख तुम क्यों करत हो ? तब दिनकरदासने कही, पहले द्रव्यके दुःखसों घरतें निकसि इहां आये, द्रव्य कमाये. सो घर जात हते सो हमारे भाईकों सर्प काट्यो. सो बहोत जतन कियो. परन्तु जहर उतर्यो नाहीं. अब हमहूं कासीमें गङ्गाजीमें डूबि मरेंगे. घर जाय कहा करें ? तब

कृष्णदासकों दया आई. और दैवी जाने. सो श्रीआचार्यजीको चरणामृत पास हतो. सो मुकुन्ददासको पानीमें घोरिके पीवाये. तत्काल जहर उतरि गयो. मुकुन्ददास उठि बैठे. चरणामृतसों बुद्धि निर्मल ह्वे गई. सो मुकुन्ददासने कृष्णदासकों भगवद्स्मरन करी, दण्डौत् किये. और पूछे, श्रीआचार्यजी कहां बिराजे है. तब कृष्णदासने कही, तुम हमकों दण्डवत् क्यों करी ? तब मुकुन्ददासने कही, तुम्हारे हृदयमें श्रीआचार्यजी बैठिके मों पर कृपा करी. नाहीं तो संसार समुद्रमें हम परें है सो श्रीआचार्यजी हू कों नाहीं जाने. और तुमकों हू न जाने. परन्तु तुम कृपा करिके जताये. तातें भवदीयकों दण्डौत् किये बाधक नाहीं हैं. तब कृष्णदासने कही, यह चरणामृतकी बात श्रीआचार्यजीसों मति कहिये. नाहीं तो मोपर खीझेंगे और गांवमें काहूसों मति कहियो. हमकों सब आयकें दुःख देंयगे. तब यहां रहनों कठिन परेगो. पाछें मुकुन्ददासने कृष्णदाससों पूछी, जो श्रीआचार्यजी कहां बिराजे हैं ? तब कृष्णदासने कही, जो श्रीआचार्यजी सेठ पुरुषोत्तमदासके यहां बिराजे हैं. यह कहिके कृष्णदासतो कारजकों गये. तब मुकुन्ददासने कही, भाई श्रीआचार्यजीकी सरनि चलो. तब दिनकरदासने कही, श्रीआचार्यजी कौन हैं ? तब मुकुन्ददासने कही, साक्षात् भगवान् हैं. मोकों उनके चरणामृतके पाये ज्ञान भयो. तुमहु जब दरसन करि चरणामृत लेहुगे तब श्रीआचार्यजीके स्वरूपकों जानोगे. तातें बेगे चलो, ढील मति करो. तब दोउ भाई आई श्रीआचार्यजकों दण्डौत् करि विनती किये, महाराज ! हम महा अपराधी हैं. संसारके दुःख सुखमें परे हैं. सो हमारो उद्धार करो. तब श्रीआचार्यजी कहे, तुम कायस्थ हो, सो यह पुष्टिमार्ग कैसे सधेगो ? तब मुकुन्ददासने कही, महाराज ! आपकी कृपातें सब सधेगो ? आपकी कृपा सूद्र - चाण्डाल पर होइ तो वासों हू सब सधे. आपकी कृपा बड़े पण्डित ब्राह्मन पर न होय तो वासो न सधे. तातें आप हमकों कृपा करिके सरनि लेहु. सो सरनके प्रताप तें हमारो कल्यान होइगो. तब श्रीआचार्यजी प्रसन्न ह्वे कें कहें, हम जाने, यह कृष्णदास मेघनको काम है. पाछें दिनकरदास मुकुन्ददासकों न्हवायके नाम निवेदन कराये. सो कछूक दिन उहां श्रीआचार्यजीके पास रहिकें मारगकी रीति सब सीखें. पाछे बिनती किये, महाराज ! आज्ञा होइ तो घर जैये. हमकों अब कहा कर्तव्य है ? तब श्रीआचार्यजी ब्रह्मसम्बन्धकी पत्री लिखि हस्ताक्षर दिये. कहे, इनकी सेवा करियो. जो कछू खानपान करो सो इनकों भोग धरिकें लीजो. तब दोऊ भाई बिदा होइकें मालवामें अपने घर आये. स्त्रीजनकों रसोई करि भोग धरि न्यारे धरि देय. काहेतें, दैवी नाहीं. श्रीआचार्यजीके सेवक होनको मन नाहीं. सो मुकुन्ददासकों श्रीआचार्यजीको चरणामृत मिल्यो. तातें सगरे शास्त्र वेद - पुरान कण्ठाग्र भये.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो मुकुन्ददास कवित्त बहोत सुन्दर करते. श्रीआचार्यजीके, श्रीगुसांईजीके, श्रीठाकुरजीके, एकसे करते. और मुकुन्ददासनें एक 'मुकुन्दसागर' ग्रन्थ भाषामें कियो है. तामें श्रीभागवतद्वादसस्कन्ध (पर्यन्त) को अर्थ धरि दिये हैं. और मुकुन्ददास एक

समय उज्जैनके कारकून ह्वै कें गये. सो उज्जैनके ब्राह्मन पण्डित सब आइके मिलें. और कहें, कहो तो हम तुमकों श्रीभागवत् सुनावें. तब मुकुन्ददासने कही अवकास नाहीं है. अवकास होयगो तब सुनेंगे.

भावप्रकाश : याको कारन यह, जो श्रीआचार्यजीके सुबोधिनी आदि ग्रन्थ तिनके आगे तुमारी कथा सुनिबेको अवकास कहां ? और ब्राह्मणको मन उदास न होय तातें कहें अवकास होयगो तब सुनेंगे.

सो वह ब्राह्मन दूसरे चौथे मुकुन्ददासको पूछें, जो जब कहोगे तब श्रीभागवत् सुनावेंगे. ऐसे करत बहोत दिन बीते. सो एक दिन मुकुन्ददास चौपड़ खेलत हुते सो वह पण्डितने देख्यो. तब मनमें बिचार्यो, जो आजु बात कहनको दाव पायो. इतने चोपड़ खेलि चुके. तब पण्डितने कही, तुम कहो तो श्रीभागवत् तुमकों सुनाऊं. तब मुकुन्ददासने कही अवकास होयगो तब सुनेंगे. तब पण्डितनें कही, चोपड खेलिवेको अवकास है. (और) श्रीभागवत् सुननकों कहे अवकास होयगो तब सुनेंगे. याको कारन कहा ? तब मुकुन्ददासने बिचार्यो, इनने तो प्रतिउत्तर भारी दियो. अब अपनहू याकों देनो. तब कहें, हमारो श्रीभागवत् जाने हैं ? तब पण्डितनें कही, तुम्हारो श्रीभागवत् न्यारो है ? तब उननें कही, तुमहि अपनो श्रीभागवत् सुनावो. तब मुकुन्ददासने कही, कोई समय पायके तुमकों सुनाय देंइगे. या प्रकार कहिकें टारे. परन्तु उह मार्गीय ब्राह्मन न हतो, तातें वाके मुखकी कथा न सुने.

भावप्रकाश : तातें छासठ अपराधमें लिख्यो है, ''अवैष्णवानां श्रीभागवत् श्रवणं वृक्षजन्मत्रयं'' इत्यादिक. पुष्टिमार्गीय वैष्णवनकों दोष लगे. इह, जीवकों बहोत सन्देह हैं. काहेते ? भगवान्नाममें सबनको अधिकार है. सूद्रादि चाण्डाल पर्यन्त जो कहे सुने सो सबको कल्याण होय. श्रीभागवतमें हू अजामिल आदि पवित्र भये है. सो यह सब माहात्म्य जगतमें प्रसिद्ध है. और पुष्टिमार्गमें भगवद्नाम कीर्तन श्रीभागवत् सुननकों अन्यामार्गीयसों क्यों नाहीं ? जो भगवद्नाम सुने तें दोष कैसे ? यह सन्देह बड़ो गूढ़ है. तहां कहत हैं, जो - मर्यादामार्गमें तो मुक्तिफल है. और पुष्टिमार्गमें तो एकाङ्गी पुष्टिभक्ति सो फल है. सो भक्ति श्रीआचार्यजीके आश्रय तें होय. सो आश्रय और अन्याश्रयको भेद खोलत हैं. यह हृदय कमल है, तहां आश्रय, प्रेम, सगरे धर्म, भगवानके बिराजवेको ठिकानो है. सो हृदयमें श्रीआचार्यजी सम्बन्धी आनन्द सर्व प्रकार तें प्रवेश करें तो आश्रय सिद्ध होय. सो हृदयमें रस आनन्द जाइवेके

इतने प्रकार. एक तो नेत्र, सुन्दर देखिकें कछू वस्तु, हृदयमें आनन्द होई. तातें श्रीआचार्यजी सम्बन्धी ठाकुरके दरसन करि सुख पावनो. और ठौरके दरसन तथा लौकिक वैदिक कछू संसार सम्बन्धी आछी वस्तु देखिकें श्रीआचार्यजीके सम्बन्ध बिनामें आनन्द आवें सोऊ अन्याश्रय. यह नेत्रको अन्याश्रय महादोष. और श्रवण द्वारा दुःख सुख हृदयमें रस जात हैं. तातें जाके मुखसों सुनिये ताकी जूठन कर्ण द्वारा हृदयमें रस जाय. तातें जहां दासभाव राखनो तिनके मुखसों सुननो. दासभाव तो बल्लभकुलमेंके पुष्टिमार्गीय वैष्णवमें. तातें उनहिके मुखसों सुननो जातें हृदयमें धर्म दृढ़ होय. औरके मुखसों सुने प्रीतिसों, तो अन्याश्रय. (वयो जो) ताको जूठो हृदयमें गये श्रीआचार्यजीकौ आश्रय दृढ़ न होइ. ऐसे कोइको सङ्कोच करि सुननो परेतों मन न लगावें. अपनो अष्टाक्षरमें मन लगावें. तातें मुख्य सिद्धान्ततो एतन्मार्गमें यह है, जो औरसों वचन - बिलास करनो नाहीं. बानी द्वारा मिलाप है. तातें ''मौनं सर्वार्थसाधकम्.'' तातें अन्यमार्गीयसों न भगवद्धरमकी बात पूछनी न अपनी कहनी. या प्रकार सगरी इन्द्रिय मन श्रीआचार्यजीके सम्बन्ध बिना सुखकों न पावे. यह श्रीआचार्यजीके आश्रयको साधन है. तातें मुकुन्ददासकों तो श्रीआचार्यजीको आश्रय दृढ़ है, जो ये उह पण्डितकी कथा सुनते तउ इनकों बाधक न होई. परन्तु इनकी देखादेखी और वैष्णव साधारन सुनते सो उनको बिगार होतो. तातें यह जताये, जो हमकों इतनो मान दृढ़ (न होय तो) अन्यमार्गीय तें न सुनें. काहतें ? मन है, वाके वचनमें दृढ़ विश्वास व्है जाय तो 'सनैः सनैः' एतन्मार्गमें ते मन वाके बताये साधनमें जाय, तातें हम न सुने. यातें कच्ची दसावारेकों तो एक श्रीआचार्यजीके सम्बन्धीसों ही भगवद् धर्म कहनो सुननो.

और मुकुन्ददास, जो चोपड़ खेलत हुते, सो यातें, जब जाने, जो कोई अन्यमार्गीय अनेक कर्म धर्मकी बात कहन सुनन आवते तब मुकुन्ददास चोपड़ निकासि बैठतें. सो सगरे अन्य मार्गीय उदास व्है के उठि जातें. चोपड़के मिस तें काहूको बुरो न मनावनो परतो. लोग जानते, चोपड़में आसक्ति है. या प्रकारसों अपने हृदयमें पुष्टिमार्गीय धर्म छिपाये हते.

सो एक समें सूर्यग्रहण पर्यो. तब मुकुन्ददास नदीमें न्हायकें भगवद् नाम नदीमें ठाड़े लेत हते. ता समे वह पण्डितने आयके कही, भलो, या समें अपनो श्रीभागवत् कछू सुनावो. तब मुकुन्ददासने एकश्लोक श्रीभागवतको कहिकें वाको अर्थ करन लागे. सो सगरो दिन, सगरी राति बीति गई, सबेरो भयो. गांवके लोग नदी न्हानकों आये. तब वह पण्डितने कही, दूसरो दिन भयो. अब या श्लोकको अर्थ पूरो करोगे ? तब मुकुन्ददासने कही, यह श्लोकको भाव छै महिना लों होइगो. तब वह पण्डित थकित ह्वै रह्यो. कह्यो, तुमकों ईश्वरकी

दीनी सामर्थ्य है. जीव कहा जाने ? तब मुकुन्ददासने कही, हमारो श्रीभागवत् ऐसो है. कछू जानत होय तो हमकों सुनाव. तब उह पण्डित हारि मानिके घर गयो. और पण्डित आय कछू पूछते तो वाके प्रश्नकों बहोत दूषन लगाय प्रतिउत्तर देते, जो फिरि वह पण्डित न आवें. ऐसो श्रीआचार्यजीको कृपाबल हतो. श्रीसुबोधिनी आदि सब सास्त्रमें प्रवेस हो. सो वे मुकुन्ददास कछूक दिन पाछें मानसी सेवाकी भावना करिकें देह छोड़ि लीलामें प्राप्त भये. तब काहू वैष्णवने आयकें श्रीआचार्यजीसों कह्यो, मुकुन्ददास अवन्तिका पाई. तब श्रीआचार्यजी वैष्णवकों बरजे, जो ऐसे मति कहो. ऐसे कहो, जो अवन्तिकाने मुकुन्ददास पाये. सो मुकुन्ददास ऐसे टेकके भगवदीय भये. ...वार्ता ।।१९।।

भावप्रकाश : काहेतें, जो संसारी लोग हैं तिनकों तीर्थकी चाह है. और तीर्थ है, सो भगवदीयकों चाहत हैं. जो भगवदीय तीर्थको परस करें. जो तीर्थके पास जाइ सो (सब पापन तें मुक्त होंय) और दिनकरदास बड़े भाईकी वार्ताको विस्तार यातें नाहीं किये, जो जा दिन तें उह श्रीआचार्यजीके सेवक व्है मालवामें आये ता दिनतें श्रीमहाप्रभुजीके हस्ताक्षर ब्रह्मसम्बन्धको प्रकार बांचि नित्य माथो पीटिके रोवे. जो हम लीलामें नन्दरायजीके भाई व्है के अब इतने दिन तें संसारमें भटकत हैं. हमकों धिक्कार. या प्रकार विरह करत तीन महीनामें लीलाकी प्राप्ति भई. तातें इनकी वार्ता अनिर्वचनीय विरह दसाकी है. सो लोकमें विरुद्ध चलेंगे तातें बहोत प्रकास नाहीं किये. तातें दोऊ भाई दिनकरदास मुकुन्ददास बड़े भगवदीय कृपापात्र हे. .... ।।वैष्णव १९।।

२५-प्रभुदास जलोटा क्षत्री

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, प्रभुदास जलोटा क्षत्री, सिंहनन्दके वासी, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ये प्रभुदास जलोटा क्षत्री, लीलामें ललिताजीकी सखी हैं. 'मन्मथमोदा' इनको नाम है. कामलीलाकी सामग्री सब सिद्ध करत हैं. और बिहारलीलाकी वार्तामें ललिताजीसों वार्ता करि मग्न रहत हैं. तातें इनको नाम 'मन्मथमोदा' है. सो सिंहनन्दमें एक क्षत्रीके घर जन्मे. सो बरस तेरहके भये. तब इनको ब्याह भयो. सो स्त्री महाकुपात्र आई. सो सबनको गारी देय. जो वस्तु पावे सो चुराइके मा - बापको दे आवे. ऐसे करत प्रभुदासके माय -

बापने देह छोड़ी. और सगरे सम्बन्धी उह स्त्रीके दुःखसों काई घरमें आवे नांहीं. सो एक दिन वह स्त्रीने प्रभुदाससों कही, कहूं तें द्रव्य ल्याव. तब प्रभुदासने कही, द्रव्य कहां है ? मिलेगो तो लाऊंगो. तब स्त्रीने प्रभुदासकों मार्यो. प्रभुदासको रीस चढ़ी. सो स्त्रीकों मर्यो. तब स्त्रीने चूरी फोरि मूंड मुड़ाय गांवके हाकिमसों कहि आई, मैं यह प्रभुदासकी स्त्री नांहीं. जो यह घरमें आवेगो याके उपर मैं मरुंगी. तब प्रभुदास हू आये. सो कहे, मैं घर छोड़िके जात हों. मेरे तेरे बेदावो. या प्रकार बेदावो करिकें गांव तैं निकसी गये. सो राजनगर सिकन्दरपुरमें आयो. तहां रामदस क्षत्री इनकी ज्ञातिको हुतो, तहां उतरे. सो उह रामदासकों मर्यादामार्गीय वैष्णवको सङ्ग भयो हतो. सो वहां प्रभुदास कछू दिन रहे.

सो श्रीआचार्यजी राजनगर सिकन्दरपुरके पास बगीची हती तहां उतरे हे. सो वह बगीचीमें प्रभुदास आये. सो श्रीआचार्यजीको दरसन करिकें मनमें यह आई, जो इनके सेवक होंई. तब श्रीआचार्यजीसों बिनती करी, महाराज ! मोकों सेवक करिये, कृपा करिके. तब श्रीआचार्यजीने कही, तेरे रामदास मरजादा मारगीयको सङ्ग है. तातें हमारो सेवक मति होउ. तब प्रभुदासने कही महाराज ! आप कहो तो उह रामदासकों हू आपको सेवक कराउं. तब मोकों सेवक करोगे ? मेरो कह्यो रामदास नटेगो नाहीं. तब श्रीआचार्यजी कहे, कहा भयो सेवक कराये ? वाको अङ्गीकार मर्यादामें ही है. परन्तु जा, रामदासकों ले आउ दोउन को सङ्ग ही सेवक करेंगे. तब प्रभुदास रामदासके पास आइके कह्यो, श्रीवल्लभाचार्यजी साक्षात् पुरुषोत्तम हैं. सो पधारे हैं. गांव बहार बगीचेमें. सो हम तुम दोऊ जने सेवक होय तो मिलिके सेवा करें. तब रामदासने कही, मेरे तो एक वैरागी गुरु है. वाकी कण्ठी बांधी हैं. सो अब दूसरो गुरु कैसे करूं ? तब प्रभुदास कहें, अब हमारे तेरे न बनेगी. मेरे वस्त्र - पात्र देहु. तब रामदासने कही, तुम्हारे लिये सेवक होउंगो. परन्तु मैं अपुनी टेव न छोडोंगो. तब प्रभुदास कहे, सेवक तो होऊ. रीति मति करियो. तब रामदास प्रभुदास दोऊ आये. श्रीआचार्यजी न्हवाईके दोऊनकों नाम सुनाये. तब प्रभुदासकों तो श्रीआचार्यजीके स्वरूपको ज्ञान भयो. रामदासकों न भयो. तब प्रभुदासने बिनती करी, महाराज ! दोऊनकों कृपा करिकें निवेदन करावें. तब श्रीआचार्यजी कहें. रामदासकों नाहीं. तब प्रभुदास समझि गये. तब कहें, मोहीकों कृपा करिकें करावो. तब श्रीआचार्यजीने प्रभुदासकों ब्रह्मसम्बन्ध करायो. पाछे भगवद् सेवाकी प्रभुदास रामदास हू मिलिकें कही. तब श्रीआचार्यजी कहें, अब ही नांहीं. कछू दिन पीछें. यह कहिकें आप तो श्रीगोकुल पधारें. प्रभुदास पुष्टिमार्गी रीति करें. रामदास मर्यादामार्गकी रीति करें. ऐसे करत कछू दिनमें श्रीआचार्यजीके बड़े पुत्र श्रीगोपीनाथजी राजनगर सिकन्दरपुरमें पधारें. तब रामदासजीने बिनती करी, महाराज ! सेवा पधराय दीजे. तब श्रीगोपीनाथजीने एक ब्राह्मनके घर श्रीमदनमोहनजी हते सो कछू ब्राह्मनकों देके दोउनके माथे पधराये. पाछें श्रीगोपीनाथजी अड़ेल पधारे. सो रामदास मर्यादा मार्गकी रीति आव्हाहन विसर्जन पूजाकी रीति करें. पाछें एक दिन प्रभुदास अर्धरात्रिकों अपनी वस्तु ले भाजि

चल्यो (क्यों), जो - रामदासके सङ्ग कहां ताई माथो पचाऊं ? याकों ता ज्ञान नाहीं. जेसो यह जेसे हि मर्यादामार्गीय ठाकुर श्रीगोपीनाथजीने पधराइ दिये. तातें तहां ते चले श्रीगोकुलमें श्रीआचार्यजीकों दण्डौत् किये. तब श्रीआचार्यजीने कही, प्रभुदास आयो ? तब प्रभुदासने बिनती करी, महाराज ! नीठ - नीठ दुःसङ्ग तें छूट्यो. तब श्रीआचार्यजीने कही, हम तोसों पहले ही कह्यो, उह मर्यादामार्गको अधिकारी है. तू पुष्टिमार्गीय है. भली करी सङ्ग छोड़िके आयो. तब प्रभुदासने बिनती करी, महाराज ! अब मोकों चरणारविन्दके पास राखो, मैं बहुत संसारमें भम्यो. तब श्रीआचार्यजी कहें, अब हमारे पास सुखेन रहो. तब ता दिन तें प्रभुदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजीके सङ्ग ही रहे.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो एक दिन श्रीआचार्यजीमहाप्रभु मथुरा पधारे. सो विश्रान्त घाट पास आय बैठक है तहां सन्ध्यावन्दन करत हते. पास चार वैष्णव ठाड़े हते. दामोदरदास हरसानी, कृष्णदास मेघन, प्रभुदास और एक वैष्णव मथुराको हतो. सो तब तहां रूप - सनातन कृष्णचैतन्यके सेवक, श्रीआचार्यजीके पास दरसन करि दण्डौत् कियो. पाछें रूप - सनातननें श्रीआचार्यजीसों पूछ्यो, जो - महाराज ! ये वैष्णव कौन हैं ? तब श्रीआचार्यजीने कही, ये हमारे सेवक हैं. तब रूप - सनातनने कही, महाराज ! आपको मारग तो पुष्टि है और ये दुबरावल क्यों है ? तब श्रीआचार्यजीने कही, हम तो इनकों बरजे, जो यह मारगमें मति परो. परन्तु ये मेरो कह्यो न मान्यो. ताको फल भोगत हैं. या प्रकार गूढ रीतिसों श्रीआचार्यजी कहें, परन्तु रूप सनातन कछू समुझे नाहीं. पाछें रूप - सनातन आज्ञा मांगि श्रीजगन्नाथरायजीके दरसनकों गये. तब कृष्ण चैतन्यने पूछी, तुम कहां तें आये ? तब रूप सनातनने कही, हम ब्रजके दरसन करिकें आये हैं. तब कृष्णचैतन्यने पूछी, वहां श्रीवल्लभाचार्यजीके दरसन भये तुमकों ? तब रूप - सनातनने कही, मथुरामें विश्रान्त घाट पर दरसन भये. तब कृष्णचैतन्यने पूछी, वार्ताको प्रसङ्ग कियो ? तब रूप - सनातनने कही, हम पूछें, आपको मारग पुष्टि, आपुके वैष्णव दुर्बल बहोत ? तब आपु कहें, हम तो इनकों बरजें, जो या मारगमें मति परो. सो ये मानें नाहीं कह्यो, ताको फल भोगत हैं. यह सुनत ही श्रीआचार्यजीको भाव, कृष्णचैतन्यकों एक महूरत लौं मूर्छा आई. ऐसे तीनबार कही, सो तीनों बेर मूर्च्छा आई. पाछें चौथी बार पूछी, तब रूप - सनातनने कही, अब हमसो कही न जाई. सो कृष्णचैतन्य कछू समुजे.

भावप्रकाश : काहेतें ? कछुक श्रीआचार्यजीके स्वरूपको ज्ञान हतो. तातें कछुक समुजे. जो सगरो समुजते तो उनकी देह छूटि जाती, श्रीआचार्यजी

कहें, यह मारगमें मति परो. सो कह्यो न मान्यो तब फलदसाकों भोगें. जैसे पञ्चाध्याई में ब्रजभक्तनसों श्रीठाकुरजी कहें, घर जाउ, परन्तु ब्रजभक्त यह बात न माने. तब रासलीलाके फलकों पाये. सो अब तो मर्यादा रीतिसों कहे. काहेते ? वेदकी मर्यादा यह, जो सेवक होन आवे तो एक बार ना कहनो. उह सेवकको भाव दृढ़ता देखनकों. पाछें वाके पूरन प्रीति सेवक होनकी होय तो सेवक किये वाको फल मिलें. तातें वैष्णवकों ना कहनो. और ''यह मारग में मति परो'', सो यह मारग ब्रजभक्तनको है. जैसे ब्रजभक्त सर्व समर्पन करि सरन भये तब खानपान देह - सुख सब छूट्यो. विप्रयोग की फलदसाकों भोगत हैं. तातें देह कृष होंय विरहके उसास उठें. नेत्रनमें जल भराय, कण्ठ रुकि जाय, सगरि देहमें पसीना होय, मूर्छित होई, हसि परे, रुदन करेल निर्त करे इत्यादि भक्तके लक्षन है.

वार्ताप्रसङ्ग २ : और प्रभुदास रसोई हाथसों सदा करते. सो एक दिन रसोई बिगरि गई. दारि काची रही और लीटी जरि गई. तब प्रभुदासके मनमें यह आई, जो ऐसी बिगरी रसोई श्रीठाकुरजीकों कहा समर्पे ? तातें चरणामृत मिलाइके लिये.

भावप्रकाश : काहेतें ? पुष्टिमार्गीय वैष्णव है. तिनको मन कोमल है. जैसे श्रीठाकुरजी अत्यन्त कोमल है, तेसे भक्तनको मन हू है. तातें यह विचारे , जो कहा एसी सामग्री समर्पो ? अरु दग्ध अन्नको दोष हू है. -

वृन्ताकं च कलिङ्गं च दग्धान्नं च मसूरिकाः ।

इत्यादि विचारिकें श्रीठाकुरजीकों समर्पे नाहीं. और अनप्रसादीको महादोष है. तातें चरणामृत मिलाईके लिये.

तब श्रीठाकुरजीने श्रीआचार्यजीसों कह्यो, जो मैं प्रभुदासकी बाटि देखी, सो आजु मोकों भोग न धर्यो. आपु लिये.

भावप्रकाश : यामें यह जताये, जो श्रीठाकुरजी जदपि एक हैं, नन्दराजकुमार. परन्तु भक्तनके भाव करिकें जितने भक्त हैं तिनके तितने ठाकुर हैं.

सो प्रभुदासके भावके ठाकुरजीनें कही, जो प्रभुदासने भोग नाहीं धर्यो.

तब श्रीआचार्यजीनें प्रभुदाससों कह्यो, तू आजु श्रीठाकुरजीकों भोग समर्पे बिना क्यों लियो ? तब प्रभुदासने बिनती करी, महाराज ! दारि काची रही अङ्गाकरि जरि गई. तातें चरणामृत मेलिकें लियो. तब श्रीआचार्यजी कहे, ऐसी रसोई क्यों करी ? श्रीठाकुरजी बड़ी बेरलों बाट देखी. तातें सावधानीसों आछी रसोई करि भोग धरिके लीजो. ता दिन तें प्रभुदास सावधानीसों रसोई करते.

भावप्रकाश : यामें यह जताये, जदपि चरणामृत मिलायकें लियोसो अन्न दोष मिट्यो. परन्तु भगवद् भोग पदारथ न भयो. तातें वैष्णवकों जेसे श्रीठाकुरजीकों भोग धर्यो होय तेसे लेनो. दहीं न्यारो धर्यो होइ तो दहींमें भात मिलाइके अपने न लीजें. काहेतें ? दूधभात, दहींभात, न्यारे - न्यारे भक्तनके भावकी सामग्री हैं. तातें चरणामृत यथा प्रसादी वस्तु पधराय ले, काहू सामग्रीमें तें अपने भोग अर्थ न लेनो. दासधर्म प्रभुको उच्छिष्ट जैसो अरोगे होई वाही प्रकारको लेनो. पतिव्रताको यह लक्षन है. इत्यादि भाव जताये.

वार्ताप्रसङ्ग ३ : और एक समय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु ब्रजमें पधारे. सो गोवर्द्धनके पास राधाकुण्ड स्थल है. तहां सीतकालके दिन हते. सो बेगहि श्रीआचार्यजीने रसोई करि भोग धरें, आपु भोजन कर्यो. पाछें प्रभुदाससों कहे, जो महाप्रसाद ले. तब प्रभुदासनें कही, महाराज ! मैं स्नान नाहीं कियों.

भावप्रकाश : ताको आसय यह, जो श्रीआचार्यजीके सेवक सगरे अपनी न्यारी - न्यारी रसोई करते, सो लेते. परन्तु श्रीआचार्यजी श्रीकुण्डमें स्नान करि, रसोई करि, भोग धरे. सो वह स्थल श्रीस्वामिनीजीको हैं. सो आपुकों बहोत प्रिय है. तातें प्रभुदास ऊपर कृपा करनार्थ श्रीआचार्यजी कहे, महाप्रसाद ले. तब प्रभुदास मर्यादाके वचन कहें, मैं न्हायो नाहीं. ता समें श्रीआचार्यकजी पुष्टिलीलामें मग्न हे. सो प्रभुदासकों स्वरूप ब्रजको दिखाये.

तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आपु दोय श्लोक कहिकें ब्रजको स्वरूप दिखाये. सो श्लोक -

वृक्षे वृक्षे वेणुधारी पत्रे - पत्रे चतुर्भुजः ।
यत्र वृन्दावने तत्र लक्ष्यालक्ष्यकथा कुतः ।।१।।
जलादपि रजः पुण्यं रजसोऽपि जलं वरम् ।
यत्र वृन्दावनं तत्र स्नात्वास्नात्वाकथा कुतः ।।२।।

यह कहें कृपा करिकें. सो प्रभुदास ब्रजको स्वरूप अलौकिक देखें.

भावप्रकाश : वृक्ष वृक्षके नीचे वेणुधारी साक्षात् श्रीगोवर्द्धनधर भक्तके सङ्ग लीला करत हैं. ऐसे वृक्ष भगवदीय हैं. तिनके पत्र कैसे हैं ? चत्रभुज रूप हैं. तथा वृन्दावनके वृक्ष - वृक्ष वेणुधारी श्रीगोवर्द्धनधर रूप हैं. तिनको आसय, चत्रभुज रूप नारायण पत्र रूप होई आश्रय वृक्षनको कियो है. ऐसो वृन्दावन है. सो लक्ष्यालक्ष्य कथा हैं. लौकिक लोगनकों अलक्ष्य है. और भगवदीयनकों स्वरूपात्मक हैं. सो कथा कही न जाई. या बातकों भक्तजन जाने, कृष्ण रूप जाने. कृष्ण रूप वृक्ष है सो लोगनकों न दीसें. तैसेहि श्रीवृन्दावनकी रजसों जल श्रेष्ठ है. और जलतें रज श्रेष्ठ है. तहां न्हायवेकी कथा कहा कहिये ? भावे जलसों न्हाय, भावे रज लगाये. सो रज उड़िके लागी तब न्हाइवेकी अपेक्षा रहि नाहीं. परन्तु मर्यादाके लिये न्हानो.

यह सुनकें प्रभुदासकों अलौकिक श्रीवृन्दावनके दरसन भये. तब बिना न्हाये महाप्रसाद लिये, श्रीआचार्यजीकी आज्ञा तें. या प्रकार प्रभुदासकों श्रीवृन्दावनको अलौकिक स्वरूप वर्णन कियो. जहां वेदमर्यादाकी गम्य नाहीं.

वार्ताप्रसङ्ग ४ : और एक समय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु श्रीगोवर्द्धनधरके मन्दिरमें श्रीगोवर्द्धनधरको शृङ्गार करत हते. तब यह मनमें आई, जो आजु दहीं होय तो समर्पिये. तब प्रभुदाससों कहे, जा, कहुं दहीं मिले तो ले आव. तब प्रभुदास चले. सो एक अहिरनी मिली. तब वासों पूछे, तेरे पास दहीं है ? तब उन कह्यो दहीं मीठो सुन्दर है. परन्तु तू मोकों कहा देयेगो ? तब प्रभुदासने कही, दहीं मोकों दे.

जो तू मांगे सो मैं तोकों देऊ. तब अहिरनीने कही, एक टका दे और कहा तू मोकों मुक्ति देइगो ? तब प्रभुदासने कही, जा तोकों टका और मुक्ति दोउ दीने. तब अहिरनीने कही, मैं केसे मानों ? तब प्रभुदासने एक कागद पर लिखि दीनो, जो दहींके पलटें मुक्ति दीनी. तब अहिरनी अपने अञ्चलसों बांधिके अपने घर आई. तब वाने परोसनिसों कही, आजु मैं दहींके पलटे मुक्तिले आई हों. तब परोसनिनें कही, अरी जा, ताकों बेरागियाने ठगि लियो. मुक्ति कहा देयगो ? जब वा अहिरनीने कही, ऐसे मति कहे, उह बड़े महापुरुष हैं. मोकों कागद लिखि दियो है. सो मेरे छेडे बांध्यो है. उह झूंठ न बोले. तब उह कह्यो, अब जानि परेगी. पाछें घरि दोयमें बाकी देह छूटी. तब जमदूत आये. इतनेंमें ही विष्णुदूत आयकें जमदूतनसों कहे, छोडि देऊ याकों, मुक्ति करेंगे. जब जमदूतने कहो, यह मुक्तिको कछू साधन तो कियो नांहीं. मुक्ति कैसे होयगी ? तब विष्णुदूतने कही, याकों श्रीआचार्यजीके सेवक प्रभुदासने दहींके पलटे मुक्ति दीनी है. सो ले जायंगे. तब जमदूत फिरि गये. विष्णुदूत याकों विमान पर बैठायके ले चले तब इनने कह्यो, मेरी परोसनिकों विश्वास नाहीं है. तातें वासों कहि चलो. तब वासों कहें, श्रीआचार्यजीके सेवकने दहींके पलटे याकों मुक्ति दीनी हती, सो याकों ले जात हैं. तब वह अपने घरतें दोरिकें आय देखें तो उह अहिरनी मरी परी हैं. तब उह परोसनि ब्रजबासीनसों कहै, छेड़े एक चिट्ठी बंधि है सो देखो तो. तब वाको अञ्चल देखे तो दहींके पलटें मुक्ति लिखी है. तब वाकों विश्वास आयो. तब वे हू चली. मैं हू वा महापुरुष पास जाय मुक्ति लेहु. सो वे श्रीआचार्यजीकी सेवकनी होय कृतार्थ भई.

और यहां श्रीआचार्यजी दहीं भोग धरें. तब श्रीनाथजी कहे, दहीं बहोत मीठो है. पाछें मन्दिर तें पधारे तब श्रीआचार्यजी कहें, प्रभुदास दहीं बहोत मीठो सुन्दर लायो. कहा दियो ? तब प्रभुदासने कही, महाराज ! महा मोंघो आयो है. दहींके पलटें मुक्ति दीनी है. तब श्रीआचार्यजी कहें, भक्ति क्यों न दीनी ? श्रीठाकुरजी प्रीतिसों अरोगे, मुक्ति तुच्छ कहा दीनी ? तब प्रभुदास कहें, महाराज ! मुक्ति उनने मांगी. जो भक्ति मांगती तो भक्ति देतो. ....वार्ता ।।२०।।

भावप्रकाश : याको कारन यह, जो ता दिन दान एकादसी हती. सो वा दिन दहीं अवश्य चाहिये. तातें श्रीआचार्यजी कहें, आजु दहीं आवश्यक चाहिये. और श्रीआचार्यजीके सेवकको माहात्म्य दिखायो, जो भक्ति मुक्ति देवेको सामर्थ्य हैं.

२६-प्रभुदास भाट

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, प्रभुदास भाट, सिंहनन्दमें रहते, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : सो ये लीलामें ललिताजीकी सखी हैं. कलहंसी इनको नाम है. सो ये सिंहनन्दमें एक भाट हतो ताके घर प्रगटे. सो प्रभुदासको पिता देसाधिपतिके आगे चलतो. देसाधिपतिके कवित्त करतो. द्रव्य बहुत हतो. सो प्रभुदास बरस दसके भये. सो महा मूरख भये. पिताने बहुत पढ़ायो. परन्तु कछु पढ़े नाहीं. पाछें पिताकी देह छूटी. पाछे जब प्रभुदास बरस पन्द्रहके भये तब दिल्लीमें आये. सो देसाधिपति पास गये. तब देसाधिपतिने कह्यो, कछु कवित्त कहो. तब प्रभुदासने कही, कवित्त किनकों कहत है ? मैं तो जानत नाहीं. और मैं कछू तुम तें चाहत नाहीं. ठाकुर खायवेकों देत है. कहा तू पालेगो ? तब देसाधिपतिने कही, याकों गाम बाहिर काढि देउ. तब ये दिल्लीतें उदास व्है कें चले. सो मथुरा आय विश्रान्त घाट पर रोवन लागे. जो भगवान् मोकों मूरख क्यों किये ? अब मैं कहां जाऊं ? जहां जाऊं तहां आदर सनमानतो कोइ करत है नाहीं. या प्रकार चिन्तामें हते. ताही समय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु मथुरा पधारे, विश्रान्त घाट पर. तब आपु दैवी जानिकें कहें, प्रभुदास ! तू रोवत क्यों है, न्हाय ले. तब प्रभुदास न्हाये. तब श्रीआचार्यजी नाम निवेदन करायें. तब प्रभुदासकों अपुने स्वरूपको और श्रीआचार्यजीके स्वरूपको ज्ञान भयो. ताही समय दण्डौत् करि यह एक दोहा किये -

जब तें विछुर्यो नाथसों, पर्यो जगत भव कूप ।
ता हित वल्लभ प्रगट व्है, दरसायो निज रूप ।।

यह सुनिकें श्रीआचार्यजी बहुत प्रसन्न भये. तब कहें, प्रभुदास ! ताकों यह मारग स्फुर्यो. अब तुम भगवत् सेवा करो. तब प्रभुदासने कही, महाराज ! यह सब आपुकी कृपा, केवल प्रमेय बलतें आप मोकों अङ्गीकार किये. मो बरोबर दुःखी कोऊ न हतो. और छिनमें मोकों सुखके समुद्रको अनुभव करायो. अब यह बिनती है, जो मोकों कबहु दुःसङ्ग न रहे. एक दृढ़ विश्वास आपुके चरनको रहे. तब श्रीआचार्यजी प्रसन्न होइके कहें, जा, ऐसोंइ होइगो. पाछें

मथुरामें एक स्वरूप न्योछावरि देकें लालजीकों ले आये. सो श्रीआचार्यजी पञ्चामृत स्नान कराय प्रभुदासके माथे पधराय दिये. और प्रसन्न व्हे के कहे, तोकों सगरी रीति आपुहि फूरेगी. तातें बेगे अपुने गांव जाय सेवा करो. तब प्रभुदास दण्डौत् करि श्रीठाकुरजीकों पधरायकें सिंहनन्द आये. सो घरमें कुटुम्बको सङ्ग छोडिकें न्यारो घर एक ले भगवद् सेवा करन लागे. ब्याह तो इनको भयो नाहीं.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो प्रभुदास सदा एकरस प्रीतिसों सेवा करते. रात्रिकों वैष्णवको सङ्ग करे. द्रव्य घरमें बहुत हतो. सो भगवद् सेवा, गुरु सेवा, वैष्णव सेवामें लगाये. और लौकिक वैदिक सब छोडि दिये. ऐसे करे, सो वैष्णव सराहें और ज्ञातिके निंदा करें. परन्तु वे काहुकी न सुने. ऐसे करत वृद्ध भये. पाछें सरीरमें असावधानता भई. सावधानता छूटे. तब सगरे ज्ञातिके मिलिकें पृथोदक तीरथ ले आये. तब तहां सावधानता भई. आंख खोलि देखें तो पृथोदक तीर्थ है. तब सबसों कहे, इहां क्यों मोकों ल्याये ? तब सगरे ज्ञातिके कहें, यह पृथोदक तीर्थ है. तुम विकल भये तब ल्याये. तब प्रभुदास कहे, यह पृथोदक कहा मोकों कृतार्थ करेगो ? हों तो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुको सेवक हों. तुम मोकों बरस लों इहां राखोगे तोहू मेरी देह इहां न छूटेगी. तातें तुम मोकों सिंहनन्द ले चलो. मैं श्रीठाकुरजीके चरणारविन्दके दरसन करोंगो. तब वहां मेरी देह छूटेगी. यह प्रभुदासनें कही. परन्तु ज्ञातिके सगरे सम्बन्धी माने नाहीं. प्रभुदासकों दिन पांच - सात पृथोदकमें राखे. तब प्रभुदास आछे भये, चलन फिरन लागे. सम्बन्धी हारिके प्रभुदासकों घर लाये. तब प्रभुदास न्हायकें बिनती किये, महाराज ! श्रीआचार्यजीने तुमकों मेरे माथे पधराये हैं. सो ये बावरे लोग तुम्हारे चरणारविन्दको आश्रय छुडाईके पृथोदकको आश्रय करायो. सो आपु ऐसो क्यों करो, जो मेरी देह उहां छूटे ? या प्रकार श्रीठाकुरजीसों बिनती करि सिंहनन्दमें एक वैष्णवके माथे पधराइ, दण्डौत् करि मन्दिरके बाहर आइ, सगरे वैष्णवनसों भगवद् स्मरन करि देह छोड़ि दिये. तब सिंहनन्दके सगरे वैष्णव जहां मिलिकें भगवद् वार्ता करें तहां प्रभुदासकी बड़ाई करें, जो प्रभुदास धन्य हैं. बड़े भगवदीय, जो तीर्थको आश्रय न कियो. श्रीठाकुरजीको आश्रय किये.

सो सिंहनन्दमें एक कीरत चोधरी हतो.

भावप्रकाश : सो कंसको धोबी हतो. श्रीठाकुरजीने वाके वस्त्र मथुरामें लूटे हते. ताको औतार हतो.

सो उह वैष्णवके पास आयकें निन्दा करन लाग्यो, तो - प्रभुदास पृथोदक तीर्थतें फिरि आयकें हिडम्ब देशमें देह छोड़ी. तिनकी बड़ाई क्यों करत हो ? तब गांवके चोधरी जानि वैष्णव चुप ह्वे रहे. या प्रकार दोइ चार दिन निन्दा करी. सो एक दिन रात्रिकों सोयो हतो सो चारि जने आयकें मुगदर ले, कीरत चोधरीकों खाट तें ओंधों पटकि दियो. मारन लगे. तब कीरत चोधरीने कही, तुम मोकों क्यों मारत हो ? तुम्हारो कहा बिगार्यो है ? तब वे चारों विष्णुदूत हतें सो कहें, तू प्रभुदासकी निंदा क्यों करत है ? तातें आजु तेरो हाड चूर - चूर करेंगे, मारिके. तब कीरत चोधरी हाहा खाय नाक घसिकें कही, अब मैं प्रभुदासकी निंदा न करुंगो, बड़ाई करुंगो. तुम मोकों मति मारो. तब विष्णुदूत कहे, आजु छोड़त है, परन्तु अब कबहू निंदा करेगो तो तोकों न छोड़ेंगे. यह कहि विष्णुदूत गये. तब दूसरे दिन वैष्णव मिलिकें प्रभुदासकी बड़ाई करत हते तहां कीरत चोधरी आयो. तब सगरे वैष्णव चुप ह्वै रहे. तब कीरत चोधरीने कही, वैष्णव ! तुम कहे सो सांच, प्रभुदास बड़े भगवदीय है. उनकों तीर्थसों कहा काम ? उनकों श्रीठाकुरजीको आश्रय है. या प्रकार बड़ाई बहोत करी. तब वैष्णव चकित होय रहे. और पूछी जो तुम तो पहले निन्दा करत हते और आजु बहोत बड़ाई करत हो ताको कारन कहा ? तब कीरत चोधरीने अपनी पीठि दिखाई. और कहे, जो चारि जने मोकों रात्रिकों बहुत मारें और कहे, जो तू प्रभुदासकी निन्दा क्यों करत है ? तातें वे बड़े भगवदीय हते. तुम सुखेन उनकी बड़ाई करो. तब सगरे वैष्णव प्रसन्न होइ बड़ाई करन लागे. सो प्रभुदास ऐसे भगवदीय हते. ...वार्ता ।।२१।।

भावप्रकाश : यह प्रभुदासकी वार्तामें यह सिद्धान्त भयो, जो पुष्टिमार्गीय वैष्णवकों कोई तीर्थको आश्रय न करनो. श्रीआचार्यजीको आश्रय राखनो. और भगवदीयकी निंदा करे, जो याहू लोकमें दुःख पावें. मरें तब नरकमें जाइ. काहेतें ? भगवान कों भगवदीय प्रिय हैं. अपुनो अपराध सहे परन्तु भगवदीयको अपराध नहीं सहि सकें.

२७-सेवक पुरुषोत्तमदास स्त्री - पुरुष

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, पुरुषोत्तमदास स्त्री - पुरुष क्षत्री हते, आगरेमें राजघाट पर रहते, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ये पुरुषोत्तमदास लीलामें श्रीचन्द्रावलीजीकी अन्तरङ्ग सखी हैं. पुरुषोत्तमदासको नाम माधवी, इनकी स्त्रीको नाम मालती है. सो ये आगरेमें राजघाट पर होय क्षत्रीके घर पास हते. तहां जन्म दोउ लिये. सो उन होय क्षत्रीके परस्पर बहोत मित्रता हती. सो दोऊ जने कही, अपनें बेटा, बेटीको विवाह करें तो आछो. सो दोऊके दोऊ भये. तब विवाह किये. पाछें बरस दिनके भीतर दोऊके पिताकी देह छूटी. सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आगरे पधारे. सो ता समय पुरुषोत्तमदास और इनकी स्त्री बारी पर बैठें हते. सो श्रीआचार्यजीको दरसन होत ही दोऊ आपसमें बतराये. जो इनकी सरनि जैये. सो पुरुषोत्तमदास दौरिकें उछण्डे माथें श्रीआचार्यजीकों दण्डौत् किये. और बिनती किये, महाराज ! हमकों कृपा करिकें सरनि लीजिये. मेरे घर पधारिये. तब श्रीआचार्यजी कहें, तुम अड़ेलमें आइयो. श्रीगुसांईजीके पास नाम पाइयो. तब पुरुषोत्तमदासनें कही, महाराज ! श्रीगुसांईजीमें और आपमें कहा भेद है ? तातें आपु सेवक करिये. सरीरको कहा भरोसो है. पाछें आपुके दरसन दुर्लभ हैं. या प्रकार दैवी जीव है सो स्वरूपको ज्ञान भयो. तब श्रीआचार्यजी पुरुषोत्तमदासके घर पधारें. पुरुषोत्तमदासकों और इनकी स्त्रीकों नाम निवेदन करायें. तब पुरुषोत्तमदासने और इनकी स्त्रीने बिनती करी, महाराज ! अब हमकों कहा आज्ञा है ? तब श्रीआचार्यजी कहे, भगवद् सेवा करो. तब पुरुषोत्तमदासनें कही, महाराज ! श्रीठाकुरजी पधराय दीजिये. सेवा करें. तब श्रीआचार्यजी कहें, तुम्हारे माथे कलङ्क आवेगो. सो तुम गङ्गा न्हानकों जैयो. तब अड़ेल आवेगो तब तुम्हारे माथे श्रीठाकुरजी पधराइ देइंगे. अबहि तुम्हारे दोऊ जनेकी माता हैं. सो आसुरी जीव हैं. सो क्लेश करेंगी. तब पुरुषोत्तमदास स्त्री सहित कहें, माता तो हम पर दोउकी बहोत हित करत हैं. सो क्लेश कैसे होइगो ? तब श्रीआचार्यजी कहें, अबलौं तुम वैष्णव न हतें. तातें प्रीति करत हैं. वैष्णव भये सुनेंगी तब देखोगे. तातें हम इहां ते बेगे पधारेंगे. क्लेश मोकों भावत नाहीं. तब पुरुषोत्तमदास स्त्री सहित डरपिके बेग ही भेट जो बनि आई सो करी. श्रीआचार्यजीको विदा किये. श्रीआचार्यजी क्लेशजानि तत्काल अड़ेल पधारे. सो पुरुषोत्तमदास और इनकी स्त्री डरपिकें तीन दिनलों अपनी माताकों बैष्णव भये न बतायें. कोरो दूध ल्यायके पीके रहें. तब पुरुषोत्तदासकी मातानें गरेमें माला देखी, तब कह्यो, बेटा ! गरेमें माला कैसी ? आपुने क्षत्री जनेऊ सर्वोपरि हैं. माला कैसी ? तब पुरुषोत्तमदास बोले नाहीं. तब वह पुरुषोत्तमदासकी स्त्रीको माथो गरो उघारिकें देख्यो. सो माला देखिके बहोत रोई. कह्यो, ये स्त्री - पुरुष दोउ बैरागी भये. पाछें जायके पुरुषोत्तमदासकी मातानें पुरुषोत्तमदासकी स्त्रीकी मातासों कह्यो, जो तेरी बेटी और मेरो बेटा दोऊ माला पहिरी हैं. दोऊ वैरागी भये, अब कहा करनो ? तब उननें कही,

चलो इनकी माला उतराउ, नाहीं तो दोऊ मरेंगे. सो दोऊ आयके स्त्री पुरुषसों कहें, जो याहि छिन माला दोऊ उतारो. नाहीं तो दोऊनकी हत्या लेऊगे. तब पुरुषोत्तमदासने दस - बीस क्षत्री सगे सम्बन्धी बुलायकें सबके आगें मातासों कही, जो यह माला हमारे सिरके साटे हैं. माथो जाय तो चिन्ता नाहीं परन्तु माला तो न छोड़ेंगे. तातें तुम्हारो मालासों कहा काम है ? तुम्हारो मन होय तो हमारे भेले रहो, चहिये सो और कहो तो तुमकों न्यारो घर करिकें देय, मनुष्य चाकर रहेगो. जो तुमको चहिये सो लेहु. हमसों बनेगी सो तुम्हारी टहल करेंगे. चाहो तुम याहि घरमें रहो. हम न्यारो घर करिकें रहें. तुम कहो तेसे करें. क्लेश मति करो. परन्तु हम माला सर्वथा न छोड़ेंगे. और तुम्हारे हाथको छुयो खानपान न करेंगे. तुम माला पहिरो, वैष्णव होउ, तब तुम्हारे हाथको पानी काम आवें. यह सुनिके दोउकी माता क्रोध करिकें कह्यो, जो तुम होउ वेरागी भये (अब) हमहूकों वेरागी करत हौं ? हम पाले हैं, अब हम चमार - भङ्गी ठेहरे तुमारे लेखे, जो हमारो छूयो जल न लोगे ! हम दोउ तुम्हारे ऊपर मरेंगी. या प्रकार पांच दिनलों जल कोइ न लियो. सगरे सगे सम्बन्धी गांवको हाकिम हू आयकें सबकों समुझायो. परन्तु दोउ न माने. सो रात्रिकों पुरुषोत्तमदास स्त्री - पुरुष सोय गये, तब दोऊकी माता घरमें कूप हतो तामें गिरि परी, सो देह छूटी गई. सबेरे दोनोको संस्कार पुरुषोत्तमदासने कियो. तब ज्ञातिके सगरे कहन लागें, जो तुम स्त्री - पुरुषकों हत्या लागी तातें गङ्गाजी न्हाय आवो. तब ज्ञातिमें लेय. तब स्त्री - पुरुष बिचारि किये, जो अपुने श्रीआचार्यजी पास जायकें भगवद् सेवा पधरावनो है. सो चलो. तब दोउ जनें तहां तें चले. प्रयाग आये. तहां न्हाये. पाछें अड़ेलमें आइ श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करि सब बात कही, महाराज आपु कहे सोई भयो. दोऊकी माता मरी. अब क्लेश मिट्यो. अब भगवद् सेवा पधराय दीजें. तब श्रीआचार्यजी कहें. उह दोउ आसुरी जीव हती. परन्तु तुम वैष्णव भये तातें उनकी गति होइगी. जा कुलमें वैष्णव होय ताको सगरो कुल कृतार्थ होयगो. तुम भगवद् सेवा करो. सो अड़ेलमें एक पूजा मार्गीय ब्राह्मण वृद्ध हतो वाके घर लालजी हते. उनसों कहे, जो तुमतें पूजा न बनत होइ तो श्रीठाकुरजी हमकों देउ. तब उन ब्राह्मणने कही, मैं यह विचारत हतो, जो ठाकुर किनकों देउ. अब मोसों पूजा नाहीं बनत है. तब श्रीआचार्यजी पञ्चामृत स्नान कराय पुरुषोत्तमदासके माथे पधराये. कछूक दिन अड़ेलमें रहि सेवाकी रीति सब सीखिकें पाछें विदा होय आगरेमें आये. सगरी ज्ञातिकी रसोई ब्राह्मण भोजन कराई लौकिक अपवाद हू मिटाय दोऊ स्त्री - पुरुष भगवद् सेवा करने लागें.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो एक समय श्रीगुसांईजी आगरे पधारे. सो पुरुषोत्तमदासके घर उतरे. तब पुरुषोत्तमदासकी स्त्री छिपी रही. तब श्रीगुसांईजीने पुरुषोत्तमदाससों पूछ्यो, जो तेरी स्त्री कहां है ? तब पुरुषोत्तमदासने कही, महाराज ! जनेउ टूट्यो होयगो. तब श्रीगुसांईजी जाने भिन्न बैठी होयगी. तब श्रीगुसांईजी स्नान करिकें रसोई करि दार, भात, पांच - सात साक, खीर सब किये. रोटी बेलनके समय

पुरुषोत्तमदासकी स्त्री न्हाइके आय बैठी. तब श्रीगुसांईजी पूछें, तू कहां हती अब लों ? तब कह्यो, महाराज ! कछू काम हतो.

भावप्रकाश : सो अब अटकावको दिन पांचमो हतो. सो स्त्री छिप रही, जो बिना न्हाये श्रीगुसांईजीकों मुख क्यों दिखाउं ?

पाछें रोटी बेलि दियो. सगरी रसोई श्रीगुसांईजी करिकें श्रीठाकुरजीकों भोग धरे. पाछें भोग सराय अनोसर कराये. तब पुरुषोत्तमदास स्त्री - पुरुष श्रीगुसांईजीसों कहें, महाराज ! यही थार कटोरामें भोजन करो. तब श्रीगुसांईजी कहें, श्रीठाकुरजीके पात्रमें कैसे करिये ? हम पातरिमें करि भोजन करेंगे. तब पुरुषोत्तमदास कहे, महाराज !द्रव्य तो निघट नाहीं गयो. और कसेरे सब मूए नाहीं. और नये पात्र आवेंगे. या प्रकार उह कहिकें श्रीगुसांईजीकों वाही श्रीठाकुरजीके पात्रमें भोजन कराये.

भावप्रकाश : सों यातें जो इनकों श्रीगुसांईजीमें भाव हैं. और लीलामें श्रीचन्द्रावली श्रीठाकुरजी सङ्ग वही पात्रमें भोजन करतीं. सो ये श्रीचन्द्रावलीकी सखी हैं. सब लीलाकी स्फूर्ति हैं. तातें श्रीठाकुरजीके पात्रमें भोजन कराये और स्त्री - पुरुषको श्रीगुसांईजीमें स्नेह बहोत हैं. सो यह विचारे, दूसरे पात्रमें फेर ठलाये तें सामग्रीको सबाद फिरि जायगो. सगरी सीतल व्है जायगी. तातें स्नेहसों उही पात्रमें भोजन कराये.

पाछें श्रीगुसांईजी भोजन करिवे बैठें. तब पुरुषोत्तमदासकी स्त्री पास आय बैठी. कह्यो महाराज ! यह सामग्री अरोगो. तब श्रीगुसांईजी कहें, मोकों चहिये सो में लेउंगो. तब पुरुषोत्तमदासकी स्त्रीने कही, महाराज ! नन्दरायजीके घर जैसे अरोगत हो तैसेही सगरे वैष्णवनके घर अरोगो.

भावप्रकाश : यामें यह जताये, नन्दरायजीके घर तो भक्तनको जैसो मनोरथ है तैसे अरागत हो. इहां कहें मोंको रुचे तैसे लेउंगो. सो कैसे बनेगी?

या प्रकार श्रीगुसांईजीसों प्रेम संयुक्त वार्ता करे. बार - बार सगरी सामग्री भोजन कराये, श्रीगुसांईजीकों प्रसन्न किये. पाछें

श्रीठाकुरजीकी सैया श्रीठाकुरजीके बिछोना तकिया तापर श्रीगुसांईजीकों पौढायकें स्त्री - पुरुष चरन सेवा करन लागे. तब श्रीगुसांईजी कहे, उठो, अब दोउ जने जाय महाप्रसाद लेउ. तब पुरुषोत्तमदास स्त्री - पुरुष कहें महाराज ! महाप्रसाद तो नित्य लेइंगे. या प्रकार श्रीगुसांईजीकों नित्य नवतन प्रीतिसों हठ करीके पांच - सात दिन राखे. नित्य नये पात्र, सैया, वस्त्र होय. ऐसे स्त्री - पुरुष कृपापात्र भगवदीय है. ...वार्ता ।।२२।।

भावप्रकाश : इनकी वार्तामें यह सिद्धान्त भयो, जो गुरुमें श्रीठाकुरजीसों अधिक प्रीति इनकी है. तेसै वैष्णव करें तब फलकों पावे.

२८-सेवक त्रिपुरदास कायस्थ

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, त्रिपुरदास कायस्थ, सेरगढ़के वासी, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ये लीलामें श्रीठाकुरजीकी अन्तरङ्ग सखी है, जो भक्तनकों ब्योरा कछू सन्देसो कहेनो होई, देनो होई सो हरनीके हाथ देते. इनके नेत्र विशाल बड़े हैं. तातें इनको नाम हरनी लीलामें हैं. सो सेरगढ़में एक कायस्थके यहां जन्मे. सो एक राजाके सगरो काम (करे) दिवान कहावतो, इनको पिता सो जब त्रिपुरदास बरस बारहके भये तब उनकों सङ्गहि राखतो. सगरो काम त्रिपुरदासकों सिखायो. सो राजा एक समय आगरेकों देसाधिपतिके पास चल्यो. तब त्रिपुरादासकों सङ्ग ले राजाके सङ्ग आगरे आयो. कछूक दिन आगरेमें रहिकें राजा देसाधिपतिसों बिदा होईकें देसकों चल्यो. सो श्रीगोवर्द्धन, श्रीगोवर्द्धनधरके दरसनकों आयो. तामें त्रिपुरादास पिता सहित आये. सो दिन तीन गोवर्द्धनमें रहे. तब त्रिपुरादासको मन श्रीनाथजीके स्वरूपमें आसक्त होय गयो. सो चोथे दिन राजा बिदा होइकें चलिवेकी तैयारी करी. सो सुनकें त्रिपुरादासकों विरह ज्वर चढ़ि आयो. सो व्याकुल भये. तब पिता पे पूछी, त्रिपुरादास कैसे हैं ? तब त्रिपुरादासने कही, मेरी देह छूटेगी, जो मोको ले चलोगे. तातें केतो तुमहुं महिना दोय रहो, के राजाके सङ्ग जाउ, मैं पाछे तें आछे दरसन करिकें आऊंगो. तब मेरे प्रान रहें. तब त्रिपुरादासके पिताने राजासों सब समाचार कहें. या प्रकार मेरो बेटा कहत हैं. तब राजाने कही, कहा चिन्ता है ? असवारी और मनुष्य राखि चलो पाछें तें बेटा आय रहेगो. तब पितानें आय कही, बेटा ! तुम रहो इहां. चिन्ता मति करो. यह सुनत ही

त्रिपुरदासकों आनन्द भयो. ज्वर उतरि गयो. तब पिता प्रसन्न होइ पालकी मनुष्य दिये. जो बेटा ! बेग अइयो. मैं वृद्ध भयो हों. राजाको काम काज करनो है. तब त्रिपुरदास कहें, तुम चलो मैं बेगो आऊंगो. तब पिता राजाके सङ्ग गयो. सो मारगमें एक जमींदारसों लराई भई. तहां त्रिपुरदासके पिताकों गोली लगी. सो मरि गयो. राजा उह जमींदारकों मारिकें आगे चल्यो. पाछें उह राजा (ने) त्रिपुरदास पास मनुष्य पठायो. सो सब समाचार त्रिपुरदाससों उन (ने) कह्यो. सो सुनिकें त्रिपुरदास प्रसन्न भये. जो भली भई. अब मेरे कोंई बन्धन तो है नाहीं. अब श्रीगोवर्द्धनधरके दरसन सदा करोंगो. पाछें पिताको कर्म मानसी गङ्गा पर सब किये. सुद्ध भये. सो नित्य सगरे दरसन करते. तब श्रीआचार्यजी एक दिन त्रिपुरदाससों कहें, जो तू कौन है ? दोय महिना भये दरसन करते अपने घर जाउ. तब त्रिपुरदासने कही, महाराज ! अब मैं कहां जाऊं ? माता मरी जन्म तें, पिता अब मर्यो, मेरो ब्याह भयो नाहीं. सो अब मेरो मन श्रीनाथजीके स्वरूपमें अटक्यो है. सो मैं कहां जाउं ? तब श्रीआचार्यजी त्रिपुरदासकी प्रीति देखिकें कहे, हम ऐसो करि देई तोकों, जहां रहें तहां श्रीनाथजीके दरसन करें. एक छिनको वियोग न होई. तब त्रिपुरदासने दण्डौत् करिकें बिनती कियो, जो महाराज ! मोकों यही चाहिये. काहेतें, मोसों मांग्यो जाय नाहीं. नित्य खरच हू चहिये. और श्रीनाथजीके दरसन बिना मोसों रह्यो हू नाहीं जाय. सो यह चिन्ता हती. जो आपु कृपा करिकें जो आज्ञा करो सो मैं करुं. तब श्रीआचार्यजी त्रिपुरदासकों न्हवाइके नाम निवेदन कराये. और श्रीनाथजीको चरणामृत महाप्रसाद दिये. सो नेत्रनके आगें श्रीनाथजीके स्वरूपको दरसन होन लाग्यो. तब श्रीआचार्यजी कहे, अब तुम इहां ते जाओ. जहां रहोगे तहां प्रभु तुमकों दरसन देइंगे. तू श्रीठाकुरजीकों कबहू पीठ न देइगो. तब त्रिपुरदास श्रीआचार्यजीकों दण्डौत् करि, विदा होई चले. तब यह मन कियो जो श्रीनाथजीके चरणामृत महाप्रसाद लिये बिना जल न लेनो. यह मनमें निश्चय करि घरमें आये.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो त्रिपुरदासकों श्रीनाथजीके विषे बहोत ममत्व हतो. जो श्रीनाथजीकों पीठि कबहू न देते. श्रीनाथजीके चरणामृत महाप्रसाद बिना जल हू न लेते. सो त्रिपुरदास एकतुरककी चाकरी करते. सो तुरककी ओर तें एक परगना पर गये. सो बहोत कमाये. सो, जो वस्तु नौतन आवें अन्न, साक फल - फूल, वस्त्र सो पहिले श्रीनाथजीकों अङ्गीकार होइ. ता पाछें आपु कछु लेय. और त्रिपुरदास बैठे, ठाढ़े, चलते, श्रीनाथजीकों पीठ न देते.

भावप्रकाश : सो कहा, जो श्रीनाथजीके स्वरूपको भूलनो सोई पीठि हैं. सो सदा दरसन करत हि सब काम करते.

और बरसके बरस आछो दगला श्रीनाथजीकों पठावते. सो श्रीगुसांईजी पहिले त्रिपुरदासकों दगला आछो देखिकें अङ्गीकार करावते. सो एक समय उह म्लेच्छने त्रिपुरदाससों लेखो लीनो. सो कछुक दाम त्रिपुरदासके ऊपर निकसे. सो उनसो मांग्यो. तब त्रिपुरदासने कही मेरे पास अब तो नाहीं है. कमायकें भर देउंगो. तब उह तुरकने सगरो घर लूटि लियो. त्रिपुरदासकों बन्दीखाने दिये. सो अर्धरात्रि गई. तब चार जने आयकें उह तुरककों खाट तें ओंधो डारि दियो. और मुगदरसों मारन लागे. तब उह तुरकने कही, मोकों क्यों मारत हो ? मैं तुम्हारो कहा बिगार्यो है ? तब विष्णुदूतने कही त्रिपुरदासकों बन्दीखानेमें क्यों दिये ? तोकों मारि हाड तोरि डारेंगे. तब वह तुरक हाहा खाय नाक भूमिमें घसिकें कह्यो, मैं अब ही तुरन्त जाय त्रिपुरदासकों छोड़ि देउंगो. तुम मोकों मति मारो. तब विष्णुदत गये. तब उह तुरक त्रिपुरदास पास जाइके कह्यो, अपने घर जाउ. तब त्रिपुरदासनें कही अब रात्रि बहुत गई है, सकारे जाउंगो. तब उह तुरकने कहीनेहूको जीव लेइगो ? याही समय जाउ. तब त्रिपुरदास घर आये.

सो इतने में भेटिया श्रीनाथजीके आये. सो त्रिपुरदासकों चरणामृत महाप्रसाद दिये तब त्रिपुरदासने बिचर्यो, जो बरसके बरस श्रीनाथजीकों जड़ावर पठावतो हो. परि अब तो कछू पास है नाहीं. सो एक लिखिवेकी द्वाति रही. वाको मुहरो ऊपरको रूपेको हतो. सो बेचि एक रङ्गी खारकाको थान ले आय भण्डारीकों दियो. और कहें श्रीगुसांईजीसों मति कहियो. श्रीनाथजीके भण्डारमें दीजो. कहा करिये, अब तो मैं कछू लायक नाहीं हों. सो भेटीआने उह रङ्गी श्रीनाथजीके भण्डारमें दीनी. पाछें प्रबोधिनीके दिन श्रीगुसांईजी मण्डप करि देवोत्थापन करि श्रीनाथजीकों दगला उढ़ाये. तब श्रीनाथजी कहे, जो मोकों सीत बहोत लागत है. तब दूसरो दगला उढ़ाये. तब फेरि श्रीनाथजीनें कही मेरो सीत गयो नाहीं, बहोत लागत है. तब श्रीगुसांईजी दूसरी अंगोठी धरि, एक अंगी करि, रजाई ऊपर उढ़ायें. तउ श्रीनाथजीने कही मोकों सीत बहोत लागत है. तब श्रीगुसांईजी विचारे, जो यह वैष्णवकी जडावर आई है सो अङ्गीकार नाहीं भई, ताके लिये सीत है. तब श्रीगुसांईजी भण्डारीकों बुलायकें कहे, जो जडावर किन - किनकी आई हैं. सो वैष्णवनके नाम सुनावो. सा भण्डारीने सुनाये. तब श्रीगुसांईजी कहे, त्रिपुरदासकी बरसके बरस आवती सो तो सुनाये नाहीं. (तब) भण्डारीने कही, महराज ! त्रिपुरदासके द्रव्यको सङ्कोच है. सो जड़ावर नाहीं आई. एक रङ्गीको थान आयो है. सा भण्डारमें मेली मरगजी परी है. (तब) श्रीगुसांईजी कहे, उह

रङ्गी त्रिपुरदासकी बेगि ल्यावो. सो भण्डारी ले आयो. तब श्रीगुसांईजी दरजीसों कहे, बेगे डोरा डारि दुलाई सी करि देउ. सो दरजीने डोरा डारि दुलाई करि दियो. तब श्रीगुसांईजी उह दुलाई श्रीनाथजीकों उढ़ाये. तब श्रीनाथजीने कही, अब मेरोजाड़ो गयो, गरमी भई. सों सीतकालमें दस - पांच बेर उह दुलाई अङ्गीकार करि भक्तवश्यता दिखाई. यह बात त्रिपुरदासने जानी. तब गद्गद् होइ यह पद गायो, सो पद -

राग आसावरी
नवरङ्ग ललन बिहारी मेरो कहे, जाड़ो मोहि अधिक सुहाय ।
पहेरि कंवाइ औढ़ि लई फरगुल, तोहू सीत सतावत आय ।।१।।
अचरज भये सुनि वल्लभ - नन्दन कनक अंगीठी धरी मंगाय ।
पुनि जिय सोचि मंगाई उढ़ाई, भजि गई सीत हंसे जदुराय ।।२।।
ऐसे परम कृपाल दयानिधि, बिरसत नहीं सुधि करत सहाय ।
'त्रिपुरारी' गिरिधारीकी बातें, कहा जानें कोउ देहु बताय ।।३।।

भावप्रकाश : यामें यह जताये, जो मेरो भक्त तिनकी प्रीतिकी वस्तु होय, सो या प्रकार मैं अङ्गीकार करत हों. सो भक्ति भावको अङ्गीकार, वस्तुको बिचार कछू नाहीं.

वार्ताप्रसङ्ग २ : और एक समय त्रिपुरदास वाहि तुरकके साथ अटककों गये हते. सो एक दिन सबेरे रसोइयाने कही, जो आजु श्रीनाथजीको चरणामृत महाप्रसाद नाहीं है. तब त्रिपुरदासने कही, पहलेसों क्यों न कह्यो ? बढ़ाय लेते. पाछें रसोइयासों कही, रसोई करि भोग धरिकै तुम पहुंचियो. मोकों मति बुलाइयो. यह कहिकें त्रिपुरदास अपने मनमें यह निश्चय कियो, जो जहां लौं देह चलेगी तहां लौं कामकाज करुंगो. परन्तु चरणामृत महाप्रसाद बिना जल न लेउंगो. यह निर्धार करि दरबार गये. तब श्रीगोवर्द्धनधर एक बरस दसको

लरिकाको रूप धरि तीन थेली लेकें आये. एक थेलीमें तो श्रीनाथजीको महाप्रसाद, एक थेलीमें श्रीनाथजीका चरणामृत. एक थेलीमें श्रीआचार्यजीको चरणामृत. यह ले उह रसोइयासों कही, यह चरणामृत महाप्रसादकी थेली त्रिपुरदासने पठाई हैं. और कहे हैं, जब तू श्रीठाकुरजीसों पहुंचे, तब मोकों बुलाइ लीजो. तब रसोइयाने उह थेली राखी. तब लरिका अन्तर्धान व्है गयो. पाछें रसोइयाने रसोईसों पहुंचि श्रीठाकुरजीकों भोग धर्यो तब त्रिपुरदासकों बुलावन मनुष्य दरबार पठायो. सो त्रिपुरदाससों जाई कही. तब त्रिपुरादसने कही, मैं तो कहि आयो हतो, जो मैं न आउंगो. तुम पहुंचियो. सो जाय कहियो, जो तुम पहुंचि मेरी बाट मति देखियो. तब उह मनुष्य फेरि आइकें त्रिपुरदासके समाचार कहे, जो वे न आवेंगे, तुम पहुंचियो. तब उह रसोइयाने कही, तू एक बार फिरि जा. त्रिपुरदासकों कहियो, जो तुमने लरिका हाथ चरणामृत महाप्रसादकी थेली पठाये. और कहे, मोकों बुलाइयो. अब नाहीं क्यों करत हो ? तब फेरि मनुष्य जाई यह बात कही. तब त्रिपुरदास दरबारसों घर आयकें रसोइयासों कहे मोकों क्यों बुलायो ? मैं चरणामृत महाप्रसाद बिना जलहू न लेउंगो. तब रसोइयाने कही, तुम लरिका हाथ चरणामृत महाप्रसादकी थेली पठाये और कहे, मोकों बुलाइयो. अब ऐसे क्यों कहत हो ? यह थेली तीनों धरी हैं. तब त्रिपुरदास देखिकें कहें, उह लरिका कहां है ? तब रसोइयाने कही, लरिका थेली दे चलो गयो. मैं कहा जानों कहां है ? तब त्रिपुरदास बिचारे, मैं श्रीठाकुरजीकों बहोत श्रम करवायो. अब तें काहू बातको हठ न करनो. बहोत मनमें खेद कियो. सो त्रिपुरदास ऐसे भगवदीय हे.

भावप्रकाश : सो श्रीठाकुरजी रसोईयाकों थेली दे गये, परन्तु त्रिपुरदासकों याते नाहीं जताये, जो मोकों लरिका भेखमें देखेंगे तो बहोत क्लेश इनकों होयगो. और त्रिपुरदासकों तो अष्टप्रहर स्वरूपको अनुभव है. तातें नाहीं जताये. और रसोईया साधारन वैष्णव हतो, तातें लरिका भेख करि अपुने स्वरूपको अनुभव कराये. इनकी वार्तामें यह सिद्धान्त भयो, जो इनकों स्वरुपासक्ति हैं. सदा श्रीठाकुरजीके सन्मुख है. और चरणामृतको स्वरूप जताये, जो चरणामृतकों हू नेम निश्चय वैष्णव राखे ता श्रीठाकुरजी वापर प्रसन्न होइ. और प्रभुको श्रम जानि दुःख न होय तो मर्यादामार्गीय होइ जाय. यों जीवनके कार्य अर्थ प्रभु श्रम करें तातें पुष्टिमार्गीय प्रसन्न नाहीं. काहेतें ? पुष्टिमार्गीय अपने सुख अर्थ कछू चाहना प्रभुतें राखत नाहीं. दुःख हू आवे तो सरीरको भोग बिचारके भोगे. तातें बन्दीखाने परे तब मनमें सोच न किये. सा विष्णुदूत उह तुरककों दण्ड दे छोड़ाये. तामें भक्तवत्सलता प्रभु प्रगट करी और बरसके बरस आछो दगला त्रिपुरदास पठावते सो मांगिके अङ्गीकार किये नाहीं. और विरह प्रीतिसों रङ्गीको थान पठाये सो प्रीतिके बस होई अङ्गीकार किये. तब सीत गयो. यामें

यह जताये, द्रव्यको सङ्कोच वैष्णवकों होइ सोउ प्रभु अनुग्रह करनके लिये. और द्रव्य बहोत होई सो वैष्णवके सम्बन्ध करि अङ्गीकार करनके लिये. काहेतें ? बरसके बरस सुन्दर दगला पठावते तो सङ्कोचमें ताप भयो. जो द्रव्य भये सेवा न करेगो तो ताप कहां ते होयगो ? तातें सेवा करिवे वारो दैवी जीव होई तो द्रव्यमें हू बने. और सङ्कोच हू में बने, यह जतायो. तातें त्रिपुरदासकी वार्ताको पार नाहीं है. इनने भाव हृदयमें राख्यो, काहूके आगें प्रकास नाहीं किये. तातें स्वरूप - सेवा नाहीं पधराई. मनहि करि मानसीमें अष्ट प्रहर मगन रहते. संयोग रस ही को अनुभव किये. लीला हू में इनकों संयोग रस है. श्रीठाकुरजी सम्बन्धिनी सखी है. ....वैष्णव ॥२३॥

सो त्रिपुरदासकी वार्ताको पार नाहीं. कहां तांई कहिये ?

२९-पूरनमल जेंबल क्षत्री

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके सेवक, पूरनमल, जेंबल क्षत्री, अम्बालयमें रहते, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ये लीलामें ललिताजीकी सखी है. इनको नाम 'चित्रलेखा' है. श्रीस्वामिनीजीकी कुञ्ज रचना, तामें नाना प्रकारके चित्र करत हैं. सो अम्बालयमें एक क्षत्रीके घर जन्में. सो पूरनमलको पिता हथियार बांधिके चाकरी करतो. और पूरनमलकों एक जोहरीको सङ्ग भयो. सो जवाहरको कसब सीखें. सो बरस बीसके पूरनमल भये. तब माता पिताकी देह छूटी. पूरनमलको ब्याह भयो सो स्त्री साधारन मिली. और पूरनमलको मन भगवानमें बालपनेसों. सो जहां तहां कथा वार्ता सुने. मर्यादाकी रीति चलें. स्त्रीको मन ठाकुरजीमें न देख्यो. तब अपने घरमें न्यारी जगा करि दीनि. चार रुपैयाको महिना करि दियो. द्रव्य बहोत हतो, सो मनुष्यके हाथ स्त्रीकों खरच पठाय देते. आपु वासों बोलते नाहीं. वैराग्य हू दृढ़ हतो.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो इन पूरनमलकी गांठिमें द्रव्य बहोत हतो. सो एक समय रात्रिकों पूरनमलकों दैवी जीव जानि श्रीगोवर्द्धनधर स्वप्नमें कहे, जो ब्रजमें गोवर्धन पर्वत है. यहां हम प्रगट भये हैं. सो तू आयकें हमारो मन्दिर समराव. और श्रीआचार्यजीको सेवक होउ.

तब पूरनमल जागिकें सवेरे भये सगरो द्रव्य भेलो करि ब्रजमें गोवर्द्धनधरके आइ दरसन किये. पाछें रामदास भीतरियासों पूछें, जो मोकों श्रीनाथजीनें मन्दिर संवराइवेकी आज्ञा दीनी है, सों मैं आयो हूं. तब रामदास सदू पाण्डे सब कहें, जो श्रीनाथजीतो श्रीआचार्यजीके ठाकुर हैं. सो अब दोय - चारि दिनमें श्रीआचार्यजी पधारिवे वारे हैं. तब उनसों पूछिके उनकी आज्ञा होइ तो मन्दिर संवराऊ. पाछें श्रीआचार्यजी पधारे. तब पूरनमलने दण्डौत् करि बिनती करी, जो महाराज ! मोकों सेवक करिये. और श्रीनाथजी मन्दिर संवरायवेकी आज्ञा करी है. सो आपु आज्ञा देउ तो मैं संवराउ. तब श्रीआचार्यजी पूरनमलकों नाम निवेदन कराय कहे, आगरे तें कारीगर बुलावो. सो पूरनमलने कारीगर बुलाये. तब श्रीआचार्यजी वासों कहे, मन्दिरको नकसा करि ल्यावो. तब कारीगरने मन्दिरको नकसा सिखरबन्द कियो. धुजा कलस सहित. तब श्रीआचार्यजी कारीगरसों कहे, हमारे ठाकुरको मन्दिर सिखर बन्द धुजा, कलसको नाहीं. नन्दराइजीके घरकी नांई करो. तब कारीगरने दूसरी बेर घरकी नांई कियो. तब श्रीआचार्यजीके हस्तमें नकसाको कागद आयो ! तब उही सिखरबन्द धूजा कलस सहित. तब श्रीआचार्यजी कहें, सिखरबन्द क्यों किये ? तब कारीगरने कही, महाराज ! हम तो घरकी नांई किये हते. सो अब सिखरबन्द धुजा कलस भयो ताको कारन तो हम जानत नाहीं. तब श्रीआचार्यजी कहें, हम बैठे हैं, हमारे आगे नकसा तैयार करो. तब कारीगरने घरकी नांई जैसे श्रीआचार्यजी कहे ता रीतिसों कियो. जब नकसा तैयार भयो तब उही सिखरबन्द धुजा कलस चक्र व्है गयो. तब श्रीआचार्यजी जाने, जो श्रीठाकुरजीकी इच्छा यह है, जो जगतमें पूजाय बहोत जीव उद्धार करेंगे. सो देवालयकी रीति यहां राखनो उचित हैं. तब श्रीआचार्यजी गिरिराजजीसों पूछे, जो प्रभु - इच्छा तुम्हारे ऊपर मन्दिर बनाइवेकी है. सो मन्दिर बनेगो तब लौकिक रीतिसों तुमकों श्रम बहोत होयगो. श्रीगोवर्द्धनजी कहें, हमकों परमसुख है. हमारे ऊपर हमारे प्रभुके लिये, जो करें ता पर मैं प्रसन्न हों. तातें सुख तें मन्दिरके लिये लौकिक रीति सब करो. मोकों कछू दुःख नाहीं.

भावप्रकाश : ताहींते, पाछें श्रीगुसांईजी (हू) वैष्णवकों सेवा दरसनार्थ गोवर्द्धनधर पर चढ़न देते. और जहां तहां बिना सामग्री, सेवा बिना, चढ़नकी आज्ञा नाहीं.

तब श्रीआचार्यजी पूरनमलकों आज्ञा दीनी, बेगे मन्दिर संवरावो. सो मन्दिरकी नींव खोदी. सो नींव भरि गई, इतनेमें पूरनमलको

द्रव्य सब निघट गयो. तब पूरनमल कमायवेकों गये.

भावप्रकाश : सो द्रव्य घट्यो ताको अभिप्राय यह है. जो पूरनमलके पिताको कमायो द्रव्य हतो. सो पिताके मरे पुत्रकी सत्ता होइ. तातें पूरनमलकी सत्ता जानिके श्रीनाथजी अङ्गीकार किये. परन्तु लौकिक मनोरथ करि पिता द्रव्य कमायो हतो. तातें कार्य सिद्ध न भयो. और जो यही द्रव्यसों मन्दिर बनें तो वित्तजा सेवा पूरनमलकी सिद्धि न होई. ताएं द्रव्य घट्यो. तब पूरनमल मन्दिरकी सेवा निमित्त कमायवेकों गये. यामे यह जताये, वैष्णवकों व्यौपार करनो तो भगवद्सेवा. गुरूसेवा और वैष्णव सेवाको मनोर्थ करि करनो. तब ही द्रव्य ते सेवा सिद्ध होइ. तब वित्तजा सेवा कहिये.

ता पाछें पूरनमल गयो तब और वैष्णव राजसी कितनेन कही, जो आज्ञा होय तो हम मन्दिर संवराये. तब श्रीआचार्यजी कहें पूरनमल आयके संवरावेगो.

भावप्रकाश : सो याहीतें. जो प्रभुने पूरनमलकों मन्दिर संवराइवेकी आज्ञा दई हैं. सो पूरनमलको मनोरथ सिद्ध करावनो है.

ताछें पूरनमल जवाहरको कसब करि थोड़े दिनमें बहोत कमायकें आयें.

भावप्रकाश : यामें वैष्णवकों यह जताये, जो कछू सेवा सम्बन्धी मनोरथ करि व्यौपार करिये. और कार्य सिद्ध होनहार न होई तो व्यौपार हू सिद्ध न होई. तब वैष्णव सब भगवद् इच्छा माने. हरख सोक न करें. प्रभुकों जितनो करनो होइ तितनो सहज ही में सिद्ध होइ.

सो द्रव्य लेके पूरनमल आये. मन्दिर सिद्ध कराये. तब श्रीआचार्यजी आछो मुहूरत देखिकें श्रीगोवर्द्धनधरकों मन्दिरमें पधराये. अक्षतृतीयाके दिन. तब पूरनमलने बहोत द्रव्य खरच कियो. आभूषन वस्त्र सामग्री भेट आदि. तब श्रीआचार्यजी प्रसन्न होइकें पूरनमलसों कहें. जो तेरो मनोरथ होइ सो राखे मति. सब करियो. तब पूरनमलनें श्रीआचार्यजीसों बिनती करी, महाराजाधिराज ! मेरो यह मनोरथ है,

जो अपने हाथसों अति सुगन्धको अरगजा श्रीअङ्गमें समर्पो. तब श्रीआचार्यजी कहें, सुखेन मनोरथ करो. तब पूरनमलने अत्यन्त सुगन्धको अरगजा सिद्ध करिकें सर्वाङ्गमें लगाये. बहोत आनन्द पाये. तब श्रीआचार्यजी श्रीअङ्गको प्रसादी उपरना पूरनमलकों उढाये. पाछें द्रव्य बहोत बच्यो. सो पूरनमलने श्रीआचार्यजीकी भेट कियो.

भावप्रकाश : सो पूरनमलको मनोरथ यातें भयो. जो पूरनमलकों लीला में 'चित्रलेखा' सखी अपने स्वरूपको ज्ञान भयो. तब श्रीआचार्यजीकों प्रसन्न जानि मनमें बिचार कियो, जो मैं मन्दिर संवरायो सो सेवा तो लीलाहूमें मिलत हैं. कुञ्ज संवारिवेकी. परन्तु श्रीआचार्यजी मुख्य श्रीस्वामिनी रूप हैं. तिनकी कृपा तें कछू श्रीअङ्गकी सेवा करि लेउ, यह विचारी. अरगजा लेपनकी सेवा श्रीस्वामिनीजी अपने हाथसों प्रभुकों समर्पत हैं, संयोग समय. और विप्रयोग समय ललिताजी श्रीठाकुरजीकों समर्पत है. काहेतें ? अरगजा श्रीस्वामिनीजीके श्रीअङ्गके भावसों है. सो श्रीस्वामिनीजीकी कृपा बिना यह सेवा कहां मिले ? सो श्रीआचार्यजीकी प्रसन्नतासों पूरनमलको मनोरथ सिद्ध भयो. और श्रीआचार्यजी प्रसादी उपरेना अपनो उढ़ाये. तामें सगरो सरीर पूरनमलको अलौकिक मानसी सेवा योग्य व्है गयो. तातें पूरनमल भगवद्सेवा नाहीं पधराई. मानसीमें मगन भये. मन्दिर संवराये तामें वित्तजा सेवा सिद्ध भई. यामें यह जताये, जो भाव करिकें एकहि सेवामें फल भयो. एक दिन अरगजा लगाये तन करि. धन करि मन्दिर संवराये. तातें भाव बिना जन्म भरि तनुजा वित्तजा सेवा करत हैं परन्तु मानसी फल रूप पावत नाहीं. सो प्रीतिसों एकही बारमें फल पाये. तातें प्रीति सर्वोपरि फलकों सिद्ध करत है. यह जताये.

पाछें बरसके बरस श्रीगुसांईजी पूरनमलकों प्रसादी दगला पठावते. ....वार्ता।।२४।।

भावप्रकाश : सो दगला श्रीगोवर्धनको स्वरूप है. सो पूरनमल पास आपुही पधारते. सो पूरनमलके हृदयमें अगाध भाव है. अष्टप्रहर लीलामें मगन रहत हैं. तातें इनकी वार्ताको भाव कहां ताई कहिये. एसे भगवदीय पूरनमल है. जो श्रीनाथजी आप ही प्रमय बल तें घरमें दरसन दे मन्दिर संवरायबेकी आज्ञा दिये.

३०-जादवेन्द्रदास कुम्हार

अब श्रीआचार्यमहाप्रभुन के सेवक, जादवेन्द्रदास कुम्हार, महावनमें रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ये लीलामें नन्दरायजीकी गाय हुती. तिनमें बिजार हे. इनको नाम 'मदोन्मता' सब कोऊ कहते. कोऊ बिजार इनके सङ्ग आय न सकतो. श्रीठाकुरजी बहोत इनकों खवायो हैं. जमुनाजीमें न्हावायो हैं. सो महावनमें एक कुम्हारकें प्रगटे. सो नारायनदास ब्रह्मचारीके घर मृत्तिकाके पात्र ल्यावते. सो नारायनदास दैवी जानि जादवेन्द्रदासकों एक दिन महाप्रसाद लिवायो. तब जादवेन्द्रदासकी बुद्धि निर्मल व्है गई. सो नारायनदाससों कहें. मोको श्रीआचार्यजीको सेवक करावो. तब नारायनदास कहे, तुम्हारी ज्ञाति कुम्हार हैं. सो कुम्हारको सङ्ग तुम तें छूटे तो सेवक करावें. तब जादवेन्द्रदासनें कही, यह में पहिले ही मनमें धारन करि लियो है. जो आजु पाछें मा - बापके हाथसों न खानो, न जल लेनो. श्रीआचार्यजीके वैष्णवके हाथकों लेउंगो. परन्तु अब अपुने घरकी मुह न देखोंगो. यह सुनिके नारायनदास प्रसन्न होयकें कहें, तु हमारे घरमें रहीयो. श्रीआचार्यजी पधारेंगे तब सेवक हुजियो. सो नारायनदासके घर हीमें रहते. लकड़ी छाना ले आवते. पाछें श्रीआचार्यजी महावन पधारें. तब नारायनदासके घर उतरे. तब नारायनदासनें बिनती करिकें जादवेन्द्रदासकों सेवक कराये. पाछें, आछें श्रीआचार्यजीके आछे सेवक भये.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो ये जादवेन्द्रदास श्रीआचार्यजीके परम कृपापात्र भगवदीय हते. सो जब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु तथा श्रीगुसांईजी आपु परदेसकों पधारते तब ये परदेस सङ्ग रहते. तब जादवेन्द्रदास इतनी वस्तु ले चलते. एक कनात एक हडवाई, दोई चारि दिनको सीधो. एक छोटी रावटी. और मारगमें वैष्णव हार चलते सो मंजिल पर जाय सगरी परचारगी करते. रात्रिकों चौकी पहरा देते. एसी सेवा करते.

वार्ताप्रसङ्ग २ : और एक समय श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल हते. सो एक दिन पहर डेढ़ रात्रि गई हती. फागुन वदि ७ को दिन हतो. ता समय श्रीगुसांईजीनें श्रीमुखसों कही, जो या समय मन्दिरकी नीम खोदी जाय तो भलो दृढ़ होय. एसो मुहूर्त है. यह कहिकें आपु तो पोढ़े.

और जादवेन्द्रदास तत्काल नीम खोदी. सो दोय प्रहरमें सब खोदिकें माटीको ढेर कर्यो. पाछें श्रीगुसाईजी जागे तब देखें. तब कहें, यह माटी कैसी है ? तब वैष्णवनें कही, जादवेन्द्रदासने सब खोदी है. तब श्रीगुसांईजी जादवेन्द्रदाससों पूछे यह तुमने खोदी है ? तब जादवेन्ददासने कही जो आप श्रीमुखसों कही, वाही समय मन्दिरको नीम खोदी है. पाछें राजमजूर कारीगरने एक महिनामें नीम भरी. इतनी खोदी. ऐसे सामर्थ्यवान हते. पाछें मन्दिर बन्यो. श्रीनवनीतप्रियजी आदि बिराजे. श्रीगुसांईजी जादवेन्द्रदासके ऊपर बहोत प्रसन्न भये.

वार्ताप्रसङ्ग ३ : और श्रीनाथजीद्वार जलको कलालौ जानि रुद्रकुण्डके पास कूंआ अपने हाथसों खोद्यो ताकी माटी पकाय पक्को बांधे. परन्तु जल खारी निकस्यो. तब जादवेन्द्रदास गङ्गाजी गये. तहां जाये हाथसों गङ्गाजीमें जाय तर्पन करन लागे. और विनती कीनी, जो एसो जल मिष्ट करो. सो जब जल मिष्ट भयो जाने तब निकसि आये. ...वार्ता।।२५।।

भावप्रकाश : याको कारन यह, ओ सगरे जगतमें उत्तम गङ्गाजल निर्दोष हैं. तातें श्रीनाथजीकी सेवामें निर्दोष पदार्थ विनियोग होय. तातें गङ्गाजी गये. सो जादवेन्द्रदास श्रीआचार्यजीके एसे कृपापात्र भगवदीय हे. सो इनकी वार्ता कहां तांइ कहिये. ... ।।वैष्णव २५।।

३१-गुसांइदास सास्वत

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, गुसांइदास सास्वत, मथुरामें रहते, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं. -

भावप्रकाश : ये लीलामें गिरिराज पास गोविन्दकुण्ड पर कदम्बको वृक्ष है तहांके सूवा है. सो वेणुनाद श्रीठाकुरजी करते तब नादरस अधरामृत पान करते. सो ये गुसांईदास पूरबमें सारस्वत ब्राह्मनके घर जन्में. सो बरस चौदहके भये. तब एक ब्राह्मनके मुख तें श्रीभागवतकी पारायन और भगवद्‌गीता सुने. सो विरक्त होय तीरथ करन लागें. सो तीरथ करत चौबीस बरसके भये. सो मथुरामें आय निकसे. तब विश्रान्त घाट पर श्रीआचार्यजी सन्ध्यावन्दन करत हते.

सो दरसन करि गुंसाईदासके मनमें आई, जो मैं अकेलो तीरथ बहोत कियो. परन्तु अब इनकी सरन होंउ. तब श्रीआचार्यजीसों बिनती किये, महाराज ! मोकों सेवक करो. तब श्रीआचार्यजी कहे, तेरो मन तीरथ करनमें है सो सेवक होइके कहां करेगो ? तब गुसांइदासने कही. महाराज ! आप जो आज्ञा करोगे सो करूंगो. अब तीरथ करत - करत हार्यो. अब मथुरामें एक ठौर करिकें रहोंगो. तब श्रीआचार्यजी गुसांईदासकों नाम निवेदन कराये. पाछें कहे, भगवद् सेवा करो. तब कहे महाराज ! आप श्रीठाकुरजी पधराय देउ तिनकी सेवा करूं. सो एक वैरागी पास चतुर्भुज स्याम स्वरूप श्रीठाकुरजीको हतो. सो उह वैरागी श्रीआचार्यजीकों स्वरूप दें द्वारिकाकों गये. तब श्रीआचार्यजी पञ्चामृत स्नान कराय गुसांईदासके माथे पधराये.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो गुसांईदास मथुरामें एक घर ले तहां सेवा करन लागे. सो श्रीठाकुरजी गुसांईदासकों सानुभावता जतावन लागे. सो एक वैष्णव गुसांईदासके घर श्रीठाकुरजीको नित्य दरसन करिवेकों आवें. सो मनमें श्रीठाकुरजीसों प्रार्थना करें, जो महाराज ! मेरे माथे पधारो तो मैं सेवा करुं. या प्रकार मनमें नित्य बिनती करें. तब गुसांईदास उह वैष्णवसों कहें, जो तुम मेरे पास रहो तो सेवा करो. तब उह वैष्णव ना कही. वाके मनमें यह जो अकेलो स्वतन्त्र सेवाकी कहे. तातें उह वैष्णव मान्यो नाहीं. पाछें कछुक दिनमें श्रीठाकुरजी गुसांईदासको प्रेर्यो. तब गुसांईदास उह वैष्णवसों कहे, अब तुम श्रीठाकुरजीकों पधरावो, सेवा करो. तब उह वैष्णवनें कही, तुम कहा करोगे ? तब गुसाईदासने कही, मैं बद्रीकाश्रम जाउंगो. तहां मेरी देह छूटेगी. तब उह वैष्णवने कही, कदाचित् देह भगवद् इच्छा तें न छूटें, फेर आवो तब ? प्रभुकी गति जानि न जाय. तब गुसांईदासनें कही, प्रभु ऐसी न करेंगे. और कदाचित् मैं आऊंगो तो तुम्हारे द्वारें रहूंगो. श्रीठाकुरजी तो तुम्हारे ऊपर प्रसन्न हैं. मैं न पधराऊंगो. एक दरसन करि लेऊंगो. तब उह वैष्णवने श्रीठाकुरजीकों पधराय भली भांति सेवा करन लाग्यो. और गुसांईदास बद्रीकाश्रम गये. सो विरह करि देह छोड़ी. सो गुसांईदास श्रीआचार्यजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे.

भावप्रकाश : सो देह छोड़ि लीलामें सूवा भये.

पाछें कछुक दिनमें गुसांईदासकी देह छूटनके समाचार उह वैष्णवकों आये. तब कह्यो, श्रीआचार्यजीके वैष्णव झूठ न बोलें, देह

छोड़ी. पाछें मन लगायकें सेवा करन लाग्यो. ....वार्ता ।।२६।।

भावप्रकाश : सो गुसांईदास कछू दिन भगवद् सेवा करी. तब अपने स्वरूपको ज्ञान भयो. तब श्रीठाकुरजी जताये. जो अब तू या वैष्णवके माथे पधराय बद्रिकाश्रम जा. तहां विरह करि देह छोड़ि लीलामें पंछी होइगो. तेरो साधन सिद्ध व्है चुक्यो. तब गुसांईदास गये. और उह वैष्णव श्रीचन्द्रावलिजीकी सखी लीलामें हती. 'चतुरा' इनको नाम हतो. सो मथुरामें एक सनौढ़ियाके घर जन्म पायो. सो माता पिता स्त्री सब मरि गये. अकेलो रह्यो. सो श्रीआचार्यजीको सेवक हतो. सो भगवद् सेवाको ताप बहोत. सो एक दिन श्रीठाकुरजी स्वप्नमें कहे, गुसांईदासके ठाकुरजीको नित्य दरसन करियो. सो श्रीठाकुर तेरे माथे पधरेंगे. उह वैष्णव आये गुसांईदासके घर नित्य दरसन करतो. सो श्रीठाकुरजी कृपा करिकें पधारे तातें मूलमें जेसो जीव होय ताही प्रकारसों साधन बनेते फल होई. .... ।।वैष्णव २६।।

३२-माधवभटट

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, माधवभटट कास्मीरी, कास्मीरमें रहते, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ये माधवभट्ट लीलामें जसोदाजीकी दासी है. सो परम चतुर हें. श्रीठाकुरजीकी सैया बिछावनो, जल ले आवनो. कुमारि राधा सहचरीके सङ्गमें है. 'रत्ना' इनको नाम है.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो माधवभट्ट कास्मीरमें एक ब्राह्मनके घर प्रगटे. सो प्रथम माधवभटट केसवभटटके सेवक भये. सो केसवभटट कास्मीरमें कथा कहतें. सो केसवभटट श्रीआचार्यजीके पास मिलनकों आये. सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु श्रीसुबोधिनीजी कहते. सो केसवभभटट सुननकों आवते. सो विद्यामद तें उंचे आसन पर बैठकै सुनते. और माधवभटट मन लगाय दास भावसों सुनते. पाछें जब श्रीआचार्यजी कथा कहि चुकते तब माधवभटट श्रीआचार्यजीके वैष्णवनके पास जाय बैठते. सो वैष्णवनके मुख तें वार्ता सुनते. सो एक

दिन केशवभटटने माधवभटटसों कह्यो, जो मैं कथा कहेत हों, सो तू सुनन नाही आवत है. और हांसी मसखरी वार्ता क्यों सुनत है ? तब माधवभटटने कही तुमहारी कथा तें श्रीआचार्यजीके सेवकनकी हांसी मसखरी वार्ता आछी लागत हैं. तातें उहां जात हों. यह माधवभटटकी बात सुनिकें केसवभटट मनमें बिचार कियो. अब यह हमारे कामको नाहीं. तातें श्रीआचार्यजीकों भेट करूंगो. पाछें कछुक दिनमें केसवभटट घर चलन लागे. तब श्रीआचार्यजीसों कहें, मै आपुकी कथा सुनी है. तातें यह माधवभटटकों आपकी भेट करत हों. यह मेरे कामको नाहीं है. सो तब माधवभटट श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके पास रहें. पाछें केसवभटट बिदा होय चले गये. तब एक वैष्णवने श्रीआचार्यजीसों प्रश्न कियो, जो महाराज ! आपके श्रीमुखसों कथा माधवभटटने हू सुनी और केसवभटटने हू सुनी. सो माधवभटटकों बोध भयो और केसवभटटकों क्यों नाही भयो ? ताको कारन कहा ? तब श्रीआचार्यजी कहें, जो केसवभटटने बराबरि बैठिकें कथा सुनी तासों बोध न भयो. और माधवभटट दासभावसों मन लगाय के सुन्यो. तातें याकों बोध भयो.

भावप्रकाश : यामें यह जतायो, कथा श्रवनमें दासभाव होय तो फल रूप होई. अहङ्कारीकों कहें, तोहू सुनेको फल न होइ. यह जताये. भूलमें माधवभटट लीला सम्बन्धी हैं. तातें श्रीआचार्यजीकी बानी फलित भई. और केसवभटट लीला सम्बन्धी नाहीं है. मर्यादामार्गीय है. स्वर्ग तथा मुक्तिके अधिकारी हैं. तातें श्रीआचार्यजीकी बानी फलित न भई. पाछें केसवभटट बिदा होइकें देस कों गये.

और माधवभटटकों श्रीआचार्यजीने नाम निवेदन करायो. तब माधवभटटने बिनती कीनी, महाराज ! अब हमकों कहा कर्तव्य है ? तब श्रीआचार्यजीने कही, तुम भगवद् सेवा करो. तब माधवभटटने कही, महाराज ! लालाजीको स्वरूप मेरे बाप दादासों सदा रहे है. सो स्वरूप सदा मेरे पास राखत हों. तुलसी, चन्दन चढाई धूप दीप करि नैवेध धरि या प्रकार आह्वाहन विसर्जन पूजा मार्ग रीति सदा करी है. अब आज्ञा देहु ता प्रकार करूं. तब श्रीआचार्यजी कहे, जा स्वरूप ले आउ. तब माधवभटट जाइके ले आये. तब श्रीआचार्यजी पञ्चामृत स्नान कराय माधवभटटके माथे पधराये. सो माधवभटट कछूक दिन पुष्टिमार्गकी रीति सिखकें मांगि कास्मीर अपने घर प्रीति पूर्वक सेवा करन लागे. सो कछूक दिनमें श्रीठाकुरजी सानुभावता जतावन लागे.

वार्ताप्रसङ्ग २ : और जा गाममें माधवभटट रहते, ता गाममें एक बड़ो गृहस्थ रहतो. सो वाको एक बेटा हतो सो मरि गयो. तब उह बहुत दुःखसों विलाप करन लाग्यो. और कह्यो, जो याकों कोऊ जिवावे तो मैं जीउं. नाहीं तो याके सङ्ग मैं हूं मरूंगो. या प्रकार कहे, गिरि - गिरि परें, धरती पर लोटे. सो एक वैष्णव और आय निकस्यो. उह गृहस्थकी दसा देखिकें कह्यो, जो गाममें माधवभटट सारिखे भगवदीय हैं तहां एसो दुःख क्यों होई ? सो यह बात उह गृहस्थ सुनिके माधवभटट पास दोर्यो आयो. दण्डौत् करिकें बहोत विलाप करन लाग्यो. और कह्यो तुम बड़े महापुरुष हो. मेरो बेटा मरि गयो. सो ताकों जिवाय देउ. नाहीं तो मैं हू वाके सङ्ग मरूंगो. या प्रकार बहोत दुःखी देखिके माधवभटटकों दया आई. सो माधवभटट एक श्लोक करिकें श्रीठाकुरके आगें धर्यो. सो श्लोक -

दयालोरसमर्थस्य दुःखायैव दयालुता ।
विश्वोसद्धारणक्षश्च शास्त्रेष्वेकस्य शोभना ।

भावप्रकाश : याको अर्थ यह है, जो तुम दयाल हो. सो कैसे दयालु हो ? असमर्थ पर दयालता तुमहि करत हो. काहेतें ? दयालताको लक्षन यह है, जो दुःखी पर दयालता प्रगट होइ सोइ दयालता है. सो एसे एक तुम हो. और विश्वोद्वारनमें चतुर एक तुमही हो. सगरे शास्त्रमें तुमहीकों गाये हैं. यह दयालता तुमहिकों सोहत हैं. तातें दुःखको नास करो.

यह श्लोक सुनिकें श्रीठाकुरजी कहें, यह कितनीक बात है ? तुमकों दया आई है तो जाय वासों कहो, तेरो बेटा जीयो. तब माधवभटट बाहर आयकें कहें, जो तेरो बेटा जीयो. तब उह गृहस्थके मनमें आइ नहीं, (क्यों) जो कछू औषध दिये नाहीं. मुखसों कहे दिये हैं. इतनेमें वा गृहस्थके घरके मनुष्यने आयके कह्यो, तुमारो बेटा जीयो, बधाई देऊ ! तब वह दौरिकें घरमें जाइ देखें तो बेटा जीयो बधाई करी. (पाछें) कह्यो, माधवभटट बड़े भगवदीय है. जिनके बचन एसे एसे है. जो जीयो कहत मात्र बेटा जीयो. पाछें रात्रिकों माधवभटट अपने मनमें बिचार कियो, जो यह कार्य मैं बहोत अनुचित कियो. संसारमें अनेक दुःखी सुखी लोग हैं. तातें अब या गाममें रहिवेको धर्म नाहीं है. सो अर्धरात्रि समय श्रीठाकुरजीकों सम्पुटमें पधरायकें चले. सो अड़ेलमें श्रीआचार्यजीके पास आय रहे. तातें

वैष्णवकों दयाहू विचारिकें करनो. लौकिकमें माहात्म्य प्रगट करे तें गाम छोडे तो धर्म रह्यो. नाहीं तो पाछें बहोत दुःख होतो तातें लौकिककी नाई रहे तो धर्म रहे. श्रीठाकुरजीकों दुःख न होई. वैष्णवकों हू दुःख न होई. माधवभटट सर्व सामर्थवान हते. परन्तु तोऊ भाजनो पर्यो. तातें वैष्णवकों विचारिके काम करनो.

वार्ताप्रसङ्ग ३ : और माधवभटटकों लिखिवेको बड़ो अभ्यास हतो. सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु श्रीभागवतकी टीका श्रीसुबोधिनीजी करीं. सों माधवभटट लिखित जाय. जहां माधवभटट न समझते तहां लेखन छोड़ि बैठि रहतें. तब श्रीआचार्यजी माधवभटटकों समुझावते. तब लिखिते. और माधवभटट श्रीआचार्यजीके आगे ऐसे बैठते, जो पांव न दीसे.

भावप्रकाश : काहेतें ? शास्त्रमें कहे हैं बड़ेनके आगे सिद्ध आसन हू न बैठनो. और पांव न दीसे एसे बैठनो. सो दासभावसों बैठते.

वार्ताप्रसङ्ग ४ : और एक समें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु परदेस हते. तब माधवभटट सङ्ग है. श्रीसुबोधिनी लिखते. सो एक दिन पिछली रात्रिकों माधवभटट लघुबाधाकों उठे. तब चोरनने तीर मार्यो. सो मादवभटटकों लाग्यो. सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुको नाम लियो. और नाम लेतहि मादवभटटकी देह छूटी. तब वैष्णवननें इनकी देहको संस्कार कियो. पाछें एक वैष्णवने श्रीआचार्यजीसों बिनती करी, महाराज ! माधवभटट सारिखे भगवदीयकों या प्रकार मृत्यु क्यों भई ? तब श्रीआचार्यजी श्रीमुखसों कहे, माधवभटटके परलोकमें तो कछू हानी है नाहीं. परन्तु इनको एक भगवद् अपराध पर्यो हतो. ताको दण्ड पायो. तब वैष्णवनने पूछ्यो, जो महाराज ! ऐसो कहा अपराध पर्यो हतो ? सो तब श्रीआचार्यजी आज्ञा करें, जो ये पहले अपने सेव्य श्रीठाकुरजीकी सैया फूलनकी बिछावते. सो तब एक दिन फूलनमें अनजाने सुई रहि गई. सो मादवभटटने जानी नाहीं. सो तब वह सुई रहि गई. सो माधवभटटने जानी नाहीं. सो तब वह सुई श्रीठाकुरजीके श्रीअङ्गमें स्पर्स भई. सो ता अपराध तें यह ऐसो भयो है. परि याकी देह सावधानतासों भगवद् नाम लेत् छूटी है, तातें याकों कछू बाधक नाहीं है. ये श्रीनाथजीके चरणारविन्द पाये अब कछू कर्तव्यता रही नाहीं.

भावप्रकाश : यामें यह जताये, जो पुष्टिमार्गमें सैया पर फूल बिछाइवेकी रीति श्रीआचार्यजी नाहीं प्रगट किये. (क्यों) जो ये लौकिक फूल हैं. सो इनकी दाण्डी कठिन हैं. और क्षन एकमें कुम्हलाइ जाय, वस्त्रनमें फूलनके दाग परें. तातें न्यारो फूल धर्यो रहे. प्रभुकों सुगन्ध मात्र आवे. और लीलामें तो फूल स्वरूपात्मक हैं. सो परम कोमल हैं. तातें फूलनकी सैया बनावत हैं. सो माधवभटट श्रीआचार्यजीकी रीति छोड़ि लीलामें फूलनकी सैयाको वर्णन जानि माधवभटट सैया भरें. सों प्रभुको आछी न लागी. तातें सुई रह गई. माधवभटटकों दण्ड दे सगरे वैष्णवको सिक्षा दिये. जो श्रीआचार्यजी (ने) यह पुष्टिमारगमें रीति प्रगट करी हैं, और ग्रन्थनमें जा प्रकार आज्ञा करी हैं. ताही प्रकार सेवा करनी. और चलनो. और अपने मनते कल्पित प्रकार करें तो श्रीगोवर्द्धनधरकों भावे नाहीं. जदपि लीलामें वर्णन हू कोई. तऊ अपने मारगमें जितनी आज्ञा श्रीआचार्यजी श्रीगुसांईजीकी होय तितनो ही कार्य करे. तो प्रभु बेगे प्रसन्न होई. अथवा माधवभटट प्रथम मर्यादा रीतिसों श्रीठाकुरजीकी पूजा करते. सो मर्यादामें फूलनकी सैया करत हे. सो तबको अपराध है. ताको दण्ड भयो. पाछें लीलामें अङ्गीकार भये. यह जताये. श्रीआचार्यजीकी सरनि तें जनम जनमको अपराध होई सो याही जनममें भोग लेइ. पाछें बाधक न रहे. एसो श्रीआचार्यजीकी सरनिको प्रताप है. सो - सर्व अपराध भोगि लीलामें प्राप्त होई. इहांई भोग छूटे यह सरनको प्रताप दिखाये. यह भाव है.

सो माधवभटटकी देह छूटि. तब श्रीआचार्यजी कहे अब श्रीसुबोधिनीजी रही. भगवद् इच्छा इतनी प्रगट करनकी हती, सो माधवभटटकी वार्ता कहां ताई. कहिये. ....वार्ता ।।२७।।

भावप्रकाश : यामें यह जताये, श्रीठाकुरजीकों पास बुलावने हते. सो दोय आज्ञा आगे भई, सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु न माने. तब माधवभटटकों यह अपराधके मिष लीलामें बुलाई तिसरी आज्ञा दिनी. तब श्रीआचार्यजी 'अन्तःकरण प्रबोध' ग्रन्थ करि अन्तर्धान लीला किये. यहू कारन है.

३३-गोपालदास

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक गोपालदास, बांसबाडेके वासी, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ये गोपालदास श्रीयमुनाजीकी सखी है. 'रसप्रकासिका' इनको नाम हैं. ये लीलामें ऐसी वार्ता भक्तनसों करे जो सबन के मनमें रसको प्रकास होत जाया. सो गोपालदास बांसबाडेमेंके क्षत्री हतो वाके घर प्रगट भये. सो उह क्षत्री वैश्य वृत्ति करतो. और सराफिकी दुकान हू करतो. सो दासजननमें सो उह क्षत्रीके बेटा चारि आगें भय सो मरि जाते. पांचमें गोपालदास भये. तब क्षत्रीने मानता करी, जो यह बेटा जीवे ता तीर्थराज प्रयागमें याको मुण्डन करोंगो. सो गोपालदास बरस पांचके भये. परन्तु वह क्षत्रीको व्योपारमें मन बहोत. सो प्रयाग जाय न सके. सो ऐसे करत गोपालदास बरस ग्यारहके भये. तब क्षत्रीने एक गाड़ी करि अपुनो गुमास्ता चाकर सङ्ग कये. और कहे, गोपालदासको प्रयागमें मुण्डन करि बेंगि ले आवोगे तो गोपालदासको विवाह करिये. सो या प्रकार गोपालदास बांसवाडा तें चलें. तब प्रयागमें आय श्रीगङ्गाजी श्रीयमुनाजीको दरसन किये. सो दैवी हते. इनको अलौकिक दरसन भयो. तब गोपालदास उह गुमास्तासों कहे, मैं तो इहां बार न मुण्डाऊंगो. यह तीरथ क्षेत्र तें कोस पांच बाहर जाय मुंडाउंगो. कहा मोकों नरकमें डारोगे ? यह रसरूप जल तिनके मध्य बार डारूं ? जो गुमास्ताने बहुतेरो समुजायो, जो तुम्हारे पिताकी मानता है. और यह प्रयाग तीर्थमें मूण्ड मुण्डायेको बहुत फल है. तब गोपालदासने कही पिता मूर्ख है. जो ऐसी मानता करी. और मोकों तो फल ऐसो नाहीं चहिये. ब्राह्मननें तीरथमें दान लेवे के लिये ऐसे फल कहे हैं. मैं तो इहां कबहू न मुण्डाउंगो. सो गोपालदास प्रयागसों पांच कोस गङ्गापार जाय मुण्डन कराये. पाछें न्हायकें फेरि प्रयागमें आपु न्हाये. दान पुन्य किये. श्रीजमुनाजी श्रीगङ्गाजीकी पूजा दूध अरगजा माला चन्दनसों किये. पांच रात्रि रहे. श्रीआचार्यजी हू प्रयाग पधारे हते. सो गोपालदास नित्य पूजन त्रिवेनीको करते. सो पांचमें दिन श्रीआचार्यजी गोपालदासके पास आपहि स्नानकों पधारे. दैवी जीव जानि, कृपा करनकों. सो गोपालदास न्हात हते. तब श्रीआचार्यजी त्रिवेनीमें ते एक अञ्जलि जल भरिके गोपालदासके ऊपर डारि दिये. सो गोपालदासकों अपुने स्वरूपको ज्ञान भयो. और श्रीआचार्यजीके स्वरूपको ज्ञान भयो. तब गोपालदास जलहिमें माथो न्हवायो. दोऊ हाथ जोरिकें श्रीआचार्यजीसों बिनती किये, महाराज ! मैं बड़ो पापी हों. बहोत जन्म संसारमें भटक्यो ! अब मो पर कृपा करिये. तब श्रीआचार्यजी दैन्यता देखि गोपालदासकों जलहिमें नाम निवेदन कराये. मारगको सिद्धान्त हृदयमें स्थापन करि दिये. और गोपालदाससों कहे. तुम भगवद् सेवा करो तब गोपालदास बाहिर आय वस्त्र पहरें. और श्रीआचार्यजी न्हाय वस्त्र अपरसके पहिरि, मध्याह्नकी सन्ध्या करि. गोपालदाससों कहें, तू कहूंते भगवद् स्वरूप ले अड़ेल आईयो. यह कहि आपु तो अड़ेल पधारे. पाछें गोपालदास प्रयागमें न्योछावरि दे लालजी ले. अड़ेलमें आये, तब श्रीआचार्यजी श्रीठाकुरजीकों पञ्चामृत स्नान कराय गोपालदासके माथे पधराये. पाछे पांच दिन गोपालदास अड़ेलमें रहि पुष्टिमारगकी रीति सब सीखे. पाछे श्रीआचार्यजीसों बिदा होयके बांसवाड़ेमें अपने घर आये. तब गुमास्ताने गोपालदासके पितासों सब समाचार कहे. जो यह तुम्हारो लरिका प्रयागसों पांच कोस गङ्गापार जाय मुण्डन करायो. हम बहोत कहे मान्यो नाही. और वैष्णव होइ आयो है. तब गोपालदास पिताके पिताने कही भाई सो सही बोले मति.

काहेते. गोपालदासके ऊपर माता पिताका स्नेह बहोत हतो. जो यह कहू घर छोड़िके निकस जायगो. तातें गोपालदास सो कहे नाहीं. पाछें मा बापनें कही, भूखे होउगे. कछू खायो. तब गोपालदासने कही, मैं तो तुम्हारो जल न पीउंगो. तुम जाय श्रीआचार्यजी सेवक व्है आवो तो मेरे तुम्हारे बने नाहीतो मोको थोरी सी जगह न्यारी करि देउ. तामें में रहुंगो. तब पिताने कही. तेरो ब्याह करनो है, सो कैसे होंइगो ? तब गोपालदासने कही, अब या समय जगह तो करि देउ. पाछें, जो होइगी सो सही. अबही तो ब्याह नाहीं होत है. तब पिताने घरमें जगह कर दीनी. तहां गोपालदास जगह खासा करि, श्रीठाकुरजीकी रसोई करि, भोग धरि, महाप्रसाद लिये. पाछें श्रीठाकुरजीको मन्दिर संवराये. प्रीतिसों सेवा करन लागे. पाछे पितानें गोपालदासकी सगाई करी. सो ब्याह हू भयो. परन्तु सुसरारिमें घरमें, काहूके हाथको जल न लिये. पाछें गोपालदासने पितासों कही जो तुम श्रीआचार्यजीके सेवक होउ तो आछो है. नाहीं तो में स्त्रीकों सेवक कराय ल्याउं. तब माता पिताने कही, द्रव्य चहिये सो लेहू, स्त्रीकों सेवक करावो. और हमतो सेवक न होइंगे. तब गोपालदासने स्त्रीसों कही, जो तू सेवक होउ. माता पिताको ज्ञातिको खानपान छोड़े तो मेरे तेरे बनें. तब गोपालदास मनमें बिचारे, जो तुम श्रीआचार्यजीकी सेवकनी तो कराउं. जो उत्तम जीव होइगो तो आपुही सब धर्म सिद्धि होइगो. तब गाड़ी पर स्त्रीकों चढ़ाय बांसबाडा सो चले सो कछुक दिनमें प्रयाग आये. पाछें अड़ेलमें आय श्रीआचार्यजीसों दण्डौत् करि बिनती किये, महाराज ! मेरे माता - पिता तो सेवक न भये, में बहोत कहीं. ये स्त्रीकों सङ्ग ल्यायो ह. सो नाम निवेदन कराय कृपा करिये. तब श्रीआचार्यजी कहें, यह तेरी स्त्री पुष्टि जीव नाहीं है. तातें निवेदन मति करावें. यासों न बनेगो. यह जहां तहां खायगी. और नाम सुनाइ देहिंगे तेरे सम्बन्ध सो तेरे माता पिता स्त्रीको उद्धार होयगो. लीला सम्बन्ध न होइगो. तब गोपालदासने कही, कृपा करि नाम ही सुनाइये. तब श्रीआचार्यजीने गोपालदासकी स्त्रीकों नाम सुनाये. पाछें गोपालदास कछूक दिन श्रीआचार्यजीके पास रहिकै पाछें बिदा होई बांसबाडा अपने घर आये, भगवद् सेवा करन लागे.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो गोपालदासने अपने घरके दरवाजे पास मारगमें मिलिवेवारेके लिये एक विश्रामस्थल करि राखे. जो आवे सो वहां उतरे. सो गोपालदास बिचारे, जो गाममें तो ऐसो कोउ वैष्णव है नाहीं, जासों भगवद् सेवा वार्ता करिये. तातें विश्रामस्थल होइगो तो कोई वैष्णवसों मिलाप होयगो. यह मनोरथ बिचारि विश्रामस्थल किये.

भावप्रकाश : विश्रामस्थलकों धर्मसाला नाहीं कह्यो, सो यातें, जो धर्मसाला बनायेको पुन्य बहोत कहे हैं. और पुन्य फलको मनोरथ होय तो

पुष्टिमार्गीयकों यहू बाधक है.

सो मारग चलिवे वारे उहां आई उतरतें सो सांझको उह स्थलमें गोपालदास जातें. जो उतरे होंइ तिनसों पूछते. तामें कोई भूखो होई, तिनकों खाइवेकों देते. और कोई वैष्णव होइ तो उनकों अपुने घर ल्याई प्रीतिसों महाप्रसाद लिवावते. होय चारि दिन राखते. खरची न होइ ताकों खरची देते. कैसे करत एक दिन पद्मारावल सांचोरा ब्राह्मन आय निकसे. सो गोपालदासने उनसों पूछ्यो, तुम कौन हो, कहां तें आवत हो, कहां जाउगे ? तब पद्मारावलने कही, हम सांचोरो ब्राह्मन हैं. हमकों श्रीरनछोडजीके दरसन पर प्रीति हैं. सो हमारो जजमान मावजी पटेल उज्जैनमें हैं. सो उनसों खरची खूटत है तब फेर उज्जैन जाइ मावजी पटेलसों खरची ले द्वारिका जायके दरसन करत हैं. तब गोपालदास यह बचन पद्मारावलके सुनिकें दैवी जीव जानि बात चलाये. जो जैसी लगन श्रीरनछोडजीमें है ऐसी श्रीआचार्यजीमें होइ तो यह ब्राह्मनको काज होय जाय. यह विचारीकें गोपालदासनें पद्मारावलसों कह्यो, जो तुमसों श्रीरनछोडजी कबहू बोलत हैं ? बात करत हैं ? तब पद्मारावलनें गोपालदाससों कही, श्रीरनछोड़जी काहूसों बोलत हैं ? बात करत हैं ? सो हमकों बतावो ? तब गोपालदासने कह्यो, प्रयागके पास अड़ेलमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु बिराजत हैं. सो श्रीरनछोडजी प्रगट भये हैं. सो बोलत बतरात हैं. तब पद्मारावलनें गोपालदाससों कही, मैं जाउं, मोकों श्रीरनछोडजी जैसे दरसन देइगें ? तब गोपालदास ने कही, जैसे श्रीरनछोड़जी दरसन देत हैं तैसे ही दरसन श्रीआचार्यजी देइगे. और तुमसों बोलेंगे. तब पद्मारावलकों बड़ी आतुरता भई, जो कब अड़ेल जाउं ? कब श्रीआचार्यजी श्रीरनछोडजी रूपसों बोलें ? पाछें गोपालदास अपने घर आये. रात्रिकों पद्मारावलकों नींद न आई. जो कहे, अड़ेलकों कब चलों. सो प्रातःकाल उठि चले. सो कछूक दिननमें उज्जैन आये. तब मावजी पटेलने पद्मारावलसों पूछ्यो, जो रावलजी ! अबके तुम बहोत बेगि उज्जैन आये. और तुम्हारो मन उचाट दीसत हैं. ताको कारन कहा ? तब पद्मारावलने कही, अड़ेलमें श्रीरनछोडजी प्रगट भये हैं. सो सबसो बोलत बतरात हैं. सो प्रातःकालमैं अड़ेल जाउंगो. तब मावजी पटेलने कही, रावजी ! मैं हूं तुम्हारे सङ्ग हों. श्रीरनछोडजीके दरसनकों चलूंगो. तब पद्मारावलने कही, तुम राजसी लोग हो. हम तो पाइन चलेंगे. तुम्हारे सङ्ग भीर जाप्ता - असवारी, सो कैसे बनेगी ? तब मावजी पटेलने कही, अकेलो तुम्हारे सङ्ग पाइन चलूंगो. तब पद्मारावल कहें, तैयारी करो. प्रातः चलेंगे.

तब मावजी पटेल अपने घर आइकें बिरजो स्त्रीसों कहे हम सवेरे पद्मारावलके सङ्ग अड़ेल जाइगें. वहां श्रीआचार्यजी श्रीरनछोडजी रूपसों दरसन देत हैं, सबसो बोलत हैं. तब बिरजोने कही, मैं तुम्हारे सङ्ग चलोंगी. तब मावजी पटेलने कही, तुम स्त्रीजन कैसे चलोंगी ? मैं तो पाइन चलोंगो. जाप्ताअसवारी नाहीं. तब बिरजो ने कही, मैं तुम्हारे सङ्ग पाइन चलोंगी. तब मावजी पटेलने पद्मारावलसों कह्यो, मेरी स्त्री सङ्ग चलन कहति है ? तब पद्मारावलने कही, अकेले पाइन कैसे चलेगी ? तब मावजीने कही, अकेले पाइन चलन कही है. तब पद्मारावलने कही, तो चलो, बेगे आवो, तीनों जनें चलेंगे. तब मावजी पटेल आय घरमें तैयारी करी. रखबारो घरमें राखि बिरजोको सङ्ग ले आये. सो तीनों जने अड़ेलकों चले.

भावप्रकाश : काहे तें ? दैवी जीव हैं, तातें इनको मन श्रीआचार्यजीके दरसनकों सुनत ही मात्र आरति भई. सो लीलामें पद्मारावल हैं सो द्वारका लीलाके अधिकारी हैं. श्रीरुक्मिनीजीकी सखी हैं. सो जब श्रीठाकुरजी श्रीरुक्मिनीसों परिहास किये तब रुक्मिनी मुर्छित होइके गिरि परी. पाछें श्रीठाकुरजी समुजायो. तब यह सखी उहां ठाढ़ी हती. इनको नाम 'विमला' हतो. सो हंसी. तब रुक्मिनी विमली सखी पर खीझी. जो मैं मूच्छा खायकें गिरि तब तू क्यों न्यारी टाढ़ी रही ? श्रीठाकुरजी मेरी टहल करी सो तू क्यों चाही ? श्रीठाकुरजी मेरी बेनी बांधि मुख धोये सो यह हमारो धर्म नाहीं. हम श्रीठाकुरजीकी टहल करें सो उचित हैं. श्रीठाकुरजी किये सो अनुचित हैं. जो तू मेरी टहल करती तो श्रीठाकुरजी काहेकों करते ? यह रुक्मिनी कहें. परन्तु वह बोले नाहीं, हंसिकें चूप होइ रही. तब रुक्मिनीजी क्रोध करिकें कहें, जो, भूमिमें परि. तू मेरी काहे की सखी ? तू मेरे कामकी नाहीं. सो विमला सखी पद्मारावल भये. सो श्रीरनछोडजीके दरसनमें इनकी आसक्ति अत्यन्त याहि तें भई. पूर्व सम्बन्ध दृढ़ हैं. और मावजी पटेल और बिरजो ये दोऊ ब्रजलीला सम्बन्धी श्रीचन्द्रावलीकी दोऊ सखी हैं. लीलामें मावजीको नाम 'रूपा' है. और बिरजोको नाम 'हरखा' है. तातें इनकों श्रीगुसाईजीमें, ब्रजलीलामें आसक्ति भई.

सो चार पांच मनुष्य सङ्ग लिये. सो प्रयागमें आये. तब अड़ेलको पार दरसन भयो. सो तीनों जनेकों ऐसी आतुरता भई, जो श्रीयमुनाजीमें होयके पार जाय. इतनेमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु मध्याह्नकी सन्ध्या करनके लिये श्रीयमुनाजीके तीर पधारे. तब पार पद्मारावल मावजी पटेल, बीरजोकों अति आतुर देखिकें एक वैष्णवसों कहें, नाव ले बेगे पार जाय, पद्मरावल सांचोरा ब्राह्मन और मावजी पटेल

बिरजोकों बैठायके ले आवो. तीनों जनेसों कहियो, जो श्रीरनछोड़जीने नाव पठाई है. बेगे चलो. तब उह वैष्णव नाव ले पार जाय पूछ्यो, पद्मारावल, मावजी पटेल, बिरजो कौनको नाम है ? तब ये तीनों बोले, जो हमारो नाम हैं. तब वैष्णवने कही, श्रीरनछोडजीने तुम्हारे लिये नाव पठाई है. सो बेगे बैठिकें चलो. तब ये तीनों जनें बहोत प्रसन्न भये. जो श्रीरनछोड़जी सांचे ही प्रगट भये हैं. हमको आवत बेर नाही भई, हमारो नाम लेंके बुलाये. नाव पठाये. सो अति आतुरतासों नाव पर बैठिके पार आये. तब जायकें श्रीआचार्यजीको दरसन किये. तब श्रीआचार्यजीने जानी, इनको भाव श्रीरनछोड़जीमें है. (यासों) जो रनछोड़जी रूपसों दरसन देइंगे तो इनको भाव बढ़ेगो. सो आपु श्रीरनछोड़जी रूपसों दरसन दिये. तब तीनों जने दण्डवत् किये. तब पद्मारावलने बिनती करी, महाराज ! गोपालदासकी कृपातें हमकों दरसन भयो. तातें गोपालदासने हमसों कही है. तुम श्रीआचार्यजीके सेवक हूजो. सो अब कृपा करिकें हम तीनों जनेकों अङ्गीकार करिये. हम आपकी सरन हैं. तब श्रीआचार्यजी श्रीयमुनाजीमें तीनों जनेकों न्हावाय नाम निवेदन कराये. पाछें मावजी पटेलके सङ्ग मनुष्य हते तिनकों नाम सुनाये. पाछे पद्मारावलकों अपुने मन्दिरमें सङ्ग ले आये. पाछें आपु भोजनकों पधारे. तब पद्मारावलके मनमें यह आई, जो श्रीरनछोड़जीकों भोग धरत हैं तैसेहि श्रीआचार्यजीकों भोजन करत दरसन होइ तो जूठन लेइ. तब यह तब यह पद्मारावलके मनकी श्रीआचार्यजी जानि पद्मारावलकों भीतर बुलाये. तब पद्मारावल देखें तो श्रीरनछोड़जी रूपसों भोजन करत हैं. सो बहोत मनमें प्रसन्न भये. तब श्रीआचार्यजी कहें, अब सन्देह गयो ? तब पद्मारावलनें बिनती करी, महाराज ! हम जीव तुच्छ बुद्धि हैं. तातें बार - बार मनमें ऐसी आई. आपतो साक्षात् श्रीरनछोड़जी हो. पाछें आपु भोजन करिकें पद्मारावलकों जूठिनकी पातरि धरि. मावजी पटेल, बिरजोकों जूठनि धरी. तीनों जनें महाप्रसाद लेकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके पास आये. तब पद्मारावलने बिनती करी, महाराज ! अब हमकों कहा आज्ञा है ? तब श्रीआचार्यजी कहे, सेवा करो. तब पद्मारावलने बिनती करी, महाराज ! जैसो मन मेरो आपके दरसनमें आसक्त है ? जो यही मन अष्टप्रहर रहत है, जो श्रीरनछोड़जीकों निरख्यो करूं, ऐसो मन सेवामें लगें तो सेवा मैं करूं. नाहीं तो न करूं. तब श्रीआचार्यजी कहें, तेरो मनोरथ श्रीठाकुरजी पूरन करेंगे.

भावप्रकाश : सो यह जो श्रीरनछोड़जी पास तेरी प्राप्ति होयगी द्वारका लीलामें. सो श्रीठाकुरजी मनोरथ पूरन करेंगे.

और तीनों जनेनकों आज्ञा करी हम उज्जैन पधारेंगे कछुक दिनमें. तब तुम्हारे घरमें श्रीठाकुरजी पधराय देइंगे. और मावजी पटेल, बिरजोके माथे सेवा पधरावेंगे. सो तुम सेवा करियो. अब तुम तीनों जने घर जाव. हमहू पाछें तें उज्जैन पधारेंगे. तब तुम्हारो मनोरथ सिद्ध होइगो. तब पद्मारावल और मावजी पटेल और बिरजो तीनों जने दण्डौत् करि बिदा होइ चले. कछुक दिनमें उज्जैन आये. सो गोपालदास ऐसे भगवदीय है. जिनके रञ्चक सङ्ग तें पद्मारावल, मावजी पटेल, बिरजो तीनों श्रीआचार्यजीकी सरनि पाये. तातें गोपालदासकी वार्ता कहां तांई कहिये. एक श्रीआचार्यजीको दृढ़ विश्वास जिनकों है. .....वार्ता ।।२८।।

३४-पद्मारावल सांचोरा

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, पद्मारावल सांचोरा ब्राह्मन उज्जैनके तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

वार्ताप्रसङ्ग १ : ए सेवक भये. सो प्रकार तो उपर कहि आये गोपालदासकी वार्तामें. पाछें श्रीआचार्यजी उज्जैन पधारे. तब पद्मारावलके घर उतरे. पद्मारावलकी स्त्रीकों नाम निवेदन कराये. पाछे पद्मारावलसों कहे, कहूंतें भगवद् स्वरूप ले आव. सो पद्मारावलकी ज्ञातिमें एक सांचोराके घर भगवद् स्वरूप हतो. अष्टभुजाजी. सो पद्मारावल कहें, ये ठाकुर हमकों देउ. तब उन कह्यो, ले जाव. हम सों बनत नाहीं. दोय बेर न्हायो नाहीं जात. तब पद्मारावल श्रीठाकुरजीकों ले आये. तब श्रीआचार्यजी पञ्चामृत स्नान कराय पाट बैठारि पद्मारावलके माथे पधराये. तब मावजी पटेल और बिरजोने बिनती करी, महाराज ! हमारे माथे पधरावो तो हम सेवा करे. तब श्रीआचार्यजीने कही, तुम्हारे माथे श्रीगुसांईजी सेवा पधरावेंगे.

भावप्रकाश : काहेतें ? हम सरन तुमकों ले अपुने किये, परन्तु सगरो मनोरथ श्रीगुसांईजी द्वारा सिद्ध होइगो.

तब मावजी पटेल और बिरजो दण्डवत् करि भेंट धरि घर गये. तब पद्मारावलने बिनती करी, महाराजाधिराज ! मैं तो मूर्ख हों.

कछू समुजत नाहीं. और इहां हमारे ज्ञातिके ब्राह्मन कर्म - जड़ स्मार्त हैं. सो मोकों दुःख देत हैं, जो तू कहा समुझिके सेवक भयो ? तब श्रीआचार्यजी अपुने चरणारविन्दको प्रसादी चन्दन और चरणामृत पद्मारावलकों दिये. सो मुखमें मेलत ही सगरे वेद पुरान सास्त्रको ज्ञान ह्वै गयो. सो बड़े - बड़े पण्डित सबनको प्रति उत्तर देहि. माथो नीचो करि सगरे हारिके उठि जाते.

भावप्रकाश : और श्रीआचार्यजीने प्रसादी चन्दन और चरणामृत दिये सो दोऊ देवेको अभिप्राय यह है, जो चन्दनके लिये तें सगरो ज्ञान होई, उच्छलित रस व्है जाय तो कहूं सरीर छूटि जाय, अथवा सबकें लीलाकी वार्ता करें, बिना कहें रह्यो न जाइ. तब चरणामृत तें सरीर दृढ़ व्है जाई, भक्ति दृढ़ रस उच्छलित होई बाहर न जाय, हृदयमें स्थिर होय रहें. तातें प्रसादी चन्दन और चरणामृत दिये.

वार्ताप्रसङ्ग २ : सो एक समय पद्मारावलने सैया नई बनवाई. तब श्रीठाकुरजी पद्मारावलसों कहें, सैया छोटी है. मोसों पौढ्यो नाहीं जात. तब पद्मारावल प्रसन्न होई बड़ी सैया बनवाये. तब श्रीठाकुरजी सुखसों पौढ़न लागे. या प्रकार सानुभावता जनावन लागे. और एक दिन पद्मारावलकी स्त्रीनें खीर ताती समर्पी. पाछें भोग सराय आरती करी. ताही समय श्रीआचर्यजीमहाप्रभु पधारें. तब श्रीठाकुरजीने श्रीआचार्यजीकों अपने हस्त और ओष्ठ दिखाये, जो पद्मारावलकी स्त्रीनें ताती खीर समर्पी. सो मेरे हस्त और ओष्ट आरक्त भये हैं. या प्रकार श्रीआचार्यजीसों कहे. पद्मारावलकी स्त्रीसों न कहें.

भावप्रकाश : काहेतें ? स्त्री साधारन वैष्णव है. सो उद्धार होयगो सरनके प्रताप तें. परन्तु लीला सम्बन्धी नाहीं है.

तब श्रीआचार्यजी पद्मारावल और पद्मारावलकी स्त्रीसों कहें, तुम ठाकुरजीकों ताती खीर क्यों समर्पे ? श्रीठाकुरजीके हस्त और ओष्ठ लाल भये हैं. खीर ताती लागी तातें. तब पद्मारावलने कही, महाराज ! हम कहा जाने ? जो ताती सामग्री आछी तातें समर्पे. तब श्रीआचार्यजीने कही, और सामग्री ताती धरिये ताकी चिन्ता नाहीं परन्तु खीर ताती न धरिये. अंगुरी डारिये. सुहाय तब भोग धरिये. तब पद्मारावलने कही, महाराज ! खीर ताती हती तो श्रीठाकुरजी सीतल क्यों न होंन दीनी ? ताती क्यों अरोगे ? तब श्रीआचार्यजी कहें.

श्रीठाकुरजी बालक हैं. सो बालककों खीर बहुत प्रिय हैं, तातें पहिले खीरमें हाथ डारे हैं, और सामग्री ताती होई तो पीछे जारोगें. खीर पहलें अरोगे, तातें खीर ताती न धरिये.

भावप्रकाश : या प्रकार श्रीआचार्यजी पद्मारावलको और उनकी स्त्रीकों समुझाये. बालकको नाम लें. परन्तु भीतरको खीरको स्वरूप नाहीं कहे. काहेतें ? स्त्री लीला सम्बन्धी नाही है. और पद्मारावल द्वारकाकी राज लीला सम्बन्धी है. तातें पद्मारावलकों श्रीठाकुरजी अनुभव जताये. परन्तु ब्रजभक्तनकी लीलाको अनुभव नाहीं है. तातें खीर स्वामिनीजीके भावकी सामग्री है. तातें श्रीठाकुरजीकों बहोत प्रिय हैं. सो खीरको भाव नारायनदास ब्रह्मचारीकी वार्तामें कहे हैं ऊपर. तातें खीर देखके श्रीठाकुरजीकों धीरज छूटि जात है. तातें खीरि सीरि करिकें धरिये. और जहां तहां खीरकों सीरी करनी लिखी है. और सामग्रीकों सीरी करनो कहूं कहे नाहीं. जैसे श्रीआचार्यजीकों खीर बहोत प्रिय हैं. ऐसे श्रीगुसांईजीकों लाडु बहोत प्रिय हैं. और श्रीआचार्यजीकों सखड़ी और खीर सीरीकोमल भाव प्रिय. तैसेई श्रीगुसांईजीकों नाना प्रकारकी अनसखड़ी प्रिय. सो प्रभु प्रौढ भावसों अरोगत हैं. परन्तु पुष्टिमारगमें वैष्णवको जैसों अधिकार तेसोई अनुभव हैं.

वार्ताप्रसङ्ग ३ : और एक समय पद्मारावल श्रीरनछोड़जीके दरसनकों द्वारकाजीकों चले. तब श्रीरनछोड़जीनें स्वप्नमें कह्यो, जो राजनगरमें एक हमारो सेवक है. सो ताके घर तुम जैयों. सो तहां पाक करियो. तब पद्मारावल कह्यो, जो महाराज ! मैं तो वाको जानत नाहीं और बिनु बुलाये कौनके घर जाऊं ? तब श्रीरनछोड़जीने कह्यो, जो वह आपुहि बुलावन आवेगो.पाछें पद्मारावल राजनगरमें आये.

भावप्रकाश : सो यातें जो पद्मारावल श्रीरनछोडजीकी लीला सम्बन्धी है. तातें बिचारे, जो कहूं ब्रजलीलामें मग्न होय तो मेरे हाथसों जाय. तातें कहें, हमारो सेवक है ताके घर जैयो सो पद्मारावलके मनकों भाई, जो ब्रजलीलामें मग्न होते तो यह कहते, तुम्हारो सेवक है, परन्तु श्रीआचार्यजीको सेवक होइ तो मेरी ठीक परे. सो इनकों तो श्रीरनछोडजी पर भर भाव बहोत है. श्रीआचार्यजीको स्वरूप श्रीरनछोड़जीको जान्यो. ब्रजलीला सम्बन्धी नाहीं जान्यो. तातें इनके घर श्रीठाकुरजी हू श्रीरनछोड़जी रूप तें सानुभावता जनावत हैं. और पद्मारावलके बेटा कृष्णभटट होइगें. सो श्रीगुसाईजीके लीला सम्बन्धी होइगें. तब कृष्णभटटकों श्रीठाकुरजी अनुभव करावेगें. यामें यह जताये, जो जैसो जीव होइ तितनो श्रीआचार्यजी जानि. तितनो श्रीठाकुरजी अनुभव जनावें. जो

श्रीआचार्यजीको साक्षात् पुरुषोत्तम जानते तो श्रीगोवर्द्धनधर अनुभव जनावतें. जो श्रीआचार्यजीकों पूर्णपुरुषोत्तम श्रीगोवर्द्धनधर तें अधिक जानते. तब ब्रजलीलाको अनुभव होतो. यह सिद्धान्त दिखाये.

और श्रीरनछोड़जी रात्रिकों अपने सेवकसों कह्यो, काल्हि पद्मारावल राजनगर तें तेरे गाममें आवेंगें. सो उनकों घर लाइकें नीकी भांतिसों रसोई - पाक करवइयो. तब उह सेवकनें कह्यो, मैं पद्मारावलको कैसे जानूंगो ? तब श्रीरनछोड़जीने कही पद्मारावल प्रसिद्ध है, तू जानेंगो.

भावप्रकाश : यामें यह जताये, जो तुम दोऊ मेरे सम्बन्धी हो. सो में तुम्हारे दोऊको मिलाप कराइ देऊगो.

पाछें पद्मारावल राजनगरमें बिचारे, जो मैं श्रीरनछोड़जीके सेवककों जानत नाहीं. तातें एक उपाइ करूं. तब सङ्गमें विद्यार्थी हतो, तासों कहें, जो तू गाममें जाइ कोरे अन्नकी न्यारी - न्यारी भिक्षा पांच - सात ठिकानेसों मांगि लाउ. सो सबकी न्यारी - न्यारी राखियो. तब वह विद्यार्थी गाममें जाई कोरी भिक्षा पांच - सात ठिकानेसों मांगि ले आयो. तब पद्मारावलने उह विद्यार्थीसों कही, जो जाकी लिक्षा मांगि लायो है ता - ताको अन्न फेरि आउ. तब वह विद्यार्थी अन्न फेरन गयो. तब उह रनछोड़जीके सेवकने कही, जो भिक्षा ले गये सो फेरन क्यों ये ? तब विद्यार्थीने कही, जो हमारे स्वामीकी जैसी आज्ञा. उन कही, ले आउ, सो ले गयो अब उन कही, भिक्षा है ताको को फेरि आव. सो फेरन आयो. तब उन कही, जो तुम्हारे स्वामीको नाम कहा ? तब विद्यार्थीने कही, जो पद्मारावल. तब उह भिक्षा फेरि लीनी. पाछें उह विद्यार्थीके सङ्ग पद्मारावल के पास गयो. कह्यो, रावलजी ! हमारे घर चलो. रसोई करो. तब पद्मारावलने कही, मैं तो कहूके घर जात नाहीं. तब उह श्रीरनछोडजीके सेवकने कही, जो मोकों श्रीरनछोडजीकी आज्ञा है, जो पद्मारावलकों अपने घर रसोई पाक कराइयो. तातें मैं बुलावन आयो हूं. सो मोकों आज्ञा करी है, सो तुमहूकों आज्ञा करी होइगी. तुमहू तो श्रीरनछोड़जीके कृपापात्र हो. तातें मोसों कहें. तब पद्मारावल बहुत प्रसन्न होईकें कहें, जो मोहूकों आज्ञा है श्रीरनछोड़जीकी. तातें चलो. तब वाके घर आई रसोई पाक करि भोग धरि महाप्रसाद उह सेवककों हू धरे.

भावप्रकाश : वाके हाथसों याते नाहीं लिये, जो वह बनिया हतो. तातें दोउ जन महाप्रसाद लिये. उह विद्यार्थीको महाप्रसाद लिवाये. पाछें रात्रिको वाईके घर रहे. श्रीरनछोड़जीकी दोऊ जनें वार्ता करि प्रसन्न भये. एक भाव तें दोउ मिलें. तहां सुख उपजे.

पाछें प्रातःकाल पद्मारावल चलन लागें. तब वह सेवकनें कही, कछू दिन रहो. तब पद्मारावल कहे, मोसों रह्यो न जाई. श्रीरनछोड़जीके दरसनकी बहोत आतुरता है. ऐसे कहें तब उह श्रीरनछोड़जीके सेवक पे बिदा किये. पद्मारावल द्वारकाकों चले.

वार्ताप्रसङ्ग ४ : बहुरि एक दिन आटो बहोत मिल्यो और घी थोरो मिल्यो. तब पद्मारावलने सगरे चूनकी रोटी करी. जितनी धीमें चुपरी गई तितनी चुपरे, बाकीकी बिना चुपरी नीचें धरें. दारि धरिके भोग समर्पे. और यह बिनती किये महाराज ! चुपरी - चुपरी रोटी अरोगियों. बिना चुपरी रोटी रूखी रहन दीजो. मति अरोगियो. तब श्रीठाकुरजी सगरी रोटी अरोगी रोटी उलटि पुलटि दिये. रूखी ऊपर करें. चुपरी नीचे करि दिये. सो जब भोग सराये तब जानें श्रीठाकुरजी सगरी अरोगे. तब श्रीठाकुरजीसों कहे, जो महाराज ! रूखी रोटी क्यों अरोगें ? तब श्रीठाकुरजीने पद्मारावलसों कही, जो मोकों भोग क्यों धरे ? जो मेरे आगें भोग धरेगो सो मैं अरोगुंगो. तब प्रसन्न ह्वै महाप्रसाद लैन बैठें. कितनीक रोटी वामें ते बांधि राखें. सो वा दिनकी रोटीको स्वाद बहोत अलौकिक भयो. सो नित्य रसोई करि, भोग धरि, महाप्रसाद लैन बैठे, तब वह रोटीमें ते एक टूक मिलाई महाप्रसाद लेते.

भावप्रकाश : या प्रकारको माहात्म्य हृदयमें आयो, सो रोटीकी छूति न गिनते. जन्म भर उह रोटी लियें. एक दिनको स्मरन, प्रभुनकी दयालुता स्मरन करनके अर्थ.

पाछें श्रीरनछोड़जीसों बिदा होयके चले. तब मारगमें बासवाड़े आये. तब पद्मारावल गोपालदासके घर गये. सो गोपालदासके घर रात्रि रहे. तहां रसोई करि भोग धरि महाप्रसाद लिये. तब गोपालदाससों पद्मारावलने कही, जो तुम्हारी कृपातें मोकों श्रीआचार्यजीके दरसन

भये. साक्षात् श्रीरनछोड़जी प्रगट भये हैं. मोकों अङ्गीकार करि कृतार्थ किये. तब गोपालदास कहे, श्रीआचार्यजी ऐसेही दयाल हैं.

भावप्रकाश : मनमें जाने, जो यह इतनों ही पात्र हैं. तातें श्रीरनछोड़जीको भाव भयो. भगवद् ईच्छा. भलो, संसारसों छूटि कृतार्थ तो भयो. ... ।।वैष्णव २९।।

पाछें प्रातःकाल पद्मारावल गोपालदाससों बिदा होय उज्जैन आय भगवद् सेवा करन लागे. सो ये श्रीआचार्यजीके ऐसे कृपापात्र हे. ....वार्ता।।२९।।

३५-पुरुषोत्तम जोसी सांचोरा

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक पुरुषोत्तम जोसी सांचोरा, गुजरातके बासी, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : सो पुरुषोत्तम जोसी लीलामें विसाखाजीकी सखी हैं. 'गुनचूडा' इनको नाम हैं. और पुरुषोत्तम जोसीकी स्त्री 'गुनचूड़ा' की सखी हैं. सो 'दुर्वासा' इनको नाम है.

सो दोउ गुजरातमें न्यारे - न्यारे सांचारोके घर जन्में. सो पुरुषोत्तम जोसीको विवाह भयो. बरस सत्रहके पुरुषोत्तम जोसी भये. तब एक समय श्रीआचार्यजी गुजरात पधारे. सो पुरुषोत्तम जोसी मध्याह्न समय एक तालाब पर सन्ध्या करत हते. तब श्रीआचार्यजी तालाब पर पधारिके सन्ध्यावन्दन करन लागें. सो पुरुषोत्तम जोसीकी ओर कृपा करिकें दैवी जानि देखें. तब पुरुषोत्तम जोसी श्रीआचार्यजी पास आई नमस्कार करि पूछ्यो, महाराज ! यह कर्ममार्ग बड़ोके ज्ञानमार्ग बड़ो ? तब श्रीआचार्यजी कहें, जाके मनमें दृढ़ जो मार्ग आवें, जामें जाको विश्वास होय वाके भाय तो वह मार्ग बड़ो. और बड़ो तो भक्ति मारग हैं. जामें जीव कृतार्थ होई. और ज्ञानमारग कर्ममारगसों कृतार्थ कठिनता सो होई. सो काहूसों निर्वाह होय नाहीं. काहेतें ? कष्ट साध्य हैं, सो

या कालमें सरीरको कष्ट कर्योन जाइ, जो कोऊ सरीरको कष्ट सहे तो मन ठिकाने न रहें. तातें भक्तिमारगी जीव कृतार्थ होई. और आश्रय नाहीं. तब पुरुषोत्तम जोसीने कही, जो महाराज ! भक्तिको स्वरूप कहा ? कृपा करिकें कहिये. तब श्रीआचार्यजी कहें, भक्तिको स्वरूप वर्णन करिये तो पार आवें नाहीं. परन्तु कछुक तोकों कहत हों. तब 'भक्तिवर्द्धनी' ग्रन्थ करि ग्यारह श्लोक पुरुषोत्तम जोसीकों सुनाये, सो यह उत्तम अधिकारी है. तातें सगरो बोध व्है गयो. तब श्रीआचार्यजीकों दण्डवत् करि विनती किये, महाराज ! इतने दिन हम कर्ममार्गमें पचि मरे. परन्तु कछू हाथ आयो नाहीं. वृथा जन्म गमाये. अब आपु हमकों सरनि लीजिये. आज्ञा करो सो हम करें. तब श्रीआचार्यजी दृढ़ प्रीति देखिकें नाम सुनाइ ब्रह्मसम्बन्ध कराये. और माथे पर चरन धरे. हृदय पर चरन धरे. और कहे, जो तोकों भक्तिमारग स्फुरेगो. दृढ़ एङ्कागी भक्तिको तू अधिकारी है. तब पुरुषोत्तम जोसीने कही, महाराज ! मेरे घरमें श्रीठाकुरजी हैं. सो मर्यादाकी रीति पूजा करत हतो. अब आपु जैसे आज्ञा करो तैसे सेवा करों. तब श्रीआचार्यजी लालजीकों पञ्चामृत स्नान कराय पाट बैठाये. पुरुषोत्तम जोसीके माथे पधराये. मा - बाप तो पहले ही देह छोड़ी हती. सो दोऊ जनें प्रीतिसों सेवा करन लागें. पाछें श्रीआचार्यजी श्रीद्वारिका पधारे. सो पुरुषोत्तम जोसीनें बहोत दिन सेवा करी. भगवदभाावमें मगन रहते, अव्यावृत होइ रहें. काहूके आगें अपने हृदयको भाव प्रगट न करते.

वार्ताप्रसङ्ग १ : एक समय पुरुषोत्तम जोसीके मनमें यह आई, जो श्रीगोकुल जाई, श्रीगुसांईजीको दरसन करिये. सो लोगनके आगे ज्ञातिमें कहे, हम कासी है आवें. सो बनारसको नाम ले स्त्री सङ्ग एक घोरा पर श्रीठाकुरजीकों पधरायके चलें. सो कछूक दिनमें उज्जैन आये. तब उज्जैनमें पूछे, पद्मारावलके बेटा कहां रहत हैं ? श्रीगुसांईजीके सेवक हैं. इनसो मिलिये. तब लोगनने कही, पद्मारावलके चारि बेटा हैं. तामें तीन बेटा भेले रहत हैं. और एक कृष्णभटट न्यारे रहत हैं. तब पुरुषोत्तम जोसी बिचारि किये, पहलें तीनों बेटाके घर चलिये. सो तीनो बेटा पास आये. तब तीनो बेटा मिलिके कछुक अन्न दियो. तब पुरुषोत्तम जोसी बिचारी किये, जो पद्मारावलके बेटा ऐसे क्यों बूझिये ? ये तो कोरे ब्राह्मन जान परें. जिनमें प्रीतिको एक हू लक्षन नाहीं. परन्तु अन्न फेरि दीजे तो कहेंगे, थोरो जानिके फेरे. तातें इनसों बोलनो नाहीं. पाछें यह बात कृष्णभटटने सुनी जो पुरुषोत्तम जोसी आये हैं. तब कृष्णभटट पुरुषोत्तम जोसीकों प्रीतिसों अपुने घर ले गये. सुन्दर सामग्री करि, श्रीठाकुरजीको भोग धरि, पुरुषोत्तम जोसीकों इनकी स्त्रीकों प्रीतिसों महाप्रसाद लिवाये. दिन चारि - पांच बिनती करि घरमें राखे. तब पुरुषोत्तम जोसीने कही, पद्मारावलको बेटा खरो ऐसे ही चहिये. और तीन बेटा तो थोरो सो अन्न दियो, जामें भूखे रहे. पाछें पुरुषोत्तम जोसी चलन लागे. तब कृष्णभटट इनके सङ्ग चले. सो मजलि पर जाइ उतरे. सो जब जानें. जो

कृष्णभटट सोये. तब स्त्रीसों कहें. कृष्णभटट सोये ? तब स्त्री कहे, हां सोये. तब भगवद् वार्ता लीलाके भाव स्त्रीसों कहे, कृष्णभटटके आगेंन कहें. जाने, जो जोगता न होई तो कैसे कहिये ? ऐसे दोय चारि दिन बीते. तब कृष्णभटटने मनमें जानि. जो ये मोसों भगवद् वार्ता छिपाइके करत हैं. मोसों नाहीं करत तो मैं इनसो भगवद् वार्ता कहाउं.

पाछें प्रातःकाल जब मजलि चले, तब कृष्णभटटने पुरुषोत्तम जोसीकी बहूसों कह्यो, जो एक ओर तुम थांभियो, हों भगवद् वार्ता चलावत हों. तब पुरुषोत्तम जोसी की बहू घोरोके पास आय कृष्णभटटसों कह्यो, जो भलो. पाछें एक और कृष्णभटट पकरिकें ऐसी भगवद् वार्ता करी जो पुरुषोत्तम जोसीकों देहानुसन्धान रह्यौ नाहीं. रसमें मगन ह्वै गये. तब घोरा परतें उतरन लागें. तब दोऊ ओर तें इनकों थांभि लिये. पाछें एसे करत जब मजलि पे आय पहोंचे, तब घोड़ा ऊपर तें उतारन लागें. तब पुरुषोत्तम जोसीने कही, अबही मोकों घोरा उपरतें क्यों उतारत हो ? अबही तो बैठ्यो हूं. तब स्त्रीने कही, जो मजलि आई. सवेरेसों चलत पीछलो पहर भयो है. तब पुरुषोत्तम जोसी सावधान होइ उतरे. परन्तु भगवद् - वार्ताको आवेस उतर्यो नाहीं. पाछें कृष्णभटटसों वार्ता करन लागे. रात्रि दिन भगवल्लीला रसमें मगन रहे. ऐसे नित्य करत श्रीगोकुल आये. तब श्रीगुसांईजीकों दण्डोत् करि पुरुषोत्तम जोसीने कही, महाराज ! कृष्णभटट पर ऐसी कृपा कहांते भई ? तब श्रीगुसांईजी श्रीमुखसों कहे, जो कृष्णभटटकों चाचा हरिवंसको सङ्ग है. तातें ऐसी कृपा है. तब पुरुषोत्तम जोसीको सन्देह निवृत्त भयो. तबतें मन खोलिकें भगवद् वार्ता करन लागें. पाछें कछुक दिन श्रीगोकुल रहिकें श्रीगुसांईजीसों बिदा होइ कृष्णभटटके सङ्ग पुरुषोत्तम जोसीको सन्देह निवृत्त भयो. तबतें मन खोलिकें भगवद् वार्ता करन लागें. पाछें कछुक दिन श्रीगोकुल रहिकें श्रीगुसांईजीसों बिदा होइ कृष्णभटटके सङ्ग पुरुषोत्तम जोसी स्त्री सहित चले. सो भगवद् वार्ता करत कछुक दिनमें उज्जैन आये. सो कृष्णभटटने प्रीतिसों चारि दिन घरमें राखे. भगवद् वार्ता करि बहोत प्रसन्न भये. पाछें पुरुषोत्तम जोसी कृष्णभटटसों बिदा होई गुजरात अपने घर आये. भगवद् सेवा करते. और भगवद वार्ता करते. लौकिक जानते नाहीं. ऐसे भगवदीय पुरुषोत्तम जोसी स्त्री सहित है. इनकी वार्ता कहां ताई कहिये.

भावप्रकाश : इनकी वार्तामें यह सिद्धान्त भयो. जो पात्र बिना भगवद् वार्ता करनी नाहीं. ....वैष्णव॥३०॥

३६-जगन्नाथ जोसी

'अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, जगन्नाथ जोसी खेरालूके तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ये जो प्रकार सरन भये सो आगें इनकी माताकी वार्तामें कहेंगे.

वार्ताप्रसङ्ग १ : एक दिन जगन्नाथ जोसी श्रीठाकुरजीकों शृङ्गार करि बागो पहरायकें राजभोगको थार साजिके, श्रीठाकुरजीके आगें भोग धर्यो. पाछें बाहिर आये. तब जगन्नाथ जोसीके मनमें यह आई. जो ठाकुरजी वागो पहरे अरोगत हैं. सो थार छुई जायगो. यह बात श्रीठाकुरजीने जगन्नाथ जोसीके मनकी जानी. सो थार लात मारिकें चौकीसों नीचे डारि दिये. तब जगन्नाथ जोसी फेरि सामग्री करि थार धोई, धरें तब श्रीठाकुरजी लात मारि नीचे डारि दिये. तब चौथी बार जगन्नाथ जोसी बहोत श्रमित भये. माथो नीचो करन लागें. जो कहा अपराध पर्यो हैं. जो श्रीठाकुरजी जितनी बार थार धरो तितनी बार डारि दिये. सामग्री अरोगत नाहीं. यह अपने मनमें बिचार करत बहोत आतुरता दैन्यता आई. तब श्रीठाकुरजीने कही, जो तू थार छूये तें डरपतु है तो मेरे आगें काहेकों धरतु है ? यह सुनत ही जगन्नाथ जोसी नाक घिसिकें बहोत बिनती करी, महाराज ! मैं चूक्यो. अब मेरो अपराध क्षमा करो. मैं तो कछू जानत नाहीं. या प्रकार बहोत मनुहार करी.

भावप्रकाश : याको अभिप्राय यह, जो श्रीआचार्यजी श्रीसुबोधिनीमें कहे हैं श्रीठाकुरजीकी लीलामें श्रीठाकुरजीके स्वरूपमें होई भावना करें तब श्रीठाकुरजी अप्रसन्न होई. एक असम्भावना, एक विपरीत भावना करें तब श्रीठाकुरजी परायेसों विहार किये. ठाकुरजी हीन जातिके घर कैसे अरोगत होइंगे ? श्रीठाकुरजीकें छुये तें यह वस्तु छूइ जायगी. अहिर ज्ञातिके बिना न्हाये क्यों भोजन किये ? श्रीठाकुरजीकों फलानो रोग भयो. श्रीठाकुरजी नित्य तो प्रमान अरोगत हैं, अन्नकूटमें इतनो सब कैसे अरोगेंगे ? श्रीठाकुरजी अब वृद्ध भये. श्रीठाकुरजी यह लीला क्यों किये ? यह नाना प्रकारके कुतर्क प्रभुमें करनो

नाहीं. काहे तें 'पुरुषोत्तम सहस्रनाम' में कहे हैं - ''तर्कागोचर कार्यकृत्''. ऐसे कार्य है. प्रभुको कार्य तर्क ते अगोचर है. कोईकी बुद्धिमें तर्कमें आवे नाहीं. कर्तुं अकर्तुं अन्यथा कतुम् सर्वसामर्थ्य युक्त हैं. यह असम्भावना और विपरीत भावना यह, जो श्रीठाकुरजीके श्रीमुखमें बास आवेगी. ताते वासन दातन, करावनो. एक ठिकाने खरचूकी भावना करनी. चौरासी कोस ब्रज हैं एक दिनमें सगरे कैसे फिरे ? इतनी गाई हैं सब कैसे दुहत होइंगें ? आगे ब्रजमें प्रगटे अब ब्रजमें कहां हैं ? कहूं ब्रजमें दीसत नाहीं. हीन वस्तु गाजर मूरि कलिङ्गड़ा आदि सब ठाकुरने प्रगट कियो है, याको भोग घरिवेंमें कहा बाधक है ? श्रीठाकुरजी एक सगरी गापिकानसों कैसे बिहार करत होइगे ? इत्यादि विपरीत भावना भई. परन्तु जगन्नाथ जोसीको तों एक सरल सुभावसों भई. तातें श्रीठाकुरजी बोलें. कहें, थार छूई जायगो मेरे आगे मति धरै. तब अपराध क्षमा कराये. अपनेकों अज्ञानी मानें. या प्रकार असम्भावना, विपरीत भावना तें श्रीठाकुरजी अप्रसन्न होई. यह जताये. सो न करनो.

वार्ताप्रसङ्ग २ : और जगन्नाथ जोसी श्रीठाकुरजीकों ताती खीर भोग धरें. तैसे श्रीठाकुरजी ताती खीर अरोगते. सो कितनेक दिनकों श्रीआचार्यजी खेरालु गाममें जगन्नाथ जोसीके घर पधारे. सो श्रीठाकुरजीके ओष्ट और जीभ बहोत राती देखे. तब श्रीआचार्यजी श्रीठाकुरजीसों पूछें, बाबा ! जीभ, ओष्ट बहुत राते क्यों हैं ? तब श्रीठाकुरजीने कही, जो जगन्नाथ जोसी ताती खीर भोग धरतु है ! तातें मैं अरोगत हों. तब श्रीआचार्यजी जगन्नाथ जोसीसों कहे, जो तू ताती खीर श्रीठाकुरजीकों भोग क्यों धरतु है ? तब जगन्नाथ जोसीसों कहे, महाराज ! हम यह जाने, जो ताती सामग्री अरोगत हैं तातें समर्पत हैं. तब श्रीआचार्यजी कहे, खीर बहोत ताती न समर्पिये. अंगुरी डारि देखिये. अंगरी सहे तब भोग धरीये. और सामग्री ताती धरिये ताकी चिन्ता नाहीं. तब तें जगन्नाथ जोसी सीरी करिकें खीर धरन लागें.

भावप्रकाश : तहां यह सन्देह होइ, जो ठाकुरजी ताती क्यों अरोगे ? जगन्नाथ जोसीसों क्यों न कहे ? तहां यह जाननो, जो जा दिन तें जगन्नाथ जोसीके मनमें थार छूइवेकी असम्भावना भई ता दिन तें बहुत अनुभव न करावते. इनकी प्रीतिसों अरोगते.

वार्ताप्रसङ्ग ३ : और एक समें जगन्नाथ जोसी श्रीआचार्यजीके दरसनकों अड़ेल चले. सो मारगमें अन्नकूटको दिन आयो. सो एक

श्रीआचार्यजीको सेवक माथुर हतो वासों कहें गाममें जाइकें उत्तम सामग्री, जो मिले सो ले आवो. दारि, चोखा, घी, खांड आदि. सो उह गाममें गयो. सो उह गाम छोटो हतो. एक जुवारि मिलें. और कछू न मिलें. सो आइकें जगन्नाथ जोसीसों कह्यो, जो या गाममें ज्वारि मिलती है. और कछू मिलत नाहीं. गाम छोटो है. तब जगन्नाथ जोसी कहें, भगवद् इच्छा. ज्वारि ले आवो. तब वैष्णव ज्वारि ले आये. तब कहें, याकों बीन, फटकि ले आओ. तब वह वैष्णव ज्वारिकों आछी भांतिसों बीन फटकिके ले आयो. तब जगन्नाथ जोसीने पानीमें चढायो. तब उह वैष्णवने कही, या ज्वारिकी भूसी है ताकों पानीमें बाधिकें ऊपर धरि देउ. तो बाफसों ढोकला बेगि व्है आवेगो. तब जगन्नाथ जोसी वाकों बांधिके ऊपर धरें. सो जब ज्वारिको ठोंमर खद्खदावन लाग्यो. तब उह भुसीको ढोकला ज्वारिमें गिरि पड्यो. सो सब एकठोरी मिलि गयो. सो जगन्नाथ जोसी देखिकें मनमें बहौत खेद कियो. पाछें भगवद् इच्छा मानिकें जैसो भयौ तैसों भोग धरि महाप्रसाद लियो, पाछें सोये. तब श्रीठाकुरजी जगन्नाथ जोसीसों कहें, जो मेरे पेटमें ठोमरको ढोकला दुःखत है. तब जगन्नाथ जोसी सोठि, अजवाइन, लोंन समर्पे. तब श्रीठाकुरजी कहें मेरे पेटमें चेन भयो. तब मनमें जगन्नाथ जोसी बहोत पश्चाताप कियो. जो आजु श्रीठाकुरजीकों बहोत दुःख भयो. अब आछो गाम देखिकें मजल पर उतरेंगे. सो ता दिन तें आछो गाम देखिकें उतरते.

भावप्रकाश : यह वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो जगन्नाथ जोसीको सरल सुभाव बहोत है. तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न भये. जो पहले थार छूइवेकी असम्भावना अज्ञानमें आई हती तातें उदास भये हते. बहोत बोलते नाहीं. सो इनको सरल भाव, कुतर्क पण्डिताई करि ज्ञान करिकें, तरक न हती. सहजमें मनमें आई. फिरि कछू नाहीं. तातें श्रीठाकुरजी सरल सुभाव जानिकें प्रसन्न भये. सो सनेह देखिवेके लिये जताये, जो मेरे पेटमें दुःखत है. तब इनको सनेह बहुत तातें मनमें दुःख पायो. सोठि, अजवाइन, लोंन भोग धरे. तब श्रीठाकुरजी इनकी ऊपर बहोत प्रसन्न भये. कहे अब मेरे पेटमें चेन है. तब जगन्नाथ जोसीको दुःख मिट्यो. तातें विद्याईकी चतुराई. ज्ञानि होते तो कहेतें, श्रीठाकुरजीके पेटमें दुखे हैं ! ए तो ईश्वर है. परन्तु जगन्नाथ जोसी सूधे निष्कपट भगवदीय हैं. तातें श्रीठाकुरजी फेरि प्रसन्न भये. यामें यह जताये, जो जाके हृदयमें स्नेह होई, सरल सुभाव होइ. तो वासों अपराध हू परे तो श्रीठाकुरजी कृपा करें. वाको बिगार न होई.

वार्ताप्रसङ्ग ४ : और एक समें जगन्नाथ जोसी अपने घर उत्थापन पाछें भोगके किंवाड़ खोलें. सो दरसन होत हते ता समें जगन्नाथ

जोसी श्रीठाकुरजीकों मूठा करत हते. ता समे एक गरासिया रजपूत दरसनकों आयो हतो. सो दरसन करत हतो. और हू दस - पांच वैष्णव दरसन करत हते. ता समें एक डोकरीने फूलकी माला लेकें दूरि तें श्रीठाकुरजीके ऊपर डारि दीनी. सो श्रीठाकुरजीके सिंघासन ऊपर आइ परी. तब जगन्नाथ जोसीकों बहोत रीस चढ़ी. सो माला लेकें बाहिर फेंकी. सो दूसरो एक रजपूत हतो ताके गरेमें जाइ परी. तब वा गरासियाने अपने मनमें कही जो मोकों जोसीनें माला नाही दीनी तो मैं सही रजपूत, जो जगन्नाथ जोसीकों ठौर मारूं. सो तरवार लिये फिरें. परन्तु दाव न पावे, जो घात करें. सो एक दिन जगन्नाथ जोसी बाहिर भूमि, दांतिन करिकें गाम तें आवत हते. सो गरासिया रजपूतनें पाछेंसों आई जगन्नाथ जोसीके उपरि तरवार चलाई. तब श्रीठाकुरजी पाछें तें हाथ वा रजपूतको ऊपर तें पकरि लियो. और कहें, याको मारे मति. तब वह रजपूत बहोत कियो परि हाथ उपर रहि गयो. चले नाहीं. तब जगन्नाथ जोसी पाछें फिरकें देखे तो श्रीठाकुरजी श्रमित ठाढ़े हैं. तब जगन्नाथ जोसीने कही, फिटरे पापी ! यह कहा कियो ? तब वह रजपूत तरवारि डारिकें जगन्नाथ जोसीके पाइन पर्यो ?

भावप्रकाश : काहेतें ? रजपूतनें जानी, ये महापुरुष हैं. मेरो हाथ चल्यो नाहीं. तब तरवारि भूमिमें डारि पांवन पर्यो.

पाछें कह्यो, मेरो अपराध क्षमा करो. बहोतेरो जगन्नाथ जोसी कहें, परन्तु छोड़े नाहीं. कह्यो, मोको सेवक करो. तुम भगवदीय हो, मै पापी हों. सो तुम्हारी कृपातें मेरो उद्धार होइगो. नाहीं तो मेरो ठिकानो नाहीं. तब जगन्नाथ जोसीकों दया आई. कहे, घर चलो. तुमको नाम सुनावेंगे. पाछें घर आइ आपु न्हाये. उह रजपूतकों न्हवाईवके नाम सुनाये. पाछें श्रीगुसांईजी गुजरात पधारें तब रजपूतकों श्रीगुसांईजीके पास नाम सुनवाये. सो आछो वैष्णव भयो.

भावप्रकाश : सो भगवदीयके पीछें बैर भावसों मारनकों फिर्यो सो उद्धार भयो. तो जो प्रीति करि भगवदीयको सङ्ग करे तो वाको उद्धार होई यामें कहा कहनो ? और जगन्नाथ जोसीकों मन्दिरमें श्रीठाकुरजीकी आगें क्रोध चढ्यो तातें माला बाहिर फेंकी. सो क्रोध चाण्डालको रूप है. सो अपराध पर्यो ताको दोष निवृत्त करनेके लिये उह रजपूत द्वारा जगन्नाथ जोसीके ऊपर तरवार चलवाई. तामें अपराध दूरि भयो. उह रजपूतको उद्धार करनो ! तातें वाकी

बुद्धि फिरि गई. जगन्नाथ जोसीके पाइन पर्यो. उह रजपूत लीला सम्बन्धी तो हतो नाहीं. मुक्तिको अधिकारी हतो. काहेतें ? यह वचन रासपञ्चाध्याईमें हैं ''काम क्रोध भयं स्नेहमैक्यं सोहृदमेवच''. सो क्रोध करि उह रजपूतको मुक्ति भई. तातें जगन्नाथ जोसी श्रीआचार्यजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे.

३७-जगन्नाथ जोसीकी माता

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी सेवकनी, जगन्नाथ जोसीकी माता, खेरालुमें रहती तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

वार्ताप्रसङ्ग १ : ताकों दोई बेटा हते. तामें बड़ो बेटा नरहरि जोसी, छोटो जगन्नाथ जोसी.

भावप्रकाश : सो लीलामें माता तो श्रीस्वामिनीजीकी सखी हैं. 'छबिसिन्धि' इनको नाम हैं. और छबिसिन्धिकी दोई सखी हैं. सो उनको नाम एकको 'गन्धरेखा' एकको नाम 'सौरभी' है. सो माता छबिसिन्धिको स्वरूप और नरहरि जोसी गन्धरेखाको प्रागट्य. और जगन्नाथ जोसी सौरभीको प्रागट्य. सो नरहरि जोसी जगन्नाथ जोसीको पिता महादुष्ट हतो. कोई साधु सन्त पण्डित ब्राह्मन वैष्णवको मानतो नाहीं. गाममें कोई आवे तो दुःख देई. रात्रिकों चोरी करावें. लूटि लेई. तातें भगवद्धर्मको द्वेषी हतो. सो श्रीआचार्यजी अड़ेल तें द्वारिका पधारे. सो कछुक दिन गुजरातमें खेरालू गाममें आये. एक बगीचामें गाम बाहिर उतरे ! तहां जगन्नाथ जोसीके माता जल भरनकों आई. सो श्रीआचार्यजी श्रीसुबोधिनीजीकी कथा जज्ञपत्निको प्रसङ्ग कहें. सो वह बाई सुनिके बहोत प्रसन्न भई. तब श्रीआचार्यजीसों बिनती करि कही, जो महाराज ! मोकों सेवक करिये. और इहां रहो मति मेरो पति महादुष्ट है. जानेगो तो रात्रिकों चोरी करावेगो. और लूटेगो. तब श्रीआचार्यजी कहें, उह कहां लूटेगो ? वासों तू जाई कहियो, श्रीआचार्यजी बागमें आये हैं. और तू दैवी जीव है. परन्तु अबहि तोकों सरन कैसे लेंइ ? धर्मको विरोधी पति है. सो बरस पांचमें मरेगो. और तेरी दोई बेटा होइंगे ? सो पतिके मरे पाछें अड़ेलमें आइयो. तोकों सेवक करेंगे. अबहि सेवक करनो उचित नाहीं. तब वह बाइ दण्डोत् करि जल भरिकें घर गई. पाछें श्रीआचार्यजी तीन रात्रि खेरालूमें रहे, परन्तु उह बाईको पति सुन्यो ताऊ नाहीं आयो. तो पाछें आपुतो श्रीद्वारका श्रीरनछोडजीके दरसनको पधारे. पाछें उह बाईको गर्भ रह्यो सो बरस दिनके भीतर नरहरि जोसी भये. ताके तीसरे बरस जगन्नाथ जोसी भये ? पाछें जब पांच बरस भये तब एक सन्यासी पण्डित खेरालूमें आयो. सो सगरे ब्राह्मण सो चरचा करी. पाछें रात्रिको

जगन्नाथ जोसीको पिता उह सन्यासीकों लूटन गयो. तब उह सन्यासी पास गड़सा हतो, तासों मार्यो. सो सन्यासी डरपिकें भाजि गयो. पाछें सबेरो भये लोगननें जान्यो. सो ज्ञाति ब्राह्मननें मिलिकें वाको संस्कार कियो. तब उह बाईकों श्रीआचार्यजीके बचन सुधि आये, जो आपु श्रीमुखसों कहे हते तेरे दोई बेटा होइंगे सो भये. पति पांच बरस पाछें मर्यो. अबमें तीरथको मिस करि अड़ेल जाइकें श्रीआचार्यजीकी सेवकनी होई कुतारथ होऊं. अब मेरे प्रतिबन्ध तो कोई है नाहीं. तब अपने मनके प्रमानिककों घर सोंपि, दोऊ बेटानकों घरमें राखे. सो द्रव्य बहोत हतो कछुक घरमें राख्यो कछुक सङ्ग ले तीरथराज प्रयाग न्हाईवेको मिस करि गाड़ी भारें करि गुजरातसों चली. सो कछुक दिनमें प्रयाग आइ न्हाये. तहां दान पुन्य कछुक करि अड़ेलमें आई, श्रीआचार्यजीको दण्डोत् करि बिनती कियो. महाराज ! आपु कहे सो सब भयो. दोऊ बेटा हू भये, पति हू मर्यो अब मेरे प्रतिबन्ध कछू नाहिं है. तातें आपु साक्षात् पुरुषोत्तम हो. मोकों सरनि लेउ. जन्म सगरो वृथा गयो. तब श्रीआचार्यजी उह बाईकों श्रीजमुनाजीमें न्हवाय नाम निवेदन करायो. और कहे तू भगवद सेवा करि. तब श्रीआचार्यजीसों उह बाई कहें आपु सेवा पधराई देउ. मैं सेवा करो तब श्रीआचार्यजी कहें प्रयागमें जाइ भगवद् स्वरूप ले आवो. तब वह बाई प्रयागमें गई. एक कसेरेके पास रहि पुष्टिमार्गकी रीति सब सीखिकें पाछें बिदा होइ गुजरात आई. राजसेवा मण्डानसों प्रीति पूर्वक (सेवा) करन लागी. कछुक दिनमें सानुभावता श्रीठाकुरजी जनावन लागें.

पाछें वाके दोऊ बेटा बड़े भये. नरहरि जोसी और जगन्नाथ जोसी. तब इनसों माताने कही तुम श्रीआचार्यजीके सेवक अड़ेल जाइकें होई आवो. पाछे भगवद् सेवा करो. और एक यह मोहौर मेरी ओरकी भेट करि मेरी दण्डोत् करियो. श्रीआचार्यजीकों साक्षात् पुरुषोत्तम जानियो. तब दोउ नरहरि जोसी जगन्नाथ जोसी गुजरात सो चलें. सो लाठी पोली हती बांसकी, तामें मोहौर धरि लीनी. सो कछुक दिनमें अड़ेल आइकें पूछे, जो श्रीवल्लभाचार्यजी कहां है ? तब आपु तो पुरुषोत्तमपुरी श्रीजगन्नाथजीके दरसनकों पधारे हते. तब दोई भाई मिलिकें विचार किये, जो घर जाइंगे तो माता खीजेगी, जो तुम सेवक भये बिना क्यों आये ? तातें आपुन तो पुरुषोत्तमपुरी आये. तब पूछें जो श्रीआचार्यजी इंहा कौन ठौर बिराजत हैं ? तब एक वैष्णव मिलि गयो. सो बताई दियो. तब दोउ जने आयकें श्रीआचार्यजीके दरसन किये. तब श्रीआचार्यजी दोउनसों पूछें, जो तुम्हारी माता आछे हैं. तब दोऊ जने आश्चर्य पायकें चक्रत होइ रहें. जो हमसों कबहू श्रीआचार्यजीका मिलाप भयो नाहीं. सो माताने कही, साक्षात् भगवान् श्रीआचार्यजी हैं. सो ठीक है. पाछे दोऊ भाई कहे, महाराज ! आपकी कृपा तें आछे हैं. तब श्रीआचार्यजी कहें, तुम श्रीजगन्नाथजीके दरसन करि आये ? तब दोऊ भाईनें कही महाराज ! अबहि तो

हम दरसन नाहीं किये. सूधे आइकें आपुके पास चले आये हैं. तब श्रीआचार्यजीने कही, जाओ दरसन करि आवो. तब दोउ भाई श्रीजगन्नाथजीके दरसन किये. सो तहां श्रीआचार्यजीके श्रीजगन्नाथजीके पास ठाड़े दरसन भये. तब दोउ भाई कहें, हमें तो घर दरसन करें कदाचित् दूसरो मारग होइगो तो मारग पधारे होइगे. तब उहां ते दोउ भाई दौरे, श्रीआचार्यजीके पास आई देखे, तो श्रीआचार्यजी बिराजे हैं. तब चक्रत होइके देखन लगे. तब श्रीआचार्यजी पूछे, जो जगन्नाथरायजीके दरसन करि आये ? तब दोऊ जनें कहें, हां महाराज ! दोऊ जने दरसन करि आये. तब श्रीआचार्यजी कहे, तुम्हारे मनको सन्देह निवृत्त भयो ? तब दोऊन बिनती करी, महाराज ! हम अज्ञानी हैं. जो सन्देह किये. आपु साक्षात् पुरुषोत्तम हो. तब श्रीआचार्यजीने कही, हमारी भेंट तिहारी मातानें एक मोहौर पठाई है सो करो.

भावप्रकाश : दोऊ भाई याके लिये मोहौर भेंट न करी हती, जो इश्वर होइगें तो मांगि लेइंगे. तब दोऊ भाईकों (और हू) विश्वास भयो.

तब मोहौर भेंट धरिकें बिनती किये, महाराज ! हमको कृपा करिके सेवक करिये. तब श्रीआचार्यजी दोऊ जनेनसों कहे, जो जाउ न्हाइ आवो. सो न्हाई आये. पाछें श्रीआचार्यजीने दोऊ जनेनकों नाम निवेदन कराये. पाछें कितनेक दिन श्रीआचार्यजीके दरसन किये. पाछें बिदा होईकें दोऊ भाई चलें. सो खेरालू गाममें अपने घर आई मातासों सब प्रकार कहे. जो हम अज्ञानी हैं. परि अपुनो माहात्म्य श्रीआचार्यजी हमकों दिखाइ हमारो सन्देह निवृत्त किये. तब माताने कही मैं तुमसों पहले ही कही हती, जो श्रीआचार्यजी पूरन पुरुषोत्तम हैं. यामें सन्देह क्यों किये ?

भावप्रकाश : श्रीआचार्यजी दोऊ भाईकों माहात्म्य यातें दिखाये, जो सरल सुभाईके मुग्ध वैष्णव हैं. सो कोई और मारगको माहात्म्य देखें तथा कछू चेतक काहूको देखें तो भटकें नाहीं. काहेतें श्रीआचार्यजीका माहात्म्य हृदयमें दृढ़ भये. इनको लौकिक वैदिक सब तुच्छ लागन लाग्यो. यह दृढ़ताके लिये इतनो माहात्म्य दिखाये.

पाछें माताकी आज्ञा प्रमान सेवा करन लागें. सो माता ऐसी श्रीआचार्यजीकी कृपापात्र भगवदीय हती. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिये.

३८-सेवक नरहरि जोसी

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुन के सेवक नरहरि जोसी, जगन्नाथ जोसीके भाई बड़े तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : इनको लीलाको अलौकिक स्वरूप उपर इनकी माताकी वार्तामें कहि आये हैं.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो नरहरि जोसी एक समें श्रीजगन्नाथजीके दरसनके मिस पुरुषोत्तमपुरी श्रीआचार्यजीके दरसन अर्थ चले. सो जब पटना तें आगेकों चले, जो मजलि जाइ उतरे. सा न्हायकें सामग्री रोटी दारि किये. श्रीठाकुरजीकों भोग धरे. ता समें एक रूख परतें एक बरस दसको बालक परम सुन्दर नरहरि जोसीके आगें आइ हाथ पसारिकें मांग्यो. तब नरहरि जोसी आश्चर्य पाये, जो यह कौन हैं. पाछे भोग सरायके चुपरी दोई रोटी उपर दारि धरिकें उह बालकके हाथ पर दिये. तब उह बालक उहि रूख पर चढ़ि गयो. सा अन्तर्धान व्है गयो. सो फेरि नरहरि जोसी देखे तो रूख बालक नाहीं है. पाछे दूसरे दिन फेरि मजलि पर जाई उतरे. न्हाईके रसोई किये भोग धरें. तब फेरि रूख पर तें उह बालक उतरके नरहरि जोसीके पास आगें आइ हाथ पसारिके मांग्यो. तब नरहरि जोसी मनमें बिचारि कियो, जो कोऊ छलावा होइ तो देनों नाहीं. यह बिचारीकें नरहरि जोसी कछू न दियो. भोग सराईकें गाईको भाग काढ़ि आपु महाप्रसाद लेन बैंठे. तब श्रीठाकुरजी बालक भेखसों वैसेही उह रूख पर चढ़ि अन्तर्धान होई घरमें जगन्नाथ जोसीसों कहे, मैं नरहरि जोसी पास जाई हाथ पसारिकें काल्हि, आजु मांग्यो. सो काल्हि तो दोई रोटी और दारि दिये. आजु कछू नाहीं दिये. सो फिरि आयो. तब जगन्नाथ जोसी वह महिना वह तिथि लिखि राख्यो, जो नरहरि जोसी जब आवेंगे तब पूछूंगो. सो नरहरि जोसी पुरुषोत्तमपुरी जाई तहां श्रीआचार्यजीके दरसन करे. पाछें श्रीजगन्नाथरायजीके दरसन करि कछुक दिन वहां रहि उहां तें चले. सो कछुक दिनमें खेरालू अपने घर आये. तब जगन्नाथ

जोसीनें श्रीआचार्यजीके सकल समाचार पूछे. सो नरहरि जोसीनें सब कहे, जो मायावाद खण्डन किये. और भली भांतिसों बिराजत हैं. तब जगन्नाथ जोसीने नरहरि जोसीसों पूछी, जो फलाने दिन तुम्हारे पास कौन मांगन आयो सो तुम नाहीं दिये ? तब नरहरि जोसी कहें, पटनाके आगें चल्यो तब पहले दिन एक बरस दसको बालक आई मेरे आगें हाथ पसारि मांग्यो, सो दोई रोटी दारि ऊपर धरिकें उह बालकके हाथ दिये. सो उह रूख पर चढ़ि गयो. सो फेरि न दीस्यो. पाछें दूसरी मजलि फेरि रूख पर तें उह बालक आयो. तब मैनें बिचार कियो. जो उह छलावा होई तो देनो उचित नाहीं. और जो भगवद् स्वरूप होई तो महाप्रसाद कैसे देउं ? यह बिचारके मैं कछू न दियो. तब वह बालक रूख पर चढ़ि अन्तर्धान व्है गयो. सो या प्रकार मनमें सन्देह भयो तब दूसरे दिन नाहीं दियो. तब जगन्नाथ जोसीने कही, तुम बुरी करी. वे तो श्रीठाकुरजी आपु आई हाथ पसारके मांगे. तुमने नाहीं दियो सो आछी नहीं करी. और हम तुम प्रथम श्रीआचार्यजीके दरसनकों श्रीजगन्नाथजी गये तब मातानें एक मोहौर भेंट दीनी सो हम छिपाइ राखें. यही सन्देह भयो, जो ईश्वर होइंगे तो श्रीआचार्यजी मांगि लेइंगे. सो मोहौर मांगि लीनी. और श्रीजगन्नाथरायजीके मन्दिरमें हू दरसन दीनों. और घरहू एक कालावच्छिन्न दरसन दे सन्देह मिटाये. सो अपुने ऐसे पुरुषोत्तम श्रीआचार्यजीके सेवक हैं सो छलावा निकट आवे नाहीं. तुम छलावाको सन्देह किये सो आछो न किये. श्रीआचार्यजीकी का'नि तें हमारे तुम्हारे पास श्रीठाकुरजी कृपा करिकें मांगि लेत हैं. तब नरहरि जोसीको सन्देह गयो.

भावप्रकाश : यह वार्ताको अभिप्राय यह है, जो जगन्नाथ जोसी पर सेवक होत ही कृपा भइ. सो श्रीठाकुरजीमें चित्त लागि गयो. और नरहरि जोसीके मनमें इतनी जोग्यता हती, जो मैं बड़ो भाई हों, जगन्नाथ जोसी छोटो भाई है. यातें मैं बहुत समुझत हों. तातें नरहरि जोसीकों जदपि श्रीठाकुरजीने अपनो स्वरूप जतायो. बालक होई रूख पर तें आइ मांगे. तउ नरहरि जोसी श्रीठाकुरजीकों जाने नाहीं. तब श्रीठाकुरजी जगन्नाथ जोसी सो कहें. नरहरि जोसीसों न बोले. पाछें जब घर आये तब जगन्नाथ जोसीने कही, तुम सन्देह क्यों कियो ? बुरी करी, जो श्रीठाकुरजीकों ना जान्यो. जगन्नाथ जोसी बड़े कृपापात्र हैं. या प्रकार अपनकों हीन मानि सेवा किये. ता दिन ते जैसे जगन्नाथ जोसीसों श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावते तैसे नरहरि जोसीकों हू सानुभावता जनावन लागें. तातें वैष्णवकों छोटो जानि अपनी योग्यता जाननि नाहीं. अपनें तें सगरे वैष्णवकों बड़े जानने. तब श्रीठाकुरजी कृपा करें. सिद्धान्त प्रगट किये.

वार्ताप्रसङ्ग २ : और एक समय नरहरि जोसी गुजरातमें अलियाना गाम गये. तहां नरहरि जोसीके जजमान हते. उनको नाम महीधर

हतो. और महीधरके एक बहनि फूलबाई हती. तिनसों नरहरि जोसीने कह्यो, तुम श्रीगुसांईजीके सेवक होउ. वैष्णव होऊ तो हमारो तुम्हारो मिलाप रहे. तब महीधर और फूलबाईनें कही, जो बहोत आछो, श्रीगुसांईजीको पधरावो. हम सेवक होइंगे. तुम्हारी कृपा तें वैष्णव होंइ तो जन्म सुफल होइ. या प्रकार प्रसन्न भये.

भावप्रकाश : काहेतें ? दोउ दैवी जीव हैं, लीलामें श्रीचन्द्रावलीजीकी सखी हैं. महीधरको नाम लीलामें 'कुरङ्गाक्षी' है. और फुलबाईको नाम 'चपलनैनी' है. सो ये सुन्दर बहोत. नेत्र इनके परम सुन्दर हैं. सो इनके मनमें सुन्दरताको गर्व भयो. तातें श्रीचन्द्रावलीजीके शाप तें भूमिमें प्रगटे. सो पूर्व लीलाको सम्बन्ध है. ताते महीधरको ब्याह होत ही स्त्री मरि गई. माता - पिता हू मरि गये. एक महीधर और फूलबाई ये दोउ भेले रहते. पिताके द्रव्य बहोत हतो. सो बैष्णव होनकी कही, तब दोउ भाई - बहिन बहोत प्रसन्न भये.

पाछें कहें, श्रीगुसांईजीकों बेगि पधरावो, तब नरहरि जोसी खेरालूमें आइ श्रीगुसांईजीकों बिनती पत्र लिखे. तामें लिखें, जो तुम कृपा करिकें गुजरात पधारो तो कितनेक जीवनको कल्यान होइ. तब श्रीगुसांईजी पधारे. खेरालूमें जगन्नाथ जोसीके घर उतरे. तब नरहरि जोसी अलियाना गाममें जाई महीधर और फूलबाईसों कहें, बधाई है. श्रीगुसाईजी खेरालू गाममें जगन्नाथ जोसीके घर पधारे हैं. तब फूलबाईने महीधरसों कही, जो अब कहा करिये ? तब फूलबाई तें महीधरने कही, जो बहनि ! तू चिन्ता मति करै. रुपैया मोहौरकी खिचरी करि श्रीगुसांईजीकों न्यौछावरि करत अपने घर पधराऊंगो.

भावप्रकाश : यामें यह जताये, जो इतनी न्योछावरि करुंगो तो भेंटकी कहा सन्देह करति हैं ?

यह सुनिकें फूलबाई नरहरि जोसी मनमें बहोत प्रसन्न भये, जो महीधरकी प्रीति तो आछी है. पाछें खेरालूमें आई नरहरि जोसी, महीधर, फूलबाई दण्डौत् करि बिनती करिकें अलियाना गाममें पधराये. तब श्रीगुसांईजी पधारे. सो महीधर और फूलबाई रुपैया मोहौरकी खिचरी करि श्रीगुसांईजीके ऊपर न्यौछावर करत लूटावत अनेक बाजिन्त्र गानादिक करत घरमें पधराये. पाछें महीधर और फूलबाईकों

न्हवाईकें नाम निवेदन करवाये. इनके घरमें प्रथम श्रीठाकुरजी हते. सो मर्यादा रीतिसों श्रीलालजीकी पूजा करतें. सो श्रीठाकुरजीकों श्रीगुसाईजी पञ्चामृत स्नान कराई पाट बैठारे. महीधर और फूलबाईके माथे पधराये. महीधर और फूलबाई श्रीगुसांईजीको बहोत भेट करिकें प्रीतिसों पांच दिन घरमें राखे. पुष्टिमारगकी रिति सब सीखें. पाछें श्रीगुसांईजी द्वारका पधारे. तब महीधर फूलबाईनें नरहरि जोसीसों बहोत बिनती किये, जो तुम्हारी कृपातें हम वैष्णव भये. अब हमारो नयो जन्म भयो. श्रीगुसांईजी कृपा किये.

भावप्रकाश : सो वैष्णवको सङ्ग ऐसो है. ''आर्द्रार्द्री करणत्वं'' भीज्यो वस्त्र सूके वस्त्रकों लगें, तो सूको हू भींज्यो होई. तेसे वैष्णवके सङ्ग तें वैष्णव होई. जैसें गिरिराजके सङ्ग तें पुलिन्दिकों भगवद्भाव उत्पन्न भयो. तातें सर्वोपरि तादृशी वैष्णवको सङ्ग है.

पाछें नरहरि जोसी, भाई - बहनिसों बिदा होइ अपने गाम खेरालूमें आये. तब जगन्नाथ जोसीसों नरहरि जोसीने कही, जो महीधर और फूलबाईकी प्रीति न कही जाइ, जो भले वैष्णव भये. तब जगन्नाथ जोसी कहे, श्रीगुसांईजी जापर कृपा करें सो भगवदीय होइ यामें कहा कहनो ? पाछें सेवा करन लागें.

वार्ताप्रसङ्ग ३ : ता पाछें केतेक दिनमें अलियाना गाममें आगि लागी. प्रातः काल समें नरहरि जोसी खेरालु गाममें बाहिर जाई देह - कृत्य तलाव पर करि, नित्य - कर्म करि, फूलकी डालियामें फूल - तुलसी धरि हाथमें लिये घर आवत हते. सो ता समें नरहरि जोसीनें जानी, जो अलियाना गाममें आगि बहोत लगी है. सो मनमें बिचारे, जो अबहिं महीधर, फूलबाई नये वैष्णव भये हैं. सो इनको घर जरेगो तो कहेंगे, जो हम वैष्णव भये तातें उपद्रव भयो. ऐसो मनमें आवेगो तो इनको धर्म जात रहेगो. बिगार होइगे. यह बिचारि आछी धरती देखि तुलसीकी डालियां भूमिमें धरि झारिसों जल ले आसपास कुण्डाली करि पानी डारयो किये. जब अलियाना गाममें आगि बुझी जानें, तब महीधरके घर या प्रकार बचाइ, पाछें नरहरि जोसी फूल लें, तुलसी लें अपने घर आये. पाछें कितनेक दिन पाछें अलियाना गाममें महीधरके घर नरहरि जोसी गये. तब महिधर और फूलबाईने नरहरि जोसीसों कह्यो, जो इहां अग्निको उपद्रव बहोत भयो हतो. सो श्रीगुसांईजीकी कृपा तें हमारो घर बच्यो. वैष्णव भये तातें बचे, नाहीं तो कहा जानिये कहा होतो ? तब नरहरि जोसी कहें, श्रीगुसांईजी

परम दयाल हैं. वैष्णवकी सदा रक्षा छाया करत ही आये हैं. तातें वैष्णवको सदा कल्याण ही हैं. या प्रकार भाई - बहनिको समाधान करिकें पाछें विदा होई खेरालु अपने घर आये. तब दोऊ भाई घरमें सेवा सो पहोंचिक बैठें. तब नरहरि जोसीने जगन्नाथ जोसीसों कह्यो, जो, एक दिन अलियाना गाममें आगि लागी. तब मैं प्रातःकाल तलाब पर तें नित्य कर्म करि आवत हुतो. सो फूल तुलसीकी डालियां मेरे हाथमें हती. सो मैं अलियाना गाममें आगी लागी जानि तुलसीकी डालिया भूमिमें धरि, झारीसों जल लें तुलसीके आसपास पानिको कुण्डाला करि तासों महीधर फूलबाईको घर बचायो. तब नरहरि जोसीसों जगन्नाथ जोसीने कही, इतनों हठ करिकें श्रीठाकुरजीकों श्रम करायो सो उचित नाहीं. यह अपुने मारगकी रीति नाहीं है. और आपुन कौन हैं, जो बचावे ? श्रीठाकुरजी सर्व सामर्थ्य युक्त हैं. सो सब लीला करत हैं. तब नरहरि जोसीने जगन्नाथ जोसीसों कही, मैं श्रीठाकुरजीसों हठ नाहीं कियो. मेरे मनमें यह आई, जो महीधर फूलबाई अबहि नये वैष्णव भये हैं, जो इनके घरमें अग्निको उपद्रव होइ तो कहूं इनके मनमें यह आवे, जो हम अबहि वैष्णव भये हैं. अबहिं आगि लागी. सो एतन्मार्गमें तें प्रीति घटे. सो इनकों भगवद् प्राप्तिमें अन्तराइ होई. अब इनकों दृढ़ विश्वास श्रीगुसांईजीमें और पुष्टिमारगमें भयो, जो वैष्णव भये तो बचे. यह दृढ़ताके लिये मैं इतनो कियो. और मोकों कछू प्रयोजन नाहीं. तब दोऊ भाई हसिकें चुप व्है रहे. सो प्रभु बड़े कौतकी हैं. इनके इच्छा तें सब होत हैं. सो ये नरहरि जोसी श्रीजगन्नाथ जोसी और इनकी माता ये तीन्यों बड़े भगवदीय हैं. चाहे सो करें. इनके सङ्ग ते महीधर और फूलबाईकों श्रीठाकुरजीमें दृढ़ विश्वास भयो. प्रीतिसों सेवा करन लागे. पाछें कछुक दिनमें श्रीठाकुरजी महीधर फूलबाईसों सानुभावता. जनावन लागें. तातें इनकी वार्ता कहां लों कहिये. नरहरि जोसी जगन्नाथ जोसी और इनकी माता मिलिके वार्ता एक जाननी. ....वार्ता ।।३१।।

३९-राना व्यास सांचोरा

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, राना व्यास सांचोरा ब्राह्मन गोधराके वासी, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ये राना व्यास लीलामें इन्दुलेखा श्रीस्वामिनीजीकी सखी है. सो बाकी सखी ‘नागवेलिका’ इनको नाम हैं. सो बरस बारहके ये राना

व्यास भये. तब एक बैरागीको इनकों सङ्ग भयो. सो बैरागी चारों धाम फिरि आयो हतो. सो बद्रीकाश्रमकी बात, श्रीजगन्नाथरायजीकी बात, रङ्गगनाथजीकी बात, श्रीरनछोडजीकी बात, माहात्म्य कह्यो. सो राना व्यास अर्द्धरात्रिकों उठि चले. सो पहले बद्रीकाश्रम गये. तहां बहोत मारगमें दुःख पाये. सो बद्रीनाथजीके दरसन किये. परन्तु मनमें प्रसन्न न भये, जो इहां सीत बहोत और मारग एसों है, जो प्रान जाई. पाछें श्रीजगन्नाथजीको गये. तब दरसन करिकें कछुक प्रसन्न भये. पाछें रोगसों मांदे बहौत परे. सो एक महिनामें आछे भये. तब मनमें कहें, फेरि मांदो परूंगो तो मरूंगो. तातें उहां तें चलें. सो दक्षिणमें आई श्रीरङ्गनाथजीके दरसन किये. तब मनमें कहें, इनको दरसन कैसे करों ? चरनके करों तो मुखके न होंइ. मुखके करों तो चरनके न होंइ ? ए बड़े बहोत हैं. तातें अब द्वारिका चलूं. सो द्वारिका आये. सो श्रीरनछोडजीके दरसन किये. सो चरन छूइवेकों कहे. तब उहां पण्ड्यानें कही, इतनों द्रव्य खरचो तब चरन छूवों. तब राना व्यास मनमें विचारे, जो इहां ब्रह्मचारी द्रव्यके लिये चरन छूवन देत हैं. और ठाकुरको द्रव्य ले जांई. तातें यहां हू रहनो उचित नाहीं. काहेतें ? जहां चित्तमें दोष उपजे उहांके रहें कल्यान न होई. बिगार होई. यह बिचारि द्वारिकासों चले. सो गुजरातमें गोधरा अपने घर आये.

सो माता - पिता बहोत वृद्ध भये हते. सो अठारह बरसमें राना व्यास आये. तब माता - पितानें कही, बेटा ! तू कहां निकसि गयो ? घरमें रहेतो तो तेरो ब्याह करते. अजहू घरमें रहो. अपनी ज्ञातिकी रीति चलो तो ब्याह होई. तब राना व्यास कही, मैं तो सदा ब्रह्मचारी रहुंगो. ब्याह करिकें कहा नर्कमें परों ? मैं तो इन्द्रजीत हों. तब माता - पिता चुप होइ रहे. पाछें माता- पिताकी देह छूटी. सो संस्कार करि मनमें प्रसन्न भये, जो बन्धन कट्यो. अब मैं चाहुंगो सो करुंगो दस पांच हजार रुपैया हू है. या प्रकार इन्द्रजीतको अहङ्कार हतो. द्रव्यको अहङ्कार भयो. सो मारे गर्वके काहूसों बोले नाहीं, बड़े गाममें सिद्ध कहावतें. और जगन्नाथ जोसी हू राना व्यास पास नाम पायो हतो. पाछें माताके कहें सो जगन्नाथ जोसी श्रीआचार्यजीके सेवक भये. पाछें राना व्यास पढ़े हू कछूक हते. सो मनमें आई, जो या गाममें तो सगरे मूरख हैं. कासीमें चलि काहू सो वाद करों. यह अङ्कार करी राना व्यास घरतें कछूक द्रव्य ले काशीमें बड़े - बड़े पण्डित जहां बाद करते तहां गये. तहां हारे सो लाज लागी. तब मनमें बिचार्यो. जो अर्द्ध रात्रि समें गङ्गाजीमें डूबि मरुंगो. सो संज्ञा समें भूखे ही गङ्गाजीके तीर हनुमान घाट है तहां जाइ बैठें, कहे, जो रात्रि होई जाने नाहीं तब गङ्गाजीमें डूबों. तहां श्रीआचार्यजी पधारे. सो एक वैष्णवनें श्रीआचार्यजीसों पूछी, जो महाराज ! गङ्गाजीमें डूब मरे ताकों कछू फल गङ्गाजी देई. तब श्रीआचार्यजी कहे, जो अहङ्कार करिकें काहूसों लरिकें डूबेको फल नाहीं. सर्पकी जोनि पावें. आत्महत्या लागें. महादुष्ट होई. जो ऐसे मरें. रोगसों ग्रसित होई. दैन्यता पूर्वक सन्यास लेई डूबेतो कछू फल मिलें, जो मरति वेर ठाकुरमें मन रहे तो. नाहीं तो दुर्गति होई. यह बात सुनतहि राना व्यासने जानी, जो ये महापुरुष हैं. यों जानि आइकें श्रीआचार्यजीसों बिनती करी, जो

महाराज ! भली भई, जो यह वैष्णवने बात पूछी, मैं गङ्गाजीमें डूबन अर्थ भूखो सबेरे से बैठो हूं. सो अर्द्ध रात्रि जाई तब डूबूं. परन्तु अब मेरो उद्धार होइ सो प्रकार बतावो. आपुकी सरनि हों. तब श्रीआचार्यजी कहे, तुमहू तो नाम देत हो ? स्वामी कहावत हो, अपनेकों बहोत योग्य मानत हो. सो सेवक होनकी बात क्यों कहत हो ? तब राना व्यास बिनती करी, महाराज ! अहङ्कार तो बहोत हतो परन्तु कासीमें जहां - जहां पण्डितनसों बाद कियो तहां - तहां हार्यो. तातें गङ्गाजीमें डूबनकों ठाढ़ो हों. सो मेरे भागिमें कछू आछो होनहार है, जो या समय आपुको दरसन भयो. सो मैं बहोत दीन हों, अनाथ हों. सो आपु मो पर कृपा करो. तब श्रीआचार्यजी राना व्याससों कहें, जो, जा, गङ्गाजीमें न्हाइ आव. तब राना व्यास गङ्गाजीमें न्हाइ आये. तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाइ ब्रह्मसम्बन्ध कराये. और आज्ञा दिये. अब जहां पण्डितनसों हारे हो तहां - तहां जाईके सगरे वाद करिकें जीति आवोगे. पाछे रात्रिकों राना व्यास रसोई करिभोग धरिकें महाप्रसाद लिये. मनमें आनन्द भयो. पाछें प्रातःकाल न्हाइके श्रीआचार्यजीको दण्डोत् कियो. तब श्रीआचार्यजी चतुःश्लोकी सिखाय कहें, जो जा, पण्डितनसों वाद करि आव. सो सगरे पण्डितनको एक ही वचनमें जीते. श्रीआचार्यजीके प्रमेय बल प्रताप तें. पाछें तीसरे पहर आय श्रीआचार्यजीकों दण्डोत् करि बिनती कियो. तब श्रीआचार्यजी कहें, पण्डित तो जीते परन्तु अहङ्कार मति करियो. अहङ्कार जा वस्तुको कर्यो सोई वस्तुको नास होइगो. तब राना व्यासने बिनती करी, महाराज ! अब अहङ्कार न करूंगो, अहङ्कार करि बहोत दुःख पायो. अब एसी कृपा करो, जो कछू भगवद् अनुग्रह होई. मेरो जनम एसोई बीत्यो भटकतें. तब श्रीआचार्यजी कहें, कहूं तें भगवद् स्वरूप ले आवो. तब राना व्यास बजारमें जाई एक लालजीको स्वरूप न्यौछावर देकें ले आये. तब श्रीआचार्यजी पञ्चामृत स्नान कराइ राना व्यासके माथें पधराई कहें, अब तू बहोत भटक्यो. परन्तु अब घरमें जाई मन लगाईके भगवद् सेवा करो. तब राना व्यास श्रीआचार्यजीकों दण्डोत् करि बिदा होई अपने घर आये. पाछे सेवा करन लागें.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो प्रथम जगन्नाथ जोसी राना व्यासके पास नाम पाये हते. सो जब जगन्नाथ जोसी सुनें, जो राना व्यास श्रीआचार्यजीके सेवक व्है आये, तब जगन्नाथ जोसी गोधरा आये राना व्याससों मिले. सो दोऊ जनें बहोत प्रसन्न भये. पाछें राना व्यासके पास जगन्नाथ जोसी बहोत रहते.

भावप्रकाश : सो राना व्यासके मनमें पण्डिताईको अहङ्कार तो दूरि भयो. परन्तु इन्द्रजीतको अहङ्कार हतो. सो श्रीठाकुरजीने यह अहङ्कार दूरि करिवेके लिये एक कौतुक रच्यो.

सो भगवद् इच्छा तें गोधराकी देसायनिसों राना व्यासको सङ्ग भयो. सो बात काहूने राना व्यासकी दरबारमें कही. सो वह हाकिमके प्यादे राना व्यासको लेंन आये. तब जगन्नाथ जोसीनें राना व्यासकों और देसायनिकों और गाम भजाइ दिये. और राना व्यासके घरमें जगन्नाथ जोसी रहे. भगवद् सेवा करि राज भोगसों पहोंचे. इतनेमें हाकिमके प्यादे आये. सो कहे, राना व्यास कहां हैं ? तब जगन्नाथ जोसीने कही, कहा काम है ? तब प्यादे कहें, राना व्यासने अन्याव कियो है सो हाकिम पास ले जाइंगे. तब जगन्नाथ जोसीने कही, राना व्यास कहूं गये हैं. चलो मैं हाकिमकों उत्तर दे आऊं. तब प्यादे जगन्नाथ जोसीकों लिवाइ जाय हाकिम आगें ठाढ़े किये. तब हाकिमने कही, जो राना व्यास कहां है, उनकों लावो ? राना व्यासने पराई स्त्रीसों अन्याव कियो है. इनकों क्यों न लाये ? ये तो जगन्नाथ जोसी हैं. इनकों तो नीके जानत हों. जो जाको नाम जगन्नाथ जोसी सो कबहू अन्याव न करें. तातें राना व्यासने अन्याव कियो है सो राना व्यासकों ले आवो. तब जगन्नाथ जोसीनें कही जो तुम मेरी बात सुनो. राना व्यासने अन्याव नाहीं कियो है. काहूनें झूंठे ही चुगली करी है. जाको नाम राना व्यास सो कबहूं अन्याव न करें. तब हाकिमने कही, कैसे जानिये, राना व्यास अन्याव नाहीं कियो है ? तब जगन्नाथ जोसी कहें, जो कहो तैसेही करूं. तब हाकिमने गाड़ीके पैयाको एक पहलू मंगायो. ताकों अग्निमें डारिकें तातो कियो. जब लाल भयो तब हाकिमने कही याकों उठाईकें डारो. न जरो तो राना व्यास सांचे. तब जगन्नाथ जोसी उह पहलूके पास आई ठाड़े होइकें कह्यो, जो राना व्यास अन्याव कियो होई तो मेरो हाथ जरियो. सो यह कहत ही अग्निमय पहलू सीतल व्हे गयो. सो जगन्नाथ जोसी हाथमें उठाइ उह पहलू गरेमें पहरि लिये. घरी एक ठाढ़े रहे. तब हाकिमने और सगरे लोगननें कही, जगन्नाथ जोसी काढ़ि, काढ़ि. तुम सांचे हो. तब जगन्नाथ जोसी कहें, यह कौनके गरेमें डारूं ? तब हाकिमनें बहोत मनुहारि करि बिनती करी. पाछें भूमि पर डारें. सो भूमि जरि उठी. तब सगरे आश्चर्य पायकें कहें, जो जगन्नाथ जोसी तुम धन्य हो. तुम सांचे हो. पाछें हाकिमने जगन्नाथ जोसीसों कही, मैं तिहारे ऊपर बहोत प्रसन्न हों तातें तुम कछू मांगो. तब जगन्नाथ जोसीने उह हाकिमसों कही, तिहारे पास जानैं राना व्यासकी चुगली करी है तासों कछू मति कहियो. यह मैं मांगि लेत हों. तब जगन्नाथ जोसीके ये बचन सुनिके हाकिम और सब प्रसन्न भये. कहे तुम धन्य हो. चुगलकों हू बचाये. नाहीं तो मैं वाकों मरबाइ डारतो ऐसे मनुष्य धरती पर कोई एक ही हैं. तब जगन्नाथ जोसी अपने घर आये. पाछें राना व्यास घर आये. जगन्नाथ जोसीसों कहे तुम मेरे लिये बहोत दुःख पाये. तब जगन्नाथ जोसी कहे, जो वैष्णव कबहू हीन

कार्य न करें.

भावप्रकाश : तब राना व्यासके मनमें इन्द्रजीतको अहङ्कार हतो सो छूटि गयो.

पाछें राना व्यास भगवद् सेवामें मन लगाये. तब श्रीठाकुरजी सानुभावता जतावन लागें.

भावप्रकाश : यह वार्तामें यह सिद्धान्त भयो, जो अहङ्कार, गर्व होई तहां ताई श्रीठाकुरजी अनुभव न जतावें. और अपने भक्तनको अहङ्कार आपुही कृपा करके दण्ड देइ छुडावत हैं. और वैष्णव सो कबहू हीन कार्य होई नाहीं. और कदाचित् भगवदीयसों खोटो काम कछू भयो होई तो मनमें दोष बुद्धि न करनो. (क्यों जो) भगवदीय ऐसो करे नाहीं. यामे भगवत्कृति जाननी. और जीवमात्र ऊपर दया राखनी. चोर होई चुगल होंई ताहूको अपने बसते बचावनो. रक्षा करनो. यह वैष्णवको धर्म है. इत्यादि सिद्धान्त प्रकय किये. और राना व्यास पहलें जब घरतें निकसे तब बद्रीनाथ, जगन्नाथ होई पाछें द्वारिकामें आये. तहां 'माधव सरस्वती' एक पण्डित ब्राह्मण हतो ताके सेवक भये नाम पाये हे. पाछें कासीमें श्रीआचार्यजीके सेवक भये. सो तो ऊपर कहि आये हैं.

वार्ताप्रसङ्ग २ : सो राना व्यास गोधरा तें सिद्धपुर जाइ रहें. सो एक दिन राना व्यास और जगन्नाथ जोसी सरस्वतीमें न्हाइकें बैठे सन्ध्यावन्दन करत हते. ता समें एक रजपूतानीको धनी मरि गयो सो वह सती होनको आई. तब जगन्नाथ जोसीने राना व्याससों पूछ्यो, जो यह सती होत है तिनको कहा प्रकार है ? तब राना व्यासने मूण्ड हलायकें जगन्नाथ जोसी सो कह्यो, जो प्रेतके सङ्ग वृथा यह मनुष्य देह जरावति है. ऐसी सुन्दर देह भगवद सेवामें लगें तो उद्धार होइ जाइ. प्रेतके सङ्ग जरति है. सो वृथा जन्म खोवति है. सो प्रकार मूंण्ड हलायकें राना व्यास कहे. ता समे उह रजपूतानीकी दृष्टि राना व्यास पर हती. सो मूण्ड हलावत देखत ही उह रजपूतानीको सत उतरि गयो. तब रजपूतानीनें साथके लोगनसों कह्यो जामें सती न होउंगी. मेरो सत उतरी गयो. तब लोगननें उह रजपूतानीसों कही, जो तोको घरमें तो जान न देंगे. तोको इहांई जरावेंगे. तब रजपूतानीने कही, जो मैं घरमें नहिं आऊंगी. मोको इहां नदीके तीर झोंपरी करि दीजो, इहां रहोंगी. और मोकों जोरावरि जरावोगे तो तुम सबनकों हत्या लगेगी. यह कहि सबनकों सोंह दिवाई. जो मोकों मति जरावो.

तब उह मृतकको जराय सरस्वती नदी पर एक झोंपरी बनायकें सगे सम्बन्धि अपने अपने घर गये. पाछें दूसरे दिन राना व्यास और जगन्नाथ जोसी सरस्वती न्हानकों गये. तब उह रजपूतानीनें राना व्याससों पूछी, जो काल्हि तुम मेरी ओर देखिकें मूण्ड कैसें हिलायो ? तब राना व्यास उह रजपूतानीसों कहें, हम तो आपुसमें एसी ही अनेक वात करत हसत हते. या बातमें तू कहां लेइगी ? तब उह रजपूतानीनें कही अब मोंसो दुराव क्यों करत हो ? तुमने मूण्ड हलाइकें बात सो मेरो सत उतरि गयो मैं जरी नाहीं. तातें मोसों यथार्थ बात होई अब, जो मोकों कर्तव्य होई सो कहो. सोई मैं करूं. तुमने अग्निमें जरत बचाई तो कृपा करि बात हूं कहि चाहिये. या प्रकार रजपूतानीने बहोत आग्रह कीनो. तब राना व्यासनें कही, हम आपुसमें यह कहत हते, जो मनुष्य देह परम उत्तम पाइकें वृथा प्रेतके सङ्ग जरत है. यह देहसों श्रीठाकुरजीको भजन स्मरन न कियो ताकों धिक्कार है. उह महादुष्ट है.

भावप्रकाश : जो ठाकुरजीके अर्थ यह देह आवें तो कृतार्थ होई. वा बराबरि कोई नाहीं. यह बात कहत हते.

तब उह रजपूतानीनें कही, अब मैं तिहारी सरनि हों, जा प्रकार मोसों कहो ताहि प्रकार मैं भजन सुमिरन करों. मेरो परलोक सुधरे. सों मोपर कृपा करो. तब राना व्यासने कही, अबहि तो तोकों सूतक हैं. सूतक उतरे पाछें आइयो. तब तोसों हम कहेंगे. तब वह रजपूतानी दण्डौत् करि अपनी झोंपरीमें गई. सो आर्ति बहोत बढ़ी. अरु एक - एक घरो जुग सम बीते. जो कब सूतक मिटें, कब राना व्यास मोकों बतावें. तेसेई मैं श्रीठाकुरजीको सुमिरन भक्ति करों.

भावप्रकाश : या प्रकारकी आरति दैवीजीव है तातें भई. लीलामें राना व्यास इन्दुलेखाकी सखी मधुरा और मधुराकी सखी 'नागवेलिका' को प्रागट्य राना व्यासको है. और नागवेलिकाकी सखी 'रसएनी' हैं आज्ञाकारी. सो रसएनीको प्रागट्य यह रजपूतानी है. तातें लीलामें हू पूर्व राना व्यासकी आज्ञाकारी सखी हैं. तातें राना व्यासके उपर यह रजपूतानीको दृढ़ विश्वास भयो, जो इन द्वारा मेरो उद्धार होयगो.

पाछें जहां लों सूतक रह्यो तहां लों राना व्यास सरस्वती ऊपर न्हाइवेकों आवें. तब दरसन नित्य करि, बिनती दैन्यता करि जाय. जो

मेरो अङ्गीकार कब होइगो. एसे करत सूतक उतरयो. तब न्हायके सुद्ध होयकें नदी पर बैठी रही. तब राना व्यास सरस्वती उपर न्हाइवेकों आये. तब वह रजपूतानी रानाव्यासके सन्मुख आई. दण्डोत् करि बिनती करी, अब मोपर कृपा करो. तब राना व्यासने कही काल्हि सबारे आइयो. तब तोसों कहेंगे. तब उह दण्डोत् करि झोंपरीमें गई. सो मारे दुःखके विरह तें कछू खानपान नाहीं कियो. पाछें प्रातःकाल भयो तब न्हाइके नदी पर बैठि रहि. इतने राना व्यास आइ सरस्वतीमें स्नान करिकें वा रजपूतानीसों कही, फेरि न्हाइ लें. तब राना व्यासने रेसमी वस्त्र दिये. जो याकों पहरि ले. तब उह रजपूतानीने पहर्यो. तब राना व्यास बैठाइकें श्रीआचार्यजीको ध्यान स्मरन करिकें नाम सुनाये. सो नाम सुनत ही रजपूतानीकों भगवद्भाव उत्पन्न भयो. तब स्त्रीनें राना व्याससों बिनती करी, जो अब मोकों टहल बताओ सो करूं. तब राना व्यास अपनी धोती बताये, जो आछें धोईकें घरमें आइयो. और अष्टाक्षर मन्त्र यह जप अष्टप्रहर मुखसों कर्यो करियो. पाछें औरहू सेवा देइंगे सो धोवती आछी तरह छांटि लाई. राना व्यास श्रीठाकुरजीकी सेवा करि राज भोगार्तिके दरसन उह रजपूतानीकों कराये. पाछें महाप्रसादकी पातरि धरी. या प्रकार कछुक दिन धोती उपरेना परदनी आदि वस्त्र धोवनकी सेवा दिये. सो प्रीति पूर्वक सगरे वस्त्र भाग्य मानिकें धोवें. महाप्रसाद राना व्यासके घर लेई.

भावप्रकाश : सो वस्त्र धोवनको कारन यह, जो ज्यों - ज्यों भगवदीयके वस्त्र धोवे त्यों - त्यों हृदय सुद्ध होइ ज्यों - ज्यों वस्त्रको मेल छूट्यो त्यों - त्यों हृदयमें ते काम, क्रोध, मद मत्सर, लोभ आदि मोहमेल तब दूरि भये. तब सुद्ध भई.

पाछें राना व्यासके घरमें सगरो काम काज सीधो सामग्री समारनी आदि या प्रकार ऊपरकी सब सेवा करन लागी. एसे करत कितनेक दिन पाछें श्रीआचार्यजी पधारे. तब राना व्यासने आचार्यजीकों अपुने घर पधराये. और बिनती करि रजपूतानीकी सब बात कही. और कहे, आपु अब कृपा करिके सेवक करिये. तब श्रीआचार्यजी दैवी जीव जानिकें उह रजपूतानीकों नाम निवेदन कराये. पाछें कछुक दिन सिद्धपुरमें रहिके आपु द्वारिका पधारें. तब उह रजपूतानी रसोईकी सब परचारगी करें. सो श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे. या प्रकार राना व्यासके सङ्ग तें उह रजपूतानीकों भगवत्प्राप्ति भई.

भावप्रकाश : यामें यह जताये, जो भगवदीयको सङ्ग परम उत्तम है. भगवद् भजन स्मरन करत हू बहुत कालमें कृपा होइ. परन्तु भगवदीय सर्व सामर्थ्य युक्त हैं. इनके छिनक सङ्ग तें भगवान् कृपा करें. यह जताये. ... ।।वैष्ण ३२।।

सो राना व्यास ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे. जिनके सङ्ग तें रजपूतानी भगवदीय भई. तातें ताकी वार्ता कहां तांई कहिये. ....वार्ता ।।३२।।

४०-रामदास सांचोरा

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक रामदास सांचोरो राजनगरके वासी तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ये लीलामें श्रीस्वामिनीजीकी सखी इन्दुलेखा, इन्दुलेखाकी सखी सुभगा, सो 'सुभगा' रामदासको प्रागट्य. और सुभगाकी सखी 'सुभद्रा' सो रामदासकी स्त्रीको प्रागट्य. सो दोऊ राजनगरमें सांचोरा ब्राह्मणके घर प्रगटे. सो बरस नौके रामदास भये, और बरस आठकी यह स्त्री भई. सो मा बापने दोउनको ब्याह किये. परन्तु रामदासकों वैराग्य दसा बालपने तें हती. काहू सो मोह न करे. काहूको कह्यो न करेन सो माता पिता न पढ़ाए बहोत, सो कछू पढ़े नाहीं. सो एक समें रामदास राजनगरके तलाब पर बैठे हते, तहां तेली दस पांच पोहे लेके आये. सो बैलनकों पानी पिवायो, तामें एक बैल पानी पीके तलाबके उपर गिरि पर्यो, मरि गयो. सो वो तेली रोवन लाग्यो. तब रामदास उह तैली सो पूछे, तू क्यों रोवत है ? तब उह तेलीने कही, मेरो बैल पानी पीके अब ही मरि गयो. तब रामदास तो बरस दसके बालक, सो जाने नाहीं. सो उह तेलीसों कहे, याको कहां मर्यो ? यह पर्यो है. याको उठावो. तब तेलीने कही अब यह कहा उठे ? याको प्राण निकरि गयो. तब रामदासने कही, याही प्रकार सब मरि जांइगे ? तब तेलीने कही यही दसा हैं, दोय दिन आगे पाछें. यह सुनत ही रामदास वहां ते भाजे, सो कछुक दिनमें द्वारिका आये, श्रीरनछोडजीके दरसन किये. तहां श्रीआचार्यजी सुबोधिनीकी कथा कहत हते. सो रामदास तहां आये, कथा सुनिकें बहोत प्रसन्न भये. तो मनमें यह आई, श्रीआचार्यजीके सङ्ग रहिके कछुके दिन इनकी कथा सुनियें. इनके सेवक होऊ तो आछी. पाछे आप कथा कहि चुके तब रामदास दण्डवत् करि बिनती करी, महाराज ! मोकों सरन लेउ. पास राखो तो कछुक दिनमें

आपुके श्रीमुखकी कथा सुनों. तब श्रीआचार्यजी कहैं तू कोन है ? कहां ते आयो ? तब रामदासने सगरी बात कही. मैं राजनगरमें रहत हों, सांचोराको बेटा हूं. तहां तालाब पर एक बैल तैलीको मरयो, सो देखिके वैराग्य आयो है. सो उठि भाज्यो, इहां आपको दरसन भयो. तब श्रीआचार्यजी विचारे जो जीव तो दैवी है, परन्तु अवस्था छोटी है. जो याकों पास न राखेंगे, सो संसारमें दुःसङ्ग है, कहूं खराब होई जायगो. तातें कछुक दिन सङ्ग राखि, याको दृढ़ वैराग्य होइ तब छोडनो. यह बिचारिकैं रामदाससों कहें, जा, न्हाइ आउ. सो रामदास न्हाइ आये. तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाए. निवेदन कराए, महाप्रसाद लिवाए, पास राख्यो. सो कछुक दिन रहिके श्रीआचार्यजी द्वारिका तें पृथ्वी परिक्रमाकों पधारे. सो रामदास सङ्ग चले. सगरी रसोईकी परचारगी करें. और टहेल छोटी मोटी सब करें. जो श्रीआचार्यजी रामदासकी परीक्षा लेन अर्थ कबहूं थोरो धरें, कबहूं अकेली रोटी धरें. परन्तु ए भागि मानि महाप्रसाद लेई. मनमें यह कबहूं नाहीं लाये, जो आज हमकों यह नाहीं धरें. तब श्रीआचार्यजी बहोत प्रसन्न भये, सो सगरी सामग्री धरते. और मारगमें जहां कांटो आवतो तहां रामदास मारगमें बेगे - बेगे सम्भारत जाइ. सो एक दिन रामदासके पांवमें कांटो बड़ो लग्यो. सो रामदास मनमें बिचार्यो, मैं अपने पांवमें कांटो काढ़नके लिये बैठि रहूंगो तो श्रीआचार्यजी मेरे लिये ठाड़े होइ रहें. सो आछो नाहीं, मेरो धर्म जाई. और यह बिचारे, जो और आगे - आगे पधारेंगे तो (हू) मारगमें कांटा बहुत हैं, कहूं श्रीआचार्यजीके चरणारविन्दमें लागें तोऊ मेरो धर्म जाई. यह बिचारिके अपने पगको कांटो न काढे. मारग सम्भारत चले. तब थोरी सी दूरि जाय श्रीआचार्यजी ठाड़े रहे. कहैं, रामदास तू अपने पगको कांटो काढ़ि ले. और तेरे उपर मैं बहुत प्रसन्न हों, जो चाहें सो मांगि. तब रामदास कहें, महाराज ! आपुकी सरनि मोकों मिली, अब यासों अधिक कहा है ? तातें यह मोकों कृपा करिकें दीजिये, जो आपको आश्रय सदा दृढ़ रहै, औरको न होई. तब श्रीआचार्यजी बहुत प्रसन्न होइके कहें, ऐसे ही होयगो. तू सगरो मांगे. परन्तु मैं प्रसन्न हों, तू कांटा ले, मैं ठाड़ो हूं. तोको अपराध कबहू न लागेगो. तब रामदास कांटा काढ्यो. या प्रकार बरस दस श्रीआचार्यजीके सङ्ग सेवा किये. परन्तु प्रीति सदा एक रस रही. ऐसे भगवदीय कृपापात्र हे. पाछें दक्षिणमें श्रीआचार्यजी दूसरी पृथ्वी परिक्रमाकों पदारे. तहां एक ब्राह्मणने एक श्रीठाकुरजीको स्वरूप भेंट कियो, और कह्यो, मोंसों पूजा नाहीं होत. तब श्रीआचार्यजी उह स्वरूप पास राखे. कछुक दिन सेवा किये. पाछे दक्षिणमें एक गामके बाहिर आइ उतरे. तब कृष्णदाससों कहे, जो जाउ, गाममें तें सीधो सामग्री ले आवो. और एक सुथारसों बिना खुंटीकी पादुका बनवाय ले आवो सो रामदास सीधो सामग्री ले आये. तब श्रीआचार्यजी रसोई करि भोग धरि आपु अरोगिके रामदाससों कहें, महाप्रसाद ले. तब रामदास महाप्रसाद ले श्रीआचार्यजीके पास आये.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो श्रीआचार्यजीनें उह ब्रह्मणनें, ठाकुर भेंट कियो हो, सो स्वरूप आप पञ्चामृत स्नान कराई रामदासकें माथे

पधराये. श्रीठाकुरजीको नाम 'नटुवा गोपालजी' धर्यो. और उह पादुकाके उपर चरणारविन्द धरि रामदासके माथे पधराये.

भावप्रकाश : काहेतें, श्रीआचार्यजी तो पादुका पहिरतें नहीं, नांगे पांइन चलते. पृथ्वी पावन करिवेके लिये. पृथ्वीको मनोर्थ पूर्ण करणार्थ. पादुकाजी, सेवा करणार्थ कृपा करिकें देते. तातें श्रीआचार्यजीकी पादुकामें खूंटी नाही हैं.

सो रामदासके माथे श्रीठाकुरजी पधरायके कहें, रामदास ! अब तुम भगवद् सेवा करो. जहां रहो तहां अब तुमकों डर नाहीं. भक्ति तुमको भई. तब रामदासके मनमें तो यही, जो सदा श्रीआचार्यजीके पास रहों परन्तु आज्ञा कैसे टारुं ? और जानें, जो आप कहे सो करनो, याहीमें मेरो कल्याण है. यह विचारिकें दण्डवत् करि चले. सो विरह बहोत, बार - बार फिरिकें दरसन करि स्वरूप हृदय धरि चले. और श्रीआचार्यजीको हृदय भरि आयो. जो ऐसे वैष्णव सो वियोग होत है. परन्तु रामदासकी स्त्री दैवी जीव, पतिव्रता है, सो घरमें दुःखी है, कुटुम्बमें मा बापके इहां. ताके उद्धारके लिये, श्रीआचार्यजी रामदासकों बिदा किये. सो रामदासजी तीन दिन लों श्रीठाकुरजीकी सेवा, श्रीपादुकाजीकी सेवा करे. लोग धरे सो गायकों लिवाय दिये. श्रीआचार्यजीके वियोगको दुःख बहोत, सो प्रसाद लियो न गयो. सो चौथे दिन भोग धरिकें पाछें सरावन लागे, तब श्रीआचार्यजी दरसन दैकें कहे, तू महाप्रसाद क्यों नाहीं लेत ? मैं ता तेरे पास ही हों, तातें महाप्रसाद लिजो. तब रामदास गायको भाग काढ़ि महाप्रसाद लियो. सो या प्रकार विरक्त दसासों कबहूं कहूं रहे, कबहूं कहूं रहे एक ठिकाने न रहे. सो पृथ्वी परिक्रमा करत - करत अपने गाममें राजनगरमें आइ निकसे. सो रामदासके माई - बाप तो मरि गए हते. इनकी स्त्री मां - बापके घर हती. सो रामदास अपने घरमें आइ रहे. सो रामदासके ससुरनें जानी, जो रामदास आये. तब बेटीसों कह्यो, जो तेरो धनी आयो है, सो फेरि कहू जायेगो, तो तु वाको न पावेगी. तातें तेरो मन होय तो धनीके साथ जा. तेरो मन होय तो हमारे घर रहि. तब बेटीने कही, जो मोकों मेरे धनी पास पहोंचाय आवो. और मोकों कछु नाहीं चाहिये. तब ससुर बेटीकों ले रामदासके घर करि चल्यो गयो. यह रामदासके पास आई, सो रामदास स्त्रीको अङ्गीकार न करे, बोले नाहीं. सो रामदास दिन दोय चारि घरमें रहे. पाछें द्वारिकाकों उठी चले. तब रामदासकी स्त्री रामदासके सङ्ग चली. सो रामदास सङ्ग आवन न देही, ईटनसों मारे. परन्तु स्त्री पतिव्रता दूरि दूरि सङ्ग चलि. रामदासकी पातरिमें जुठन बचे सो स्त्री खाइ, न बचे तो भूखी रहि जाइ. ऐसे करत मजलि चारि भई, तब

श्रीरनछोडजीने रामदाससों कही, तु स्त्रीकों अङ्गीकार क्यों नाहीं करत ? त्याग क्यों कियो ? तब रामदास श्रीरनछोडजीसों कहे, जो मैं तो विरक्त वैरागी हूं. मेरे स्त्रीकी कहा काम है ? तब श्रीरनछोड़जीने कही, विवाह काहेकों कियो ? और तू श्रीआचार्यजीको कृपापात्र सेवक होइके ऐसी निठुरता तोकों न चहिये और तू श्रीआचार्यजीको कृपापात्र सेवक है, तातें तासों बहोत मैं कहि सकत नाहीं. तातें स्त्रीकों अङ्गीकार करि, या प्रकार श्रीरनछोड़जी रामदाससों कहै.

भावप्रकाश - ताको कारन यह, जो स्त्री दैवी है. अङ्गीकारके लिये तो अपने पासतें श्रीआचार्यजी विदा तुमकों किये, सो तू क्यों नाहीं करत ? और रामदासकों द्वारिकामें श्रीआचार्यजी अङ्गीकार किये हैं. तातें द्वारिका चले हैं. श्रीरनछोड़जीके केवल दरसन निमित्त नाहीं चले. श्रीआचार्यजीको सम्बन्ध विचारि रामदास सगरे देस फिरत हैं. तातें श्रीरनछोड़जीकी आज्ञा नाहीं, दण्ड नाहीं. तातें श्रीरनछोड़जी कहें, तू श्रीआचार्यजीको सेवक है. मैं तोसों कहि नाहीं सकत. श्रीआचार्यजी कहिवाए. तब मैं इतनो कह्यो तुमसों, सो स्त्रीको अङ्गीकार करि.

तब मजलि जाइ उतरे. सो स्त्रीकों पास बुलाय कहैं, तू गांठि देखत रहि, मैं उपरा बीनि लाऊं. तब स्त्री प्रसन्न भई, जो आजु मोपर कृपा है. तब स्त्रीने कही, मैं ही उपरा बीनि लाऊं. तब रामदासने कही यह स्त्रीकों काम नाहीं, मैं बीनि लाऊगों. तब उपरा लाइ रसोई करि श्रीठाकुरजीको भोग धरि, पाछे भोग सराई गायको भोग काढ़ि एक पातर स्त्रीकों धरे. एक अपनी धरे. महा प्रसाद दोऊ जने लिये. ऐसे करत द्वारिका आये, श्रीरनछोडजीके दरसन किये. तब श्रीरनछोडजीने कही, तू स्त्रीकों नाम देई तो जल सामग्री सिद्ध करें. रसोईकी परचारगी करे. तब रामदास कहै, मैं नाम कैसे देऊं ? नाम श्रीआचार्यजी देइ सो ठीक है. तब श्रीरनछोडजीने कही, मेरी आज्ञा है तू नाम दे. पाछें श्रीआचार्यजी पधारे, तब श्रीआचार्यजी पास नाम सुनैयो. और मैं तासों कहत हों. सो श्रीआचार्यजीकी आज्ञा तें, इच्छा बिना नाहीं कहत. तब रामदास स्त्रीकों नाम सुनाये. पाछें स्त्रीकों जल भरावन लागे, परचारगी रसोईकी करावन लागे. पाछे, द्वारिका तें चले. तब रामदासजी मनमें बिचारे, जो अब स्त्रीकों लिये लिये फिरनो उचित नांहीं. अब एक जगे बैठिकें भगवद् भजन करनो. यह बिचारी रामदास कछुक दिनमें राजनगर अपने घर आये, भगवद् सेवा करन लागे.

पाछें कितनेक दिनमें श्रीआचार्यजी राजनगरे पधारे. तब रामदास आगे जाई दण्डवत् करि, अपने घर पधराये लाये और बिनती करी, महाराज ! स्त्रीकों नाम निवेदन कराइए. तब श्रीआचार्यजी कहें, तू स्त्रीकों नाम दियो है, फेरि अब काहेकों नाम देईवेकी कहे हैं ? तब रामदासने कही, महाराज ! मैं तो श्रीरनछोडजीके कहे तें नाम दियो. और श्रीरनछोडजी हू यह कहैं, पाछे, श्रीआचार्यजी पास नाम दिवाईयो. सो आपकी इच्छा हती तातें श्रीरनछोडजी द्वारा आप आज्ञा किये, तातें मैं नाम दियो. आपकी इच्छा न होई सो कार्य मैं कबहू न करूं. और स्त्रीके अङ्गीकार करनके लिये तो आपु मोकों अपने पासतें बिदा किये. तातें यह स्त्रीकों अङ्गीकार करिये. तब श्रीआचार्यजी रामदासके ऊपर प्रसन्न होइके स्त्रीकों नाम दें ब्रह्मसम्बन्ध करायो. पाछे रामदासके घर पाक सामग्री करि श्रीठाकुरजीकों भोग धरे. पाछे आपु भोजन करि रामदासकों, रामदासकी स्त्रीकों जूठन धरी. पाछे रामदासकों आज्ञा किये, अब तुम एक ठौर घरमें बैठिकें दोऊ जने भगवद् सेवा करो. तब रामदासने कही, महाराज ! यही मेरे मनमें हती, सो आपु आज्ञा दिये. पाछें श्रीआचार्यजी द्वारिका पधारे. रामदास स्त्री सहित भगवद् सेवा करि, अनोसर समें भगवद् वार्ता ग्रन्थको भाव स्त्रीसों कहते. सो दोऊ जने भगवद् सेवामें मगन रहते. सो ये रामदास स्त्री सहित ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे. इनकी वार्ता कहां तांई कहिये. ....वार्ता ।।३३।।

४१-गोविन्द दूबे सांचोरा

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, गोविन्द दूबे सांचोरा, खेरालू गाममें रहते, तिनकी वार्ता का भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ए गोविन्द दूबे द्वारिका लीला समबन्धी हैं. सत्यभामाकी सखी है. इनको नाम लीलामें 'तनमध्या' है. सो इनको स्वरूप सुन्दर बहोत है, कटि सिंहकी सी इनकी. सो श्रीठाकुरजी सत्यभामाके महल पधारे. तब यह सखी तन्मध्या श्रीठाकुरजीसों कहैं, मैं तुम्हारी दासी हों, कोई दिन मोसों मिलो. तब श्रीठाकुरजी मुसिकाइकें कहैं, सत्यभामाके आगें कैसे बने ? सो दूरितें सत्यभामाने यह बात सुनी. सो क्रोध करिके शाप दिये, जो तू हमारी बराबरि करी, तातें भूमि पर गिरो. सो ए लीलतें गिरी, अनेक जन्म पाये. सो अब सांचोराके घर जन्में. सो बरस पन्द्रहके भये. तब माता पितासों कहै, कोई तीर्थ करो तो आछो है, तब गोविन्द दूबेके मा बापने कही, जो बेटा ! तू अबही तें तीरथको मन करत है. जो तू वैरागी होइगो ? हमारो तो मन घर

छोड़िके कहूं जाईबेको होत नाहीं. घरमें खानपानको सुख है. तब गोविन्द दूबे कहै, जो मैं तो वैरागी होउंगो. तातें मेरो ब्याह भूलिके मति करियो. और तुम सदा घरको काम करत मरोगे, यह मोकों जानि परी. सो मोतों तीरथ जाऊंगो तब माता पिताने कही हम वृद्ध हैं हमारे पीछे तुम्हारो मन होई तहां जैयो अब या समय तो हमारी टहल करो रक्षा करो तो आछो. तब गोविन्द दूबेने कही, तुम यह बात कही सो सांच, परन्तु कालकी कछू खबरि परत नाहीं. कदाचित मैं मरि जाऊं, तब मेरो जन्म तो बिगर्यो. तब तुम्हारी टहल कौन करेगो ? तातें श्रीठाकुरजी सबकी रक्षा करत हैं. जीवकी कहा सामर्थ्य है ? तातें मैं तो द्वारिका श्रीरनछोडजीके दरसन तो करि आऊं. तब माता पिताने कही, हम तोसों बातनमें जीते नाहीं, तुम्हारो मन होइ सो करो. तब गोविन्द दूबे द्वारिका आये. श्रीरनछोडजीके दरसन करि बहोत सुख मनमें पायो. सो वर्ष तीन द्वारिकामें रहे. और माता पिता घरमें देह छोड़ी. सो खबरि गोविन्द दूबे सुनकें मनकों खेद कियो. जो माता पिता कोई तीरथ न किये. पाछे गोविन्द दूबेके मनमें यह आई, जो माता पिताको गया - श्राद्ध तो करि आऊं. सो श्रीरनछोडजीके दरसन करिके चले, सो गयामें आई श्राद्ध किये. पाछे घरको चले. सो गया ते काशी आये, तब मनिकर्णिका घाट पर स्नान करि सन्ध्यावन्दन करत हते, ता समें श्रीआचार्यजी सेठ पुरुषोत्तमदासके घरसों मनिकर्णिका स्नानकों पधारे. तब गोविन्द दुवे श्रीआचार्यजीको दरसन कियो. तब यह जान्यो, जो ये बड़े पण्डित हैं. तब गोविन्द दुवेके मनमें यह आई, जो मैं इनके पास कछु पढूं. सो श्रीआचार्यजी स्नान करि सन्ध्यावन्दन किये. तब गोविन्द दुवे आई श्रीआचार्यजीकों विनती करी, महाराज ! आपु बड़े पण्डित हो. सो मोकों कछु पढ़ावोगे ? तब श्रीआचार्यजीने कही, बहोत विद्या तो तुम्हारे भाग्यमें नाही. मन लगाईके पढ़ो तो अक्षर ज्ञान होइगो, पाछे पोथी पाठ बांचि लेऊंगे. तब गोविन्द दुबेने कही, महाराज ! पोथी पाठई सही, जितनो आवे तितनोई सही. गीता भागवत् तो बांचू. तब श्रीआचार्यजी कहें, तीसरे पहर डेरा पर आईयो. पाछे गोविन्द दूबेने घर जाई एक व्याकरणकी पोथी एक ब्राह्मणसों मांगी. जो मैं पढ़िके तुमको देऊंगो. तब उह ब्राह्मणने कही, तुम ही राखो, पढ़ो. पाछे श्रीआचार्यजी सेठ पुरुषोत्तमदासके घर पधारे. सामग्री करि भोग धरि भोजन किये. इहां गोविन्द दूबे रोटी खाई तीसरे पहर श्रीआचार्यजी पास व्याकरणकी पोथी लैके आये. नमस्कार करि बैठे. तब गोविन्द दूबेने व्याकरणकी पुस्तक निकासें. तब श्रीआचार्यजीने कही, व्याकरण कहां तांइ पढ़ेगो ? तोकों गीता पढ़ाऊंगो. सो गीताके पढ़े व्याकरण आपही आइ जायगो. तब गोविन्द दूबेने कही, महाराज ! व्याकरण पढ़े बिना गीता कैसे खुलेगी ? जगतमें तो रीति है, व्याकरण पढ़े तब कछू अक्षरको ज्ञान होय, तब शास्त्र देखें. तब श्रीआचार्यजी कहें, हम कहें तैसे तू कर तो सही. तब गोविन्द दूबेने कही, महाराज ! मेरे पास तो गीताकी पुस्तक नाहीं है. तब श्रीआचार्यजी पुस्तक निकारि एक श्लोक गीताकों पढ़ाये. पाछे कहें, हमारी आज्ञा है, सगरी गीता पाठ करि. तब गोविन्द दूबे सगरी गीता अष्टादश अध्याय पाठ करि गये. तब श्रीआचार्यजी एक श्लोक गीताके अर्थ करि कहैं, तू हू अर्थ करि. तब दूबे एक श्लोककौ अर्थ कियो. तब श्रीआचार्यजी कहैं, मेरी आज्ञा है, सगरी गीताको अर्थ करि

जा. तब सगरी गीताको श्लोकार्थ करि गये. इतनेमें प्रहर रात्रि गई. तब श्रीआचार्यजी कहैं, अब तू जा, व्याकरण साधि लीजो. गीता, भागवत् श्लोकार्थ तोकों आय चुक्यो, आगें तेरे भाग्यमें नाहीं. तब गोविन्द दूबे उह ब्राह्मनके घर आये, जासों व्याकरण लाये हते. सो व्याकरण सब लगाय लिये. पाछे अर्द्ध रात्रिकों सोये. तब गोविन्द दूबे मनमें बिचारी, जो श्रीआचार्यजी ईश्वर हैं. जो एक बार एक श्लोक गीताको पढ़ायो तामें व्याकरण हू आयो, गीता हू. श्लोकार्थको ज्ञान भयो. सो यह जीवकी सामर्थ्य नाहीं. तातें इनको सेवक होऊं. तो आछौ.

तब प्रातःकाल न्हाइकै, श्रीआचार्यजीकों आइ दन्डौत् कियो, तब विनती कीनीं, जो महाराज ! मोकों सरन लीजिये, नाम सुनाइये. तब श्रीआचार्यजी कहे, तुम हूं तो ब्राह्मन हो, हम हूं ब्राह्मन हैं. सो सेवक क्यों होत हो ? तब गोविन्द दूबेने बिनती कीनी, जो महाराज ! हम तो जीव हैं. जो आपके स्वरूपकों कहा जाने ? आपु कृपा करिके जनावें तब जाने. पहेले तो पण्डित ब्राह्मन आपकूं जानत हते. परन्तु अब तो हम यह जानें, जो आपु इश्वर हो. जो एक बार एक श्लोक गीताके पढ़ाये, तामें मोकों सगरी गीताको श्लोकार्थ ज्ञान भयो. तातें कृपा करिके सेवक करिये. हमतो अज्ञानी जीव हैं. आपु हमारे अपराध क्षमा करो. तब श्रीआचार्यजी कहैं, गङ्गाजी स्नानको चलेंगे तहां तुमको नाम सुनावेंगे. पाछे गङ्गाजी पधारे, गोविन्द दूबेकों गङ्गाजी स्नान कराई नाम निवेदन कराये. तब गोविन्द दूबे कहैं, अब मोकों कहा आज्ञा है ? तब श्रीआचार्यजीने कही, भगवद् सेवा करो. तब गोविन्द दूबेने श्रीआचार्यजीसों विनती करी, महाराज ! मेरे पिताके श्रीठाकुरजी हैं, सो हमारी ज्ञातिके ब्राह्मनके घर हैं. सो उनकी सेवा कैसे करों ? तब श्रीआचार्यजीने आज्ञा दीनी, जो अपने घरमें ठाकुरकों लाई पञ्चामृत स्नान कराई भगवत् सेवा करियो. तब गोविन्द दूबे आचार्यजी सो विदा होयके कछुक दिनमें घर आये. सो वह ब्राह्मनसों ठाकुरजी ले अपने घर पञ्चामृत स्नानन कराई सेवा करन लागे. परन्तु भगवद् सेवामें मन लागे नाहीं, चित्तमें उद्वेग रहे. और श्रीआचार्यजीने यह आज्ञा दीनी, जो भी ठाकुरजीकों तु पञ्चामृत न्हवाई लीजो, सो यातें, जो गोविन्द दूबे ब्रजलीला सम्बन्धी नाहीं है. द्वारिकाकी राजलीला सम्बन्धी सत्यभामाकी सखी है. तहां इनकी प्राप्ति है. तातें आप पञ्चामृत स्नान नाहीं कराये. पाछे श्रीआचार्यजी अड़ेल पधारे. सो एक वैष्णव अड़ेल ते गुजरात गयो. गोविन्द दूबेके घर उतर्यो. तब गोविन्द दूबेने श्रीआचार्यजीके कुसल समाचार पूछे. तब उह वैष्णवने कही, कासी तें अड़ेल पधारे हैं. तहां कछुक दिन बिराजेंगे. पाछें पृथ्वी परिक्रमाकों पधारेंगे, ऐसे मैं सुनी है. सो तुमसों कह्यो. पाछें आपकी इच्छा यह कहि उह वैष्णव दूसरे दिन द्वारिका गयो.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो गोविन्द दूबे घरमें सेवा करें, परन्तु मनमें बहोत विग्रह रहै. सो सेवामें चित लागे नाहीं. तब गोविन्द दूबे एक

पत्र श्रीआचार्यजीकों लिखे महाराज ! मेरे मनमें बहोत विग्रह रहत है. भगवत्सेवामें चित्त लागत नाहीं, सो मैं कहा करूं ? सो पत्र श्रीआचार्यजी पास आयो, सो आपु वांचिके, 'नवरत्न' ग्रन्थ करि लिखि पठाये. और लिखें, यह 'नवरत्न' ग्रन्थके पाठ किये तें तेरे मनकी विग्रहता मिटि जायगी. सो पत्र श्रीआचार्यजीको गोविन्द दूबेके पास आयो. तब गोविन्द दुबे प्रसन्न होइकें 'नवरत्न' ग्रन्थको पाठ करन लागे. सो पाठ करत श्रीआचार्यजीकी कृपा तें मनकी व्यग्रता चिन्ता सब मिटि गई. मन भगवद् सेवा करनमें लागे.

भावप्रकाश : सो गोविन्द दूबेके मनमें विग्रहता भई, ताको अभिप्राय यह, जो गोविन्द दूबे जीव तो द्वारिका लीला सम्बन्धी, और सेवा भावना ब्रजकी करे. सो मन लागे नाहीं. न राजलीलामें दृढ़ता होई न ब्रजलीलामें. सो अनेक साधनमें मन दौरे, जो तीर्थ करूं, के ब्रत कोई करूं, कोई जप करूं ? इत्यादि मन भटके. सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु 'नवरत्न' ग्रन्थ लिखि पठाये, तू चिन्ता मति करे. चित्तकी उद्वेगता है, यह प्रभुकी लीला जानि, श्रीठाकुरमें ते मन और ठौर जाय सोउ भगवद् इच्छा मानि चिन्ता मति करियो. जितनी बने तितनी सेवा करियो. तब गोविन्द दूबेको मन स्थिर व्है गयो. जहां मन लौकिक वैदिकमें जाइ तो भगवद् इच्छा माने. श्रीरनछोडजीमें मन बहोत जाई सो भगवद् इच्छा मानें. उहांकी लीलामें मग्न रहैं. काहेतें ? शास्त्रपुराण अनेक उपाई प्रभु मिलनके कहे है. जीवको मिस मात्र मार्ग दिखाये, जो जहांको अधिकारी है वामें वाको मन स्वतः सिद्ध लागत है. तातें जैसे मनुष्य गेल चलिबे वारेको दस गामके मार्ग बतावे, परन्तु जाकों जा गाम जानों होइ सोई गाम जात है. तैसे ही कोई भगवदीय द्वारा, कोई गुरु द्वारा, कोई इश्वर द्वारा, जैसो अधिकारी तैसो सङ्ग पाये, उही मार्गमें भाव वाकों दृढ़ होत है. सो गोविन्द दूबेको श्रीरनछोडजीमें दृढ़ भाव भयो, जो आगे बरनन करत हैं.

वार्ताप्रसङ्ग २ : एक समें श्रीआचार्यजी द्वारिका अड़ेल तें पधारें. तब गुजरात होइकें पधारें. सो गोविन्द दूबे, जगन्नाथ जोसी आदि पांच सात वैष्णव सङ्ग चले. सो द्वारिकामें श्रीआचार्यजी आई पहोंचे. तब गोविन्द दूबेने श्रीआचार्यजीसों बिनती करी, जो महाराज ! कछू कथाको प्रसङ्ग चलाइये, तो बहोत आछो. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कहें, जो बहोत आछो. परन्तु अब ही तो मोकों अवकास नाहीं है. अवकास होइगो तब कहूंगो.

भावप्रकाश : ताको अर्थ यह, जो तू ब्रजलीला सम्बन्धी नाहीं है. तातें कोई ब्रजलीला सम्बन्धी बिनती करे तो कहूं. तेरे आगे सुख न होइगो. यह

अभिप्राय तें आपु कहैं, माकों अवकास नाहीं है.

तब गोविन्द दूबेने कही, महाराज ! थोरी कहिये. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु पुस्तक खोलि कथाको आरम्भ किये. इतनेमें श्रीरनछोडजी आइ गोविन्द दूबेसों वार्ता करन लागें. सो गोविन्द दूबे श्रीरनछोडजी सो वार्ता करत मगन व्है गये. यह न ज्ञान रह्यो, जो श्रीआचार्यजी कथा कहत हैं. मैं वार्ता वार्ता कैसे करूं ? तब श्रीआचार्यजी गोविन्द दूबेसों कहे, पुस्तक खुलाइकें वार्ताकोनसों करत हो ? पाछें श्रीआचार्यजी पुस्तक परतें दृष्टी फेरकैं देखें तो श्रीरनछोडजी सो गोविन्द दुबे वार्ता करत हैं. तब श्रीआचार्यजी पुस्तक बांधिके आपु गोविन्द दुबे उपर अप्रसन्न होइकें पौढ़े. सो प्रातःकाल उठिकें आपु जब रसोइ करि, भोग धरि भोजन किये. पाछें अपने खवास कृष्णदास मेघनसों कही, जो आजु पाछें हमारी थारको महाप्रसाद काहू वैष्णवकों मति दीजो. दामोदरदास हरसानी और तुम लीजो. सो पहले नित्यनेमसों श्रीआचार्यजीकी थारको महाप्रसाद वैष्णव ले, पाछें अपने हाथको लेते. सो खवासने ऐसेही कियो. दामोदरदास जिनसों दमला कहते, सो और कृष्णदास लिये. और काहूकों न दिये. सो वा दिन सगरे वैष्णव उपवास किये, भूखे रहे. पाछे दूसरे दिन श्रीआचार्यजी श्रीरनछोडजीके दरसनकों पधारे. तब श्रीरनछोडजीने कही, काल्हि आपु सगरे वैष्णवनकों महाप्रसाद नाहीं दिये, सो सगरे वैष्णव भूखे रहै. तातें जैसे कृपा करिकें आपु सब वैष्णवनकों थारको महाप्रसाद देत हते तैसेइ दियो करो.

भावप्रकाश : याको कारन यह, जो श्रीमुखकी कथा सुनेगो तो ब्रजलीलामें मन मगन होइ जाइगो. पाछे मेरे हाथ आयबेको नाहीं. तातें गोविन्द दूबेकों वार्तामें लगाई कथा सुनन न दिये. और जो कोइ कथा वार्ता करे ता समें, जो कोई बात करे तो जाको मन कथामे होइ वाकें मनमें बड़ो दुःख होई. जैसे सुन्दर, मधुर भोजन करत कङ्कर दांत नीचे आवें दुःख होइ. तेसेई कथा में कोई औरके बोले दुःख होई. तब श्रीआचार्यजी असप्रन्न भये. रसाभास भयो. आपुकों रस उमड्यो हतो सो अन्तर्धान व्है गयो. तातें आप पुस्तक बांधि पोढ़ि रहे. अथवा दूसरो अभिप्राय यह है, जो श्रीआचार्यजीकी कथामें श्रीरनछोडजी बिघन कैसे करि सकें ? सो साक्षात् पुरुषोत्तम श्रीगोवर्द्धनधर बिचारे, जो आप रसमें मग्न भये है, सो मेरी अनेक प्रकारसों भक्तन सङ्ग लीला हैं, सो आवेसमें कहेंगे. और आगे, श्रोता राजलीलाको अधिकारी है. सो यह ठीक नाहीं. तातें श्रीगोवर्द्धनधर श्रीरनछोडजीकों प्रेरणा करि गोविन्द दूबेसों बात कराई. रस गोप्य करि दियो. तातें दूसरे दिन श्रीरनछोडजीने श्रीआचार्यजीसों कही, आपु वैष्णव पर अप्रसन्न काहैकों भये ? जो थारको महाप्रसाद न दिये.

यह सगरो काम श्रीगोवर्द्धननाथजीकी इच्छा तें भयो है. मैं हूं नाहीं कियो. तातें आपु जैसे नित्य वैष्णवकों थारको महाप्रसाद देते तेसे दिया करो.

तब श्रीआचार्यजी डेरा पर आई, सब वैष्णवसों पूछे, जो तुम काल्हि महाप्रसाद क्यों नाहीं लियो? तब सगरे वैष्णवनने बिनती करी, महाराज! काल्हि थारको महाप्रसाद नाहीं पायो. तातें नाही प्रसाद लियो. तब श्रीआचार्यजी कहैं, थार को प्रसाद तो देतां नाहीं परन्तु तुम्हारी सिपारस बड़ो ठौर तें भइ, तातें देऊंगो.

भावप्रकाश : याको अर्थ यह, जो तुम्हारो दोष नाहीं है. यह काम सब प्रभुकी ओरतें भयो, तातें महाप्रसाद देऊंगो.

सगरे वैष्णवनने बिनती करी, महाराज! हम आपुके चरणारविन्दसों लागे हैं. हमारो भलो होइगो, सो आपु करोगे. तब श्रीआचार्यजी अपने खवासकों आज्ञा दिये जैसे नित्य थारको महाप्रसाद सबकों देते तेसे दियो करियो. तब खवासने महाप्रसाद दियो. तब सगरे वैष्णव महाप्रसाद लियो. पाछे कछुक दिन द्वारिकामें रहि, पाछे, श्रीरनछोडजीसों बिदा होइ अड़ेल पधारे. तब सगरे वैष्णव अड़ेल तांई सङ्ग आये. पाछे सगरे वैष्णव बिदा होइ अड़ेल तें श्रीआचार्यजीकों दण्डौत् करि अपने घर आये. तब गोविन्द दूबे अपने घर खेरालूमें आये.

भावप्रकाश : सो श्रीरनछोडजीके कहेतें महाप्रसाद दिये, परन्तु गोविन्द दूबे सङ्ग रहै. तहां तांई कथा न कहै. सो अधिकारी बिना वार्ताको रस न होई. यह जताये.

वार्ताप्रसङ्ग ३ : और एक समे गोविन्द दूबे मीराबाईके घर गये. सो मीराबाईसों भगवद् वार्ता करत कछुक दिन उहां अटके. सो यह बात श्रीगुसांईजीनें सुनी, जो श्रीआचार्यजीके सेवक गोविन्द दुबे मीराबाईके पास हैं, वार्ता चर्चा करत हैं. तब श्रीगुसांईजीने एक श्लोकें ब्रजवासीकों दिये. और कहें, मीराबाईके घर गोविन्द दुबे हैं. तिनको यह कागद दें आऊ. तामें एक यह श्लोक लिखें.

भगवत्पदपद्मपरागयुतो न हि युक्ततरं मरणेऽपि तराम् ।
इतराश्रयणं गजराजगतो न हि रासभमप्युररीकुरुते ।।१।।

यामें यह लिखे, जो हाथीकी असवारी करी, सो फेरि गदहा पर असवारी न करें, प्राण जाई तहां तांई. तेसे, जो कोई भगवानके पदकमलके परागको आस्वादन करिकें इतराश्रय, औरको आश्रय, अन्य रसको कबहुं न चाखे. मरन पर्यन्त दुःख सहे. परन्तु और रस ग्रहण न करें.

भावप्रकाश : यामें यह जताये, जो श्रीआचार्यजीको सेवक तू होइ, और अन्यमार्गीय मीराबाईके इहां तू भगवद् वार्तामें अटक्यो ? सो या प्रकार हाथीकी असवारी छोडि गदहाकी असवारी है.

सो यह कागद ब्रजवासीनें गोविन्द दूबेके हाथमें दियो. ता समे गोविन्द दूबे तलाबके उपर गाम बाहिर सन्ध्यावन्दन करत हते. सो तहां कागद बांचि मीराबाईके इहां तें अपनों खडिया वस्त्र ले चले. मीराबाईने बहोत सामाधानकीनो, परन्तु बोले नहीं, उठि चले, सो श्रीगुसांईजी पास आये, दण्डोत् कियो. तब श्रीगुसाईजी कहें, अपने मार्गकी वार्ता अन्यमार्गीयके आगे करनो नाहीं. या प्रकार समुझाये. पाछें गोविन्द दूबे श्रीगुसांईजी तें बिदा होइ घर आये. ...वार्ता ।।३४।।

भावप्रकाश : सो यामें यह जताये, जो गोविन्द दूबेको मन जहां तहां लगि जातो. और श्रीगुसाईजी गोविन्द दूबेको सिक्षा यातें दिये, जो और वैष्णव इनकी देखादेखी सङ्ग कबहू करेंगे तो एतन्मार्गको फल न होई. और गोविन्द दूबेको तो ठीक है, जो द्वारीका लीला सम्बन्धी है. सो ज्ञान तो औरकों है नाहीं. तातें श्रीगुसांईजी अपनें वैष्णवकों सावधान करन अर्थ कहै. सो यह पुष्टिमार्गमें श्रीआचार्यजीके सम्बन्ध बिना सगरे बाधक जाननों. जो कोई हठि करें तो वासों कहनों नाही. यह सुद्ध पुष्टिमार्गी नाहीं है. याकों ब्रजलीलाको अनुभव न होई. सो गोविन्द दूबे मर्यादा पुष्टि हैं. .... ।।वैष्णव ३४।।

४२-राजा दूबे-माधो दूबे सांचोरा

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, राजा दूबे, माधो दूबे, सांचोरा, मणुन्दमें रहते तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : सो ये दोऊ भाई ललिताजीकी सखी हैं. एकको नाम 'कुञ्जरी' कुञ्जरचनामें निपूण, सो राजा दूबे प्रगटें. दूसरीको नाम 'रसालिका'. जो फलके रसमें अलि, जो भ्रमर लोभाय, तेसे लीला रसमें मग्न रहते. सो रसालिका माधो दूबेको प्रागट्य हैं. ए दोऊ भाई सांचारोके घर जन्में. सो इनको पिता बहोत साधू हतो. मर्यादा मार्गकी रीतिसों श्रीठाकुरजीकी पूजा करतो. सो इनके घर साधू, सन्त, वैरागी भूखौ जाई निकसे तो तिनकों भूखे जान न देतो. प्रीतिसों राखतो. एकदासीको जागरन सदा करतो. सो राजा दूबे, माधो दूबेके माता - पिता मान्दे भये. तब दोऊ बेटानसों कहें, अब हमकों या समें श्रीरनछोडजीके दरसन करावो तो बहोत आछो. तब राजा दूबे, वे दोऊ डोली भाडे करि माता - पिताकों बैठारि, श्रीठाकुरजीकों सङ्ग ले चले. सो श्रीरनछोडजीके दरसन माता - पिताकों कराये. तब तहां कछुक दिनतें श्रीआचार्यजी द्वारिकामें हतें. सो उहां माता - पिताकी देह छूटी. सो राजा दूबे, माधो दूबे, संस्कार किये, सो सूतक लाग्यो. सो डेरा पर बेठे रहते. तब राजा दूबे, माधो दूबे, लोगनसों पूछे, इहां कहूं कथा - वार्ता भगवद् - चर्चा होत होई तो तहां जैये. सूतकके दिन कटत नाहीं. तब एकने कही, श्रीवल्लभाचार्यजी पृथ्वी - परिक्रमा करि इहां पधारे हैं, सो कथा बहोत सुन्दर कहत हैं. तहां तुम तीसरे प्रहर जैयो. तब राजा दूबे, माधो दूबे वासो कहैं, हमकों आज तुम ले चलियो, फिरि हम नित्य जायंगे. तब उनने कही, आछो. सो (वह) तीसरे प्रहर आई, राजा दूबे माधो दूबेकों ले गयो. सो दोऊ भाई दूरितें दण्डौत् करि दूरि बैठें. तब श्रीआचार्यजी कहें, आगें आवो. तब दोऊ भाई कहैं, महाराज हमको सूतक हैं, तातें दूरि बैठे हैं. तब श्रीआचार्यजी कहें, तुम दोऊ भाई सदा सुद्ध हो. सो हमारे आगे आइ बैठो. और सन्देह होई सो पूछियो.

तब दोऊ भाई प्रसन्न होई आगें आइ बैठे. तब श्रीआचार्यजी नन्दमहोत्सवको वर्णन, श्रीभागवत् दशमस्कन्धके पांचमें अध्यायको वर्णन कियो सो नन्दालयकी लीलाको प्रगट अनुभव दोऊ भाईनकों कराय दिये. पाछें सब कथा होय चुकी तब दोऊ दण्डौत् करिकें कहें, महाराज ! कहा करिये ? सूतक हैं, नाहीं तो बिनती करते. अब हमारो जन्म सुफल भयो. जो आपके दरसन पाये. तब श्रीआचार्यजी कहें, हम तिहारें मनकी बात जाने हैं जो तुम दोऊ हमारे हो, सूतक पाछें अङ्गीकार करेंगे. तहां ताई हम इहां हैं. तुमको अङ्गीकार करि, तुम्हारे सगरे मनोरथ पूर्ण करि, और ठौर जायगें. तुम चिन्ता फिकर मति करियो. अब अपने डेरा पर जाय काल्हि याही समें यहां अइयो. तब दोउ भाई दण्डौत् करि प्रसन्न होइ डेरा पे गये. सो सगरी राति नन्दालयकी

लीलाको अनुभव आवेस रह्यो. पाछें सबेरे उठिकें दोऊ भाई आपुसमें बतराये, जो अब आपुन कृतार्थ भये. श्रीआचार्यजी साक्षात् पुरुषोत्तम हैं, जो एक दिनकी कथामें लीलारसको अनुभव कराये. पाछें याही भांति सूतकके दिन नीठि - नीठि बिताये. ग्यारमें दिन न्हाइके सुद्ध होई, श्रीआचार्यजीके पास बड़े सबेरे आई बिनती किये, महाराज ! हमकों सरनि लीजिये. तब श्रीआचार्यजी दोऊ भाईनकों फेरि न्हवाईके नाम सुनाए, ब्रह्मसम्बन्ध कराए. पाछें श्रीआचार्यजी कहें, अब तुम भगवद् सेवा करो. तब राजा दूबे, माधो दूबे कहें महाराज ! हमारे पिताके ठाकुर हमारे पास हैं. पिता - माता पूजा मार्गकी रीतिसों करते, सो इहां आय देह छोड़ी. हम पर आपकी कृपा भई, जा प्रकार आज्ञा करो, ता प्रकार सेवा करें. तब श्रीआचार्यजी कहें, जाऊ डेर तें श्रीठाकुरजी ले आवो. तब माधो दूबे जाइके ठाकुरकी जांपी ले आए. सो श्रीआचार्यजी श्रीठाकुरजीकों पञ्चामृत स्नान कराई राजा दूबे माधो दूबेके माथे पधराए. और आज्ञा किये, सब ठोरतें मन छुटाई निरोध करि भगवद् सेवा करियो. तब राजा दूबे माधो दूबे बिनती करी, जो महाराज ! निरोधको स्वरूप कहा है ? तब श्रीआचार्यजी कहें, निरोध दोई प्रकारको. एक साधनदासको, एक सिद्ध दसाको. साधन दसाके निरोधके लक्षन यह, जो संसार लौकिक वैदिक मनमें सुहाय नहीं. यही मनमें रहें, जो कब भगवद् सेवा करूं ? कब कथा वार्ता करूं ? यामें रुचि उपजे. मन कछू लौकिकमें जाय तो, फेरि खेंचि सेवामें लगावें. यह जानें, जो एक भगवान् हीके आश्रय तें सब कार्य सिद्ध होत हैं. यह साधन दसाको निरोध. और फल दसाको निरोध यह, जो मनको स्वतः ही सिद्ध यही सुभाव परे, जो श्रीठाकुरजीके स्वरूपके ध्यान बिना और ठोर जाय नांही. यह फल दसाको निरोध. तिनकों यह संसारको दुःख सुख अनेक ताप हैं सो, लगे नांहीं. मन श्रीठाकुरजी और उनके लीला रसमें मग्न रहै. यह निरोधको प्रकार है. तब राजा दूबे माधो दूबे बिनती किये, महराजादिराज ! हमकों ता दोई प्रकारको निरोध दुर्लभ हैं. तातें जैसे आपु हमकों संसार समुद्रमें ते डूबते बांहि पकरिके सरनि लिये हैं, याही प्रकार निरोधको दान आपु करोगे तो हमकों कछु सिद्ध होइगो. और प्रकार हमारो तो सामर्थ नांही हैं. या प्रकार दोऊ भाईकी दैन्यता, सरल स्वाभाव, देखिके, दशमस्कन्ध (जाकों) निरोधस्कन्ध कहैं हैं, ताको आपु 'निरोध लक्षन' ग्रन्थ करि, दोऊ भाईनकों पाठ करायकें कहें, तुम दोऊ भाईनकों निरोध सिद्ध होईगो. यह कहि अपनो चरणामृत दोऊ भाईनकों दिये. सो तत्काल दोऊ भाईको मन अलौकिक ह्वै गयो. लीला रसको अनुभव होंन लग्यो. तब श्रीआचार्यजी कहैं, अब अपने घर जाय सेवा करो. जाकों निरोध भयो वाकों, बहुत बोलनो, देस फिरनो नांहीं. तातें घर जाऊं. दैवी जीव आवें तिनकों नाम दीजो. तुमकों तो निरोध सिद्ध भयो. और, जो तुम्हारो सङ्ग मन लगायके करेगो, ताहूकों निरोध सिद्ध होयगो. तब राजा दूबे, माधो दूबे पास द्रव्य हतो सो श्रीआचार्यजीकी भेट करि बिना होई, द्वारिका तें चलें. सो अपने गाम मणुन्दमें आए. घरमें आइ दोई भाई भगवद् सेवा करन लागे. कछुक द्रव्य घरमें हतो तामें निर्वाह करें. काहूसों बहोत बोले नांहीं. जो आवे तापर दया करिके खान पानको समाधन करें. भगवद् वार्ता करि दोऊ भाई श्रीठाकुरजीकी लीला रसमें मग्न रहते.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो जा गाममें राजा दुबे, माधो दुबे रहते. ता गाममें दोई भाई सांचोरा ब्राह्मण और रहते. सो बड़े भाईको नाम रामजी और छोटे भाईको नाम हरिकृष्ण. तामें बड़ो भाई रामजी पढ्यो हतो. सो गाममें पटेलके आगे चोतरा पर बैठिके कथा कहेतो. और छोटो भाई मूरख हतो सो बड़े भाईके खेतकी रखवारी करतो. सो बड़ो भाई रामजी और गाम कार्यार्थ गयो, तब कथा रही. तब एक दिन बरसा बहोत भई. सीतकालके दिन हते. सो छोटो भाई सांझकों खेत पर तें आयो. तब भावजने कह्यो, रोटी खायगो ? तब उह देवरने कही, मोकों सीत बहोत लागत है, तू मोकों रोटी ताती करि देई तो मैं जेंऊं ? तब भावजने कह्यो, खानो होइ तो खा, नातर मैं सोइ रहोंगी. तू कहा गामके पटेलके चोंतरा पर कथा बांचेगोके दादेको ग्रास बहोत दिनको अटक्यो है, सो फेरेगो ? जो हों तोकों ताती रोटी करि देऊं ? खानो होइ तो खा, नांतरु सोइ रहि, मेरे आगे तें उठि जाऊ. ये बचन भावजके सुनिकें मनमें बहोत दुःख भयो. जैसे मन, हृदयमें, बान लागें. सो तत्काल घरमें सों बाहर निकर्यो तब मनमें विचार कियो, जो अब देहको त्याग करनो. के कहूं यह गाम छोड़ कोई और देसकों जानो. फेरि मनमें यह आइ, जो गाममें राजा दुबे, माधो दुबे महापुरुष है, उनकों नमस्कार करिके कहूं जाऊं. सो राजा दुबे, माधो दुबेके घर आइ, दोऊ भाईनकों नमस्कार कियो, और रोवन लाग्यो. तब दोऊ भाई कहें, तू कौन है ? पाछें पास आइ पहचानिकें कहें, तू तो फलानेको बेटा है, हमारी ज्ञाति हैं. तब उनने कही, मेरे दुःखको पार नाहीं है, अब मैं देह त्याग करूंगो. सो तुमकों नमस्कार करन आयो हूं. तब माधो दुवेने कही, श्रीठाकुरजी सर्व सामर्थ युक्त हैं, वे दुःख दूरि करेंगे, तातें तू अपनो दुःख तो कहि. तब इन सगरे समाचार कहें जो मोकों भावजने ऐसे वचन कहै सो हृदय (मैं) खूंचत हैं. सो मैं तिहारी सरनि हों. मेरो दुःख दूरि करिये. सो तब दोऊ भाई वाको समाधान कियो, जो श्रीठाकुरजी सब आछी करेंगे. पाछें वाकों महाप्रसाद लिवाये, कह्यो, अब सोइ रहै. पाछें प्रातःकाल भयो. तब माधो दूबे वाकों उठाइके कहें, अब तू स्नान सन्ध्यावन्दन करिकें यहां अइयो. तब उह देह कृत्य करि स्नान सन्ध्या करिकें आयो. तब माधो दूबेने राजा दूबे सो कह्यो, अब यासो कहेनो होई सो कहो. तब राजा दूबेने कही, तुम्हारी जीभ चली है, सो कछू कहोगे. ये झार लगाए हो. अपने ऐसे काहेकों करनों ? अनेक संसारमें दुःखी सुखी हैं. तब माधो दूबेने राजा दूबेसों कह्यो, तुम श्रीआचार्यजीके सेवक हो, सो यह बहोत दुःखी है, या पर कृपा करो. तब राजा दूबे कहे, तुम कहो तब माधो दूबे कहे यह काम तुम्हारे आगे मोकों कहनो उचित नाहीं है. तब राजा दूबे कहे हमारी आज्ञा है कहो ?

भावप्रकाश : सो राजा दूबे कहे, लगायो है, ताको कारन यह, लीला सम्बन्धी दैवी नाहीं है, कृपा करि उद्धार होइगो.

तब माधो दूबे श्रीठाकुरजीके मन्दिरके द्वार आगे बेठाइकें, श्रीआचार्यजीको स्मरन करि अष्टाक्षर मन्त्रको उपदेश किये. नाम दे पाछें अष्टाक्षरकी माला जप कराये. सो उह संस्कृत बोलन लाग्यो. तब माधो दूबेने राजा दूबेसों कह्यो, आज्ञा होई तो याकों एक मालाको जप और कराऊं. तब राजा दूबेने कही, अवस्य जप और करावो. तब माधो दूबेने एक माला अष्टाक्षरको और जाप कराये. तब वह श्रीभागवत् पुराण शास्त्र सबके अर्थको जानन लाग्यो. तब माधो दूबेने राजा दूबेसों कही, आज्ञा होइ तो एक माला जप और कराऊं. तब राजा दूबेने कही, यह इतनो ही पात्र है. आगे रस उछ्रेगो.

भावप्रकाश : नाहीं करी ताको अर्थ यह, जो तीसरी माला जपावे तो लीलारसको अनुभव होई. परन्तु लीला सम्बन्धी नाहीं है. इतनो हीं याकों बहोत है.

पाछें राजा दूबेनें माधो दूबेसों कही, जो तुम अपने मनमें यह मति लाइयो, जो हमने याकों (ऐसो) कियो, तासों यह ऐसो भयो है. यह सब श्रीआचार्यजीकी कृपा तें भयो है. हमारो तिहारो स्वरूप तो तुम जानत हों. तब माधो दूबेने कही, मेरे कहा है ? कर्ता तो श्रीआचार्यजी हैं. पाछें वाकों राज - भोग आरती पाछें महाप्रसाद लिवाये. पाछें तीसरो प्रहर भयो तब माधो दूबेने वासों कही, जाउ, पटेलके चोंतरा पर कथा कहो, पोथी हमसों ले जाऊ. तब वह पोथी ले दोऊ भाइनकों नमस्कार करि, पटेलके चोंतरा ऊपर बैठि कथा हकन लाग्यो. सो दोय - चारि पटेल देखिकें सगरे पटेलसों जाइ कहे, जो भटटजी कथा कहें हैं सो बेगे चलो. तब सगरे पटेल आये. सो इनको कहनो कृपा बलको, सो बहोत सुन्दर कथा कही. तब सगरे पटेल कही, तुम कथा तो बहोत सुन्दर कहत हो, आगें क्यों न कहै ? तब इन कही, मेरो बड़ो भाई कहतो, तातें मैं नाहीं कहतो. तब सबन कही, अब तुमही कथा कह्यो करो. हमारे बड़े भागि हैं, सो ऐसो ब्राह्मन मिल्यो. पाछें सगरे पटेलन मिलिकें बिचार कियो, जो भटटजी प्रथम कथा कहें, सो खाली हाथ जाई, सो, आछो नाहीं. तब

सगरे पटेलन भटटजीकी भली भांति पूजा करी. जब उह उठिकें माधो दूबे पास आइ तह पूजाको द्रव्य आगे धरि बिनती करी, तुम मेरे गुरू हो, तुम्हारी कृपा तें पटेलनकें चोंतरा पें कथा कहि आयो, सगरे पटेल प्रसन्न भये. तब माधो दूबेने कही, ऐसे आज पाछें मति बोलियो. हमारे तिहारे गुरु श्रीआचार्यजी हैं. हमतो उनकी आज्ञातें नाम देत हैं. तातें यह सब द्रव्य उनको है. श्रीआचार्यजी पधारेंगे तब उनकी भेट करियो, उनके सेवक हूजियो. तब इन कही, मैं कहां धरो, तुम आछो जानो सो करो. तब माधो दूबे पूजाको द्रव्य धरि राख्यो. सो ऐसेमें जगन्नाथ जोसी और रामदास अड़ेल श्रीआचार्यजीके दरसनकों जात हते, तिनके सङ्ग वह द्रव्य श्रीआचार्यजीकों पठाई दियो. पाछें पटेलके चोंतरा पर नित्य कथा कहत हतो. सो कछुक दिनमें बड़ो भाई आयो. तब यह आइ माधो दूबेसों कह्यो जो आज्ञा होय तो दादाको ग्रास बहोत दिनसों ग्राममें अटक्यो है सों फेरिनको जाऊं. तब माधो दूबेने कही, अब तुम जो कार्य करोगे सो सिद्धि होइगों. श्रीआचार्यजीकी कृपा हैं, तातें तुम जाऊ.

तब दोऊ भाइनसों आज्ञा ले नमस्कार करि वा गाममें गयो, उहांके रजपूत उठिके पांइन परे और कहें, हमारे बड़े भाग्य हैं, जो तुम आये. पाछें इनको सुन्दर ठौर रहनकों दिए. सीधा - सामग्री दे रसोई कराए. पाछें सगरे भेले भये, रात्रीकों तब इनकों बुलायके कहें, कछू कथा सुनावो. तब एक श्लोक कहिके अर्थ सबनकों सुनाए. सो सगरे बहुत प्रसन्न भये. कही भटटजी बहोत योग्य हैं. पाछें कहे, पांच रात्रि यहां रहो, पाछें तिहारी बिदा करेंगे. जो सब मिलिकें, बिचार करन लागे, जो भटटजीकी विदा कहा करिये ? बहोत दिनमें अपने प्रोहितको बेटा आयो है, इनको ग्रास बहोत दिनसों अटक्यो है, सो ब्राह्मनको ऋण आछो नाहीं. (तातें) सौ मन तो अन्न देऊ, और सौ रुपैया रोक देऊ, और इनको भूमिको कागद फेरिके लिख देऊ. या प्रकारसों, आगेको ऋण ब्राह्मनको अपने ऊपर है तासों छूटें. तब सबनने कही, बहोत आछो. पाछें एकसौ रुपैया रोक दिये और सौ मन अन्न दिये. सब जने मिलकें तब इन कही, अन्न मेरे घर पठाइ देऊ. तब गाड़ा पर लादिकें गाड़ा सङ्ग दिये. और फेरिकें नयो कागद लिख दिये, और कहें हम जमींदार हैं, सो बरसके बरस अपने ग्रास ले जाइयो.

भावप्रकाश : काहेतें ब्राह्मनको रिन बहोत माथे बढ़े तब दियो न जाय.

पाछें वस्त्र नये दिये. एक गाय एक भैंस आछो दूधकी सङ्ग दें मनुष्य सङ्ग करि दिये. सो लेकैं सब अपने घर आए. सो अपने घरके द्वार पर आए. भावजकों पुकार्यो, जो पटेलके चोंतरा पर कथा हू कहि आयो, और दादेको ग्रास हू फेरि ले आयो हूं, अब द्वार खोलो. तब भावजने किंवाड खोल्यो, इनकों तेज देखिकें चक्रित व्हे रही. पाछें बड़े भाई देखे तो इनके मुख पर भगवत तेज विराजत हैं. तब डरपिके कह्यो, भाई ! भीतर आवो. तब ये भावजकों नमस्कार करिकें कहे, जो तुमनें मोकों शिक्षा दीनी. सो श्रीठाकुरजी मेरो मनोर्थ पूर्ण कियो. पटेलके चोंतरा पर कथा हू कहि आयो, और दादेको ग्रास हू फेरि ले आयो. तब भाई, भोजाई दोऊ डरपे. जो या पर कृपा भगवानकी भई है, जो शाप देह तो भस्म होइ जायेंगे. तब भाई भोजाईने कही, स्नान करो, कछु खाउ ! तब इन कही, राजा दूबे माधो दूबेकों नमस्कार करि जाऊं तब कछु करों. तब बड़े भाईने कही, उनके पास पहले जाइवेको कहा कारन है ? तब इन कही तुम तो मेरे स्वरूपकों जानत हो, यह सब कृपा तो उनकहीकी भई है. मेरे में कहा है ? तब बड़ो भाई सङ्ग चल्यो, जो मो पर कृपा करें तो आछो. सो दोऊ भाइ आई राजा दूबे, माधो दूबेकों नमस्कार किये. तब छोटो भाई सब प्रकार कह्यो, सौ रुपया कपड़ा आगें धरें और कह्यो, सौ - मन अन्न है सो राखो. तब माधो दूबेने कही, अन्नकों बेचिके दाम करो, यह सब श्रीआचार्यजीको है. यामें हमारो तुम्हारो कहा है ? तब राजा दूबेने माधो दूबेसों कही, जो दूसरे भाईसों यह प्रकार मति कहियो. पाछें बड़े भाईने बिनती करी, जो जैसे मेरे छोटे भाई पर कृपाकीनी, तैसे मोहू पर करो. मैं तुम्हारी सरनि हों, तब माधो दूबेने राजा दूबेसों कही, जो यह बिनती करत है. तब राजा दूबेने कही, जो हम तो तुमसों पहले ही कही हती, जो झार मति उरजावो. तातें अब तुमकों करनो होइ सो याहूकों नाम मात्र सुनाइ देउ. तब बड़े भाईकों न्हवाइके नाम सुनाये. पाछें अन्न बेचिके दान किए. पाछें कछुक दिनमें श्रीआचार्यजी द्वारिका पधारे. सो सिद्धपुरमें रानाव्यासके घर उतरे. सो खबरि राजा दूबे माधो दूबे पाई. सो दोऊ भाईकों सङ्ग ले, द्रव्य सगरो सङ्ग ले सिद्धपुर आये. श्रीआचार्यजीकों दण्डोत् करि द्रव्य सगरो भेट करि दोऊ भाईकी सगरी बात कही. पाछें बिनती करी जो महाराज ! ये दोऊ भाईनको आपु नाम सुनाये. तब श्रीआचार्यजी दोऊ भाईको नाम सुनाये. पाछें आपु द्वारिका पधारे. (पाछें) राजा दुवे माधो दुवे दोऊ भाईनकों अपनो सङ्ग ले घर आये. सो राजा दूबे माधो दूबेके सङ्ग करि दोई सांचोरा कृतार्थ भए. सो राजा दूबे माधो दूबे ऐसे भगवदीय हे. सो इनकी वार्ता कहां तांई कहिये. ....वार्ता ।।३५।।

भावप्रकाश : और राजा दूबे माधो दूबेके निरोध भयो. सो इनके हृदयको अलौकिक भाव है, लीला सम्बन्धी सो कह्यो न जाई.

४३-उत्तमश्लोकदास सांचोरा

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, उत्तमश्लोकदास सांचोरा ब्राह्मन, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो ये उत्तमश्लोकदास श्रीनाथजीके सेवकनकी रसोई करते. सो सवनकों आपु ही परोसते प्रीतिसों. सो सगरे वैष्णव महतारि कहि बोलते. ये उत्तमश्लोकदासकों सेवकनके ऊपर ममत्व बहोत तातें श्रीगुसांईजी इन पर प्रसन्न बहुत रहते.

भावप्रकाश : सो उत्तमश्लोकदास, ईश्वर दूबे लीलामें श्रीचन्द्रावलीजीकी सखी हैं. सो सात्विक भाव इनमें बहुत. श्रीचन्द्रावलीजीकों और सब सखीनकों प्रीतिसों सामग्री अरोगावती. सो एक समें श्रीचन्द्रावली श्रीठाकुरजी और श्रीस्वामिनीजीकों अपनी कुञ्जमें पधराए. सो श्रीचन्द्रावलीजी अपने हाथसों दोऊ स्वरूपनकों परोसत हती. सो ये दोऊ सखीनके मनमें गर्व भयो, जो सगरी सखीनकों नित्य परोसत हैं, सो आजु दोऊ स्वरूप पधारे हैं. तिनहूकों (हम) परोसें तो आछो. सो चन्द्रावलीसों पूछे नाहीं. और दूसरो थार उठाईके चली. इतनमें चन्द्रावलीजी आई. कहे, कहां जात हो ? तब गर्वसों कहें, कहा हम न परोसें ? श्रीठाकुरजीकों. तब श्रीचन्द्रावलीजी कहे, इहां गर्व करे ताको काम नाहीं. भूमि पर गिरो. सो ये दोऊ भूमि पर अनेक जन्म पाए. लीलामें इनको नाम सुशीला, एकको नाम मेंना. सो उत्तमश्लोकदास सुशीलाको प्रागट्य और ईश्वर दूबे मेंनासखीको प्रागट्य. सो अब गुजरातमें गोधरामें दोऊ सांचोराके जन्में. सो एक कायस्थकी रसोई दोऊ जने करते. सो वह कायस्थ आगरे आयो, देसाधिपति पास. तब ये दोऊ जने आये. सो श्रीआचार्यजी आगरे पधारे हैं. सो राजघाट पर श्रीयमुनाजीके तीर सन्ध्यावन्दन करत हते. ता समें उत्तमश्लोकदास और ईश्वर दूबे श्रीयमुनाजी स्नानकों आये, सो न्हात हते. श्रीआचार्यजी सन्ध्यावन्दन करिके यह बचन कृष्णदाससों कहे, जो ब्राह्मन होइके शूद्रकी टहेल करनो उचित नाहीं है. शूद्र ब्राह्मनकी टहेल करे तो ठीक है.

ऐसे श्रीभागवतमें कह्यो है. सो यह बात उत्तमश्लोकदास और ईश्वर दूबे सुनि कहैं, महराज ! आप कहें सो सांच, परन्तु पेटके लिये हम शूद्रकी चाकरी करत हैं, कहा करें और गुन तो हमारेमें है नाहीं, पढ़े नाहीं हैं. तातें शूद्रकी रसोई करि निर्वाह करत हैं. तब श्रीआचार्यजी कहें हम तुम्हारे ऊपर नाहीं कहैं. हम तो अपने सेवकनसों बतरावत हैं. और ईश्वर सेबको भरन पोषन करत हैं. विश्वास ईश्वर पर चाहिये. तव दोऊ जने विनती किये, महाराज ! आप तो शास्त्रकी बात कही, परन्तु इहां तो ऐसे हम हैं. सो आप हमको सेवक करो. हमको बाताओ सो हम करे, जा प्रकार शूद्रकी टहेल छूटे. तब श्रीआचार्यजी कहें, तुमहू ब्राह्मन हो, योग्य हो. सेवक कैसे होऊगे ? तब दोऊ जने कहें महाराज ! हम ब्राह्मन काहेके हैं ? ब्राह्मनको कर्म तो हम जानत नाहीं तातें हमपे कृपा कारो, सरनि लेऊ. जो हमारी कछू बुद्धि उत्तम होइ. तब श्रवल्लभाचार्यजी कहें, आगे आवो. या प्रकार दोऊ जनेंकों बुलाई नाम निवेदन कराये. तब दोऊ भाईने बिनती करी, अब हमकों आज्ञा करो, सो हम करें. तब श्रीआचार्यजी कहें, तुम अपने गाम जाइ माता - पितासों बिदा होइ, गोवर्द्धन परवत पर आइयो, तहां श्रीगोवर्द्धनधरकी सेवा करियो. तब दोऊ मिलिकें उह कायस्थसों लेखो करि, अपनो द्रव्य ले चले. तब उहा कायस्थने बहोत राखनकी कही, महिना हू बढ़ाय देवेकी कही, परन्तु रहे नाहीं. तहांते चले, सो गोधरा अपने - अपने घर आये. सो माता - पितासों कहें, हमकों आज्ञा देऊ तो ब्रज जाई. तब दोऊजनके माता - पिताने कही, कछु दिन रहो, हम हूं सङ्ग चलेंगे. सो माता - पिताके मनमें यह, जो ऐसे कहिकें पुत्रकों राखें. सो ऐसे बारह महिना बीते. तब दोऊनने कही, माता - पितासों, जो तुम चलोगे ? वर्ष दिन तो भयो. तब वे कहें, अब चलेंगे. ऐसे करत पांच वर्ष बीतें. तब उत्तमश्लोकदास तो माता - पिताकों, औरकों जताए बिना गोवर्द्धन उठि आये. श्रीनाथजीको दरसन करि श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करि सगरी बात अपनी कही. तब श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धनधरकी रसोईकी सेवा दिये. सो सगरे सेवकनकों बहुत प्रीतिसों परोसते. सो उत्तमश्लोकदासकों सगरे सेवक महतारी कहिकें बुलावते. .... ।।वैष्णव ३६।।

सो ये श्रीआचार्यजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे. ....वार्ता ।।३६।।

४४-ईश्वर दूबे सांचोरा

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, ईश्वर दूबे सांचोरा ब्राह्मन, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : इनको लीलाको स्वरूप तो उपर कहे हैं. ओर आगरेमें सेवक जा प्रकार भए हैं, सोउ उपर कहें हैं. उत्तमश्लोकदास आये, ताके छ महिना पीछे ईश्वर दुबेके माता - पिताने देह छोड़ी. तब ईश्वर दूबे गिरिराज आइ, श्रीनाथजीको दरसन करि, श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करि, सगरो प्रकार कहें. जो हम और उत्तमश्लोकदास सङ्ग सेवक भये हैं. और यही आज्ञा श्रीआचार्यजीकी हैं, जो श्रीगोवर्द्धनकी सेवा करियो. सो अब आज्ञा करी सो करें. तब श्रीगुसांईजी कहें, उत्तमश्लोकदास श्रीनाथजीकी रसोई और सेवकनको परोसना करत हैं, सो तुम दोऊ बेगि मिलके सेवा करो. सो दोऊ सेवा करन लागे.

वार्ताप्रसङ्ग १ : पाछें कछुक दिनमें उत्तमश्लोककी देह छूटी, तब श्रीगुसांईजी ईश्वर दूबेको नाम उत्तमश्लोक राखे. सो ये उत्तमश्लोकदास श्रीगोवर्द्धनधरकी रसोई करते, और सगरे सेवनको परोसना करते. और अपनी गांठिते घृत अधिक परोसते.

भावप्रकाश : सो यातें, जो सेवक अपनो नेग पावें तामें मेरी कहा सेवा है ? कछू अपनी गांठितें अपनी सत्ताको परोसों तो सेवा है, या भावसों परोसते. और सामग्रीमें घृत परोसते ताको कारन यह, जो घृततें सगरे सरीरमें बल होइ तो प्रभुकी सेवा भली भांतिसों करें, हारे नाहीं. तातें अधकीमें घृत परोसते.

तातें सगरे सेवक महतारी कहिकें बोलते. सो यह बात श्रीगुसांईजीसों वैष्णवनने कही. सो सुनिके श्रीगुसांईजी उत्तमश्लोकदासके उपर प्रसन्न होइकें पास बुलाइकें पूछे, तुम अपनी गांठि ते घृत मंगाइ सेवकनकों घृत (क्यों) परोसत हो ? सगरे सेवक अपने नेग तो पावत हैं ? तब उत्तमश्लोकदासने कही, महाराज ! सेवकों सेवामें बहोत श्रम होत हैं, परवत पर चढत हैं, उतरत हैं. तातें श्रीठाकुरजीकौ मन खेद पावे. तातें अधिक घृत लिये तें सरीरमें बल होय तो सेवक भली भांति सेवा करे. यह बात सुनिके श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये. जो इनकों सेवकनमें ऐसी वात्सल्यता है. तब श्रीगुसांईजी कहें, उत्तमश्लोकदास ! तुम कछू मेरे पास मांगो. मैं तुम्हारे ऊपर बहोत प्रसन्न भयो हों. तब उत्तमश्लोकदास कहें, महाराज ! मैं तिहारे ऊपर कबहूं अप्रसन्न न होऊ, यह मैं मांगत हों. तब श्रीगुसांईजी कहैं,

ऐसेई होइगो. तब सगरे यह सुनिके कहे, यह इननें कहा मांग्यो ? जीव प्रसन्न भयो तो कहा ? अप्रसन्न भयो तो कहा ? प्रभु प्रसन्न भये चहिये तब एक वैष्णवने श्रीगुसांईजीसों विनती करी, महराज ! यह उत्तमश्लोकदासने कहा मांग्यो ? जो मैं सदा (तिहारे ऊपर) प्रसन्न रहूं. तब श्रीगुसांईजी कहैं, यह बात तुम उत्तमश्लोकदाससों पूछ्यो, जो यह कहा मांग्यो ? तब सगरे वैष्णव मिलिके उत्तमश्लोकदाससों पूछ्यो, जो तुम यह कहां मांग्यो ? मैं प्रसन्न भयो रहूं. तब उत्तमश्लोकदासने कही, मैं याते मांग्यो, जो अब या समें श्रीगुसांईजी प्रसन्न हैं, और कोई समें सेवामें अपराध परे अप्रसन्न होई, तब मेरो मन बिगरे तो ठिकानो मेरो न रहे. यातें मांग्यो, जो आप अप्रसन्न होउ तोऊ मेरो मन न बिगरेगो. यह बात सुनिके सगरे वैष्णव प्रसन्न भये. तब श्रीगुसांईजी सगरे वैष्णवनसों कहैं जो उत्तमश्लोकदास बहोत पोंहोचके मांग्यो. अब याको बिगार कबहू न होइगो. सो उत्तमश्लोकदास ऐसे भगवदीय हे. सदा एक रस प्रीति श्रीठाकुरजीमें, श्रीगुसांईजीमें, सेबकनिमें, वैष्णवनमें निबाही. तातें इनकी वार्ता कहां तांइ कहिये. ....वार्ता ।।३७।।

४५-वासुदेव छकड़ा सारस्वत

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, वासुदेव छकड़ा सारस्वत ब्राह्मन, सिंहनन्दके वासी तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : वासुदेवदास श्रीनन्दराजीके मुख्य खवास है. नन्दराजी जहां जाते तहां नन्दरायजीके वस्त्र - पात्र सब सङ्ग ले चलते. लीलामें इनको नाम ‘मनसुखा’ है. सो वासुदेवदास सिंहनन्दमें एक सारस्वत ब्राह्मनके घर जनमें. सो सारस्वतके द्रव्य बहुत हतो, सो वासुदेवदास बरस तेरहके भये. सो हाकिमने दण्ड सिंहनन्दमें तें सब पें तें लियो. सो वासुदेवदासके पिता पर दोई हजारको दण्ड कियो. तब वासुदेवदासनें पितासों कह्यो, जो हाकिमकों दण्ड काहेकों देउ ? हाकिमसों लरेंगे. तब वासुदेवदासके पिताने कही, जो हाकिमसों कैसे बरि आवेंगे ? तब वासुदेवदासने कही, यह बातकी मैं जानी, मोकों बताइ दीजो. सो हाकिमके प्यादे चार आये. तब वासुदेवदासने उनसों कह्यो, हम दण्ड कौन बातको देई ? जो हाकिमसों कहो, जो लरनो होय तो लरैं. दण्डतो हम न देइंगे. तब वे चारों प्यादे गारीगरा दैन लागें, जो हम तो तोकों पकरिकें ले चलेंगे. तब वासुदेवदास चारोंके हथियार छीनके ऐसो धक्का दिये जो वे चारों दूरि गिरि पड़े. (पाछें) उह हाकिम पास जाइ पुकारे, वासुदेव ब्राह्मण हमकों मार्यो, और हथियार छीन लीने. और कह्यो, हाकिमसों लरेंगे.

तब हाकिम क्रोधमें भरि गयो चालीस प्यादे पठाये. और कह्यो, याहि समें वा ब्राह्मनको बांधि लावो. सो चालीस प्यादेकों आवत देख, वासुदेवदास दौरिकें चालीसनके भीतर पैठे. काहूकी पाग, काहूके हथियार ले, काहूकों मुक्की, काहूकों लातसों मारि सबकों धरतीमें गिराये. (और) हथियार छीन एक - एक पागमें पांच - पांच दस दसकों बांधिके हथियार सबके ले घर आये. सो सगरे हाकिम पास जाई पूकारें, जो एक बरस तेरह चौदहको बालक है, सो हमारे सवकके हथियार छीन सबकी मुस्क बांध्यो तातें वह कछू मनुष्य नाहीं है. कोऊ देवता है. तातें तुम सम्हारे रहियो. तब हाकिमने पांचसे मुनष्य आछे अपने सङ्गके पठाये. और मनमें हाकिम हूं डरप्यो. सो द्वारके आगे गलीमें एक छकड़ा आड़े कराय मारग बन्द कर्यो. और वह छकड़ा प हजार मन पत्थरकी सिला आड़ी दे आपु हथियार लेकें बीस मनुष्यनसों वैठ्यो. सो पांचसे प्यादे देखि वासुदेवदास फेंट बांधि एक बड़ो लटठ लियो. ताको सगरे लोह सो मढ्यो, मन दोइको भारी. से लै, दौरिके प्यादेके बीच आई लटठ फिरायो. सो एक बार फिरायेमें पचास साठ एकके उपर एक गिरे. या प्रकार जैसे कुम्भारको चाक फिरे ता प्रकार दस पन्द्रह फेरा करि सगरे गिराये, प्यादे. पाछें क्रोधके आवेसमें वासुदेवदास भरि गये. सो हाकिम जहां रहत हतो तहां दौरे. सो आड़े छकड़ा हजार मनको देखि ताकों एक हाथको धक्का दे उठाए. सो छकड़ा और पत्थर दूजिं जहां तहां जाय परे. छकड़ा टूक - टूक भयो. और छकड़ा पत्थरनको सोर भयो. सो वीस प्यादेनसों हाकिम भाजि जाइ सरस्वती नदीमें पेरि दूरि भाजि गयो. सो बासुदेवदास हाकिमके चोतरा तोरि गिराये. पाछें रात्रिकों हाकिम अपने घर आई सिंहनन्दके भले मनुष्य दोई चारि सराफ बजाज बुलाइकें कह्यो, तुम वासदेवदासके घर जाय समाधान करि आवो. जो हम चूकै, तुमसों दण्ड लिये. अब तुम कहो तो हाकिमी करों, कहो तो और गाम जाऊं. अब जन्म भरी तुमकों कछू न कहूंगो. तब वे हाकिमकी सगरी बात कहे. तब वासुदेवदास कहें, हमारे कहा हाकिम सो बैर है ? आबो रहो. तब हाकिम रह्यो. दूसरे दिन वासुदेवदाससों मिलिकें कह्यो, तुम मनुष्य नाही हो, कोई देवता हो ? सो मो पर दया राखियो. काम काज होइ सो कहियो. और उह छकड़ा उठायके डारि दियो, तो दिनतें सगरे गामके लोग इनकों वासुदेवदास छकड़ा कहेते. सो वासुदेवदासको गर्व बहोत बढ्यो, काहूकों गाममें मनमे लावे नाहीं. गारी दे, तो सब चुपके रहतें. सो एक समें श्रीआचार्यजी थानेश्वर पधारे. सो कृष्णदास सरस्वतीमें न्हात हते, ता समें भाग जोगतें वासुदेवदास न्हाइवे सिंहनन्दसों आये. सो वासुदेवदास जल उछालतें कृष्णदास मेघन पास आये. तब कृष्णदास मेघनने कही, तू कौन हैं ? छींटा देत आयो ? तातें रञ्च दूरि सूधी रीतिसों न्हा. सबकों छीटा तेरे परत हैं. यह कृष्णदासके वचन सुनिके वासुदेवदास कृष्णदासके मारनकों हाथ उठायो. सो कृष्णदासकों श्रीआचार्यजीकी कृपा को बल, सो वासुदेवदासके दोऊ हाथ पकरि लिये. सो ये वासुदेवदास बहुतेरो बल किये, परन्तु हाथ छूट्यो नाहीं. तब हार मनमें माने. पाछे पूछे तुम कौन हो ? तब कृष्णदास मेघनने कही, मैं तो श्रीवल्लभाचार्यजी साक्षात् पुरुषोत्तमदास प्रगटे हैं तिनको सेवक हों. पाछें कृष्णदास मेघनने पूछे तुम कौन हो ? तब वासुदेवदास कहै, मैं सारस्वत ब्राह्मन हों. सो मेरे मनमें

बड़ो गर्व हो, जो मो बराबरि बल काहूमें नाहीं. मैं पांचसो प्यादे सहित हाकिमको हरायो, छकड़ा हजार मनाको डारि दियो. सो मेरे हाथ तुम सहजमें पकरे मैं बहुतेरो बल कियो छूट्यो नाहीं. तातें तुम्हारो एसो प्रभाव है, सो तुम्हारे स्वामी कैसे होइंगे ? सो मैं तुम्हारे सङ्ग चलिके श्रीआचार्यजीके दरसन करूंगो. तब कृष्णदास हाथ छोड़ि दियो. दोऊ जने न्हाइके श्रीआचार्यजी पास आये. तब श्रीआचार्यजी दामोदरदाससों कहै, देख दमला ! भगवदीय जाको हाथ पकरे ताकों संसार तें पार उतारे. सो कृष्णदास सहजमें वासुदेवदासकों हाथ पकरे, ताके भागकी कहा है ? सो वासुदेवदास आय श्रीआचार्यजीकों दण्डोत् करि, पाछें बिनती करी, जो महाराज ! सरनि लीजिये. तब श्रीआचार्यजी कहे, तुमको गर्व बहोत मनमें रहत है, सो सरनि हमारी आइके कहा करोगे ? हमारी सरन तें दैन्यता होत हैं. तब वासुदेवदास कहैं, महाराज ! अब मोको गर्व नाहीं चाहिए. गर्व किये बिगार है. अहङ्कारीकों भगवदीय सूझे नाहीं. कृष्णदासको अपराध कियो हतो. परन्तु भगवदीय मेरे हाथ पकरे, तातें गर्व गयो. अब आपु कृपा करो, जातें मेरो जन्म सुफल होई. और आपको प्रागट्य हम सारिखे अधमनके उद्धार अर्थ है. तब श्रीआचार्यजी वासुदेवदासकों नामनिवेदन कराये, और कहैं, तेरो नाम वासुदेवदास छकड़ा. आगे गर्वमें छके रहतें, अब भगवद् रसमें छके रहोगे, तातें छकड़ा. और पांचो इन्द्रिय विषयकी छटठो मन बस करेगो, तातें तेरो नाम छकड़ा और १. ऐश्वर्य २. वीर्य ३. यश ४. श्री ५. ज्ञान ६. वैराग्य छहो धर्मश्रीठाकुरजीमें रहत हैं, सो तेरेमें रहेंगे. तातें नाम छकड़ा. या प्रकार कृपा करि आर्सीवाद दे सगरे धर्म हृदयमें श्रीआचार्यजी धरि दिये. सो मानसी सेवा फल रूपमें मन लगि गयो. तातें भगवद् सेवा इनके उपर नाहीं पधराये. तब वासुदेवदासने कही महाराज ! सिंहनन्द पधारिये, तो मेरे माता पिताकों सुरनि लीजिये. तब श्रीआचार्यजी कहैं, हमकों सरस्वती नदी उलङ्घनी नाहीं. तातें सिंहनन्द न जाइंगे. तातें जा, जाकी श्रद्धा सेवक होनकी होय तिनको लाइयो, औरसों मति कहियो. तब वासुदेवदास श्रीआचार्यजीको दण्डौत् करि, सिंहनन्द आई माता पितासों कहे, श्रीवल्लभाचार्यजी थानेश्वर पधारे हैं. सो साक्षात् भगवानको स्वरूप हैं. तातें तुम सेवक होउ. मैं उनको सेवक व्है के आयो. तब माता पिताने कही, हम काल्हि सवेरे चलेंगे. आजु तो खानपान करि चूके. यह बात कहे सो इनके परोसमें सास बहू रहति हती, क्षत्रानी हती. सो सासको नाम 'गोरजा' बहूको नाम 'समराई' सो इन यह बात सुनी, (तब) वासुदेवदाससों पूछें, तुम माता पिताकों सबेरे कहां ले जाऊगे ? तब वासुदेवदास जा प्रकार सेवक भये हते, सो सब प्रकार कहै, जो में एसे अहङ्कारी दुष्ट हतो, सो मोको अङ्गीकार किये. तब सास बहूने कही, सबेरे हमहूकों ले चलियो. पाछे यह बात सब सिंहनन्दमें लोगनने सुनी, जो थानेश्वरमें श्रीवल्लभाचार्यजी बड़े महापुरुष पधारे हैं. जिनको सेवक वासुदेवदास छकड़ा एसो अहङ्कारी भयो. सो सगरो दरसन करनकों थानेश्वर आयो. तामें कितनेक समर्पन किये. थानेश्वर गाममें हूं बहोत जने सेवक भये. सो सबेरे वासुदेवदास माता पिताकों और सास बहूकों सरस्वतीमें न्हवाई श्रीआचार्यजीके पास आप दरसन करि, दण्डौत् किये. पाछे वासुदेवदासने बिनती करी, महाराज ! ये माता पिरता हैं, इनकों सरनि लीजिये. और ये सिकन्दरमें सास बहू रहति हैं, या

बहूको धनि मरि गयो. सो ये दोऊ आपकी सरनि हैं. तब श्रीआचार्यजी सास बहूकों नाम सुनाइ निवेदन कराये. और वासुदेवके माता पिताकों नाम सुनाए. तब वासुदेवदासने श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों बिनती करी, महाराज ! माता पिताको ब्रह्मसम्बन्ध कराईये. तब श्रीआचार्यजी कहे, इनको इतनो ही अधिकार है. इनसों निवेदन न सधेगो. तेरे सम्बन्धसूं इनको उद्धार करि दियो. तब सासने बिनती करी, महाराज ! अब हमकों कहा कर्तव्य है ? सो आपु कृपा करिके कहिये. तब श्रीआचार्यजी कहें, तुम भगवद् सेवा करो. तब सासने बिनती करी, महाराज ! अब हमकों सब पधराई दीजिये. तब श्रीआचार्यजी कहैं, तुम सरस्वती नदीमें जाऊ, तहां तुमकों भगवद् स्वरूप प्राप्ति होइगो, सो लै आवो. तब सास सरस्वती पर आई, देखें तो जलके किनारे एक ठाकुर बिराजे हैं. सो देखिके बहोत प्रसन्न भई, लायकें श्रीआचार्यजीकों दियो. तब श्रीआचार्यजी पञ्चामृत कराईकैं सास बहूके माथे पधराए. श्रीठाकुरजीको नाम 'श्रीदामोदरजी' धरे. पाछें कहे, घर जाईके सेवा करो. तब सास बहू घर आई. सास चतुर हती, सो सेवा करें. बहू भोरी हती सो ऊपरकी परचारगी करती. सो सास बहूकी वार्ता आगे कहेंगे. तहां इनको लीलाको स्वरूप भाव कहेंगे. पाछें वासुदेवदाससों श्रीआचार्यजी कहैं, अब तुम माता पिताकों लेके घर जावो. तब वासुदेवदासने कही, मेरो मन आपके सङ्ग रहिवेको है. तब श्रीआचार्यजी कहैं, अब तो तुम माता पिताको घर ले जाइकें गाममें रहो. पाछें माता पिताकी देह कछुक दिनमें छूटेगी, तब तू हमारे घरमें आई रहियो. तब वासुदेवदास दण्डवत् करि माता पिताकों सिकनन्दमें ले गये. श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमाकों पधारे.

वार्ताप्रसङ्ग १ : और एक समें श्रीआचार्यजी अड़ेलमें विराजत हते. सो एक दिन भण्डारीनें श्रीआचार्यजीसों कही, महाराज ! आज भण्डारमें सीधो सामान कछू नाहीं है. तब श्रीआचार्यजी एक सोनेकी कटोरी श्रीठाकुरजीके मन्दिरमें तें लाइ दिये. और कहैं, आजुके लायक राजभोग पर्यन्तकी सामग्री ले आवो, अधिकी मति लाइयो. यह बनियांके यहां कटोरी गहनें धरि आइयो. तब भण्डारी सोनेकी कटोरी ले बनियांके इहां धरि, राजभोगकी सामग्री सब लायो. पाछे सामग्री करि श्रीठाकुरजीकों भोग धरि समयानुसार भोग सराय आरति करि अनोसर कराये. महाप्रसाद श्रीयमुनाजीमें पधराई दियो. और बाकी गायनकों खवाइ दियो. आप परिकर सगरे सेवक सहित भूखे ही बैठे रहे.

भावप्रकाश : सो यह वैष्णवको सिक्षा दिये, जो श्रीठाकुरजीकी वस्तु होई सो वैष्णवकों लेनो नाहीं, ठाकुर जी अरोगें. यह रीति सबकों सिखाये.

और यहां सिहनन्दके सगरे वैष्णव मिलिकें श्रीआचार्यजीकी भेटकी मोहौर तीस हती सो वासुदेवदास छक्कड़ाकों दीनी. जो ये श्रीआचार्यजीकों पहोंचती होइ, तो आछो. तब वासुदेवदास वैरागीको मेष धरि, सगरी मोहौरकों लाखके गोला सालिग्राम जैसे करि, चन्दन चढ़ावत चले. सो सिंहनन्दके चले थानेश्वर रहै, वैष्णवके घर महाप्रसाद लिये. थानेश्वरके चले दिल्ली रात्रि रहै. वैष्णवके घर महाप्रसाद लिये. दिल्लीके चले मथुरा रहै, वैष्णके घर महाप्रसाद लिये. मथुराके चले आगरे रात्रि रहे. वैष्णवनके घर महाप्रसाद लिये. मार्गमें चोर ठग मिले, सो जाने, जो वैरागी है, सालिग्राम पूजत जात है.

भावप्रकाश : वासुदेवदासके सरीरमें बल बहोत हतो, एसो क्यों किये ? सो यातें, जाने जो यह श्रीआचार्यजीको द्रव्य है, कहूं मार्गमें सोई जाई, तब कोऊ चोरी करें. सन्मुख तों काहूको सामर्थ नाहीं, जो ले सके. और गुरुकी सेवार्थ, सालिग्रामकी रीति करि ले गयो हो, सो भगवद् अपराध हू मनमें नाहीं लाये. सो यातें, जो गुरुको कार्य करनो, कोई प्रकारसों होइ, गुरु सेवा बने. तासों भगवद् अपराध बाधक नाहीं. भगवद् सेवामें गुरु अपराधसों डरपत रहेनो, यह जताये.

पाछें आगरेसों चले सो दोई दिन चवेनासों काम चलाये. तीसरे दिन, तीसरे प्रहर, जो दिन श्रीआचार्यजी भूखे बैठे रहैं, ता दिन अड़ेल आये. सो गाम बाहिर आई लाखको गोला फोरि, मोहोर काढ़ि आये, श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों दियो, मोहौर तीस आगे धरी. महाप्रभुनसों विनती किये, महाराज ! सिंहनन्दके वैष्णवनकी भेट हैं. तब श्रीआचार्यजी कहैं, वासुदेवदास ! इतनी मोहौर तू कैसे लायो ? मार्गमें चोर ठग बहोत हैं ? तब वासुदेवदासने कही, महाराज ! यह बात तो मैं न कहुंगो, आपु खीजोगे सुनिके. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कहैं, हम तेरे उपर प्रसन्न होंगे, न खीजेंगे. जैसे लायो सो कहि दे. तब वासुदेवदासने सब प्रकार कह्यो, जो लाखको गोला करि, चन्दन चढ़ावत आयो. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कहै, ऐसे न करिये. भगवद् स्वरूपको आकार करि पाछें अन्यथा करनो पड़े. तब वासुदेवदासने कही, महाराज ! कछू प्रतिष्ठा करी न हती. लाखको गोला बांध्यो हतो. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कहें, तऊ ऐसे न करिये. पाछें भण्डारीकों बुलाय तीस मोहौर श्रीआचार्यजीमहाप्रभु दिये. और कहैं, मङ्गलातें ले सेन पर्यन्तकी सामग्री ले कटोरो छुड़ाइ ले आवो. पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु सेन पर्यन्त पहोंचि श्रीठाकुरजीकों अनोसर कराय आप भोजन किये. ता पाछें श्रीअक्काजी आदि सगरे परिकर भोजन

किये. वासुदेवदासकों महाप्रसादकी पातर धरी, सगरे सेवक वैष्णव महाप्रसाद लिये. पाछें तीस मौहौरकी पोहोंच लिखि, श्रीआचार्यजीमहाप्रभु वासुदेवदासकों दूसरे दिन बिदा किये. सो वासुदेवदास कछुक दिनमें सिंहनन्द आय पहोंचे, पत्र वैष्णवनकों दिये. तब सगरे वैष्णव प्रसन्न होय, वासुदेवदाससों पूछ्यो, जो तुम इतनी दूरि मौहौर कैसे ले गये ? राह तो निबहत ऐसी नाहीं. ठग चोरनको डर है बहोत ही ? तब वासुदेवदास उन वैष्णवन आगे सब प्रकार कहे. तब सगरे वैष्णव वासुदेवदासकी सराहना करन लागे.

वार्ताप्रसङ्ग २ : और एक समय श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके बड़े पुत्र श्रीगोपीनाथजी आगरे पधारे. सो श्रीगुसांईजीको भेट सौ मोहोर हती सो वैष्णव श्रीगोपीनाथजीकों दीनी. इतने ही में सिंहनन्दसों वासुदेवदास छक्कड़ा आगरे आये. ता समय श्रीगोपीनाथजीने कही, जो ऐसो कोई वैष्णव है ? जो ये सो मोहोर अड़ेल पहोंचावे. तब वासुदेवदासने कही, जो महाराज ! मोकों देउ, में पहोंचाऊंगो. तब श्रीगोपीकानाथजी श्रीगुसांईजीकों पत्र लिखि दियो. और सौ मोहौर वासुदेवदास छक्कड़ाकों दीनी. तब वासुदेवदास वैसे ही लाखको गोला करि चन्दन चढ़ावत वैरागी भेषसों चले. मारगमें चबेनीकों लेइं. सो तीसरे दिन अड़ेल आइ लाखमें ते मोहौर निकासी. श्रीगुसाइजीकों आई दण्डवत् करि श्रीगोपीनाथजीको पत्र देके, सौ मोहौर आगे धरीं. तब श्रीगुसांईजी पत्रकों बांचि मोहौर सम्भारि भण्डारीकों दिये पाछें वासुदेवदासकों महाप्रसाद लिवाये. तो पाछें दूसरे दिन मोहौरनकी पहोंच आप श्रीगुसांईजी लिखि वासुदेवदासकों दिये. तब वासुदेवदास श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करि अड़ेल तें चले. सो तीसरे दिन आगरे आय श्रीगुसांईजीको पत्र श्रीगोपीनाथजीकों वासुदेवदास दिये. तब श्रीगोपीनाथजी वह पत्र बांचिके वासुदेवदास ऊपर बहोत प्रसन्न भये. पाछें पूछे, जो इतनी मोहौर मार्गमें अकेले कैसे तुम ले गये वासुदेवदास ! सो प्रकार तो हमसों कहो ? तब वासुदेवदास सब प्रकार श्रीगोपीनाथजीसों कहें. तब श्रीगोपीनाथजी वासुदेवदाससों कहे, जो ऐसे कबहू न करिये. तब वासुदेवदास छक्कड़ा चुप व्है रहे.

भावप्रकाश : सों यातें, जो यह मर्यादाकी आज्ञा है, जो दोष लगे. गुरुके कार्यार्थ यामें कहा दोष है. या प्रकार वासुदेवदास एक पुष्टि कार्य सर्वोपरि जानते. तातें या प्रकारसों सेवा करी.

वार्ताप्रसङ्ग ३ : और एक समय श्रीगुसांईजी श्रीमथुरामें बिराजते हते. सो श्रीठाकुरजीसों राज भोगसों पहोंचि आप भोजन करि बैठकमें पधारे. तब आगरेमें रूपचन्दनन्दा श्रीगुसांईजीके सेवक हैं, तिनकों श्रीगुसांईजी पत्र लिखें. तामें बसन्तपञ्चमीकी सामग्री मंगाए. पाछें वासुदेवदासकों बुलाइकें, पत्र देके श्रीगुसांईजी कहे, जो इतनी सामग्री आगरे तें रूपचन्दनन्दासों लेके सांझ तांइ आइ रहियो. और एक टोकरा महाप्रसाद मंगाइ, एक चादरकी झोली बनाई, वासुदेवदासके गरेमें डारि महाप्रसाद तामें भराये. तब वासुदेवदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! जोड़ा पहेरे महाप्रसाद कैसे लेतो जाऊं ? तब श्रीगुसांईजी कहैं, तुमकों दोष नांहीं, श्रीठाकुरजीकी सेवार्थ जात हो, सो जोड़ाकों पहेरे ही आनन्दसों प्रसाद लेत चले जइयो. तब वासुदेवदास प्रसाद लेते ही मथुरा तें चले. सो आगरेमें जाइके रूपचन्दनन्दाके घर गए. ता समय रूपचन्दनन्दा महाप्रसाद ले हाथ धोवत हते. सो वासुदेवदास छकड़ाकों देखि भगवत् स्मरन करि, घरमें कहै, बड़ो हांडा धरि रसोई चढ़ावो. तब वासुदेवदासने कही, रसोई होयगो तहां तांई मैं न रहूंगो. पत्र बांचि मोकों सामग्री लिवाय देऊ. अबही मथुरा जाऊंगो. तब रूपचन्दनन्दा श्रीगुसांईजीको पत्र माथे चढ़ाई, बांचिके अपने भाईसों कहै, जो घरमें जितनो अनसखड़ी महाप्रसाद होय सो सब एक टोकरामें ले 'छारछू' दरवाजे जाई बैठियो, मैं बाजारमें होइ आवत हों. तब रूपचन्दनन्दा वासुदेवदासकों बाजारमें आइ बसंत लायक सुन्दर वस्त्र आदि सामग्री लेके देन लागे. तब वासुदेवदासने कही, मेरो हाथ प्रसादी है, तातें तुम मेरी पीठिसों बांधि देऊ. तब रूपचन्दनन्दा वासुदेवदासकी पीठिसों सब सामग्री बांधि, पत्र लिखि दिये. वासुदेवदासके सङ्ग छारछू दरवाजे आय, भाईसों महाप्रसादको टोकरा ले वासुदेवदासकी झोली भरि दीनी, पाछे बिदा करिके दोऊ भाई घर आये. और वासुदेवदास महाप्रसाद लेत आगरेसों चले, सो तीसरे पहर भये श्रीगुसांईजी पोढ़ि उठिके मुख धोइके गादी पर बिराजे हते, ताही समय वासुदेवदास आय टाड़े भये. पाछें श्रीगुसांईजीसों बिनती किये, जो महाराज ! मेरो हाथ प्रसादी है, और सामग्री मेरी पीठि पर बांधि हैं. तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न होइ आपु उठिके वासुदेवदासकी पीठिसों सामग्री खोलि लिये. पाछे रूपचन्दनन्दाको पत्र ल बांचिके श्रीगुसांईजी प्रसन्न भये. पाछे श्रीगुसांईजी वासुदेवदाससों श्रीमुखते कहें जो वासुदेवदास ! तेरे लिये महाप्रसादकी पातर ढांकि राखी है. सो भीतर जाई महाप्रसाद ले. तब वासुदेवदास न्हाइके महाप्रसाद लिये. पाछें सगरी सामग्री श्रीगुसांईजी सिद्ध करि राखे. सबेरे बसन्तपञ्चमी हती, सो उत्सव किये. वासुदेवदासकों दरसन कराये. सो वासुदेवदास सेवामें या प्रकार तत्पर रहते.

वार्ताप्रसङ्ग ४ : और श्रीगुसांईजी सेवा तें पहोंचि खवाससों कहे, जो आसन झारि, सन्ध्यावन्दनको साज लेकें विश्रान्त घाट पर चलियो. सो आपु दस पांच वैष्णव वासुदेवदास छकड़ाकों सङ्ग ले विश्रान्त घाट नित्य पधारते. तहां श्रीगुसांईजी सन्ध्यावन्दन करिके पाछें श्रीकेसोराईजीके दरसनकों जन्म स्थान, नित्य दरसनको जाते. सो एक दिन मथुरिया चौवे मिलिकें काजी पास जाई काजीसों कहें, श्रीगुसांईजीकी चुगली करी, जो तुम इनकों लागाबांधि द्वै एक दिन करो तो इनके सेवक एसे हैं, जो तुमकों हजारन रुपैया देंयगे. तब काजी द्वैयसे मनुष्य हथियार बंध लेके सङ्ग जन्मस्थानके आसपास ठाढ़ो व्है रह्यो. सो जब श्रीगुसांईजी केसोरायजीके दरसन करिके बाहिर पधारे, तब काजीके लोग सावधान होन लागे. तब श्रीगुसांईजीसों वासुदेवदासने बिनती करी, जो महाराज ! इनकी नजर बूरी दीसत है. तब श्रीगुसाईजी कहें, तेरो ए कहा करेंगे ? अपने इनसों कछु बैर नाहीं है, तातें चल्यो चलि. तब वासुदेवदास आगे चले. तब काजीके मनुष्य पास आइके कहें, जो अब कहां जाउगे ? तब वासुदेवदासने फिरि श्रीगुसांईजीसों बिनती करि कह्यो, जो महाराज ! ये बूरी नजरीसों आये है. तब श्रीगुसांईजी कहैं, तोसों होइ सो तू करि. तब वासुदेवदास चार पेंड़ आगे चलि, एकके पास ढाल, और गुरज हती ताकों एक थापकी मारी. सो वह थापके लागत ही गिरि पड्यो. तब वासुदेवदास वाकी ढाल और गुरज लेकें मनुष्य बीस पचीस गिराय दिये. तब सगरे भाजिकें एक बड़ी हवेलीके भीतर सहित जाय, किंवाड़ लगाय लिये. सो वासुदेवदासने श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो भले इकठोरे एक घरमें सब धसे हैं. आपु कहो तो चारों और तें हवेलीकी भींति गिराय देऊं सगरे दबि मरेंगे. तब श्रीगुसांईजी कहें, ऐसे मति करो, तेरो यह कहा बिगारे हैं ? अपने विश्रान्त चलो. तब श्रीगुसांईजी विश्रान्त पधारिके सन्ध्यावन्दन करि घर पधारे. पाछें दूसरे दिन श्रीगुसांईजी जन्मस्थान दरसनकों पधारे. तब काजी दोय चार मनुष्य सङ्ग ले, गलेमें पटुका डारि श्रीगुसांईजीसों बिनती कियो. जो महाराज ! मेरो अपराध क्षमा करो. मोसों लोगनने आपकी चुगली करी हती, सो अब उनसों समझोंगो, जो मोसों कन्हैया और भीमसों लरावत हैं. सो आप साक्षात् कन्हैया हो, जो इन सबनिकों बचाये, नाहीं तो, यह भीम सबनकों मारतो. परन्तु अब मोसों कछू टहेल आज्ञा करो. तब श्रीगुसांईजी कह्यो, जो तुमसों जाने चुगली करी होइ, तासों तुम कछू मति कहियो. तब काजी बिनती करि गयो. और मनमें कह्यो, जो देखो, दुष्टनने इनकी चुगली करी, और ये कन्हैया ऐसे दयाल, जो बैरी पर हू दया करी. सो वासुदेवदास ऐसे कृपापात्र हते.

वार्ताप्रसङ्ग ५ : और सिंहनन्दमें वैष्णवनके उत्सवमें एक बड़ो उत्सव होतो, तब तो वासुदेवदासकों महाप्रसादकों बुलावते. और छोटे

उत्सवमें दस बीस वैष्णव बुलावते. तामें वासुदेवदासकों न बुलावते. सो कछुक दिनमें सिंहनन्दके सगरे वैष्णव श्रीगुसांईजीके दरसनकों श्रीगोकुल आये. तब वासुदेवदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती करि कह्यो, जो महाराज ! ये वैष्णव उत्सव कीर्तनमें मोकों बुलावत नांहीं. तब श्रीगुसांईजी इन वैष्णवनसों कहे, जो तुम वासुदेवदासकों उत्सव कीर्तनमें क्यों नाहीं बुलावत हो ? श्रीआचार्यजीके कृपापात्र भगवदीय हैं. इनकों बुलाये बिना कैसे चले ? तब वैष्णवनने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, महाराज ! बड़े उत्सवमें तो बुलावत है और छोटे उत्सवमें दस बीस वैष्णवनकी सामग्री एक अकेले लेई तोऊ भूखे रहै तब अपराध परे, तातें नाहीं बुलावत. तब श्रीगुसांईजी कहे, बंधान बांधो जो दो सौ वैष्णव बुलायवेको मनोरथ होय तो, सो बुलावो, सौमें वासुदेवदास. और सौको मनोरथ होय तो, पचास और पचासमें वासुदेवदास जो पचासको मनोरथ होय पच्चीस और पच्चीसमें वासुदेवदास. और दसको मनोरथ होय तो पांच बुलावो तो इनकों नाही. तब वैष्णवनने कही महाराज ! ये भूखे रहे तो अपराध होई. तब श्रीगुसांईजी कहें यामें तुमकों अपराध नाहीं, या प्रकार करियो. सो तब तें श्रीसिंहनन्दके वैष्णव वासुदेवदासकों उत्सवमें बुलावन लागें.

भावप्रकाश : यामें यह जताये, जो भगवदीय एकही बुलाइये तामें सब आये. भगवदीयके आये श्रीठाकुरजी बेगे प्रसन्न होय.

वार्ताप्रसङ्ग ६ : और वासुदेवदासके जजमान जो आगरेमें बहुत रहते. सो पितरपक्षमें वासुदेवदास आगरे जाते, सो सगरे क्षत्रीनकौ न्योता मानते. सबनके घर महाप्रसाद लेते. धोती उपरना तथा कपराको थान, दक्षिना, सब लेके पन्द्रह दिनको भेलो करि पाछें जब पितर पक्ष होइ चुके तब दक्षिनाके पैसानको चामर और खांड़ ले श्रीगोकुल जाय भण्डारमें देते. और कपरा सब ठौर छन्ना, मन्दिर, वस्त्र पोंछिवेको सागघर, भण्डार, पानघर, फूलघर आदिमें नये वस्त्र करते. सो श्रीगुसांईजी सब ठौर नये वस्त्र देखिके पूछे, जो सब ठौर एक ही वेर नये वस्त्र कहांते आये ? तब सगरे सेवक कह्यो, जो महाराज ! वासुदेवदास लाये हैं, उनने किये हैं. तब श्रीगुसांईजी वासुदेवदाससों पूछे, जो इतने नये वस्त्र तुम कहांते लाये ? तब वासुदेवदास कहैं, महाराज ! आगरेमें क्षत्री मेरे यजमान रहत हैं. सो पितृपक्षमें मैं उहां जाइ पन्द्रह दिन रहि उनके घर महाप्रसाद लेत हों. वे दक्षिना और कपरा देत हैं. सो दक्षिनाके चामर खांड़ लाई भण्डारमें देत हूं, वस्त्रके छन्ना आदि करत हूं. तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न होई कहें, जो देखो भगवदीयको कार्य, अलौकिकमें लगाइ दिये हैं.

पाछे वर्षके वर्ष जब श्रीगुसांईजी सब ठौर नये छन्ना, पोतना, मन्दिर वस्त्र देखते तब पूछते, जो वासुदेवदासने करे होइंगे ? तब सब सेवक कहते, आगरे तें वासुदेवदास लाये हैं. सो श्रीगुसांईजी वासुदेवदासके उपर बहोत प्रसन्न रहते.

भावप्रकाश : यामें यह जताये, जो लौकिक वैदिक कार्यार्थ भगवदीय वैष्णवकों कछू दीजिये तो भगवदीय अलौकिक करि देय. आगरेके (यजमान) श्राद्ध करिके श्राद्धके नामसों देते. और वासुदेवदास ले श्रीगुसांईजीके घर अधिकार करावते. तामें वे क्षत्री लोग हू कृतार्थ भये. और इनके पितरहू कृतार्थ होइ गये. सो वासुदेवदासके हृदयमें ऐसो दृढ़ भगवद् आश्रय हतो, जो लौकिककों कछू मनमें लावते नाहीं. श्राद्धके नामसों महाप्रसाद हू लेते. श्राद्ध सम्बन्धी ले अलौकिक करते. परन्तु इनकों बाधक कछू न होतो. ऐसो भगवद् बल, सदा नन्दालयकी लीलाको काम काज किये. इहां श्रीआचार्यजीमहाप्रभुकी टहल करे, फेरि लीला रसको अनुभव किये. परन्तु निकुञ्जलीलाको अनुभव नांहीं, नन्दालयकी लीलाको हैं, तातें नन्दालयकी लीलाको अनुभव भयो. वासुदेवदास छकड़ा ऐसे भगवदीय हे, तातें इनके माथे श्रीठाकुरजी नाहीं पधराये, लीलामें हूं वस्तू सामग्री लाइकें श्रीयसोदाजीकों देते. ..... ।।वैष्णव ३८ ।।

वार्ताप्रसङ्ग ७ : और जब श्रीगुसांईजी परदेसकों पधारते, तब वासुदेवदास सङ्ग जाते. सो एक छकड़ाको भार उठाइ ले चलते. तातें सब कोऊ इनकों वासुदेवदास छकड़ा कहते. ऐसे टेकके वैष्णव हे. तातें वासुदेवदासकी वार्ता कहां तांई कहिये. .... ।।वार्ता ३८ ।।

४६-कृष्णदास घघरी क्षत्री

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, बाबा वेनु सारस्वत ब्राह्मन, कृष्णदास घघरी क्षत्री और यादवेन्द्रदास बनियां, बाबावेनुको खवास, ए तीनोंकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ये पूरबमें कासी प्रयागके बीचमें एक गाम हतो, तहां रहते. सो बाबावेनु और कृष्णदास ये दोऊ लीलामें विशाखाजीकी सखी हैं. लीलामें बाबावेनु तो 'सोरसेनी' और कृष्णदासको नाम, 'कामलता'. और 'सोरसेनी' की सखी एक 'तिलकनी' सो यादवदास, बाबा वेनुके खवास भये. सो

ये तीनों अनेक जन्म यातें पाये, जो एक दिन विसाखाजीने कही, इनसों श्रीनन्दरायजीके घर देखि आव, श्रीठाकुरजी जागे होइ तो वस्त्र मांगि ले चलें. सो ए तीनों श्रीनन्दरायजीके द्वार पर आई. ता समय श्रीठाकुरजी तीनोंनसों पूछे, जो विसाखाजी कहां है ? तब ए तीनोंननें कही, हमकों खबरि नाहीं. हम तो तिहारे दरसनकों आये हैं. सो जो कछू विसाखाजीसों कहनो होई, सो हमहींसों आज्ञा करो. या प्रकार विसाखाजीकी बराबरिको सौभाग्य अपनेमें जान्यो. तब श्रीठाकुरजी हंसिकैं चुप होई रहे. भीतर जसोदाजीके पास पधारे. ये तीनों सखी द्वार पर बैठि रहीं, जो श्रीठाकुरजी हंसिकें भीतर पधारे हैं सो फेरि अबही बाहिर आवेगे. यह जानि द्वार पर बैठी. यह बात एक सखीने विसाखाजीसों जाय कही, सो विसाखाजी दौरिकैं आई. आइकैं देखें तो, तीनों आपुसमें हंसत हैं. तब विसाखाजीने शाप दियो, जो भूमिमें जन्म लेऊ. यह अभिमानो फल. सो तीनों गिरीं. बाबा वेनु एक सारस्वत बाह्मके घर जन्मे, सो बरस तेवीस चोवीसके भये. सो बाबा वेनु और कृष्णदास दोऊ आपुसमें परम मित्र हते, सङ्ग ही रहतें. और जादवदासके घर खानपानको सङ्कोच हतो. सो यादवदास बाबा वेनुकी खवासी टहल करते. सो बाबा वेनु देवीके उपासक हते, देवीकों सर्वोपरि जानते. सो एक दिन श्रीकल्याणरायजी ठाकुरजी बाबा वेनुकों स्वप्नमें कहे, मैं कल्याणी देवी हों, या गामके तलाबमें हों. सो तू मोकों बाहर निकास, मेरी पूजा कर. तब प्रातःकाल बाबा वेनु यह बात कृष्णदास अपने मित्रसों कहे, तब दोऊ जने तलाबमें पेंठे. सो छाती बराबरि पानी सगरे तलाबमें हतो. सो सगरे ढूंढ़त बाबा वेनुके हाथमें श्रीकल्याणरायजी आये. तब बाबावेनु तलाब तें बाहिर आइ, वह तलाबके ऊपर ही घरमें जो द्रव्य हतो, ताको एक छोटो सो मन्दिर बनवाय देवीके भावसों देवीकी थापना करी. कल्याणी देवी नाम धर्यो. सो गामके लोग देवी जानि मानता बहुत करें, तामें बाबा वेनु कृष्णदास और जादवदासको निर्वाह होइ. ऐसे करत वर्ष पांच बिते. तब श्रीआचार्यजी काशी तें अड़ेल पधारत हतें. सो इह गाममें आई कल्याणरायजीके मन्दिर पास एक आमके वृक्षके नीचे बिराजे. ता समें बाबा वेनु और कृष्णदास, पास गाम हतो तहां गये हते. तब मन्दिरमें ते श्रीकल्याणरायजी आचार्यजीकों पुकार्यो, जो आपु भीतर पधारो. तब श्रीआचार्यजी मन्दिरके भीतर जायके देखें, लेहंगा, लुगरा पहरे हैं. तब श्रीआचार्यजी पूछे, देवीकी नांई क्यों बैठे हो ? तब श्रीठाकुरजीने कही, कहा करूं ? या गाममें ठाकुरजीकुं कोई जानत नाहीं. और बाबा वेनु, कृष्णदास, यादवदास दैवी जीव हैं. तिनके उद्धार करनार्थ मैं देवी होई बाबा वेनुसों पूजा कराई हैं. काहेतें, बाबा वेनु देवीको उपासक है. सो अब आपु मोकों श्रीठाकुरजीको स्वरूप करो. इहां चार घड़ी आपु बिराजो. बाबा वेनु, कृष्णदास, यादवदास खवासकों अङ्गीकार करि पाछें पधारो. तब श्रीआचार्यजी लेहंगा, लुगरा, उतारि, लेहंगा एक खूंटी पर धरि दिये. और लुगराकों फारि एक परदनी पहराई, पाग बांधि दिये. पाछें आपु आमके वृक्षके नीचे जाई बिराजे. इतने हीमें बाबा वेनु और कृष्णदास और यादवदास खवास तीनों आये. सो श्रीकल्याणरायजीके मन्दिरमें जाय देखे तो पाग धोती पहरे बैठे हैं. तब बाबा वेनु कही, इहां कौन आयो ? जो मेरी देवीके कपरा उतार्यो ? तब कल्याणरायजीने कही, मोकों छूवो मति मैं तो कल्याणरायजी ठाकुर हूं.

तब बाबा वेनुने कही, ठाकुरकों तो या गाममें कोऊ मानत नाहीं. और मेरो अपराध कहा, जो छुइवेकी नाहीं करत हों ? तब श्रीकल्याणरायजीने कही, आमके वृक्षके नीचे श्रीआचार्यजी बिराजे हैं. तिनको तू सेवक व्है आव. और गामके लोग ठाकुरकों नाहीं मानत तो मेरे तेरे हमारे गामके लोगन सूं कहा काम काम है ? तेरे घरमें सातसें रुपैया नीचे कोठामें गड़े हैं, सो निकासिके मेरो सेवा पूजा करियो. परन्तु अब तुम जाइ श्रीआचार्यजीके सेवक व्हे आवो. तब तीनों जने श्रीआचार्यजीके पास आयके कहें महाराज ! हमको सेवक करियो. तब श्रीआचार्यजी कहें, तीनों जने तलाबमें न्हाइ आवो तब तीनों जने तलाबमें न्हाइके श्रीआचार्यजी पास आये. तब श्रीआचार्यजी तीनोंनकों नाम सुनाय निवेदन कराये. पाछें श्रीआचार्यजी कहै, बाबा वेनुसों, अब तुम एक काम करो. श्रीकल्याणरायजीकों अपने घरले जाई गोप्य रीतिसों सेवा करो. जो कोई गामके जाने नाहीं. और यह श्रीकल्याणरायजीके मन्दिरमें कोई देवीकों बैठारि काहूकों राखि देऊ, सो पूज़ा चलावेगो. तुम कछु देवीकी पूजाको मति लीजो. जो श्रीठाकुरजीकों भोग धरियो सो तीनों जने लीजो. तब बाबा वेनुने कही, महाराज ! आपु मेरे घर पधारिके दोई दिन रहि, जैसे सेवाकी रीति होय तैसे आप कृपा करि बताय देउ, या गाममें कोई जानत नाहीं. तब श्रीआचार्यजी कल्याणरायजीकों पधराय बाबा वेनुके घर पधारे. तहां बाबा वेनुके घरमें नीचेके कोठामें सातसैं रुपैया निकसे. सो लायकैं श्रीआचार्यजीके आगे धरे. तब श्रीआचार्यजी कहें, यह हमारे कामके नाहीं, यह तुमकों दिये हैं. और तेरो दृढ़ विश्वास ठाकुरजीमें होई, तातें दिये, तुम राखो. पाछें श्रीआचार्यजी चार दिन तांई रहि, श्रीकल्याणरायजीकों पञ्चामृत स्नान कराई, बाबा वेनु और कृष्णदासके माथे पधराय, सगरी पुष्टिमार्गकी सेवा रीति बताये. और आज्ञा दिये, श्रीठाकुरजी तुमकों आज्ञा दें सो करियो. या प्रकार समुजाय आपु अड़ेल पधारे. सो बाबा वेनु और कृष्णदास मिलिकें सेवा करन लागे. जादव खवास सगरी उपरकी टहेल करत हते. तब बाबा वेनुने एक ब्राह्मनकों दस - पांच रुपैया दे, देवीकों बैठारि तहां पूजासोंपि दिये. सो वह ब्राह्मण प्रसन्न होई सेवा करतो, गांवकी जीविका हती सो वह खातो. और बाबा वेनु और जादव खवासके तो कोई सगो रह्यो नाहीं, सब मरे. और कृष्णदासके दोय भाई हते, सो अड़ेल आय श्रीआचार्यजी पास नाम पाये. साधारण वैष्णव भये. या प्रकार बहुत दिन बीते. श्रीगोवर्द्धनधर प्रगट होइ गोवर्द्धन पर बिराजे, पाछें श्रीगुसांईजी सेवा करते, सो सुनिके बाबा वेनु और कृष्णदास, जादव खवासको मन भयो, जो श्रीगोवर्द्धनधरके दरसन करें. सो बाबा वेनु हृदयके नेत्रनसूं देखते. श्रीगोवर्द्धनधरके स्वरूपको दरसन करते. और कृष्णदासकों विरह अष्टप्रहर रहतों. जो कब लीलामें प्राप्ति होयगी ? सो कीरतन गायके निर्वाह करते. और जादव खवास भगवद् इच्छा सब बातकी मानि प्रसन्नतासों सेवा करते. सो एक दिन श्रीकल्याणरायजीने तीनों जनेनकों आज्ञा दीनी जो तुम श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों जाव. अब तिहारी तीनोनकी तहां प्राप्ति होयगी. तब बाबा वेनुने कही, आप अब कौनके माथे पधारोगे ? तब श्रीकल्याणकारायजीने कही, कृष्णदासके दोई भोई हैं, तिनके माथे मोकों पधरायके तुम जाव. तब बाबा वेनु, कृष्णदासके दोऊ भाईकों बुलायके कहै, तिहारे बड़े भागि हैं. मन लगायके

श्रीठाकुरजीकी सेवा करियो. यह घर वस्तु सब तिहारे हवाले हैं. हम तीनों जनें ब्रजमें जाइंगे. तहां तीनो जनेनकी देह छूटेगी, भगवद् इच्छा ऐसी जानि परत हैं. तब दोऊ सेवा करन लागे. तब प्रसन्न होई तीनो जने चले. सो कछुक दिनमें मथुरा आये.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो बाबा वेनु हृदयके नेत्रनसों देखते. सो ये तीनों जने केसोरायजीके दरसनकों चले. सो मथुरामें आय दरसन करे. सो दरसन करत हीमें कृष्णदासकों श्रीगोवर्द्धनधरके स्वरूपसूं दरसन भये. सों कृष्णदासकों श्रीगोवर्द्धनधरके स्वरूपकें दरसनको अत्यन्त विरह भयो, सो यह कीर्तन कृष्णदासने गायो.

राग बिलावल
आली ! तू देखरी नयनन गिरवरधर ।
सहचरी कहति दुतिय सहचरीसों परम मुदित प्यारी राधावर ।।१।।
भूषन भूषित अङ्ग, मोहन - बसन मोहत कनक कान्ति हरि ।
चितें चित हरत विश्व जुवतिनके सर्वसु देत कर कमल करि ।।२।।
उपमा कहा देऊं को लायक, बरनों कहा किंसोर वैस वरु ।
सुरति अन्त लटकत ब्रज आवत 'कृष्णदास' बड़भाग कल्प तरु ।।३।।

यह पद गावत ही कृष्णदासकी देह श्रीकेसोरायजीके मन्दिरमें छूटि गई. तब बाबा वेनु और जादव खवासने कृष्णदासकी देहको अग्नि संस्कार करि, बाबा वेनुने जादव खवास सो कही, जो कृष्णदासकों गोह मारि गई. और हम तो श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करिकें देह छोड़ेगे.

भावप्रकाश : याको आसह यह, जो गोह काल रूप है. सो हमारे सङ्गतें इनकों पहले ही लई. यह कहे. तामें काल दोई प्रकारको है, तहां काल

मुख्य अधिकारी श्रीठाकुरजीको है. तब कृष्णदासकों विरह भयो, सो बिरहतें इनकी देह दसा भूलि गई. लीलामें मग्न होई गये. सो बाबा वेनुको सुनाइके किरतन किये, जो 'हे आली!' दोऊ लीलामें विसाखाजीकी सखी है, तातें बाबा वेनुसों कहै. तू देखि, नययनन गिरवरधर. तू जहां तहां क्यों भटकत हैं ? (मैं) नेननसों गिरवरधरकों देखत हों. और ठोर नेन जात नाहीं. सो आगें खोल दियो. सहचरी कहत दुतिय सहचरीसों, कृष्णदास सहचरी है, और बाबा वेनु सहचरी है. सो कृष्णदास तिनसों कहे, परम मुदित, जो आनन्दमय प्यारी राधा तिनके वर हैं. तिनहीसों अपने नेन लगे हैं. या प्रकार कीर्तन करि अपने हृदयको भाव बाबा वेनुकों जताये. सो इनको विरह श्रीगोवर्द्धनधर सहि न सके. जो काल है, सों भगवानकी विभूति है, मुख्य अधिकारी है. इच्छा शक्ति रूपवान है. यातें शिक्षापत्रमें कहे हैं. श्लोक -

यतः कालस्तद्विभूतिः कालः कलयतामहम् ।
मुख्याधिकार्यपि हरेरिच्छाशक्तिस्वरूपवान् ।।१।।

भावप्रकाश : सो काल प्रभुकी इच्छा जानि तत्काल कृष्णदासकों प्रभुके पास पहोंचते करि दिये. तब बाबा वेनुने कही, कृष्णदासकों गोह मारि ले गई. ताको अर्थ यह कृष्णदासकी अहन्ता ममतात्मक वासना रूप देहकों गोह मारि ले गई. काहेते, जहां तांई लिङ्ग सरीर देह न गिरे. तहां तांई भगवद् प्राप्ति न होई. सो लिङ्ग देहकों गोह मारि इनकों ले गई, यह कहें. पाछें अपनी बात कहैं, जो यह श्रीगोवर्द्धनधरके दरसन करि लिङ्ग देहकों छोड़ेगे. तामें यह जताये, हमकों कृष्णदासको सो विरह नाहीं अब ही भयो. सो श्रीगोवर्द्धनधरको दरसन करेंगे तब विरह होइगो, तब देह छोड़ेगे. या प्रकार बाबा वेनुनें दैन्यता जताई, जो हमारो कार्य श्रीगोवर्द्धनधर करेंगे.

पाछें बाबा वेनु और जादव खवास दोऊ मथुरा तें चले, सो श्रीनाथजीद्वार आये. सो श्रीनाथजीके दरसन किये. तहां बाबा वेनुने श्रीनाथजीके आगे कीर्तन किये. तब श्रीनाथजीके कण्ठ तें फूलकी माला गिरी. तब रामदास एक बीड़ा प्रसादी और मालाले बाबा वेनुकों दीनी.

भावप्रकाश : जाको अर्थ यह, जो श्रीनाथजीने तुमकों विरह दियो. और या देहसों बिदा दीनी. अब लीलामें प्राप्त होइंगे. और माला श्रीनाथजीके कण्ठसों बड़ी भई. सो यह, जो माला भक्त रूप है. सो भक्तनके हाथ विरह है. ब्रजभक्त विरह देय, तब आवे. सो मालाके लेत ही विरह भयो. और बीड़ा मङ्गल रूप देय यह जताये, जो तुम पर प्रभु प्रसन्न हैं.

पाछें बाबा वेनु दण्डवत् करि माला बीड़ाले, परवत तें नीचे उतरि, देहि छोड़ि दिये. तब बाबा वेनुकी देहको संस्कार जादस खवासने कियो. पाछें शुद्ध होय श्रीगुसांईजीके दरसनकों आयो. तब श्रीगुसांईजीने इनकूं भगवदीय जानि सेवा दीनी, सो यादवदास करन लागे, परि मनमें खेद रहतो. पाछें जादव खवासनें बिचार्यो, जो अब इहां रहिके कहा करनो ? जहां बाबा वेनु है तहां जाइये. तो आछो.

भावप्रकाश : काहें ते, लीलामें हू जादव खवास बाबा वेनुकी सखी है, तातें बाबा वेनुको टहेल करि प्रसन्न किये हैं. सो अब बाबा वेनुके सङ्ग बिना इनसों रह्यो न जाई. सो विरह भयो.

तब जादव खवासने विचार्यो, जो कृष्णदासकी देहको संस्कार मैं कियो. अब मेरी देहको संस्कार कोई वैष्णव सेवक करेगो. तो सेवामें उनकों अन्तराय परे, सो अपने न करनो. यह विचारि, दरसन श्रीनाथजीके करि, अनोसर पाछें बनमें जाय तहां सूखे भूमिमें गिरी लकड़ी भेली नित्य करि आवे ऐसे करत जानी, जो अब देहके संस्कार लायक लकड़ी भई. तब श्रीनाथजीके दरसन करे. पाछे सवेरे सेवकनसों भगवद् स्मरण करि श्रीगुसांईजीसों दण्डवत् करी. ता पाछें अग्नि लेके वनमें आये. सो जा ओरकी ब्यार हती ता ओर चितामें अग्नि धरि, फेरि श्रीनाथजीकी ध्वजाकों दण्डवत् करि, उह चिता पर बैठि पाछे श्रीआचार्यजी श्रीगुसांईजीके चरणारविन्दको स्मरन करि देह छोड़ि, लीलामें प्राप्त भये. अग्निमें बरिके अपने हाथसों सरीरको संस्कार किये. और पहले बाबा वेनुने यादवेन्द्रदाससों कह्यो हतो, जो विलम्ब मति करियो, तू वेग अइयो. सो तो श्रीगुसांईजीने श्रीनाथजीकी सेवा सोंपी तातें इतने दिन विलम्ब कियो. सो जादवदास ऐसे भगवदीय हे, जो काल इनके बसमें. पाछें एक वैष्णवने श्रीगुसांईजीसों पूछी, जो महराज ! जादवदास दिन दोई तीनतें दीसे नाहीं. तब श्रीगुसांईजी कहैं, जादवदास देह छोड़ि प्रभूकों पाये. तब वैष्णवने कही, सरीरको संस्कार कहां भयो ? तब श्रीगुसांईजी कही, वनमें

लकड़ी भेली करि आपु ही आपने संस्कारको उपाय किये.

भावप्रकाश : सो यातें, जो काहू वहष्णवकों भगवद् सेवामें अन्तराय कैसे करों ? .... वैष्णव ३९।।

सो बाबा वेनु, कृष्णदास, जादव खवास अलौकिक दैवी जीव हे. इनकों अलौकिक सामर्थ ही, ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे. इनकी वार्ता कहां तांई कहिये. ....वार्ता ।।३९।।

४७-जगतानन्द सारस्वत

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, जगतानन्द, सारस्वत ब्राह्मन, थानेश्वरमें रहते, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ये जगतान्द भामा सखी श्रीस्वामिनीजीकी, तिनकी सखी हैं. लीलामें इनको नाम 'माधुरी' है. सो ए थानेश्वरमें एक ब्राह्मणके घर जनमें. सो वर्ष बारहके भये, तब कासीमें जाय विद्या पढ़े. वर्ष बारह कासीमें रहि विद्या श्रीभागवत् पढ़ी. पाछे थानेश्वरमें आई सरस्वती नदीके ऊपर श्रीभागवतकी कथा कहते, तामें इनकी जीविका निर्वाह लायक चली जाती.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो एक समय थानेश्वर श्रीआचार्यजी पधारे सो प्रात:कालकी सन्ध्या किये. इतनेमें जगतानन्द आई सरस्वतीमें न्हाई श्रीभागवतकी कथा कहन लागे. तब श्रीआचार्यजी मनमें बिचारे, यह जगतानन्द दैवी जीव हमारो है, याकों अङ्गीकार करनो. यह विचार करि, जगतानन्दके सन्मुख जाइ बिराजे. तब जगतानन्दने जान्यो, जो कोई पण्डित ब्राह्मण है. तब जगतानन्दने एक श्लोक श्रीभागवतको यह कह्यो, वेनुगीतको. "प्रायो बताम्ब विहगा." यह श्लोक कहि पाछें याकों अर्थ करि, श्रीआचार्यजीसों पूछे, जो याही भांति अर्थ है के कछू और है ? तब श्रीआचार्यजी कहें, या श्लोकमें अनेक भाव है, बहोत अर्थ हैं. और आवत होय तो कहो. तब जगतानन्दने कह्यो,

महाराज ! श्लोकार्थ मोकों आवत हतो, सो मैं कह्यो. अब आपु और कहो. तब श्रीआचार्यजी कहैं, व्यास आसन तुम बैठे हो, व्यास आसनको अतिक्रम हम कैसे करें ? तब जगतानन्द आसनसों उतरके कह्यो, आपु बिराजिके कहो, मोकों सुनिवेकी इच्छा है. तब श्रीआचार्यजी सुबोधिनीको अर्थ उहि श्लोकको करन लागे. कहत - कहत सवारे तें तीसरो पहर भयो. तब श्रीआचार्यजी कहे, यह श्लोककी व्याख्या दोई तीन महिना तांई चलेगी, तातें अब तुम भूखे हो, तातें उठो. तब जगतानन्दने जान्यो, जो ये साक्षात् ईश्वर हैं. तब जगतानन्द दण्डवत् करि बिनती करि कह्यो. महाराज ! आपु साक्षात् पुरुषोत्त हो. जो चाहो तितने दिन अर्थ करो. अब कृपा करि मेरे घर पधारो. तब श्रीआचार्यजी कहे हम अपुने सेवक बिना काहूके घर पधारत नाहीं. तब जगतानन्दने बिनती करी महाराज ! हमकों सेवक करो. तब श्रीआचार्यजी आज्ञा करें, जो जाऊं न्हाई आउ. तब जगतानन्द सरस्वतीमें न्हाइ अपरसमें आयो. तब श्रीआचार्यजीने नाम सुनाय ब्रह्मसम्बन्ध करायो. पाछें जगतानन्दके घर पधारे. तब जगतानन्दसों कहें, तुम भगवद् सेवा करो. तब जगतानन्दने कही, महाराज ! मेरे एक ठाकुर लालजी हैं, सो सदा तुलसीमें बैठे रहत हैं. तिन पर एक लोटी पानी नित्य चढ़ावत हों. तब श्रीआचार्यजी कहें, वेगे श्रीठाकुरजीकों लाव, ऐसे न करिये. तब जगतानन्द श्रीठाकुरजीकों ले आयो. तब श्रीआचार्यजी पञ्चामृत स्नान कराई पाट बेठाये, जगतानन्दके माथे पधराए. आपु जगतानन्दके घर पाक सामग्री करि, श्रीठाकुरजीकों भोग धरे. पाछें आप भोजन करि, जगतानन्दकों जूठनकी पातर धरी. पाछें रात्रिकों श्रीआचार्यजी यह श्लोक कह

पठनीय प्रयत्नेन सर्वहेतुविवर्जितम् ।
वृत्त्यर्थे नैव युञ्जीत प्राणैः कण्ठगतैरपि ।।

सो जगतानन्दने सुनत ही जलतें सङ्कल्प कियो, जो आजु पाछें वृत्यर्थ श्रीभागवत् न कहूंगो, और शास्त्र कहूंगो. तब श्रीआचार्यजी कहें, श्रीभागवतकों कहि जीविका कबहू न करनो, प्रान जाई तो सुखेन जाउ. या प्रकार जगतानन्द घर रहि, पुष्टिमारगकी रीत सेवाकी सिखाई, आप पृथ्वी परिक्रमाकों पधारे. तब जगतानन्द मन लगाईके भगवद् सेवा करन लागे. और पुरानकी कथा आदि महाभारत कहते. तासों जीविका करते. सो भगवद् सेवा करत कछुक दिनमें श्रीठाकुरजी सानुभाव जतावन लागे. सो जगतानन्द बड़े भगवदीय हे. इनकी

वार्ता कहां तांई कहिये. .... ।।वार्ता ४०।।

४८-आनन्ददास विश्वम्भरदास क्षत्री

अब श्रीआचार्यमहाप्रभुनके सेवक, आनन्ददास विश्वम्भरदास क्षत्री, प्रयागमें रहते, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ये लीलामें कुमारिकाकी दोऊ सखी है, लीलामें आनन्ददासको नाम 'नागरी', और विश्वम्भरदासको नाम 'मल्लिका'. सो ये प्रयागमें एक क्षत्रीके घर जनमें. सो इनको मन बालपनसों वैराग्य दसामें रहें. खानपान वस्त्रादिक देह सुख कछू न करें. जैसो माता पिता देंय सो खांय, पहरें. जो आछो माता पिता पहराय देई तो प्रयागमें त्रिवेनीकी कीचमें मेलो करिके पहरे. माता - पिता खीजें, गारी देय, मारे, परन्तु बोले नाहीं. जो गहना पहरावें तो काहू ब्राह्मण वैरागीकूं दे आवें. और पिता मातासों कछू बोले नाही. जब तब यह कहै, जो अपने खाये, पहरे तें कहा है ? कछू परमारथ करो तो आछो है. सो यह बात माता - पिताकों सुहाई नाहीं. पाछें माता - पिताने आनन्ददासकी सगाई करी. तब आनन्ददासने कही, मेरो विवाह मति करो, मैं तो वैरागी हों. सो माता - पिता माने नाहीं, ब्याहकी तैयारी किये. तब दिन एक ब्याहको रह्यो. तब आनन्ददासने छोटे भाई विश्वम्भरदाससों कही, जो माता - पिता तो मानत नाहीं. हमारो ब्याह करि पाछे तेरो ब्याह करेंगे, तब अपने बन्दीखाने परेंगे. सा अब कहा उपाय है ? तब छोटे भाई विशवम्भरदासने कही, यह गाम छोड़ि कहू निकसि चलो. तब आपुन बचेंगे. तब दोउ भाई सन्ध्या समें नाव पर बैठि श्रीयमुनाजीकी पार होइ चित्रकोटमें जाय रहे. तहां पर्बतनकी सोभा देखें, बनफल खाई, दिन आठ रहे. इहां माता - पिता सगरो गाम ढूं ढ़िके हार रहें. पाछे पिताने कोईसों सुन्यो, जो दोई बालक चित्रकोटमें जाय रहे हैं. तब पिता नोमें दिन चित्रकोट आयो, सो वेटानकी दसा देखिकें कह्यो, जो अब तुम घर चलो, तिहारो ब्याह न करेंगे. हम वृद्ध हैं, हमारी देह छूटे तब तिहारो मन आवे सो करियो. अब ही तुमकों बाल अवस्थामें बनवास उचित नाहीं है. तब दोऊ भाई कहें, बनवास तो बालपने ही में ठीक है, परन्तु तुम आये ताते तिहारे सङ्ग चलेंगे. परन्तु हमारे ब्याहकी दोनोंके ब्याहकी चर्चा मति करो. और हमारे पीछे मति परो. चाहेंगे सो करेंगे. कछु चोरी अन्याब करें तो बरजियो हमकों वैरागी अति प्रिय हैं, तिनके पास बैठेंगे. सो तुमकों भावत नाहीं. तातें घर छोड़े. तब पितान कही, अब तुम घर चलो. तिहारे मन आवे सो करियो. हम तिहारे पीछे न परेंगे. तब दोऊ भाई पिताके सङ्ग आये. सो एक बार दोऊ भाई घरमें आइ, खान पान करि जाइ. पाछें कथा वार्ता जहां तहां

सुने. तहांई धरती पर परि रहें. देहको दुःख सुख मनमें गिने नाहीं.

सो एक समय दोऊ भाई श्रीयमुनाजीके तीर बैठे ज्ञानकी वार्ता करत हे. जो भाई ! जन्म सगरो बीत्यो. प्रभुसों पहचान न भई. मन श्रीठाकुरजीमें न लाग्यौ. कथा वार्ता बहोत सुनी, परन्तु मन बस न भयो. सो अपनो मनुष्य जन्म सगरो वृथा गयो. अब फेरि चौरासी भोगेंगे, सो कहा करें कछू उपाय दीसत नाहीं. या प्रकार परस्पर बतराये, पाछे धीरज छूटि गयो, सो श्रीयमुनाजीके किनारे अपनो मूण्ड पीटके रुदन किये. सो सरीरकी सुधि न रही. रात्रिकों वहांइ दोऊ परि रहै. तब अर्द्ध रात्रि समय श्रीठाकुरजी श्रीआचार्यजीसों कहे, जो दोई क्षत्रीके बालक श्रीयमुनाजीके बा पार रेतिमें परे हैं. तिनकों मेरे लिये बड़ो ताप है सो आपु पधारिके उनकों अङ्गीकार करो. नाहीं तो उनको कछू दिनमें सरीर छूटि जायगो. तब श्रीआचार्यजी कृष्णदास मेघन आदि वैष्णवनकों जगाई, वाही समय श्रीयमुनाजीके तीर पधारे. सो घाट पर कोई नाहीं. नाव बंधी है. तब आप वैष्णवन सहित नाव पर बैठे. और वैष्णवनसों कहें, तुम नाव खेवत तो नाहीं जानत, परन्तु जैसे आवे तैसे खेबो. नाव पार जायगी मेरी इच्छा है. तब वैष्णव खेबे. सो नाव, दोऊ भाई रेतिमें परे हते, तहां आई लागी. तब श्रीआचार्यजी श्रीहस्तमें जमुना जल ले वेद मन्त्र पढ़ि दोऊ भाईके ऊपर छिड़के. सो दोऊ उठिके श्रीआचार्यजीकों दण्डवत् करि बिनती किये. महाराज ! हमकों अङ्गीकार करो. तब श्रीआचार्यजी कहें, सवेरो होय तब नाम सुनावेंगे. तब दोऊ भाईने कही, महाराज ! सबेरे लों देह रहै. न रहै, या देहको कहा प्रमान है ? और आज दोऊ जने कछू खान पान तो कियो नाहीं, तातें आप ढील मति करो. श्रीठाकुरजीकी कृपा तें आपको दरसन भयो. सबेरे तांई कहा जानिये कैसी बुद्धि व्है जाई ? तब श्रीआचार्यजी कहें, तिहारी बुद्धि कबहू बिगरे नाहीं, तुम उत्तम जीव हो. और खान पान किये दोऊ तोऊ तुम सुद्ध हो पाछें दोऊनको नाम सुनाइ ब्रह्मसम्बन्ध पाछें करायो. नाव पर बैठाय पार आइ अपने घर ले गये. ता पाछें सबेरो भयो तब श्रीआचार्यजी स्नान करि श्रीठाकुरजीकी सेवासों पोहोंचि, दोऊ भाईसों कहें, तुम भगवद् सेवा करो. तब दोऊ भाई बिनती किये, महाराज ! हमारो मन तो सन्यास लेन को है. परन्तु और ठौर मन जात नाहीं. सो हमारो मन ठिकानें रहे, त्याग दशा छूटे, घरमें रह्यो जाई, तब भगवद् सेवा बने. तब श्रीआचार्यजी चरणारमृत दिये, और 'संन्यास निर्णय' ग्रन्थ करि दोऊ भाईनको सुनाये. तब रस उछलित हतो, सो हृदयमें भगवद् रस स्थिर भयो. मनको उद्वेग मिटि गयो. तब श्रीआचार्यजी वस्त्र प्रसादी श्रीनवनीतप्रियजीके दिये. और कहें, तुम इनको पधराई सेवा करियो. घरमें जाई. तिहारो मन सदा श्रीठाकुरजीकी लीलामें रहेगो. लौकिक वैदिक तुमको बाधक कछू न होईगो. तब दोऊ भाई श्रीआचार्यजीकों दण्डवत् करि बिदा होई घरमें आये. माता पिता रोवन लागे बेटा ! दोइ दिनतें तुम आये नाहीं. कहां खान पान कियो होयगो ? हम जहां तांई जीवे तहां तांई एक बार हमकों दिखाई दे जायो करो. तब दोऊ भाईने कही, हमकों ठौर करि देऊ, तो हम

घर ही में रहि जांइ. तब माता पिताने कही, जो यह सगरी जगह तिहारी है, जहां चाहो तहां रहो. तब दोऊ भाईने कही, जो नाहीं न्यारि करि देऊ तिहारी जगेमें हम न आवें. हम रहे तहां तुम मति आवो, तो हम घरमें रहैं. तब एक अलग जगह बताये. सो दोऊ भाई खासा करि श्रीठाकुरजीकों पधराये, मिलके रसोई करि भोग धरि महाप्रसाद लेंही. पाछें भगवद् वार्ता करें. मगन होई जांय. सन्यास निर्णयको भाव लीलाकों भी बिचार करि रात्रि दिन भगवद् रसमें मगन रहें. और माता पिता बहोत सुख पाये, जो पुत्र घरमें है, न मिले तो कहा भयो ?

वार्ताप्रसङ्ग १ : सोई दोऊ भाई भगवद् वार्ता करें, तामें कबहू छोटे भाईकों निन्द्रा आइ जाइ और बड़ो भाई रसमें मग्न होइ कहें जाई, तब श्रीठाकुरजी हूंकारी भरत जांय. जो छोटे भाईकों निन्द्रा आई है, जो हूंकारी न भरोंगो तो यह बड़ो भाई न कहेंगो. तातें श्रीठाकुरजी हूंकारो भरें. पाछें जब छोटो भाई जागे तब भाईसों कहें, जो मैं यहां तांई सुन्यो, आगे तो मोकों निन्द्रा आई. तब बड़े भाईने कही, तुमको निन्द्रा आई. तब हूंकारी कौन भर्यो ? तब छोटे भाई ने कही, मैं तो सोय गयो, मोको खबरि नाहीं. तब बड़े भाईने कही श्रीठाकुरजीने हूंकारो भरो होयगो. तब दोऊ भाई प्रसन्न भये, जो श्रीआचार्यजीकी का'नितें श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागें. सो दोऊ भाई या प्रकार बालपनेसों लौकिक वैदिक जानें नाहीं. संसारको ताप रञ्चक व्याप्यो नाहीं. ऐसे भगवदीय आनन्ददास विश्वम्भरदास श्रीआचार्यजीके कृपापात्र हे. सो इनकी वार्ता कहां तांई कहिये ...वार्ता ।।४१।।

भावप्रकाश : इनकी वार्तामें यह सिद्धान्त भयो, जो श्रीठाकुरजीको विरह जाकों होई, ताकों बेगेहि प्रभु कृपा करें.

४९-एक ब्राह्मणी

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी सेवकनी, एक ब्राह्मणी अड़ेलमें रहती, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : सो ब्राह्मनी लीलामें ललिताजीकी सखी है, इनको नाम 'शशीकला' है सो अड़ेलमें एक ब्राह्मन के घर प्रगटी. सो वर्ष नौकी भई,

तब ब्याह अड़ेलमें एक ब्राह्मनके घर भयो. सो रोगी रह्यो. तब यह ब्राह्मनी वर्ष पेंतालीसकी भई, तब रोगको मार्यो याको धनी मर्यो. सों लौकिक विषय आदि घरको सुख यह ब्राह्मनी जाने नाहीं. पाछें अकेली भई तब भगवद् इच्छा तें मनमें आई, जो अब श्रीआचार्यजीकी सेवक होंऊ. जाइके श्रीआचार्यजीको दण्डवत् करि बिनती करी, जो महाराज ! मोकों सरनि लीजिये. जन्म सगरो लौकिक पतिकी टहेलमें बीत्यो, सो मरि गयो. अब मैं आपकी सरनि आई हों. यह कहि रोवन लागी. तब श्रीआचार्यजीको दया आई. कहे, जा यमुनाजीमें न्हाई आव. तब वह ब्राह्मनी श्रीयमुनाजीमें न्हाई आई. तब श्रीआचार्यजी श्रीनवनीतप्रियजीके आगे बैठारि नाम निवेदन कराई कहें, अब तू भगवद् सेवा करि, जासो कृतार्थ होई. तब बाह्मनीने कही, मोकों सेवा पधराय दीजिये. तब श्रीआचार्यजी कहें, काल्हि तोकों सेवा देयगें, आजु यहां रहि. पाछे आपु जुठनकी पातर दई. सो वह प्रसाद ले, तहां रही. रात्र रही, पाछे प्रातःकाल भयो. तब वह ब्राह्मनी देह कृत्य करि श्रीयमुनाजी न्हाइकें आई. इतनेमें एक ब्राह्मन दक्षिनसों वाने श्रीआचार्यजीकों एक श्रीभागवतकी पुस्तक और एक लालजीको स्वरूप देके कह्यो, में कासी जाय सन्यास ग्रहन करूंगो, सो यह आपु राखो.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो श्रीआचार्यजी उह श्रीलालजीके स्वरूपको पञ्चामृत स्नान कराय. उह ब्राह्मनीके माथे सेवा पधराई, श्रीबालकृष्णजी नाम धरे. तब वह ब्राह्मनी श्रीआचार्यजीको दण्डवत् करि बिदा होई श्रीबालकृष्णजीकों पधराई प्रीतिसों सेवा करन लागी. श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागें. सो वह ब्राह्मनी निष्कपट भोली बहोत हती और निष्कञ्चन, द्रव्य नाहीं. सो माटीके कुञ्जा श्रीठाकुरजी आगे भरिके राखे. रसोइमें हू माटीके पात्र, और घर हूं निपट छोटो. वही घरमें रसोई, मन्दिर, श्रीठाकुरजीकों सामग्री. आचार किया हू बहोत समझे नांही और नेत्रन सो हू थोरो दीसे. सो प्रीति पूर्वक सेवा करे. तातें श्रीआचार्यजी, श्रीठाकुरजी प्रसन्न रहैं. यजमानके यहां ते कछू आवे, तामें निर्वाह करे. सो वैष्णव सब आपुसमें चर्चा करन लागें. जो यह ब्राह्मनीके माथें श्रीआचार्यजीने भगवद् सेवा क्यों पधराई हैं ? यह कछू आचार समुझत नाहीं, कछू द्रव्य नाहीं. सो हमारे माथे पधरावें तो हम भली भांति सेवा करें. या प्रकार आपुसमें चर्चा करें. परन्तु श्रीआचार्यजीसों कहि न सके. पाछे एक दिन एक वैष्णवनें श्रीआचार्यजीसों बिनती करी, महाराज ! वह ब्राह्मनीके द्रव्यको सङ्कोच बहोत है, और आचार क्रियामें समुजत नाहीं. नेत्रन सों बहोत सूजत नाहीं. श्रीठाकुरजी काहू और वैष्णवके माथे पधराइ देउ तो सेवा भली भांतिसों होइ. तब श्रीआचार्यजीने कही, आचार क्रिया द्रव्यसों, श्रीठाकुरजी प्रसन्न नाहीं, श्रीठाकुरजीमें प्रीति चहिये. सो उह ब्राह्मनीको परम प्रीति है. जैसे उह ब्राह्मनी करत है तेसेही श्रीठाकुरजी मानि लेते हैं. तब वह वैष्णव चूप होइ रह्यो. पाछें श्रीआचार्यजी

श्रीयमुनाजीसों सन्ध्यावन्दन करिके पधारत हते. सो वह ब्राह्मनीके द्वार व्है जाइ निकसे. तब वैष्णवने कहीं, महाराज ! उह ब्राह्मनीको घर यही है. आपु पधारिके सेवाकी रीति देखिये, वाकों दरसन दिजिये. तब श्रीआचार्यजी वह ब्राह्मनीके घर पधारे, ता समें वह ब्राह्मनी रोटी करत हती. सो श्रीआचार्यजीकों पधारे जाने नांही. सो रोटी करिके एक धरे, सो चुपरे, सों श्रीठाकुरजी रोटी उठाइके अरोगें. सो वह ब्राह्मनीकों नेत्रसों दीसे नाहीं. तब रोटी हाथसों टटोरे, सो पावे नाहीं. तब मुखसों कहै, रोटी मूसा बिलाई ले जात हैं. हाथ धरतीमें ठोकि फेरि रोटी करे. तब श्रीआचार्यजी उह ब्राह्मनीसों कहें, जो तेरी रोटी श्रीठाकुरजी अरोगति हैं. मूसा बिलाई नाहीं है. तेरे बड़े भाग्य हैं. तब वह ब्राह्मनी कही, महाराज ! आपु पधारे ? माकों दीसे नाहीं, तातें मैं जानी नाहीं. मेरो अपराध क्षमा करिये. और मेरे द्रव्य नाहीं. आपुकी का'नितें श्रीठाकुरजी अरोगें है. तब श्रीआचार्यजी कहे, तु जैसे करत है तैसी ही श्रीठाकुरजी प्रसन्न होइ मानत हैं. याही प्रकार सदा करियो या प्रकार वह ब्राह्मनी पर प्रसन्न होई, समाधान करि श्रीआचार्यजी अपने घर पधारे. पाछें सगरे वैष्णवसों कहें श्रीठाकुरजी स्नेहके भूखे हैं. उह ब्रह्मानीके ऊपर प्रसन्न हैं. तब सब वैष्णव जाने, जो यह ब्राह्मनी पर बड़ी कृपा है. सो श्रीठाकुरजी या प्रकार सगरी रोटी नित्य हाथमें उठाई लेते. तब वह ब्राह्मनी कहती मैं सगरी रोटी करी. परन्तु जानी न परी मूसा बिलाई लिये. तब श्रीठाकुरजी अरोगिके वह ब्राह्मनीकों सब रोटी देते. सो वह ब्राह्मनीसों नित्य श्रीठाकुरजी ऐसे ख्याल करते. परन्तु उह ब्राह्मनीको सरल स्वभाव बहोत, नित्य याही प्रकार कहैं. और श्रीठाकुरजी ऐसे प्रीतिके बस भये, जो बिना भोग धरे उह करत जाहीं आपु अरोगें, पाछें देइं. सो वह ब्राह्मनी ऐसी श्रीआचार्यजीकी कृपापात्र हती. .... ।।वार्ता ४२।।

भावप्रकाश : यह वार्तामें यह सिद्धान्त भयो, निष्कपट भाव श्रीठाकुरजीकों बहोत प्रिय है. चतुराई तें प्रसन्न नाहीं, ऐसे प्रीतिके बस हैं.

५०-एक क्षत्रानी

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी सेवकनी, एक क्षत्रानी, सो प्रयागमें रहती, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : अब जहां तहां नाम श्रीगोकुलनाथजी नाहीं कहें. सो माता पिता हीन नाम राखें, काहूको फकीरा, घसीटा. सो वैष्णवसों हीन नाम श्रीगोकुलनाथजी कहते नाहीं. तातें कोई - कोई वैष्णवको नाम प्रगट नाहीं किये.

यह क्षत्राणी लीलामें श्रीस्वामिनीजीकी सखी है. 'नीला' इनको नाम है. सो प्रयागमें एक क्षत्रीके घर प्रगटी. सो क्षत्री बहोत द्रव्यवान हतो. सो काहूकों गिनतो नाहीं. सो प्रयागमें एक क्षत्रीके घर बेटी दिये. सो गरीब घर हतो, तहां दिये. सो एकदिन जमाईको बुलायो, सो बाको दोय धरीकी ढील भई. सो सास सुसर सबनने अहङ्कार करि जेंय लियो. बेटीसों बोले, तू जेंय ले. तब बेटीने कही, जमाईकों बुलाये हो वे आवें तब मैं जेऊं. तब पिताने कही, वह न आवेगो तो हम बैठे रहेंगे ? तू जेवे तो जेंय, नाहीं तो औरकों दे घाले. तब बेटीने कही, मैं तो मेरे धनीके जेये बिना न जेऊंगी. तब मा - बाप क्रोध करि सब उठाई डार्यो. पाछे जमाई आयो. सो सास ससुर कोई वासों बोले नाहीं. तब स्त्रीने वह पतिसों कही, जो अब इनके घर जल पीनो धरम नाहीं है. सब बात पतिसों कही. तब पतिने कही, तू मा - बापके घर फेर कबहू आइवेको नाम न लेय, तो मैं तोकों घर ले चलों. तब इन कही, मोकों ले चलो, या जन्ममें तो कबहू मा - बापको नाम न लेऊंगी. तब दोऊ अपने घर आय रसोई करि भोजन कियो पाछे ससुरके मनमें यह आई, जो बेटी रांड होऊ तो सुखेन होऊ, जो जमाईकों मारनो. सो कछू द्रव्य दे मनुष्य लगाइ राखे. सो एक दिन याके माता - पिता और बेटा, बहू मकर न्हाइवे प्रातही चले, सो मनुष्यनें तीनों मारे. एक उह क्षत्रीकी बेटीकों छोड़े. पाछे यह बात हाकिमने जानी, सो बाहूको घर लूटि लियो. पाछें बाके घरमें आग लागी. तामें ये क्षत्राणीके माता - पिता कुटुम्ब सब जरे. इकली रहि गई. सो चरखा कातिके निर्वाह करे. सो एक दिन श्रीयमुनाजी न्हान गई, कार्तिकके दिन हते. सो दोय घड़ी पिछली रात्रिसों गई. तब न्हाइवेकों पेंठी, न्हाइके कपरा पहर्यो. कपरा पहरिके लोटा जलसों भरे. तब एक श्रीठाकुर लालजीको स्वरूप लोटामें आयो. सो याकों खबरि नाहीं. सो न्हायके घर आई तुलसीके लोटाको जल चढ़ायो. तब तुलसीके पास श्रीठाकुरजी जाय बैठे, सो देखिके चक्रत भई. जो ए स्वरूप ! कहा इनकी इच्छा है ? यह बिचार करत तुलसीके पास बैठी. सो उह बेर देहकी सुधि न रही. ऐसी चिन्ता भई, जो अब मैं कोनसों पूछों. कोई घरमें है नाहीं. सो रसोईकी सुधि भूलि गई. कबहू श्रीठाकुरजीकों हाथमें लेई, कबहू फेरि तुलसीमें धरि देई. ऐसे विचार करत अर्द्ध रात्रि गई तब श्रीठाकुरजी कहें, तू विचार कहा करत है ? प्रातःकाल मोकों पधराइ श्रीआचार्यजीके पास जाई सेवकनी होइ, मेरी सेवा करि. मैं तोपरि कृपा करनके लिये, तेरे माथे श्रीयमुनाजीसों तेरे लोटामें आयो हूं. तब प्रसन्न होई सगरी रात्रि भूखी तुलसी पास बैठि रही. पाछे प्रातःकाल भयो तब श्रीठाकुरजीकों ले श्रीआचार्यजीके पास अड़ेल जाइ दण्डवत् करि, सगरी बात कही बिनती करी, जो मोकों सेवक करो. तब श्रीआचार्यजी कहैं, तेरे बड़े भाग्य हैं, तेरे कुटुम्बमें तू दैवी है, सो

श्रीठाकुरजी तेरे ऊपर कृपा किये. जो बिना सेवा किये पहले ही तोसों बोले. पाछें वह क्षत्राणीकों नाम सुनाय निवेदन कराये. पाछे श्रीठाकुरजीको पञ्चामृत स्नान कराई, पाट बैठारि उह क्षत्राणीके माथे पधराये. और कहे, अब तू घर जा, मन लगाईके इनकी सेवा करियो. इनको नाम श्रीबालकृष्णजी हैं. सो बालकृष्णकी नांई सनेह राखियो. तब उह क्षत्राणी श्रीआचार्यजीकों दण्डोत् करि, श्रीठाकुरजीको पधराईके प्रयागमें अपने घर आई. सो सेवा करन लागी.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो चरखा काते, सूत बेचे, तामें दोई पैसा न्यारे धरे. यों करत जब कछू पैसा भेले भये, तब दिन दस बारहकी बालभोगकी सामग्री करि राखी. तब घी, खांड लाई मेंदा छानिके, लाडू करे. पाछे एक हांडि भरि मुंह बांधिके मन्दिरमें छींका पर धर्यो. मनमें बिचार्यो, जो दिन दस - बारहकों तो बालभोग करनसों निश्चिन्त भई. सो राजभोगसों पहोंचि अनोसर कराइ, महाप्रसाद ले चरखा कातन बैठी. तब श्रीआचार्यजकी का'नि तें, श्रीठाकुरजी सिंघासन परसों उठि छींका पर ते लाडूकी हांड़ी उतारे. पाछे सिंघासन पर लेके बैठे. हांड़ीमें ते निकासिके लाडू अरोगन लागे. सो मन्दिरमें हांड़ीको आहट होन लाग्यो. तब वह क्षत्रानीने मनमें बिचार कियो, जो मन्दिरमें हांड़ीको सब्द होत हैं, सो सामग्रीको हांड़ीमें मूसा बिलाई तो न लागी होई ? यह बिचारिके हरुवेसों मन्दिरकें किंवाड़ खोलि, भीतर जाई देखे तो श्रीठाकुरजी हांड़ी सिंघासन पर लिये वैठे हैं. वामें ते लाडू अरोगत हैं. तह देखिके वह क्षत्रानी छाती कूटन लागी कहें, यह सामग्री तो आपु ही के लिए करी हती, दिन दस - बारहकी, सो आजु ही अरोंगे सब ? तब श्रीठाकुरजी कहैं, तू इकठोरी करिके सामग्री निश्चिन्त व्है के बैठी, दस - बारह दिनकों. सो मोकों तो नित्य नई ताजी होई सो भावत है. वासी सामग्री कौन काम की ? तब वह क्षत्रानी दण्डवत् करि बिनती किये, महाराज ! मैं चूकी जो ऐसी करी, अब नित्य ताजी करूंगी, आलस्य न करूंगी. तब तें वह क्षत्रानी नित्य नई सामग्री करिकें धरन लागी. ....वार्ता ।।४३।।

भावप्रकाश : और श्रीठाकुरजी सगरी सामग्री यातें अरोगे, जो नित्य सामग्री नइ करिवेकी आरति रहै. जो निश्चिन्त रहैंगी तो मनको निरोध न होइगो. मन जहां तहां भटकेगो, तातें अरोगे सब. और यह वैष्णवकों जताए, जो वासी सामग्री कामकी नाहीं. ताजी नित्य नौतन अति प्रिय हैं. और वह क्षत्रानीने छाती यातें कूटी, जो यह पुष्टिमार्गकी मर्यादा है, जो वैष्णव भोग धरे सो श्रीठाकुरजी अरोगे. सो श्रीठाकुरजीनें मर्यादा छोड़ी, सामग्री आपही अपने हाथसों अरोगें. तोकहूं मोकों न छोड़े. मर्यादा जैसे छोड़ें तेसे मोकों छोड़े, तो अनर्थ होइ. और यह भाव है, जो श्रीठाकुरजी आपु लेके आरोंगे तामें सेवा

सिद्ध न भई. मोसों आज्ञा करते, मैं अपुने हाथसों धरती, तो मेरे हाथसों फल होतो. मेरी सेवा गई, सो सेवाके लिये छाती कूटी. काहे तें, जो सामग्री श्रीठाकुरजीके लिये करी हती, सो श्रीठाकुरजी अरोगे. तामें तो प्रसन्न होइ. सो छाती कूटी, सेवा गई ताके लिये. और यह वार्तामें यह जताये, जो सामग्री श्रीठाकुरजीके लिये विचारके करिये, तो श्रीठाकुरजी प्रीतिसों अरोगें जो और मनोरथ किये, जो लोगनको समाधान करनो है, हमकों यह वस्तु बहोत भावत हैं, इत्यादिक भाव होइ तो दृष्टिसों अङ्गीकार करें. परन्तु प्रसन्न होई के न अरोगें. तातें श्रीठाकुरजीके भावसों सामग्री करनी. सो वह क्षत्रानी श्रीआचार्यजीकी कृपापात्र भगवदीय ही. इनकी वार्ता कहां तांई कहिये .... ।।वैष्णव ४३।।

५१-गोरजा समराइ सास बहू

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी सेवकनी, सास - बहू, सासको नाम गोरजा और बहूको नाम समराई क्षत्रानी सिहनन्दमें रहती, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ए दोऊ लीलामे श्रीस्वामिनीजीकी सखी चन्द्रभागा तिनकी सखी हैं. इनको नाम लीलामें 'नन्दा' सखी सो सास भई गोरजा. और 'वृन्दा' सखी बहू याको नाम समराइ सो ये सिंहनन्दमें रहेती. इनकों सेवक श्रीआचार्यजी जा प्रकार किये सो वासुदेवदास छकड़ाकी वार्ता उपर कहि आये हैं.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो श्रीठाकुरजीकी सेवा करतीं. सो एक समय श्रीआचार्यजी थानेश्वर पधारे. सो थानेश्वरके और सिंहनन्दके बीच सरस्वती नदी है. सो श्रीआचार्यजी सरस्वतीको उल्लङ्घन न करते.अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी सेवकनी, सास - बहू, सासको नाम गोरजा और बहूको नाम समराई क्षत्रानी सिहनन्दमें रहती, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : काहे तें सरस्वतीके पति हैं स्त्रीको उल्लङ्घन कैसे करें ? तातें सिंहनन्दमें आप न जाते.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो सिंहनन्दके वैष्णव थानेस्वर आइ श्रीआर्चाजीको दरसन करते. सो श्रीआचार्यजी जब थानेस्वर पधारे, तब वधैया जाइकें सिंहनन्दमें सगरे वैष्णवनकों बधाई दीनी, जो श्रीआचार्यजी थानेस्वर पधारे हैं. तब सास बहूसो कहे, जो मैं श्रीआचार्यजीके दरसनको थानेस्वर जात हों. तू श्रीठाकुरजीको जगाइ पहले मङ्गला करि, पाछे शृङ्गार करियो. ता पाछे राजभोग धरिके श्रीठाकुरजीसो पहोंचियो. मैं श्रीआचार्यजीके दरसन करि आऊं, पाछे तू जइयो. तब बहू प्रसन्न भई, जो आजु मैं श्रीठाकुरजीकों शृङ्गार करूंगी, भोग धरोंगी. सो साससों कह्यो, तुम दरसन करि आवो, पाछे मैं जाऊंगो. तब सास श्रीआचार्यजीके दरसन करिवे थानेस्वर गई. (इहां) बहू बेगे न्हाइके श्रीठाकुरजी मङ्गलभोग धरि पाछें शृङ्गार कियो. पाछे रसोई सगरी करि थार कटोरा साजिकें, श्रीठाकुरजीकें आगे भोग धर्यो. टेरा लगाइ बैठी. सगरे पात्र मांजि रसोई पोती, इतनेमें समय भयो. सो भोग सराइवेकों जाइ देखे तो थार कटोरा, सगरी सामग्रीसो ज्योंके त्यों भरे हैं. तब श्रीठाकुरजीसो कह्यो, महाराज ! मेरी सास तो सिंहनन्द श्रीआचार्यजीके दरसनकों गई है, मैं तो कछू जानत नाहीं. मोसों सासने कह्यो ता प्रकार कियो. और तुम अरोगे नाहीं, अब मैं कहा करूं ?

पाछे फेर बहूने जान्यो, जो मैं कछू चूकी होऊंगी, तथा रसोई कछू छूई गई होइगी. तब फेरि पात्र सगरे मांजि, रसोई पोति, आछि भान्ति न्हाइ फेरि रसोई करी. फेरि थार कटोरामें सामग्री धरि श्रीठाकुरजीकों भोग धर्यो. टेरा लगाई बाहर आईके पात्र मांजि रसोई पोती सामग्री फेरि ज्योंकी त्यों स्थापित देखि बहोत बिलबिलान लागी. कह्यो, महाराज ! मैं तो कछू जानत नाहीं, आपु क्यों नाहीं अरोगत ? सो रुदन करत जाय और मनमें कह्यो, कछू मारी अपराध पर्यो मोसों, सो श्रीठाकुरजी नाहीं अरोगे. पाछे फेरि तीसरी बेर अपरस काढ़ि सावधान होइ सगरी रसोई करी. थार कटोरामें धरि श्रीठाकुरजीकों भोग धर्यो. पाछे टेरा लगाईके पात्र साजि रसोई पोतिके टेरा सरकाइ भोग सरावनकों गई. सो सामग्री सब ज्योंकी त्यों देखि महा दुःख भयो. जो तीन बार मैं रसोई करी, सो तीनों बार श्रीठाकुरजी अरोगे नाहीं. यह दुःखी और श्रमित हू बहोत भई ? सो मूर्छा आई, पछार खाइकै भूमिमें गिर परी. कण्ठ सूखि गयो, श्रमके मारे. तब श्रीठाकुरजी सिंघासनसो उठि अपनी झारीसो जल बाकों पिवायो. तब सावधान भई नेत्र खोले. सो वह बहूको दुःख श्रीठाकुरजीसो सह्यो न गयो.

भावप्रकाश : सो वह सूधी हती छल कपट कछू जानत नाहीं.

तातें श्रीठाकुरजी प्रसन्न होइके बहूसो कहें, तू खेद काहेकों करत है ? तू तीन बेर रसोई करी, सो मैं तीनो बेर अरोग्यो हूं. तू सन्देह क्यों करत है ? तब बहूने कही, मैं कैसे मानूं ? सामग्री तो सब ज्योंकी त्यों धरी ही देखती. तब श्रीठाकुरजी कहैं, जामे मेरो हस्त परे सो वस्तु घटे नाहीं. और तूं नाहीं मानति तो काल्हि सवारे तेरे देखत अरोगूंगो. तातें अब तू महाप्रसाद ले, मैं तीनो बार अरोग्यो. तें कछू लियो नाहीं, तातें तू सिथिल है. तब बहू उठिके सखड़ी प्रसाद सब गायनकों खवाय दियो. आपु कछू न लियो. उही श्रीठाकुरजीने झारीसों जल पान कराये, सोई लैकें रही.

भावप्रकाश : सो यातें जो श्रीठाकुरजी सांच कहत हैं, के मोकों योंही समाधान करत हैं ? सबेरे भोजन करते देखोंगी, तो महाप्रसाद लेऊंगी.

पाछे सबेरेकी सामग्री बिनकै सिद्ध करि रात्रिकों सोइ रही. प्रातःकाल होत ही, देह कृत्य करि न्हाईके मङ्गला शृङ्गार करि वेग ही रसोई सगरी सिद्ध करी. थार कटोरामें पधराइ, श्रीठाकुरजीके आगे भोग धरि, पाछे टेरा लगावन लागी. तब श्रीठाकुरजी कहें, अब तू टेरा काहेकों लगावत है ? पाछे तोकों विस्वास न होइगो. तातें तेरे आगे अरोगत हों. तब वह पास बैठी, श्रीठाकुरजी भली भांति सो सगरी सामग्री अरोगे. तब बहूसो हास्य विनोद करि सब रसको अनुभव करायो. पाछे दामोदरजी यह बात सगरी श्रीआचार्यजीसों कहें, जो मोकों समराई बहोत सुख देत है. सो बात श्रीआचार्यजीने मनमें राखी, जो समराई आवेगी दरसनकों तब पूछेंगे. पाछे श्रीठाकुरजी जा प्रकार समराई कह्यो, ताही प्रकार अरोगे. सगरी सामग्री ज्योंकी त्यों भरी देखी. तब बहूके मनमें विस्वास आयो जो श्रीदामोदरजी काल्हि तीनों बार अरोगे, यामें सन्देह नांही. पाछे अनोसर कराय बहूने महाप्रसाद लियो. या प्रकार पांच दिन लों नित्य श्रीठाकुरजीकों आपुने आगे अरोगायो. पाछे सास श्रीआचार्यजीसो बिदा मांग्यो. तब श्रीआचार्यजी कहैं, बहूकों बेगि दरसनकों पठाइ दीजो. सो सास आइ बहूसों कह्यो, जो अब तू श्रीआचार्यजीके दरसन करि आव. तब बहू श्रीआचार्यजीके पास आइ दण्डवत् कियो. ता समय श्रीआचार्यजी रसोई करत हते. तब बहूसो कह्यो, जा न्हाइ आव, रोटि बेलि दे. तब समराई न्हाईके आई, रोटी बेलन लागी. तब श्रीआचार्यजी समराईसो कहें, तेरी बात श्रीठाकुरजी श्रीदामोदरजीने सगरी हमारे आगे कही. तोको सब रसको अनुभव जतायो. तेरे बड़े भाग्य हैं. तब समराईने कही, जो श्रीठाकुरजीके पेटमें इतनी बात हू न ठहरी, तो उनसों कहा कहिए

? आखरि बालक हैं. यह बात सुनिकें श्रीआचार्यजी बहोत प्रसन्न भये. और कहे, एसे वैष्णवकों तो घर जाईके दरसन देनो उचित है, परन्तु कहा करिये, सरस्वती उल्लङ्घनि नाहीं. पाछे दिन दोय समराई रहि श्रीठाकुरजीकी सगरी बात श्रीआचार्यजीसों कहैं. पाछे तीसरे दिन आज्ञा मांगी. तब श्रीआचार्यजी कहें ऐसे वैष्णवकों आज्ञा क्यों दीजिये ? सदा इनकी वार्ता सुनिये. परन्तु श्रीठाकुरजी इनसों प्रसन्न हैं, इन बिना रहि नाहीं सकत, तातें बिदा दिये. तब समराई दण्डवत् करि बिनती किये, महाराज ! यह सब आपुकी कृपा तें है. नांही तो कहां श्रीठाकुरजी कहां हम संसारी जीव ? आपुकी का'नि तें श्रीठाकुरजी हम सरीखी पर कृपा करत हैं. यह कहिकें चली. सो बहूकी दैन्यता सुनि श्रीआचार्यजी बहोत प्रसन्न भये. जो ऐसे वैष्णव दुर्लभ हैं. श्रीठाकुरजी जिनसों बोलें, तिनहीकों ऐसी दैन्यता होइ. पाछे बहू घर आई. सास तें सब श्रीआचार्यजीके समाचार कहै. जो बड़ी कृपा अपने ऊपर है. इतने बहूकी रञ्च आंख लागी, नींद आई. श्रमति आइ हती. सो इतनेमें सास भोग धरि बासन मांजन लागी. तब बहू चोंकि परी. श्रीठाकुरजी कैसे अरोगते होंयगे ? सो न्हाईके मन्दिरमें गई. श्रीठाकुरजीकों फेरि अपने आगे अरोगायो. तब साससों श्रीठाकुरजीने जताई, जो रसोई उपरकी टहेल तू करियो, और शृङ्गार बबहू करेगी. भोगहू बहू धरेगी, बहूके हाथसो मैं भली भांतिसों अरोगत हों. तब तें सासने बहूसो कह्यो, श्रीठाकुरजी तेरे उपर बहोत प्रसन्न हैं, तातें शृङ्गार तू करियो, भोग हू सगरो तू धरियो. मैं रसोई करोंगी. और उपरकी टहेल करोंगी.

सो बहू नित्य नौतन शृङ्गार करती, सामग्री बैठिकें नित्य श्रीदामोदरजीकों अरोगावती. श्रीठाकुरजी सदा प्रसन्न रहते. सो सास बहू ऐसे भगवदीय श्रीआचार्यजीके सेवक कृपापात्र हे. इनकी वार्ता कहां तांई कहिये ? ...वार्ता ।।४४।।

भावप्रकाश : या वार्तामें यह जताये, जो निष्कपट प्रीति श्रीठाकुरजीकों प्रिय है. .... ।।वैष्णव ४४।।

५२-कृष्णदास श्रीरुक्मिनीजी

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी सेवकनी, कृष्णदास श्रीरुक्मिनीजीकी खवासी करती, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : यह कृष्णादासी श्रीस्वामिनीजीकी अन्तरङ्गिनी सखी है. 'ब्रजमङ्गला' लीलामें इनको नाम है. सो ए पूर्वमें पटना तें दोइ कोस पर एक गाम है. तहां गौड़ ब्राह्मनके घर जनमी. सो वर्ष पांचकी भई, सो एक दिन माताके सङ्ग गङ्गा - स्नानकों गई. तहां एक नाव पारतें आबत हती. सो नाव काष्ठको भर्यो हतो, और मल्लाह हते. सो वर्षा ऋऋतु हती, सो नाव फाटी, मल्लाह तरिकें पार आये. काष्ठ सगरो वहि चल्यो. सो कृष्णो तीर ठाड़ी रही. सो करोड़ो टूटिके गिर्यो गङ्गाजीमें. सो कृष्णो और कृष्णोकी माता दोऊ गिरी. सो माताकी देह छूटि गई. और कृष्णो बालक, सो काष्ठ हाथमें आई गयो. सो काष्ठ कोस पांच जाय लग्यो. तहां श्रीआचार्यजी सन्ध्या - वन्दन करत हते. तब छोरी यह रोई. तब श्रीआचार्यजीने कह्यो यह कौन बालक है ? देखो तो, यह बहि आई है. सो याकों गाममें पहोंचती करो. पटना इहां ते पांच कोस है. तब कृष्णदास वह छोरीकी बांह पकरि श्रीआचार्यजी पास ले आये. तब श्रीआचार्यजी दैवी जीव जानि नाम सुनाय निवेदन करायो. पाछे कहें, कोई वैष्णव पास महाप्रसाद होय तो याकों खवावो. तब कृष्णदासनें प्रसाद खवायो. पाछे श्रीआचार्यजी कहें, अपने पुरुषोत्तमपुरी श्रीजगन्नाथरायजीके दरसनकों पधारनो है, ताते कोई मनुष्य करि लावो, याकों पटना पहोंचावो. तब कृष्णदास एक मनुष्य करि लाये. वाकों एक रुपैया दिये, सो उह छोरीकों गोदमें लियो. तब श्रीआचार्यजी कृष्णदाससों कहें, या छोरीकों पटनामें ठिकानो पार तू अइयो. तहां तांई हम इहां बैठे हैं. सो कृष्णदास सङ्ग चले, सो पटना आये. सो हरिवंस पाठक मिले, कासी रहते. पटनामें ब्यौहारकों आवते. तब हरिवंस पाठकसों कहे, यह छोरीकों ठिकाने तुम पारि दीजो, श्रीआचार्यजी मेरे लिये बैठि रहे हैं, ताते मैं जात हों. तब हरिवंस पाठक वह छोरीकों महाप्रसाद लिवाये. कृष्णदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभु पास आये. पाछे आप पुरुषोत्तमपुरीकों पधारे, पाछे हरिवंस पाठकने दिन सातलों सगरे गाममें ठिकानो पारे. तब एकने बतायो, फलाने गामके ब्राह्मणकी बेटी हैं, गौड़ ब्राह्मण है. तब वाके घर कहेवाये, सो पिता आयो. कह्यो, बेटी चलि, माता तेरी मरी तू कैसे बची ? तब बेटींकों नाम समर्पन भयो, दैवी जीव, सो बुद्धि निर्मल व्हे गई. सो कह्यो, तिहारे लेखे तो मेरी मा मरी और मैं मरी. काहेंते, मैं श्रीआचार्यजीकी सेवकनी भई हों, सो वैष्णव बिना औरके हाथको पानी न पिऊंगी. तब पिताने हरिवंस पाठकसों कह्यो, तुम वैष्णव हो, जैसे हमारी बेटी तैसे यह तिहारी बेटी तुम धरमें राखो दोई चारि वर्ष पीछे याको ब्याह करि दीजो. हमारे हाथको यह जल पीवन नाहीं कहत है, और हमारे पास कछु पैसा हू नाहीं हैं, सो याको ब्याह कहां तें करेंगे ? तब हरिवंस पाठक कहैं, आछो, भगवद् इच्छा. श्रीआचार्यजीके सेवककों कैसे काढ़ि दीजे ? परन्तु कासीमें हमारो घर है, तहां स्त्रीनमें रहेगी. तब वाके पिताने कही, आछो. यह कहिकें वह छोरीको पिता घर गयो. पाछे हरिवंस पाठक कासी आये. सो वह छोरीकूं ले आये. पीछे वर्ष दसकी भई. तब सगाई ढूंढ़े. सो कोई ब्राह्मण करे नाहीं, जो हम याकों क्यों ब्या हैं ? याकी जातको, खान पानको, ठिकानो नाहीं. और यह छोरी सबकों पुकारिके कहति है, जो श्रीआचार्यजीको सेवक होई ताके हाथसों खान पान करोंगी. सो याकों कौन विवाहै ? तब हरिवंस पाठक वह छोरीसों पूछे, जो

अब हमारे घरमें तेरो निर्वाह नाहीं. वर्ष दोय पाछे तेरी अवस्था तरुन होयगी, तब लोग निंदा करेंगे. जो कुंवारी कन्या घरमें राखी हे, सो ताकों अब कहा कर्तव्य है ? तब कृष्णोने कही, मोकों अड़ेलमें श्रीआचार्यजीके घर पठाय देउ, तहां मैं रहूंगी. तब हरिवंस पाठक कृष्णोकों सङ्ग ले अड़ेल आय श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करि, सगरी बात कृष्णोकी कही. तब श्रीगुसांईजी कही, कृष्णो हमारी है, सो बहूजी पास रहैगी. तब कृष्णोने श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करि बिनती कियो, महाराज ! मैं तो आपकी दासी हों. श्रीआचार्यजी मेरो हाथ पकरे हैं. सो आपुके चरणारबिन्द बिना मेरो कहूं ठिकानो नाहीं. तब श्रीगुसांईजी कृष्णोकी दैन्यता देखि बहोत प्रसन्न होयके कहें, हमारो प्रागट्य तो तुम सरीखे वैष्णवके लिये है. ताते यह घर तिहारो है सुखेन रहो. तब कृष्णो श्रीरुक्मिनी बहूजीकी खवासीमें रही. हरिवंस पाठक श्रीगुसांईजीसों विदा होईके कासी आये. कृष्णो सगरे घरको काम टहल करे. सो सगरो परिवार प्रीतिसों बस करि लियो. कृष्णो कहे सो होइ. श्रीगुसांईजीको कृपापात्र सेवकनी जानि, कृष्णोकी का'नि बहोत राखते.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो कृष्णो रुक्मिनी बहुजीकी खवासी करे. सो एक समय श्रीरुक्मिनी बहूजीकों गर्भाधान रह्यो. तब कृष्णोने कही, अबके बहूजीके बेटा होइगो, तिनको नाम श्रीगोकुलनाथजी धरोंगी. सो गर्भके दिन पूरे भये तब श्रीरुक्मिनी बहूजीके पेटमें पीर उठी. तब कृष्णो जाइके एक पण्डित जोंतिसीसों पूछे, अब मुहूर्त कैसो है ? तब जोतिसीने कही, अवही दोइ चारि दिन नीके नांहीं हैं. तब कृष्णादासी आई श्रीरुक्मिनी बहूजीके पेट पर हाथ फेरि कह्यो, महाराज ! अब ही मति पधारो, दोय चारि दिन आछे नाहीं हैं. तब तत्काल पीड़ा रहि गई. पाछे पांच सात दिन बीते, तब कृष्णादासी फिरि वह पण्डित जोतिसीके पास जाइ पूछे, जो अब मुहूर्त कैसो है ? तब वह जोतिसीने कही, आज बहोत सुन्दर दिन है, भलो मुहूर्त आज है. तब कृष्णो आई, श्रीरुक्मिनी बहूजीके पेट पर हाथ फेरि कह्यो, महाराज ! आज बहोत सुन्दर मुहूर्त है, भलो मुहूर्त आज है. अब पधारो. तब तत्काल बालक प्रगट भये. पाछे श्रीगुसांईजीने नामकरण कियो, सो बल्लभ नाम धर्यो. परन्तु कृष्णोने पहले ही श्रीगोकुलनाथजी नाम धर्यो. तातें जगतमें प्रसिद्ध श्रीगोकुलनाथजी नाम पर्यो. घरमें श्रीवल्लभ कहेतें. और जन्मपत्रिकामें श्रीकृष्ण नाम हैं. सो श्रीगुसांईजी गोप्य राखे. सो कृष्णोकी ऐसी का'नि राखते और जब श्रीघनश्यामदासजीको जन्म भयो, तब नामकर्ण समें श्रीबल्लभजीने कही, इनको नाम श्रीगोकुलनाथजी धरो. तब श्रीगुसांईजी कही, यह नाम तो तिहारोई है. घरमें बल्लभ कहेत हैं. और सगरे जगतमैं तो तिहारो नाम श्रीगोकुलनाथजी है. कृष्णो भगवदीय तिहारो नाम धर्यो है, सो फेर्यो न जाई.

वार्ताप्रसङ्ग २ : और एक समय शरद ऋतु आई. तब श्रीरुक्मिनी बहूजीने कृष्णोसों कही, कोई शरद निसाको वरनन करो. तब कृष्णो 'शरद निसा' करिकें गायो. सो श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न होइकें कहैं, मानों रासमें ठाड़े व्है के गान कियो. सो कृष्णाकों नन्दालयकी लीला, रासादिक लीलाको अनुभव है. सो बहुत कीर्तन किये है. अष्टप्रहर भगवद् रसमें मगन रहतीं. सो कृष्णादासी ऐसी श्रीआचार्यजीकी कृपापात्र भगवदीय ही. इनकी वार्ता कहां तांई कहिये. ....वार्ता ।।४५।।

५३-बूला मिश्र

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, बूला मिश्र पश्चिममें रहते, सो सारस्वत ब्राह्मण हते, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ये लीलामें श्रीस्वामिनीजीकी सखी विसाखाजी, तिनकी सखी हैं. लीलामें इनको नाम 'सुमन्दिरा' है. सो ए लाहौरमें पश्चिम दिसामें सारस्वत ब्राह्मणके घर प्रगटे. सो वर्ष दसके भये, तब पिताने बूला मिश्रसों कही, कछू शास्त्र पढ़ो तो आछो है. नाहीं तो मेरी नाई मूर्ख रहोगे. तब बूला मिश्रने कही, कहूं पण्डित ठीक करि मोकों बताओ, तहां मैं पढूं. सो लाहोरमें एक पण्डित पास बैठाये पढ़नकों. तब वह पण्डितने कही, मेरी दस पांच रुपैयासों पूजा करो तो पढ़ाऊं. बूला मिश्र उठिके घर आय बैठे. तब पिताने कही, घरमें फेरि क्यों आये ? घरमें बैठ्यो पढेगो ? तू जन्म ते घर ही में रह्यो, सो लुगाईको काम सिखेगो. बाहर निकसतें लाज लागी होयगी ? तब बूला मिश्रने कही, इहां तो जाके पास पढ़न जइयें, सो द्रव्य मांगत है. ताते अब मैं कासी पढ़न जात हूं मोकों बोली ठोली क्यों मारत हो ? तब पिताने कही तू घरमें बाहिर निकसवेको मन नाहीं करत है, सो कासी कैसे जायगो ? तब बूला मिश्र उठिकें पिताकों नमस्का कियो, जो मैं कासी चल्यों. तब पिताके मनमें नाहीं आई. जान्यो, जो यह कहां अकेलो जायगो ? काहू गाममें बैठि रहेगो. सो पिता बोल्यो नाहीं. और बूला मिश्र तो चले सो गाममें चूनि मांगीके अङ्गाकरि करि खाय. या प्रकार कछुक दिमें कासी आये. सो भिक्षा वृत्तिसों निर्वाह करें. और पढ़वेकों पण्डित पास जाई. सो तीन बरस लों जतन पढ़वेको बहुत किये, परन्तु रञ्च हू विद्या न आई. तब पण्डितने कही, हम अनेक विद्यार्थीकों पढ़ाये, परन्तु तेरे सरीखो मूढ़ न देख्यो. तीन वरस लों तु हू पढ़ियेकों पच्यो, मैं पढ़ावत पच्यो. परन्तु अक्षर हू को ज्ञान ताकों न भयो.

अब तू काहेको पचत है ? विद्या तेरे भाग्यमें नाहीं है. तब बूला मिश्रके मनमें बहोत दुःख भयो, जो विद्या पढ़नके लिये घर छोड्यो, इतनो दुःख सह्यो, परन्तु विद्या न आई. तातें मैं अब सरस्वतीके ऊपर मरूंगो. सो गङ्गाजीके तीर कासीसों दूरि जाइ, जहां कोई मनुष्य नाहीं, तहां जल छोड़िके बैठे. सो तीन रात दिन बीते, जलहू न लिये. तब सरस्वती गङ्गाके भीतर होई, बूला मिश्रसों कह्यो, जो तू मेरे उपर क्यों बैठ्यो, मरिवे ? मैं तो भगवानकी दासी हूं, सो भगवान् जहां मोकों पठावे तहां जांऊ. और जगतमें सर्व कार्यके करता तो भगवान् हैं. सो भगवानको भजन तू करि भगवान् प्रसन्न होंयगे तों विद्या कहा, जो चाहेगो सो मिलेगो. सो मेरे ऊपर मरिवे बैठ्यो सो तू सुखेन मरि. भगवानकी इच्छाके बिना काहूके पास जाऊं नाहीं. और जो भगवानकी इच्छा होई तो शूद्र, चाण्डालके पास हू जाऊं. और वह पण्डित व्हे जाई. भगवानकी इच्छा न होई तो पढ्यो होई सोई मूर्ख व्हे जाई. कैसोऊ ब्राह्मण होऊ परन्तु मैं न जाऊं. यह मैं तोकूं बतायो. अब तेरो मन आवे तो मरि, भावे जीऊ. परन्तु भगवानकी इच्छा तोकूं विद्या देबेकी नाहीं है. तब बूला मिश्रने कही, मोसों भगवद् स्मरण भजन तो बनेगो नाहीं. परन्तु अब तांई तेरे ऊपर मरत हतो सो अब भगवानके ऊपर मरूंगो. परन्तु विद्या आवे तव ही जल पान करूंगो. तब सरस्वती गई. पाछे वह भगवानको नाम विष्णु, विष्ण कहन लाग्यो, सो रात दिन कहे. तब भगवानने सरस्वतीसों कही, तू मेरे माथे मरिवेकों ब्राह्मण बैठायौ, अब जा मेरी इच्छा है. विद्या दे, वाकों खान पान कराय आऊ. तब सरस्वती, स्त्रीको स्वरूप करि, बूला मिश्र पास आय कह्यो, ब्राह्मन नेत्र खोलि तब वह पूछ्यो, तू कौन है, तब वाने कही, मैं सरस्वती हूं, मोकों भगवान् पठाये हैं सो अब मैं तेरे पास आई हूं. सो विद्या चहिये तितनो ले. तब बूलामिश्रने कही, अबही काल्हि ही तो तू कहि गई, जो विद्या तेरे भाग्यमें नाही. आज अब विद्या देन क्यों आई है ? तब सरस्वतीने कही, भगवानकी इच्छा यह भई जो तू विद्या दे, तब हों आई. तब बूला मिश्रने कही, भगवानकी इच्छा अब विद्या देनेकी क्यों भई ? पहिले तो न हतो. जो पहले होती तो तीन बरस पढ्यो, सो कछू ना आयो. सो भगवान् तुमकों अब मेरे पास क्यों पठाये ? तब सरस्वतीने कही, तुम रात्रि दिन भगवद् नाम लियो सो भगवान् तुम पर प्रसन्न भये. तुम्हारे पाप दूरि हो गये. तातें भगवानने पठाई मोकों, तुम मन लगाई भगवद् नाम लियो, ताको प्रताप है. तब बूलामिश्रने कही, जो भगवान् तें भगवानको नाम श्रेष्ठ है, जाके लिये भगवान् प्रसन्न भये. तो अब मै विद्या नाहीं चाहत. विद्या तें भगवत् नाम बड़ो देख्यो, सो अब तू जा, विद्या मोकों नाहीं चहिये. अब भगवान् ही आवेंगे तो दरसन करूंगो. और तब ही कछू लेऊंगो ?

तब सरस्वती भगवानकों जाई कह्यो जो महाराज ! वह तो विद्या नाही लेत है; आपको दरसन चाहत है. तब भगवान् प्रसन्न भये जो ऐसो या कालमें कौन है, जो मोकों चाहेगो ? ताकों मैं हूं चाहूंगो. तब भगवान् गङ्गाजीके भीतर ते वानि द्वारा कहै, ब्राह्मण अब तू खानपान करि. पांच दिन भये जल

नाहीं लियो, सो मैं प्रसन्न हूं तिहारे ऊपर. विद्या आदि वर चहिये सो लेऊ. तब बूला मिश्रने कही महाराज ! अब मेरे कछू नाहीं चहिये, आप कृपा करिकें माकों एक बार दरसन देऊ. तब भगवानने कही जो तुम अड़ेलमें श्रीवल्लभाचार्यजी बिराजे हैं तहां जाईके उनकी सरनि होउ. तब तुमकूं मेरो दरसन ताहां होयगो. तब बूला मिश्र कहें, महाराज ! एक बार मोकों दरसन देऊ. जो आपके दरसन किये माकों माया न लागेगी. नाहीं तो मैं खानपान कियो अनेक लोगनको सङ्ग भयो और माया लागी. पाछे मनको और बुद्धिको ठिकानो नाहीं. अड़ेलमें जाऊं बीच ही में मोकों मारि डारे तो मैं कहा करूं ? तब भगवान् प्रसन्न होई, बूला मिश्रकों चतुर्भुज स्वरूपसूं दरसन दे कहें, अब तुम अड़ेल जाऊ. श्रीआचार्यजी तिहारो मनोरथ पूर्ण करेंगे. और तुमकों माया न लागेगी. तब बूला मिश्र दण्डवत् करि बिनती करी, महाराज ! मेरो अपराध क्षमा करो, जो मैं आपसों हठ कियो. कहां मैं तुच्छ जीव, कहां आप पुरुषोत्तम ? सो मेरो कह्यो आप सांचो कियो. परन्तु आपकी माया मोकों जगतमें अनेक प्रकारसों भटकाये, बहोत कलेश दियो., तातें मैं आपकों दरसनकी बिनती करी. तब भगवान् बूला मिश्रको समाधान करि आप अन्तर्धान भये. बूला मिश्र खानपान कियो. भगवद् माहात्म्य नामको देखे, सो दृढ़ विश्वास भयो. सो अष्टप्रहर भगवद् नाम लेत अड़ेल चले. सो कछू दिनमें अड़ेलमें आय, श्रीआचार्यजीको दरसन करि दण्डवत् कियो. तब श्रीआचार्यजी बूला मिश्रसों कहे, जो तू धन्य है, जो ऐसी धीरज धरि दृढ़ता करी. जो यही देहसों भगवानको दरसन पायो. तब बूला मिश्रने श्रीआचार्यजीसों बिनती करी, महाराज ! दरसन भये सोऊ आपकी कृपा परन्तु भगवानके स्वरूपको आनन्द है, ताको अनुभव नाहीं है. सो आप कृपा करिके सरनि लेऊ, तब होई. तब श्रीआचार्यजी कहें अब सरन होइके कहा करोगे ? भगवद् प्राप्ति तो तुमकों दोय गई. भगवानको वर हैं तासों बचन कहेजो माया न लगेगी. अब तुमकों कहा कर्तव्य है ? तब बूला मिश्रने कही, भगवद् प्राप्ति जो मुक्ति है, सो तो मैं चाहत नाहीं, मोकों भक्ति होउ. सो आपकी कृपा ते होइ तातें सरनि लेऊ, तब भक्तिकी प्राप्ति होई. सो भगवाननें हू आपकों बताये है. ताते मैं आपकी सरन आयो हूं. तब श्रीआचार्यजीने बूलामिश्रसों कही, जो श्रीयमुनाजीमें तू न्हाइके आव, तब बूलामिश्र यमुनाजी स्नान करि अपरसमें आये. तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाय निवेदन कराये. कृष्णाश्रय ग्रन्थ करि ताको पाठ कराये. सो बूला मिश्रकों श्रीठाकुरजीकी लीलाको अनुभव होन लाग्यो. और सगरे शास्त्र पुरान वेदके आश्रयको ज्ञान व्हे गयो. मानसी फल रूप सेवाको इनकों दान श्रीआचार्यजी दिये. सो मन अलौकिक होइ श्रीठाकुरजीमें लाग्यो. तब श्रीआचार्यजी कहैं, अब तुम घर जाऊ. बूला मिश्रने विनती करी, महाराज ! अब मोकों घर काहेकों पठावत हो ? मेरे घरसों कहा काम है ? तब श्रीआचार्यजी कहैं, तुमकों घर यातें पठावत हैं, जो तिहारे सङ्गते कितनेक जीव कृतार्थ होइंगे. और भक्तिको विस्तार होईगो. अब तुमको संसार दुःख तो लगेगो नाहीं. जहां रहोगे तहां हमारे पास ही हो. और जपे भगवान् सर्व सामर्थ युक्त हैं, तैसें भगवदीय हूं सर्व सामर्थ युक्त हैं. तातें घर जाऊ, माता पिता वृद्ध हैं. तिहारे सङ्ग ते उनकी गती होइगी. और वे जानत है, जो पुत्र कहूं मर्यो, के जीवत हैं ? तब बूला मिश्र दण्डवत् करि

श्रीआचार्यजीसों बिदा होयके चले. सो कछुक दिनमें लाहोर आये. माता पिताकों बहोत सुख भयो. पाछें बूला मिश्र घर खासा करि रसोई करि, श्रीठाकुरजीकों मानसी रीतिसों भोग धरे. एक पातर माता पिताकों घर दिये एक गायकी काढ़े. एक पातर आए गए वैष्णवकी. कोई भूखेकों देके महाप्रसाद ले. श्रीभागवत् सुबोधिनी तथा श्रीआचार्यजीके ग्रन्थके पाठके भावमें मग्न रहतें. यजमान क्षत्री बहोत हते सो जो आवे तामें निर्वाह करें.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो लाहौरमें एक क्षत्री बूला मिश्रके यजमान हतो. ताकी दो स्त्री हती, परन्तु सन्तति न हती. सो काहूने उह क्षत्रीसों कह्यो, तुम हरिवंस पुराण सुनो तो तिहारे सन्तति पुत्र होई. तब वह क्षत्री बूला मिश्र पास आय बहोत बिनती कियो, जो तुम मोकों हरिवंस पुराण सुनावो तो तिहारी कृपातें मेरे सन्तति होई. तब बूला मिश्रने कही, अबही मोकों अवकास नाहीं. अवकास होइगो तब सुनाऊंगो.

भावप्रकाश : याको अर्थ यह, जो ये पुत्र अर्थ हरिवंस पुराण सुनत है. सो पुत्र होनहार होइ, भगवद् इच्छातें, तो मैं इनकों सुनाऊं. जो न होनहार होइ तो श्रीठाकुरजीकों श्रम काहेकों कराऊं ? काहेतें, मेरे सुनाये श्रीठाकुरजी मेरो जस प्रगट करनार्थ पुत्र देइ, सो मेरे न करनो. तातें कहैं, अवकास होइगो तब सुनाऊंगो. या प्रकार कहि बिदा किये. तब श्रीठाकुरजी विचारें, जो भगवदीय पास कोइ मनोर्थ करे सो खाली कैसें जाई. तातें बूला मिश्रसों श्रीठाकुरजीने कही वह क्षत्रीकों पुत्र होइगो, तू सुनाईयो.

ता पाछे एक दिन अचानक बूला मिश्र यजमान क्षत्रीके घर आये. तब वह क्षत्री बहोत आदर सन्मान करि अपने हाथसों बूला मिश्रके चरण छुई माथे धरि, सुन्दर आसन पर बैठाये. तब बूला मिश्रनें उह क्षत्रीसों कही, तुम स्त्री सहित न्हायके नये वस्त्र पहरि बैठो. तब दोऊ स्त्री पुरुष न्हायके नये वस्त्र पहरिके आय बैठें. तब बूला मिश्र हरिवंश पुराणको एक श्लोक पढ़े सो श्लोक -

इदं मया ते हरिकीर्तनं महत् श्रीकृष्णमाहात्म्यं परमद्भुतम् ।

या श्लोक कहि याको अर्थ कहें, जो यह श्रीकृष्ण कीर्ति, उपर कहे सो कृष्णकीर्तिको माहात्म्य परम अद्भूत है. जो सुने ताके भागिको

पार नाहीं, परम दुर्लभ. यह श्लोकमें सब फलकों पावे. पाछे मन्त्राक्षत पढ़िकें वह बड़ी स्त्रीकों गोदमें दिये. तब उह क्षत्री बूला मिश्रसों कहे, यह तुम कहा कियो ? यह बड़ी स्त्रीकों तो स्त्री धर्म होत नाहीं. सो छोटी स्त्रीकों क्यों नाहीं दिये ? तब बूला मिश्र कहें, श्रीठाकुरजी पुत्र देनहार होइंगे तो याहीकों पुत्र देहींगे, श्रीठाकुजरी सर्व सामर्थ्यवान हैं. यह कहि बूला मिश्र उठे, घर चलन लागें. तब वह क्षत्रीने कही मोकों कृपा करिके सम्पूर्ण हरिवंस पुरान सुनावो. तब बूला मिश्र कहे तिहारो मनोर्थ तो पुत्र हेतु सगरो पुराण सुननकौ है, तासों पुत्र तुमकों होइगो. सगरे पुराण सुनेको फल तुम विचारे सो भयो. अब सगरे पुराण सुनिवेको प्रयोजन कहा ?

भावप्रकाश : यह बूला मिश्रने यातें कह्यो, जो इनकों अवकास कहां ? जो सगरो पुराण सुनावें. यह तो भगवद् इच्छा तें कहिवेको संयोग बनि गयो.

यह कहि बूला मिश्र घर आये, सो वह बड़ी स्त्रीकों गर्भ रह्यो. (पाछे) पुत्र भयो.

भावप्रकाश : सो यह वार्तामें भगवदीयकों बड़ी बड़ाई दई है. काहे तें, भगवदीय भक्ति मुक्तिके दाता है. चाहें तो तत्काल श्रीठाकुरजीसों मिलाय दें. यह तो पुत्र, तुच्छ फल कहा ? तहां अर्थ यह है, जो पुत्र लौकिक नाहीं दिये. परम भवदीय पुत्र दिये. सो पुत्र श्रीगुसांईजीको सेवक होइ, सगरे कुलको आगे कल्याण करेगो. तातें भगवदीय जो देय सो अलौकिक देई, लौकिक देइ तो नाहीं दिये बराबर है. काहे तें पुत्र किनकों कहिये ? जो माता पिताको उद्धार करे, तिनकों पुत्र कहिये. नाहीं तो जैसे पसु, कुत्ता, गदहाके पुत्र होत है. तेसे संसारी होय तो पसु समान है. तातें बुलामिश्र जेसो पुत्र शास्त्रमें सराहे हैं, तेसो पुत्र दियो. ... ।।वैष्णव ४६।।

सो बूला मिश्र श्रीआचार्यजीके बड़े कृपापात्र भगवदीय हे. सदा मानसीफलरूप सेवामें भगवद् रसमें मगन रहते. तातें बूला मिश्रकी वार्ता कहां तांई कहिये. ....वार्ता ।।४६।।

५४-रामदास मेवाड़ा

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, रामदास, मेवाड़ा ब्राह्मण, मीराबाईके प्रोहित हते, मेवाड़में रहते, तिनकी वार्ताको भाव कहत है -

भावप्रकाश : ये श्रीस्वामिनीजीकी सखी विसाखा तिनकी सखी है. लीलामें इनको नाम 'कन्दर्पा' है. जो सदा श्रीस्वामिनीजीके नामको कीरतन ये करती. रूप इनको बहुत सुन्दर हतो. सो एक दिन कन्दर्पा अपनो शृङ्गार करती, सो श्रीस्वामिनीजी पधारी. तब कन्दर्पा शृङ्गार करत हती, सो उठी नाहीं. तब विशाखाने शाप दियो, जो इतनो गर्व, हमारी स्वामिनीजीकों उठिके सन्मान न कियो ? जाऊ भूमिमें परो. सो इहां अनेक जन्म भये. पाछे मेवाड़में एक ब्राह्मणके घर जन्में, सो बरस बाईसके भये. तब रामदासके पिता रामदासकों सङ्ग लेके श्रीरनछोडजीके दरसनकों गये. तहां श्रीआचार्यजी पधारे हूते. सो रामदासकों दरसन भये. तब रामदासने पितासों कही, श्रीआचार्यजीके सेवक तुम, हम होई तो आछो. तब रामदासके पिताने कही, जो ये ब्राह्मण हैं, हमहू ब्राह्मण हैं, हम सेवक कौनके होइ ? अब कही सो कही, अब कहोगे तो तुम जानोगे. तब रामदास चुप होई रहे. पाछे पितासों छिपकें श्रीआचार्यजी पास जाइ, रामदास दण्डवत् करि बिनती किये. महाराज ! मेरो मन आपुके सेवक होंनको बहोत है. सो मेरे पिता हू सेवक होइ तो भगवद्धर्म घरमें बने, क्लेश न होइ. सो मेरे पिताकों कछू आप आपनो माहात्म्य दिखावो तो वह सेवक होई, काहतें, अज्ञानी जीव है अहङ्कारमें भर्यो है. तब श्रीआचार्यजी कहैं, तू दैवी है, तेरो पिता साधारण है. सो तेरे पीछे कृतार्थ होइगो. तु, जो बात पितासों कहेगो सो सांची होयगी, तू ही पिताकों माहात्म्य दिखाईयो. तब रामदास दण्डवत् करि पिता पास आयो. सो पिता रसोई करत हतो. सो रसोई करत सगरो हाथ जरि गयो तब पिता बहोत दुःखी भयो. तब रामदासने कही, एक बात हों कहों, जो तुम मानो. तब पिताने कही, कहो. तब रामदासने कही, मैं हाथमें जल ले तिहारे आगेसोह करत हों, जो श्रीआचार्यजी साक्षात् भगवान् होइ तो यह जलतें तिहारो हाथ आछो होइ जइयो. जो और भांति होई तो तिहारो हाथ आछो न होइयो. सो मैं जल या प्रकार कही तिहारे हाथ पर डारूंगो. जो हाथ तिहारो आछो होई तो श्रीआचार्यजीके सेवक होऊ. तब पिताने कही, हां, हां, या प्रकार होयगो तो सेवक होऊंगो. तब रामदास हाथमें जल ले कहै, श्रीआचार्यजी साक्षात् भगवान् होइ तो जलसों पिताको हाथ आछो होइ जैयो. यह कहि रामदास अपने हाथको जल पिताके हाथ पर डार्यो. सो आछो व्है गयो. तब रामदासने कही, चलो, अब श्रीआचार्यजीके सेवक होऊ. तब पिताने कही, बेटा तू बावरो भयो है ? यह ऐसो ही लिख्यो हतो कर्ममें, सो मेरे पुन्य तें मैं आछो भयो. रसोइ तो करूं. तब रामदास अति क्रोधवन्त होईके कह्यो, जो अब तुम इतने पर नटि गये तो दोनों आंखिनसूं अन्धे होई जाऊ.

सोऊ तत्काल दोऊ आंखिनमें फूली परि गई, आंधरो होई गयो, तब पिताने रामदाससों कही, यह कहा कियो ? अब मैं सेवक होऊंगो, जो तू कहे सोई करूं, मेरी आंख आछी होई. तब रामदासने कही, अब तो सेवक श्रीआचार्यजीके होऊगे तब आंख आछी होइगी, नहीं तो बहोत दुःख पावोगे. तब पिताने कही, चलो बेगे, पाछे दूसरो कार्य होइगो. तब रामदास पिताको हाथ पकरि श्रीआचार्यजीके पास आई दण्डवत् करि. (तब) पिताने बिनती कियो, महाराज ! आपको प्रताप प्रसिद्ध देख्यो. तऊ मेरे मनमें न आयो तातें मैं आंधरो भयो. अब मैं आपकी सरन आयो हूं, मेरो दुःख दूरि करो. तब श्रीआचार्यजीने रामदाससों कही, तू श्रीयमुनाजीमें न्हाइ आऊ, पिताकों इहां बैठ्यो रहन दे. तब रामदास श्रीयमुनाजी न्हाइके श्रीआचार्यजीके पास आये. तब श्रीआचार्यजी रामदासकों नाम सुनायके, ब्रह्मसम्बन्ध करायो. पाछे रामदासके पिताकों नाम सुनाये. तब रामदास श्रीआचार्यजीको चरणामृत आपु लेइ ताके नेत्रनसों लगाइ कहै, अब नेत्र पहले जैसे खुल जांइ. सो आंख आछी होइ गई. तब पिताने श्रीआचार्यजीसों दण्डवत् करि कह्यो, महाराज, अब माकों कहा कर्तव्य है ? जामें मैं सुख पाऊं, सो बात बतावो. तब श्रीआचार्यजी कहैं, तुम रामदास पुत्रके कहेमें रहोगे तो सदा सुखी रहौगे, कृतार्थ होइ मुक्ति पावोगे. तब रामदासने कही, महराज ! मोकों भगवद् सेवा पधराइ दीजिये. तब श्रीआचार्यजीने प्रसादी वस्त्र दिये (और) कहें, इनकी सेवा मन लगाइके करियो. तब रामदास दण्डवत् करि पिताकों ले डेरा पर आये. पाछे पितासों कही, अब रसोई मैं करूंगो, तुम परचारगी करि दीजियो. तब पिताने कही, जो तुम कहो सो करूंगो. तब रामदास रसोइ करि वस्त्र सेवाकों भोग धरे. पाछे पिताकी पातर, गायको भाग काढि, महाप्रसाद लिये. पाछे श्रीआचार्यजी अड़ेलकों पधारे. और रामदास पिताकों ले मेवाड़में आये, घरमें रहे. सो सगरे घरके रामदासकी आज्ञामें रहै.

वार्ताप्रसङ्ग १ : पाछे रामदासजी एक दिन मीराबाईके यहां गये. सो मीराबाईके ठाकुर आगे श्रीआचार्यजीके कीर्तन गावत है. तब मीराबाईने कही, कोई विष्णु पद श्रीठाकुरजीके गावो. तब रामदासकों रीस छूटी, कहें, दारी रांड़ ! यह कहा तेरे खसमके हैं ? जा, आज पाछे तेरो मुख न देखोंगो. सो वह गाममें ते कुटुम्ब लेके उठि चले. तब मीराबाईने बहोत कही. इनकों दक्षिणा देन लागी सो कछू न लिये. कुटुम्ब ले ओर गाममें जाइ रहै. सो रामदासजी ऐसे टेकके कृपापात्र भगवदीय हते. अपने प्रभुमें ऐसे अनुरक्त हते, जो फिर मीराबाईको मुख न देख्यो ...वार्ता ।।४७।।

भावप्रकाश : यह वार्तामें यह जताये, जो पहले तो अन्य मार्गीयके पास जैये नाहीं. और जैये तो अपने मारगकी वार्ता न करिये. अपने मार्गके

कीर्तन न करिये, जो करिये तो क्लेश होई. तातें श्रीगुसांईजी 'चतुःश्लोकी' में कहै हैं -

विजातीयजनाक्रान्ते निजधर्मस्य गोपनम् ।
देशे विधाय सततं स्थेयमित्येव भावये ।।१।।

या प्रकार अपनेकों गोप्य करि देशान्तरमें रहनों. सो रामदास जा समय श्रीआचार्यजीके कीर्तन गाये, ता समय श्रीगोवर्द्धनधर विचारे, जो रामदासने श्रीआचार्यजीके कीर्तन गाये हैं तो मार्गकी वात. कहू कहेंगे. तातें मीराबाई द्वारा कहवाए, जो श्रीठाकुरजीके गावो. तब रामदासकों ज्ञान भयो, जो यह कहा कियो ? श्रीगोवर्द्धनधरकों श्रम कराये. तब यह मनमें बिचारे, जो अब या समय गाममें जल पीबनो उचित नाहीं है. काहेतें, कदाचित् गाममें रहैं, मीराबाईको मुख देखनो परे. हम हैं ब्राह्मण, फिर मीराबाईके प्रोहित. सो द्रव्यकी लालच या जगमें ऐसी बुरी है. जो लोभ तें धर्म जाइगो, तातें या गाममें जल न लेनो सो सब कुटुम्ब सहित और गाम जाई रहै. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिये. .... ।।वैष्णव ४७।।

५५-रामदास चौहान

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, रामदास चौहान, रजपूत, बुदेलखण्डके वासी तिनकी वार्ताको भाव कहत है -

भावप्रकाश : लीलामें ये ललिताजीकी सखी हैं. सो इनको नाम 'मधुएनी' है. सो इनके मनमें यह रहै, जो मैं ललिताजी नांई दोऊ स्वरूपनकों बीड़ी अरोगाऊं. तब श्रीठाकुरजीने कही, अब यह तिहरो मनोरथ कोई कालमें पूर्ण होइगो. सो यह बात, ललिताजी सुनिके मधुएनीकों शाप दिये. जो तू बीड़ी अरोगावेगी छिपिके, तो मैं कहा करोंगी ? जाऊ भूमिमें रहो, ऐसो गर्व कियो ? सो संसारमें अनेक जन्म भये. सो अबके बुदेलखण्डमें एक रजपूतके घर जन्में. तहां वर्ष बारहके भये. सो रामदासको पिता बुदेलखण्डमें राजाको चाकर हतो. सो पिताने कही, एक दिन चलो, राजसों मिलाउं. काहेतें, राजा तें नित्य मिलत रहों, तो तिहारी चाकरी होइ जायगी. तब रामदासने कही, मैं राजाके पास न जाऊंगो. काहेतें, मैं राजकों सलाम न करोंगो और राजाकी

चाकरी हू न करोंगो. मैं तो श्रीठाकुरजीकी चाकरी करूंगो, जामें जन्म सुधरे. राजाकी चाकरीसों कहा काम है ? यह बात सुनिके पिताने कही, जा तोकों वैरागी मिल्यो है, भरमायो है. राजाकी चाकरी न करेगो तो खायगो कहांते ? तब रामदासने कही, कहा सगरे जगतको पालन राजा करत है ? पालन तो श्रीठाकुरजी करत हैं. तुम मूर्ख हो, तातें जानत हों, जो हमारो पालन राजा करत हैं. यह सुनिके पिता मनमें बहोत कुढ्यो. परन्तु एक बेटा प्यारो बहुत, तातें कछु बोल्यो नाहीं. घरमें एक मनुष्य राख्यो, जो यहां कोई वैरागी आवन न पावें. कोई वैरागीकी सङ्गती या रामदासकों भाई है, तातें यह ऐसो भयो है. सो मनुष्य ठीक राखे. और रामदास तो 'रामकृष्ण' यह जप करे. और न काहूसों बोले, न बात करे. सो यह बात एक रजपूतने सुनी, सो रामदासकी वार्ता सब राजाके आगे कही. तब राजाने रामदासके पितासों कही, जो जा, अपने बेटाकों इहां ले आऊ. इतनो बड़ो भयो. मेरे पास नाहीं लायो ? तब रामदासके पिताने उह राजाके आगे हाथ जोरिकें डरपिके कह्यो, जो मेरे बेटाकी कोई वैरागीके सङ्ग तें बुद्धि बिगरी है. सो मोहूकों नांही गिनत है. सो मैं मनुष्य रखवारी बैठार्यो है, जो कोई वैरागीसों मिलवे न पावे. सो कछु दिनमें समुजे तो मैं लाऊं, अब ही अज्ञान है. तब राजाने कही समुजायके काल्हि मेरे पास लाऊ, नहीं तो मैं वाकों बुलायके बन्दीखाने राखोंगो. तब कैसे भाजेगो ? और हमनें सुनि है, जो मोकों सलाम न सरेगो. सो देखों, कैसे न करेगो ? तब रामदासको पिता डरपि, घर आई रामदाससों कहें, जो अजहू कछू नांहीं बिगर्यो, राजा पास चलि, मिलि आऊ, नांहीं तो राजा बन्दीखाने देइगो. तब रामदासने कही, तुम मोकों कहा डरपावत हो ? भाग्यमें बन्दीखानो और जो दुःख लिख्यो होइगो, सो काहू पे टरेगो नांहीं. मैं राजा पास आपु ते चलाईके न जाऊंगो. तब पिता समुजाय हार्यो, परि रामदासने मानी नाहीं. सो दूसरो दिन भयो तब राजाने रामदासके पितासों कही, तू बेटाकों लायो नांहीं, तातें यह तेरो दोष है. अब तू खबरदार रहियो तोसों समुजोंगो. तब रामदासको पिता डरपिके राजासों कह्यो, मेरे ऊपर रीस मति करो, घरमें पुत्र है, वाकों बुलायके समुजि लेऊ. मैं बहुत समुजायो, उह न मान्यो. तब राजाने दस मनुष्य बुलायके कह्यो, रामदासकों ले आवो. तब मनुष्य आइके रामदाससों कहैं तुमकों राजा बुलायके राजा बुलायो है. तब रामदासने कही, मेरो राजासों कहा काम है ? मैं नांहीं आऊंगो. तब मनुष्य रामदासकों हाथ पकरि बांधि राजाके पास ले गये. आयके सब बात कही. जो या प्रकार बोल्यो, जो मेरे राजासों कहा काम हैं ? तब हम बांधिके लाये तब राजाने रामदाससों कही, तू मोकों सलाम न करेगो तो मैं तोकूं मारुंगो, बन्दीखाने राखूंगो. तब रामदासने कही, तू अपनेकूं बचाव, मोकों कहा मारेगो ? तब राजाने मनुष्यनसों कह्यौ, याको बन्दीखाने राखि, कछूक मारियो, डरपाईयो. खाइवेकों मति दीजियो. जा प्रकार सूधो होई मोकों सलाम करे सो करियो. सो रामदासकों बन्दीखाने डारि अनेक दुःख दियो. रामदास कछू बोले नांही. यह बात राजाकी रानी सुनिके राजासों कह्यो, यह तुम कहा काम कियो ? दस बारह बरसको लरिका तुमकों न सलाम कियो ता कहा भयो ? वाकों इतनो दुःख दीनो सो आछो नांहीं. कहा जानिये, अब वाको फल कछू बुरो होनहारो है. तातें अबहू वह बालककों छोड़ि

देऊ. या प्रकार रानीने समुजायो. परन्तु राजा माने नांहीं. सो तीसरे दिन अर्द्ध रात्रि समय दक्षिणसों दूसरे राजाकी फोज आई. सो लराई भई. उह राजाने यह राजाकों मार्यो, गाम लूट्यो. रामदासको पिता कहूं भागि गयो. सगरे बन्दीखाने तें छूटे. सो रामदास बुन्देलखन्ड तें चलें, सो मथुरा आये पाछे ब्रज सगरो देखि प्रसन्न भये, तब विचारे, जो कहूं मेरो पिता आई निकसे तो मोकों ले जायगो. तातें गोवर्द्धनकी कन्दरा 'अपछरा कुण्ड' पर रहै. ताके भीतर सगरे दिन बैठते. भगवद् नाम लेते. रात्रि होय तब ब्रजवासीनके घरसों मांगिके जो मिले तामें निर्वाह करते.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो जब आचार्यजी प्रथम ही श्रीनाथजीकों प्रगट किये तब कच्चो छोटा सो मन्दिर करि तापर छानि छाइकें श्रीनाथजीकों पाट बैठारे. तब रामदासकों श्रीठाकुरजीने जताई, जो श्रीआचार्यजीको सेवक तू होऊ मेरी सेवा करियो.

भावप्रकाश : काहेतें, जो लीला में तू मेरे पास मांग्यो हतो ललिताजीकी सेवा मोकों मिले. सो मैं कही हती, जो कोई कालमें सिद्ध होयगी सो समय अब सिद्ध है, सो समय अब तेरो सेवाको आयो है.

तब रामदास आइकें श्रीआचार्यजीकों दण्डवत् किये. तब श्रीआचार्यजी रामदासकों निकट बुलाइ नाम निवेदन करवाईके कहें, तुम श्रीनाथजीकी सेवा करो. ब्रजबासीनके घरतें जो कछू दूध दहीं अन्न सामग्री आवे सो श्रीगोवर्द्धननाथजीकों भोग धरि तुम निर्वाह करियो. पाछे श्रीआचार्यजी सदू पाण्डे, कुम्भनदास आदि ब्रजवासीनसों कहें, तुम श्रीनाथजीकों ठीक राखियो. पाछें दूध दहीं माखन, अन्न, सीधा, सामग्रीकी सोंज सब ब्रजवासी दे जाते. रामदास भोग धरिके निर्वाह करते. पाछे पूरनमलकों श्रीनाथजीने मन्दिर समरायवेकी जब आज्ञा दीनी, तब पूरनमल आये. मन्दिर समरावन लागे. तब द्रव्य निघटि गयो. फेरि कमाईके आइ मन्दिर समरायो, तब रामदासकी देह छूटि. लीला में प्राप्त भये.

भावप्रकाश : काहेतें, इनको मनोर्थ एकान्त सेवाको हतो. सो अकेले सेवा करि लीलामें गये.

वार्ताप्रसङ्ग २ : अब श्रीनाथजीको मन वैभव बढ़ावनको भयो, सो नये मन्दिरमें बिराजे. तब श्रीआचार्यजीने सदू पाण्डेसों कह्यो, दस पांच ब्रजवासी सेवा लायके होई तो सेवा करें. तब सदू पाण्डेने कही, महाराज ! ब्रजवासीसों सेवा न होई सकेगी, घरको काम है. तब श्रीआचार्यजी राधाकुण्ड सो बंगाली बुलाय रुद्र कुण्ड पर एक कुटी उनकों कराय दीनी, और श्रीनाथजीकी सेवा दीनी, पाछे कृष्णदास अधिकारीने बंगाली निकासि रामदास सांचोरा ब्राह्मनकों मुखिया भीतरिया कीये. सो सब कृष्णदासकी वार्तामें कहे हैं. सो ब्रजवासी सगरे पहले, देवदमन कहेते. पाछें गोपाल नाम गाय भई तब कहन लागे. पाछे श्रीआचार्यजीने श्रीगोवर्द्धननाथ नाम धरे. या प्रकारसों रामदास भाव पूर्वक सेवा किये हैं और मानसी सेवामें मग्न रहते. रामदास ऐसे टेकके कृपापात्र वैष्णव है. तातें इनकी वार्ता कहां ताई कहिये. ....वार्ता।।४८।।

५६-रामानन्द पण्डित

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक रामानन्द पण्डित, सास्वत ब्राह्मण, थानेश्वरके तिनकौ वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ये निकुञ्जमेंके तमचर हैं. सो एक समय रात्रि धरी छै पाछली रही, तब यह तमचर बोलि उठ्यो. सो श्रीठाकुरजीने जानी, सबेरो भयो, सो उठे. तब ललितादिक सखीने कही, जो अबही रात्रि बहोत है. तब श्रीस्वामिनीजी क्रोध करिके कहें, जो एसे पक्षीको इंहा कहा काम ? जो समें बिना मनकों खेद करायो. तातें याको संसारमें जन्म होऊ. तब वह तमचर संसारमें अनेक जन्म पाये. सो अबके थानेश्वरमें एक सास्वत ब्राह्मणके घर जन्मे. सो थानेश्वरमें ब्याह भयो, वर्ष तीसके भये. तब माता पिताने देह छोड़ी. सो स्त्री पुरुष रहत हते. श्रीभागवत् आदि पुरान बांचते, कथा कहतें. तातें इनकों सब कोई पण्डित कहते. लोगनसों चर्चा करते. सो एक समें श्रीआचार्यजी थानेश्वर पधारे, तब रामानन्द चर्चा करिवेकों आयो. तब श्रीआचार्यजीके आगे वाचा बंद व्है गई. कहे कछू, निकसे कछू. तब श्रीआचार्यजी रामानन्दसों कहें, तुम वाद करिवे आये हो, सो एसे क्यों बोलत हो ? तब रामानन्दकों लाज लागी, सो घरमें जाई सरस्वतीको पूजन और जप करन बैठ्यो. और कह्यो, जो सरस्वती प्रसन्न होई कह्यो, मैं प्रसन्न हों, तेरे मन आवे सो मांग. तब रामानन्द पण्डितने कही, मोसों कोई पण्डित जीते नाही, मैं सबको जीतों. यही मांगत हों. तब सरस्वतीने कही, जो जा, एसेई होयगो तब अहङ्कार करि फेरि

श्रीआचार्यजीके पास वाद करनकों आयो. सो फेरि वैसे ही वाचा बंद भई, बोले कछू कहै. तब श्रीआचार्यजी कहें, अब तू सरस्वतीको प्रसन्नकों प्रसन्न करि वाद करनकों आयो, सो फेरि ऐसे क्यों बोलत हैं ? तब रामानन्दकों बहुत लाज आई. घर में जाई, वैसे ही फेरि सरस्वती आराधन कियो. तब सरस्वती फेरि प्रसन्न होईके रामानन्दसों कही, अब कहा मांगत हो ? विद्यातो तोकों दीनी है. तब रामानन्दने कही, मोकों कहा विद्या दीनी ? मैं श्रीआचार्यजीसों वाद करिवे गयो, तहां तो कछू जुवाब नहिं निकसत. तब सरस्वतीनें कही, जो मैं तोको पण्डित जीतिवेको वरदान दियो है, कछू ईश्वर जीतिवेकों नहीं कही. श्रीआचार्यजी तो साक्षात् भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं. तिनसूं तू वाद करन गयो, तो कैसे जीतिगो ? तातें अपनो भलो चाहे तो श्रीआचार्यजीकी सरन जा, संसार ते छूटि कृतार्थ होउ. और उनसों तू कबहू न जीतेगो. तब रामानन्द जाइके श्रीआचार्यजीकों दण्डवत् करि विनती किये, महाराज ? मैं आपको स्वरूप नहिं जान्यो. आप साक्षात् ईश्वर हो. और कही, मैं जीव हों. मो पर कृपा करिके सरनि लीजिये. मेरो अपराध क्षमा करो, जो मैं आपसों जीव बुद्धि करि वाद करन आयो. तब श्रीआचार्यजी कहें, तुम पण्डित हो, हमारे सेवक होई कहा करोगे ? तब रामनन्दने कही, महाराज ! अब मोकों मति भूलावो, मैं आपकी सरनि आयो हूं, मोकों अङ्गीकार करो. तब श्रीआचार्यजी कहें, जो जा, न्हाई आऊ. तब रामानन्द पण्डित सरस्वतीमें न्हाईके श्रीआचार्यजी पास आये. तब श्रीआचार्यजीने नाम निवेदन करायो. तब रामानन्द विनती करी, जो महाराज ! मेरे घर पधारिये. मेरी स्त्रीकों अङ्गीकार करिये. तब श्रीआचार्यजी कहें, अब तो पृथ्वी परिक्रमा जाइवेकी तैयारी हैं, तातें वेगि स्त्रीकों यहां लाउ, नाम सुनाइ देंइ. पाछे फेरि थानेश्वर पधारेंगे. तब तेरे घर उतरेंगे. तब रामानन्द घर जाई अपनी स्त्रीकों लिवाय लायो. तब श्रीआचार्यजीने रामानन्दकीस्त्री कों नाम सुनायो. तब रामानन्दने कही, महाराज ! मोकों भगवद् सेवा पधराई दीजे. तब श्रीआचार्यजी कहैं, तेरे श्रीमद् भागवतकी पुस्तक हैं, तिनकों तू भोग धरियो. और सेवा तुमसों होनी कठिन हैं. तब रामानन्द दण्डवत् करि स्त्री सहित अपने घर आये. श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमाकों पधारें.

वार्ताप्रसङ्ग १ : पाछें एकसमें श्रीआचार्यजी थानेश्वर पधारे. सो रात्रिकों रामानन्दके घर रहै.

भावप्रकाश : यामें यह जताये, जो रसोई पाक और वैष्णवके घर कर्यो.

सो पिछ्ली रात्रिकों रामानन्दनें उठिकें स्त्रीसों कही, बेगिके, गोबर संकलि, नांतर वैष्णव उठिके सब गोबर लें जाइंगें. सो यह वात

रामानन्दकी श्रीआचार्यजीने सुनी. सो आप उठिके मनमें बहोत क्रोध किये. जो या प्रकार गोबरकों कहेत है, उठाई ले जाइंगे ! तो वैष्णवको और समाधान कहा करेगो ? वैष्णव मेरे प्रानप्रिय, तिनकों यह ऐसी बात कही. तब श्रीआचार्यजी क्रोध करि हाथमें जल लेंके, वेद मन्त्र पढ़ि रामानन्दके उपर छिरकिके कहे, मैंने तेरो त्याग कियो. यह कहि वाही समें सङ्गके वैष्णवनकों साथ ले उहां ते उठि चले. सो थानेश्वर तें तीन कोस पर एक गाम 'अमीतीर्थ' है, तहां आईके स्नान सन्ध्या किये. और जा समें रामानन्दके घरतें श्रीआचार्यजी उठिके चलन लागें ता समें थानेश्वरके वैष्णवने बहोत विनती करी, महाराज ! हमारे घर पधारियें. तब श्रीआचार्यजी कहें, अब तो या समें ये गाममें जलपान न करूंगो. यह कहि पधारे, रहें नांहीं.

भावप्रकाश : सो याते, जो श्रीआचार्यजीको अपराध करतो तो आप थोरो दण्ड दे क्षमा करते. वैष्णवको अपराध है, सो बेगो छूटे नाहीं, तातें या गाममें रहे नाहीं. और जब ब्रह्मसम्बन्धकी आज्ञा श्रीगोकुलमें श्रीठाकुरजीनें श्रीआचार्यजीकों दीनी. तब श्रीठाकुरजीने कही, जाकों तुम ब्रह्मसम्बन्ध करावोगे ताकों मैं न छोडूंगो. सो परीक्षा देखन अर्थ श्रीआचार्यजी अपराधको मिस पाई त्याग करें. जो यह ठीक परेगी. और श्रीआचार्यजी क्रोध बहोत यातें किये, जो रामानन्दने स्त्रीसों यह कही, बेगि गोवर उठाई नांतर वैष्णव ले जाइंगे. सो वैष्णव नाम लिये तातें क्रोध उपज्यो. जो काहू वैष्णवकों नाम ले कहते. (तो) एक दोई वैष्णवको अपराध होतो. इनने तो वैष्णव कह्यो. सो वैष्णवमें तो मुख्य, ब्रजभक्त आदि सगरे पर बात जाइ लगी. तातें श्रीआचार्यजीकों बहोत क्रोध उपज्यो. काहे तें, आप नवरत्नमें कहे हैं

"निवेदनं तु स्मर्त्तव्यं सर्वथाताहशैजनैः"

यह निवेदनको स्मरण ताद्रशी वैष्णवसों मिलिके करे तो निवेदनको फल, भाव जाने. सो वैष्णवकों गोबरके लिये ऐसे बोलत हैं ? और धोलमें यह कहे हैं, "तन मन धन समर्पन करिने वैष्णवने अनुसरियेजी." और यह कीर्तन -

राग केदारो

हों वारी इन वल्लभीयन पर ।
मेरे तनको करों बिछौना सीस धरो इनके चरनन तर ।।१।।
भाव भरि देखो मेरी अंखियन मण्डल मध्य विराजत गिरिधर ।
ये तो मेरे प्रान जीवन धन दान दिये हैं श्रीवल्लभ वर ।।२।।
माया वाद खण्ड खण्डनकों प्रगट भये श्रीविटठल द्विजवर ।
'रसिक' कहैं आस इनकी करि वल्लभीयनकी चरनरज अनुसर ।।३।।

यह भाव वैष्णवमें होई. सो वैष्णवकों कहें, जो गोबर उठाई ले जाइंगें. सो वैष्णव गोबरके चोर ठहराये. तातें श्रीआचार्यजी क्रोधवन्त होइ सगरे वैष्णवकों सिक्षा दिये, जो सम्भारिके बोलिवो. वैष्णव पर प्रीति राखनी, यह जताये.

वार्ताप्रसङ्ग २ : पाछे श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमाकों पधारें. इहां श्रीआचार्यजीके तिरस्कारसों रामानन्द विकल होइ गये. जहां तहां बाजारमें खानपान करे. मर्यादा सब छूटि गई. परन्तु इतनी मर्यादा रही, जो कछु खानपान करे सो पहलें यह कहै, श्रीगोवर्द्धननाथजी अरोगियो. या प्रकार समर्पन करिके खाई. सो एक दिन रामानन्द बाजारमें चल्यो जात हतो, सो एक हलवाई जलेबी करत हतो. सो ताजी देखके रामानन्दने मोल ले उही बाजारमें कह्यो, श्रीगोवर्द्धननाथजी अरोगियों. या प्रकार समर्पण करि जलेबी खाई. सो जा समें रामानन्दनें जलेबी श्रीनाथजीकों अरोगाई, ता समें श्रीआचार्यजी श्रीनाथजीद्वार हते. श्रीनाथजीकों राजभोग आयो हतो. सो समें भये श्रीआचार्यजी भोग सराइवेकों मन्दिरमें पधारे. तब आचमन मुख वस्त्र कराये. तब श्रीनाथजीके मुखारविन्दमें जलेबीको टूक देखि श्रीआचार्यजी श्रानाथजीसों कहें, जो आज कछू उत्सव तो नाहीं है. जलेबी कैसे अरोगे ? तब श्रीनाथजीनें कही, जो तिहारे सेवकने मोकों जलेबी अरोगाई हैं. सो मैं अरोग्यो हूं. तब श्रीआचार्यजीने कही, जो कौन से वैष्णवने जलेबी अरोगाई है ? तब श्रीनाथजी कही, रामानन्द पण्डित थानेश्वर गामकेने अरोगाई है, सो मैं अरोग्यो हूं. तब श्रीआचार्यजीने कही, जो मैं तो वाको त्याग कर्यो है, तुम वाकी समर्पी कैसे अरोगे ? तब श्रीनाथजीने कही मैं तुमकों बचन दियो है, जाकों तुम ब्रह्मसम्बन्ध करावोगे ताको में कबहून छोडूंगो. तातें तुम त्याग करो परन्तु तुमने

पहले मोकों समर्प्यो हो सो कैसे छोडूं ? तब श्रीआचार्यजी चुप व्है रहे. पाछे अनोसर करिके श्रीआचार्यजी मन्दिर तें बाहिर पधारे. तब दामोदरदास हरसानीसों कहै, जो रामानन्द पण्डितके हाथसों श्रीनाथजी जलेबी अरोगे, और कहै, मैं कैसे वाकों छोड़ों ? तब दामोदासने पूछी, जो महाराज! आप याको त्याग कियो है, और श्रीनाथजी पक्ष करी है. सो वा जीवकों अङ्गीकार कब करोगे? तब श्रीआचार्यजीने कही, जो अब वैष्णवको अपराध न करेगो. तो वाकों लक्ष जन्ममें अङ्गीकार करोंगों. कहा भयो, जो श्रीनाथजी जलेबी अरोगे तो ? पाछें एक वैष्णव श्रीनाथजीके दरसन करिके थानेश्वर गयो. तब रामानन्दनें उह वैष्णवसों पूछी, जो कबहू मेरी बात श्रीआचार्यजीके आगे चली हती ? तब उह वैष्णवने कही, जो तेरे हाथकी जलेबी श्रीनाथजी अरोगे. तब श्रीआचार्यजीसों दामोदरदास हरसानीनें पूछी, जो आप रामानन्दकों कब अङ्गीकर करोगे ? तब श्री आचार्यजीने कही, जो आज पाछे जो वैष्णवको अपराध न करेगो तो लक्ष जन्ममें अङ्गीकार करूंगो. इतनी बात चली हती. तब रामामनन्द प्रसन्न होइके कह्यो, जो भलो, लक्ष जन्ममें मेरो अङ्गीकार करनो तो कह्यो. ता पाछे रामानन्दकी बुद्धि सुन्दर भई. वैष्णवके अपराध तें डरपन लाग्यो. पण्डिताईको अहङ्कार हतो तातें अपराध पर्यो, सो दैन्यता भई. पाछे स्वप्न द्वारा लक्ष जन्म भुगताई कृपा करि श्रीआचार्यजी अङ्गीकार किये. सो रामानन्द श्रीआचार्यजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिये. ...वार्ता ।।४९।।

भावप्रकाश : अङ्गीकार किये सो काहेतें, श्रीआचार्यजी वैष्णवकों दण्ड देत हैं. सो शिक्षाकों. निज त्याग नांही हैं. जैसे माता पिता पुत्रकों दण्ड देत है सो शिक्षार्थ ही. पुत्रको बुरो न करेंगे. तैसेही जाननो. जो श्रीआचार्यजीको अन्तःकरणसों त्याग होइ तो श्रीनाथजी वाके हाथकी सामग्री कबहू न अरोगें. काहेतें, श्रीआचार्यजीके सेवक हैं. तातें जैसी इच्छा श्रीआचार्यजीकी होई ताही भांति श्रीनाथजी करे. काहेतें, श्रीआचार्यजी रञ्च अप्रसन्न होई तो, श्रीठाकुरजी वाकों कबहू अङ्गीकार न करें. तो श्रीआचार्यजी त्याग करें ताके हाथकी सामग्री श्रीगोवर्द्धनधर कैसे अरोगें ? तातें श्रीआचार्यजीके अन्तःकरणको त्याग नाहीं. तातें श्रीआचार्यजी वेद मन्त्रसों जल छिरकिकें त्याग याहीतें किये, जो मर्यादा रीतिसों त्याग है. सो लोगनकों दिखायवेकों, सब जाने, जो त्याग है. परन्तु लीला सृष्टिके जाने, जो दैवी है सो तो श्रीआचार्यजीके अङ्ग रूप हैं. जैसे अङ्गको त्याग नाहीं. तैसे जीवको त्याग नाहीं. तातें श्रीनाथजी अरोगें. तातें श्रीआचार्यजी ‘अन्तःकरणप्रबोध’ में कहे हैं -

चाण्डाली चेद्राजपत्नी जाता राज्ञा च मानिता ।
कदाचिदपमानेऽपि मूलतः क क्षतिर्भवेत् ।।१।।

चाण्डाली राजपत्नी मानवती जब भई तब अपमान हू होई. परन्तु रानीपनो न जाई. मान अपमान तो होत ही है, और नवरत्न ग्रन्थमें कहैं -

अज्ञानादथवा ज्ञानात् कृतमात्मनिवेदनम् ।
यैः कृष्णसात् कृतप्राणैस्तेषां का परिवेदना ।।

ज्ञान अज्ञान करिके जाको निवेदन भगवानमें भयो, वह श्रीकृष्णको प्रानप्रिय भयो, वाकों परिवेदना दुःख चिन्ता काहेकी ? तातें रामानन्द द्वारा इतनो सिद्धान्त प्रगट करन अर्थ आपु मर्यादा रीतिसों त्याग किये. जैसे रास - पञ्चाध्याईमें भक्तनको मान देखि अन्तरधान भये, सो कहा छोडि गये ? भक्तनको प्रभु छोड़े ही नही. बाहरतें उनके हृदयमें जाई बैठे. तैसेही सबके देखत त्याग कियो. सो वैष्णवको अपराध ऐसो भारी बताये. और वैष्णवको बोलनो सम्भारिके. काहेतें, आश्रय अन्य श्रय सब बचनमें है. उह बाईने संसारी मनुष्यसों प्रसन्न होईके कह्यो, तुमने मोकों जिवाई तब श्रीठाकुरजी उठि गये. और रजो क्षत्रानी तें श्रीआचार्यजीने घृत मांग्यो सो न दियो और रात्रिकों बिनती करि सामग्री अरोगाई. तातें एक बचन अहङ्कारके सगरे धर्मको नास करे. एक बचन प्रसन्नताके प्रभु तत्काल प्रसन्न होई. सो वैष्णवकों सम्भारिके बोलनो, यह जताये. और महात्मी जीव हैं, तिनकों दृढ़ता जताये. पुष्टिमार्गमें अङ्गीकार कियो. श्रीठाकुरजी इतने पर न छोड़े जलेबी अरोगे. समर्पनीको त्याग नाहीं. श्रीठाकुरजीके बचन दृढ़ किये. जो ब्रह्मसम्बन्धकी आज्ञा दिये. तब कहे, जिनकों तुम ब्रह्मसम्बन्ध करावोगे ताकों मैं न छोंडूंगो. साऊ कहत हैं, इहां वचन सांचि करि दिखाये. और वैष्णवको श्रीगोवर्द्धनधर यह जताये, जो रामानन्द विकल, बजारकी जलेबी मोकों धर्यो सो मैं श्रीआचार्यजीकी का'नि तें सेवक जानि अरोग्यो. तो आछी भांति सो सामग्री धरें, तिनकी बहोत प्रीतिसों अरोगत हों. और जताये, यद्यपि रामानन्द भ्रष्ट विकल भयो सोऊ श्रीनाथजीकों समर्पिके खानपान करतो, इतनी मर्यादा नाहीं छोड़ी. और जो वैष्णव असमर्पित खात है, सो रामानन्दसों हू गये बीते. त्याग उनहीको जाननो. तातें समर्पे बिना कछू न लेनों. और श्रीआचार्यजी रामानन्दको त्याग करि उहां रहे नाहीं सो याही तें, जो अन्तःकरणको त्याग नाहीं. तातें आप उहां रहते तो बिनती करि फेरि प्रसन्न करतो. तो इतनो सिद्धान्त कहां प्रगट होई ? और श्रीआचार्यजी श्रीनाथद्वार होई

तबही जलेबी रामनन्द अरोगावें. ताको कारन यह, जो सगरे वैष्णव रामानन्दको त्याग भयो जाने हैं, सो दिखाये त्याग नांही. रामानन्द तो श्रीनाथजी पास बैठे हैं. यह जताये, जो लौकिक वैदिक देह उहां विकल भई है, जाको त्याग किये. अलौकिक आधिदैविक देह श्रीगोवर्द्धनधर पास ही है, सो सेवा करत है. इत्यादिक भाव प्रगट भये दिखाये. .... ।।वैष्णव ४९।।

५७-विष्णुदास छीपा

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, विष्णुदास छीपा, ये आगरेके पास गाम है तहां रहते तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ए लीलामें श्रीचन्द्रावलीजीकी सखी हैं. 'कमला' इनको नाम है. सो आगरेके पासके गाममें एक छीपाके घरमें प्रगटे. सो बड़े भये वर्ष बीसके तब ब्याह भयो. सो पिता वस्त्र छाप देय विष्णुदास आगरेमें जाइ बेच लावें. सो ऐसे करत एक समय श्रीआचार्यजी आगरे पधारे. सो विष्णुदास सुन्दर छींटके थान ले आगरे गये. तब श्रीआचार्यजीने कृष्णदाससों कही, यह छीपाके पास छींट आछी है, सो तू ले, जो मांगे सो दे. तब कृष्णदासने विष्णुदाससों कही, यह छींटके थान सगरे हमकों दे. याके दाम हैं सो तू ले. सो विष्णुदासने चौगुनो मोल कह्यो. सो कृष्णदासने सगरे रुपैया गिन दिये. और कहे, और आछे थान होंई सो ले आऊ.

तब विष्णुदास चक्रत होई रहै. जो एतो बड़े महापुरुष अलौकिक जीव हैं. जो मोल न कियो. सगरे थान लिये, ताके दाम दिये. सो इनकों छींट देनो उचित नाहीं है. इनको पैसा मेरे घर आवेगो तो सगरों घर वैरागी होई जायगो. तब विष्णुदासने कही, ये सगरे अपने रुपैया लेऊ, मेरे छीटके थान फेरि देऊ. तब कृष्णदासने कही, तू बड़ो मूर्ख दीसत है ? तें मोल कह्यो, सो दाम दिये. अब यह थान कबहूं फिरे नाहीं. तेरे टोटा होई तो और हू रुपैया ले. चोगुने तो दाम लिये. तब विष्णुदासने कही तुम महापुरुष हो, तातें तिहारो द्रव्य घरमें आये सगरो घर वैरागी होइगो. याते मैं नाहीं तुमको बेचत. जो थान देउ नाहीं तो यह रुपैया हू राखो, और थान हू राखो. परन्तु रुपैया तिहारो मोकों पचे नाहीं. तब कृष्णदासने कही यह थान श्रीआचार्यजीने श्रीमुख सो सराहना करिके कहै, लेऊ, सों तू कोटीन उपाइ करे तो (हू) यह थान फिरे नांहीं. और श्रीआचार्यजी बिना सेवक औरको कछू लेत नाहीं. तातें रुपैया

तेरे मन आवे सो ले जा, और थान तेरे मन आये तो लैयो. तेरे मन आवे तो मति लैयो. तब कृष्णदासने कही, यह पीपरके रुखके नीचे बिराजे हैं. तब विष्णुदास आई श्रीआचार्यजीको दरसन करि दण्डवत् करि कहैं महाराज ! आपुके सेवकेमें इतनो धर्म है, तो आप तो भगवान् हैं. अब मोकों सरनि लेऊ. तब श्रीआचार्यजी कहैं, तुमकों सरनि कैसें लेय ? तुम छीपनमें रहत हो. आचार, क्रिया पुष्टिमार्गीय धर्म कैसे निबहेगो ? तब विष्णुदासने बिनती करी, महाराज ! अब आपको सेवक भयो. तब ज्ञाति व्यौहारको डर कहा है ? मा बाप मानेंगे, आपुके सेवक होंइगे, तो भेले उनके रहूंगो, नाहीं तो न्यारो घर करि रहूंगो. तातें कृपा करिके सरन लीजिये. तब श्रीआचार्यजीने कही, जा, श्रीयमुनाजीमें स्नान करि आऊ. तब विष्णुदास श्रीयमुनाजीमें न्हाई अपरस ही में आवत हते, सो छूय गये. कोऊको जूठो पत्ता उडिके देहसों लाग्यो. तब फेरिके न्हानकों चले. तब श्रीआचार्यजीने कही, विष्णुदास फेरी क्यों चलें ? तब विष्णुदासने कही, महाराज ! पत्ता उडिकें देहसों लग्यो सो छुई गयो. सो फेरि न्हान जात हों. तब श्रीआचार्यजी कहै अबही तें तू छूवाछाईमें समुजत है ? तब विष्णुदासने बिनती करी, महाराज ! मैं कहा जानो, किनसों छूवो कहैत हैं ? यह आपकी कृपा तें जानि परी है. तब श्रीआचार्यजी कहै ठाड़ो रहि, हमहूकों श्रीयमुनाजीके तीर मध्यान्हनकी सन्ध्या करनी है, तातें तहां ताकों नाम सुनावेंगे. तब विष्णुदासनें बिनती करी, महाराज ! मेरे लिये यह श्रम मति करो, न्हाईके आऊंगो. आप अपनी इच्छातें पधारो तो सुखेन पधारो, मेरे लिये पधारो तो मोकों अपराध परेगो. तब श्रीआचार्यजी प्रसन्न होइके कहैं, तुम सरीखे वैष्णवके लिये तो लीलामें ते पधारे हैं. और परिक्रमा करत हैं. मायावाद खण्डन करि, भक्तिमार्गको स्थापन करें हैं. अनेक ग्रन्थ सब बैष्णवनके लिये किये हैं. तातें यह तू काहेकों कहत है, श्रम मति करो. तब विष्णुदासने कही महाराज मोकूं तो कही चहिये. सेवकको यह धर्म है. तब श्रीआचार्यजी श्रीयमुनाजीके तीर पधारि विष्णुदासकों न्हवाइ नाम सुनाये, ब्रह्मसम्बन्ध कराये. तब विष्णुदासने विनती करी, महाराज मैं मूर्ख हों, सो ऐसी कृपा करो, जो श्रीभागवत् आदि आपके ग्रन्थनमें कछू ज्ञान होई. आपुके मार्गको सिद्धान्त जान्यो जाई. तब श्रीआचार्यजी 'सेवाफल' ग्रन्थ करि विष्णुदासकों सुनाये. सो सुनिके विष्णुदासने बिनती करी, महाराज ! सेवाफल ग्रन्थके सुनेंतें सगरे शास्त्र पुराणको ज्ञान भयो. परन्तु सेवाफल ग्रन्थको अभिप्राय समुजिवेमें नांहीं आयो. तब श्रीआचार्यजी कहैं ग्रन्थ सेवाफल ऐसो ही कठीन हैं. भली करी तू पूछ्यो. या ''सेवाफलकी टीका'' करिके सुनाये. तब सगरे मार्गको सिद्धान्त विष्णुदासके ह्रदयारूढ़ भयो. सो मगन होइ गए. तब कृष्णदासने कही, यह तेरो छींटको थान है चहिये तो ले जाऊ. चाहे दाम लेहू, चाहे भेट करो. तब विष्णुदासने कृष्णदाससों बिनती करी, जो मैं तिहारे सङ्गतें श्रीआचार्यजीकी सरनि पायौ. सो तुम भगवदीय होई ऐसे मोसों मति कहो. किनकी छींट कौन भेट करे ? यह सगरो प्रान सरीर जब जहां श्रीआचार्यजी कहैं तहां विनियोग कराइयो. तब कृष्णदास प्रसन्न होइ चूप करी रहै. पाछें श्रीआचार्यजी विष्णूदाससों कहैं, अब तुम अपने घर जाऊ. तब विष्णुदासने कही, जो महाराज ! अब मेरो घरतो आपकी चरन कमलकी रजमें है. सो छोड़के कहां जाऊं ? तब

श्रीआचार्यजी प्रससन्न होईकें कहे, जो सो तो सांच, परन्तु हम तो अड़ेल पधारत हैं. तुमहु उह गाममें रहो. पाछे श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल वास करें तब तुम गोकुल जाई, श्रीगुसांईजी पास रहियो. अब तुमकों संसार बाधा करि सकेगो नांहीं. जातें मन आवे तहां रहो. और तुम श्रीगुसांईजीकी लीला सम्बन्धी हो. तातें तिहारो सगरो मनोरथ पूर्ण श्रीगुसांईजी करेंगे. हम तुमकों अङ्गीकार करि अपने किये हैं. तुम सदा भगवद् सेवामें मगन रहोगे. तब विष्णुदास दण्डवत् करि अपने गाम आये. श्रीआचार्यजी अड़ेल पधारिके विष्णुदासकी छीट श्रीनवनीतप्रियाजीकों अङ्गीकार कराये. इहां विष्णुदास घरमें आई मा बापसों कह्यो मैं न्यारो रहूंगो. तब मा बाप कहैं, न्यारो रहिवेको कारन कहा ? तब विष्णुदासने कह्यो, मेरो मन यही करत है. सो न्यारो रहौं. पाछे स्त्री आई, तब स्त्रीसों कहै, तू श्रीठाकोरजीकी सेवा करे तो अड़ेल चलिके ताकों सेवक कराऊं. तेरे हाथको जल तब लेऊंगो, नांहीं तो तू मेरे पास मति आवे. तब स्त्री दस बीस गारी देकें उठि गई. कह्यो, तैं श्रीठाकुरजीकी पूजा करनको नाम लियो सो मैं तेरो मुख न देखूंगी. वैरागिनी फकीरनी होय सो ठाकुरजी पूजे. मेरे मा बाप भाई, मैं कैसे पूजोंगी. तब विष्णुदास मनमें प्रसन्न भये. जो श्रीठाकुरजीने बलाय काटी. भली भई, यह आपुतें छोड़ि गई. सो विष्णुदास थोरो सो कपड़ा छापें. सो आगरे बेचि आवें, जामें देह निर्वाह होई. और सगरे दिन - रात मानसी सेवा श्रीआचार्यजीके ग्रन्थ श्रीसुबोधिनीजीके भावमें मगन रहैं. **वार्ताप्रसङ्ग १ :**

सो कितनेक दिनमें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल बास किये. तब विष्णुदास छीपा वृद्ध भये. सो श्रीगोकुल आई श्रीगुसांईजीको दण्डवत् करि बिनती किये, सगरो प्रकार कहैं. जो या प्रकार श्रीआचार्यजीने कृपा करि सरन लिये. पाछे आपकों सोंपे, आपकी सरन आयो हूं. कहूं टहलमें राखिये. तब श्रीगुसांईजी विष्णुदासके उपर प्रसन्न होइ कहैं, जो तुम श्रीआचार्यजीके कृपापात्र सेवक हो, सो कहो तहां राखें. तब विष्णुदास विचारे, जो अब मैं वृद्ध भयो, और सेवा जन्मपर्यन्त निवहेगी नाहीं. तातें श्रीगुसांईजीकी पौरी पर रहूं.

भावप्रकाश : काहेतें सूरदासजी गाये हैं. -

मारग रोकि पर्यो हठि द्वारे पतित - सिरोमनि सूर

सो मैं पतित हों, श्रीगुसांईजीके द्वार पर मोकों पावन श्रीगुसांईजी आवते जाते दरसन देकें करेंगे. यह विचारि, विष्णुदासने कही, महराज ! आपकी पौरी पर रहनकों मेरो मन हैं.

तब श्रीगुसांईजी कहें, आछो, पौरी पर रहो, तब विष्णुदास पौरी पर रहे. सो श्रीगुसांईजी जब पधारें, तब विष्णुदासकों पुकारें, (जो) विष्णुदास प्रसन्न हो ? तब विष्णुदास कहैं, यह चरन कमलके आश्रय तें प्रसन्न हों, या प्रकार श्रीगुसांईजी विष्णुदास पर कृपा करते, या प्रकार पौरी पर रहते.

वार्ताप्रसङ्ग २ : सो जहां तहां तें ब्राह्मण पण्डित श्रीगुसांईजीतें वाद करनकों आवते. सो विष्णुदासने कही, ये पण्डित श्रीगुसांईजीसों वाद करनको आवत हैं, सो इनकों मैं ही प्रतिउत्तर करि बिदा करि देऊं तो श्रीगुसांईजीकों इतनो श्रम न करनो पड़े. यह बिचारि, जो पण्डित आवते, तिनसों वाद करि निरुत्तर करि देई. तब पण्डित जाने. जो जिनके पौरियामें यह समर्थ है, जो हमको जुबाव न आयो, तो श्रीगुसांईजीसों हम कहा वाद करेंगे ? यह विचारि सगरे ब्राह्मण पौरि परतें नित्य फिरि जाते. तब एक दिन श्रीगुसांईजीने वैष्णवसों कह्यो, जो आजकल पण्डित ब्राह्मण वाद करन नाहीं आवत हैं ताको कारन कहा ? तब वैष्णवनें कही, महराज ! पण्डित तो बहोत आवत हैं, परि पौरि पर विष्णुदास उनसों वाद करि निरुत्तर करि देत हैं, सो चले जात है. तब श्रीगुसांईजीने विष्णुदासकों बुलाईकैं कह्यो, तुमको तो श्रीआचार्यजीको कृपा बल ऐसोई है. तातें तुमकों सगरे शास्मे अभिनिवेस है. सो पण्डितको निरुत्तर करत हो. परन्तु हमारे द्वारे ब्राह्मण खाली हाथ जात हैं, सो आछो नांहीं. तातें हमारे पास पण्डितनकों आवन दिजो. उनसों चर्चा करि उनकों कछू देके विदा करेंगे. तब विष्णुदास दण्डवत् करि कहैं, महाराज ! अब आवन देऊंगो. मैं आपके श्रम होइवेके लिए पण्डितनकों विदा करि देतो. अब आवन देऊंगो. सो विष्णुदास पें ऐसी कृपा हती.

भावप्रकाश : और 'नामरत्न' ग्रन्थ श्रीरघुनाथजी - श्रीगुसांईजीके लालाजी - किये हैं तामें कहै हैं, 'विप्रदरिद्यदावाग्नि'. ब्राह्मरको दरिद्र रूप जो काष्ट, ताके दावाग्नि (सों) बुजावन हारे. तातें यह नाम प्रगट करन (अर्थ) ब्राह्मणकों बहोत समाधान करि द्रव्यादिक दे बिदा करते.

वार्ताप्रसङ्ग ३ : और एक मथुराको भटट हतो. सो श्रीगुसांईजीसों नित्य कहतो, जो तिहारे सगरे वैष्णवनको मैं एक दिन जिमाऊं.

तब श्रीगुसांईजी कहते, जो तुम या बातमें मति परो, यामें कहा लेऊंगे ? सो वह मानतो नाहीं. नित्य कहतो. सो आपु सुनिके चुप रहते. सो वह भटट श्रीगुसांईजीको स्वसुर हतो. सो श्रीगुसांईजीकूं न्योता कियो. तब श्रीगुसांईजी बाके घर मथुरा भोजनकों पधारे. तब श्रीगुसांईजी विष्णुदाससों कहैं, जो जलकी झारी ले हमारे सङ्ग चलो. तब विष्णुदास जलको झारी ले श्रीगुसांईजीके सङ्ग चले. सो श्रीगुसांईजी उह भटटके उहां भोजन करिकें उठे. तब विष्णुदासने श्रीगुसांईजीके हाथ धुवाई, सुद्ध आचमन करायो. तब श्रीगुसांईजी कहैं, हम श्रीगोकुल पधारत हैं, तू थालको महाप्रसाद ले, थाल मांझिके अइयो. सो श्रीगुसांईजी तो श्रीगोकुल पधारें. विष्णुदास अपने जलसों पोतना करि पातरि धरि थालको सगरो महाप्रसाद पातरिमें करे. पाछे थाल मांजि धोईकें न्यारो धरि महाप्रसाद लेन लागे. तब वह भटट और सामग्री ले विष्णुदास पास आईकें कह्यो, यह जूठन क्यों खात हो ? में सुन्दर सामग्री धरों सो लेऊ. तब विष्णुदासने कही, मोकों तिहारो नाहिं चहिए. जो मेरी पातरमें डारोगे तो मेरी पातर छूइ जायगी. तब भटट क्रोध करिकें चल्यो गयो. विष्णुदास महाप्रसाद ले श्रीगोकुल आये. अपनी पौरी पें बैठि रहैं पाछें वह भटट श्रीगोकुल आई श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो तुम्हारो सेवक शूद्र न मोसों एसो कह्यो, जो मेरी पातरमें सामग्री धरोगे तो मेरी पातर छूइ जायगी. तब श्रीगुसांईजी कहें, तुम तो कहेत हते हम सब सेवकनकों भोजन करावेंगे. सो एक सेवक शूद्रकों जिमाई न सकेतो सगरे सेवकनको कैसे जिमावते ? तब वह भटट सरमाईके चुप होई रह्यौ. सो विष्णुदास एसे कृपापात्र भगवदीय है. तातें इनकी वार्ता कहां ताई कहिये. ...वार्ता ।।५०।।

भावप्रकाश : या वार्तामें यह जताये, जो भटटकें हाथको कछू न लेनो. काहेतें, भटटके यहां श्रीगुसांईजीको सङ्कल्पो द्रव्य है, जातें न लेनों. ताहीतें श्रीगुसांईजी उह भटटके इंहा विष्णुदास भगवदीयकों ले गये. जो ए सगरे धर्ममें निपुण हैं, न चूकेंगे. जो साधारण वैष्णवकों ले जाई, और वह भटटके हाथको खाई तो ताको धर्म जाई. और आगे वैष्णवकी बुद्धि ओछी है, सो सगरे खान लगें तो वैष्णव धर्म कैसे बढ़े ? तातें विष्णुदासकों ले गये. सो विष्णुदास कहैं, मेरी पातर छुई जाईगी. यामें भटटको स्वरूप जताये. जा सामग्रीकों स्पर्श भटट करें ताकों छूई गई वस्तु जाननो. तहां यह सन्देह बड़ो है, जो उत्तम ब्राह्मण हैं, श्रीगुसांईजीके सगे सम्बन्धी, श्रीगुसांईजी इनके हाथको लेत हैं. तब वैष्णवको कहा दोष है ? यह सन्देह है तहां कहत हैं, जो शास्त्रमें देह सम्बन्धी कहे हैं, और भाव सम्बन्धी कहे हैं. सो देह सम्बन्धी यादव और कंसादिक और भाव सम्बन्धी ब्रजभक्त. सो जादवनकों श्रीठाकुरजी पृथ्वी पर भार रूप जानें, तातें नास किये. और ब्रजभक्तनकों भाव सम्बन्ध हतो, तातें ब्रजभक्तनके प्रेमसों वस भये. यद्यपि श्रीठाकुरजी जादवनके सङ्ग रहे, परन्तु

भगवद् स्वरूपको ज्ञान न भयो. और ब्रजभक्तनकों जन्म होत ही भयो. नन्दरायजीके घर आय सब पांय परी. तैसे श्रीगुसांईजीकों भटट सगे सम्बन्धी जानत हैं, कोऊ निंदक हू है. द्रव्यादिक लेवेकी चाह राखत है. तातें और कहां ताई कहिये. आसुरावेसी जानने और भक्तनकों दास भाव है. सो दास धर्म यह, जो स्वामीकी जूठन लेनो. तातें भटटके हाथको लेय तो बाकी बुद्धि सर्वथा नास ही होई. और श्रीगुसांईजी लेत हैं. सो ईश्वर है. जैसे श्रीठाकुरजी दावानल पान करि गये, औरसों न होई. तैसे ही श्रीगुसांईजी ज्ञाति व्यवहारके लिये ले. परन्तु वैष्णवकों न लेनों. और जैसे गङ्गाजल यमुनाजल कोई हीन जाती अपने पात्रमें भरि लावे सो वैष्णव न लेई तेसे ही. महाप्रसाद तो उत्तम गङ्गाजल है, जैसे जल आकास तें निर्मल स्वांतीकी बूंद बरसत है. परन्तु पात्र भेद तें सीपमें मोती होइ. बांसमें परे बंस लोचन होई. सर्पके मुखमें विष होई. या प्रकारके भेद होत हैं. तातें भटट भये तथा अन्य मार्गीयके हाथको सर्वथा न लेनो. तहां कोई कहे, जो भटट नाम समर्पण करि सेवा करत हैं तिनके हाथको कैसो ? तहां कहत हैं, इनकों भगवद् धर्म स्पर्श करे ही नाहीं. काहे तें, नाम समर्पण श्रीगुसांईजीके बालकसों ले, फेरि ज्ञाति बुद्धि करत हैं. तब सगरे धर्म नास होत हैं. उनकी कहा सेवा और कहा समर्पण ? गुरुमें ज्ञाति बुद्धि कर जूठन चरणामृत न लेई. तब हीन धर्म होई. और कोई ऐसो होई जूठन चरणामृत ले ज्ञाति बुद्धि न करें, वैष्णवकी रीति चले. सोऊ जब दूसरे भटटके हाथको ले तब वैसे ही होई. तातें भक्ति वैष्णवकों श्रीगुसांईजीने दीनी है. तहांई है. याके लिये विष्णुदास द्वारा सगरे वैष्णवनकूं सिक्षा दिये. ।।वैष्णव ५०।।

५८-सेवक जीवनदास क्षत्री

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, जीवनदास क्षत्री सिंहनन्दमें रहते तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ए जीवनदास लीलामें श्रीयमुनाजीकी सखी हैं. तहां 'इश्वरी' इनको नाम है. सिंहनन्दमें एक क्षत्रीके घर जन्मे. बड़े भये बरस बीस अठाराके. तब जीवनदासको पिता सिंहनन्द तें दिल्लीकों आयो. सो दिल्लीमें दलालो करन लाग्यो. सो जीवनदासकों राग रङ्गको इस्क बहोत, सो जो कछू कमाय सो वेश्या भवैयाकों दे नाच देखे. पिता कमाइ जामें खाई. सो यह बात पिताने सुनी तब जीवनदासके ऊपर बहोत खीज्यो. जो तू आज पाछे नाच तमासेमें मत जईयो. तब जीवनदासने कही, जो अब न आऊंगो. पाछे इनसों तो राग रङ्ग सुने बिना रह्यो न जाई. सो पितासों छिपाईके जाई. तब पिताने फेरि सुनी. तब जीवनदास पर बहोत खीजके कह्यो, तू दिल्ली ते सिंहनन्द जा. सहरमें तेरो काम नांही है. तब दोई रुपैया जीवनदासकों पिताने दिये. और

कहे कछूक दिन सिंहनन्दमें रहि अपने घरमें. पाछे मेरे पास अईयो. तब जीवनदास दोई रुपैया ले सिंहनन्द चले. सो मार्गमें विचार किये. मोको राग रङ्ग बिना तो रह्यो न जाइगो. और सिंहनन्दमें सगरे लोग पहिचानिके, ताते वहां सुन्यो देख्यो न जाई. और पिता घर पठायो. यह विचार करत मार्गमें ठाड़े व्हे रह्यो. सो दोई घरी बीत गई ठाड़े ही. इतने एक भवैयाको सङ्ग आयो. सो आगरे जात हतो. सो वह सङ्ग देखिके जीवनदासने पूछी तुम कौन हो, कहां ते आये हो, कहां जाओगे ? तब उनने कही, हम भवैया हैं, पश्चिम तें आये हैं आगरेमें जायंगे. तब जीवनदासने विचारी, आगरा बड़ो सहर बतावत हैं, सो देखों, घर जाय कहा करूगो ? सो जीवनदास उन भवैयाके सङ्ग आगरे आये. आगरेमें कपराकी दलाली करें, तामें खानपान करें. जा अधकी कमाई तामें राग रङ्ग सुनि आवें. या प्रकार तीन बरस रहे. सो पिताने जानी, जो पुत्र कहूं मार्गमें मार्यो गयो. के कोई और देस निकरि गयो. राग रङ्गको इस्क बूरो होत है सो गयो. यह विचारि, रोयके बैठि रह्यो.

यहां आगरेमें एक समय ठग आछे कपरा पहिरके आये. सो जीवददाससों कही, जो हमको आछे - आछे कपरा लेने हैं. सो जीवनदास एक बजाजकी हाट तें रुपैया सौको माल लायो. तब वा ठग बातनमें लगाई, सांझ पारी. जीवनदाससों कह्यो, जो सबेरे तुमकों जो राखेंगे ताके दाम देइंगे. सो तुम भोर ही आई जैयो. सो जीवनदास वा ठगको ऊपरको वैभव गेहना कपरा देखि जाने, जो ये भले मनुष्य हैं. सो जीवनदास रात्रिकों राग रङ्ग सुनवे गये. यहां ठग सगरे कपरा ले चले गये. सो भोर भये आयके देखें तो कोई नाहीं. लोगनसूं पूछे. तब लोगनने कही, उह तो ठग हते. दस पांचको सीधो सामग्री हू ले गये. तब जीवनदास वह बजाज पास जाई कह्यो, तिहारो माल या प्रकार सगरो गयो. तब वह बजाजने जीवनदासकों बन्दीखाने दिये. सो तीन दिन बीते, अन्न जल बिना, तब जीवनदासने उह बजाजसूं कह्यो, अब मेरे प्रान तो निश्चय जायेंगे. तातें एक काम तुम करो. मेरे पिता दिल्लीमें दलाली करत हैं, वाकों मैं लिखूंगो. और सिंहनन्दमें मेरो घर है, तहां लिखूंगो. सो तिहारो सौ रुपैया उपाय करि भरि देउंगो. तातें तुम मोकों यमुना स्नान करावो. काहे तें, हमारे गाममें श्रीवल्लभाचार्यजीके सेवक सब वैष्णव आपुसमें बात करत हते, जो श्रीयमुनाजीमें नाहेतें, पान कियेतें, सगरो दुःख जात हैं. नौतम देह होत हैं. तातें वैष्णव झूठ न बोले. सो तुम मोकों जमुनाजी नाह्यवे देऊ, तो तिहारे रुपैयाको विचार कछू करूं. तब वह बजाजके मनमें दया आई, सो कह्यो, हम घरमें न्हवाई दे जमुना जलसों. तातें खान पान करो. तब जीवनदासने कही, जा बडो पुन्य धारा न्हायेको है. सो जो मोकों जमुनाजी न्हान देंगे ता आछो है. नाहिं तो मैं जल हूं न लेऊंगो. मेरो कण्ठ सूखत है, सो आजकलमें प्राण जांईगे. तब हत्या तिहरे ऊपर लगेगी. तब वह बजाज चार मनुष्य सङ्ग दिये, जो इनकों हाथि बांधिके जमना न्हवाई लाओ. कहूं यह डूबि न मरे. तातें गाढ़ो पकरे रहीयो. तब चारों मनुष्य दो हाथि बांधिके श्रीयमुनाजीके तीर ले गये,

जीबनदासकों न्हवाये. तहां श्रीआचार्यजी सन्ध्यावन्दन करत हते. वैष्णव दस बीस गावत हते. ता समय श्रीआचार्यजीकी द्दष्टि जीवनदास पर परी. तब श्रीआचार्यजी जीवनदासकों देखि कहें, यह कौन है ? याको हाथ बांधे चार मनुष्य पकरे हैं, यहां लावो. तब सगरे वैष्णव जाय उन चारों मनुष्यनकों समुजाये. सो जीवनदासकों पकरे मनुष्य, श्रीअचार्यजीके पास आये. तब श्रीआचार्यजी कहे, जीवनदास राग रङ्ग और देखे, सुनेगो ? तब जीवनदासने कही, महाराज ! यह राग रङ्गको फल भोगत हों, पिताको कह्यो न मान्यो सो भोगनो (पर्यो). तब श्रीआचार्यजी कृष्णदासकों कहे यह जीवनदासकों सौ रुपैंया कहूंसों दिवाय, हमारे नाम लिखके याकों छुडाय लाऊ. यह सुनत ही गांवके दस बीस वैष्णव बिनती करी. महाराज ! इतनेके लिये कृष्णदासकों आप काहेकों पठावत हों ? हम छुड़ाय लावेंगे. तब श्रीआचार्यजी कहे, बेगे, याकों छुड़ायके लाओ. तब वैष्णव जीवनदासको सङ्ग लाई वह बजाजकों कहे, जीवनदासकों छोड़ि देऊ, रुपैया सौ हमसों लेऊ. (पाछे) सौ रुपैया दे जीवनदासकूं श्रीआचार्यजी पास लाये. तब श्रीआचार्यजीकों दण्डवत् करि, जीवनदासने बिनती करी, महाराज ! यह लौकिक बन्दीखाने ते आप छुड़ाये. तो आय तहां संसार रूपी बन्दीखानेमें ते माकों छुड़ाओ. और धन्य श्रीयमुनाजी हैं, और धन्य तिहारे वैष्णव हैं. सो सिंहनन्दमें एक दिन अपने घरके कार्य हों वैष्णवनके पास गयो हतो. सो वैष्णव आपसमें कहत हते. जो यमुनाजीके न्हाये सब दुःख जाय, नौतन सरीर होय. सो सत्य कहे. मैं अब ही न्हायो, यह लौकिक दुःख गयो. और संसारको दुःख हू आपकी कृपातें जायगो. आप सेवक करोगे तब नौतन सरीर हू होई जायगो. तातें तिहारे वैष्णव धन्य हैं. एक क्षणमें सङ्ग कियो ताकें फलको पार नाहीं है. तब श्रीआचार्यजी कहे, श्रीयमुनाजी न्हाय आव. तब जीवनदास श्रीयमुनाजी न्हायके श्रीआचार्यजीके पास आये. तब श्रीआचार्यजी जीवनदासकों नाम सुनाय, ब्रह्मसम्बन्ध कराये. पाछे आप कहे, तू हमारे सङ्ग चलि, हम सिंहनन्द ताकों पहोंचावेंगे. यहां रहेगो तो कछू दुःसङ्ग लगो तो फिर बिगरेगो. पाछे श्रीआचार्यजी वैष्णवनके घर पधारे, रसोई करि भोगि धरे. पाछे भोजन करि जूठनकी पातर जीवनदासकों धरे. जीवनदास चोथे दिन महाप्रसाद लिये, सो देह उत्तम होय गई. पाछे श्रीआचार्यजी आगरेसूं जीवनदासकों सङ्ग ले पधारे, सो थानेश्वर आये. तब एक वैष्णवकों सिंहनन्द पठाये, और कहे, जीवनदासके घर कहियो, जो जीवनदास आयो है. तब वह वैष्णव सिंहनन्द जाई जीवनदासके पितासूं कह्यो. तिहारो पुत्र श्रीआचार्यजीके सङ्ग थानेश्वर आयो है. तब जीवनदासको पिता प्रसन्न होईके सिंहनन्द तें दोरयो आयो, सो जीवनदासकों थानेश्वरमें मिल्यो. सो रोइके छाती सो लगायो, और कह्यो पुत्र तूं कहां गयो हतो, हम तो जान्यो कहूं मरि गयो. तब जीवनदासने सगरी बात कहीं. या प्रकार श्रीआचार्यजी माकों बन्दीखानेसों छुडाइ सङ्ग लियो, कृपा करी. परन्तु अब तुम घरमें जई मेरी स्त्री, माता सबकों इहां ले आवो. तुम सगरे श्रीआचार्यजीके सेवक होऊ, तो मैं घरमें जाऊं. नाहीं तो मैं घरमें न रहूंगो. तब पिताने कही, मैं सबकों लिवाइ लाऊंगो, तू कहेगो सो करूंगो. तब जीवनदासको पिता सिंहनन्दमें जाई सबकों थानेश्वर ले आयो. श्रीआचार्यजीसों बिनती करी, महाराज ! जीवनदासके प्राण राखे. यह हम पर

बड़ो उपकार किये. अब हम सगरे आपकी सरन हैं. नाम सुनाइये. तब श्रीआचार्यजीने नाम सुनायो. तब जीवनदासने श्रीआचार्यजीसूं बिनती करी, महाराज ! सबनको ब्रह्मसम्बन्ध होई तो आछो. तब श्रीआचार्यजी कहैं, ये ब्रह्मसम्बन्धके अधिकारी नाहीं. इनको नाम ही ते उद्धार होईगो. पाछे जीवनदासने कही, महाराज ! अब मोकों कहा आज्ञा है ? तब श्रीआचार्यजीने श्रीनवनीतप्रियजीके प्रसादी वस्त्र जीवनदासके माथे सेवार्थ पधराई कहें, अब तुम घरमें रहि भगवद् सेवा करो. तब जीवनदास पिता, माता, स्त्री सहित श्रीआचार्यजीकों दण्डवत् करि, बिदा होई सिंहनन्दमें आये. तब जीवनदासने माता पिताके आगे कही, जो रुपैया आपु दे बन्दीखाने तें मोकों छुड़ाये ऐसे दयाल श्रीआचार्यजी हैं. तब माता, पिताने कही, गुरुको ऋण माथे नांहीं राखनों. सो सगरे गहने, कपड़ा बेचे, सो एक सौ दस रुपैया आये. तब पिताने जीवनदाससों कह्यो, यह रुपैया सगरे जीवनदास श्रीआचार्यजीकों दे आऊ. गुरुको ऋण माथे आछो नाहीं. तब जीवनदास एक सौ दस रुपैया ले श्रीआचार्यजीके आगे जाई धरे. तब श्रीआचार्यजी कहें, यह तुम इतनो सङ्कोच काहेको कियो ? तुम तो हमारे हो. हम प्रसन्न हैं ताते तुमकों कछू बाधक न हतो. तब जीवनदासने कही, महाराज ! हम कहा लायक हैं. आप जो उपकार कियो है, सो रोम - रोम सब आपके देनहार हैं. आप जहां बेचोगे तहां बिकेंगे. बिना मोलके गुलाम हैं. संसार रूप नर्क भोगत हैं. सो आप छुड़ाये. बिनती दैन्यता सुनि बहोत प्रसन्न होइ श्रीआचार्यजी कहैं, जीवनदास ! अब तुमकों संसारके दुःख सुख कछू बाधा न करेंगे. और जो तुम मनमें धारोगे सो मनोरथ तिहारे पूरण होंइगे. अब घर जाई भगवत् सेवा करो. तब जीवनदास दण्डवत् करि घर आये. पाछे श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमाकों पधारे. जीवनदास प्रीतिसों सेवा करते. वैष्णवको स्नेह पूर्वक सत्सङ्ग करते. सो श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो एक समें सिंहनन्दके वैष्णव सब मिलिकें अड़ेल श्रीआचार्यजीके दरसनकों आवत हे. तामें जीवनदास हू हते. सो एक दिन मार्गमें मजल उतरि अपनो - अपनो चौका दे सगरे वैष्णव रसोई करत हते, ता समें मेह चढ़ि आयो. चारों ओर तें घटा आई. सो बूंद बरसन लागी. तब सगरे वैष्णव कहें, मेह आयो, आजु रसोई होनी कठिन है. तब जीवनदास सगरे वैष्णवनसों कहे, तुम चिन्ता मति करो. तब जीवनदास मेहकी और देखिके कहें, तोकूं श्रीआचार्यजीकी आन है, जो अबही मति बरसे. सो मेह रहि गयो. पाछे सगरे वैष्णव रसोई करि, श्रीठाकुरजीकों भोग धरि महाप्रसाद ले, अपने ठिकाने जाइ सोये. तब जीवनदासने कही अब आन छूटी. तेरे मन आवे तितनो बरसियो, तब बरस्यो. तब सगरे वैष्णव चक्रत होइ रहै, जो जीवनदासमें भगवद् सामर्थ्य है. पाछे सगरे वैष्णव अड़ेलमें आइके श्रीआचार्यजीके दरसन करि दण्डवत् किये. श्रीआचार्यजी सबको समाधान किये. तब एक वैष्णवनें श्रीआचार्यजीसों कही, महाराज !

मार्गमें एक दिन रसोई करत मेह आयो, सो जीवनदासने आपुकी आन दिवाई सो तत्काल मेह रहि गयो. तब श्रीआचार्यजी जीवनदाससों कहै, तू मेरी आन दिवायो हतो और मेह बरसतो तो तू कहा करतो ? तब जीवनदासने कही, महाराज ! ऐसो ऊह कौन हैं, जो आपकी आन दिवाए पाछे बरसे ? इन्द्र सहित धरती पर डारि देंऊ. आपके प्रताप तें. तब श्रीआचार्यजी चुप होइ रहे. सो जीवनदास ऐसे टेकके कृपापात्र भगवदीय हे. इनकी वार्ता कहां तांई कहिये. ...वार्ता ।।५१।।

भावप्रकाश : तहां यह सन्देह होई, जो जीवनदास तो भगवदीय कृपापात्र हे. अपनी आन क्यों न दिवाई ? श्रीआचार्यजीकी क्यों दिवाई ? तहां कहत हैं, जो जीवनदास अपनी आन देते तोऊ ना बरसतो. परन्तु जीवनदासकों अपनो माहात्म्य प्रगट करनो भावत नाहीं. सो यातें, जो बहोत माहात्म्य बढ़े, सो कबहूं अहङ्कार आवे. सो बिगार ही होई. तातें श्रीआचार्यजी अप्रसन्न होई. जो तुच्छ कार्यमें श्रीठाकुरजीकूं श्रम कराये. तातें जीवनदासमें हृदय पुष्टिमारगकी रीति जानत हैं. तातें श्रीआचार्यजीको माहात्म्य वैष्णवकों दिखाये. .... ।।वैष्णव ५१।।

५९-भगवानदास सारस्वत

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, भगवानदास सारस्वत ब्राह्मण हाजीपुरके, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ये लीलामें विसाखाजीकी सखी हैं. लीलामें इनको नाम 'सुगन्धिनी' है. सो हाजीपुरमें एक सारस्वत ब्राह्मणके घर जन्मे. सो पटनामें एक यजमानके घर गये. तहां कछुक दिन रहे. ता समय भगवानदास वर्ष सतरहके हते. सो उह यजमानकी बहोत टहल करि पाछे चलन लागे तब यह यजमान पावलीके टका देन लाग्यो. तब भगवानदास क्रोध करके कहैं, मोकों नांहीं चाहिए. तू लखपति होयके मोकों इतने दिन राखिके यह दक्षणा दियो ? मेरे कछू न चहिये. सो पावली छोड़ि घरकों चले आये. पिताके आगे रुदन कियो, जो हम ऐसे ब्राह्मण ठाकुरने क्यों किये ? दो पैसाके लिये राजसी लोगनकी चाकरी करें, मुख देखें. यह बड़े पापको फल है. तब पिताने कही, मैं परदेस जात हूं. सो पूरब तें कमायके आऊंगो. सो भगवानदासने कही, तुम वृद्ध हो मति जाओ, मैं जाऊंगो. सो भगवानदास पटनाके आगे चले. सो श्रीआचार्यजी कासी तें पुरुषोत्तम क्षेत्र पधारत हते. सो मारगमें भगवानदासकों

दरसन भयो. तब भगवानदासने कही, भलो, मोकों पण्डित ब्राह्मणको मारगमें सङ्ग तो आछो भयो. सो श्रीआचार्यजी श्रीमुखकी वार्ता वैष्णवनसों कहैं, सो पाछे सुनत जाय. पाछे मजलि पर उतरे तब श्रीआचार्यजी भगवानदासों कहैं, जाउ, कृष्णदाससों चहिये सो सीधो लेउ. और कृष्णदाससों कहैं, जो अपनो नित्यको सीधो लये, पाछे ब्राह्मण जो मांगे सो दीजो. सो कृष्णदास भगवानदासकों सङ्ग ले गये. अपनो सीधा सामग्री ले कहैं, तुमकों चहिये सो लेऊ. तब भगवानदास कहें, सेर खांड, सेर घी और दो सेर चून. सो लोभके मारे दिन होय तीनको सीधो ले आये. थोरों सो किये और पास राखे. या प्रकार तीन दिनलों मांगे, सो कृष्णदासने दियो. तब चौथे दिन कृष्णदाससों कहे, मोकों कछु काम टहल बताओ. पानी लाऊं, वासन मांजों. तब कृष्णदास कहें, तुम श्रीआचार्यजीके सेवक नाहीं हो तातें तिहारे हाथको पानी काम न आवे. और पात्रहू छुवायो न जाय. तब भगवानदास श्रीआचार्यजीसों पूछें, महाराज ! आपको जल शूद्र लावत है, वासन मांजत है सो मैं ब्राह्मण हूं मोसों क्यों न करावत ? तब श्रीआचार्यजी कहें, हमारे मतमें भगवानकों जो कोई न जाने सो शूद्र तें हू गयो वीत्यो. और भगवानकों जो जानें, सोई सर्वोपरि ब्राह्मण, इतनो भेद है. तातें ओरसूं नाहीं करावत. तब भगवानदासने कही, महाराज ! यह कैसे जानिये, वैष्णव भगवानकों जानत हैं ? तब श्रीआचार्यजी कहैं, श्रीठाकुरजी कृपा करें तब जान्यो जाय. तब भगवानदासने कही कृपा कौन प्रकार करें ? तब श्रीआचार्यजी कहैं, गुरु प्रसन्न होय तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न भये जानिये. तब भगवानदासने कही, मेरे तो गुरु कोई नाहीं है. आपही मोकों सेवक करो. तब श्रीआचार्यजी कहैं, सेवक होनो बहोत कठिन है. तुम ब्राह्मण अपनो माहात्म्य मानो. और सेवक भये तो दास होनो पड़े, ताते सेवक मति होऊ. तब भगवानदास कहें, अब तो हों दास होऊंगो. स्वामी पद बहोत दिन कियो, तामें दुःख ही पायो. सो अब मोकों सेवक करो. तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाय, पानी भराये, पात्र मंजाये, चौका दिवाये. पाछे जूठनकी पातर धरे. सो महाप्रसाद भगवानदास लिये. तब बुद्धि फिरी. जो मैं इनको सीधा तीन दिन लोभ करिके खायो, सो बहोत बुरी करी. पाछे गांठिमें पांच रुपैया हते, सो श्रीआचार्यजीकी भेट धरि बिनती किये, महाराज ! हम आपको सीधो समाग्री खायो लोभ करिके, सो आछी न करी. परन्तु हम अज्ञानी हैं, आपको स्वरूप नाहीं जान्यो, सो अपराध क्षमा करिये. आप साक्षात् ईश्वर हैं. अब मोकों ब्रह्मसम्बन्ध करावो. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप कहैं, काल्हि तुमकों समरपण करावेंगे. और ये रुपैया पांच तू अपने पास राखि, खरचके, तेरे काम आवेंगे. तब भगवानदासने बिनती करी, जो महाराज ! यह आपकी भेट करि चुक्यो. अब मैं कैसे राखूं ? तब श्रीआचार्यजी राखें. पाछे दूसरे दिन ब्रह्मसम्बन्ध करायो.

पाछे भगवानदास एक वर्ष श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सङ्ग रहि टहल करी. उष्णकालमें पंखा बड़ो बनाय मारगमें छाया करते. जहां आप पोढ़ते तहां

सुन्दर बिछौना धरती सूधी करि बिछावते, रसोईकी परचागरी करते. सो श्रीआचार्यजी प्रसन्न होयके अपनी पादुकाकी सेवा दीनी. और कहें, तुम इनकी सेवा नीकी भांतिसूं करियो. अब तुम घर जाऊ. तब भगवानदासने कही, मेरे घर पधारो तो आप कुटुम्बकों सरन लीजिये. तब श्रीआचार्यजी कहें, तेरे कुटुम्बी दैवी जीव नाहीं हैं, सो सरनि न होंयंगे. और सेवा तू ही करेगो. तब भगवानदास दण्डवत् करि बिनती करि बिदा होई, हाजीपुर अपने गाममें आये. सो न्यारी ठौर घरमें करि सेवा मन लगाय करन लागे. सो कछुक दिनमें श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे.

पाछे कछू दिनमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु भगवानदासके घर पधारे, पाक सामग्री करि भोजन किये. भगवानदासकों जूठिनकी पातर धरी. भगवानदासके मा - बापकों, स्त्रीकों नाम सुनायो. पाछे आप अड़ेलकों पधारे. सो जो ठिकाने श्रीआचार्यजीमहाप्रभु बिराजत हते, तहां भगवानदास चौंतरी करि नित्य पोतना करते. नित्य सवेरे न्हायके दण्डवत् करते. यह भाव जानते (जो) यहां साक्षात् श्रीआचार्यजी बिराजे हैं. सो भगवानदासकों दरसन देते, वार्ता करते. सो भगवानदास ऐसे श्रीआचार्यजीके कृपापात्र हते. तिनकी वार्ता कहां तांई कहिये. ... ।।वार्ता ५२।।

६०-भगवानदास सांचौरा

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक भगवानदास सांचौरा ब्राह्मण तिनकौ वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ये लीलामें भगवानदास ललिताजीकी सखी है. इनको नाम लीलामें 'सुन्दरी' है. सो गुजरातमें राजनगरके पास एक गांव है. तहां एक सांचोराके घर जन्में. सो वर्ष आठके भये. तब राजनगरमें एक पण्डित पास पढ़न जाते सो वर्ष १० में विद्या पढ़े. तब वह पण्डित श्रीरणछोड़जीके दरसनकों आयो. ताके सङ्ग भगवानदास आप श्रीरणछोड़जीके दरसनकों आये. तहां श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप पधारें. तब वह पण्डित श्रीआचार्यजीसूं वाद करन आयो, सो वाद करनमें उह पण्डित हार्यो. सो आपुनें डेरा गयो. पाछे भगवानदाससों वह पण्डितनें कही, मैं कासी जाय फेरि और पढ़िके वाद श्रीआचार्यजीसों करूंगो. तू मेरे सङ्ग चलि. तब भगवानदासने उह पण्डितसों कह्यो, मोकों तो श्रीरणछोड़जीके दरसन करने हैं. अबहि काल्हि आयो, आजु कैसे चलूं ? एक

महिना तो दरसन करूं. तब पण्डितने कही, मैं तो जात हों फेरि कबहूं मिलेंगे. सो पण्डित तो कासीकों आयो. भगवानदास श्रीआचार्यजीके पास आय दण्डवत् करि बिनती किये. जो महाराज ! वह पण्डित वाद करतमें निरुत्तर भयो. सो लाज पायके कासी उठि गो. मैं वाके पास पढ़त हो. सो अब आप मोकों पढ़वोगे ? तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप कहें, तुम बहोत पढ़िके कहा करोगे ? तब भगवानदासनें कही, महाराज ! बहोत पढ्यो होऊ तों बहोत द्रव्य कमाऊं. जहां तहां पण्डितनकी सभामें आदर होय. जो कोई चर्चा शास्त्रकी करें तासों वाद करूं, संसारमें पूजा होय. तब श्रीआचार्यजी कहें, विद्या पढ़िके दोय फल होत हैं. विद्या पढ़े शास्त्र बांचे. तब शास्त्र हैं सो सीतल जल रूप दोऊ सुन्दर भीतरके नेत्र हैं, सो खुले सब वस्तू ज्ञान होई. परन्तु सत् पुरुषकों ज्ञान होई. सीतल जलवत्, शान्त चित्त होय जाय. दुःख सुखकों भगवद् इच्छा जानें. जगतसें जीव मात्रमें भगवद् बुद्धि होय. सो दैन्यता सन्तोष निर्मलता क्रोधादिक रहित होय. भगवानके आश्रित होय तो वाको पढ़नो सुफल है, याहू लोकमें और परलोकमें सुख पावे. और आछो पात्र विद्या पढ़े, तब वह विद्या वाकों अग्नि रूप होय. एक तो काम क्रोध, मद, मत्सर्यमें लपट्यो हतो ता पर विद्या पढेको मद और बढ़े. सो काहूकों जगतमें गिने नाहीं. रात्र दिन अहङ्कार रूपी अग्निमें जर्यो करे. सो यह लोकमें जीव दुःखी रहे, परलोकमें नर्ककों पावे. यातें तुम बहोत शास्त्र पढ़ो मति. जो पढ़े सोई बहोत है. और द्रव्यादिक है सो भाग्य तें मिलत है. पण्डित बड़े राजसी मूर्खनकीं चाकरी करत हैं. तातें सन्तोष दया राखें. काम, क्रोध, लोभादिक मोहकों छोड़ि, श्रीठाकुरजीको भजन करो. जीविका भगवान् बिचारे है, सो भगवद् इच्छातें भागि प्रमाण मिली रहेगी. या प्रकार सिद्धान्त रूप श्रीआचार्यजीके बचन सुनिके भगवानदासके हृदयमें भगवतधर्म प्रवेस भयो. सो श्रीआचार्यजीकों दण्डवत् करि बिनती किये, महाराज ! अब मेरे मनको सन्दह सगरो दूरि व्हे गयो. सबमें भगवद् भजन श्रेष्ठ हैं. तातें अब मोकों कृपा करिके सरन लेहू. जा प्रकार आप बतावो ता प्रकार भगवद् भजन करूं. तब श्रीआचार्यजी कहैं, जा न्हाय आव. तब भगवानदास न्हायके श्रीआचार्यजीके पास आये. तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाय निवेदन करवायो. तब भगवानदासने कही, महाराज ! मेरो मन आपके पास रहिके आपकी सेवा करनको है. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कहैं, हमारे पास तुमसों रह्यो न जायगो. अनेक अपराध जीवसों होत हैं. सो कबहू अप्रसन्नता होय तो तोकों भगवद् प्राप्तिमें अन्तराय होय. और ये वैष्णव हैं, सो हमारे स्वभावकों जानि रहे हैं. ये हमारे पास रहिवे लायक हैं. तातें तुम घर जाव. वैष्णवकों सङ्ग कछुक दिन करो. पाछें गोवर्द्धन परवत पर श्रीगोवर्द्धननाथजी प्रगट होयंगे. सो तुम तहां जाय श्रीगुसांईजीकी आज्ञा प्रमान सेवा करियो. तिहारो सगरो मनोरथ श्रीगुसांईजी पूर्ण करेंगे. पाछे आप ब्रह्मसम्बन्धकों श्लोक, अष्टाक्षर लिखिके दिये, और कहे रसोई करि, इनकों भोग धरि निर्वाह करियो. तब भगवानदासने बिनती करी, महाराज ! आप जहां तांई बिराजो यहां, तहां तांई तो आपकी सेवा करूं. तब श्रीआचार्यजी भगवानदासके उपर बहोत प्रसन्न होयके 'चतुःश्लोकी' आप किये हे सो भगवानदासकों पढ़ाये. और कहैं, पहले तेरो मन पढ़िवेमें रह्यो सो अब तोकों वेद पुरान भागवत् सबको

अर्थ फुरेगो. मैं प्रसन्न भयो, अब तुम घरकों जाऊ. तब भगवानदास दण्डवत् करि घरकों चले. श्रीआचार्यजी परिक्रमाकों पधारें. सो भगवानदास बहोत दिनलों घरमें रहै. पाछे कछुक दिन पाछे भगवानदासकी स्त्रीकी देह छूटी. तब भगवानदास मनमें प्रसन्न भये. जो अब घरको बन्धन छूट्यो, अब ब्रज जाऊंगो. सो कछुक दिनमें वैष्णवके मुखसों सुनी, जो गिरिराज पर श्रीगोवर्द्धनधर बिराजे हैं. श्रीगुसांईजी सेवा शृङ्गार करत हैं. तब भगवानदास घरकी वस्तू सब बेचि घर एक ज्ञातिको ब्राह्मण हतो ताकों दिये. मा बाप सङ्ग तो कोई हतो नाहीं. पाछे चले सो कछुक दिनमें गिरिराज पर आई, श्रीनाथजीको दरसन कियो. पाछे श्रीगुसांईजीके दरसन करि, दण्डवत् करि बिनती किये, महाराज ! या प्रकार मोकों श्रीआचार्यजी सरन लिये. यह आज्ञा हती, सो आप पास जैयो. सो मैं तिहारे पास आयो हूं. घरको कछू बन्धन माकों है नाहीं. सो मोकों सेवा कृपा करिके बताईयो. तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न होयके कहैं, तुम श्रीनाथजीके भीतरिया दोऊ, रसोई बालभोगकी सेवा करो. तब भगवानदास सुन्दर सामग्री करते.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो एक दिन भगवानदासने सामग्री करी सो दाझी, सो बिगरी भोग धरे. सो जब श्रीगुसांईजी भोग सरायवे पधारे तब बिगरी सामग्री देखि भगवानदासके उपर बहोत खीजे. सो सेवा तें बाहिर किये. तब भगवानदास एक कौनेमें बैठि रुदन करन लागे. जो मैं अब कहा करूं ?

भावप्रकाश : सो श्रीगुसांईजी यातें खीजे, जो सामग्री बिगरी गई तो दूसरी करते. बिगरी वस्तू प्रभुकों क्यों भोग धरे ? करिवेको आलस्य कियो. हमसों कहतो तो हम करते. और भीतरियातें कराय लेते. यह विचारिके भगवानदास पर खीचे.

पाछें भगवानदास गोविन्दकुण्ड ऊपर अच्युतदास पास आये. सब समाचार कहे, जो अब मैं कहा करूं ? मोकों सेवा तें बाहिर किये. तब अच्युतदासने कही, सामग्री सावधानीसों करियो. अब तुम चिन्ता मति करो, श्रीगुसांईजी परम दयाल हैं. फेरि तुमकों सेवा देइंगे. सो गोविन्दकुण्ड पै जाय बैठो. पाछे श्रीगुसांईजी गोविन्दकुण्ड पर मध्यान्हकी सन्ध्या करन नित्य पधारते. और अच्युतदास वृद्ध हते. मानसी सेवामें मग्न रहत हते, तिनकों नित्य दरसन देवेकूं पधारते. सो गोविन्द कुण्ड पे सन्ध्या करि अच्युतदासके पास श्रीगुसांईजी पधारे सो अच्युतदासके नेत्रनसों जल बहोत बहत है. सो देखिके श्रीगुसांईजी अच्युतदाससों कहैं, तुमकूं ऐसो बड़ो दुःख कहा है ? तब

अच्युतदासने श्रीगुसांईजीसों कही, महाराज ! श्रीआचार्यजीनें जीवनकों तुमकों सोंपे हैं. सो आपको बहोत जीव अङ्गीकार करनो है. जीव तो दोषसों भरे हैं. सो आप अभी तें जीवको दोष देखन लागे, सो जीवको उद्धार अब कैसे होयगो ? और जब श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों ब्रह्मसम्बन्धकी आज्ञा दीने, तब कहें, जाकों तुम ब्रह्मसम्बन्ध करावोगे ताके सकल दोष दूरि होंइगे. आप दोष देखन लागे, सो मोकों बड़ो दुःख है. जो अब जीवको कौन प्रकार उद्धार होइगो ? तब श्रीगुसांईजी अच्युतदाससों कहैं, तुम चिन्ता मति करो. मैं भगवानदासकों सिक्षा दीनी है. और यह बात तुम द्वारा श्रीआचार्यजीने मासों कही है. तातें आज पाछें कोई वैष्णव पर न खीजोंगो. तब अच्युतदास प्रसन्न भये. तब श्रीगुसांईजी गोविन्दकुण्ड तें भगवानदासकी बांह पकरिके श्रीनाथजीके मन्दिरमें ले गये. कहे सेवा सामग्री सावधानी तें करियो. तब भगवानदास प्रसन्न होयके यह कीर्तन गायो -

श्रीविटठलेश चरन कमल पावन त्रैलोक्य करन दरस परस सुन्दर बार बार वन्दे ।
समरथ गिरिराज धरन लीला निज प्रगट करन सन्तन हित मानुष तन वृन्दावन चन्दे ।।१।।
चरणोदक लेत प्रेत ततछन तें मुक्त भये करुणामय नाथ सदा आनन्द निधि कन्दे ।
वारने 'भगवानदास' विहरत सदा रसिक जै जै जसु बोलि बोलि गावत श्रुति छन्दे ।।२।।

यह कीर्तन सुनिके श्रीगुसांईजी प्रसन्न भये. ता पाछे भगवानदास सेवामें मन लगायके भय संयुक्त करन लागे. सो कछुक दिनमें श्रीनाथजी सानुभावता जनावन लागे. सो भगवानदास ऐसे श्रीआचार्यजीके कृपापात्र भगवदीय है. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिये. ....वार्ता ।।५३।।

६१-अच्युतदास सनोढ़िया

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, अच्युतदास सनोढ़िया ब्राह्मण, मथुराके वासी तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ये अच्युतदास लीलामें ललिताजीकी सखी है. 'मधुरा' इनकों नाम लीलामें है. ए ऐसो बचन बोलत हैं, मानो अमृत श्रयो. सबकों प्रिय है. सो अच्युतदास मथुरामें एक सनोढ़िया ब्राह्मणके घर जन्में. सो वर्ष नौके भये तब पिता माताके सङ्ग दिवारीमें गोवर्द्धनकी परिक्रमा करन आयो. सो अच्युतदासको गिरिराजकी सोभा देखि मन लागि गयो. तब मा बापसों कहे. मैं तो गोवर्द्धनमें रहोंगो. तब पिताने कह्यो, क्यों बेटा वैरागी होनको मन है ? तब अच्युतदासने कही, मैं तो वैरागी हूं. मेरो ब्याह तो भयो ही नाहीं. परन्तु मेरे सगे सम्बन्धी आन्योरमें हैं, तहां कछुक दिन रहूंगो. गोवर्द्धनकी दस बीस परिक्रमा दे मन होयगो तब आऊंगो तब मा बाप सगे सम्बन्धीकों सोंपीके मथुरामें आये.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो अच्युतदास आन्योरमें रहते. कबहूं परासोली, कबहूं श्रीकुण्ड, कबहूं श्रीगोवर्द्धन, या प्रकारसों रहते. पाछे श्रीआचार्यजी श्रीगोवर्द्धनकी तरहटी पधारे. तब आन्योरमें सदू पाण्डेकों घर सहित सेवक किये, श्रीगोवर्द्धनधरकों परबतके भीतर तें बाहिर पधराये. तब अच्युतदासको दैवी जीव जानि नाम निवेदन कराय कहें, तुम श्रीगोवर्द्धनधरकी सेवा करो. तब अच्युतदास श्रीआचार्यजीकों दण्डवत् करि बिनती कियो, महराज ! मोपर ऐसी कृपा करो, जो एकान्त बैठिके मानसी सेवामें मन लागे. तब श्रीआचार्यजी अपनो चरणामृत दिये. सो अच्युतदास पान करि, हाथ नेत्रनसों लगाय, मस्तक पर लगाय, हृदयसों लगायो. तब अच्युतदासके नेत्र अलौकिक व्है गये. लीलाको दरसन करन लागे. मस्तक पर धरे.

भावप्रकाश : सो जैसे मर्यादा मार्गमें गङ्गाजी मस्तक पर महादेवजी धरि भक्तराज भये. तैसे अच्युतदास माथे पर श्रीआचार्यजीको चरणोदक धरि, ताकी छायामें सदां रहें. हृदयके लगाये सगरी लीला, मार्गको सिद्धान्त, हृदयारूढ़ भयो. तब श्रीआचार्यजीने 'सिद्धान्तमुक्तावली' करि पढ़ाये. ताकरि मानसी सेवामें मग्न भये. सदा गोविन्दकुण्डके पास गुफामें रहते. नेत्र प्रेम रससों भरे रहते. सो श्रीगुसांईजी नित्य दरसन देवे पधारते, उपर यह भाव मर्यादा राखन अर्थ. परन्तु श्रीगुसांईजी दरसन करवे आवते. सो यातें, श्रीगुसांईजीकों श्रीआचार्यजीको अनुभव होतो, अच्युतदासके नेत्रनमें महाप्रभुजी जलकते. तातें श्रीगुसांईजी मार्गकी रीति भांति श्रीगोवर्द्धनधरकी लीलाको भाव पूछिके बहोत प्रसन्न होते. सो अच्युतदास परमार्थी हूं ऐसे जो भगवानदासकों श्रीगुसांईजीने सेवा तें काढ़े, सो फेरि बिनती करि भगवानदासकों सेवामें अङ्गीकार कराये. सों सामग्री श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धनधरकों धरते, सो अच्युतदास गोविन्दकुण्ड पर बैठे ही तब

अनुभव करते. सो श्रीगुसांईजीसों सब कहते, आजु यह सामग्री सुन्दर भई. या प्रकार अङ्गीकार किये. यातें श्रीगुसांईजी अच्युतदास पास राजभोग धरिके नित्य पधारते. सो अच्युतदासकी वार्ताको बहोत प्रकास नाहीं किये, सो याते, जो इनकों विप्रयोग है. रस सम्बन्धी वार्ता लोगनमें प्रकास करनो नांहीं. तातें वरनन किये नाहीं. .... ।।वैष्णव ५४।।

सो अच्युतदास एसे भगवदीय हे, इनकी वार्ता कहां तांई कहिये. ....वार्ता ।।५४।।

६२-अच्युतदास गौड़

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, अच्युतदास गौड़ ब्राह्मण, महावनके वासी तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ये लीलामें विसाखाजीकी सखी अर्न्तगृहगतामें हैं, तहां इनकी प्राप्ति. लीलामें इनको नाम 'मोहनी' है. अब श्रीठाकुरजीकों देखे तब मोहि जाय, सरीरकी सुधि न रहै. सो महावनमें एक गौड़ ब्राह्मणके घर जन्में. सो जब नारायणदास ब्रह्मचारीके घर श्रीआचार्यजी पधारे तब अच्युतदासकों नाम दिये. सो वर्ष सात आठके हते. सो नारायणदास ब्रह्मचारी पास आवते जावते. सो जब वर्ष बीसके भये तब नारायणदाससों पूछे. हमको नाम सुनाये, सेवक किये, सो कहां हैं ? कहा उनको नाम हैं ? तब तो मैं बालक हतो, कछू समुजत न हतो. अब दरसन करूं तो समर्पण करूं. तब नारायणदासने कही, श्रीआचार्यजी उनको नाम है, और तीर्थराज प्रयागके पास अड़ेल गाममें बिराजत हैं. तब अच्युतदासने कही, गिरिराजकी परिक्रमा दे अड़ेल जाउंगो. सो अच्युतदासको गिरिराजकी परिक्रमामें बड़ो प्रेम हतो. महिनामें दोइ चारि जाय देते. सो अच्युतदास गिरिराजकी परिक्रमा दे अड़ेलकों चले, सो कछुक दिनमें जाय पहोंचे. श्रीआचार्यजीकों दण्डवत् करि ठाड़े रहे. तब श्रीआचार्यजी कहें, अच्युतदास तुम कहां तें आये ? तब अच्युतदासने कही, जो महाराज ! ब्रज सो आयो. तब श्रीआचार्यजी कहे ब्रजमें तुम कहा करतो ? तब अच्युतदासने कही दोय चारि परिक्रमा महिनामें गिरिराजकी करतो. और नारायणदास ब्रह्मचारि आपके वैष्णव हैं महाबनमें, तिनको सङ्ग करतो. सो मोकों आप बालपनेंमें नाम सुनाये हते. सो मैं आपको नाम जानत न हतो सो नारायणदासनें सगरो प्रकार बतायो. अब माकों समर्पन कराईये. तब श्रीआचार्यजी कहें, जो जाऊ, श्रीयमुनाजीमें स्नान करि आऊ. तब अच्युतदास श्रीयमुनाजीमें न्हायके

श्रीआचार्यजीके पास आये. तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाय ब्रह्मसम्बन्ध कराए. पाछे अच्युतदाससों कहे, तू गिरिराजकी परिक्रमा बहोत दियो, परन्तु कछू चमत्कार देखे ? तब अच्युतदासने कही, महाराज ! मैं तो कछु चमत्कार देख्यो नाहीं. तब श्रीआचार्यजी कहैं, गिरिराजकी तीनि परिक्रमा लगती करेगो तो कछू देखेगो. तब अच्युतदास श्रीआचार्यजीकों दण्डवत् करि बिदा मांगि चले. जो कब गोवर्द्धन जाय कब तीन परिक्रमा लगती करों ? या प्रकारसूं अति आतुर भये. सो कछुक दिनमें आय नारायणदाससों सगरो प्रकार कहैं, जो श्रीआचार्यजीने ब्रह्मसम्बन्ध कृपा करिकें कराये. अब तीन लगती गोवर्द्धनकी परिक्रमाकी आज्ञा करी है, सो गोवर्द्धन जात हों. सो गोवर्द्धन आय रात्र सोय रहै. तब रात्रि प्रहर एक पाछली रही तब उठि, देह कृत्य करि, मानसी गङ्गा न्हाय परिक्रमा उठाई. सो प्रहर ड़ेढ़ दिन चढ़े एक पूरी करी. दूसरी उठाई, सो घड़ी छे दिन पाछलो रह्यो तब पूरी करी. तीसरी उठाई, सो जब अपछराकुण्डके पास आये सो हारि गये. भूखे, रात्र घरी एक गई. तब ग्वारिया अच्युतदास पास आय कह्यो, वैरागी तूं कहां आगे जात है, सिंह बैठ्यो है, सो पाछे फिर. तब अच्युतदासने कही, पाछे कैसे फिरूं ? श्रीआचार्यजीके बचन है, जो लगती तीन परिक्रमा करियो. सो पाछे न फिरोंगो. तब ग्वारिया अन्तरधान व्हे गयो. तब अच्युतदास आगे चले. सो देखें तो मार्गके बीचों बीच नाहर ठाड़ो है. तब बिचार किये, जो परिक्रमा छोड़नी नाहीं. नाहर खाय तो खाउ. सो धीरज धरि सिंहके पास जता ही देखे तो सुन्दर गाय ठाड़ी हैं. तब गायकी परिक्रमा पूंछ माथे चढ़ाय पाछे आगे चलें. प्रहर एक रात्र गये परिक्रमा पूरी करी. पाछे महाबनमें आयके नारायणदाससों कहे, जो ग्वारिया देख्यो, याको कारण कहा ? तब नारायणदासने कही, जो यह अभिप्राय तो श्रीआचार्यजी जाने. तब अच्युतदास अड़ेल फेरि चले. सो कछुक दिन पाछे श्रीआचार्यजीके दरसन आय किये. तब श्रीआचार्यजी पूछे, तीन लगती परक्रिमा गिरिराजकी करी, सो कछू देख्यो ? तब अच्युतदासने कह्यो ग्वारिया देख्यो, पाछें सिंह देख्यो, सो सिंहसों गायके दरसन भये. सो मैं समुजौ नाहीं. तब श्रीआचार्यजी कहैं, ग्वारिया तो श्रीठाकुरजी आप हते. सो तेरो धीरज देखन अर्थ डरपाये. पाछे सिंह गिरिराजजी हते. सो तू पास गयो तब गाय रूप व्हे दरसन दिये. तेरे बड़े भाग्य हैं. परन्तु कच्ची दसा है, अब ही तोकों प्रेम नाहीं है. तातें लीला सहित दरसन नाहीं दिये. तब अच्युतदास दरसन करि, दण्डवत् करि श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों बिनती करी, महाराज ! प्रेमको दान आप कृपा करिके करो. आप बतावो सो मैं करूं. जा प्रकार मोकों लीलाको अनुभव होय. तब श्रीआचार्यजी कहै, तुम भगवद् सेवा करो तो प्रेम होय. तब अच्युतदासने कही, महाराज ! सेवा पधराय देउ. जा प्रकार बतावो ता प्रकार मैं करूं. तब श्रीआचार्यजी कहैं, अब हम ब्रज चलें हैं, हमारे सङ्ग तू चलि. तहां सगरो मनोरथ पूर्ण होयगो. तब श्रीआचार्यजीके सङ्ग अच्युतदास चले. सो अड़ेल ते पांच मजलि पर एक गाम आयो, छोटो सो. ताके उपर एक तलाब. बगीची सघन, तलाब सुन्दर ठिकानो देखि श्रीआचार्यजी कहैं, आज यहां पाक सामग्री करेंगे. तब अच्युतदाससों कही, तू न्हायके आव, जल भरि ल्याव. सा अच्युतदास तलावमें न्हायके निकसेसों निकसिके देखें तो तलावके

किनारे एक छोटी सो पीपरिको वृक्ष हैं. ताके नीचे हरी घास पर एक श्रीठाकुरजी विराजत हैं. तब अच्युतदास दोरिके श्रीआचार्यजीसों कहै, महाराज ! तलावके किनारे पीपरि नीचे हरी घास पर एक श्रीठाकुरजीको स्वरूप है. तब श्रीआचार्यजी पधारि हाथमें पधराय अपने उपरना तें रज पोंछि, अच्युतदासकों दिये. कहें, तू रसोई करि भोग इनकों धरि. पाछे ब्रजमें चलियो. तेरे घरमें पधरावेंगे. सो अच्युतदास सुन्दर स्वरूप देखि बहोत प्रसन्न भये. श्रीआचार्यजीके श्रीहस्तको स्पर्स तो व्हे चुक्यो है. सो रसोई करि भोग धर्यो. पाछे अच्युतदास नित्य ऐसे करत श्रीआचार्यजीके सङ्ग महावन आये तब अच्युतदास अपने घरमें श्रीआचार्यजीकों पधराये तब श्रीआचार्यजी श्रीठाकुरजीको पञ्चामृत स्नान कराय पाट बैठारे. श्रीमदनमोहनजी नाम धरे. अच्युतदासके माथे पधराये. आप तीन दिन अच्युतदासके घर रहि पुष्टिमार्गकी सगरी रीति बताई. पाछे आप नारायणदास ब्रह्मचारीके घर एक रात्र रहि पाछे गिरिराज व्हे आप द्वारिका पधारे.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो अच्युतदास श्रीमदनमोहनजीकी सेवा भली भांतिसों करते. सो श्रीमदनमोहनजी कछुक दिनमें अच्युतदासकों सानुभावता जनावन लागे. लीला रसको अनुभव कराए. बातें करते, जो चहिये सो मांगि लेते. पाछे जब श्रीगुसांईजीके पास अच्युतदास आवते. तब श्रीगुसांईजी अच्युतदासकों दण्डवत् न करन देते. और कहते, तिहरे हृदयमें श्रीआचार्यजी बिराजत हैं. सो अच्युतदास ऐसे भगवदीय हे. बहोत दिनलों श्रीमदनमोहनजीकी सेवा मन लगायके करी. पाछे जब श्रीआचार्यजी आसुर व्यामोह लीला करी तब अच्युतदासने श्रीमदनमोहनजी पधराये. पाछे विरह बहोत, सो रह्यो न जाय. तब बद्रीकाश्रम जाय अन्न जल छोड़ि देह त्याग करे. सो अन्तर्गृहताकी प्राप्ति भई. श्रीठाकुरजीके श्रीमुखमें प्रवेस किये. पाछे श्रीमदनमोहनजीकों श्रीगोपीनाथजीके पास पधराए. सो ये अच्युतदास ऐसे श्रीआचार्यजीमहाप्रभुके कृपापात्र भगवदीय हे. जो श्रीआचार्यजीको विरह सहि न सके तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिये. ...वार्ता ।।५५।।

६३-अच्युतदास सारस्वत

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, अच्युतदास सारस्वत ब्राह्मण, सो कड़ामें रहते तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ये लीलामें श्रीयमुनाजीकी सखी हैं इनको नाम 'रसात्मिका' है. सदा संयोगमें मगन रहती. सो अच्युतदास कड़ामें एक ब्राह्मण सारस्वतके घर प्रगटे. सो वर्ष ग्यारहके भये. तब ब्याह भयो. तब वर्ष चारि पाछें वह स्त्री मरि गई. सो अच्युतदासको बहोत दुःख भयो. सो दिन चारि लों खाये नाहीं. बहोत दुःख भयो, एक दिन माता पिताने बहोत कही, परि माने नांहीं. कहें मैं वैराग्य लेउंगो. तब पिताने कही, जो तू कहे तो तेरे दोय विवाह करि देऊं. यह कहिके समुझायो, खवायो. पाछे दिन दस पीछे पिता मरि गयो. तब अच्युतदास और हू दुःख किये. पाछे चारि दिनमें माता मरि गई. तब अच्युतदास घरतें निकसे सो बद्रीनाथ होय, जगन्नाथरायजी गये. तहां श्रीआचार्यजी पधारे. सो कथा कहत हैं. सो अच्युतदास बैठें, सो कथा सुने. परन्तु दुःखके मारे कछू समुजे नांहीं. पाछे कथा करि चुकें. तब श्रीआचार्यजी कहें, अच्युतदास तू ऐसो उदास क्यों है ? तब अच्युतदास रोवन लागो, कहें, महाराज ! मेरे दुःखको पार नाहीं है. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कहे, तू अपनो दुःख कहे तो वाको उपाय होय. तब अच्युतदासने कही, महाराज ! स्त्री मा बाप सब मरि गये. मैं कबहूं दुःख देख्यो नाहीं, सो मैं कहा करूं ? कछू उपाय समुजत नाहीं. तब श्रीआचार्यजी कहें जा न्हाय आउ, तेरो दुःख सब दूरि श्रीठाकुरजी करेंगे. तब अच्युतदास स्नान करि आये. तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाय निवेदन कराये. पाछे वेदमन्त्रसों पढ़ि एक अञ्जुलि जल छिड़क्यो. तब अच्युतदासके हृदयमें विवेक, धैर्य भगवानको आश्रय दृढ़ होय गयो. तब श्रीआचार्यजीकों दण्डवत करि अच्युतदासने कही महाराज ! मैं इतनो दुःख योंही पायों. कौनकी स्त्री कौन माता पिता, यह सरीर मेरो नाहीं, तो सरीरके सम्बन्धीको योंही दुःख कियो. मैं भगवानको दास होयके भगवानकों भूल्यो. तातें दुःख पायो. अब मैं आपकी सरनि होय परम सुख पायो. अब मोको आप टहल बतावो, मैं सो करूं. तब श्रीआचार्यजी कहे, तू हमारे सङ्ग रहि. जो टहल होय, तोसों बने करियो. तब अच्युतदास श्रीआचार्यजीके सङ्ग रहे. सो एक पृथ्वी परिक्रमामें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी भली टहल तन मन लगायके कियो. सो श्रीआचार्यजी प्रसन्न होयके अड़ेल पधारे, तब अच्युतदाससों कहे, अब तुम घर जायके सेवा करो. तब अच्युतदासके नेत्रनमें जल भरि आयो. कहे महाराज ! आपके वचनामृत सुने बिना, दरसन बिना, मोकों एक दिन रह्यो न जायगो. लौकिक दुःख सब आप दूरि किये. आप बिदा करो तोयह दुःख दूरि करिवेको कौन सामर्थवान है ? तब श्रीआचार्यजी प्रसन्न होय अपनी पादुकाजीकी सेवा दीनी. और कहे, मैं तो पर बहोत प्रसन्न हों. सो जहां तू रहेगो तहां मैं तुमकों दरसन देउंगो. तुमकों जो सन्देह होय तो पूछियो. तिहारो सन्देह दूरि करोंगो तातें अब घर जाय भगवद् सेवा करो. तब अच्युतदास श्रीआचार्यजीकों दण्डवत् करि श्रीआचार्यजीकी पादुकाजी माथे पधराय बिदा होय कड़ामें घर आये.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो अच्युतदास भली भान्तिसों श्रीआचार्यजीकी पादुकाजीकी सेवा करते. सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुन अच्युतदासकूं

नित्य दरसन देते, वार्ता करते. पुष्टिमारगकी रीति, लीलाको भाव कहते. सो अच्युतदास ऐसे भगवदीय हे, कृपापात्र हते. पाछे कछुक दिनमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुन सन्यास ग्रहण करि कासी पधारे. सो डेढ़ महीना सन्यास राखे पाछे आसुर व्यामोह लीला करी. सो सङ्ग एक वैष्णव हतो. सो वाकों बहोत विरह दुःख भयो. सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु पहले उह वैष्णवकों कहे, जो तू कड़ामें अच्युतदास पास जैयो. वे तेरो सन्देह दुःख सब दूरि करेंगे. सो जब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजी लौकिक आसुर व्यामोह लीला करी तब वह वैष्णव विरहसों दुःखी होय, कड़ामें अच्युतदास पास आयके, श्रीआचार्यजीके सन्यास ग्रहणकी आसुर व्यामोह लीलाकी बात कही. तब अच्युतदासने कही श्रीआचार्यजी एसी कबहू न करें. तोको मोह भयो होयगो. महाप्रभुजी कबहू ऐसी करेंही नाहीं. तोकों भ्रम भयो है. तब वह वैष्णवने कही, मैं कासीमें श्रीआचार्यजीके सङ्ग हतो, सो देखिके आयो हों. तब अच्युतदास कहें, उत्थापनको समय अब दोय घड़ीमें होयगो तब तेरो सन्देह दूरि होय जायगो. तब वह वैष्णव बैठि रह्यो. पाछे उत्थापनको समय भयो. तब अच्युतदास न्हायके मन्दिरके किंवाड़ खोलि उह वैष्णवको बुलाय, श्रीआचार्यजीके दरसन कराये. उह वैष्णव देखे तो श्रीआचार्यजी बिराजे पोथी देखत हैं. तब उह वैष्णव दण्डवत् करि, चक्रत होय रह्यौ. तब श्रीआचार्यजी उह वैष्णवसों कहैं, जो तू सन्देह मति करे, कासीमें लौकिक लीला देखिकें. मैं अपने भक्तनके घर सदा बिराजत हों. अब लौकिक लोगनकों दरसन नाहीं, भगवदीयनकों नित्य दरसन है. तब उह वैष्णवको सन्देह गयो. सो अच्युतदास सदा संयोग रसमें मगन रहते. एसे श्रीआचार्यजीके कृपापात्र भगवदीय है, तातें इनकी वार्ता कहां तांइ कहिये.

भावप्रकाश : सो ये श्रीयमुनाजीकी सखी हैं. तातें इनकी संयागी लीला सम्बन्धी वार्ता अनेक हैं, सो प्रगट करी न जांय.

६४-नारायणदास कायस्थ

अब सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक नारायणदास कायस्थ, अम्बालयके वासी तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : लीलामें कुमारिकाकी सखी हैं. लीलामें इनको नाम 'ब्रज बिलासिनी' हैं. सो अम्बालयमें एक कायस्थके घर जनमे. सो नारायणदास हू

पिताके सङ्ग जाते. उह देवाधिपतिको काम करतो. सो नारायणदासकों जूवा खेलवेको व्यसन बहुत हतो. पिता बहुतेरो मारे, समुजावे. परन्तु जुवा खेले बिना न रहे. सो नारायणदास एक दिन जूवा खेलतमें हजार रुपैया हारे. सो नारायणदासके पिता पास मनुष्य मांगन आये. कहें, नारायणदास जूआमें हार्यो है. सो वाकों घेरे हैं, तुम देऊ. तब नारायणदासके पिता कही, वही नारायणदास देईगो. सो बड़ो रगड़ो भयो. पाछे नारायणदासके पिताने हजार रुपैया दिये. और वह देसाधिपतिसों कहिके नारायणदासकों देंस ते बाहिर निकारि दियो. सो नारायणदास दक्षिण देस गये. तहां एक ब्राह्मण पास रहिके कछुक विद्या पढ़े. सो पोथी बांचन लागे, जूआको व्यसन छूटि गयो. पाछे दस पांच लरिका पढ़ावें, तामें जीविका करें सो एक दिन बजारमें एक हाट पर लरिकानकों पढ़ावत हते. सो एक लरिकासों कछू भूल परी तब मारत हते. सो कृष्णदास बजारमें श्रीआचार्यजीके लिये सीधो सामान लेन आये हते, सो कृष्णदास नारायणदासकों देवी जीव देखिके कहैं. नारायणदास एसे लरिकनकों न मारिये, दया राखिये. तब नारायणदास कहे, तुम अपने काम जाव, तिहारे कहा काम है ? हमारो तो यही काम हैं. तब कृष्णदासने कही, या भांति मारत है, सो जूवाके पाछे अम्बालय तें भाज्यो, एसे अब जो कोई बालक मरि जायगो तो हत्या लगेगी, और अब भाजिके कहां जायगो ? तब नारायणदासने कही, तुम अम्बालयकी बात कहा जानो, तुमको कबहू देख्यो नाहीं. तब कृष्णदासने कही, मैं श्रीआचार्यजीकी कृपातें तेरी बात सर्व जानत हों. मैं हू तोकों नाहीं देख्यो, परन्तु तू उत्तम दैवी जीव दैवी जीव है, तातें कह्यो. यह लरिका पढ़ायवेकी जीविका छोड़ि दे. तब नारायणदासने कही, मैं खाऊं कहां ते ? तब कृष्णदासने कही, तू कायस्थ है, काहूकी चाकरी करि खा. तब नारायणदासने कही, अब तेरो कह्यो करूं तो खराब होऊं, मेरे यही ठीक है. तब कृष्णदास कहैं, तू जाने, दुःख पावेगो. यह कहि कृष्णदास सीधो सामग्री ले श्रीआचार्यजीके पास आये, श्रीआचार्यजीसों सब बात कहे. महाराज ! नारायणदास कायस्थ एक अम्बालयको यहां है. दैवी जीव है. वाकोंमें समुजायो सो मान्यो नांहीं. बालकनको पढ़ावत है. तब श्रीआचार्यजी कहैं, न मान्यो तो कहा भयो ? तुमने वाकों समुजायो. तुमको ढुढत अब ही आवेगो. पाछे श्रीआचार्यजी रसोई करि, भोग धरि भोजन करे, गाम बाहिर बगीची हती तहां पोढ़े. सो तीसरे प्रहर नारायणादास वाकों पाटी खेंचिके मारी. सो वह लरिका मूर्छा खायके गिर्यो. तब नारायणदास डरपिके वह लरिकाकों कोठामें ले जाय, नाक मुख बहुतेरो मूंघ्यो, परन्तु जाग्यो नाहीं. तब नारायणदासकों सुधि आई, जो दोय प्रहरके उह महापुरुषके वचन सांचे भये. ताते उन कही, जो मैं तो श्रीआचार्यजीकी कृपा तें जानत हों. सो कोई श्रीआचार्यजीके सङ्ग होईगो. तब कोठाकों तारो मारि, गांवमें सबनसों पूछत चले. जो प्रदेशतें कोई श्रीआचार्यजी आये हैं ? तब एक पण्डित ब्राह्मनने कही, जो श्रीआचार्यजी पधारे हैं, सो मायावाद खण्डन किये हैं. भक्तिमार्ग स्थापन किये हैं. सों गामके बाहिर बगीचोमें उतरे हैं. सो सुनिके नारायणदास दोरे. वह बगीचीके द्वारे आये. सो कृष्णदासकों देखिके नारायणदासने कही, तुम बात कही, जो सब सांच भई. उह लरिकाकों मैं फेरि मार्यो सो मूर्छित भयो. ऐसे कहि कृष्णदासके पाइन परि रोवन लाग्यो. और

कह्यो, जो तुम मेरो अपराध क्षमा करो मैं तिहारो कह्यो न मान्यो. तब कृष्णदासने कही, तू रोवे मति अब श्रीआचार्यजीकी दरसन करि, उनकी कृपातें सब आछो होइगो. तब नारायणदासने कही, मैं श्रीआचार्यजीकों जानत नाहीं. तुम कृपा करिके ले चलो. तब कृष्णदास नारायणदासकों ले आये. श्रीआचार्यजी पाढ़ि उठे हते. तब नारायणदासने दण्डवत् बिनती कीनी, महाराज! मैं इनको कह्यो, न मान्यो, सो दुःख पायो. अबमें आपकी सरनि आयो हूं. मेरे माथेको कलङ्क छुड़ावो. वह गृहस्थको लरिका मूर्छित भयो. सो मैं कोठरीमें डारि तारो लगायके आयो हूं. तब श्रीआचार्यजी कहैं, वह लरिका तो आछो होहि जायगो, परन्तु पाछे तू फेरि उही काम करेगो ? तब नारायणदासने कही, महाराज ! मैं आपको दास गुलाम होय आपके पास रहूंगो. आप आज्ञा देऊगे, सो मैं करूंगो. तब श्रीआचार्यजी झारी तें जल ले वेद मन्त्रसों पढ़ि एक दोनामें दिये. और कहे, यह जल लरिका उपर छिरकियो, लरिका उठेगो. तब नारायणदास जल लेके आये. कोठरीको तारो खोलि वह लरिका मूर्छित पर्यो हतो तापर जल छिरके. सो वह लरिका उठयो. पाछे उह लरिकाको बिदा करि घर, सों श्रीआचार्यजीके पास आय दण्डवत् करि विनती किये. महाराज ! मैं आपकी सरनि हों, मोकों सेवक करिये. मेरे माथे तें आप हत्या टारी हैं. तब श्रीआचार्यजी कहैं जा, स्नान करि आऊ. तब नारायणदास न्हायके अपरसमें श्रीआचार्यजीके पास आये. तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाय ब्रह्मसम्बन्ध कराये. पाछे कहै, अब तू अपनी वस्तु होय सो लेके हमारे पास आय रहो. कहूं और ठोर जाय रहेगो ते फेर दुःसङ्गमें परेगो. तब नारायणदास गाम जाय सगरे लरिकानको उनके माबापकों सोंपे. अपनी वस्तु लेके श्रीआचार्यजीके पास आय रहै. सो श्रीमुखकी वार्ता सुने महाप्रसाद लिये, चित्तमें आनन्द पायें. पाछे आप द्वारिकाकों पधारें तहां तांई नारायणदास श्रीआचार्यजीके सङ्ग रहै. पाछे श्रीआचार्यजीने कही, नारायणदास !तू अपने घर जा. तब नारायणदासने बिनती करी, महाराज ! मोकों पिता जुवारी जानि देस तें निकासि दीनो. सो अब घरमें कैसे राखेगो ? तब श्रीआचार्यजी कहैं, अब राखेगो, चिन्ता मति करे. तब नारायणदासने कही, महाराज ! माता पिता सेवक नाहीं है, सो मेरो धर्म कैसे निबहेगो ? उह प्रतिबन्ध करे तो मोकूं कठिनता परे. तब श्रीआचार्यजी कहें, तोसों स्वरूप सेवा निवहेगी नाहीं. पराई चाकरी करनी, घरमें कोऊ सेवक नाहीं, तातें हस्ताक्षर लिख देत हों, सामग्री जो बने सो भोग धरिके महाप्रसाद लिजियो. तब ब्रह्मसम्बन्धको गद्यको श्लोक अष्टाक्षर लिखिके नारायणदासकूं दिये. तब नारायणदास दण्डवत् करि बिनती किये, महाराज ! इतने दिन आपके पास रह्यो, परन्तु मेरे अन्तःकरनमें बोध न भयो. सो ऐसी कृपा करो जो संसार को दुःख सुख कछु मोकों बाधा न करे, चित्त श्रीठाकुरजीके चरणाविन्दमें लग्यो रहै. तब श्रीआचार्यजीने अपनो चरणामृत दीनो. और 'बालबोध' ग्रन्थ पढ़ाये. तब नारायणदास श्रीआचार्यजीकों दण्डवत् करि द्वारिका तें चले. सो चारि वर्ष पाछे घरमें आये. तब माता पिता प्रसन्न होयके कहैं, बहोत दिनमें पुत्र आयो. कछू भोजन करों, जल पीवो. तब नारायणदासने कही, मैं श्रीआचार्यजीको सेवक भयो, सो अपने हाथकों लेत हों. यह श्रीआचार्यजीकी कृपा है. तुम तो मोकों जानत हों, मैं जुवारी हतो. सो सगरो व्यसन श्रीआचार्यजी छुड़ाये. अब

थोरी सी मौकों न्यारी ठौर देऊ तहां बैठों, भगवद् नाम लेहूं. तुम काम काज कहो सो करूं. तब पिता बहोत प्रसन्न भयो, जो जुवाको व्यसन तो छूट्यो. पाछे घरमें न्यारो कोठा दिये तहां खासा करि नारायणदास रहै. सो बहोत काहूसों बोले नाहीं. माता पिता कहें सो काम करे. अपनी रसोई करि भोग धरि महाप्रसाद ले, नाम लेय. पिता प्रसन्न भयो. जो मेरे वृद्ध समय नारायणदास आयो, अब याकी बुद्धि (हू) सुन्दर भई. सो पिता नारायणदासकों लेके राजद्वारमें गयो. सो बादशाहको काम सब नारायणदाससों करावन लाग्यो. पाछे कछुक दिनमें पिताने देह छोड़ी.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो नारायणदास हाकिम होय काम करन लाग्यो. सो काम बहोत, छूटि सके नाहीं. श्रीगोकुल आयवेको मन बहोत, श्रीआचार्यजीके दरसनको मन बहोत. तब नारायणदासने एक मनुष्य चाकर राख्यो. और वांको महिना रुपैया चारिको कर दियो. और वासों कहैं, तेरो यही काम, जो मोकों घरी घरीमें यह कहियो भैयाजी ! श्रीगोकुल श्रीआचार्यजीके दरसनकों कब चलोगे ? यही कह्यो करियो. सो वह चाकर नारयणदासके सङ्ग रहे. घरी - घरीमें यह कहियो भैयाजी ! श्रीगोकुल श्रीआचार्यजीके दरसनकों कब चलोगे ? तब नारायणदास कहत, हां अब चलूंगो. नेत्रनमें जल भरि लीला रसमें मगन होय जाते. फेरि काम काज करते. फेरि वह चाकर कहतो. फेरी मगन होय जाते. और वर्षके वर्ष श्रीआचार्यजीकों भेट पठावते. सो जन्म भरि या प्रकार श्रीगोकुलको स्मरण करि श्रीआचार्यजीमें मन लगाय मगन रहे. सो नारायणदास ऐसे भगवदीय भये. इनकी वार्ता कहां तांई कहिये. ....वार्ता ।।५७।।

६५-नारायणदास भाट

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक नारायणदास भाट मथुरामें रहते तिनको वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ये नारायणदास लीलामें श्री गोकुलके वानर हैं. सो मथुरामें एक भाटके घर जन्में. सो बड़े भये. परन्तु कवित्त दोहा कछु आवे नाहीं, विश्रान्ती पर बैठे रहैं. जो कोऊ कछू दे जाय ताहीमें निर्वाह करें. सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु पधारे, विश्रान्त घाट पर सन्ध्यावन्दन मध्यान्ह समय करत हे. तब नारयणदास भाटने श्रीआचार्यजीको दरसन कियो. तब मनमें यह आई, जो ये महापुरुष हैं. इनसों कछू मैं अपने भागकी पूछों तो सही. जो मेरे भागमें कहा

है ? यह विचारि नारायणदास श्रीआचार्यजीकों दण्डवत् करि पूछे, महाराज ! हम ऐसे मूर्ख क्यों भये, भाट होय के. न कविता आवे न दोहा आवे. आछे बोलते हू नांही आवें. और जबते जन्म्यों तब ते मांगते खाते दिन बीते. कबहू माकों द्रव्य मिलेगो ? मेरे भाग्यमें हैके नाहीं ? सो मेरो हाथ तो आप कृपा करि देखो. तब श्रीआचार्यजी कहैं, जो भली भई, जो कवित्त दोहा नांही आवत. जो आवते तो, राजसी लोगनके आगे पढ़त डोलतो. आछी भई, जो न पढ्यो. और ओछे पात्रकों प्रभु द्रव्य नाहीं देत. सोऊ कृपा करत हैं. द्रव्य पाये, द्रव्य मदसों अनेक जीवनको बुरो करे. विषय आदि पाप करे. और भूखो तो कबहू रह्यो नाहीं. तातें द्रव्य तेरे भाग्यमें नांहीं है. परन्तु ओछो पात्र जानि प्रभु द्रव्य देत है. तू रात्रिकों ध्रुवघाट जैयो. तहां द्रव्य देखेगो परि लीजो मति. तब नारायणदास उठिके घर आये सो रात्र भई. तब नारायणदास उठिके ध्रुवघाट पर गये. सो देखे तो सोना रूपाके ढेर पड़े हैं. सो लोभ करि लेन लागे. तब श्रीयमुनाजीके भीतर तें दोय मनुष्य आय नारायणदासकों मारे. जो तोकों श्रीआचार्यजी लेनकी कही है ? जो लेन आयो ? तोकों श्रीआचार्यजीके बचन सांचे मानिवेके लिये द्रव्य दिखायो है. सो श्रीआचार्यजीकी आज्ञा लाऊ, तब ले जैयो. तब नारायणदास घर आय सोय रहे. पाछे सवेरे विश्रान्त घाट पर नारायणदास आय बैठि रह्यो, सो श्रीआचार्यजी प्रान्तःकालकी सन्ध्यावन्दन करनकों विश्रान्त पधारे. तब नारायणदासने दण्डवत् कियो तब श्रीआचार्यजी कहैं, आखरि पशु तो सही, विश्वास नाहीं. तब नारायणदासने बिनती करी, महाराज ! आपके वचन सब सांचे हैं. ध्रुवघाट पर द्रव्य देख्यो, सो लोभ करि लेन लाग्यो. तब दोय मनुष्य जलतें निकसि मारन लागे. और कहे, श्रीआचार्यजीकी आज्ञा होय तो ले जा. सो महाराज ! वे दोय जने कोन हे ? और आप मोकों पशु कहें. ताको कारन कहा ? सो कृपा करिके कहिये. तब श्रीआचार्यजी कहैं, वे दोऊ वरुणके दूत हे, सो तोकों लेन न दिये. तू लेतो तेरो जनम बिगरि जातो. और तू लीलामें वानर श्रीगोकुलको है, सो असमर्पित खायके संसारमें पर्यो दुःख भोगत हैं. तब नारायणदास दण्डवत् करि बिनती किये, महाराज ! मोकों या संसार दुःखसों छुड़ाइये. अब मोकों द्रव्यकी चाह नाहीं हैं, तब श्रीआचार्यजी नारायणदासकों श्रीयमुनाजीमें स्नान करायकें नाम निवेदन कराये. तब नारायणदासने कही, महाराज मोकों भगवद् सेवा पधराय दिजिये. तब श्रीआचार्यजी कहें, पशुसों कहूं पुष्टिमार्गकी सेवा बनी हैं ? तातें तू अष्टाक्षर मन्त्रको रात्र दिन कह्यो करियो. तोकों याही तें भगवद् प्राप्ति होयगी. और आजु पाछे श्रीयमुनाजीके तीर काहुसों कछू लीजो मति. तू घरमें ही रहियो, तोकों घरमें ही सब कछू आय रहेगो. विश्वास दृढ़ राखियो. यह कहि आप सन्ध्यावन्दन करि महावन पधारे. नारायणदास घरमें आय बैठि रहे. अष्टाक्षर मन्त्र मुखसों कहन लागे. सो वाही दिन एक जनो रुपैया दस घरमें दे गयो. तातें नारायणदासको विश्वास बढ्यो. पाछे घरमें रह्यो करतो, श्रीआचार्यजीको आश्रय करि अष्टाक्षर जप्यो करते.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो नारायणदास भाटकों श्रीमदनमोहनजीने आज्ञा दीनी. जो मैं वृन्दावनमें राधाबागमें हो. सो तू मोकों धरती खोदिके बाहिर पधराऊ. तब नारायणदास वृन्दावनमें जाय राधाबागमें खोदिके श्रीमदनमोहनजीकों पधराय, मथुरा आये. सो कोइक दिनमें अड़ेलतें श्रीगोपीनाथजी मथुरा पधारे. तब नारायणदासने श्रीगोपीकानाथजीसों सगरे समाचार कहे. तब श्रीगोपीकानाथजीने मदनमोहनजीकों पञ्चामृत स्नान करय पाट बैठारे. सो कछुक दिनलों नारायणदासने सेवा कीनी. पाछे नारायणदासने देह छोडी ता पाछे नारायणदासके सगे सम्बन्धी कुटुम्बी कोई न हतो. तातें वैष्णवनने श्रीगुसांईजीसों कह्यो, महाराज ! नारायणदासकी देह छूटी. अब श्रीमदनमोहनजीकों कहां पधरावें. तब बंगाली कछुक दिन श्रीनाथजीकी सेवा करी हती, सो बंगालीकों श्रीमदनमोहनजी दिये ...वार्ता ।।५८।।

भावप्रकाश : ताको कारन यह है, जो श्रीगोपीनाथजीके पाट बैठारे हते. सो गोपीनाथजी बलदेवजीको रूप हैं. तिनके सेव्य मर्यादामार्गीय ठाकुर हे. तातें श्रीगुसांईजी बङ्गालीनकों मर्यादामार्गीय पूजा करनकों दिये. पुष्टि - मार्गीय वैष्णवकों नाहीं दिये, न आप राखें. जो श्रीआचार्यजीके सेव्य होते तो आप राखते. श्रीगोपीनाथजी पाट बैठारे हते तातें श्रीबल्लभकुल वैष्णव दरसनकूं जात हैं. सो नारायणदास ऐसे भगवदीय हे. ... ।।वैष्णव ५८।।

६६-नारायणदास लुहाणा

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, नारायणदास लुहाणा, ठठ्ठाके बासी - तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : सो नारायणदास लीलामें विसाखाजीकी सखी हैं. लीलामें इनकों नाम 'केतकी' है. सो ठठ्ठा गाममें एक लुहाणाके घर प्रगटे. सो लुहाणा गाममें एक बड़ो सेठ हतो. सो बड़ी बधाई करी. पाछे नारायणदास पांच वर्षके भये. सो नारायणदासके सगरे देह पर फोड़ा भये. सो पिताने देस देसतें गुनी बुलाय औषध कियों. परन्तु काहूसों आछे न भये. तब नारायणदासके पिताने सबनसों कही, जो नारायणदासकों कोऊ आछो करे तो लाख रुपैया उनकों देय. सो पांच वर्ष बीति गये, परन्तु फोरा न गये. सो नारायणदास सूकि गये. पाछे पृथ्वी परिक्रमा करत श्रीआचार्यजी ठठ्ठे पधारे. सो काहूनें नारायणदासके पितासों कही, श्रीवल्लभाचार्यजी पधारे हैं, मायावाद खण्डन किये हैं. सो उनकी कृपा होय तो नारायणदास अब आछे होय जाय. तब

नारायणदासको पिता नारायणदसकूं डोलीमें बैठारि हजार रुपैया भेट ले आयो. पाछे श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों दण्डवत् कियो, हजार रुपैया आगे धर्यो. तब श्रीआचार्यजी खीजके कहैं, कहा हम वैद्य हैं, जो फोरा आछे करें ? हमारे तो, जो कोई हमारो सेवक है तिनको लेत हैं, उनकों भगवद् नाम सुनावत हैं. श्रीठाकुरजीको नाम हमतें सुनि जा, और यह द्रव्य ले जा. हमकों नाहीं चाहिये. तब नारायणदासके पिताने पाग श्रीआचार्यजीके धरी. और चरन पकरि दण्डवत् करि पर्यो रह्यो, कह्यो आप ईश्वर हो. यह पुत्र अपनी ओर तें मोकों देत हों. मैं आपकी सरनि हों. मोपर कृपा करोगे तब मैं घरकों जाऊगो. तब श्रीआचार्यजी कहैं, अब तू अपने बेटाकों ले घर जा. हम तेरे घर पधारिके आछो करि देंयगे, तब जगत् जानेगो नाहीं. अब जो आछो करे तो सगरे जगत् अनेक दुःखसों लपटे हैं सो हमारे पीछे पड़े. तब नारायणदासके पिताने कही, महाराज ! मैं घर जाऊं. (और) आप (अन्यत्र) पधारो तो मैं फिर आपके चरन कहां पाऊं ? तातें मेरे माथे हाथ घरो, जो हम तेरे घर आवेंगे. तथा चरन धरो तो मोकों विश्वास होय. या प्रकार बचन देहो तो मैं जाऊं. तब श्रीआचार्यजी कहै, तेरे माथे तो चरन हाथ कछू नाहिं धरूं तू दैवी नाहीं. अपने स्वार्थके लिये दैन्यता करत है. तेरे कछू प्रीति नाहीं है. नारायणदास दैवी जीव है, याकों सरनि लेनो है. सो याके माथे हाथ धरूंगो. तब नारायणदासके पिताने कही, महाराज ! मैं इतनी बिनती या पुत्रके लिये ही करत हों और मोय कछू नाहीं चहिये. याहीके माथे हाथ धरो. तब श्रीआचार्यजी नारायणदासके पास डोलीमें जाय देखें तो पर्यो है. सो दोऊ चरन माथे पर छाती पर धरि परदा डारि दिये. कहे, अब घरले जा. तब नारायणदासको पिता घर ले जाय नारायणदासको देखे तो कछू फोराको नाम नाहीं, सुन्दर देही है. तब पुत्रको गोद लेन लाग्यो. तब नारायणदासने कही, मोकों आछो किये सो कहां है ? तब नारायणदासके पिताने कही, गाम बाहिर तलाब पर हैं. तब नारायणदासने कही, एक मनुष्य मेरे साथ करि देऊ, तहां मैं जाऊंगो. तब पिताने कही असवारी पर बैठिके जाऊ, घोड़ा है पालकी है. तब नारायणदासने कही, तू मूर्ख है. भगवानके दरसनकों पायन जैये. तब नारयणदास सङ्ग मनुष्य ले श्रीआचार्यजीके पास आय दण्डवत् करिके बिनती करी, मोकों कृपा करिके सरनि लीजिये. और मोकों आप आछो कियो, मेरे मस्तक पर छाती पर चरन धरे परन्तु मोकों दरसन दिये नाहीं ताको कहा कारण ? तब श्रीआचार्यजी तलाबमें नारायणदासकों न्हवायके नाम सुनाये. तब नारायणदासने कही, महाराज ! मैं महा अनाथ हतो सरीर हूं करि, और बड़े घरमें जन्म भयो दुःसङ्गसों धिर्यो अष्ट प्रहर. ऐसो मैं महादुष्ट पापी तापर आप इतनी कृपा करी, सो आप ही सों बने. अब मोकों जो आज्ञा आप देउ सो मैं करूं, जामें मेरो उद्धार होय. विवेक, धैर्य, कबहू छूटे नाहीं आपके चरनमें मन लग्यो ही रहैं. तब श्रीआचार्यजी कहें, यह तो तोकूं जब माथे पर, हृदय पर चरन धर्यो तब ही सगरो धर्म धरि दियो. अब तोकों भगवत् सेवा देत हों, तिनकी सेवा करियो. सो कुंकुम मंगाय दोऊ चरणारविन्दमें लगाय एक वस्त्र पर छापके चरणारविन्दकी सेवा दीनी. और कहैं, अब तुम घर जाऊ. तुमकों दृढ़ भक्ति दीनी है. और यह पिता हजार रुपैया डारि गयो हैं सो पिताकों दीज्यो. तब

नारायणदासने कही, महाराज ! यह मेरी और तें भेट राखो. तब श्रीआचार्यजी कहै, तेरी औरकी बहुतेरी भेट राखेंगे. पिता तो थोरे दिननमें मरेगो. तब राखेंगे. यह दैवी द्रव्य नाहीं है. तब श्रीआचार्यजी कहैं, तेरो नाम नारयणदास. आगे सब कोऊ नरिया कहते. तब नारायणदास दण्डवत् करि श्रीआचार्यजीसों विदा होय घर आये. पिताकों हजार रुपैया दिये. तब पिताने कही, यह तो मैं श्रीआचार्यजीके भेट करयो हतो, तू, क्यों ले आयो ? उह मेरे उपर बड़ो उपकार किय हैं. जो ताकों आछो कियो. और अधिक लेवेको मन होय तो दस पांच हजार ले जा. तब नारायणदासने कही, उनको कछू नाहीं चहिये. वे तो केवल परमार्थ करनके लिये प्रगटे हैं. तब पिता चुप होय रह्यो. तब नारायणदास एक हवेली न्यारी लेके रहे. तहां सेवा श्रीआचार्यजीके चरणारबिन्दकी करन लागे. पाछे श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमा करनकों पधारे. यहां नारायणदास सबके हाथको जल छोड़ि दिये. कोई वैष्णव आवे तो भरें, के आप भरें. सो पिता सुनिके नारायणदास पर खीज्यौ. जो तू कहा मजूर है ? जो जल भरत हैं. ताते यह किनने ताकों सिखायो है ? तब नारायणदासने कही, तू मोसों मति बोले. मेरे मनमें आवेगी सो मैं करूंगो. तू कौंन मैं कोन ? यह बात सुनिके पिता क्रोध करिके कह्यो, मेरे द्रव्यसों बैठो खात है, खर्च करत है. और मोसों टेढ़ो बोलत है ? तब नारायणदासने गहना, कपड़ा, बासन जो द्रव्य हतो सो सब पिताके घर पठाय दियो. तब पिता रूठि गयो. सो यह सगरी बात बादशाहने सुनी. सो बादशाहने नारायणदासकों कुल दीवानगीरी दीनी. सो वह देसाधिपतिके यहां नारायणदास करें सो होय. तहां बहोत द्रव्य कमायो. श्रीआचार्यजीकों बहोत भेट पठाये. वैष्णव जो आवे तिनकों मन मान्यो द्रव्य दे, प्रसन्न करि बिदा करे. ऐसे करत बहोत दिन बीते.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो एक समय नारायणदासके उपर वह बादशाह कोप्यो. सो नारायणदासकों बन्दीखानेमें दीनों. पांच लाख रुपैयाको दण्ड कियो. ताको बंधान बांध्यो, जो पांच हजार रूपैया नित्य भरे. जा दिन रुपैया पांच हजार न भरे ता दिन पांचसे कोरड़ा मारनें. सो अड़ेलमें दोय ब्राह्मण वैष्णव श्रीआचार्यजीके सेवक हते. तिनके एक बेटी सयानी भई. सो ब्याह करिवेकों कछू द्रव्य हतो नाहीं तब दोऊ विचार किये, जो ठटठाकों चलिये. नारायणदासके पास तें कछू द्रव्य लायके कन्याको विवाह करिये. यह विचारके दोऊ भाई ब्राह्मण अड़ेल तें चले, सो ठटठामें आये. तब यह सुने, जो नारायणदास मिलने नाहीं, सो प्रातःकाल उठि चलेंगे. सो एक मनुष्यने नारायणदाससों जायके कही जो दोय ब्राह्मण श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक आये हैं, सो तुमकों बन्दीखाने सुनके प्रातःकाल उठि जायेंगे. तब नारायणदासनें उन दोय वैष्णवनके पास अपनों मनुष्य पठायो, और कह्यो, जो मोकों तुम प्रातःकाल ही दरसन देकें कहूंको जेयो. मेरे बड़े भाग्य हैं, जो तुम या समयमोकों दरसन दियो. तब वो मनुष्य दोऊ ब्राह्मण वैष्णवनसों कह्यो, जो नारायणदाससूं मिलिके कहूंकों जैयो.

तब प्रातःकाल उठि वे दोऊ देहकृत्य करि स्नान किये. पाछे श्रीआचार्यजीको, श्रीनाथजीको, चरणामृत महाप्रसादकी थेली ले नारायणदासके पास आये. सो नारायणदास उठिकें मिले, प्रीतिसों निकट बैठाये. तब दोऊ वैष्णवननें श्रीआचार्यजीको चरणामृत, श्रीनाथजीको चरणामृत महाप्रसादकी थेली दिये. तब नारायणदास उठिके माथे चढ़ाय लिये. तब नारायणदास श्रीआचार्यजीके कुसल समाचार पूछिके पाछे, कहैं मेरो बड़ो भाग्य है, जो वैष्णव मोकों बन्दीखानेमें दरसन दिये. तातें आज मेरी बन्दी पूरी होयगी. अब मैं जान्यो, जो मोपर श्रीआचार्यजीकी श्रीठाकुरजीकी कृपा है. जो या ठोरहू या समय माकों वैष्णव दरसन दिये. या प्रकार वार्ता करत हैं. इतनेमें पांच हजारकी पांच थैली नारायणदासके घर तें आई, सो द्वारपालने उन पांचों थेलीन पर मोहर छाप करिके नारायणदासके पास पठवाई. सो नारायणदासने यह थेलीनके लिये वैष्णवकों बातनमें लगाय राखे. सो थेली आई तब उह मनुष्यकों बिदा करि वैष्णवसों कहें, यह तुम लेकें बेग जाउ. के तो और गाम चले जैयो, के यहां कहूं प्रगट मति हूजो, द्वे चार दिनमें जैयो. अबतो इतनो ही बने, तुम आये कछू टहल बनी नाहीं. ऐसे कहि वैष्णवको दण्डवत् करि बिदा किये. कहें, श्रीआचार्यजीकों मेरी ओर तें दण्डवत् करियो. और इनसों कन्याको विवाह करि दीजियो. सो वैष्णव पांचों हजार ले घरकों आये. इतने ही में उह बादशाह दीवानखानेमें आयके बैठ्यो. तब दीवानसों कह्यो, नारायणदासकी पांचों थेली आई ? तब दीवानने कही, थेली आई द्वारपालसों मोहर कराय नारायणदास पास पठाई हैं. तब खजानचीसों पूछ्यो, जो नारायणदासके पांचों हजार रुपैया आये ? तब खजानचीने कह्यो, मेरे पास तो नाहीं आये. तब वह क्रोध करि कह्यो, नारायणदासकों बन्दीखाने ते लाओ.

सो मनुष्य नारायणदासकों लाय देसाधिपतिके आगे ठाड़ौ कियो. तब देसाधिपतिने कही, नारायणदास आजु थेली क्यों नाहीं आई ? तब नारायणदासनें कही, आजु थेली न आय सकी. तब बादशाहने कोरड़ा वारनेकों बुलाय कह्यो, डरपैयो, मारियो मति. तब कोरड़ा वारे नारायणदासके दोउ ठाड़े होय डरपावन लागे. तब बादशाहने कही, अब तेरी खाल देहकी उडि जायगी, नहीं तो सांच कहियो, घर तें थेली तेरे पास आई. तें कहां छिपाई हैं. सो सांच कहि दे. तब नारायणदासने कही, मेरे गुरु भाई ब्राह्मण आये हते, उनके कन्याके विवाहमें कछू न हतो. सो दूरितें मेरी आसा करिके आये हते सो पांचों थेली उनकों दीनी. मनमें विचार्यो, जो आज पांचसे कोरड़ा खाय रहूंगो. इनको तो काम होय. सो मैं उनकों दीनी हैं. अब तिहारे मनमें आवे सो करो. यह नारायणदासकी बात सुनत ही बादशाह घरी

एक चुप रह्यो. मनमें बिचार्यो, जो या भूमि पर ऐसे परमार्थी लोग हैं. तातें यह धर्म तें भूमि ठाड़ी है. तब देसाधिपतिने कही, नारायणदास ताकों स्याबास है. मैं तेरे उपर बहोत प्रसन्न भयो. तू गुरुके धर्ममें ऐसो सांचो है ? पाछे घोड़ा, सिरोपाव मंगाय नारायणदासकां कह्यो, आगे जैसे काम काज करते तैसे ही करो. दण्ड सब माफ कियो. तब नारायणदासको सिरोपाव पहराय घोड़ा पै चढ़ाय घर पठाये. सो दोऊ ब्राह्मण वैष्णव सुने, जो नारायणदास बन्दीखानेसूं छूटे. सिरोपाव पहरि घोडा चढ़ि घर आये. तब प्रसन्न होय नारायणदाससों मिलन आये. तब नारायणदास उठिके मिले. कहें, तिहारे दरसन तें मैं छूट्यो. पाछे हजार मोहौरकी थेली श्रीआचार्यजीके भेट उन वैष्णवनके हाथ दीनी. और उन वैष्णवनकों कछू दे कहैं, मेरी दण्डवत् श्रीआचार्यजी आगे करियो. तब दोऊ भाई नारायणदाससों बिदा होयके चले सो कछुक दिनमें श्रीगोकुल आये. तहां श्रीआचार्यजी पधारे हते. सो नारायणदासकी दण्डवत् करि हजार मोहौर भेट धरे. सगरे समाचार नारयणदासके कहै. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कहें, वैष्णवन पर ऐसी प्रीति चाहिये. ऐसो धर्म जाके हृदयमें होय ताको सदा कल्याण ही होय. पाछे दोऊ ब्राह्मण वैष्णव श्रीआचार्यजीसों बिदा होय अडेलमें आय भली भांति कन्याको विवाह करि दिये. सो नारायणदास ऐसे आचार्यजीके कृपापात्र भगवदीय हते. इनको नाम पहले नरिया हतो. सो श्रीआचार्यजीके सेवक भये तब श्रीआचार्यजी इनको नाम नारायणदास धरे. .....वार्ता ।।५९।।

भावप्रकाश : और दोऊ भाई ब्राह्मण वैष्णव नाम धारी हते. सो पुष्टि लीला सम्बन्धी तो हते नाहीं, तातें इनकी बात नाहीं कहै. श्रीआचार्यजी सरनि लिये. सो सरनिके प्रताप तें संसार दुःख तें छुटिके मुक्तिके अधिकारी होय गये. तातें नारायणदास बड़े भगवदीय हते. इनकी वार्ता कहां तांई कहिये. ... ।।वैष्णव ५९।।

६७-एक क्षत्राणी

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवकनी, एक क्षत्राणी सो वह अकेली सिंहनन्दमें रहती, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ये लीलामें नवनन्दमें बड़े उपनन्द हैं, तिनकी बहूको नाम 'सुनन्दा' है, सो यह क्षत्राणीको प्रागट्य है. तातें इनकों बालभाव है. सो सिंहनन्दमें एक क्षत्रीके घर जन्म पायो. सो वर्ष ग्यारहकी भई तब ब्याह भयो. सो ब्याहके महीना पाछे याको वर हतो ताके सीतला निकसी, सो मरि गयो. यह मा बापके घरमें रहै. सगरो काज करें. पाछे वर्ष तीसकी भई तब मा बाप हू मरि गये. एक भाई हतो सो वह भाईसों प्रीति बहोत. परन्तु भाईकी स्त्री, भोजाईसों बने नांहीं. तब यह क्षत्राणीने दूसरो घर लियो. तब भाईने कहा भयो, मैं तिहारी आज्ञामें हों, काम काज कहियो. तब भाई सौ रुपैया लेके बहिनसों कह्यो, तू खरचकों राखि. तब बहिनने कही, मेरे तो अबही खरची है. न होय तब दीजो. तब भाईने कही, अब ही मेरो हाथ व्यौहारमें चलत है, सो देऊ सो ले लियो करि. पाछे कहा जानिये कहा है ? तब वह राखी. सो सास बहू सिंहनन्दमें श्रीआचार्यजीकी सेवकनी हती, तहां नित्य जान लागी. तब एक दिन कह्यो कछू काम काज श्रीठाकुरजीकी सेवा मोसों करावो. तब सास बहूने कही, तू श्रीआचार्यजीकी सेवकनी होती तो कछू सेवा करावती. तब इन कह्यो, अब श्रीआचार्यजी पधारें तब मोकों सेवकनी करैयो. पाछे सास बहूके श्रीठाकुरजीने कही, जो यह क्षत्राणी बूटी भली काढ़ि जानें है सो मेरे बागेमें बूटि कढ़ाय मोकों पहराउ. तब बहूने श्रीठाकोरजीसों कह्यो. उह श्रीआचार्यजीकी सेवकनी नाहीं है. और बूटी काढ़ि (कछू) लेइगीं नाहीं सो मैं कैसे कढ़ाऊं ? तब श्रीठाकोरजी वह बहूसों कहें, उह क्षत्राणी दैवी जीव है, तातें तू बूटि कढ़ाऊ. कछुक दिननमें श्रीआचार्यजी पधारेंगे, तब वह सेवकनी हूं होयगी. कृपापात्र भगवदीय होयगी. तातें तू बूटि काढ़ाउ, मेरी आज्ञा हैं. तोकों बाधक नाहीं. तब बहूने एक सुफेद बागा उह क्षत्राणीकों दियो. कह्यो, यामें छोटी - छोटी बूंटि काढ़ि दे. तब वह प्रसन्न होय भाग मानिकें अपुने घर ले जाय अपरसमें बूटि काढ़े प्रीतिसों. जदपि कोरे वस्त्रकी चिन्ता नाहीं. तोहू श्रीठाकुरजीको जानि अपरसमें काढ़िकें बहूकों दिये. सो बहुने श्रीठाकुरजीको अङ्गीकार करायो. पाछें जब रात्रि भई तब श्रीठाकुरजीनें उह क्षत्राणीकों सपनमें कही, मैं तेरी बूंटि काढ़ी, प्रीतिसों अङ्गीकार कियो. अब श्रीआचार्यजी दिन दोयमें पधारेंगे. सो तेरे भाईके घर ठाकुर हैं, सो भाईसों मांगिकें अपने घर ले आव. तिनकी तू सेवा करियो. पाछें वह क्षत्राणीकी नींद खुली. सो कहे, जो कब सवेरो होय, कब मैं उह भाई पास जाऊं ? सो सवेरो भयो तब क्षत्राणी भाई पास गई. सो उहां भाई भोजाई होय दिन तें लरे हते. क्लेश करि रसोई न किये हते. तब भाईने कही, बहनि ! आजु तुम कैसे आई ? तब इन कह्यो, मेरी मन अकेलें कहूं नाहीं लागत, सो तुम अपने श्रीठाकुरजी मोकों देऊ तो मैं पूजा करों. तब भाई प्रसन्न होईकें कह्यो, बहिन ! यह भली बात कही. ठाकुर दोय दिन तें भूखे बैठे हैं, मेरी बहू नित्य क्लेश करति है, सो तू ले जा. तब कह्यो, तुम अपने हाथ तें देऊ, मैं ले जाऊं तो कदाचित् तिहारी बहू मोसों लरे. तब भाई नहायकें श्रीठाकुरजीकों दिये. सो प्रसन्न होय घर लाई. रसोई करि भोग धरि महाप्रसाद लिये.

पाछें श्रीआचार्यजी थानेश्वर पधारे तब बहूने कही, जो श्रीआचार्यजी पधारे हैं, मैं दरसनकों जात हों, तू चलेगी ? तब क्षत्राणीनें कही, मैं भाईके यहां तें श्रीठाकुरजी ले आई हों सो घर तें ले जाऊं. तब बहूने कही, बेगे ले आव. तब वह क्षत्राणी श्रीठाकुरजीकों ले आई. बहूके सङ्ग थानेश्वर आई. श्रीआचार्यजीको दण्डोत् कियो. तब बहूनें वह क्षत्राणीके सब समाचार कहे. पाछे बिनती करी, जो महाराज ! अब इनको कृपा करि सरन लीजिये. तब श्रीआचार्यजी कहें, मैं जानत हों. याकी ऊपर श्रीठाकुरजी पहलें ही कृपा करी हैं. पाछें वह क्षत्राणीसों कहें, तू स्नान करि आऊ. तब वह क्षत्राणी सरस्वतीमें न्हायकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु नाम सुनाय ब्रह्मसम्बन्ध कराये. पाछे श्रीठाकुरजीकों पञ्चामृतसों न्हावाय ‘श्रीनवनीतप्रियजी’ नाम धरे, उह क्षत्राणीके माथे पधराये. कहें, मन लगायके सेवा करियो. तब क्षत्राणी और बहू श्रीआचार्यजीकों दण्डोत् करि बिदा होय सिंहनन्दमें आय सेवा करन लागी. सो चौथे दिनतें उह क्षत्राणीकी प्रीति देखि श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागें.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो वह क्षत्राणीको द्रव्य सब निवरि गयो, अकिञ्चन हती. सो सेवा सो पहोंचिकें सूत कांतती. तामें सेवा करि निर्वाह करती. सो घरके द्वारे काछिनी तरकारी फल मेवा आदि बेचनको आवे. तब श्रीठाकुरजी कहें, अरी मा ! तरकारी वारी आई है, तू ले. तब वह क्षत्राणी दमरि दमरिकी सब प्रकारकी थोरि - थोरि लेय. मेबा वारी फल वारी जब आवे तब श्रीठाकुरजी पुकारिकै कहें, अरी मा ! मेवा फल बिकान आये हैं. तब एक पैसामें सब भांतिके लेय. सो वह काछिनी यह जाने, जो याको बेटा घरमें प्यारो बहोत है, सो बाहिर नजरि लागनके लिये नाहीं काढ़ति. सो यह क्षत्राणीकों पहलें दे जाय. सो गाममें कमाई बहोत होय, ताके लिये पहलें दोय चारि बेर द्वार पर बोलि, या बाईको सब भांतिकी देजाय. सो यह क्षत्राणी देय सो ले जाय. सो वह क्षत्राणी कितनी ककडि आदि कच्ची समर्पे. कितनी तलिकें समर्पे. कितनी भुजेना करि, साग या प्रकार रञ्च - रञ्च सब प्रकारसों प्रीतिसों प्रीति पूर्वक करि भोग धरे. और कोई दिन तरकारी वारी दूरि निकसि जाती, तब श्रीठाकुरजी द्वार पर जाय दौरिकें उह काछिनीकों पुकारे. बेगी आऊ, मेरी मा लेयगी. तब वह शब्द सुन्दर सुनि दौरि आवती, श्रीठाकुरजी पुकारिके भीतर भाजि आवतें. तब काछिनी कोऊ देखती नाहीं. तब वह क्षत्राणी कहती, लाला ! बाहिर न जैयें, नजरि लागि जाय. तब श्रीठाकुरजी कहेतें, तरकारी वारीजात चली तो तूं कहां ते लेती ? कहा भोग धरती ? तब वह क्षत्राणी कहती, लाला ! और काछिनी बहोतेरी आवेगी, परन्तु तुम मन्दिर तें बाहिर मति जाऊ. गामके बुरे लोगनकी दृष्टि लागेगी और कबहू तरकारी वारी पुकारिके चली जाय, वह बाई सेवा टहलमें न सुने, तब श्रीठाकुरजी लौकिक बालककी

नांइ आये जगरा करे. जो तरकारी वारी चलि गई. अब तू कहां ते लावेगी ? कहा भोग धरेगी ? साग तरकारी बिना मैं तो नाही अरोगूंगो. तब वह क्षत्राणी कहती, लाला ! मैं तो और काछिनी आवेगी तासो लेउंगी. और जो न आवेगी तो मैं बाजार तें लाय सब प्रकारकी करोंगी. तुम आरि मति करो, प्रसन्न रहो. तब श्रीठाकुरजी बालककी नांई काधे पर चढ़िके कहते कब लावेगी. या प्रकार कृपा करते. और जा दिन पैसा बालभोगकी सामग्री करनकों न होय, ता दिन रोटी चुपरिकें ढांकि धरे. सो श्रीठाकुरजी कबहू प्रहर रात्रि गये, कबहूं आधि रात्रि जागिकें कहते. जो मा ! मोकों भूख लागी है. तब वह बाई कहती, लालजी ! आजु तो पकवान कछू नाहीं है. रोटी है. तब श्रीठाकुरजी कहतें, मोको तुतई करि दे. तब वह बाई रोटीमें घी सगरे लगाय बूरा रञ्च - रञ्च भुरकाय, हाथसों बटिकें श्रीठाकोरजीके हाथमें देती. सो श्रीठाकुरजी दांत सो कुतरि कुतरिकें अरोगते, बालककी नांइ. पाछे जल अरोगि, बीरी अरोगि पौढ़ते. तब वह बाईके मनमें बहोत खेद होतो. जो आजु लालाकों कछू पकवान न बनि आयो. सो पैसा नाहीं हैं. कहूं ते उधारो लाय पकवान करि राखुं. रात्रिकों सूकी रोटी अरोगें. सो एक दिन प्रातःकाल उठि पावलीको घी, खांड उधारो लाय, घर मेंदा छानि दोय चारि भांतिको पकवान करिकें धरि राख्यो. पाछें जब अद्धरात्रि भई तब श्रीठाकुरजी जागे, कहे, मा ! मोकों भूख लागी है. तब वह क्षत्राणी उठिकें पकवान आगे धर्यो. सो श्रीठाकुरजी अरोगिके उह क्षत्राणीसों कहे, जो आजु रोटी क्यों नाहीं धरी ? तेरे पास तो पैसा न हते. पकवान कहां ते कियो ? तब वह क्षत्राणीने कही, कहा करूं लाला ! मेरे कोई कमायवे वारो नाहीं. मेरे पास पैसा नांहीं. सूकी रोटी सबेरेकी धरी अरोगो. सो मेरे मनमें दुःख होतो. तातें पावली उधार करि पकवान किये हैं. सो दोय तीन दिनमें सूत बेचिके देऊंगी. तब श्रीठाकुरजी कहें, मा ! उधारो करज करि पकवान क्यों कियो ? मोकों तो चुपरी रोटी बहोत भावत हैं. करज माथे चढ़ि जाय तो दियो न जाय. जब वह मांगे तब क्लेश होय सो न करिये. आजु पाछें उधारो मति करियो. माकों रोटी रुचत हैं, तातें रोटी घीसों चुपरिकें धरि राखियो. तब वह बाई वैसे ही करती. सूतके पैसा बढ़ते तामें पकवान करती. जो पैसा न होय तो रोटी चुपरिके धरती. ....वार्ता ।।६०।।

भावप्रकाश : जो श्रीठाकुरजी उधार काढिवेको यातें बरजे, जो ऋण है सो हत्या है. श्रीठाकुरजीके सुमिरनमें मन हैं, सो करजवारेनमें जाय. और जंहां तांइ करज न चुकावे तहां तांई बाकी सेवाको फल वाके पास नांहीं. जहां ते करज लियो ताके पास है. तातें श्रीठाकुरजी वह बाईको करज करिवेकी नाहीं करी. तहां वह सन्देह होय, जो वह बाईकों श्रीठाकुरजी या प्रकार बालककी नांई कृपा करि मांगकें अरोगते. तब लक्ष्मीजी तो श्रीठाकुरजीकी दासी हैं

सो वह बाईकों द्रव्य क्यों नाहीं दिए ? जो रोटी धरती. बालभोग करिवेको ऐसो सङ्कोच क्यों भयो ? काहेंतें, ब्रजमें श्रीठाकुरजी पधारें तब लक्ष्मीजी ब्रजमें आय रहीं ! ब्रजकों आश्रय किये. सो आपु पञ्चाध्यायीमें कहे हैं, गोपिकागीतके अध्यायमें. ''जयति तेऽधिकं जन्मना ब्रज श्रयत इन्दिरा शश्चत्रहि.'' सो उह बाई एसी निष्कञ्चन क्यों रही ? यह सन्देह होय तंहा कहत हैं, लक्ष्मी हैंसों श्रीठाकुरजीकी इच्छा प्रमान कारज करत हैं. सो या बाईकों श्रीठाकुरजीकी दासी हैं. श्रीठाकुरजीकी इच्छा प्रमान कारज करत हैं. सो या बाईकों श्रीठाकुरजी द्रव्य यातें नाहीं दिये जो द्रव्य होय तो या बाईके मनको निरोध न होय. तब भक्तनकी आरती कैसे बढ़े ? द्रव्य बिना चरखा काते, तामें श्रीठाकुरजीके लिये मन लाग्यो रहे. अब इतनो होय तो मैं फलादी सामग्री करूं. मेरो लाला रोटी अरोगत हैं. आछो, आछो, कछू जतन करि अरोगाऊं. या प्रकार मन वह बाईको अपनेमें लगायवेके लिये बहोत द्रव्य नाहीं दिये. उतनो ही दिये जामें नित्यको निर्वाह होय. धनको मद न होय. तातें लक्ष्मी भगवद् ईच्छा आधीन है. सो कैसे धन होय ? या बाइको याही प्रकार प्रभु निरोध किये. जहां जैसी प्रभुकी इच्छा है तंहा तैसी लीला करत हैं. और यह सन्देह होय, जो अर्द्ध रात्रिकों श्रीठाकुरजी उह बाई तें मांगते. तब नहायवेकी अपरस, ताको नित्य कैसो विचारी ? और तरकारी वारी पुकारिकें चली जाती तब श्रीठाकुरजी वह वाईके कन्धे पर चढ़िके जगरा करते, तब अपरसता कहां ? सो मन्दिरमें हू अपरसकों विचार कैसे हैं. यह सन्देह होय तहां कहत हैं, श्रीआचार्यजीके पुष्टिमार्गमें श्रीठाकुरजी मर्यादापुष्टि रीतिसों बिराजत हैं. सगरे पुष्टि पुरुषोत्तमके भावसों सगरी सामग्री अरोगत हैं. सगरी वस्तु वस्त्र आभूषनकूं अङ्गीकार करत हैं. और दरसन देवेमें मर्यादा रीतिसों बिराजत हैं. बोलत नाहीं. सो भगवद् स्वरूपमें दोय प्रकारको स्वरूप है. एक भक्तोद्धारक, एक सर्वोद्धारक, जामें मर्यादापुष्टि रीतिसों सबकों दरसन. भक्तोद्धारक स्वरूपके भीतर वह सबकों दरसन नाहीं. सो जहां तांई वैष्णवकों प्रेम न होय तहां तांई मर्यादापुष्टि रीतिसों अङ्गीकार, दरसन हैं. भक्तोद्धारक स्वरूप, सर्वोद्धारक स्वरूपमे तें बाहर प्रगट होय. सो जहां जैसो कार्य होय, बालक होय, तरुन होय, वृद्ध होय, गाय आदि जेसो कार्य करनो होय. ता प्रकारको स्वरूप करि उह भक्तसों बोलें, अनुभव करावें. तथा मर्यादापुष्टि स्वरूप है उनहीके मुख द्वारा बोलें, अनुभव जतावें. सो यह क्षत्राणी मन्दिरमें सगरी मर्यादा, सेवा, अपरस और काम काज करती. श्रीठाकुरजी पधारें, तथा अर्द्ध रात्रिकों श्रीठाकुरजी पास आय मांगे, तहा भक्तोद्धारक स्वरूपमें अपरस नाहीं, उहां केवल प्रेम ही सर्वोपरि धर्म है. पूर्णब्रह्म पुरुषोत्तम आनन्द रूप भक्तनके सङ्ग लीला करें. हंसे, बोले अनुभव जनावें. तहां अपरसकी मर्यादाकी सम्भावना नाहीं. तहां केवल स्नेह, जो सर्वोपरि प्रेम है. सोई कारन है. या प्रकारसों भक्तनके घर पुष्टिमार्गमें श्रीठाकुरजी बिराजत हैं. तातें वैष्णवकों भक्तोद्धार स्वरूप कछू अनुभव जतावत हैं, ता करि जानिकें अपरस न राखें तो अपराध परें. मन्दिरमें श्रीठाकुरजीकी सेवामें पुष्टिमार्गकी मर्यादा सहित सेवा करें. और प्रेममें कछू मर्यादाको अनुसन्धान न रहें, तामें जो कार्य बने सो सब श्रीठाकुरजीकों प्रिय है. तामें कछू छूई न जाय. जानिकें करें, जो श्रीठाकुरजी प्रेमके भूखे हैं, मर्यादाको कहा काम है ? या

प्रकार कल्पित ज्ञान करि मर्यादा छोडे तो उनकों अपराधी भ्रष्ट जाननो. या प्रकारको भेद जानिये.

सो उह क्षत्राणी ऐसी श्रीआचार्यजीकी कृपापात्र, जासों बालककी नाई श्रीठाकुरजी अनुभव करावते. लीलामें हूं उपनन्द गोपकी बहू तहां हू पुत्र भाव यहां हु पुत्र भाव दृढ़ हैं. तातें उह क्षत्राणी बाईकी वार्ता कहां तांई कहिये. .... ।।वैष्णव ६०।।

६८-दामोदरदास माता वीरबाई

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक दामोदरदास कायस्थकी माता, वाको नाम वीरबाईसो सेरगढ़में रहती तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : लीलामें यह पुलिन्दी है. तहां ये 'बनदेवी' इनको नाम. सो गिरिराजके सङ्ग तें इनकों दृढ़ भक्ति भई है. सो श्रीआचार्यजी प्रगटे, श्रीगोवर्द्धनधर प्रगटे, ताते भूमि पर सगरो भगवदीय परिक्रमा प्रगठ्यो है.

सो सेरगढ़में एक कायस्थ द्रव्यपात्र बहोत, सो कासी गयो. तहां कासीमें एक कायस्थके घर वीरबाई प्रगटी हती. सो सेरगढ़ वारे कायस्थसों सगाई भई. पाछे ब्याह भयो. सो वीरबाईके एक बेटा सेरगढ़में भयो. ताको नाम दामोदरदास धर्यो. सो दामोदरदास वर्ष नौके भये. तब सेरगढ़में एक नयो हाकिम आयो सो बहोत खोटो आयो. जाके पास द्रव्य देखे ताकों कछू कलङ्क लगाय सगरो द्रव्य ले लेय. चोरनसों चोरी करावें. तब वीरबाईके पतिने कही अब कैसे करें ? हाकिम सगरो द्रव्य लेयगो. तब वा स्त्रीने कही, सगरो द्रव्य भेलो करि मोकां सोंपि देहू. मैं कासी अपने मा - बापके घर जाय रहूं. जब दूसरो आछो हाकिम आवे तब आऊंगी. जो यही हाकिम रहे तो पाछे तुम हूं कासी चले आइयो. तब वीरबाईके पतिने कही, भली कही. तब कायस्थ सगरो द्रव्य भेलो करि पांच दस दिनमें मोहौर कराय वीरबाई स्त्रीकों सोंपी. दामोदरदास बेटा दोय बेटी सबकों कासी पठाई दियो. सो वीरबाई कासी आय रही. तब महिना चारि पाछें उह हाकिमनें एक ब्राह्मणको कलङ्क लगाय सगरो द्रव्य घर लूटि लियो. वाके घर गौर स्वरूपके ठाकुर बड़े और एक लालजी तिनहूंको गहना, कपरा, वासन हाकिमनें लूटि लियो. तब वह ब्राह्मणकी स्त्री रोवन लागी. तब वह ब्राह्मणनें कही तू रोवे मति. देखि, अब कहा काम होत हैं. सो

हाकिम बजारमें घोरा पर चढ्यो चल्यो जात हतो, तब यह ब्राह्मणने तरवारिलें वह हाकिमके मारी, सो घोरा तें गिर्यो तब छाति पर चढि कटारी पेट पर मारी, सो मरि गयो. वह हाकिमके मनुष्यने उह ब्राह्मणकों मार्यो. या प्रकार दोऊ मरे. यह बात राजा सुनिकें दूसरो हाकिम सेरगढ़ पठायो. सो वह भलो मनुष्य आयो, सबकों सुख दियो. वह ब्राह्मण मर्यो वाकी स्त्रीकों दोय रुपैयाको महिना करि दियो. सेरगढ़में चेन भयो. सो लोग जहां तहां भाजि गये हते सो सगरे सेरगढ़ आये. तब वह ब्राह्मणी ब्राह्मण जाको मार्यो गयो सो वीरबाईके पतिसों कह्यो, जो मोसों अकेलें श्रीठाकुरजीकी पूजा नाहीं बनत, मेरे द्रव्य नाहीं है. तब वह कायस्थनें कही, मेरी स्त्री बेटा, बेटी कासी हैं. अब गाममें चेन भयो है सो यहां बुलावत हों. उनकें आयतें ठाकुर हम राखेंगे. तब वह ब्राह्मणीने कही बहोत आछो. सो वे ठाकुर सेरगढ़की नदी है तहां उह ब्राह्मण आयो तहां ते प्राप्त भये हते. पाछे वह कायस्थ वीरबाईके बुलावेको चार मनुष्य आछे प्रमाणिक गांवके तिनको कासी पठाये. सो आयके वीरबाईसों कहे अब सेरगढ़में दूसरो हाकिम आयो हैं, सो भलौ मनुष्य है. तातें अब तुम सेरगढ़ चलो. तिहारे धनीनें बुलाये हों. तब वीरबाईनें सगरे धनकी पेटी ले बेटा दामोदरदासकों, दोऊ बेटी सहित कासीसों चले. सो मजलि पांच आयकें छोटो सो गाम हतो तहां उतरे. सो चोर पाछें लगे. जब रात्रि पहर पिछली रहि गई तब मनुष्यनकों नींद आई. सो चोरने पेटी लीनी. सबेरे होतो जानि गामके बाहिर रेति धूरिमें गाड़िकें उहां गाममें चोर आय बैठे. सो सबेरो होतो ही वीरबाईने कही, पेटी गई अब कैसें करूं ? मेरो तो सगरे घरको द्रव्य वामें हैं. पाछे वा गामके लोगनसों पूछें, वे कहें, हम कहा जाने ? तब वीरबाई तलाब पर बैठि रुदन करन लागी. सो श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमा करत उह तलाव पर पधारे, प्रातःकालकी सन्ध्या किये. तब बाई रुदन करत ही ताकों देखे. जो ये दैवी जीव ऐसी दुःखी क्यों हैं ? तब वासों पूछे, ऐसो ताकों कहा दुःख पर्यो है ? तब वीरबाईने कही, महाराज ! मोकों महादुःख पर्यो हैं. कुटुम्ब तो बहोत और द्रव्य हूं बहोत हतौ, सो पेटी रात्रिकों चोरी गई. अब मेरो यहां कोई नाहीं. किनसों अपनो दुःख कहूं ? पाछे जा प्रकार कासीसों आई सो सब कह्यो. तब श्रीआचार्यजीको दया आई, कहें, रोवे मति श्रीठाकुरजी सब आछी करेंगे. तब वीरबाई दण्डोत् करि कह्यो, महाराज ! यह द्रव्य मिलें तो आदो आपु लेऊ, और हमारे सगरे कुटुम्ब आदि आपुकी कृपा तें जीवें. और मैं आपुकी दासी होय जन्म भर यह गुन आपुको न भूलोंगी. तब श्रीआचार्यजी कहे. तू दैवी जीव है सो हमारी है. हमकों द्रव्य तेरो नाहीं चहिये. पाछे कृष्णदास मेघनसों श्रीआचार्यजीमहाप्रभुने कही, चोरननें धूरिमें पेटी गाड़ी हैं. सो जायकें याकों बताय आऊ. तब कृष्णदास वह वीरबाईके सङ्ग जाय बताये. सो वह धूरि डारि पेटी ले श्रीआचार्यजी पास आय आगे धरि दिये. (और कहे) महाराज ! आपु आधो मोकों दीजिये. आधो आपुको हैं. यह अपुको दियो मोकों मिल्यो है, मोकों सेवक कीजिये. तब श्रीआचार्यजी कहें, अब ही तू मार्गमें हैं. सो हमारे पुष्टिमार्गको धर्म बनेगो नाहीं. तू कछू समुजति नाहीं. तातें द्रव्य ले सेरगढ़ जा, हम सेरगढ़ पधारेंगे तब ताकों सेवक करेंगे. तू कहेगी सो करेंगे. तब बाई बिनती करिकें कहें, महाराज ! आपु तो साक्षात् ईश्वर

हों, मैं द्रव्य देति हो सो नांही लेत तो सेरगढ़ काहेकों पधारोगे ? आपुको दरसन परम दुर्लभ हैं. तातें श्रीठाकुरजीने मोपर बड़ी कृपा करी, जो आपु दरसन दिये, तातें माकों नाम सुनावो, द्रव्य आधो लेऊ. तब श्रीआचार्यजी कहें तेरे गाम आयके तोकों सेवक करनो हैं. उह ब्राह्मण मार्यो गयो ताकी स्त्री पास श्रीठाकुरजी हैं, सो तेरे माथे पधरावने हैं. तातें हम सेरगढ़ निश्चय पधारेंगे. तब तेरे कार्य होयगो. तब वीरबाईने कही, महाराज ! सरीरको निश्चय नाहीं हैं. और आपुके साम्हें मोकों बहोत बोलनो अपराध हैं. तातें मेरे माथे चरन धरि आपु कहो, जो सेरगढ़ पधारेंगे. सो आपुके चरन धरे तें मेरो मन सुद्ध रहेगो. तब श्रीआचार्यजी वीरबाईकी प्रीति देखि बहोत प्रसन्न भये. अपने चरणारविन्द वीरबाईके माथे धरिके वचन दिये. जो हम सेरगढ़कों चली. कछुक दिनमें सेरगढ़ आई. अपने पतिसों सगरी श्रीआचार्यज*ीकी बात कही. जो या प्रकार कृपा करी हैं. और श्रीआचार्यजीनें एक ब्राह्मणीके यहां ठाकुर */बताये, गौर स्वरूप कहें, सो तेरे घर पधरावेंगे, सो वह ब्राह्मणी कौन है ? तब वीरबाईके पतिनें कही, वह ब्राह्मणी अकेली रही, वाको पति तो मार्यो गयो. सो नित्य कहत है, मेरे ठाकुर पधरावो. तब वीरबाईने पतिसों कही, ढील मति करो, उह ठाकुर अपने घर लाय राखो. श्रीआचार्यजी बचन करिकें लीजो. फेरि देयंगे नाहीं. तब वाईको पति उह ब्राह्मणी पास जाय कह्यो, जो अब हमारी स्त्री, बेटा, बेटी सब कासीसों आये हैं. तातें श्रीठाकुरजी देने होय तो देऊ, नाहीं तो हम और ठाकुर पधरावेंगे. तब ब्राह्मणीनें कही, मैं तो तुमसों पहले ही कहीं मोसों पूजा नाहीं होत. तुम अबही ले जाव. तब इन कही, कदाचित् फेरि तुम कबहूं श्रीठाकुरजीकों मांगो, तो मैं न पधराऊंगो. तब वह ब्राह्मणीने कही, मैं तो तुमसों पहले ही कहीं मोसों पूजा नाहीं होत. तमु अबही ले जाव. तब इन कही, कदाचित् फेरि तुम कबहूं श्रीठाकुरजीकों मांगों, तो मैं न पधराऊंगो. तब वह ब्राह्मणीने कही, मैं अब कहां पधराऊंगी ? द्रव्य नाहीं, मनुष्य मेरे घर नाहीं. तब इन कही, एक ठाकुर मैं लेहू, एक तुम लेऊ. मेरे घर पधराय आवो. तब वह ब्राह्मणी लालाजी लियो, बड़े गौर स्वरूपकों उह कायस्थ ले आयो. दोनों स्वरूपकों अपुने घर पधरायो. पाछे चारि दिनमें श्रीआचार्यजी सेरगढ़ पधारे. सो नदीके तीर एक बागमें उतरे. तब कृष्णदाससों कही, उह वीरबाईकों खबर हमारी जताईयो, लाईयो मति. वाको मन प्रसन्न होय तो आवे. तब कृष्णदास गाममें गये, और वाके बेटा दामोदरदासकों देखिके कहे, तू घर जाय, अपनी मातासों कहियो, जो नदीके तीर बगीची है, तहां श्रीआचार्यजी पधारे हैं. यह कहि कृष्णदास श्रीआचार्यजी पास आय कहें, जो वीरबाईको बेटा दामोदरदास मिल्यो तासों कहि आयो. जो श्रीआचार्यजी पधारे हैं. तब दामोदारदासनें अपनी मातासों जायके कह्यो, श्रीआचार्यजी पधारे हैं सो मोसों उनको एक सेवक कहि गयो है, सो मैं तोसों कह्यो. यह सुनत ही वीरबाई दौरि आई. बगीचीमें आय श्रीआचार्यजीकों दण्डवत् करि बिनती करी, जो महाराज ! घरमें पधारिये. सगरे कुटुम्बकों सरनि लीजिये. श्रीठाकुरजी आप कहे हते सो घर में लाय राखे हैं, सो मेरे माथे पधराइये. तब श्रीआचार्यजी कहें, तू दैवी जीव है, तोसों भगवद् सेवा बनेगी. तातें तोकों नाम और ब्रह्मसम्बन्ध दोऊ करावने हैं. और तेरे कुटुम्ब साधारण जीव हैं, तिनकों नाम सुनावेंगे. तेरे

सङ्ग तें सेबको उद्धार होयगो. तातें तू नदीमें न्हाय आव. तब वीरबाई नदीमें नहाय आई. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु वाकों नाम सुनाय ब्रह्मसम्बन्ध कराय कहे, अब तू घर जा, तेरे पतिकों पठाइयो. तब हम तेरे घर पधारेंगे. तब वीरबाई घर जाय पतिसों कही, नदी तीर बगीचीमें श्रीआचार्यजी पधारे हैं, सो विनती करिके पधरावो. सेवक सगरे होऊ, कृतार्थ हाऊ. तब वह पति कह्यो, तू हु सङ्ग चलि. पाछे स्त्री पुरुष दोऊ आय श्रीआचार्यजीसों बिनती करि घर पधराये. सबकों श्रीआचार्यजी नाम सुनाये. पाछें श्रीठाकुरजीकों पञ्चामृत स्नान कराय पाट बैठाये. वीरबाईके माथे पधराये. बड़े गौर स्वरूप हते. तिनको नाम 'श्रीकपूररायजी' धरे. लालजी हते तिनको नाम 'श्रीनवनीतप्रियजी' धरे. और आगें किये, हिंडोरा, पालनासों श्रीनवनीतप्रियजीकों जुलाये. पाछें वीरबाईनें श्रीआचार्यजीसों बिनती करिके पांच दिन घरमें राखे. पुष्टिमार्गीयकी सेवाकी रीति सब सीखी. पाछे आधो द्रव्य श्रीआचार्यजीको धरि राख्यो हतो सो भेट कियो. पाछे श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमाकों पधारे.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो वीरबाई श्रीठाकुरजीकी सेवा बहोत प्रीतिसों करन लागी. कछुक दिननमें श्रीठाकुरजी सानुभवता जनावन लागे. पाछे वीरबाईके गर्भ रह्यो. तब घरी होय रात्रि पिछली रही तब बेटा भयो, सो लोग सगरे बेटाकी बधाई, ज्ञाति व्यवहारमें लागे. श्रीठाकुरजीकों चारि घरी दिन चढ़ि गयो. तब वीरबाई बहोत ही दुःख करन लागी, जो मेरे श्रीठाकुरजीकों अवेर भई. सबसों कहें, जो श्रीठाकुरजीकों काऊ जगावो. सो कोऊ जगावे नाहीं. ऐसे करत प्रहर दिन चढ़यो. तब तो वीरबाई मनमें महा ताप करिकें रोवन लागी. जो यह पुत्र पापी कहां ते याही समय भयो ? जो मेरे ठाकुर काल्हिके पौढ़े हैं कोई जगावत नाहीं, अब मैं कहा करूं ? या प्रकार अत्यन्त विरह भयो. तब श्रीठाकुरजी सज्यामें ते बोले, जो तू रुदन काहेकों करत हैं ? कोऊ नाहीं जगावत, तो तू ही माकों जगाव. तब वीरबाईने कही, महाराज ! मैं यह अघोर नर्कमें परी हों. कैसें तुमकों छूवों ? तब श्रीठाकुरजी कहें, गोबर लगाय स्नान करि काछ बांधिकें मोकों तू ही जगाव. मैं और तें सेवा न कराऊंगो. मेरी आमा है, ताकों यामें अपराध नाहीं. तब वीरबाई उठिके गोबर लगाय, आछे न्हाय काछ मारिकें श्रीठाकुरजीकों जगाये. पाछे मङ्गला करिकें शृङ्गार करि, रसोई करि, भोग धरि प्रसाद ले पड़ी रही. या प्रकारसों तेरह दिन पाछें अपरस काढ़ी. पाछें चालीस दिन भये तब सगरे वस्त्र पात्र काढ़ि अपरस नई करी. श्रीठाकुरजीकों पञ्चामृतसों न्हवाय सुद्ध होय पुष्टिमारगकी रीतिसों सेवा करन लागी. तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न होय वीरबाईसों कहें. तू मेरी हू आज्ञा मानी जो सूतकमें सेवा करी. पाछे मारगकी रीतिसों अपरस हू काढ़ी. तातें मैं तो पर बहोत प्रसन्न हों. या प्रकार वीरबाईके उपर श्रीठाकुरजी प्रसन्न होय पिण्डरूमें हू सेवा

कराई. परन्तु और सो न कराई. सो वीरबाई ऐसी श्रीआचार्यजीकी कृपापात्र भगवदीय हती. इनकी वार्ता कहां तांई कहिये. ....वार्ता ।।६१।।

भावप्रकाश : यामें यह जताये, जो बहोत सुद्ध होय, उत्तम होय, तोऊ प्रीति बिना श्रीठाकुरजी सेवा न करावे. और करे तोऊ प्रीति बिना सेवा मानें नांही. और कैसेहू अपवित्र, हीन, नीच, होय ताकों प्रीति होय तो ताहिसों भगवद् सेवा करावे, याहि प्रकार सूतक, पिण्डरू तथा महिनाके महिना अटकावमें हू वीरबाई सेवा किये, घरमें, कुटुम्ब परिवार बहोत हतो तासों सेवा न कराई. और वाकी वार्ता अनिर्वचनीय है. जैसें पुलिन्दीकों कुमकुम चरणारविन्दको, ताहि द्वारा सब रसको अनुभव करायें. सोई पति भावसों, इहां हू सगरे रसको अनुभव कराये. सो वार्ता कही न जाय. तातें इतनी हू लोक वेद विरुद्ध वार्ता कही है. सो प्रेमकी रीति अटपटी है. भगवदीय यह भेद जानें, तिनहूके सुनन जोग हैं. औरकों ऐसी वार्ता पर विश्वास न उपजें. सो वीरबाई सदा श्रीठाकुरजीकी लीला रसमें मगन रहती. प्रथम गिरिराजजी परम भगवदीय हरिदासराई तिनको सङ्ग हैं. तातें इनको भाव अनिर्वचनीय हैं. .... ।।वैष्णव ६१।।

६९-दोऊ स्त्री पुरुष क्षत्री सिंहनन्दके

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, दोऊ स्त्री पुरुष क्षत्री सिंहनन्दके वासी, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ये लीलामें दोऊ विसाखाजीकी सखी हैं. पुरुषको नाम 'रङ्गा' स्त्री नाम 'हंसा' सखी. सो ये दोऊ श्रीयमुनाजी स्नानकों गई. तहां इनकों श्रीठाकुरजी मिले. सो नाना प्रकारकी विहार लीलामें मग्न होय गई. पाछें जल विहार करन लागी तब श्रीस्वामिनिजी और विसाखाजी श्रीयमुनाजी नहायवेकों पधारी. तब श्रीठाकुरजी श्रीयमुनाजी तें निकसि वृक्षनकी आड़में ठाड़े भये. और ये दोऊ सखी चक्रत होय जलमें ठाड़ी रहीं. तब श्रीस्वामिनीजी पुकारिके कहें, रङ्गा, हंसा, हमारे पास आवो. सो इनको मन श्रीठाकुरजीमें लग्यो, जो कब फिरि आवें ? तातें ये सुने नाहीं. तब विसाखाजीनें पुकार्यो, रङ्गा हंसा यहां आवो. तऊ न आई. तब विसाखाजी कहें, ऐसो मान गर्व भयो, जो इतनो बुलायो जुवाब नाहीं दियो. भूमिमें गिरो, तब दोऊ गिरीं. सो सिंहनन्दमें दोय क्षत्रीके घर हते, तहां दोऊ, प्रगटें. समय पाय वरष दसके भये. तब दोऊनको विवाह भयो. तब दोऊनके मनमें वैराग्य आयो. सो दोऊ अपने मनमें आपुसमें

बतराये जो विषय आदि सुख तो पशु, पंछीमें हू हैं, तातें श्रीठाकुरजीने मनुष्य देह दियो तो ब्रतादिक करि देह इन्द्रिकों दमन करिये. तब दोऊननें ब्रत साध्यो, भूमि पर सोंवें. नित्य फलाहार लेय, कबहूं दूध कबहूं जलादि, एकादशी निर्जल करें. कार्तिकमें एक दिन फलाहार, एक दिन निर्जल. या प्रकार ब्रत करि सरीर दोऊननें सुखाय डार्यो. तब दोऊनके मा बाप खीजन लागे. जो तुम अब ही तें ऐसो कष्ट करत हो, सो कोईके लिये ? अब ही तो तिहारे खायवे पहिरवेके दिन हैं. आछे भोग भोगो, श्रीठाकुरजी चारि पैसा दियो हैं सो संसारके सुख करो. तब दोऊ जने कहें, संसारके सुख कुत्ता, गदहा होय सो करें. हम तो ब्रत करेंगे. तब वे चुप होय रहे. पाछे एक दिन दोऊ माघ महीना नहात हते, सरस्वतीमें. ता समें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु थानेश्वर पधारे. सो सरस्वती पर सन्ध्यावन्दनकों पधारे. तब दोऊकों जलमें ठाड़े देखिकें थानेश्वरके वैष्णवसों पूछें, ये दोऊ स्त्री पुरुष कौन हैं ? ऐसें सीतमें जलमें ठाड़े हैं, महा दुर्बल. तब वैष्णवनें कही, महाराज ! ये दोऊ क्षत्रीके बेटा, बेटी हैं, स्त्री पुरुष. ये लौकिक संसारको सुख नाहीं जान्यो. ब्रत सदा करत हैं, अन्नकी वस्तु लेत नाहीं. महा कष्ट करि देह सुखाय डारे हैं. मा बाप काहूको कह्यो मानत नाहीं. तब श्रीआचार्यजी कहें. इनकों हमारे पास लावो, कोई उपाय करि. तब वैष्णव पार जाय दोऊनसों कहें, तुम पार चलो तो श्रीआचार्यजी बुलावे हैं. तुमकों ब्रतको जो फल चहिये सो मिलेगो. तब दोऊ सुनिकें प्रसन्न भये, वैष्णवके सङ्ग पार आये. तब श्रीआचार्यजीकों दण्डौत् करि ठाड़े रहे. तब श्रीआचार्यजीनें कही, तुम ऐसो कष्ट सहिकें ब्रत करत हो, सो मनोरथ कहा है ? जो तुमकों फल चहिये सो लेहु. तब दोऊनें कहीं, महाराज ! फल तो बहोत बड़ो चाहत हैं, और साधन तुच्छ करत हैं. सो फल कैसें मिलेगो ? तब श्रीआचार्यजी कहें, तुम कहो तो सही. तब दोऊनें कही, हमकों यह मनोरथ हैं, जो या जन्ममें याही सरीरसों श्रीठाकुरजी हमसों बोले, कृपा करें. सो श्रीठाकुरजी तीर्थ, ब्रत किये, साधनसों कैसें मिलेंगे ? तातें हम कहा करें ? हारिकें ब्रतादिक करि सरीर छोड़ेगें. और उपाय कछू जानत नाहीं. तब श्रीआचार्यजी कहें, इतनो कष्ट ब्रत करि सरीरकों देत हों. सो श्रीठाकुरजीके सेवा सुमिरनमें सरीर, मन लगावो, तो याही जन्ममें प्रभु कृपा करें. तब स्त्री - पुरुष दोऊननें कह्यो, महाराज ! श्रीठाकुरजीकी सेवा कैसें बनें ? हमनें ता कछू नाहीं पास राख्यो. यह दोय कपरा मेले पहरे हैं. और मा बापके पास द्रव्य है सो संसार सुखके लिये जो मांगे सो दोई. परन्तु परमार्थकें अर्थ श्रीठाकुरजीके नाम पर एक कोड़ी न देइंगे. हमसों द्वेष करत हैं. सो भगवद् सेवा बिना द्रव्य कहां ते होय ? तब श्रीआचार्यजी कहें, जो वे द्वेष करें तामें तो तुमकों आछो है. बहिर्मुखसों बोलनों मिट्यो. और सेवा लायक तुम दोय चारि आठ घरी कछू उद्यम करोगे तो वाहीमें तुमकों निर्वाह जोग मिलेगो, ताहिमें निर्वाह करियो. सेवा अर्थ सरीरकों कष्ट होय तब धीरज धरि दुःख सहो तो श्रीठाकुरजीसों सह्यो न जाय. तुमकों अनुभव जतावेंगे. तातें हम थानेश्वरके वैष्णवसों कहि देइंगे, तुमकों उधारो देइंगे. व्यौपार हू सिद्धि करि देइंगे. परन्तु तिहारो मन भगवद् सेवा करनमें होय ते उपाय श्रीठाकुरजी सब करेंगे. जो मन न होय तो तिहारी तुम जानो. तब दोऊनने कही, महाराज ! हमारो मन तो

बहोत हैं. मा बापके प्रतिबन्धसों डरपत हैं. तब श्रीआचार्यजी कहें, तुम मा बापके प्रतिबन्धसों मति डरपो. हम कहें तेसो करो. तिहारो सगरो मनोरथ पूरण होयगो. तब दोऊ प्रसन्न होय कहें, महाराज ! हम आपकी सरनि हैं. जा प्रकार हमारो भलो होय सो करो. तब श्रीआचार्यजी कहें स्नान करि आये, अपरसमें तो तुम हों, आगे आवो. तब दोऊ आगें आये. तब नाम निवेदन करायो. पाछे श्रीआचार्यजी थानेश्वरके वैष्णवनसों कहे. अब इनके लिये श्रीठाकुरजीको स्वरूप ठीक करो. तब एक नामधारी वैष्णव थानेश्वरको हतो, वाने कह्यो, महाराज ! मेरे दोय स्वरूप हैं, सो एक लालजीमैं देउंगो. तब श्रीआचार्यजी कहें यहां बेगे लाऊ. तब वह नामधारी वैष्णव स्वरूप ले आयो. तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु पञ्चामृतसों स्नान कराय स्त्री - पुरुषके माथे पधराये. पाछें सिंहनन्दके वैष्णव श्रीआचार्यजीके दरसनकों आये हते तिनसों कहें, ये दोऊ स्त्री - पुरुष हमारे हैं. तातें इन दोऊ, कोई प्रकारसों दुःख न पावें, सो करियो. तब वैष्णव कहें, महाराज ! हम प्रानकी नाई इनकों जो चहिये सो सिद्ध करि देंइंगे. ता समय सास बहू दरसन करनकों आई हती. सो कही, मेरे घरमें जगह बहोत हैं, सो मैं इनकों देऊंगी. सेवा सम्बन्धी सब सिद्ध करि देऊंगी, सिंघासन, सिज्या, आदि. तब श्रीआचार्यजी स्त्री पुरुषसों कहें. तुम बहूके सङ्ग जाव. तुम पर प्रभु बेंगे कृपा करेंगे. और जहां तुम रहोगे तहां सुख पावोगे. जामें पुष्टिमार्ग धर्म सिद्ध होय सो कार्य करियो. तब स्त्री पुरुष श्रीआचार्यजीको दण्डोत् करि वह बहूके घर आये. तब न्यारा जगह करि तहां श्रीठाकुरजीकों पधराये. एक वैष्णवसों रुपैया २२) मांगि लाये उधारे, सो सामग्री लाये. रसोई करि श्रीठाकुरजीकों भोग धरि महाप्रसाद लिये. साधन ब्रतादिक सब छोड़ि दिये, विष्णुपञ्चक ब्रत करे. जयन्ती और एकादसी राखे, इनकों विष्णुपञ्चक कहे हैं. जो ये पांचों ब्रत, चार जयन्ती, एकादशी विष्णुसम्बन्धी हैं. सो वैष्णव बहोत सन्मान करिकें कहें, तुम दुकान करो तो द्रव्य लेऊ. चाकरी करो तो महिना लेऊ. जामें तिहारो मन प्रसन्न होय सो करो. तब इन कही मेरो नाम दलाली करिवेमें हैं, तब दलाली करें. सो वैष्णव प्रीति करि रुपैया दोय रुपैया नित्य इनकों पैदा कराय देई. सो बाइस रुपैया करज हु दे डारे. और भगवद् सेवा करन लागे. तब स्त्री पुरुष दोऊनके मा बाप इनकी निन्दा करन लागे. जो पहलें तो दोऊ बड़े त्यागी हते. अब वैष्णवसों भीख मांगिकें निर्वाह करत हैं. पराये घरमें जाय रहे. सो हमकों लाज लगावत हैं. ऐसोई करनो हतो तो काई और गाममें जाय रहते. ठाकुर ले बड़े भक्त भये हैं, लोगनकों ठगिवेकों. यह बात सबसों कहें. सो एकने यह पुरुषसों कही. तब पुरुषके मनमें बुरी लागी. तब स्त्रीसों आय कही. जो तेरे मा बाप, हमारे मा बाप या प्रकार जहां तहां निन्दा करत हैं. तब स्त्रीनें कही, जो तुमारे हमारे, मा बाप सांचे हैं. अपने पास कहा हतो, एक कोड़ी न हती. सो वैष्णवने श्रीआचार्यजीके सेवक जानिकें करि दियो हैं. सो अब अपने सुखी हैं. परन्तु या प्रकार श्रीठाकुरजी सेवा मानेंगे नाहीं. अपुनो धर्म नास भयो. वैष्णवसों पूजायके धन ले निर्वाह अपुनें किये. सो अपनेकों धिक्कार हैं. तातें ऐसे ठिकाने चलो जहां अपनें कोऊ वैष्णव जाने नाहीं. तहां जो कमायके लावो, सो भोग धरि निर्वाह करेंगे. तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न होयगें. तातें अपनें मा बाप

सांचे निंदा करत हैं. अपुने निंदा ही जोग हैं. काहेतें, श्रीठाकुरजी प्रसन्न करिवेके लिये श्रीआचार्यजीकी सरनि आये, सेवा पधराये. कछू वैष्णवसों पूजायवेके लिये, अपुनी बड़ाईके लिये वैष्णव नाहीं भये. तातें अपनो धर्म राख्यो चहिये. होंय तो श्रीठाकुरजीकों ले, या गाम ते और ठौर कछुक दूरि निकसि चले. यह बात स्त्रीकी सुनिकें पुरुषनें कही, तू धन्य, तू धन्य, जो ऐसी बात सिक्षाकी कही. पाछें सब तयारी करि सास बहूसों कहें, तिहारी वस्तू सब सम्भारि लेहू. तब सासने कही, हमारो कछू अपराध होय तो कहो. तब बहूने कहीं अपराध नाहीं. अब इन पर श्रीआचार्यजीकी कृपा भइ, पूरन भई. तब सास बहूसों सीख ले श्रीठाकुरजीकों पधराय स्त्री पुरुष निकसि चलें काहू वैष्णवकों, मा बापकों जताये नाहीं.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो वे दोऊ कछुक दिनमें आगरे आय रहें. सो एक कोठा भाड़े लियो. जगह निपट छोटी. सो एक आलामें श्रीठाकुरजी पधराये. आलाके आगें लकरी माटीसों मेंरा बांधि बढ़ाये. तापर सज्या रहेतो. एक और रसोई, एक और सीधा सामग्री धरें. रात्रिकों स्त्री पुरुष कोठरीके द्वार पर सोय रहें. द्वार पर मारग हतो, सो सीतकाल, उष्णकाल तो या प्रकारसों बितायो. पाछें वर्षा ऋतु आई. सो रात्रिकीं मेह बरसे कोठाके द्वार पर दोऊ बैठे भीजें. ऐसे करत अर्द्ध रात्रि भीजते बीते. तब श्रीठाकुरजी भीतर मन्दिरमें ते बोले, वैष्णव ! तुम क्यों भीजत हो ? बाहर ते भीतर आवो. तब स्त्री पुरुषने कही, महाराज ! कोठो निपट छोटो है. हमारी मल मूत्रकी देह, हम आपुके पास कैसें सोवें मर्यादी रहे नाहीं. तब श्रीठाकुरजी कहें हमतो ऊपर चौबारेमें है, तुम नीचे आवो. तुम भीजत हो सो हमकों बहोत दुःख है. तुम भीतर आवो तो हमको सुख होय. तब दोऊ स्त्री पुरुष भीतर आय धरती पर सोये. सो सगरी रात्रि डरपत रहे. जो छींक, खांसी, वायु सरेगो तो अपराध परेगो. यह भय करत रहे. पाछें सबेरो भयो तब श्रीठाकुरजीसों पहोंचिकें स्त्री पुरुष मनमें विचार किये, जो वर्षाऋतु आई. अपुनें भीतर सोवनो नाहीं. बाहर सोवें तो भीजें, श्रीठाकुरजी दुःख पावें. तातें एक छोटोसो छपरा द्वार बनावनों. तब एक छपरा द्वार पर बनवाय दोऊ स्त्री पुरुष बाहिर आय सोये. श्रीठाकुरजीने कही, भीतर क्यों न सोये ? हमारी आज्ञा हती. तब दोऊ जनेन कही, महाराज ! हम लौकिक जीव हैं, सो अनोसरमें पास आछो नाहीं आवनो. आपुकी आज्ञा करें भीजत नाहीं, छपरा नीचे हैं. तब श्रीठाकुरजी सुद्ध भाव देखि अनुभव जनावन लागें. मांगे, मांगिके अरोगते. सो स्त्री पुरुष ऐसे श्रीआचार्यजीके कृपापात्र हते. बड़े भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ता कहिये. .... ।।वार्ता ६२।।

भावप्रकाश : इनकी वार्तामें यह सिद्धान्त भयो, जो ठाकुरजीसों डरपत रहनों. अपराध परे तो बाधक होय. दासको यह धर्म है, जो स्वामीको भय राखें. प्रीतिसों सेवा करे, और अपनो धर्म गोप्य राखे, तो श्रीठाकुरजी प्रसन्न होय. सो स्त्री पुरुषकी ऐसी प्रीति हती. ....वैष्णव ।।६२।।

७०-एक सुतार अडेलको

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, एक सुतार खाती घरको काम करतो, सो अड़ेलमें रहतो. तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : यह लीलामें श्रीठाकुरजीके अन्तरङ्गी 'श्रीदामा' सखाको प्रागट्य है. श्रीस्वामिनीजी श्रीदामोदरजी जो लिला करें ताको अनुभव करे. सो श्रीस्वामिनीजीको श्रीदामा भाई लागे. श्रीठाकुरजीको अन्तरङ्गी सखा है. तातें लीलाको सहायक हैं. सो श्रीस्वामिनीजी सगरी बात श्रीदामासों पूछती. सो एक दिन श्रीदामा श्रीठाकुरजीके कांधे पर खेलमें चढ्यो, यह बात श्रीस्वामिनीजी सुनिकें अप्रसन्न भई. जदपि श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजीकों समुजाये. श्रीबोधिनीजीमें कहे हैं. श्रीदामा मालाकार माला रूप हैं. तातें श्रीठाकुरजी कांधे पर धरे. यह कहे, तऊ श्रीस्वामिनीजीकों आछो न लग्यो. सो शाप दियें, जा भूमिमें गिरि. तब श्रीदामा सूतारके घर अड़ेलमें जन्मे सो जब सुतार वर्ष तेईसको भयो. तब श्रीआचार्यजीको दरसन करत ही मन आसक्त होय गयो. तब दण्डोत् करिकें बिनती कियो, महाराज ! मोकों सरनि लीजिये. तब श्रीआचार्यजी कहे, तुमसों पुष्टिमार्गीय धर्म कैसे निबहेगो ? ज्ञातिमें खानपान. तब सुतारने विनती करी, महाराज ! माकों घरसों कहा काम है ? मैं तो आपुके पास बैठ्यो आपुके दरसन करूंगो. आपु बिना एक क्षण मोसों रह्यो नाहीं जात है. तब श्रीआचार्यजी कहें, जा, श्रीयमुनाजी स्नान करि आऊ. तब वह सुतार न्हायकें श्रीआचार्यजी पास आयो. तब श्रीआचार्यजी वाकों नाम निवेदन करवाये.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो सुतार श्रीआचार्यजीके स्वरूप पर आसक्त होय गयो. सो श्रीआचार्यजीके पास बैठ्यो दरसन करे, सो उह सुतारके घरके सब भूखन मरन लागे. तब वह सूतारके कुटुम्बी, माता, स्त्री, श्रीआचार्यजीके माताजी पास आय एल्लमागारुजीसों कही. यह सुतार रात्रि दिन आचार्यजीके पास रहत हैं, सूतारको काम कछू करत नाहीं. हम खान पान कहां तें करें ? तातें तुम श्रीआचार्यजीसों कहियो. तब माता एल्लमागारुजीने श्रीआचार्यजीसों कही, तुम सूतारके पास क्यों बैठत हो ? वाके घरके भूखे मरत हैं. तातें याकों घर

बिदा करो तो अपने कामकों जाय. तब श्रीआचार्यजी वह सुतारसों कहे, तुम अपने घर जाव, काम काज करो. तब सुतारने कही, महाराज ! आपुके दरसन बिना मोसों रह्यो नाहीं जात. तब श्रीआचार्यजी कहें, हमारी माताजी खीजत हैं, तातें तमु घर जाव, काम काज करो अपनों. हम तेरे पास आवेंगे. तब वह सुतार दण्डौत् करि घरमें आय काम काज करे. परन्तु मन श्रीआचार्यजीमें, जो कब पधारंगे ? कब मोकों दरसन होयगो ?

सो वह सुतारकी आरति प्रीति जानि आपु वाके पास पधारें. तब काम काज छोड़ि श्रीआचार्यजीसों वार्ता करन लाग्यो. सो नित्य ऐसें करे तब वह सुतारके घरके फेरि एल्लमागारुजी माताजीसों आय कहें, जो श्रीआचार्यजी सुतार पास जाय बैठत हैं. तब वह काम काज छोड़िके वार्ता करत है. तातें तुम श्रीआचार्यजीसों कहियो. तब एल्लमाजीनें कही, तुम सुतारके घर क्यों जात हो ? या बातमें आछो नाहीं. सुतार पास मति बैठो. तब श्रीआचार्यजी कहें, ऐसें ही करेंगे. तऊ वाकी प्रीति ऐसी, जो श्रीआचार्यजी एक बार उह सुतारकों दरसन दे आवते. घरी दोय घरी वार्ता चर्चा करि आवते. ऐसी कृपा करते.

भावप्रकाश : यामें अभिप्राय यह, पहले वाको सरनि लिये, पास बैठारि वार्ता करि वाको मन स्वरूपमें लगायो. परन्तु विरह बिना रस हृदयारूढ होय नाहीं. तातें वाके कुटुम्बके मिस करि, वाको घर पठाय विरह करायें. सो विरह दुःख सह्यो न जाय. तातें आपु पधारते उहां बैठते. फेरि वाके कुटुम्बके मिस एक घरी दोय घरी बैठते. पाछे आपुकों पृथ्वी परिक्रमा पधारनो हैं. वाकों ऐसे ही छोड़ि जांय तो विरह दुःख करि व्याकुल होय. तातें अपुने आगे ही विरह कराय वाकों ऐसो करि दियो, जो हृदयमें श्रीआचार्यजीको दरसन अष्ट - प्रहर होय, या प्रकार वाकों दरसन दिये. जैसे ब्रजमें श्रीठाकुरजी प्रगटे, तब ब्रजभक्तकों दरसन दे प्रेम बढ़ाये. सो ऐसो प्रेम बढ्यो जो पलककी ओट जुग बीते. पाछे विरह बढ़ायवेके लयें गोचरन लीला कियें. तामें सगरो दिन वेनुगीत, जुगलगीत, गायकें निर्वाह करें. सन्ध्या समयकी आसा लगाय रहें. पाछे मथुरा पधारिवेके मिस रात्रि दिनको विरह दिये. परन्तु इतनो सन्तोष जो मथुरा पास हैं, अब आवें. तब द्वारिका पधरिवेके मिस पूर्ण बिरह कराय रात्रि दिन सगरे ब्रजभक्तनकों स्वरूपानन्दको अनुभव जनायो. तेसेई कृपा करि उह सुतारकों पूरन विरह कराय हृदयमें स्वरूपानन्दको अनुभव कराये. तब वह सूतारकी बाहिर दृष्टि हती सो भीतरकी दृष्टिसों घरमें मगन रह्यो. पाछे आपु पृथ्वी परिक्रमाकों पधारें. ....वैष्णव ।।६३।।

सो वह सुतार एसो कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें वाकी वार्ता अनिवर्चनीय है. सो प्रकास नाहीं किये. ....वार्ता ।।६३।।

७१-एक क्षत्री पूरबको

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुके सेवक, एक क्षत्री हतो. सो पूर्वमें रहतो पटनाके चारि मजलि आगे, ता क्षत्रिकों एक अन्यमार्गीयसों सङ्ग हतो, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : लीलामें उह क्षत्री है सो कुमारिकाके जूथमें हैं. लीलामें इनको नाम 'मोहनी' हैं. और उह अन्यमार्गीय मोहिनीकी सखी 'लक्षनि' वाको नाम हैं. सो उह यहां पूर्वमें एक ब्राह्मण गौड़के घर जन्म्यो. 'मोहनी' एक क्षत्रीके घर जन्मे. सो दोऊ वरस आठके भये, सो एक पण्ड्याके घर पढ़िवेकों जाने. सो दोऊनकों पूर्व लीलामें सम्बन्ध हैं, तातें प्रीति यहां बहोत बढ़ी. सो वरष पन्द्रहके दोऊ भये. तब एक समय श्रीआचार्यजी श्रीजगन्नाथरायजीके दरसनकों पधारे, सो उह गाममें उतरे. तब वह क्षत्रीको पिता कह्यो, जो इनके सङ्ग श्रीजगन्नाथजीरायजीको दरसन करिये. सो पुत्रकों ले श्रीआचार्यजीके सङ्ग चल्यो. उह अन्य मार्गीय घर रह्यो. सो कछुक दिनमें श्रीआचार्यजी श्रीजगन्नाथरायजी पधारे. तहां मायावादी भेले भये हते. तिनसों वाद करि मायावाद खण्डन किये. तब वह क्षत्रीने पितासों कही, श्रीआचार्यजीके सवक होंय तो आछो तब पिताने कही, मेरे तो श्रीजगन्नाथरायजीके रथके नीचे मरनो हैं. पाछे तेरो मन आवे से करियो. तब पुत्रनें कही, तुम ऐसी हत्या क्यों करो ? श्रीआचार्यजीके सेवक होय, श्रीठाकुरजीकी सेवा स्मरन करो. तब पिताने कही मैं वृद्ध भयो. मासों अब कछू बनें नाहीं. और मैं यही मनोरथ करि आयो हों. तब पुत्र चुप होय रह्यो. सो दिन दस पाछे रथयात्रा आई. तब श्रीजगन्नाथरायजी रथ पर चढ़ि बाहिर पधारे. सो उह पिता रथके पैया नीचे मर्यो. तब उह पुत्र श्रीआचार्यजीके पास आयके पिताकी बात कही, महाराज ! रथके नीचे मेरो पिता मर्यो, ताको कहा फल ? तब श्रीआचार्यजी कहैं मरिवेको कहा फल ? भगवानकी प्राप्ति भये बिना कहा फल ? मरती बेर जहां मन होय तहां जाय. परन्तु याकों स्वर्गकी कामना हती, तातें स्वर्गको गयो. कछुक दिन भोग करि गिरेगो. परन्तु तू दैवी जीव है. तेरे सम्बन्ध करि वाकी मुक्ति होयगी. तब वह क्षत्रीनें श्रीआचार्यजीसों बिनती करी, महाराज ! मेरो सवेको मनोरथ है. तब श्रीआचार्यजी कहे अबही तो ताकों सूतक हैं. सूतक उतरे सेवक करेंगे. पाछे सूतक

उतर्यो, तब वह क्षत्री आयो. दण्डवत् करि बिनती करी, महराज ! मेरो अङ्गीकार करिये. तब श्रीआचार्यजी कहें, नहाय आऊ. तब वह नहाई आयो. तब श्रीआचार्यजीनें नाम सुनाय ब्रह्मसम्बन्ध करवायो. तब वह क्षत्री एक लालजीको स्वरूप सुन्दर देखिकें न्योछावर देकें ले आयो. तब श्रीआचार्यजी पञ्चामृतसों स्नान कराय उह क्षत्रीके माथे पधराये. पाछे दोय दिन उह क्षत्री श्रीआचार्यजीके पास रहि मार्गकी रीति सीखि, आज्ञा मांगी. तब श्रीआचार्यजी कहें, जा, घरमें सेवा मन लगायकें करियो. तब वह क्षत्री दण्डोत् करि विदा होय, घरमें आय सेवा भली भांतिसों करन लाग्यो. कछुक दिनमें श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे. और वह अन्यमार्गीय ब्राह्मण मर्यादामार्गकी रीतिसों श्रीठाकुरजीकी पूजा करतो. तासों स्नेह बहोत हतो, सो यह क्षत्रीकों तो यह ज्ञान श्रीआचार्यजीमहाप्रभुकी सरनिसों भयो. जो यह अन्यमार्गीय ब्राह्मण दैवी है. कोई प्रकार वैष्णव होय तो आछो. तब एक दिन वह क्षत्री उह अन्यमार्गीय ब्राह्मणसों कहे, जो तुम श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक होऊ तो आछो. तब वह ब्राह्मणनें कही, अब तो मैं और मारगको सेवक ह्वे चुक्यो. अब वैष्णव कैसें होऊं ? तब वह क्षत्री वैष्णव बोल्यो नाहीं. मनमें दुःख पायो. जो दैवी जीव है, परन्तु वैष्णवन भयो कहा करूं ? यह चिन्ता करत घर आयो. श्रीठाकुरजीके उत्थापन कराये. तब श्रीठाकुरजी कहें, चिन्ता मति करे, वह अन्यमार्गीय सेवक होय कृपापात्र भगवदीय होइगो. तब यह क्षत्रीने कह्यो महाराज ! उह कौन प्रकार होयगो ? मैं वासों वैष्णव होनकी कही, सो वह नाहीं कही. वाको मन तो नाहीं हैं. तब श्रीठाकुरजी कहें, मेरी इच्छा वाकों अङ्गीकार करनकी है. सो एक क्षणमें मैं वाको मन फेरि देऊंगो. तातें तू एक काम करियो. कबहूं वह अन्यमार्गीय तुमसों रसोई करनकी कहें, तो तू वाके घर सामग्री करि भोग वाकें ठाकुरकों धरिके महाप्रसाद लीजो. तब यह क्षत्रीनें कही, उह अन्यमार्गीयकें ठाकुर आगे भोग कैसे धरूं ? प्रसाद कैसें लेऊं ? श्रीआचार्यजीके मार्गकी रीति नाहीं हैं. तब श्रीठाकुरजी कहें मेरी आज्ञा तें करियो, तोकों बाधक नाहीं. और तेरो भोग धर्यो सो मैं उहां आयके अरोगुंगो तातें तू महा प्रसाद लीजियो. तब वह वैष्णव होयगो.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो एक दिन सीतकालके दिन हते, सो क्षत्री वैष्णव एक पहर पाछली रात्रितें उठिकें घरी एक दिन चढ्यो. तब राजभोग आरती करि अनोसर करायो. पाछे वह अन्यमार्गीके घर गयो. तब वह अन्यमार्गीय वैष्णवनें बहोत आग्रह कियो. जो आजु पाक सामग्री यहां करो.

भावप्रकाश : तब वह वैष्णव मनमें बहोत प्रसन्न भयो. जो अब यह वैष्णव होयगो. श्रीठाकुरजीकी आज्ञा विचारि, पाक सामग्री अनसखड़ी तऊ

करी. जदपि श्रीठाकुरजीकी आज्ञा हती, जो सखड़ी करते तो बाधक नाहीं. परन्तु इतनी अपने मार्गकी का'नि राखी.

तब वाने अनसखड़ी करि वाके श्रीठाकुरजी आगें भोग धर्यो, श्रीआचार्यजीकी का'नि कही, श्रीगोवर्द्धनधरसों बिनती करि कह्यो, महाराज ! सामग्री हू अरोगो, और या दैवी जीवकों अङ्गीकार हू करो. तब श्रीगोवर्द्धनधर तत्काल पधारि सामग्री आरोगिकें (पाछे) पधारें. पाछें वह अन्यमार्गीय वैष्णव ब्राह्मणकों हू महाप्रसाद धरें. वैष्णव क्षत्री हू महाप्रसाद ले अपुने घर आयो. तब तीसरो प्रहर भये तब न्हायके उत्थापन करायो. और वह अन्यमार्गीय महाप्रसाद ले सोयो. तब वाके ठाकुरजी नित्य आवाहन विसर्जन करतो सो विभूति, श्रीठाकुरजी द्वारा, वा अन्यमार्गीय ब्राह्मणसों कह्यो. जो आजु हम भूखे हैं. तब वह अन्यमार्गीयनें कह्यो, भूखे क्यों हो ? श्रीआचार्यजीके सेवक क्षत्रीने भोग धर्यो, सो तुम क्यों न अरोगे. तब वह विभूतिनें कही, उह वैष्णवनें श्रीगोवर्द्धननाथजीको स्मरण कियो, सो वे आयके अरोगे. हम तो पुरुषोत्तमकी विभूति हैं. सो पुरुषोत्तम पधारिकें अरोगें तहां हमारी गति नाहीं. हम तो मन्त्रको आवाहन करें, तब वह भगवत् प्रतिमामें प्रवेस करि अरोगें. विसर्जन करे तब चले जांय. यह रीति हमारी हैं. और पुरुषोत्तम मन्त्रके आधीन नाहीं है, एक प्रेमके आधीन हैं. तातें वह क्षत्रीके ऐसो प्रेम है, जो पुरुषोत्तम अरोगिवे पधारत हैं. (जहां) पुरुषोत्तम पधारिकें अरोगत हैं, तहां हमारी न चले. तब वह अन्यमार्गीय धूप दीप करि नैवेद्य धरि, पाछे वैष्णव क्षत्री पास आयो. आयकें कही, तुमनें हमकों पहले श्रीआचार्यजीके सेवक होनकों कही, सो हम न माने, सो बुरी करी. अब हमकों सेवक कराय वैष्णव करो. आजु तुम मेरे घर रसोई करी, सो मेरे घर आजु पुरुषोत्तम पधारिकें अरोगे. तातें तुमारो वैष्णव धर्म सबतें बड़ो है. तब क्षत्री वैष्णवनें करी, श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कासीतें श्रीजगन्नाथरायजीकों पधारत हैं. सो दिन पांच सातमें यहां पधारेंगे. तब सेवक होय वैष्णव हूजियो. मैं तो तुम सों पहले ही कही हती. तब तुमनें मानी नाहीं. अब श्रीठाकुरजीनें तुम पर कृपा करी.

भावप्रकाश : यामें यह जताये जो वैष्णव जाको अङ्गीकार करनो बिचारें ताकों श्रीठाकुरजी निश्चय कृपा करें. और जाके यहां वैष्णव एक दिन हू आयके कछू अङ्गीकार करें सो श्रीठाकुरजीकी बड़ी कृपा जाननी. भगवदीय अङ्गीकार कियें सो श्रीठाकुरजीने किये जानने. तातें भगवदीयको सङ्ग कृतार्थ सब करें. यह सिद्धान्त प्रगट किये.

पाछें श्रीआचार्यजी पधारे सो वह क्षत्री वैष्णवके घर उतरे. तब वह क्षत्री वैष्णव उह अन्यमार्गीय ब्राह्मणसों कहें. श्रीआचार्यजीमहाप्रभु पधारे हैं. तब वह अन्यमार्गीय श्रीआचार्यजी पास आय दण्डोत् करि विनती कियो, महाराज ! माकों सरनि लिजिये. कृपा करि मेरेघर पधारो. तब श्रीआचार्यजी वाके घर पधारि वह ब्राह्मणकों नाम निवेदन कराये. वाके सगरे कुटुम्बकों नाम सुनायें. पाछें वाके श्रीठाकुरजीकों पञ्चामृत स्नान कराय पाट बेठारे. सामग्री करि भोग धरि आपु आरोगें. वा ब्राह्मणकों जूठन धरें. पाछें आपु श्रीजगन्नाथजीके दरसनकों पुरुषोत्तम क्षेत्र पधारे. सो वह अन्यमार्गीय, वह क्षत्री वैष्णके सङ्ग तें भलो. तातें क्षत्री वैष्णव श्रीआचार्यजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये. इनकी वार्ता कहां तांई कहिये. ...वार्ता ।।६४।।

भावप्रकाश : तातें सत्सङ्ग बड़ो पदार्थ है, सत्सङ्गपूर्ण कृपातें मिलें. .... ।।वैष्णव ६४।।

७२-लघु पुरुषोत्तमदास क्षत्री कवी

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, लघु पुरुषोत्तमदास क्षत्री कवी हते, सो कासीमें रहते, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : वे लीलामें श्रीनन्दरायजीके घरके भाट हैं. इनको नाम लीलामें उमाशङ्कर, सो कासीमें एक क्षत्रीमें जन्में. सो आठ वरषके भये. तब ही तें कवित्त - दोहा करते. सो राजाके, धन पात्रके, सेठकें, ऐसें करते कवित्त. सो श्रीआचार्यजी कासि पधारे, सो मणिकर्णिका घाट ऊपर सन्ध्यावन्दन करत हते. कृष्णदास, सेठ पुरुषोत्तमदास आदि सगरे ठाड़े हे. तहां लघु पुरुषोत्तमदास कवि आये. तब सेठ पुरुषोत्तमदास डरपे, जो यह धनपात्रके कवित्त करत हैं, सो मेरो जस कहूं गावे तो श्रीआचार्यजीके आगें ठीक नाहीं. तब सेठ पुरुषोत्तमदास लघु पुरुषोत्तमदासके पास आयकें कह्यो, जो या समय मेरो कवित्त दोहा मति करियो. तब लघु पुरुषोत्तमदासने कही, फेर तुमसों हमसों मिलाप कहां होय ? मैं तो तिहारो कवित्त करनकों यहां आयो हों, सो करूंगो. तिहारे मन आवे तो कछू दीजो, मन आवे मति दीजो. पैसा देनो परे ताके लाये बरजत हो, जो कवित्त मति करे. तब सेठ पुरुषोत्तमदासनें रुपैया पांच देकें कह्यो, घर

आइयो, और कछू देइंगे. परन्तु या समय श्रीआचार्यजी हमारे गुरु सन्ध्यावन्दन करत हैं. तिनके आगें मेरो जस भूलिकें मति कहियो. तब लघु पुरुषोत्तमदास प्रसन्न होयके कहें, मैं और राजाके कवित्त श्रीआचार्यजीके आगे कहोंगो. तिहारो न कहूंगो. तब पुरुषोत्तमदास सेठने कही. मेरे कवित्त मति करियो, ओरको तो तुम जानों. तब लघु पुरुषोत्तमदास कवि श्रीआचार्यजीके पास जाय अनेक राजानके दस पांच कवित्त कहें. तब श्रीआचार्यजी दैवी जीव जानि लघु पुरुषोत्तमदासकी ओर कृपा - दृष्टि करि कहें, लघु पुरुषोत्तमदास ! तू श्रीनन्दरायजीके घरको भाट, चारन होय, श्रीठाकुरजीको जस छोड़ि राजसी लोगनको जस गावत हैं, सो आछो नाहीं. तू कवि है, चतुर है, राजानको ऐसो जस तू कह्यो सो कछू गुन इन राजानमें हैं ? अनेक रोग दुःखसों भरे हैं. मृतकबत् पापी, तिनको जैसे गाय मिथ्या भाषन किये सो आछो नाहीं. गायवे लायक एक श्रीठाकुरजीको जस है.

यह सुनत ही लघु पुरुषोत्तमकुं ज्ञान भयो श्रीआचार्यजीकों दण्डवत् करि बिनती करी. महाराज ! सगरो जन्म योंही मिथ्या भाषन करि गमायो. अब मैं आपकी सरनि हों, सा सदा श्रीठाकुरजीको जस गाऊं. माकों श्रीठाकुरजीके जसको ज्ञान नाहीं. तातें राजसी लोगनको जस गायो. तब श्रीआचार्यजी कहें, गङ्गाजीमें नहाय ले, हम ताकों समुजावें. तब लघु पुरुषोत्तमदास गङ्गाजीमें स्नान करिकें श्रीआचार्यजीके पास आयो, तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाय समर्पण करायो, अपनो चरणामृत दीनों तब लघु पुरुषोत्तमदासकों श्रीठाकुरजीकी लीलाको ज्ञान भयो. ... ।।वैष्णव ६५।।

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो वे श्रीगोवर्द्धननाथजीके कवित्त और श्रीआचार्यजीके कवित्त एक सार करते. या प्रकार श्रीआचार्यजीकों साक्षात् पुरुषोत्तम जानन लागे. ता दिनमें राजा आदि धनपात्रके यहां जानो, उनके कवित्त कहनो सब, छोड़ि दियो. सा कछुक दिनमें श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे. सदा भगवानकी लीला रसमें मग्न रहतें. सो या प्रकार श्रीआचार्यजीनें लघु पुरुषोत्तमदास पर कृपा करी. तातें लघु पुरुषोत्तमदास बड़े भगवदीय हे. इनकी वार्ता कहां तांई कहिये. ....वार्ता ।।६५।।

७३-कविराज भाट सनोड़िया

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, कविराज भाट, सनोड़िया ब्राह्मण, मथुरामें रहते, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : लीलामें कविराज शाण्डिल्य मुनि, श्रीनन्दरायजीके पुरोहित हैं. सो मथुरामें एक पुरोहितके घर जनमें. सो तीन भाई हते, तामें दोय भाई तो मूर्ख हते. कविराज देवी देवतानके कवित्त, राजानके कवित्त पढ़ि निर्वाह करते. तातें सब कोई इनकों कविराज भाट कहतें. सो मथुरामें विश्रान्त घाट पर कवित्त ये कहते.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो एक दिन वे विश्रान्त पैं भूतेश्वर महादेवके कवित्त करिकें कहत हे, ता समय श्रीअचार्यजीमहाप्रभु महावनतें मथुरा पधारे. सो विश्रान्त घाट पर सन्ध्यावन्दन करत हे, ता समय कविराज भाटकों श्रीआचार्यजीके दरसन भये. तब कविराज भाटनें जानी, जो ये बड़े पण्डित से दीसत हैं. तातें इनसों कछू पूछों. तब कविराज भाट श्रीआचार्यजीके पास आय दण्डवत् करि एक प्रश्न कियो, महाराज ! देवी बड़ीके महादेव बड़े ? तब श्रीआचार्यजी कहे, शास्त्र रीतिसों श्रीठाकुरजी बड़े, और जाके मनमें जो निश्चय बड़ो मान्यो ताकों सोई बड़ी. तब कविराज भाटनें कही, महाराज ! श्रीठाकुरजीमें और महादेवजीमें कहा भेद है ? ईश्वर दोऊ कहावत हैं. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कहें, श्रीभागवतमें कहे हैं, जो जब भगवान् मोहनी रूप धरे, तब महादेव मोहित भये. और महादेव कोई रूप धरे परन्तु श्रीठाकुरजीकों मोहित न करे. तातें भगवानके आधीन महादेव हैं. महादेवके आधीन भगवान् नाहीं हैं, इतनो तारतम्य है.

या प्रकार बचन श्रीआचार्यजीने श्रीमुखसों कहे सो सुने. सो कविराज भाटकी बुद्धि निर्मल ह्वै गई. तब कविराज दण्डवत् करि बिनती कियो, महाराज ! माकों सरनि लीजिये. काहेतें, एक क्षण आपुके पास बैठे तें, बतरायतें श्रीठाकुरजीमें मन लाग्यो, सो आपुको सेवक होय कछुक दिन आपुको सङ्ग करूंगो तो निश्चय श्रीठाकुरजी मोपर प्रसन्न होंयगे. तातें माकों सेवक करो. तब श्रीअचार्यजी कहें, तुम कविराज हो, कवित्त करत हो, सो सेवक होय कहा करोगे ? तब कविराजनें कही, महाराज ! आपुके सङ्ग बिना योंही भटकत हतो, कछू ज्ञान तो हतो नाहीं. तातें अनेक देवतानके गुन, श्रीठाकुरजीके छोड़िकें, गावत हतो. अब मोपर आपु कृपा करो, जो सदा श्रीठाकुरजीके गुन गाऊं. तब श्रीआचार्यजी कहें, अब तो हम अड़ेल पधारत हैं, तहां तीनों भाई सहित अइयो, सो तहां सेवक करेंगे. यह कहि श्रीआचार्यजी अड़ेल पधारे.

भावप्रकाश : सो यातें जो याकी पूर्व प्रीति सेवक होयवेकी होयगी, जब तो आयकें सेवक होयगो. प्रीति बिना अङ्गीकार न होय. तातें नीआचार्यजी अड़ेल आयवेकी कही. सो आपु तो अड़ेल पधारे.

तब कविराज अपने दोऊ भाईनसों कह्यो, अड़ेल चलि श्रीआचार्यजीके सेवक ह्वै आवें. अब तीनों भाई अड़ेल चले. सो कछुक दिनमें जाय पहुंचे. तब श्रीआचार्यजी कहे, न्हाय आवो. तब तीनों जने न्हाय आये. तब श्रीआचार्यजी कविराज भाटकों नाम निवेदन कराये. और दोऊ भाईनको नाम सुनायो. तब कविराज भाटनें श्रीआचार्यजीसों विनती करी, महाराज ! हम आगें पूर्व जन्ममें कौन हे, सो ऐसे यहां श्रीठाकुरजीकों भूलि संसारमें भटकें ? तब श्रीआचार्यजी कहें, तुम श्रीनन्दरायजीके मुख्य पुरोहित हो भक्तिसूत्र तो तुमही प्रगट किये हो. यह भक्तिमागर द्रढ़ तो तिहारे किये सूत्रकी साखितें जगतमें प्रसिद्ध है. सो तुम सगरे मुनिनमें श्रेष्ठ हो. सो एक समय तुमकों अहङ्कार भयो, जो भक्तिमारगकों मैं बहोत जानत हों. तब विश्वामित्र शाप दियो. जो भूमि पर गिरो, मूर्ख होऊ. तातें तिहारो जन्म भूमिमें भयो. अब देह छोड़ि फेरि शाण्डिल्य मुनि होउगे. तब कविराज दण्डवत् करि विदा होयके. तब फेरि मथुरा आये. सो सरनि आय गोवर्द्धन पर जाय श्रीनाथजीके दरसन करि सन्मुख कवित्त किये. पाछें आचार्यजीके, श्रीगोवर्द्धननाथजीके कवित्त बहोत किये. सो लीलारसमें मग्न भये. सो कविराज भाट ऐसे भगवदीय भये. श्रीआचार्यजीके ऐसे कृपापात्र हे. इनके सङ्गतें उन दोऊ भाईनको उद्धार भयो. तातें कविराजकी वार्ता कहां तांई कहिये. ....वार्ता ।।६६।।

७४-गोपालदास ईंटोडा क्षत्री

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको सेवक, गोपालदास ईंटोडा क्षत्री, सो ये पच्छिममें पंजाबमें रहते तिनकी वार्ताको भाव कहत है -

भावप्रकाश : लीलामें ये ललिताजीकी सखी हैं. 'नृत्य - कला' इनको नाम है लीलामें. सो इनकों एक समय मद भयो. जो सङ्गीतको गान माकों

आवत हैं. ऐसो काहू सखीकों ललिताजीको हूं नाहीं आवत हैं. यह मनमें आवत ही ललिताजीनें कही. जा मूर्ख भूमिमें जन्म. ता अपराध तें पच्छिममें एक क्षत्रीके जनमें. पाछे वड़े भये. तब मनमें आई, जो ब्रजकी जात्रा और पिताकी गया हू करि आवें. यह विचारि पच्छिमतें चले सो ब्रजमें आये. सो मथुरा न्हाय कासीकों चले. सो कासी जाय गयामें पिता श्राद्ध करि पाछें कासी आये. सो कासीतें मथुराकों चले. तब मार्गमें श्रीआचार्यजीको सङ्ग भयो. सो एक मजलिमें छोटो गाम हतो तहां उतरे. सो रात्रिकों डाको तहां पर्यो. गोपालदासके हाथमें रञ्च तीर लग्यो. वस्तु भाव सब लूटि गई. पाछे श्रीआचार्यजी सबेरे कहें, गोपालदास कहा खबरि है, तब वाने कही, महाराज ! खरची, वासन, वस्तू सगरी गई, ताकी तो चिन्ता नाहीं. आगरे ते हूंडी कर घरसों मंगाय लेऊंगो. परन्तु दोय चारि दिनमें आगरे खरची बिना कैसे पहोचोंगो, यह चिन्ता है. और हाथमें रञ्च लागी है सो आछो होय जायगो. तब श्रीआचार्यजीनें कही, प्रारब्ध भोग मिट्यो, अब चिन्ता मति करो. खरची चाहिये सो कृष्णदाससों लीजो. तब गोपालदासने कही, महाराज ! प्रारब्ध भोग कैसो ? तब श्रीआचार्यजी कहें, वरस दस याही बातकों भये. तू रात्रिकों एक गाम जात हतो. सो मार्गमें और चोर और ठोरतें चोरी करि जात हते. सो तू उनकों पकरिकें बहुत मार्यो, उनकी वस्तू छीनि लीनी ताको पलटो भयो. तेरी वस्तू गई, और चोट तोकों लागी. तोकों सुधि है ? तब गोपालदास कहें, महाराज ! ठीक हैं. या बातकों दस बरष भये. पाछे कृष्णदाससों रूपैया ५) ले चले. तब गोपालदास अपने मनमें विचारें, जो श्रीआचार्यजी साक्षात् ईश्वर हैं. दस बरसकी बात मेरे देसकी सब बताय दीनी. तातें इनको मैं सेवक होऊं तो कृतार्थता होय. यह विचार करि श्रीआचार्यजीसों बिनती कियें, महाराज ! मोकों कृपा करि सरनि लीजिये. और मेरो संसार - दुःख छूटे, ऐसो अनुग्रह करो. तब श्रीआचार्यजी कहें, आगरेमें चलो. तहां तुमकों नाम सुनावेंगे. तब गोपालदासनें बिनती करी, महाराज ! माकों विश्वास नाहीं है. एक क्षणमें देह छूटि जाय तो मैं आपुकों कहां पाऊं ? फेरि शरन कैसे मिले ? तब श्रीआचार्यजी कहें, स्नान करि जाऊ. तब गोपलदास न्हाय आये. तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाय ब्रह्मसम्बन्ध कराये. तब गोपालदासने बिनती करी, महाराज ! मैं महामूर्ख हूं. कछू आपको प्रकार मार्गको जानत नाहीं. सों मोकों ऐसी कृपा करो जो पुष्टिमार्गको सिद्धान्त हृदयारूढ़ होय. और आपुके स्वरूपको कछू ज्ञान होय. तब श्रीआचार्यजी अपने चरणारविन्दको चरणामृत दीनो. और 'सिद्धान्त रहस्य' ग्रन्थ पढ़ायें. तब गोपालदासके हृदयमें पुष्टिमागरके सिद्धान्तको भाव हृदयारूढ़ भयो. श्रीआचार्यजीके स्वरूपको ज्ञान भयो. तब गोपालदास दण्डवत् करि चोखरा छन्द बरनन किये. तब श्रीआचार्यजी कहें. गोपालदास तुम पर श्रीठाकुरजीकी कृपा भई. तब गोपालदास दण्डवत् करि कहैं, मैं तो श्रीठाकुरजीको नाम हूं कबहूं नाहीं लियों. सो श्रीठाकुरजी माकों कहा जानें ? यह सब आपुकी कृपा हैं. जो मो सारिखे अधमनकों सरनि ले ऐसो दान दिये. तब श्रीआचार्यजी गोपालदासकी दैन्यता देखि प्रसन्न भये. जो या प्रकार वैष्णवनको दैन्यता चहिये. श्रीआचार्यजीके सङ्ग गोपालदास आगरे आये. पाछे ब्रजमें सङ्ग रहे. श्रीगोवर्द्धनधरके दरसन करि श्रीआचार्यजीसों बिदा होय पंजाब गये. सो

चोखरा गान करि मगन रहते.

वार्ताप्रसङ्ग १ : और एक समय गोपालदास श्रीआचार्यजीके दरसनकों अड़ेल आये. सो श्रीआचार्यजीको जनम दिन आयो. सो केसरसों नहाय मार्कण्डेय पूजा करनकों बिराजें. ता समय गोपालदास यह चोखरा, छन्द बिलावल रागमें गाये -

माधव मासें भरि वैसाखे, श्रीवल्लभ हरि जनम लियो

छन्द -
प्रगटिया जिन भक्तिमारग बन्ध जीव छुडाईयां ।
संसार ते वे मुक्त कीने शरन जो जन आइयां ।
अभयदान निशान मेले चित्त जिन हरिकों दिया ।
गोपालदास अनन्तलीला प्रगट श्रीवल्लभ भया ।।१।।

दाता मुक्ता और न दूजा, सांचा त्रिभुवनराय वहां ।
विरह निवारणा भवजल तारणा देखत उपजे चाव जहां ।।

छन्द -
देखत हरिकों चाव उपजे सकल दुःख निवार ही ।
जाकौ नाम सुमरे जरे पातक कर जोर निगम पुकार ही ।
पतितपावन बिरद जाकौ शील माधौ कर भया ।

'गोपालदास' अनन्तलीला प्रगट श्रीवल्लभ भया ।।२।।

ये ब्रजबालियां गोप गुवालियां ये गोकुलके लोग उहां ।
ये वन क्रीडा, हरिमुख व्रीडा हरि सेवा रस भोग वहां ।

छन्द -
रसभोग और संयोग मिलियों हिये अन्तर रम रह्यो ।
तुव बालचरित्र अनन्तलीला दान दे सब गुन कह्यो ।
तेरी भली मूरति देखि सूरति राधिका अञ्चल गह्या ।
'गोपालदास' अनन्तलीला प्रगट श्रीवल्लभ भया ।।२।।

पूरनब्रह्म सनातन माधो कलि केशव अवतार वहां ।
जिन जैसा देखा तिन तैसा पेखा भक्तन प्रान आधार वहां ।।

छन्द -
भक्त प्रान आधार श्रीवल्लभ हिये अन्तर राखिया ।
राम कृष्ण मुकुन्द माधो सदा जिव्हा भाखिया ।
गोपीनाथ अनाथ बन्धु वेदमें करुणामया ।
'गोपालदास' अनन्तलीला प्रगट श्रीवल्लभ भया ।।४।।

यह चोखरा सुनिकें श्रीआचार्यजी गोपालदासके ऊपर बहोत प्रसन्न भये. सो गोपालदास ऐसे भगवदीय श्रीआचार्यजीके कृपापात्र हे. इनकी वार्ता कहां तांई कहिये. ....वार्ता ।।६७।।

७५-जनार्दनदास चोपड़ा क्षत्री

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, जनार्दनदास चोपड़ा क्षत्री थानेश्वरके वासी. तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ये जनार्दनदास लीलामें कुमारिकाके जूथमें हैं. लीलामें इनको नाम 'कृष्णावती' हैं. सो थानेश्वरमें एक क्षत्रीके घरमें जनमें. सो इनको पिता शस्त्र बांधिकें थानेश्वरके हाकिम पास चाकरी करतो. सो वह हाकिम एक दूसरे हाकिम पास लरनकों चढ्यो. ता समय जनार्दनदासको पिता शस्त्र लेके चढ्यो. सो जर्नादनदासको पिता कायर बहोत हतो. सो जब लराई होन लागी, तब जनार्दनदासको पिता डरपिकें भाज्यो. सों घरमें आय जनार्दनदास वर्ष सोरहके हते, तिनसों कह्यो, मैं युद्धमें ते भाजि आयो, सो हाकिम आयकें मोकों मारेगो. तब जनार्दनदासने पितासों कही. जो तुमनें बुरी करी, क्षत्री होय रणसों भाजें ? परन्तु अब या देसमें रहनो कठिन हैं. तब जनार्दनदासके पितानें कही. मैं पूर्व कासीकों निकसि जात हों. यह कहिके जनार्दनदासको पिता निकस्यो. सो पूर्व होय दक्षिणकों निकसि गयो. यहां जनार्दनदासके पिताके भाजे फोज भाजी, सो हाकिम हूं भाज्यो. पाछे मामला तै करिकें थानेश्वरमें आयो. तब सगरे सिपाईनसों पूछ्यो, जो पहिलें कोन भाज्यो ? तब सबनने कही, जो जनार्दनदासको पितां भाज्यो. तब उह हाकिमनें कही, जो वाकों मेरे आगें पकरि लावो. तब प्यादे घर आयें. सो जनार्दनदासकों ले गये. तब हाकिमनें कही. तेरे पिताकों बताव, कहां हैं. उह रनमें ते भोज्यो सो मेरी सगरी फोज विचरि आई. तातें वाकों मारूंगो. पिताकूं न बतावेगो तो तोकूं मारूंगो. तब जनार्दनदासनें कही, जो मेरो पिता भाजिकें घर आयो. सो तुम्हारो भय करि पूर्व कासीको नाम लेकें भाजि गयो. और मैं तुम्हारे आगे हों चाहो सो करो. तब हाकिमने कही जूंठो हैं. पिताको कहूं छिपाय राख्यो हैं. तब जनार्दनदासनें कही मैं छिपायो होय तो या बातको मुचरकालिखों. मैं जूंठ नाहीं कहत. तब वह हाकिमनें इनकों बन्दीखाने दीनों. सो बन्दीखानेमें डारत ही सन्ध्या समय हाकिमके घरमें आगि लागि. वह हाकिमको बेटा, बहू, सगरो कुटुम्ब जरि मर्यो, अब अकेलो रह्यो. तब वह हाकिमके मनमें आई, जो मैं बुरी करी. जो जनार्दनदासकों बन्दीखानेमें डार्यो. याकों बिना दोषमें दण्ड दियो, ताको फल पायो. तब हाकिम जनार्दनदासकों बुलायो, कह्यो, मैं ताकों विना दाष दण्ड दियो. तेरो पिता

भाज्यो, तामें तू कहा करें ? सो मेरो कुटुम्ब सब नास भयो. अब तू अपने पिताकों बुलाव. मैं कछू न कहूंगो. होनहार हती सो भई. और तोकुं विश्वास न आवे ता गामके दस भले मनुष्यके आगें लिखि देऊं. पाछे गामके प्रमानिक सेठ बुलाय हाकिमनें लिखि दीनों, जनार्दनदासको पिता घरमें आवें. मोसों कछू दावो नाहीं. कछू कहूं तो पञ्चनमें जूंठो. पाछे जनार्दनदासके पिताकी चाकरीके पैसा बहोत दिनकें बाकी हते सो जनार्दनदासकों दिये. जनार्दनदास घर आय विचारें, अब पिताकों घर लावनों, कहा उपाय करूं ? पाछे यह विचारे जो कासीके आसपास होयगो, मैं जायकें लिवाय लाऊं. नाहीं तो वह कबहूं न आवेगो. यह विचारि जनार्दनदास थानेश्वरसों चले. सो अगरे आये. पाछे आगरे तें चलें, तब मार्गमें दोय मोहौर परी पाये. सो लेकें मनमें प्रसन्न भये. मोकूं सगुन तो आछो भयो, जो सुवर्ण पायो. पाछे उहां ते दोय मजलि चले आगें, तब वासुदेसदास छकड़ा मिले. तिनसों जनार्दनदास पूछे, जो मेरे पिता कहू देखे ? तब वासुदेवदास छकड़ाने कही जो मैं तेरो पिता नाहीं देख्यो. परन्तु एक बात तोसों कहूं, जो तू मानें तो. तू दैवी जीव है, तातें कहत हूं. तब जनार्दनसदासनें कही तुम बड़े हो, मेरे पुरोहित हो. मैं तुम्हारो जिजमान, बालक बराबर हों. तुम कहो सों करूं. तब वासुदेदासनें कही, तू घरतें निकस्यो है तो श्रीगोकुल मथुरा जैयो. तहां श्रीआचार्यजीके दरसन तोकों होयगो. तिनकी तू सरनि जैयो. संसारमें बहुत दुःख भोग्यो. अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों सेवक होय तो तू कृतार्थ होय. और कासीकों काहेकों भटके ? तेरो पिता तो दक्षिण गयो है. सो महीना एक मैं तहां मरेगो. तातें मैं कही सो करि. तब जनार्दनदासने कही. तुम कैसें जाने जो दक्षिण मेरो पिता गयो हैं. तहां महिना एकमें मरेगो ? काल कोई जानत हैं ? तब वासुदेवनें कही, जो मैं श्रीआचार्यजीमहाप्रभुकी कृपातें कालकी बात जानत हों. तू मार्गमें दोय मोहौर पायकें प्रसन्न भयो. सो यह मोहौर तोकों बहुत दुःख देंयगी. तातें काहू ब्राह्मणकूं दे डारियो. जैसे मैं मोहौरकी बात जानी तैसें तेरे पिताकी मृत्यु बताई. अब तेरो मन होयसो करियो. तब जनार्दनदासकों दृढ़ विश्वास भयो. जो वासुदेवदास कहें सो सांची बात हैं. तब वासुदेवदासकों दण्डवत् करि कह्यो, जो अब मैं श्रीआचार्यजीको सेवक निश्चय होऊंगो.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो जनार्दनदास मथुरा होय श्रीगोकुल आये. तहां श्रीआचार्यजीको दरसन करि, दण्डवत् करी. सो मनमें यह कहें, जो उह जो दोय मोहौर पाई हैं, सो और ब्राह्मण कहां ढूंढ़ोगो, श्रीआचार्यजीकी भेट करि देऊं. तब दोऊ मोहौर निकारि श्रीआचार्यजीकी भेट कियो. तब श्रीआचार्यजी कहें, तू बड़ो मूर्ख है, मार्गमें परी मोहौर हमारी भेट कर्यो. सो हमको नाहीं चाहियें. तब जनार्दनदास फेरि दण्डवत् करि विनती कियो, जो महाराज ! आपु पूर्ण पुरुषोत्तम हो. वासुदेवदास मोकों मार्गमें कह्यो, जो श्रीआचार्यजी साक्षात् भगवान हैं तिनकी तू सरनि जैयो. तातें आप कृपाकर शरण लीजिऐ तब श्रीआचार्यजी कहें मोहौर तू उठाय ले और ये मोहौर तेरे कामकी नाहीं हैं.

दुःख रूप हैं. मथुरा में चौबे ब्राह्मण बहोत हैं तिनकों दीजो. और श्रीगावर्द्धननाथके दरसनकों सङ्ग चलो, तहां तुमकूं सेवक करेंगे. तब जनार्दनदास मोहौर दोऊ ले आचार्यजीके सङ्ग गोवर्द्धन आये. पाछें आन्योरमें जब आये तब श्रीआचार्यजीने कही, जनार्दनदास ! स्नान करिकें श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों चलि. तब जनार्दनदास स्नान करिकें श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करे. तब श्रीआचार्यजी श्रीगोवर्धनघरके सन्मुख बैठाय नाम निवेदन कराये. पाछें कहे, जो अब तू भगवद् सेवा करि. तब जनार्दनदास कही, जो आप जा प्रकार बतावो ता प्रकार करूं. तब श्रीआचार्यजी श्रीनाथजीकी पाग जनार्दनदासकों सेवा करिवेकों दिये. सो दिन दस जनार्दनदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सङ्ग आन्योरमें रही, ऐतनमार्गकी रीति सीख्यो. तब श्रीआचार्यजीनें जनार्दनदाससों कही. जो अब हम पृथ्वी परिक्रमाकों जायंगे. तू घर जाय भगवद् सेवा मन लगायकें करियो. तब जनार्दनदास श्रीगोर्वर्द्धननाथजीके दरसन करि श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों दण्डवत् करि विदा होय थानेश्वर अपुने घर आयो. पाछें पिताके देह छूटेके समाचार दक्षिण तें आये. तब जनार्दनदास मनमें कहें, जो वासुदेवदास बड़े भगवदीय हैं. उनको कह्यो सब सांच है. पाछें मन लगाय भगवद् सेवा करन लागें. सो कछुक दिनमें श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे. और सिंहनन्दते वासुदेवदास थानेश्वर आवते. तब जनार्दनदास वासुदेवदासकों अपने घर प्रीतिसों राखते. कहते, मैं तुम्हारी कृपा तें श्रीआचार्यजीको सरन पाई हैं. तातें तुम जब थानेश्वर आवो तब यह घर सब तुम्हारो है, यहां उतर्यो करियो. सो एक क्षण वैष्णवके सङ्ग तें जनार्दनदास भगवदीय भये. तातें सत्सङ्ग भगवदीयको करनों. सो जनार्दनदास ऐसे भगवदीय श्रीआचार्यजीके कृपापात्र हे इनकी वार्ता कहां तांई कहिये. ....वार्ता।।६८।।

७६-गडू स्वामी सनोढ़िया

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक गडू स्वामी सनोढ़िया ब्राह्मण, श्रीवृन्दावनमें रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ये लीलामें श्रीनन्दरायजीके घर की दासी हैं. 'बंदी' इनको नाम हैं. सो जसोदाजी जब दामोदर लीलामें श्रीठाकुरजीकों बान्धन लागी, तब एक दाम बन्दीने दियो जसोदाजीकों. सोरोहिणीजी सुनिके साप दियो. जो तू दासी ह्वेंके अपनो दाम बांधिवेको श्रीजसादाजीकों क्यों दियो ? तातें भूमिमें

गिरी. तब बन्दी मथुरामें एक सनोढ़ियाके जन्में. सो जब ये आंठ वर्षके भये. तबही तें वैराग दिसा हती. सो मथुरा छोड़ि वृन्दावनमें अकेले आये रहें. मथुरा तें सीधों सामान दस पांच दिनोको लाय, वृन्दावनके केशीघाट पर बैठे विचार करते. जो मोकों कब कृपा करेंगे. और ब्रजवासी आदि जो आय कहते, हमकों सेवक करो, तिनको सेवक करते. तिनसो यही कहते, श्रीठाकुरजीको नाम सदा मुखसों कहियो.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो एक दिन रात्रिकों गडू स्वामीकों विरह बहोत भयो. जो जन्म सगरो बीत्यो. यह मनुष्य देह वृथा गई. तातें जीवनो वृथा है. यह कहि नेत्रन तें अश्रूपात बहें. तब गडू स्वामीको रञ्च नीन्द आई. तब श्रीठाकुरजीनें कही, जो सबेरे श्रीवल्लभाचार्यजी तेरे पास केशीघाट ऊपर स्नान करनकों पधारेंगे तिनकी सरन तू जैयो. तब तोपर कृपा होयगी. तब गडू स्वामीकी आंख खुली, सो कहन लागे. जो कब सबेरो होय, कब मैं श्रीआचार्यजीकी सरनि जाऊं. इतने में सबेरो भयो. गिरिराजसों रात्रिकों श्रीआचार्यजी चले सो प्रातःकाल केशीघाट पधारि श्रीयमुनाजी स्नान करि सन्ध्यावन्दन करत हे. तब गडू स्वामीने पूछी जो ये कोन हैं. तब कृष्णदास मेघननें कही, जो श्रीवल्लभाचार्यजी गिरिराजसों पधारे हैं. तब गडू स्वामीनें दण्डवत् करि श्रीआचार्यजीसों बिनती करी, जो महाराज ! मोकों कृपा करिकें सेवक करिये. तब श्रीआचार्यजी कहें. जो तुम ता स्वामी कहावत हों. तुम हू सेवक करो हो. सो तुम सेवक होनकी क्यों कहत हो ? तब गडू स्वामीने कही, महाराज ! मोकों भगवद आज्ञा भई. जो तू श्रीआचार्यजीको सेवक हूजियो, तब तोपर कृपा होयगी तातें मोकों सेवक करिये. तब श्रीआचार्यजी गडू स्वामीकों कहे, जो स्नान करि ले. तब गडू स्वामी स्नान करिके श्रीआचार्यके पास आयो, तब श्रीआचायजी नाम सुनाये निवेदन कराये. पाछे गडू स्वामीने अपुने जो सेवक किये हते. तिन सबनकों श्रीआचार्यजीके पास नाम सुनाये.

भावप्रकाश : पाछे गडू स्वामीनें श्रीआचार्यजीसों विनती करी, महाराज ! मेरे माता पिता वहिरमुख हैं, सो मथुरामें है. तातें उनकों छोड़ि मैं यहां आयो हूं. ब्याह तो मेरो भयो नाहीं. बालपन तें वैराग दसामें रह्यो. सो अब ऐसी कृपा करो, जो मेरो मन श्रीठाकुरजीकी लीला तें अनत न भटके. तब श्रीआचार्यजी अपनो चरणामृत दे 'त्रिविध नामावली' रचि, ताको पाठ कराये. तब गडू स्वामीकों श्रीठाकुरजीकी लीलाको अनुभव होन लाग्यो. सो मानसी सेवामें मगन व्है गये. ... ।।वैष्णव ६९।।

सो गडू स्वामी श्रीआचार्यजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे, ताते इनकी वार्ता अनिर्वचनीय है. मानसीको प्रकार कह्यो न जाय. ताते गडू स्वामीको वार्ताको विस्तार नाहीं किये. ....वार्ता ।।६९।।

७७-कन्हैयाशाल क्षत्री

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, कन्हैयाशाल क्षत्री, आगरेमें रहते, तिनकी वर्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ये कन्हैया शाल लीलामें ललिताजीकी सखी हैं. तहां उनको नाम 'कमोदिनी' हैं. सो आगरमें एक 'शाल' क्षत्रीके घर जन्में सो द्रव्यकों सङ्कोच पहलें बहोत हतो. सो जा दिन कन्हैया शाल जन्में ताही दिन पिता माताके घरमें द्रव्य धरतीसों निकस्यो. तब पिता मातानें कही, यह पुत्र बड़ो भाग्यवान है, जो जनमत ही लक्ष्मी आई. तातें या बालकको नाम कन्हैया शाल. या प्रकारसों माता पिता कन्हैया शालसों प्रीति बहोत करी. बड़े भये परन्तु घरके बाहर जान न देय. सो जब तेरह वर्षके भये. तब पिताकी देह छूटी. पाछे कन्हैया शालने मातासों कही, अब मोकों बाहर जान दे, मैं बड़ो भयो, मथुरा बड़ो धाम है. सो कबहूं दरसन नाहीं कियो. तब मातानें कही जो बेटा तू मेरे नेत्रन तें कहूं न्यारो मति जाय. तब कन्हैया शाल चुप व्है रहे. पाछे कन्हैया शालको एक मामा हतो, सो मथुरा चल्यो. तब कन्हैया शालनें मातासों कही, जो अब मामाके सङ्ग मथुरा मोकों न्हायवेकों जान दे. नाहीं तो मैं अकेला भाजि जाऊंगो. तब माता डरपिकें अपने भाईसों कह्यो. मेरे बेटाकों बहोत दरसन मति कराईयो, फिराइयो मति, मथुरामैं न्हवायके वेगि लाईयो. तुमकों ब्रजमें जात्रा करनी होय, फिरनो होय, तो मेरे बेटाकों मेरे पास घर पहुंचाय फिरियो. तब कन्हैया शाल मथुरा आय विश्रान्ति न्हाये. तब कन्हैया शालनें मामासों कही, मोकों सगरे ब्रजके दरसन करावो. तब मामाने कही. तुम्हारी मातानें तो नाहीं करी है. तब कन्हैया शालने कही, जो मोपर माको मोह बहोत है. परन्तु मैं फेरि कब आऊंगो ? तातें चलो, ब्रजके दरसन करों, सो वन परिक्रमाकों निकसे. सो पांच दिनमें श्रीगोवर्द्धन पहुंचे. सो गिरिराजकों देखि कन्हैया शाल बावरे व्है गये. न बुलाये बोलें, न उठाय उठें. जाकों देखे ताकी ओर हंसें. कोऊ मुखमें डारि देंई तो खाय. पहिरावे जो वस्त्र पहिरें. या प्रकार सरीरकी सुधि भूलि गये. तब मामाकों महा चिन्ता भई. जो या दसासों घर ले जाय तो याकी माता रोवेगी. तातें गोवर्द्धनमें कन्हैया शालकों लेकें वह

मामा रह्यौ. वैरागी, अतीत, वैद्य सबसों कहें, जो कन्हैयाशालकों कोऊ आछो करे तो वह तो जो मांगे सो मैं देहुं. सो बहोतरी औषधि लोगननें करी. अनेक जन्त्र मन्त्र किये. परन्तु कन्हैया शाल आछे न भये.

ऐसे करत एक महिना वीत्यो. तब घरमें मातानें बहोत चिन्ता करी. जो पुत्रकी कछू खबरि हूं नाहीं आई. मेरो भाई पांच दिनकों नाम ले गयो हो, सो महिना एक भयो. कछू कारन दीसत है. तब एक मनुष्य बुलायके कह्यो, जो तू मथुरा जा, ब्रजमें मेरो भाई, पुत्र गयो है सो देखि जाऊ कहां है ? कहा करत हैं ? कैसे हैं ? सब समाचार ले आऊ. उनकों मति जताईये. मोकों सब समाचार आय कहेगो तो तोकों रुपैया दस देऊंगी. तब वह मनुष्य चल्यो. सो मथुरामें खबरि पायी, जो गोवर्द्धनमें है. तब गोवर्द्धनमें आय दोऊनकों देखि आगरे आयो. सो कन्हैया शालकी मातासो कही, जो तेरो बेटा तो बावरो व्है गयो है. शरीरकी सुधि नाहीं हैं, तेरो भाई जन्त्र मन्त्र अनेक करत हैं, औषध करत हैं. तब माताकों बहोत दुःख भयो, जो मै याहिके लियें पुत्रको बाहिर नाहीं निकासती. अब मैं कहा करों ? बहोत दुःख भयो, जो मै याहिके लियें पुत्रको बाहिर नाहीं निकासती. अब मैं कहा करों ? पाछे वा मनुष्यसों कही, जो एक डोली भाड़े करि लाओ, तुम मेरे सङ्ग चलो, तुमको दस रुपैया और देऊंगी. मोकों मेरे पुत्र पास पहुंचाय देहु. तब वह डोली भाड़े करि लायो. तब वह माता हजार रुपैया ले डोली पर चली. गोवर्द्धन आय, पुत्रके पास जाय, पुत्रकों हृदयसों लगाय रुदन कियो. पाछे भाईकों खीजिकें निकारि दियो. जो तू मेरे पुत्रकों बावरो कियो. पाछे अनेक गुनी उह मातानें बुलाये, परन्तु कन्हैया शाल आछे न भये. तब गोवर्द्धनके सगरे ब्रजवासिनसों पूछ्यो, कोई ऐसो महापुरुष बतावो, जो मेरे पुत्रकों आछों करे. तिनकी मैं दासी व्है कें रहूं. ता समय सदू पाण्डे गोवर्द्धन आये है, अन्योर तें. तिनसों डोकरीने पूछ्यो. तब सदू पाण्डेने कही, हमारे गाममें श्रीआचार्यजी पधारे हैं. सो कितने ब्रजवासिनकों परचो दे सरन लिये हैं. गोवर्द्धन पर्वत तें श्रीगोवर्द्धननाथजी प्रगट किये हैं. सो श्रीआचार्यजी साक्षात् भगवान् हैं. उनके मनमें आवे तो यह कितनीक बात है. परन्तु हमारो नाम श्रीआचार्यजीमहाप्रभुके आगे मति लीजों. तब वह डोकरीनें कही. तुम मोकों अपने गाम ले चलो, मैं बिनती करि लेंऊगी. तब सदू पाण्डे कहें, मेरे सङ्ग चलो. मैं अपुनें गाम जात हों. तब माता कन्हैया शालकों डोली पर बैठारि अन्यौर आई. एक घर ब्रजवासीको ले तामैं कन्हैया शालकों बैठारि द्वारको तारो लगायो पाछे आयकें श्रीआचार्यजीकों दण्डवत् करी. तब श्रीआचार्यजी कहें, जो हम जान्यो डोकरी जाके लिये तू आई है. तातें अपुने बेटाकों यहां बेगि लाउ, हम आछो करि दें बहोत बात मति करे. तब डोकरी कन्हैया शालकों ले श्रीआचार्यजीके पास आई. तब श्रीआचार्यजी झारीमें ते जल हाथमें ले वेद - मन्त्र पढ़ि कन्हैया शालके ऊपर छिरके. सो कन्हैयाशाल सावधान व्है गये. तब श्रीआचार्यजीकों दण्डवत् करि बिनती कीनी, महाराज ! मैं तो बहोत सुखी हतो, ब्रजकी गोवर्द्धनकी, लीलामें मगन हतो.

तहां तें मोकों बाहिर आप क्यों निकासे ? आप तो अधिक दान देन अर्थ प्रगटे हो. सो यह कहा कियो ? तब श्रीआचार्यजी कहें, उछलित रस, ऊपरको प्रेम एक दि बहि जाय. तातें ताकों सावधान कियो. भीतर स्थिर प्रेम होय, लीला रसको अनुभव होय, जगतमें कोई जानें नाहीं सो प्रेमको कबहु नास न होय. तब कन्हैया शालने बिनती करी, महाराज ! कृपा करि स्थिर प्रेमको दान करिये. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कन्हैया शालकों न्हवाय, श्रीगोवर्द्धननाथजीके सम्मुख बैठाय, नाम निवेदन कराये. साक्षात् श्रीठाकुरजीकी लीला रसको अनुभव कराय दिये. पाछें कन्हैया शालकी माताकों नाम सुनाये. सो श्रीआचार्यजी जितने छोटे ग्रन्थ किये हते सो सब कन्हैया शालकों पढ़ाये. पाछे कन्हैया शालसों कहें, अब तुम घरमें जाय रसको अनुभव करो. अब तुमकों संसार, लौकिक, वैदिक बाधा न करेगो. तब कन्हैया शालकी मातानें हजार रुपैया भेट धरि बिनती करी, जो महाराज ! मोपर बड़ी कृपा करी. आप साक्षात् पुरुषोत्तम हो. तुम बिना मेरे पुत्रकों कौन आछो करें ? तब श्रीआचार्यजी कहें, अब तू पुत्रकों लेके अपने घर जा. तब कन्हैया शालकी मातानें श्रीआचार्यजीसों बिनती करी, महाराज ! एकबार आगरे मेरे घर पधारो तो आपकी बहोत कृपा होय. सो कृपा करि गृह पावन करिये. तब श्रीआचार्यजी कहें, हम अड़ेल पधारेंगे तब तुम्हारे घर आवेंगे. अब तुम घर जाऊ. तब कन्हैया शाल और डोकरी दण्डवत् करि, श्रीआचार्यजीसों बिदा होय आगरे आये. सो कन्हैया शाल तो लीलामें मगन रहें. और डोकरी सगरो काम घरको करें. पाछे श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आगरे पधारे तब कन्हैया शालके घर उतरे. सगरे ग्रन्थके भाव, लीलाके भाव, पुष्टिमार्गको सिद्धान्त कन्हैया शालके हृदयमें स्थापन किये. पांच रात्रि रहे. तब डोकरीनें बहुत भेट करी, सो लेकें अड़ेल पधारे.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो श्रीगुसांईजी श्रीअक्काजीसों पूछ्यो, जो मार्गकी वार्ता तो दामोदरदास द्वारा जानें. परन्तु श्रीआचार्यजीके ग्रन्थ कहां मिल ? तब श्रीअक्काजीनें कही, आगरेमें कन्हैया शाल क्षत्रीके पास ग्रन्थ हैं, तहां ते लेहु. तब श्रीगुसांईजी कन्हैयाशाल क्षत्रीके घर पधारें. तब कन्हैया शाल परम प्रीतिसों श्रीगुसांईजीको पधराये. पाछें श्रीगुसांईजी कन्हैया शाल पास श्रीआचार्यजीके सारे ग्रन्थ पढ़े. पाछे श्रीगुसांईजी ग्रन्थनकी टीका करि कन्हैयाशालकों कृपा करि पढ़ाये ! पाछे श्रीगुसांईजी आपुन ग्रन्थ, दान लीला, हुल्लास, ब्रतचर्या आदि रहस्य ग्रन्थ किये हते, सो कन्हैया शालकों पढ़ाये. और कन्हैया शालकों श्रीगुसांईजी दण्डवत् न करन देते. कहेतें, तुम्हारे हृदयमें श्रीआचार्यजी विराजत हैं. या प्रकार श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजीको अत्यन्त कृपातें कन्हैया शाल संयोग रस विप्रयोग रस दोऊ लीलाके रसमें मग्न रहते. पाछें श्रीगुसांईजी अड़ेल पधारे.

भावप्रकाश : पाछे कन्हैया शालकी माताकी देह छूटी. तब कन्हैया शाल कहें, यह प्रतिबन्ध मिट्यो. छिन - छिनमें खानपानको प्रतिबन्ध करती. तबतें कन्हैया शालकों सरीरकी सुधि होय तब खान पान करें नाहीं तो वैसे ही बैठे रहें.

वार्ताप्रसङ्ग २ : पाछें एक समय श्रीगुसांईजी अडेल तें आगरे पधारे सो कन्हैया शालके घर उतरे. तब कन्हैया शालसों कहें हम द्वारिका पधारेंगे. तब कन्हैया शालनें कही, मैं हू पाछें ते आयकें आपके दरसन करूंगो. तब श्रीगुसांईजी कहें, तुम कौन भांति आवोगे ? वैष्णव बिना तो औरसों बोलत नाहीं, मार्ग दूरि हैं. तब कन्हैया शालनें कही, मेरे औरसों काहेकों बोलनो परेगो ? मैं आपके पाछे जाऊंगो. तब श्रीगुसांईजी कहें. तुम्हें कृपाको बल है. जो चाहो सो करो. पाछे श्रीआचार्यजीके ग्रन्थनकी वार्ता कन्हैया शाल पास दोय दिन श्रीगुसांईजी करें. पाछें आप तो द्वारिका पधारे. सो एक दिन कन्हैया शालके मनमें आई, जो द्वारिका जैये, श्रीगुसांईजीसों मिलियें. सो निकसि चले, सो मार्गकी ठीक नाहीं. काहूसों बोले नाहीं. तीनि दिन चले गये. सो एक वनमें जाय निकसें. तहां सघन वन, जल नाहीं. तब बिचारे, जो देह छूटेगी. तब श्रीआचार्यजीके ग्रन्थ एक रूखके नीचें बेठिकें पाठ करन लागे. इतनेमें एक ग्वारिया आयकें कह्यो, जो यहां तू क्यों बैठ्यो है. यहां स्यांप, नाहरको डर है. तब कन्हैया शालनें कही, मैं श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको सेवक हों. सो स्यांप, नाहर तो मेरे पास कोई आवें नाहीं. तब ग्वारियानें कही, तलाब तेरे पाछें हैं, जल तो पी. तब पीछे देखे तो जल भर्यो है. सो जल पीवन लागे. तब दूसरो ग्वारिया महाप्रसाद श्रीनाथजीको सखड़ी, अनसखड़ी ले आय कह्यो, यह महाप्रसाद तू ले. तब कन्हैया शालनें कही, महाप्रसाद कहांको है ? मैं तो घरको लेहुंके श्रीगुसांईजीके यहांको लेहुं. ओरको महाप्रसाद तो लेत नाहीं. तब ग्वारियानें कही, यह श्रीनाथजीको महाप्रसाद है. तू कहा श्रीरणछोडजीके ऊपर हत्या देवेंकों निकस्यो है ? इतनो हठ करत है ? तब महाप्रसाद देखें, सो श्रीनाथजीको जानि महाप्रसादकों दण्डवत् करि, लियो. पाछे तीसरो ग्वारिया आप कह्यो यहां आय बैठ्यो कहा करत हैं ? श्रीरणछोडजीके दरसनको जा. तब पाछें फिरकें देखे तो श्रीरणछोडजीको मन्दिर दीसत है. तब कन्हैया शालनें कही, उहां श्रीगुसांईजी पधारे होंहि तो जाऊं. तब ग्वारियानें कही, मोकों श्रीगुसांईजीनें पठायो है, तोकों सन्देस कहनकों. सो तू बेगि जा. तब कन्हैया शाल श्रीरणछोडजीके मन्दिरमें गये, श्रीगुसांईजी पास. तब श्रीगुसांईजी आप कहें, कन्हैया शाल आये ? मार्गमें काहूसों बोलेकें नाहीं ? तब कन्हैया शाल कहें, महाराज ! मेरे औरसों

बोलिवेको कहा काम है ? तब श्रीगुसांईजी कहें, तुम तीनि ग्वारियानसों बोले, (ताते) एसें क्यों कहत हो ? तब कन्हैया शालनें कही, महाराज ? मेरी बानी आप बिना और काहूसों निकसें ही नाहीं. तीनों ग्वारियानको स्वरूप, आप बिना मोकों बनमें सखड़ी अनसखड़ी महाप्रसाद कौन धरे ? औरके हातको मैं लेऊं कैसें ? यह सब आपकी कृपा है. तब श्रीगुसांईजी कन्हैया शालको हाथ पकरिकें श्रीरणछोड़जीके दरसन कराये. सो कन्हैया शालकों श्रीगोवर्द्धनदरके दरसन भये. तब कन्हैया शालसों श्रीगुसांईजी कहे. जो श्रीरणछोडजीके दरसन किये. तब कन्हैया शालनें कही, आपकी कृपा तें श्रीगोवर्द्धनधर नैनन लागि रहे हैं. सो श्रीगोवर्द्धनधरके दरसन भये.

भावप्रकाश : यामें यह जताये, जो कन्हैया शालकों ब्रजलीला बिना औरमें मन जाय नाहीं.

तब श्रीगुसांईजी कन्हैया शालकों अपने डेरा पर लाय कहें, अब तुम हमारे सङ्ग आगरे चलियो. तब कन्हैया शालने कही, महाराज ! आपतो दैवी जीवनकों अङ्गीकार करनको पधारे हो, सो आपुकों ढील लागेगी. और मोकों अकेले बहोत सुहात हैं. तातें आपकी कृपातें आगरे जाय पहोंचोंगो. तब श्रीगुसांईजी कहें, तो तुमकों श्रीआचार्यजीकी कृपाको बल है. जो करोगे सोई तुमकों ठीक है. पाछे कन्हैया शाल श्रीगुसांईजीसों आज्ञा मांगि आगरेकों चले. सो भगवदावेसमें दोय दिन चले गये. सो आगें जाड़ी सघन आई, तहां मार्ग न पावे. तहां एक रूखके नीचे बैठि गये. तहां श्रीआचार्यजीके ग्रन्थ श्रीगुसांईजी कृत टीका तथा रहस्य ग्रन्थ देखन लागे. तब एक ग्वारिया आय कह्यो. तू यहां क्यों बैठ्यो है. श्रीयमुनाजीमें स्नान करनो होंय, जलपान करनो होंय, तो करिकें अपुने घर जा. तब कन्हैया शालकी द्दष्टि पोथी पर ही, सो ऊंची द्रष्टि करिकें देखें ते श्रीयमुनाजी और आगरो सहेर हैं. तब श्रीयमुनाजीमें स्नान करि, जलपान करि, पाठ पूजन करि घर आये. पाछे श्रीगुसांईजी द्वारिका तें कछुक दिनमें आप आगरे पधारे. तब कन्हैया शालसों पूछे, तुम आगरे कै दिनमें और कैसे आये ? तब कन्हैया शालने कही, मोकों तो खबरि नाहीं. आपही मोकों द्वारिका ले गये और आपही आगरे पहुंचाये, इतनो मैं जानत हों. तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न होयकें तीन दिन कन्हैया शालके घर रहे. भगवद् वार्ता करि बहोत प्रसन्न भये. पाछें श्रीगुसांईजी अड़ेल पधारे. कन्हैया शालकों लौकिक वैदिक जब शरीरकी सुधि हाय तब करे. परन्तु पाछें कछू सुधि न रहें. लीला रसमें मगन रहते. सो कन्हैयाशालकी ऐसी लोक वेद विरुद्ध बात हैं. सो कही न जाय.

भावप्रकाश : काहेतें, कहिये जे लोगनकों श्रीठाकुरजीकी लीलाके भावकी खबरि नाहीं है, तातें उनको विश्वास न होय. तातें प्रकास नाहीं किये प्रेमकी रीति अटपटी हैं. सो सूरदासजीनें गायो है -

राग सारङ्ग -
ब्रज लीला कोऊ पार न पायो ।
ब्रह्मा, शेष, महेस, नारायण मति ही भुलायो ।।१।।

वेद, स्मृति सुनि हरि ही मिलन बहु मारग बतायो ।
गोपीजन निज मारग 'सूर' न्यारो दिखरायो ।।२।।

तातें कन्हैयाशाल ऐसे आचार्यजीके कृपापात्र भगवदीय हे. इनकी वार्ता कहां तांई कहिये. ...वार्ता ।।७०।।

७८-नरहरदास गोडिया ब्राह्मण

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, नरहरदास गोडिया ब्राह्मण, बंगालाके तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : सो नरहरदास बंगालामें प्रगटे. लीलामें ये कुमारिकाके जूथमें हैं. तहां इनको नाम 'सुगन्धरा' है. सो पूर्वमें जब बड़े भये तब नरहरदासकी प्रीति श्रीजगन्नाथरायजीमें लगी. सो एक समय वर्ष दिन जगन्नाथरायजीमें लगे, पाछे घर गये. तब पिताने कही, बेटा ! मैं तो अब वृद्ध भयो. तू जिजमान पास जात नाहीं. मेरे मरे पाछे कहांते खायगो ? तू बेर २श्री जगन्नाथरायजीके दरसनकों जात है. कछू जगन्नाथरायजी देत हैं ? तब नरहरदासनें

कही, जगन्नाथरायजी सगरे जगतकों देत हैं. आजु पाछें तू मोकों कछू मति दीजो, देखों जगन्नाथरायजी मेरो पालन करत हैं के नाहीं. तब नरहरदासके पिताने कही, जो जगन्नाथरायजी सबकों देत हैं तो भेट पूजा क्यों लेत हैं ? सब लेवे वारे हैं. देवे वारो कोई ठाकुर नाहीं है. जब मैं तोकों खरची देत हों, तब तू जाय श्रीजगन्नाथरायजीको दरसन करत है. जो मैं न देऊं तो भीख मांगेगो. तब नरहरदासकों बहोत क्रोध चढ्यो. सों पितासों कही, तू भगवानको निंदक है. तातें आजु पाछें तेरो कछू लेहुंगो नाहीं. और तेरे घरमें न रहुंगो. तेरो मुख देखनो उचित नाही है. तू ऐसी बात कह्यो, जो म्लेच्छ हू ऐसी बात न कहें. यह कहि घरसों उठि चले. तब पितानें बहोत समुजायो, बिनती हू करी, जो मैं चूक्यो. परन्तु नरहरदास दैवी जीव हैं. सो श्रीठाकुरजीकी निन्दा सुनी न गई. सो जगन्नाथरायजीके दरसन आय करे. परन्तु कछु पास नाहीं. तब समुद्रके तीर जाय बैठे. मनमें विचार्यो, जो अब काहुसों मांगनों नाहीं. मांगिके निर्वाह करूंगो तो मेरो पिता कबहूं आवे, तथा घरहीमें सुने तो कहेगो, जो जगन्नाथरायजी देयंगे तो खाउंगो. नाहीं तो होन हार होयगी सो सही. पाछें रात्रि भई तब श्रीजगन्नाथरायजी महाप्रसाद ले एक बालक वर्ष सोरहको भेख करि आय कहें, ब्राह्मण ! महाप्रसाद ले. तब नरहरदासने कही महाप्रसादकी अवज्ञा कैसे करूं, दे जाऊ. परन्तु मोकों तो श्रीजगन्नाथरायजी देंहगी तब ही लेहुंगो. यह मनमें निर्द्धार कियो हैं. तब (उन) कहे, श्रीजगन्नाथरायजी देत हैं. और कौन देत है ? उनकी इच्छा बिना कौन तोकों यहां देन आवेगो ? तब प्रसन्न होय महाप्रसाद लियो. आप तो पधारे. पाछे नरहरदास सोयो. तब श्रीजगन्नाथरायजीने कही, तू प्रातःकाल श्रीआचार्यजीके पास जाय सेवक होउ. सो तेरो सगरो मनोरथ पूर्ण होयगो. नरहरदासने कही, मैं तो श्रीआचार्यजीको पहिचानत नाहीं, कहां जाऊं ? तब श्रीजगन्नाथजी कहें, श्रीवल्लभाचार्यजी प्रसिद्ध हैं. जासों पूछेगो सोई तोकों बतावेगो. सो मेरो स्वरूप श्रीआचार्यजीकों जानियो. तब प्रातःकाल नरहरदास उठिके पूछत - पूछत जाय श्रीआचार्यजी पास दण्डवत् किये. तब श्रीआचार्यजी कहें शाबास नरहरदास ! तोकों ऐसी ही टेक चाहिये. जो पिताकों तिरस्कार करि आयो. आगें प्रहलादजी हूं पिताकों कह्यो नाहीं किये. ताते तेरो नाम अब नरहरदास ठीक भयो. परन्तु तू पुष्टिमार्गीय दैवी जीव परम उत्तम हैं. तब नरहरदास जानें, जो ये साक्षात् ईश्वर हैं. मेरे पिताकी सगरी बात कहि दीनी. तब नरहरदासनें बिनती करी, जो महाराज ! माकों सेवक करिये. तब श्रीआचार्यजी कहें, जो अबही तेरों चित्त द्रव्यमें हैं. तातें भगवद् नाम अब ही तोकों फलेगो नाहीं. तातें तू जायके समुद्रके तीर बैठि, समुद्रकी लहरिमें तोकों द्रव्य मिलेगो. ता द्रव्य तें जो मनोरथ श्रीजगन्नाथरायजीको विचार्यो है सो पूर्ण करो. पाछे सरनि लेंयगे, तू हमारो है. तातें अब तोकों संसार दुःख बाधा न करेगो. तब नरहरदासने कही, महाराज ! द्रव्यमें मेरो मन बहोत है, सो जस करिवेकों. जो मन मान्यो खरचूं, पिता हूं सुनिकें लाज पावें. जो जगन्नाथरायजी ऐसे ठाकुर हैं. तब श्रीआचार्यजी कहें, जो जा, समुद्र किनारें तेरो मनोरथ पूरन होयगो. तब नरहरदास जहां कोई न हतो. तहां जाय समुद्रके किनारे बैठे. लहरिमें सोना, रूपा, हीरा मोती आदि नरहरदासके आगें ढेर भयो. सो पोट बांधि मनमें प्रसन्न होय श्रीआचार्यजी पास आय,

दिखाय कह्यो, जो महाराज ! आपुकी कृपा तें द्रव्य तो बहोत मिलौ. तब श्रीआचार्यजी कहें, जो जाऊ, श्रीजगन्नाथजीको मनोरथ करो. तब नरहरदासनें कही, महाराज ! मैं द्रव्य ले जाय खरचों तो, मोकों गरीब सब जानत हैं, सो राजा दण्ड दे तो मैं कहा करूं ? तब श्रीआचार्यजी कहें हमारो नाम लीजो, कोई न दण्डेगो. तब नरहरदासनें कही, महाराज ! या में तें कछू आप राखो. तब श्रीआचार्यजी कहें, यह जगन्नाथरायजीको द्रव्य है, सो श्रीजगन्नाथरायजीको मनोरथ करो. यह हमारे काम न आवे. हमारे तो जो कोई हमारो सेवक होय, खरी मजूरीको द्रव्य होय सो हम अङ्गीकार करत हैं. तब नरहरदास एक जगा ले, तहां सुनार, दरजी बजाज बुलाये. अनेग बागा, वस्त्र, आभूषन, रसोईकी सामग्री श्रीजगन्नाथजीकों कियो. गाममें कोई भूखो न रहें. पडानकों दीनों. सो सगरे चक्रत व्है गये. जो आगे तो नरहरदास गरीब हतो. अब ऐसो द्रव्य कहां ते ले आयो जो पूछे तिनसो नरहरदास कहें, श्रीआचार्यजीने दियो हैं, मनोरथ करनकों पाछे राजा सुनिके आयो, सो कह्यो, जो तें द्रव्य कहां पायो ? तब नरहरदासनें कही, श्रीआचार्यजी मनोरथ करनकों दिये हैं. पाछे राजा श्रीआचार्यजीके पास आय पूछयो. तब श्रीआचार्यजीनें कही जो हम कह्यो हैं. जो श्रीठाकुरजीकों मनोरथ करो सो राजा श्रीआचार्यजीके भेदकी बात तो समज्यो नाहीं. यह जान्यो जा आप दिये होंयेगे. पाछे राजा घर गयो. पाछें पिताने सुनी, जो नरहरदास हजारनके मनोरथ करत हैं. तब नरहरदासको पिता नरहरदासके पास आयो. तब नरहरदास पिताकी और पीठि करि कहे, जो तू श्रीठाकुरजीको निन्दक है, तातें तेरो मुख न देखोंगो. तू देखि, श्रीजगन्नाथरायजीनें कितनों द्रव्य मोकों दियो ? सो जाको दृढ़ विश्वास ठाकुर पर हैं ताकों सब कछू सिद्धि हैं. जाको श्रीठाकुरजी पर विश्वास नाहीं है सो या हू जन्ममें दुःखी है और परलोकमें भ्रष्ट होय. परन्तु तुं पिता है, श्रीजगन्नाथरायजीकी न्योछावरि तू हूं कछू ले जा. सो हजार रुपैयाको माल दे कहें, आजु पाछें मोकों मुख मति दिखावो. तब पिता द्रव्य लेकें घर गयो. पाछें कछुक दिनमें द्रव्य हूं निघट्यो. और मनको मनोरथ हूं पूर्णकरि नरहरिदास श्रीआचार्यजीके पास आय दण्डवत् करि बिनती करी, जो महाराज ! मोकों कृपा करिकें सरनि लीजिये. अब मेरो मन काहू बातमें नाहीं हैं. आपकी सरनि होनमें है. तब श्रीआचार्यजी कहें, जा स्नान, करि आऊ. तब नरहरदास न्हायकें श्रीआचार्यजी पास आये. तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाय निवेदन कराये. तब नरहरदासके हृदयमें पुष्टिमार्गको ज्ञान भयो. तब श्रीआचार्यजीकों दण्डोत् करि विनती किये, महाराज ! मैं बहोत बुरो काम कियो हैं. जो श्रीठाकुरजीकों श्रम कराय द्रव्य लें अपुनो जस प्रगट कियो हैं. मैं महादुष्ट, सों मेरे जैसेको कहा ? उलटो मन होय परलोक बिगरें. तातें मोकों धिक्कार हैं. ठाकुरको द्रव्य ले ठाकुरकों श्रम कर्यो. तामें बड़ो स्वार्थ, अज्ञान करिके मान्यों. अब मैं आपकी सरनि हों मेरो परलोक सुधरें, श्रीठाकुरजी कृपा करें, सो प्रकार मोकों कहो. तब नरहरदाससों श्रीआचार्यजी कहें. तुम श्रीठाकुरजीकी सेवा करो तब नरहरदासनें बिनती करी, महाराज ! मोकों श्रीठाकुरजी पधराय दीजें. तब श्रीआचार्यजी कहें. तुम समुद्रके किनारे फेरि जाऊ. तहां भगवद् स्वरूप तुमकों मिलेंगे सो ले आवो. तब नरहरदास फेरि वाही ठिकनें समुद्र पास जाय बैठे. सो समुद्रकी लहरिमैं

दाऊ जुगल स्वरूप आयें. नरहरदासके आगें लहरि धरि चली गई. तब नरहरदास जुगल स्वरूपकों ले श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके पास आये. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु जुगल स्वरूपकों पञ्चामृतसों स्नान कराय पाछें श्रीमदनमोहनजी नाम धरि नरहरदासके माथे पधराये. तब नरहरदासने श्रीआचार्यजीसों बिनती कीनी, महाराज ! मेरे घरमें पिता बहिर्मुख हैं. सो मोपें घर गयो न जाय. और यहां मेरो लौकिकमें जस भयो. सो यहां मांगिके सेवा करी न जाय. सो मेरे जिजमान बंगाली कासीमें बहोत हैं. तहां आप कहोतो जायकें भगवद् सेवा करूं. तब श्रीआचार्यजी कहें, जहां भगवद् सेवा भली भांतिसों बने बाकों वही देस उत्तम हैं. और हम हूं कों यहां बहोत दिन भये हैं. तातें हम दक्षिण होय कासी आवेंगे. तू सूधो कासीकों जा. पाछे श्रीआचार्यजी तो दक्षिण पधारे. और नरहरदास कासीमें आय श्रीमदनमोहनजीकी सेवा मन लगायकें करन लागें. सो कछुक दिनमें श्रीमदनमोहनजी सानुभावता जनावन लागें. ... ।।वैष्णव ७१।।

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो नरहरदासने श्रीमदनमोहनजीकी सेवा बहोत वर्ष लों भली भांतिसों करी. पाछे सरीर थक्यो वृद्ध भये. सो सेवा व्है न सकें. तब श्रीमदनमोहनजीकों पधरायकें श्रीगोकुल आये, श्रगुसांईजीकों दण्डवत् करि श्रीमदनमोहनजीकों श्रीगुसांईजीके घर पधराये. पाछे श्रीगुसांईजीने गोकुलचन्द्रमाजीके पास बैठाये. सो श्रीगोकुलचन्द्रमाजीके पास जुदे सिंघासन पर बैठे हैं. सो नरहरदास पाछे ब्रजमें जन्म भरि भावना करि मानसी सेवासों निर्वाह किये. सो नरहरदास ऐसे श्रीआचार्यजीके कृपापात्र भगवदीय है. इनकी वार्ता कहां तांई कहियें. .... ।।वार्ता ७१।।

७९-नरहर सन्यासी गौड़

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, नरहर सन्यासी गौड़ ब्राह्मण, आगरे तें गुजरात जायकें इनको पिता रह्यो, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं.

भावप्रकाश : नरहर सन्यासी लीलामें श्रुतिरूपा हैं, मनसुखा गोपकी बेटी, इनको नाम लीलामें 'गुलाबी' और गुलाबीकी एक सखी हती. तिनको नाम 'पाडरि'. सो वेणी कोठारी गुजरातमें भये. सो एक समय आगरेमें दुष्काल भयो तब नरहर सन्यासीको पिता आगरो छोड़ि गुजरात कुटुम्ब सहित जाय रह्यो. तहां नरहर सन्यासी जन्में. और वर्ष पन्द्रहके भये तब नरहरकों एक सन्यासीको सङ्ग भयो. सो नरहर सन्यासी भये. सो वरस दिन लों तपस्या करी.

उष्णकालमें पञ्चाग्नि तापें वरसायतमें जलकी धारा माथे लिये. सीतकालमें प्रातःकाल जलमें बैठते. सो नरहर सन्यासीकी मानता गुजरातमें बहोत भई. सेवक हू बहोत लोगनकों किये. तब वेणी कोठारी हू नरहर सन्यासीको सेवक भयो. सो नरहर सन्यासी स्त्रीकूं देखे तब मुख पर कपरा डारि लेय. ऐसी त्याग दसामें रहें. सो मही नदीके किनारे एकान्तमें, जहां पास गाम नाहीं, तहां स्थल बनायकें रहे. तहां ते कोस दोय पर गाम. तहां एक तेलीके सन्तान न हती. सो उह तेलीकी स्त्रीने बिचारी, जो नरहर सन्यासी बड़े महापुरुष हैं. वह कछू औषध देइ तो मेरे पुत्र होय. परन्तु वे काहू स्त्रीको मुख देखत नाहीं. पाछे एक दिन सीरा पूरी करि सन्ध्या समय उह तेलिन आई. तब नरहर सन्यासीके पास आई. तब एक तेलिननें अपने मुख पर कपरा डारि नरहर सन्यासीकों पुकार्यो. तब नरहर सन्यासी पास आय पूछें, तू कौन है ? तब इन कही मैं तेलिन हूं. सो तुम्हारे लिये सीरा पूरी लाई हों. तुम स्त्रीको मुख नाही देखत तातें मैं अपने मुख पर कपरा डर्यो. तब नरहर सन्यासीनें कही, मैं हूं द्वै दिनको भूखो हों. परन्तु तेरी प्रीति बड़ी है, जो दोय कोस तें मेरे लिये ले आई. तब नरहर सन्यासी लियो. तब तेलिन प्रसन्न भई. जो ये लिये तो सही. पाछे दूसरे दिन फेरि सन्ध्या समये सीरा पूरी लाई. तब नरहर सन्यासीने कही, अबतो यहां कोई है नाहीं, तातें तू मुख खोलि. तब उह तेलिनने मुख खोल्यो. सीरा पूरी दे आई. पाछे नित्य सन्ध्या समय जाय. ऐसे करत दिन दस बारह भये. सो एक दिन सीरा पूरी लेकें नरहर सन्यासीके कोठा भीतर गई. इतनेमें गुजरातकों हाकिम नरहर सन्यासीकी बड़ाई सुनिकें मिलिवेकों आयो. तब वह तेलिन नरहर सन्यासीके घरमें छिप रही. सो उह हाकिम रात्रिकों नरहर सन्यासीके पास रह्यो, सो सबेरो होत ही उह तेलिन नरहर सन्यासी पास आय कह्यो मेरी बहू काल्हि सांजकी तुमकों सीरा पूरी देन आई, सो फिर घर नाहीं आई. रात्रिकों तुम क्यों क्यों राखे ? तुम तो स्त्रीको मुख नाहीं देखत. तब नरहर सन्यासीने कही यहां तो नाहीं आई. तब तेलीनें कही, तुम्हारे घरमें निकसे तो ! पाछे तेलीनें नरहर सन्यासीको घर ढूढ्यो. तब भीतरमें पकरिके काढ़ी. सो देखिकें हाकिम बहोत कोप्यो. तब नरहर सन्यासीको घर गिराय कह्यो, यहां तें और देस निकसि जा. तब नरहर सन्यासी ब्रजमें आये. मनमें कहें स्त्रीको सङ्ग ऐसोई है, बुरो है. जो सङ्ग होतो तो परलोक बिगरतो. प्रभूनें मोकों डण्ड दिवायो. यह बिचारि ब्रजमें फिरें. पाछें बेनी कोठारीने सुनी, जो नरहर सन्यासी ब्रजमें हैं. तब मनमें बिचारी जो बहोत दिन भये हैं. मेरे गुरु नरहर सन्यासी हैं, सो ब्रजमें व्है आऊं. नरहर सन्यासीसों मिलि आऊं. तब बेनी कोठारी गुजराततें ब्रजमें आये. सो वृन्दावनमें नरहर सन्यासीकों मिले. वार्ता करत हते. सो एक दिन वृन्दावन श्रीआचार्यजी पधारे. तब नरहर सन्यासीकों दरसन भये. तब नरहर सन्यासीने बेनी कोठारीसों कही, देखो ! कैसे तेजस्वी पुरुष आये हैं ? तब बेनी कोठारीने कही, इनको सङ्ग कछुक दिन करिये. तब इनके स्वरूपकी ठीक परे. तब नरहर सन्यासीने कही, चलो, दोऊ जने इनको सङ्ग करिये. या प्रकार दोऊ बतराय श्रीआचार्यजी पास आय दण्डोत् करि बिनती किये, जो महाराज ! हमारो मन आपको सङ्ग चारि रात्रि करवेको है. जो आप पसन्न होय आज्ञा देऊ तो हम सङ्ग रहें. तब श्रीआचार्यजी कहें, हम

द्वारिकाकों जाइवेको बिचारि किये हैं, तुम्हारो मन होय तो तुमहूं चलो. तब नरहर सन्यासी और बेनी कोठारी हू सङ्ग चले. तब मार्गमें नरहर सन्यासीनें श्रीआचार्यसों प्रश्न कियो, जो हमारे मनमें एक सन्देह है. जो महाराज ! सन्यास धर्म बड़ोकै वैष्णव धर्म बडो ? तब श्रीआचार्यजी कहें, इनको प्रकार सब न्यारो है. सन्यास धर्म कलियुगमें सिद्ध होनो कठिन है. सन्यास लिये पाछे जहां तक जीवे तहां तांई नारायण बिना कहूं चित्त जाय, तब सगरे जन्मको सन्यास धर्म नास होय. और भक्तिमार्गमें, दुःसङ्ग तें भ्रष्ट हू होय जाय, परन्तु भक्ति - बीज जाय नाहीं. कबहू सत्सङ्ग पाय फेरि बढ़े. सो श्रीभागवतमें कहे हैं. जड भरतकों मृगके सङ्ग तें तीन जन्मको अन्तराय भयो. पाछें कृतार्थ भयो. चित्रकेतु पार्वतीके शाप करि वृत्रासुर भयो, असुर जोनिमें, तोहू भक्ति बढ़ी. इतनो तारतम्य है और या कलियुगमें भगवत् नाम ही तें चाण्डाल पर्यन्त पवित्र होय, उद्धार होय. सो तुमही मनमें बिचारो. तें तपस्या हू करी, सन्यासके धर्म हू साध्यो. परन्तु कछू सिद्धि भयो ? तब नरहर सन्यासी दण्डवत् करि बिनती करी, महाराज ! अब जा प्रकार उद्धार होय सो करो. मैं सगरे घर्ममें दुःख ही पायो. परन्तु मन निर्मल न भयो. तब श्रीआचार्यजी कहें तुम सन्यासी हो, जगतमें पूज्य हो. सेवक हूं करत हों. सो सेवक होयकें तो दास होनों परै. सो तुम स्वामी पदमें हो, दास भाव कैसे होयगो ? तातें स्वामी पदकों छोडो तब सरनि होऊ. तब वैष्णव धर्म बढे. तब नरहर सन्यासीनें बिनती करी, महाराज ! मैं अब स्वामी पद छोड्यो. अब तो मैं आपको दास हों. जो आज्ञा करो सोई मैं करों. तब श्रीआचार्य कहें, यह डाढ़ी मुण्डायके भगवा वस्त्र पलटि ऊजरे वस्त्र पहिरके आवो, तो सेवक होउ. तब नरहर सन्यासी जटा डाढ़ी मुण्डाय नये ऊजरे वस्त्र पहिरके आये. तब श्रीआचार्यजी कहें, आजु व्रत करो. सगरी इन्द्री सुद्ध होय. काल्हि तुमकों नाम सुनावेंगे. तब नरहर सन्यासी व्रत किये. पाछें दुसरे दिन श्रीआचार्यजी नाम सुनाय निवेदन करायें.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो नरहर सन्यासीने श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों बिनती करी, महाराज ! वेनी कोठारीकों नाम सुनाइये. तब वेनी कोठारीकों न्हवायके नाम निवेदन कराये. तब नरहर सन्यासीने श्रीआचार्यजीसों कही, महराज ! मोकों व्रत कराये, वेनी कोठारीकों व्रत नाहीं कराये ताको कारन कहा ? श्रीआचार्यजी कहें, तुम स्वामी पदमें हते, और अनेक कर्म धर्म किये. सो तुम्हारो मन अनेक ठिकाने फैलि गयो. और यह गृहस्थाश्रमको दुःख जाने, और धर्म कर्म नाहीं जाने. तातें वाकों व्रत नाहीं कराये.

भावप्रकाश : यामें यह जताये, जो अन्य मारगमें परिकें बहोत शास्त्र पढ़े, बहोत जोग साधन करें वाकों भक्ति बेगि न होय. और सूने निष्कपटकों भक्ति बेग सत्सङ्ग तें होय.

तब नरहर सन्यासी बड़ो भगवदीय कृपापात्र भयो. और वेनी कोठारी हू बड़े भगवदीय भये. सदा मानसीमें मग्न रहें. पाछे द्वारिका होय श्रीआचार्यजी तो पृथ्वी परिक्रमाकों पधारे. वेनी कोठारी द्वारिकामें नरहरदास पास कछुक दिन रहि, पाछे गुजरात अपने घर आये. नरहर सन्यासी सदा फिर्यो करते.

वार्ताप्रसङ्ग २ : सो एक समय नरहर सन्यासी बद्रिकाश्रम फिरते - फिरते आये. तहां श्रीआचार्यजीमहाप्रभु पधारे. सो नरहर सन्यासीकों दरसन भये. तब नरहर सन्यासी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों विनती कियो, महाराज ! मैं पहिलें सन्यास ग्रहण कियो हतो. पाछें आपकी कृपातें भक्तिमारगमें आयो. सो सन्यासको प्रकार है, सो तो मैं जानत हों और भक्तिमागरको कहा प्रकार है सो मैं जानत नाहीं ? सो मोकों कृपा करि कहिये. तब श्रीआचार्यजी कहें, तोसों भक्तिमारगके सन्यासको प्रकार कहत हों. तब श्रीआचार्यजी 'सन्यास निर्णय' ग्रन्थ करि नरहर सन्यासीकों पढ़ाय भाव कहि सुनाये. तब नरहर सन्यासीके हृदयमें पुष्टिमारगको सिद्धान्त स्थित भयो. तब श्रीठाकुरजीकी लीलाको अनुभव भयो, सो मग्न होय गये. पाछें श्रीआचार्यजी आगें पधारे. नरहर सन्यासी स्वरूपानन्दमें मग्न होय फिरिवो करते. सो नरहर सन्यासी ऐसे श्रीआचार्यजीके कृपापात्र भगवदीय हे इनकी वार्ता कहां तांई कहिये. ... ।।वार्ता ७२।।

८०-सदू पाण्डेकी बहू भवानी और बेटी नरो

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, सदू पाण्डे, सदू पाण्डेकी बहू भवानी और सदू पाण्डेकी बेटी नरो, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : सो ये श्रीगिरिराजके नीचे आन्योरमें रहते. लीलामें सदू पाण्डे वृषभानजीके भाई 'चन्द्रभान' गोप, नरो और भवानी 'रामदे' 'श्यामदे' जसोदाजीकी ननद हैं, तिनको प्रागट्य हैं.

वार्ताप्रसङ्ग १ : श्रीआचार्यजीमहाप्रभु जब पृथ्वी परिक्रमा करत दक्षिण झारखण्डमें पधारे. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी झारखण्डमें श्रीआचार्यजीकों दरसन देकें कहैं, जो तुम मेरी सेवा जगतमें प्रगट करो तो दैवी जीव बेगि सरनि आवें. हम ब्रजमें गोवर्द्धन पर्वत पर तीनि दमनसों प्रगटे हैं. देव दमन सो मैं हों मेरे आस पास दोय दमन हैं.

भावप्रकाश : ताको भाव कहत हैं. नागदमनतो श्रीठाकुरजीके वाम भाग हैं और इन्द्र दमन सो दक्षिण भाग हैं. सो वाम भाग नागदमन श्रीयमुनाजीके स्वरूपतें. काहे तें, काल सर्पकी दमन कर्ता. यमदण्ड, कालदण्ड श्रीयमुना पान तें न होय. और श्रीठाकुरजीकी प्रिया हैं नित्यसिद्धा. तातें वाम भाग बिराजि सेवा करत हैं. और दक्षिण दिस इन्द्रदमन हें. सो गिरिराजजी स्वरूप करि सेवामें तत्पर हैं. काहे तें, हरिदासराय हैं. भक्तनके सिरोमनि हैं. सो इन्द्र कोपके समय प्रभुकी इच्छा जानि आपुही छत्राकार होय सगरे ब्रजकी रक्षा कियें. और इन्द्रकों दण्ड दिये और जस प्रभुकों प्रगट किये. सो यातें, भगवदी अपुनों जस प्रगट नाहीं करत हैं. तातें श्रीठाकुरजीको जस प्रगट कियो. और मध्यमें देवदमन, सा यातें, जितने औतार हैं श्रीजगन्नाथदेव, नारायणदेव आदि, तिनकें मान मर्दन कर्ता श्रीगोवर्द्धनधर हैं. तातें श्रीभागवतमें कहें -

एते चांशकला पुंसः कृष्णस्तुभगवानस्वयं

तातें देवदमन मेरो नाम हैं. सो मोकों प्रगट करो.

तब श्रीआचार्यजी दक्षिणके झारखण्डसों पृथ्वी परिक्रमा छोडि ब्रज पधारे. सो श्रीगोवर्द्धन आये. ता समय पांच सेवक सङ्ग श्रीआचार्यजीके हैं. दामोदरदास हरसानी, कृष्णदास मेघन, बड़े रामदास और नारायणदास. सो सन्ध्या समय श्रीआचार्यजी सदू पाण्डेके द्वार चोंतरा पर तहां बिराजे. तब सदू आय दण्डोत् करि कहें, स्वामी कछू खाऊगे ? तब कृष्णदास मेघनने कही, ये श्रीआचार्यजी काहूके घरको लेत नाहीं. आप सेवक करत है, सो सेवक होय जो देत है, तिनको लेत हैं. या प्रकार वार्ता करत हते. इतनेमें पर्वत पर तें गोवर्द्धनधर बोले. सदू पाण्डेकी बेटीसों कहें, नरो !मेरे नेगको दूध लाऊं. तब नरोने कही, अहो, वारी जाऊं लाल ! ल्याई, मेरे पाहुंनें

आये हैं. तिनकों समाधान करि लेऊ तो दूध लाऊं. तब श्रीगोवर्द्धनधर कहें. पाहुनें आये तो भले आये परन्तु मोकों अवार होति हैं. तब नरो दूधको कटोरा भरि पर्वत पर जाय श्रीगोवर्द्धनधरकों प्यायो, कछू बच्यो सो लेकें नरो नीचे आई. तब श्रीआचार्यजी कहैं, तू कहां गई हती ? तब नरोने कही, पर्वतको देवता देवदमन हैं तिनकों दूध प्याइ आई. तब श्रीआचार्यजी कहें, या कटोरामें दूध बच्यो होयसों हमकों देऊ. तब नरोने दियो. सो श्रीआचार्यजी पान किये. तब सदू पाण्डे नरो भवानीके मनमें यह आई, जो ये काहूके घरको लेत नाहीं. देवदमनको अरोग्यो लियें. तातें इनकी, देवदमनकी बड़ी प्रीति जानि परत हैं. तब सदू पाण्डेने पूछी, महाराज ! यहां आप पधारे हो, ब्रजके तीर्थ करिवेकों, के कछू और मनोरथ हैं ? तब श्रीआचार्यजी कहें, हमकों दक्षिणमें झारखण्डमें देवदमननें कही, जो मोकों प्रगट करो. मैं श्रीगोवर्द्धन पर हों. इन्द्रदमन, नागदमन, मध्यमें देवदमन हों. ताके लिये हम यहां पधारे. सो देवदमन तुम्हारे ऊपर बड़ी कृपा करत हैं. तब सदू पाण्डे, नरो, भवानी विनती करी, महाराज ! तुम जीते, हम हारे, हमकों सेवक करो.

भावप्रकाश : याको अर्थ यह, जो हमारे ब्रजमें गावर्द्धनमें आवे सो दहीं, दूध, रोटी, सीधो जो मांगे सो हम देंहि. और आप तो सेवक बिना काहूको लेप नाहीं. ताते हम हारे. आप सेवक करो. हम ब्रजवासी जगतके पूज्य, आप हमारे पूज्य.

तब श्रीआचार्यजी कहें, काल्हि सवेरे तुमकों नाम सुनावेंगे. पाछें प्रातःकाल भयो तब सदू पाण्डे नरो, भवानी तीन्योको न्हवायकें बैठारे. पाछे नाम सुनाय निवेदन कराये. पाछें श्रीआचार्यजीने कही, तुम देवदमनकी सेवा करो. तब सदू पाण्डेने कही, महाराज ! हम ब्रजवासी गंवार है. आचार बिचार जानत नाहीं. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कहें. तुम्हारो प्रेम देवदमनमें है सोई सबके ऊपर हैं. तुम निष्कपट सुद्ध भक्त हो. तातें जैसो तुमतें बनें सो करियो. पाछे सदू पाण्डने सीधो, सामग्री, दूध, दहीं, घृत, खांड सब दियो. तब श्रीआचार्यजी रसोई करि भोग धरी भोजन किये. पाछे सदू पाण्डेके चोंतरा पर वैष्णवन सहित आय बिराजें. तब सदू पाण्डेको भाई मानिकचन्द, सो सदू पाण्डेसों न्यारो रहतो. सो रात्रि परी तब आयो.

भावप्रकाश : सो 'मधुमङ्गल' सखाको प्रागट्य मानिकचन्दको है.

पाछे सदू पाण्डे रात्रिकों सब ब्रजवासीनसों कहें, जो मेरे घर बड़े महापुरुष पधारे हैं. सो सवेरे देवदमनको प्रागट्य करेंगे. तातें तुम सगरे दरसनकों आइयो. तब बड़े - बड़े वृद्ध ब्रजवासी प्रमाणिक सब आये. मानिकचन्द, सदू पाण्डे आदि. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कहें, जो श्रीगोवर्द्धन पर्वत पर देवदमन कौन प्रकार प्रगट भये हैं ? सो कहो. तब सदू पाण्डेने कही, महाराज ! हमारे एक ग्वाल हतो. सो गामकी सगरी गाय चरायवेको जातो. सो एक ब्राह्मणकी बड़ी गाय हती, सो दूध बहोत देती. सो वह ब्राह्मण दुहिवेकों बैठ्यो, सो गाय कछू दूध न दियो. पाछें फेरि सवेरे दुहन बैठ्यो, तब हू न दियो ऐसे दोय दिन दूध न दियो, तब तीसरे दिन वह ग्वारिया पर ब्राह्मण खीज्यो. जो मेरी गाय बहोत दूध देती. सो तू गाय मेरी दुहि लेत हैं. या प्रकार ग्वालकों बहोत डरपायो. तब वह ग्वालनें कही, मैं तो तेरी गाय दुहत नाहीं. आजु तेरी गायकी ठीक पारूंगो. पाछे वह ग्वारिया, गाय सगरी वनमें ले गयो. उह गायकों नजरिमें राखी. तब उह गाय पर्वत ऊपर चढ़ी. तब ग्वारिया पीछे छिपिकें गयो. सो उह गाय जाय गोवर्द्धन पर्वत पर एक सिलामें छेद हतो, तहां आपही तें सगरो दूध श्रव दियो. तब ग्वारिया देखिकें फिरि बैठि रह्यो. पाछे घरी चारि दिन पिचलो रह्यो. तब फेरि वह गाय पर्वत पर चढ़ि उह छेदमें दूध श्रय दियो. सो ग्वारिया, सब गाय घर लायकें उह ब्राह्मणसों कही. तेरी गाय गोवर्द्धन पर्वत हैं तापर एक छेदमें, सगरो दूध श्रवत हैं. तें मोकों झूठेई चोरी लगाई. तेरे विश्वास न होय तो सवेरे मेरे सङ्ग चलियो. तब वह ब्राह्मणनें कही. मैं सवेरे चलूंगो. तब सवेरे दूध दुहन बैठ्यो. सो गाय दूध सब ऊपर चढ़ाय गई, रञ्च हू न दियो. तब वह ब्राह्मण ग्वारियाके सङ्ग गयो. सो गाय पर्वत पर जाय, दूध छेदमें करि दियो. पाछें सांझ, याहि प्रकार गाय दूध श्रव घर आई. तब उह ब्राह्मण (ने) रात्रिकों ब्रजवासी भेले करि यह बात गायकी कही. तब एक वृद्ध ब्रजवासीने कही. के तो छेदके नीचें कछू द्रव्य है, के कोई श्रीठाकुरजीको स्वरूप है. ये दोय वस्तु होय तहां गाय श्रवे. पाछें दस पांच ब्रजावासी मिलि, छेदके नीचे देखिवेको विचार कियो. सो प्रातःकाल भयो तब दस पन्द्रह वृद्ध - वृद्ध ब्रजवासी मिलि उह गायकें पीछें गये. सो गाय उह छेदमें दूध करि पर्वत तें नीचे उतरी. तब हमनें जो सिलामें छेद हतो सो सिला खोदिकें उठाई. तब नीचें बरस सातको बालक निकस्यो. तब मैं पूछ्यो जो तू कौन हैं ? तब उन कही मैं पर्वतको देवता हों. देवदमन मेरो नाम है. सो मोकों दूध दहीं बहोत प्रिय हैं. तेरी बेटी नरो हैं, ताके हाथ पठाय दीजो, सांज सवारे. और अब सिला ऊपर मति धरो. तब उह समय सगरे ब्रजवासी अपने - अपने घर आये. सवेरे दूध, दहीं, माखन, देवदमनकों अरोंगाय आवते. सांजकों दूध अरोगावतें. और भूख लागत

हैं, तब, आप ही देवदमन आय मांगि ले जात हैं. या प्रकार ब्रजवासी सबनकों देवदमननें बहोत सुख दियो हैं. ब्रजवासी जो मानता करत हैं, सो देवदमन पूरन करत हैं. अब आपकी जैसी इच्छा होय, सो मनोरथ करो. हम तो जा प्रकार देवदमन प्रगटें सो सब प्रकार कह्यो. तब मानिकचन्द, सदू पाण्डेके भाईने कही, मोकों देवदमन जब प्रगटे तब जतायो, जो मैं गिरिराज ऊपर प्रगट्यो हों, सो मोकों माखन नित्य दीजों. सो मैं माखन नित्य सवेरे देवदमनकों अरोगाय आवत हों. तब श्रीआचार्यजी कहें, काल्हि सवेरे पर्वत चलि दरसन करेंगे. पाछे प्रातःकाल श्रीआचार्यजीमहाप्रभु स्नान करि वैष्णव सहित पर्वत पर जायवेंको विचार किये. तब सदू पाण्डेकों बुलाये. तब सदू पाण्डे मानिकचन्द दोऊ आए. तब मानिकचन्दने कही, महाराज ! मोकों सरनि लीजिये. तब श्रीआचार्यजी मानिकचन्दकों न्हवाय नाम निवेदन कराये. पाछे सदू पाण्डे, मानिकचन्द, आपुनें सङ्गके वैष्णव ले, पर्वत ऊपर पधारे. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी उठिकें श्रीआचार्यजीके साम्हें आये. तब श्रीआचार्यजी गोवर्द्धनधरकों गोदमें ले दोऊ कपोल परसि कहें, बावा ! अब तुम्हारी कहा इच्छा है. तब श्रीगोवर्द्धनधर कहें, मेरी सेवा प्रगट करो. तब गोवर्द्धन पर्वत पर छोटोसो मन्दिर करि अपछराकुण्ड पर रामदास चोहान रजपूत गुफामें रहते तिनकों सेवक करि श्रीनाथजीकी सेवा करनकों कही. पाग परदनीको सिंगार करि ऊपर चन्द्रकामेंनसों जोरि मुकुट सारिखो करि धराये. गुञ्जाकी माला पहिराये. और दूध, दहीं, माखन सदू पाण्डे लाये सो भोग धरे. पाछें सदू पाण्डकों कही, तुम सामग्री वस्तु चहिये सो रामदासकों दीजो. तब जमुनावतामें कुम्भनदासजी गोरवा रहत हते, सो आय सेवक भये. तब कुम्भनदासकों कीर्तन गायबेकी सेवा दीनी. तब तहां ब्रजवासी गिरिराजके आसपासके बहोत श्रीआचार्यजीके सेवक भये. या प्रकार कछुक दिन सेवा भई. पाछे मन्दिर समरायवेकी आज्ञा पूरनमल्लकों करी. जब मन्दिर संवर्यो, तब रामदास चोहान रजपूतकी देह छूटी. तब श्रीआचार्यजी सदू पाण्डेसों कहें, तुम सेवा करो. तब सदू पाण्डने कही, महाराज ! हम ब्रजवासी कछू सेवा पूजाकी रीति जानत नाहीं. और अनेक घरके काम खेती, से हमसों न बनेगी. सामग्री वस्तु जो चहियेगी सो पहोंचावेंगे. तब श्रीआचार्यजी सदू पाण्डेसों कहें, और कोऊ विचारो. तब सदू पाण्डनें कही, राधाकुण्ड कृष्णकुण्ड पर बंगाली हैं, कहो तो बुलाऊं. तब श्रीआचार्यजी कहें बुलावो. तब बंगाली बुलाय रुद्र कुण्ड पर जोंपरी बंगालीनकों बनाय दिये. और कृष्णदास शूद्रकों सेवक करि अधिकारी किय हैं. जो बंगालीनकों चहिये सो मथुरा आगरा तें लाय दीजो. पाछें कृष्णदासने बंगालीनकों काढ़ि वैष्णव राखें. सो कृष्णदासकी वार्तामें कहेंगे. या प्रकार सदू पाण्डे, नरो, भवानी, मानिकचन्द आदि सेवक करि श्रीगोवर्द्धननाथजीकों बाहिर पधराय सेवा करायें.

वार्ताप्रसङ्ग २ : एक सयम श्रीगोवर्द्धनधर कहें, माकों गाय बहोत प्रिय हैं. तब श्रीआचार्यजी सद्‌ू पाण्डेकों बुलाय वेद-कर्म करिवेकी पवित्री हती, सो दे कहें, याके दाम करि श्रीगोवर्द्धननाथजीकों गाय लाय देहु ! तब सद्‌ू पाण्डेनें कही, महाराज! हमारे घर गाय भेंसि हैं सो सब श्रीगोवर्द्धननाथजीकी हैं. तब श्रीआचार्यजी कहें, हम कहें तैसें करो. या सोनों वेचि गाय हमारी ओरकी श्रीनाथजीकी भेट करति हैं. और तुम ब्रजवासी सगरे मिलकें एक-एक दोय-दोय गाय न्यारी भेट करो. तब सद्‌ू पाण्डे उह पवित्रि बेचि दोय गाय लाये. सो श्रीआचार्यजीनें श्रीनाथजीकी भेट करी. और सद्‌ू पाण्डे ब्रजवासी आदि काहूनें एक गाय भेट करी, काहूनें दोय गाय भेट करी. काहूनें चारि गाय भेट करी. सो हजारन गाय भेट गई. तब गायनके रहिवेके लिये गोपालपुर गाम मन्दिर पास बसायें. 'गोपाल' नाम श्रीठाकुरजीको धरे. ता दिन तें श्रीनाथजीके गाय बहोत बढ़ी. सो गाय श्रीठाकुरजीकों बहोत प्रिय हैं. सो छीतस्वामी गाये हैं. -

राग गौरी -
आगें गाय, पाछें गाय, इत गाय उत गाय, गोविन्दाकों गायनमें बसिवोई भावें ।
गायनके सङ्ग धावें, गायनमें सचुपावें, गायनकी खुररेनु अङ्गसों लगावें ।।१।।

गायनसों ब्रज छायो, वैकुण्ठ हु बिसरायो, गायनके हेतु, गिरि कर लें उठावें ।
'छीतस्वामी' गिरिधारि, विटठलेस वपु धारि, ग्वालियाको भेष किये, गायनमें आवें ।।२।।

या प्रकार सद्‌ू पाण्डे आदि ब्रजवासी सबनकों श्रीगोवर्द्धननाथजी सुख दिये.

वार्ताप्रसङ्ग ३ : और एक दिन सद्‌ू पाण्डेके घर श्रीगोवर्द्धननाथजी सोनेकी कटोरी लेकें मन्दिर तें आये. सो नरो सो कहें, यामें मोकों दूध करि दे. तब नरोने कहि, यह कटोरी तो छोटी है, यामें कहा दूध समायगो ? तब श्रीनाथजी कहें, तू यामें करि करिदे मैं पान

करूं. सो नरो दूध कटोरीमें करति जाय और श्रीगोवर्द्धनधर पान करत जाय. या प्रकार दूध पीके कटोरी नरोके उहाई डारिके रात्रिकों पाछे आय मन्दिरमें पौढि रहे. पाछें सवेरे भये घरकी टहल, दूध तातो करि, दहीं बिलोय, पाछें दूध, दहीं, माखन नित्यके नेगको ले, सोनेकी कटोरी ले, मन्दिरमें आय कह्यो. रात्रिकों देवदमन कटोरी सोनेकी लेके आयो, सो दूध पीके कटोरी मेरे घर डारि आयो. आखिर लरिका तो सही. सो यह सोनेकी कटोरी लेहु. तब सगरे भीतरिया सेवक चक्रत हूवे रहें. जो नरो पर ऐसी कृपा है. सो या प्रकार सदू पाण्डेके घर एक वार नित्य पधारतें.

वार्ताप्रसङ्ग ४ : सो सदू पाण्डेके परोसमें सदू पाण्डेको छोटो भाई मानिकचन्द ब्रजवासी रहत हतो. ताके घर गाय भेंसि बहोत. सो मानिकचन्दकी मा, सदू पांडेकी मा, ये वृद्ध बहौत हती. सो डोकरि मानिकचन्दके घर रहें. सो जब सबेरे दहींको बिलोवनो होय चुकें तब माखन रोटी दहीं उह डोकरीके आगें सगरे घरके लोग धरि दे. सगरे बालकनकों कलेऊ बांटिवेको उह डोकरीकौ नेम हतो. सो सगरे बालक आन्योरके भेले होय द्वार पर बैठि रहें. जब वह डोकरी पुकारै, अरे सगरे लरिका ! अपनो - अपनो कलेऊ ले जाउ. तब सगरे बालक पास आवें. तामें श्रीगोवर्द्धनधर हू बरस सातके बालक ह्वैके आवें. सो वह डोकरी एक बालकको हाथ पकरि नाम पूछि हाथ पर रोटी माखन दहीं धरे. या प्रकार सबको देई. पाछें जब श्रीनाथजीको हाथ पकरें तब पूछे तेरो कहा नाम है ? तब श्रीनाथजी कहें, मेरो नाम देवदमन ! तब डोकरी कहै, पर्वतको देवता देवदमन ? तब श्रीनाथजी कहें, हां, हां, वारि जाऊं, नित्य कलेऊ याहि समय लै जैयो. तब श्रीनाथजी पधारें. या प्रकार सदू पाण्डे आदि ब्रजवासिन पर श्रीगोवर्द्धनधर कृपा करते. बालककी नांई मांगिकें लेते. सो सदू पाण्डे, मानिकचन्द, नरो, भवानी, सदू पाण्डे मानिकचन्दकी माता डोकरी, ये बड़े श्रीआचार्यजीके कृपापात्र भगवदीय हे इनकी वार्ता कहां तांई कहिये. ....।।वार्ता ७३।।

८१-गोपालदास जटाधारी गौड़

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, गोपालदास, जटाधारी गौड़ ब्राह्मण प्रयागके तिनकी वार्ताको भाव हैं -

भावप्रकाश : ये गोपालदास लीलामें ललिताजीकी सखी हैं. 'रसभद्रा' लीलामें इनको नाम है. सो प्रयोगमें एक गौड़ ब्राह्मणके घर प्रगटे. सो बरष छैके भये. तब कासीमें कछू दिन रहि प्रयागमें मकर - स्नानकों सब आये. सो गोपालदास पिताके सङ्ग मकर स्नानकों गये. सो भीड़में पितासों बिछुटि गये. तब रोवन लागे. तब एक नागानें कही, मैं तोकों तेरे पिता पास ले चलूंगो. यों कही अपुने डेरा जाय तहां ते अपुनी वस्तुभाव ले गोपालदासकों ले भाज्यो. सो दक्षिणमें जाय अपुनो चेला करिकें राख्यो. पाछें गोपालदास उह नागाकी जमातिमें रहे. सो बरस तीसके भये. तब उह नागा मर्यो तब गोपालदासके मनमें यह आई, जो तीर्थ करिये. तब, सो पचास नागा वैरागीको सङ्ग करि द्वारिका गयो. पाछे द्वारिका तें वही सङ्ग मथुराकों चल्यो. सो मथुरा आयो. तामें गोपालदास हू आयो. सो ता समय विश्रान्ति पर श्रीआचार्यजी सन्ध्यावन्दन करते हे. सो गोपालदासकों श्रीआचार्यजीके दरसन भये. सो श्रीआचार्यजीके पास ठाड़े व्है रहें. तब कृष्णदास मेघननें कही. तू यहां क्यों ठाडो होय रह्यो है. तेरे सङ्ग नागा वैरागीको तो गयो. तब गोपालदासनें कही मेरो सङ्ग बहोत जन्मतें बिछुर्यो है. सो अब श्रीआचार्यजी मो पर कृपा करें. सो फेरि मोको भगवदीय, भगवानकों सङ्ग मिले. तब श्रीआचार्यजी सन्ध्यावन्दन करि कहें, गोपालदास ! आयो ? तब गोपालदास दण्डवत् करि कह्यो महाराज ! आपकी कृपा भई तो आयो. परन्तु महाराज मैं बहोत भटक्यो. अनेक मार्गमें दुःसङ्गमें सगरे पापाचरन करि महादुष्ट मैं व्है गयो. सो आपकी कृपातें या संसार समुद्र तरूंगो. और तो मेरो बल कछू नाहीं हैं. तातें कृपा करि मोकों अपनी सरन राखो तब श्रीआचार्यजी कहें, जटा माथेकी मुण्डायके न्हाय आवो, तब तुमकूं नाम सुनावेंगे. तब गोपालदास जटा मुण्डाय कूपमें न्हाय श्रीयमुनाजीमें न्हाय पाछे श्रीआचार्यजीके पास आये. तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाये निवेदन कराये. तब गोपालदासनें विनती करी, महाराज ! अब मोकों कहा आज्ञा हैं ? जो सेवा बतावो सो करूं. तब श्रीआचार्यजी कहें. हमारे सङ्ग गोवर्द्धन चलो. तहां श्रीगोवर्द्धनधरके बागकी सेवा करो. पाछे श्रीआचार्यजी मथुरातें श्रीगोवर्द्धन पधारे. तब तहां श्रीनाथजीके मन्दिरमें पधारे. तब गोपालदासकूं श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन कराये. पाछे श्रीनाथजीके बागकी सेवा दीने. सो सेवा ऐसी करें, एक - एक फूल फल सब नजरिमें राखें. सगरे वृक्षनकी चौकसी राखें. बागमें कहूं कूड़ा घास न रहें. सगरे वृक्ष जलसों हरे राखें. यह भाव विचारे जो यहां श्रीठाकुरजी खेलनकों पधारत हैं. तातें उत्तम जगह रहें तो आछो. या प्रकार कछुक दिन सेवा करी, सो एक वैष्णवको लरिका अपुने श्रीठाकुरजीके लिये नित्य दस पांच फूल चुराय ले जाय. सो गोपलदास बहोतेरो जतन कियो जो कोन फूल ले जात हैं. परन्तु जानि न परी. तब एक दिन गोपालदास उह बागमें छिप रहें. सो उह वैष्णवको लरिका वर्ष ग्यारहकों, सो चारों ओर गोपालदासकों देख्यो. जान्यो, जो अब ये नाहीं हैं. तब पांच फूल तार्यो. तब गोपालदास दौरिकें आयो, सो उह लरिकाकों पकरिके मार्यो. तब वह लरिका छुड़ायकें भाज्यो, सो गोपालदास क्रोध करिके उह लरिका पाछे दौरे. तब वह लरिका छूडायके भाज्यो,

सो श्रीनाथजीके मन्दिरमें छिप्यो. तहां भोगके किवाड़ खुले हते. तहां आइ वह लरिका दसदनमें छिप्यो. सो गोपालदास रीसके मारे चले आये. सो क्रोधमें मन्दिरको ज्ञान न रह्यो. उह बालकको एक धोल मारी. तब सबननें छुड़ाय दियो. सो श्रीनाथजीकों बहोत बुरी लागी, जो गोपालदास मेरी हू का'नि न करी ? मन्दिरमें मार्यो. पाछें भूलि हू गये. और उह बालककों यातें इतनों दण्ड भयो, जो श्रीनाथजीके फूल, घरके ठाकुरकों धरनो नाहीं. यह सिक्षा किये. पाछें पानघरकी सेवामें कोई न हतो. तब श्रीआचार्यजी गोपालदास जटाधारीकों पानघरकी सेवा दीनी. सो पानकी सेवा भली भांतिसों करन लागे. सो आषाढ़के दिन गरमी ऊमस बहोत परे, तब गोपालदास पान छाब पर बिछाय ऊपर आलो कपरा ढांकि सगरी रात्रि पंखा करें. सो श्रीआचार्यजीको यह नियम हतो, जो रात्रिमें दोय तिन बेर उठि सगरे सेवकनको देखी जाय. जो कोइ सेवक लौकिक वार्ता, काहूकी निंदा न करन पावे. सो अर्ध रात्रि समय एक दिवस श्रीआचार्यजी पधारे. सो दूरतें देखे तो कोई सेवक कीतन गावत है. कोई सेवक धोल गावत है, कोई सेवक पञ्चाध्यायीको पाठ करत है, कोई भगवद् वार्ता करत है. सो देखिकें प्रसन्न भये. जो कोई लौकिक बात काहूकी निंदा नाहीं कतर है. पाछें गोपालदासकों आय देखें तो नींदको जोका आयो है, परन्तु पाननको पंखा करत हैं. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु गोपालदासके ऊपर बहोत प्रसन्न भये. जो यह सबतें श्रेष्ठ है. जो नींद हू आवतमें भगवद् सेवा करत हैं.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कहें, जो गोपालदास सवेरे तुम न्हाइकें श्रीनाथजीके मन्दिर भीतर जाई श्रीनाथजीके निकट जाई, पंखा श्रीनाथजीकों करियो.

भावप्रकाश : काहे तें, पहलें खिचेमा पंखा हतो नाहीं.

तब गोपालदास सवेरे न्हाइकें श्रीनाथजीके मन्दिरमें श्रीनाथजीके निकट जाई पंखा श्रीनाथजीकों करन लागें. सो प्रेममें मगन व्है गये सो अनोसरमें हू श्रीआचार्यजीकी अज्ञातें पंखा करते. श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कहें, जो गोपालदास ! अनोसरमें आंखि मीचिके पंखा करियो. नेत्र मति खोलियो. सो रात्रिमें हूं आंखि मीचिके पंखा करते. सो ऐसे भगवदीय गोपालदास भये. जो सरीरको अध्यास लंघी आदि रात्रिकों बाधा न होती. पाछे रात्रिकों एक दिन श्रीनाथजी कहें, जो गोपालदास ! नेत्र खोलि, मेरे दरसन करि. तब गोपालदास कहें,

महाराज ! मोकों श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी आज्ञा नाहीं है. जातें नेत्र न खोलूंगो, तब श्रीनाथजी गोपालदासके मुखमें महाप्रसाद हू खवाय देते, परन्तु गोपालदास नेत्र न खोलते. ऐसे आज्ञा श्रीआचार्यजीकी पालन करते, जो श्रीनाथजी कहतें हू न खोलते. श्रीस्वामिनीजी पधारते, श्रीगोवर्द्धनधरसों वार्ता करती, सो सब सुनते. या प्रकारकी कृपा गोपालदास पर हती.

वार्ताप्रसङ्ग २ : पाछें एक दिन श्रीनाथजीके मनमें यह आई, जो यह वही गोपालदासक है, जो मेरे आगें वैष्णवको लरिका आय छिप्यो हतो. ताकों इन धोल मारी. यह अपराध याको है, से याहूकों दण्ड दे शुद्ध करनों. तातें याकों विरह दुःख कराय अङ्गीकार करूं. यह बिचारिकें गोपालदासको मन श्रीनाथजी फेरे. सो गोपालदास मनमें यह आई जो एक पृथ्वी परिक्रमा करि जाऊं.

भावप्रकाश : काहे तें, श्रीगुसांईजी लिखे हैं -

"बुद्धि प्रेरक कृष्णस्य पादपद्म प्रसीदतु ।"

जब जैसी बुद्धि जीवकों भगवान् प्रेरें तब तैसो कार्य उह जीव करें.

सो गोपालदास श्रीआचार्यजीके पास आय बिनती किये, जो महाराज ! आप आज्ञा देहु, जो पृथ्वी परिक्रमा करिवेको मन है. तब श्रीआचार्यजी कहें अवश्य करो. तब गोपालदास श्रीआचार्यजीकों दण्डोत् करि उठि चले. सो सगरे वैष्णव चकित व्है रहें. जो ऐसी कृपा जिन पर. जो श्रीनाथजी वार्ता करें, महाप्रसाद अपने श्रीहस्तसों खवावें, तिनकी ऐसी बुद्धि क्यों भई ! यह सब वैष्णवनके मनमें सन्देह भयो. तब एक वैष्णवनें श्रीआचार्यजीसों बिनती करी, जो महाराज ! गोपालदास ऐसे भगवदीयके मनमें यह ऐसी क्यों आई, जो सेवा छोड़ि करिकें पृथ्वी परिक्रमा करनकों चले ? तब श्रीआचार्यजी कहें, जो इनको एक महद् अपराध है. एक वैष्णवको बेटा श्रीनाथजीके बागके फूल चुरावतो ताकों ये गोपालदास श्रीनाथजीके मन्दिरमें मारे. ता अपराधको दण्ड प्रभु दिये हैं. सो यह आगें जाय न सकेगो.

विरह तापसों देह छोडि लीलामें प्राप्त होइगो. गोपालदासके परलोकमें बाधक नाहीं.

भावप्रकाश : यामें यह जताये, पाप पुण्यको भोग इहां करि चुके तब भगवद् प्राप्ति होई.

तब सब वैष्णवनकों सन्देह निवृत्त भयो. पाछें गोपालदास जब मजलि द्वै गये. तब श्रीनाथजीके स्वरूपानन्दकी सुधि आई. तब विरह तें व्याकुल होई गिरे. हाय, हाय, मो बराबर दुष्ट कौन ? यह श्रीनाथजीकी सेवा स्वरूपानन्दको अनुभव, वैष्णवको सङ्ग, सो सब छोडिकें मैं पृथ्वी परिक्रमाकों चल्यो ? धिक्कार मोकों, धिक्कार मेरी बुद्धिकों, जो यह मनमें आई. या प्रकार कहत विरह तें मूर्छा आई. सो श्रीगोवर्द्धनधरके स्वरूपको ध्यान धरि देह छोडि लीलामें प्राप्त भये.

भावप्रकाश : या वार्तामें यह जताय, जो अपराध काहूको न करनो. अपराध है सो उत्तम भगवद् धर्ममें आई वाधा करे. तब धर्म छूटि जाई. तातें अपराधमें सदा भय राखनो. और श्रीआचार्यजीकी आज्ञाको दृढ़ विश्वास राखनों. जो श्रीठाकुरजी हूं कहें, नेत्र खोलि, परन्तु श्रीआचार्यजीकी आज्ञा नाहीं, तातें न खोले. तब श्रीनाथजी प्रसन्न भये. और यह पुष्टिमार्गमें सगरे अपराध दूरि करिवेकों एक श्रीठाकुरजीको विरह मुख्य कारन है. विरह करि प्रभुको प्राप्ति होई, यह सिद्धान्त जताये. ... ।।वैष्णव ७४।।

सो गोपालदास ऐसे श्रीआचार्यजीके टेकके कृपापात्र भगवदीय हैं. इनकी वार्ता कहां तांई कहिये. ...वार्ता ।।७४।।

८२-कृष्णदास और उनकी स्त्री

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, कृष्णदास और उनकी स्त्री, गुजराती ब्राह्मण, सो गुजरातमें वाड चोइला गाम, सो वाड़में रहते, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ये लीलामें श्रुतिरूपानमें हैं. मदन गोपकी दोऊ बेटी. सो श्रीचन्द्रावलीजीकों श्रीठाकुरजी सङ्केतेमें मिलें सो बात, ये मदनगोपकी बेटी दोऊ 'नन्दा' 'शुभदा' इनको नाम, सो नन्दा, शुभदानें कीरतिजीसों सब कही. जो श्रीचन्द्रावलीजी और श्रीकृष्ण सङ्केतमें एकान्त बात करत हते. तब किरतिजी खीजि कहे, जो ऐसी बात काहूकी करिये नाहीं. सो बात सुनिकें चन्दावलीजीनें शाप दियो, जो भूमि पर तुम प्रगटो. तब नन्दा तो कृष्णदास भये. और सुभद्रा सो इनकी स्त्री भई. 'बाड' में कृष्णदास भये. 'चोइला' में एक ब्राह्मणके घर स्त्री प्रगटी, सो बड़े भये. तब कृष्णदासको ब्याह भयो. सो बालपनेसों इनकी दाऊनकी यह रीति जो वैरागी, साधु, संत आवे सो इनके घरसों खाली न जाई. सो एक दिन कृष्णदासकी स्त्री माटी लेंन गामकी दस पांच स्त्रीनके सङ्ग गई. सो माटी खोदतमें ऊपरतें बड़ो टीवो टूटि पर्यो सो सब स्त्री दबी. तहां श्रीआचार्यजी आय निकसे. सो टीवो टूटत देखे. तब सब वैष्णवसों कहें, बेगे माटी टारो, यहां स्त्री दबी हैं. ता समें गुजरातके वैष्णव सङ्ग बहोत हते. सो हाथों हाथ सगरी माटी टारि, सगरी स्त्रीनकों निकासें तामें द्वै चारि तो अधमरी भई. तब श्रीआचार्यजी वेद मन्त्र पढ़िकें सब स्त्रीन पर जल छिरके. तब सब सावधान भई. इतने (में) गामके लोग आये. सो अपने - अपने घरकी स्त्रीकों ले गये. तब कृष्णदासकी स्त्री श्रीआचार्यजीकों दण्डोत् करि बिनती करी जो महाराज ! आप कौन हो ? जो हम सगरीनकों दबीनकों, मरीनकों जीवाये. ऐसी आप दया करी. सो भगवान् बिना या समय और कोन सहाय करें ! तब श्रीआचार्यजी कहें. तू दैवी जीव हैं, भगवदीय है. सो भगवदीयके पाछें सगरी स्त्रीनको प्रान बचे. तब कृष्णदासकी स्त्रीनने बिनती करी, जो महाराज ! आप कृपा करिके मेरे घर पधारिये. मेरी सत्ता अङ्गीकार करिये. तब कृष्णदास मेघननें कही ये श्रीआचार्यजीमहाप्रभु अपुने सेवकको लेत हैं. और काहूको कछू लेत नाहीं. या प्रकार वार्ता करत है इतनेमें, गाममें कृष्णदासने सुनी, जो स्त्री माटीमें दबी, सो दौरे आये. तब स्त्रीनें कही, श्रीआचार्यजीमहाप्रभु ये साक्षात् इश्वर हैं. सो हम सगरी स्त्रीनकों निकारिकें जल छांटिकें जिवाये. परन्तु ये अपुने सेवकको लेत हैं. और काहूको कछू लेत नाहीं. तब कृष्णदास श्रीआचार्यजीकों दण्डोत् करि बिनती किये, जो महाराज हमारे घर पधारि हमकों, स्त्रीकों सेवक करियें. तब श्रीआचार्यजी कृष्णदासके घर पधारि कृष्णदासकों स्त्री सहित न्हवाई नाम निवेदन कराये. पाछे तें उन दोउनने बिनती करी, जो महाराज ! हमकों सेवा पधराय दीजिये. तब श्रीआचार्यजी कहें तुमकों वैष्णव सेवा दीनी है, सो आये गये वैष्णवकी सेवा करियों और श्रीनवनीतप्रियजीके वस्त्रकी सेवा दीनी. तीन रात्रि श्रीआचार्यजी कृष्णदासके घर रह मार्गकी सब रीति बताये. पाछें आपु द्वारिका पधारे. कृष्णदास स्त्री सहित सेवा करे. आये गये वैष्णवको समाधान करे. पाछें श्रीआचार्यजी श्रीद्वारिकातें पाछे पधारे तब एक रात्रि कृष्णदासके घर रहि अड़ेलकूं पधारे.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो एक समे दस पन्द्रह वैष्णव भेले होई अड़ेल श्रीआचार्यजीके दरसनको चले. सो कृष्णदासके घर आइ उतरे. ता दिन कृष्णदासके घर कछू सीधो सामग्री न हती. और कृष्णदास घर न हते. तब स्त्रीनें सगरे वैष्णवनकों दण्डौत् करि घरमें उतारि दिये. पाछें बिचार कियो, जो घरमें तो कछू है नाहीं. और आप घर नाहीं. वैष्णव भूखे होइंगे, तातें अब मैं कहा उपाय करूं ? सो वह गाममें एक बनियां हतो, सो या स्त्रीकों सुन्दर देखिके वह बनियां कबहू - कबहू या स्त्रीसों टोक करे. जो तू मेरे घर एक रात्रि आवे तो तू चाहे सो ले जा, तब वा स्त्रीनें बिचारी, जो वा बनियांके पास जाऊं. सो वा बनियाकी हाट पर आई वासों कही, जो एक रात्रि आऊंगी, सीधो सामग्री चहिये. तब वह बनियां प्रसन्न होइके जा इन मांग्यो सो दियो. तब वह स्त्री सामग्री घर लाई. स्नान करि, रसोई करि, श्रीठाकुरजीकों भोग धरि, सब वैष्णवनकों महाप्रसाद लिवायो. बच्चो सो गायनकूं खवाय दियो. आप वामें ते कछू न लियो. पाछें सीधो सामग्री लेके साजकूं कृष्णदास घर आये. सो वैष्णवनकों देखिकें प्रसन्न होइके सबसों मिलें. पाछें पूछे कबके आये ? तब वैष्णवनने कही, जा मध्यान्हके समें आये. तब कृष्णदासनें स्त्रीसों कही, वैष्णव भूखे होंइगे, सीधा ले रसोई बेगि करि. तब स्त्रीने कही, सो तो महाप्रसाद ले चुके, चिन्ता मति करो. तब कृष्णदास कहें, वैष्णव कहां तें लिये होंइगे, घरमें तो कछू हतो नाहीं. तब स्त्रीनें जा प्रकार कर्यो सो कह्यो. तब स्त्रीकों दण्डौत् करि कहे, तू धन्य है जो मेरो धर्म राख्यो. पाछें फेरि रात्रिकों रसोई करि भोग धरि वैष्णवनकों लिवाइ स्त्री पुरुष महाप्रसाद लिये. रात्रिकों वैष्णवनसों मिलि कीर्तन वार्ता किये ! पाछे सवेरे वैष्णव चलन लागे तब बिनती करि कहें, मेरे घर ते भूखे मति जाउ. पाछें स्त्री सहित कृष्णदास बेगि रसोई करि, भोग धरि महाप्रसाद लिवाइ, वैष्णवनकों प्रीति सहित विदा करि थोरीसी दूरि लों कृष्णदास पहुचावन गये. पाछें जब घर आये तब स्त्री सहित महाप्रसाद लिये. पाछें सन्ध्या भई, तब कृष्णदास स्त्रीसों कहें, तू वा बनियांसों काल्हि कोल करि आई है. सो वह बनियां तेरो मारग देखत होइगो. वाकी सामग्री ते आपुनो मनोरथ सिद्ध भयो, आपुनो धर्म रह्यो, तातें वाको मनोरथ हू सिद्ध कर्यो चहिये. तू न्हाइके सिंगार करि ले. तब स्त्री उबटना लगाइकें काजर वेंदी सिंन्दूर लगाइ पामनमें महावर दियो. इतनें चलन लागीं. सो वर्षाके दिन हते, सो मेह बरसन लाग्यौ. अंधेरी होई आई. तब कृष्णदासने कहीं, मार्गमें कीच भई है सों तेरे पांव कीचसों भरेंगे. और पावनकी महावारि छूंटि जाइ तो आछो नाहीं. उह बनियांको मन बिगरेगो. तातें तू मेरे कांधे पर चढ़ि ले. मैं वाकी हाट पर ताकों उतारि आउं. तब स्त्रीको कांधे पर लेके वाकी हाट पर पहोंचाई, आप कृष्णदास घर आये. तब स्त्रीनें बनियांको पुकार्यो, जो किवाड़ खोलि. तब वह बनियां मनमें प्रसन्न होइ पानीको लोटा सङ्ग लिये आयो. कह्यो, कीचके

पांव धोई ले. तब या स्त्रीनें कही, मेरे पांव सूखे, आछे कोरे हैं. तब बनियांने कही, मारगमें कीच बहोत हैं. तेरे पांव कोरे कैसें रहे ? तब स्त्रीनें कही मेरे पांव कोरे हैं, तेरे या बात पूछिवेको कहा काम है ? तेरो काम है सो तू करि. तब बनियांनें कही, तू यह बात सांच बताई दे, तेरे पांव ऐसे मेहमें कोरे क्यों रहे ? तब स्त्रीनें कही, मेरो पति अपने कांधे पर बैटाइ माकों तेरी हाट पर उतारि गयो है. तब बनियांने कही, यह बात तू सब सांची कही ? तेरो पति मेरे इंहा क्यों लायो ? और तु कबहूं मोसो बोलत नाहीं. सो आप अपुनें मुख कही, में एक रात्रि आऊंगी. ऐसे कहि सीधो सामग्री लियो. कछू द्रव्यादि नाहीं मांग्यों. सो यह सब कारन मोसों कहि. तब स्त्रीने कही, मेरे घर वैष्णव, मेरे गुरु भाइ, दस पांच आये सो घरमें कछू हतो नाहीं. सो मैं बिचारी, जो यह देह कहा काम आवेगी. वैष्णव तो भूखे हैं सो भली नाहीं. तातें उनके लिये सीधो मैं ले गई. सो मेरो पति तेरे ऊपर प्रसन्न होई तेरे हाट पर उतारि गयो है. ताते तू अपने मनमें डरपै मति. यह बात सुनी बनियां अपने जन्मकों धिक्कार करन लाग्यो. और कह्यो, तुम स्त्री पुरुष धन्य हो. पाछें दण्डात् करि कह्यो, तू मेरी धरमकी बहनि है, मेरो अपराध क्षमा करो. पाछें एक नई साड़ी पहराई कृष्णदासके घर लिवाय चल्यो. तहां जाई कृष्णदासकों दण्डोत् करि कही, जो मैं महापापी हों मेरो अपराध क्षमा करो. धन्य, तुम्हारो सांचो धरम हैं. और अब माकों कृपा करिके सरन लेहु. यह मेरी धरमकी बहिन है. और तुम मेरे बहनोई हो, मेरे पूज्य हो. परन्तु अब तुम मोकों अपनी सरनि लेकें यह संसार दुःख तें छुडावो. तब कृष्णदास कहें हमतो काहूकों सेवक करत नाहीं. हमहू श्रीआचार्यजीके सेवक हैं. तुम हू श्रीआचार्यजीके सेवक होई कृतार्थ होउ. अब कछुक दिनमें श्रीआचार्यजी द्वारिकाकों पधारेंगे. तब इहां पधारेंगे तब तुम सेवक होइयों. तब वह बनियां अपने घर आयो. पाछें नित्य सवेरे कृष्णदासकों दण्डौत् करि जाई. सो कछुक दिनमें श्रीआचार्यजी उह गाममें पधारे. तब कृष्णदासके घर उतरे. तब कृष्णदासनें सर्व प्रकार वा बनियांको श्रीआचार्यजी आगे कह्यो. बनियांकी आर्ति सेवक होनकी बहोत है. तब श्रीआचार्यजी कृष्णदाससों कहें, उह बनियांको बुलाओ. तब कृष्णदास बनियांसों सों जाई कहे, जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु पधारे हैं. तब वह बनियां कृष्णदासके सङ्ग आप श्रीआचार्यजीकों दण्डोत् करि बिनती कियो, जो महाराज ! मैं महा अधम हो, मो पर कृपा करिये. तब श्रीआचार्यजी उह बनियांकों न्हवाय नाम सुनाय ब्रह्मसम्बन्ध कराइ 'ज्ञानचन्द' नाम धर्यो. पाछें आप उह बनियांसों कहें, जो कृष्णदासके सङ्ग तें तोकों ज्ञान भयो है. तातें तू कृष्णदासको सङ्ग करियो. ताकरि तोकों भगवद् प्राप्ति होइगी. पाछें कृष्णदासके घर श्रीआचार्यजी रसोई पाक करि भोग धरि भोजन करि पोढे. पाछे प्रातःकाल पधारे. तब कृष्णदास थोरीसी दूरि पहोंचावनकों गयो. तब श्रीआचार्यजी कहें, जो कृष्णदास ! तू धन्य है, जो हम वैष्णव

सेवाकी तोसों कही हती तैसे ही वैष्णवकी सेवा तेंने तन मन धनसों करी. ताते तुम समान और कोई नाहीं. यह कहि आप पधारे और कृष्णदास घर आये. ऐसी भगवदीय कृष्णदास स्त्री सहित श्रीआचार्यजीके कृपापात्र हते. जिनके सङ्गतें बनियां भलो वैष्णव भयो. तातें कृष्णदास स्त्री पुरुषकी वार्ता कहां तांई कहिये. ....वार्ता ।।७५।।

भावप्रकाश : सो उह बनियां लीलामें गोप है. 'पेंली' याको नाम है, मूलमें दैवी जीव है. सो कृष्णदासके सङ्ग तें नाम निवेदन भयो. पाछें भलो कृपापात्र भयो यह कृष्णदासकी वार्ता अनिर्वचनीय हैं. जा वैष्णवकों दृढ़ धर्म होइ सो यह वार्ताकों कहें सुनें. और कच्ची दसा वारे वैष्णव ऐसो सुनिकें क्रिया करिवेको मन हू करे तो भ्रष्ट होई. काहेतें, कृष्णदास स्त्री पुरुष तो श्रीआचार्यजीके अङ्गीकृत हैं. हृदयमें इनकेमें श्रीआचार्यजी बिराजत हैं. तातें अग्निरूप है. इन पर कोई लौकिक दृष्टि करे तो भस्म होई जाई. यह तो बनियांकों कृपा करनके लिये याहि प्रकार किये. और वैष्णव सेवा अत्यन्त दुर्लभ दिखाई. ठाकुरजीको, गुरुको दास होई सेवा करे. परन्तु वैष्णवको दास वैष्णवकी सेवा हनी बहोत कठिन है. यह सिद्धान्त दिखाये. .... ।।वैष्णव ७५।।

८३-सन्तदास चोपड़ा क्षत्री

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, सन्तदास चोपड़ा क्षत्री, आगरेमें सेऊके बजार पास घर हतो तहां रहते, वार्ताको भाव कहत है -

भावप्रकाश : ये लीलामें चन्द्रावलीजीकी सखी हैं. 'चन्द्रिका' इनको नाम है. सो एक दिन चन्द्रावलीजीके सङ्ग श्रीयमुनाजी न्हानकूं दोऊ जनी गई. सो न्हाई चुकी तब चन्द्रावलीजी कहें, श्रीठाकुरजी अजहू लों श्रीयमुनाजीके तीर नाहीं पधारे. सो तू जइकें ठीक तो पारि आउ, जसोदाजीके घर. तब चन्द्रिका चली, सो श्रीनन्दरायजीके द्वार पर श्रीस्वामिनीजी मिली. तब श्रीस्वामिनीजीने पूछी, जो चन्द्रिका तू कहां चली ? और चन्द्रावलीजी कहां है ? तब चन्द्रिकानें कही मैं नाहीं जानत कहां हैं, तब स्वामिनीजीनें कही, तुम जूंठ क्यों बोलत हो. श्रीठाकुरजीकूं लेन आई होउगी. तुमहूं या बातमें बहोत चतुर हो. तब चन्द्रिकानें कही, या बातमें तो तुम चतुर हो, के चन्द्रावलीजी हैं. मैं तो कछू जानत नाहीं. मैं तो श्रीयमुनाजी न्हाइ आई हों. अब अपने घर जाति हों. या चतुराईमें कहा है. ब्रजके लोग सब चर्चा करत हैं. या प्रकार अभिमान पूर्वक कहें. तब श्रीस्वामिनीजी कहें, ऐसो मद भयो तो भूमि पर प्रगटो. मद जाई

तब यहां आइयो. तब चन्द्रिका सखी आगरेमें एक चोपड़ा क्षत्री बड़ो धनाढ्य हतो ताके घर प्रगटे. सो उह सन्तदासके पिताकों कोऊ सन्तति न हुती. तातें वैरागी, सन्तजनकों पुत्र निमित्त सीधो सामान देई. और सबसों बिनती करे, मेरे सन्तति नाहीं हैं तुम्हारी कृपा तें होई. तब एक वैरागीनें कही, पुत्र तो महादेव प्रसन्न होइ तब देई. तब उह क्षत्री महादेवकी पूजा व्रत ऐसो कियो सो सरीर सगरो सूकि गयो. तब स्वप्नमें महादेवने कही तुमकूं कहा चाहिये सो कहो. तब उह क्षत्रीनें कही आछो हरि भक्त बेटा मेरो होई, तब महादेवनें कही, मेरे दिये बेटा जितनें हैं सो भगवानसों बहिर्मुख हैं. और तू हरिभक्त पुत्र मांग्यो सो मैं कहां ते देऊं ? हरि भक्तनको सङ्ग तो मैं ही सदा चाहत हों. परन्तु याको जुवाब काल्हि देऊंगो. तब महादेव भगवान् पास जाईकें पूछे, महाराज ! एक क्षत्रीकूं मैं वर देन गयो, सो उह हरि भक्त पुत्र मांग्यो. सो वाके भाग्यमें कछू पूत्र है के नाहीं. तब भगवान् कहें, वासों जाय कहियो जो तेरे घर हरिभक्त पुत्र होइगो. सो सगरे कुटुम्बको उद्धार करेगो. ऐसो भगवदीय लीला सम्बन्धी जीव मेरे बराबरको प्रगटेगो. तब महादेव उह क्षत्रीसों दूसरे दिन स्वप्नमें कहें, जो तेरे बड़े भाग्य हैं तेरे घर पुत्र ऐसो हरिभक्त होइगो जो तेरो सगरो कुल पवित्र करेगो. पाछें महादेव घर गये. उह क्षत्री स्वप्न देखि प्रसन्न भयो. परन्तु मनमें यों आई जो कछू नाहीं भयो, जो स्वप्नकी बात हैं, जब सांची होई तब जानिये पाछें वाकी स्त्रीकों गर्भ रह्यो. समय पाय पुत्र भयो, और द्रव्य हू बढ्यो. सो पुत्र बड़ो भयो. तब पितानें सन्तदास वाको नाम धर्यो. पाछे सन्तदासको विवाह भयो. पाछें सन्तदासको पिता मर्यो. तब सूतकके दिन बीते ही नाहीं. तब ज्ञातिके क्षत्रीसों सन्तदास कहें. मेरे दिन बीतन नाहीं. सो कहू कथा वार्ता होत होई तो सुनो. तब वा क्षत्रीनें कही, इहां श्रीआचार्यजी कन्है शाल क्षत्रीके घर पधारें हैं. तिनकी कथा तुम सुनो तो मगन व्हे जाउ. तब सन्तदास कहें तुम जब जाऊ तब मोकों ले जैयो. पीछे तीसरे प्रहर उह क्षत्रीके सङ्ग सन्तदास आये. तब श्रीआचार्यजीकों दण्डोत् करि, बैठिकें कथा सुनि. सो हृदयमें यह ज्ञान उपज्यो, जो श्रीआचार्यजी पूर्ण पुरुषोत्तम हैं. पाछे सन्तदासनें श्रीआचार्यजीसों बिनती करी, जो महाराज ! कृपा करि मोकों सरनि लीजिये. तब श्रीआचार्यजी कहें, अभी तो तुमको सूतक है, सूतक पाछे तुमकूं सेवक करेंगे. तब दण्डोत् करि सन्तदास घर आये. पाछे सूतकको नित्य कथा सुनिवे आवते. श्रीआचार्यजीको दरसन करि आवते, तब खानपान करते. सो जब शुद्ध भये, तब न्हायकें श्रीआचार्यजी पास आई दण्डोत् करि बिनती करी, जो महाराज ! कृपा करि मेरे घर पधारिये, मेरे कुटुम्बकों, मोकों पावन करिये. तब श्रीआचार्यजी सन्तदासके घर पधारि सन्तदासकों न्हवाई नाम निवेदन कराये. तब सन्तदासने बिनती करी, जो महाराज ! स्त्रीकों सरनि लीजे. तब श्रीआचार्यजी कहें स्त्रीकों नाम सुनाबेगे, दैवी तो है नाहीं. परन्तु तेरे सङ्गते कृतार्थ होयगी. पाछे स्त्रीको नाम सुनाये. तब सन्तदासनें बिनती करी, जो महाराज ! अब माकों भगवद् सेवा पधराय दीजिये. तब श्रीआचार्यजी श्रीनवनीतप्रियजीके प्रसादी वस्त्र सेवाकों पधराय दिये. पाछें खासा करि सन्तदासके घर पाक सामग्री करि, भोग धरि, भोजन करि, सन्तदास स्त्री पुरुषकों जूठनकी पातरि आप धरें. सो महाप्रसाद स्त्री पुरुष लिये. पाछें श्रीआचार्यजी एकान्तमें अकेले बैठे हते,

तहां सन्तदास जाई दण्डोत् करि बिनती किये, जो महाराज ! मोपर ऐसी कृपा करिये जो या देहसों श्रीठाकुरजी अनुभव जनावें. और संसारको दुःख सुख बाधा न करें. आपुको स्वरूप हृदयारूढ़ होई. पुष्टिमार्गीय फलको अनुभव होई. तब श्रीआचार्यजी सन्तदासकों 'पुरुषोत्तमसहस्रनाम' पढ़ाये. और आपुनें ग्रन्थ किये हते सो पोथी सन्तदासकों देके कहें, तुमकों यह ग्रन्थ द्वारा सब मनोरथ पूर्ण होइगो. और, कछू दिनमें तेरो सगरो द्रव्य नास होइगो. जो द्रव्य श्रीठाकुरजीमें लगावेगो सो रहेगो. परन्तु श्रीठाकुरजीको वैभव बढ़ाये (पाछे) जब द्रव्य न होई तब वामे तें खानपान करे सो बहिर्मुख होई. सो तू विवेक धैयाश्रय राखि धीरज धारियो, तू दैवी है. सो तोसों धर्म निबहेगो. औरसों कठिन हैं. मैं तेरे ऊपर प्रसन्न हों, तातें ताकों लौकिक बाधा न करेगो. या प्रकार सन्तदास पर कृपा करि आप ब्रजमें पधारे. तब सन्तदासने सोनो रूपेके वासन आभूषन अनेक श्रीठाकुरजीके बनवायकें कितनें घरमें राखें, कितनें श्रीनाथजीके यहां पठाये. कितने श्रीगुसांईजीके यहां पठाये.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो सन्तदास बहुत सम्पन्न हुते. लक्ष रुपैयाको व्योपार हतो, सो व्योपारमें द्रव्य सब खोये. कछू चोरननें लियो, कछू राजा दण्ड लियो. पाछें निष्किञ्चन भये. परन्तु मनमें आनन्द भयो, जो श्रीआचार्यजी कहें सो भयो. पाछें चोबीस टकाकी पूंजी रही, ताकों ले कौडी सेऊके बजारमें बेचन लागे. सो कौड़िनकी ढेरी पैसा पसाकी न्यारी - न्यारी कहिकें धरते. आप काहू तें बोलते नाहीं. लोग पैसा धरिकें कोड़ीकी ढेरी ले जाते. सो अढाई पैसा नित्य कमाते. आप बैठे पोथी देखते. और आधे पैसाकी चबेनी, उष्णकालमें दारि भिजाई धतरे, सीतकालमें भूंजे चना धरते, एक टकामें राजभोग धरते, सो महाप्रसाद लेते. आधे पैसाकी चबेनी रात्रिकों, इनके घर वैष्णव मण्डली होती सो कीर्तन, वार्ता, भये उपरान्त बांटते. या प्रकार निर्वाह करते. ऐसे करत गौड देसके नारायनदास श्रीगुसांईजीके सेवकनें सुनी, जो सन्तदासकों द्रव्यको सङ्कोच बहोत है. तब नारायनदासनें सन्तदासकों एक पत्र लिख्यौ. तामें सो मोहौरकी हुण्डी पठाई. ता पत्र ऊपर टका कासदकूं लिख्यो. सो उह पत्र आगरे आयो. सो सन्तदास बांचिके अढ़ाई पैसा कमात हते तामें टका कासदकों दियो, और आप रसोईकी नागा किये. हुण्डी निकसी सो श्रीगुसांईजीकूं श्रीगोकुल पठाये. और नारायनदासकूं पत्र लिख्यो तामें यह लिख्यो, जो या तुम्हारी प्रभुतामें एक दिन राजभोगको नागा भयो, अब कबहूं ऐसी कृपा मति कीजों. और हुण्डी तुम्हारी श्रीगुसांईजीकों पठाई है. सो हुण्डी श्रीगोकुल चांपाभाई, सङ्करभाई, भण्डारी पास आई. तब चांपाभाई सङ्करभाई श्रीगुसांईजीकों वांचि सुनाये. कहें, महाराज ! नारायनदास गौड देसके ने सन्तदासको हुण्डी पठाई हुती, सो सन्तदासनें आपकों पठाई हैं. तब श्रीगुसांईजी श्रीमुखतें कहें, जो सन्तदास

बड़े भगवदीय श्रीआचार्यजीके कृपापात्र सेवक हैं. सो वैष्णवको द्रव्य कैसें राखें. तातें इहां पठाये.

भावप्रकाश : यह वार्तामें सन्देह है, जो चोबीस टकाकी पूंजीमें अढ़ाई पैसा कमाते. तामे ते टका कासदकों दिये. और लिखे जो राजभोगको नागा पर्यो. सो पूंजीमें ते एक टकाको क्यों न राजभोग धरें. इनकों तो भगवदाश्रय हैं. चोबीस टका पूंजीको आश्रय नाहीं है, जो काल्हि कैसें कमाईगें ? सहजमें जाको मन भगवानमे लागें. सो श्रीठाकुरजीकों नागा पूंजी राखिकें न करें, तो सन्तदास चोबीस टकाकी पूंजी राखिकें राजभोगमें नागा क्यों किये ? एक यह सन्देह, और आगरे सहरमें स्त्री सहित रहें सो अढ़ाई पैसामें निर्वाह कौन प्रकार करें ? घरमें अनेक खर्च, लकड़ी, तेल, घी, नोंन, सागादि. उत्सव, पवित्रा, श्रीआचार्यजीको जन्म दिन, यह सन्देह. तहां यह भाव जाननो, जब सन्तदासको सगरो द्रव्य गयो, तब श्रीठाकुरजीकी सेवामें मण्डान श्रीठाकुरजीके द्रव्यासों राखें. और श्रीठाकुरजीके द्रव्यमें ते चोबीस टका पूंजी करि कोड़ी बेचते. सो श्रीठाकुरजीकी पूंजीमें तें तो कासिदकों दियो न जाई. सो कमाईको टका दिये. तब इनकी मजूरीको राजभोग न भयो. सो महाप्रसाद हू न लियो. टकाके चूनको न्यारो भोग धरते. सो राजभाग जानते, महाप्रसाद लेते. और नित्यको नेग बहोत श्रीठाकुरजीके द्रव्यसों होतो. तातें अपुनी सेवा सिद्ध राजभोगकी न भई. कासिदकों दिये. सो नारायणदासकों लिखे, जो तुम्हारी प्रभुता तें एक दिन राजभोगको नागा पर्यो, जो मेरी सत्ताको भोग न धर्यो. या प्रकार सन्तदास विवेकधैयाश्रयको रूप दिखाये. विवेक यह, जो श्रीगुसांईजीको हुण्डी पठाई, अपुनी सेवा न भई, राजभोगको नागा जानें. धैर्य यह, जो श्रीठाकुरजीके द्रव्यको खानपान न किये. आश्रय यह, जो मनमें आनन्द पाये. दुःख क्लेश न पाये.

या प्रकार सन्तदास श्रीआचार्यजीके ग्रन्थके अनुसार सेवा किये. और रसमें मगन रहते. तातें इन सन्तदासकी वार्ता कहां तांई कहिये.

वार्ताप्रसङ्ग २ : और सन्तदासजीके घर वैष्णव मण्डली होई. सो चोकमें सगरे वैष्णव बैठें. तब महादेवजी छिपिकें घरके द्वारके पास नित्य भगवद् वार्ता सुनिवेकूं आवें, सो कोई जानें नाहीं. सो आगरेमें एक सेठ श्रीगुसांईजीको सेवक हतो. सो राजसी बहोत हतो. वानें सुनी, जो सन्तदासके घर रात्रिकों वैष्णव मण्डली भेली होई हैं. तहां भगवद् वार्ता होत है. सो बहोत सुख होत हैं. तब वा सेठनें कही, महाप्रसाद हू कछू बांटत हैं ? तब एक वैष्णवने कहि, चना चवेनी बांटत है. तब वा सेठने कहि मैं अपने घर वैष्णनव मण्डली भेली

करि ठोर लाडू बाटूगो. पाछें वा सेठने लाडू ठोर करि सांजकों सगरे वैष्णवनसों कहवाये. जो सेठके घर वैष्णव मण्डली भेली होत हैं. तहां ठौर लाडू बांटत हैं. पाछें रसिकजन कथा वार्ताके लोभी तो सब सन्तदासके घर आवें. और खान पानके लोभी सेठकी खुसामद करिवेबारे सेठके घर द्वै चारि आवें. या प्रकार दस पन्द्रह दिन बीते. तब सेठने कही, मैं ठोर लाडू बांटत हूं तो हू सगरे वैष्णव मेरे घर नाहीं आवत. सन्तदासके उहां चनाकी चबेनी बटत है तहां सगरे जात हैं. तब एकनें कही, सन्तदासके उहां भगवद् वार्ता कीर्तनको सुख बहोत परत हैं. तातें सब वैष्णव तहां जात हैं. तब सेठने कही, अपुने कही, अपुनें एक दिन सन्तदासके उहां चलिकें देखें, कैसो रस आवत है. ताहि प्रकार अपने घर करेंगे. सो द्वै चार अपने सङ्गके वैष्णव ले सेठ सन्तदासके घर आयो. सो भगवद् वर्ता भई सो सेठ कछु समुज्यो नाहीं. पाछे नींद आइ गई, पाछे कीर्तन वार्ता व्है चुकी. तब चना बंटे. सो सेठकों हू जगाईके चना दिये. सो सेठनें हाथमें लिये, परन्तु लाज पाई, मुखमें न डार्यो. हाथमें लिये उठ्यो सो जोड़ा पहिरिवे लाग्यो. तहां चना डारि दिये. तब महादेवजी चना बीनन लागे.सो वैष्णवन कही, यह कौन हैं ? सो चोर - चोर कहि पकरे. तब सन्तदास आय वैष्णवनसों कहें, ऐसे मति कहो, भगवद् वार्तामें चोर काहेकों आवेंगे ? तब महादेवसों सन्तदास पूछे, जो तुम कौन हो सांच कहो. तब कहें, तुम भगवदीय हो तातें कहत हों. इन सबनकों जान देहू. तब सगरे वैष्णव गये, तब कह्यो, मैं महादेव हों, सो छिपिकें भगवद् वार्ता कीर्तन सुनत हों. सो आज वा राजसी सेठनें महाप्रसाद धरती पर डारि दियो सो मैं बीनकें खायो. महाप्रसाद कहूं पांव नीचे आवे तो महा अनर्थ होई. तब सन्तदासनें कह्यो, तुम द्वारके पास क्यों बैठत हो ? भीतर आयो करो. तब महादेवनें कही, तुम पुष्टिमार्गीय भक्तनके बीचमें मर्यादामार्गीयको अधिकार नाहीं हैं. और तुम रसमें मगन होई श्रीठाकुरजीकी अनेक लीलाकी वार्ता करत हो. सो सुनिवेको हमारो अधिकार नाहीं हैं. तातें जितनो मेरो अधिकार है तितनो सुनत हों. तासों इतनी दूरि बैठिवो मोकों ठीक है. तब सन्तदासजीसों विदा होई महादेवजी अन्तरधान भये. तब किवाड़ लगाय सन्तदासजी घरमें आये. ता दिनतें सन्तदासनें यह रीति करी. जब अपुने मण्डलीके सब वैष्णव आई चुके तब द्वारके किवाड़ लगाईकें भगवद् वार्ता करें. जो कोई लौकिक जीव आवे तो आछो नाहीं. सो सन्तदास ऐसे भगवदीय हे.

वार्ताप्रसङ्ग ३ : और जब श्रीगुसांईजीको जन्म दिन आवतो, तब सन्तदास बर्षके वर्ष श्रीगुसांईजीके दरसनको श्रीगोकुल आवते. श्रीगुसांईजी सन्तदासकों श्रीआचार्यजीके कृपापात्र सेवक जानि, बहोत कृपा करते. पाछें कितनेक दिनमें सन्तदासको सरीर थक्यो, वृद्ध

भये. तब श्रीगोकुलजी तें चांपाभाई, सङ्करभाई बुलाये, श्रीगुसांईजीकों बिनती पत्र लिखिकें. तब श्रीगुसांईजी चांपाभाई भण्डारीसों कहें, जो तुम आगरे जाउ, सन्तदास वैष्णवके घर. अब वे देह छोड़ेंगे, सो चरणामृत महाप्रसाद ले जाउ. तब चांपाभाई श्रीगुसांईजीको चरणामृत ले महाप्रसाद ले आगरे सन्तदास पास आये. तब सन्तदास प्रीति पूर्वक चांपाभाई भण्डारीकों भेटे. तब चांपाभाई सन्तदासकों चरणामृत महाप्रसाद दिये. सो लेकें सन्तदासनें चांपाभाईसों कही, जो घरमें बासन पात्र जो कछू है सो सब श्रीगुसांईजीको है. पाछें श्रीठाकुरजी और श्रीठाकुरजीको जो द्रव्य हतो, घरको खतपत्र, सब चांपाभाईकों दे कहें, जो चाहो तो कोईक दिन स्त्रीजनकों घरमें रहन देउ. चाहो अबही बेचिकें दाम लेउ. या प्रकार सब चांपाभाईकों सोंपे. सो चांपाभाई घरके खतपत्र और सगरे वासन द्रव्य लेकें श्रीगोकुल आय सब समाचार श्रीगुसांईजी कहें, सन्तदास श्रीआचार्यजीके सेवक हैं. इनको विवेक, धैर्य, आश्रय, इनहीं सो बने. पाछें सन्तदासकी देह बहोत असक्त भई. सो भूमि सयन किये. तब आगरेके सब वैष्णव आइ जुरें. सो सन्तदाससों कहें, जो तुम कहो तो तुमकों रेनुका तीर्थ ले चलें. और कहो तो, मथुरा बड़ो छेत्र है तहां ले चलें. तब सन्तदास कहें, रेनुका, मथुरा, मोकों कहा कृतार्थ करेगी ? जन्म भरि श्रीआचार्यजीको आश्रय कियो. अब या समय तीर्थको आश्रय मैं कहा करूं ? और करूंतो महाबाधक है. तब सब वैष्णवनने कही, जो तुम कहो तो, श्रीगोकुल ले जांई तुमकों. तब सन्तदास कहें, अब हों श्रीगोकुल जाई कहा राख उड़ाऊं ? श्रीगोकुलकी सेवा तो मोसों कछू बनी नाहीं आई. तातें अब तुम सब कोऊ भगवद् नाम लेउ. तब सब वैष्णव भगवद् नाम लेन लागे. सो कोई तो पञ्चाध्यायीको पाठ करन लागे, कोई कीर्तन गावन लागे. पाछें जब देह छोड़िवेको समें भयो. तब सन्तदास वैष्णव चुप व्है गये. तब सन्तदास कहे, जो एक समें श्रीगुसांईजीको जन्म दिन हतो. ता दिन मैं श्रीगोकुल गयो. सो श्रीगुसांईजी केसरि स्नान करि केसरि धोती पहरि केसरी उपरना झटकिकें ओढ़त हते. तब मैं जाय दण्डोत् कियो. तब श्रीगुसांईजी कहें, सन्तदास अब आये ? तब मैं कही, हां महाराज ! अबही आयो. तब मोकों पाछे आयो जानि जल मंगाई प्रभु चरणोदक दिये. यह ध्यान वा समेंको करि देह छोड़ि लीलामें प्राप्त भये.

भावप्रकाश : सो सन्तदास ऐसे टेकके कृपापात्र भगवदीय है, कोई तीर्थको आश्रय न किये. एक श्रीआचार्यजीको दृढ़ आश्रय राखे. श्रीगोकुल आइवेकी नाही कहे, जो अब कहा राख उड़ाऊं. सो यह भाव, जो लीला स्थलमें लौकिक देह कहा डारूं ? अलौकिक देहसूं जो सेवा बनें श्रीगोकुलकी, श्रीठाकुरजीकी, सोई आछो है. और देहकी कहा है ? भगवद् आश्रय सर्वोपरी पदार्थ हैं. देह कहूं परी, यह जताये. .... ॥वैष्णव ७६॥

पाछें वैष्णवननें सन्तदासकी देहको संस्कार कियो. पाछें सन्तदासकी यह सब बात एक वैष्णवनें श्रीगोकुल आयकें श्रीगुसांईजीके आगें कही. तब श्रीगुसांईजीकों रोमांच व्हे आये. कहे, सन्तदास बड़े भगवदीय हे, ऐसो आश्रय वैष्णवकों करनों, जैसे सन्तदासनें कियो. या प्रकार सन्तदासकी बहोत सराना किये सो सन्तदास ऐसे श्रीआचार्यजीके कृपापात्र भगवदीय हते. इनकी वार्ता कहां तांई कहिये. ...वार्ता ।।७६।।

८४-सुन्दरदास मोधोदास गङ्गापुत्र

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, सुन्दरदास, मोधोदास, गङ्गापुत्र ब्राह्मण हते, सो जगन्नाथरायजीसों कोस दस उरे एक गाममें रहतें, ता गामको नाम पीपरीं है, तह रहते, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : लीलामें सुन्दरदास, माधोदास, दोऊ कुमारिकाके जूथमें राधा सहचरीकी सखी हैं. तहां सुन्दरदासको नाम 'शीला', माधोदासको नाम 'लीला'. ये दोऊ पूर्वमें पीपरी गाममें, (तहां) सुन्दरदास तो गङ्गापुत्र ब्राह्मणके घर जन्में. और माधोदास सारस्वत ब्राह्मणके घर जन्में. सो माधोदासको पिता एक, महजतिमें पीर हतो. ताहिको आश्रय करे. म्लेच्छ जैसें करें, ताही प्रकारसों माला बतासा नित्य चढावें. वाकें पुत्र न हतो, सो पीरकी मानता करी. तब पुत्र भयो तब सारस्वत ब्राह्मणको पीरमें दृढ़ विश्वास भयो. सो उह पीर डह सारस्वतसों बोलतो, बातें करतो. सो बात वह सारस्वत ब्राह्मण हिन्दू व्है कें प्रगट करे तो निन्दा होई. तातें बेटाको नाम माधोदास धर्यो. कृष्णचैतन्य गौड देसमें भये. तिनको सेवक माधोदासकों करायो. परन्तु मनमें दृढ़ता माधोदासके पिताकी पीरमें, उपर तें एक ठाकुर ले राखे. सो लोगनके दिखाइवेकों जें. जब ठाकुर आगें भोग धरे, तब पीरको नाम लेकें बुलावें, सो पीर खाई जाई. और वाही गाममें सुन्दरदास गङ्गापुत्र ब्राह्मण रहे. सो इनकी रीति यह, जो कोई सन्त महन्त महापुरुष आवें, तिनकी टहल सगरो दिन करें. पांच दावें, पानी, सीधा सब ल्याइ देई. द्वै कोसलों पहुंचावे. या प्रकारसों रहें. सो एक समय श्रीआचार्यजी श्रीजगन्नाथरायजीकों पधारें. सो पीपरी गामके पास तलाब पर उतरे. सो सुन्दरदास आय कृष्णदासकों दण्डौत् करि कहे, मैं आपके चरन दाबू, पानी ले आऊं. सीधा सामग्री जो कछू कहो सो आऊं. मैं या गाममें रहत हों.

सो जो कोउ सन्त महन्त महापुरुष आवत हैं तिनकी मैं टहल करत हों. तातें जो कछू टहल आप मोसों कहो सो मै करूं. तब कृष्णदास कहे, जो तू हमारी वस्तु, भावसों न्यारो रहियो, जो तू कछू छूवेगो सो छू जायगो. तातें तू जपने काम जा, हमारे कछू काम नाहीं हैं. देखि, काहूसों छुइयो मति. तब सुन्दरदासने कह्यो, मेरो कहा अपराध है ? जो कछू टहल नाहीं बतावत. मैं तो जो वैष्णव आवत हैं तिन सबनकी टहल करत हों. और तुम कहे कछू छूवे मति. ताकोका कारन कहा ? मैं तो ब्राह्मण हों. तब कृष्णदासने कही, जो तू ब्राह्मण है तो अपने घरको है. यहां तो श्रीआचार्यजीको सेवक होई ताहीसों टहल करावत हैं. ताहीको सब छुवावत हैं. औरकी छूई वस्तु कछू काम न आवे. तब सुन्दरदास नेक दूरि ठाड़े रहे. सो वैष्णवनने रञ्च - रञ्च सब जगह खोदिके, ल्याई, छिरकिके आसन बिछायो. ता ऊपर श्रीआचार्यजीमहाप्रभु बिराजे. सो श्रीआचार्यजीको स्वरूप देखिके सुन्दरदास मोहित गये ! पाछे कृष्णदास गाममें जाय, सीधो सामग्री ले आये. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु न्हाइ रसोई करि श्रीठाकुरीजकों भोग धरि, आप भोजन करे. पाछे सुन्दरदासकों दैवी जीव जानि महाप्रसाद दिये. सो महाप्रसाद लेत ही सुन्दरदासकी बुद्धि निर्मल व्है गई. तब सुन्दरदासने श्रीआचार्यजीसों बिनती करी, महाराज ! आप साक्षात् ईश्वर हो. सो मेरो अपराध है, जो मोसों कछू टहल न कराई. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कहे, जो हमारे सङ्ग वैष्णव हैं सो सब हमारी रीति मर्यादा जानत हैं. तुमकों अबही हमारी रीति मर्यादाकी खबरि नाहीं है. तातें तुमपे टहल कराये नाहीं तब सुन्दरदास कहें, महाराज ! मोकों सरनि ले, जा प्रकार मोसों बतावो ता प्रकार कछू टहल मैं आपकी करूं. तब मेरे मनमें सुख होय. तातें मोकों चरन तो छुवाओ ? तब श्री आचार्यजी सुन्दरदासकी दैन्यता देखि सुन्दरदासकों नाम सुनाय चरन छूवायो. पाछे श्रीआचार्यजीमहाप्रभु पौढ़े. तब सुन्दरदास सगरी रात्रि परम प्रीतिसों चरन सेवा कियो करे. श्रीआचार्यजीमहाप्रभु दोय चार बारि रात्रिकों कहैं, जो सुन्दरदास अब तुम सोई रहो. तब सुन्दरदासने बिनती करी, जो महाराज ! सोवनो तो नित्य है, परन्तु यह सेवा आपकी मोकों कब मिलेगी ? पाछे प्रातःकाल भयो तब सुन्दरदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों दण्डवत् करि बिनती किये, जो महाराज ! आप कृपा करिके मेरे घर पधारिये. और मेरी स्त्रीकों अङ्गीकार करिये. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु सुन्ददासके घर पधारि, आप स्नान करि रसोइ करि पाछे सुन्दरदाससों कहे, जो सुन्दरदास स्त्री सहित न्हाईके आउ. तब श्रीआचार्यजी सुन्दरदासकों ब्रह्मसम्बन्ध कराय स्त्रीकों नाम सुनाय निवेदन कराये. पाछे सुन्दरके घर लालजी ठाकुर हते. तिनकों पञ्चामृतसों न्हवाय आप भोग धरें. पाछे आप भोजन करि सुन्दरदासकों स्त्री सहित जूठन महाप्रसाद दिये. पाछे दोई दिन सुन्दरदासके घर रहि पुष्टिमार्गकी सब रीति बताय, आपतो श्रीजगन्नाथरायजीके दरसनकों पधारे. सुन्दरदास सेवा करन लागे.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो सुन्ददासको माधोदाससूं स्नेह बहोत हतो. सो सुन्दरदासनें मनमें बिचारी जो यह माधोदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुको

सेवक हाइ तो कृतार्थ होई. याको सब अन्याश्रय छूटे. तब सुन्दरदासनें माधोदास आगे श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बहोत बड़ाई करी. और माधोदाससों कह्यो, जो तुम श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक होउ तो याही जन्ममें कृतार्थ होउ. श्रीआचार्यजीमहाप्रभु साक्षात् भगवान् हैं. तब माधोदासनें कह्यो, जो मेरे तो जो कछू हैं सो कृष्णचैतन्य है. तब सुन्दरदास चुप करि रहै. परन्तु दोई जनमें स्नह बहोत.

भावप्रकाश : काहेते, लीलाको सम्बन्ध दृढ़ है, तातें इहां दृढ़ स्नेह भयो. और सुन्दरदासने माधोदासको कल्यान याही जन्ममें बिचार्यो. सो श्रीठाकुरजी अङ्गीकार करेंगे. भगवदीय जो बिचारे सोई होय.

पाछे श्रीआचार्यजीमहाप्रभु श्रीजगन्नाथरायजीके दरसन करि कछुक दिन तहां रहिके पाछे पुरुषोत्तमपुरीसों पधारे. तब सुन्दरदासके घर उतरि स्नान करि पाक सामग्री करे. पाछे श्रीठाकुरजीकों भोग धरे. ता समें माधोदास, सुन्दरदासके घर आई सुन्दरदासके पास बैठे. इतनेमें समय भयो तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु भोग सराये. सो माधोदासने महाप्रसादको थार भर्यो देख्यो. पाछे श्रीआचार्यजीमहाप्रभु अपा भोजन करि पौढ़ें तब माधोदासने सुन्दरदाससों कहीं, जो तेरे गुरु श्रीआचार्यजीके हाथ श्रीठाकुरजी अरोगत नाहीं हैं. मैं महाप्रसादको भर्यो थार देख्यो. और मेरे घरमैं, जो श्रीठाकुरजीकों धरत हूं, तामें ते एक ग्रास हू रखत नाहीं. ठाकुर मेरे सब खाय जात हैं. तब सुन्दरदासने कही, कछू नाहीं रहत है, तो तुम कहा खात हो ? तब माधोदासने कही, हौं अपने घर लायक न्यारो धरि राखत हों. ठाकुरकों अधिक होई तितनों धरत हो. तामें ते कछु खावत नाहीं. तब सुन्दरदासाने कही या बातको उत्तर तुम पिछले पहर अइयो तब तुमसों कहूंगों. तब माधोदास घर गये ! और सुन्दरदास स्त्री सहित महाप्रसाद लिये. पाछे श्रीआचार्यजी पोढिके उठे. तब सुन्दरदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुसों कहै, जो महाराज ! एक माधोदास सारस्वत ब्राह्मण है, सो कहत है, मैं ठाकुरके आगें धरत हूं सो सब मेरे ठाकुर खाई जात है. वाकी थारमें कछू रहत नाहीं. श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कहैं, वह मूर्ख है. वाके घर भूत खाय जात है. श्रीठाकुरजीको हस्त लगे सो वस्तु कबहू घटे नाहीं. सो वह माधोदास दैवी है, और तुम्हारे मनमें वाकों उद्धार करनको आयो है, तातें अब वाकों सरनि लेके वैष्णव अवश्य करनो है. तब सुन्दरदास प्रसन्न भये. पाछे माधोदास आये. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु माधोदासकों निकट बुलाईके कहै, माधोदास ! तेरे घर ठाकुरजी सगरी सामग्री खाई जात हैं ? तब माधोदासने कहीं, हां, हां कछू रहत नाहीं, थारमें ते सब खाई जात है. ऐसे मेरे ठाकुर हैं. तब

श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कहे, जो काल्हि जब तू भोग धरे तब हमकों पहले खबरि करियो, हमहू देखें. तब माधोदासने कही, काल्हि सबेरे तुमकों खबरि करूंगो. पाछे माधोदास घर गये. सबेरे उठि रसोई करि, आय, श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों कह्यो, महाराज ! पधारिये. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु तहां मन्दिरके द्वार पर जाय रहें. तब माधोदास थारमें सगरी सामग्री धरि श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों दिखाय कह्यो, जो अब में भोग धरत हूं. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कहै जो धरो. सो वह माधोदास ठाकुरके आगे धरिके पीरको सुमिरन कियो. सो वह पीर भूत हतो सो आयो, तब मन्दिरके पास आवत ही श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों देखि अग्नि तें जरन लाग्यो. और श्रीआचार्यजीमहाप्रभुन सो कह्यो, जो आज मैं भूखो मर्यो. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु भूतसों कहे, जो आज तांई तू खायो, सो तो खायो. आज पीछे तू कबहू मति अइयो, फेरि इहां आवेगो तो भस्म व्हे जायगो. तातें बेगि जा. तब वह पीर रोवत भाजि गयो. पाछे समय भयो तब माधोदास भोग सरावनकों मन्दिरमें गयो. सो तहां जाई देखे तो थारमें सगरी सामग्री ज्योंकी त्यों भरी है. तब माधोदासने श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों कह्यो, जो आज तुम इहां आये. सो मेरे ठाकुर अरोगे नाहीं, भूखे रहे. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु माधोदाससूं कछू कहे नाहीं. आप चुपचाप सुन्दरदासके घर पधारे. तहां रसोई करि श्रीठाकुरजीकों भोग धरि महाप्रसाद ले आप पोढ़े. पाछे सगरे वैष्णव, सुन्दरदास, महाप्रसाद लियो. पाछे रात्रि भई तब माधोदास सोये. ऐसेमें अर्ध रात्रि गई. तब श्रीठाकुरजीके अनुचर आये. माधोदासकों खाटतें ओंधो डारिके मारन लागे. तब माधोदास हो हा खायके कहै, जो तुम मोकों काहेकों मारत हो ? तब अनुचरनने कही, श्रीआचार्यजी तो भगवत्स्वरूप है. तिनसों तू कह्यो, जो तुम्हारे आए मेरे ठाकुर भूखे रहै. ताते ताकों मारत हैं. तेरे घर जो भूत खाई जात है, जा पीरको तू आश्रय कियो है, नित्य बुलावत है. सो आज श्रीआचार्यजी बैठे हते, ताते वह प्रेत अग्निसों जरन लाग्यो सो भाजि गयो. तेरे ठाकुर तो इतने दिनमें आज ही अरोगे हैं. तब माधोदासने कही, मैं श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको स्वरूप जान्यो नाहीं, तातें कह्यो. अब सवारे अपराध क्षमा कराय सेवक होऊंगों. अब तुम मोकों मति मारो. तब श्रीठाकुरजीके अनुचर कहे जो सवारे अपराध क्षमा न करावेगो तो, (और) सेवक उनको न होईगो तो, काल्हि रात्रिकों हम तोकों मारि डारि चूर्ण करेंगे. यह कहिके श्रीठाकुरजीके अनुचर गये. पाछे सवारे भयो तब माधोदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभु पास आई दण्डवत् बिनती कियो. जो महाराज ! मैं आपको अपराध बहोत सो कियो, मैं अज्ञानी जीव हूं, आपको स्वरूप कहा जानूं ? आप तो साक्षात् भगवान् हो. अब मेरो अपराध क्षमा करो. मेरे पिता मर्यो, सो मोकों कह्यो, जो तू या पीरको माने जैयो. सो उपर दिखायवेकूं ठाकुर राखो हतो. तातें आप अब कृपा करि मेरे घर पधारो, मोकों सरन लेहू. जा प्रकार आप बतावो ता

प्रकार मैं भववद् सेवा करूं. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु माधोदासकी दैन्यता देखिके माधोदासके ऊपर प्रसन्न होई, माधोदासके घर कृपा करि, फेरि पधारो. तहां स्नान कराई नाम सुनाई ब्रह्मसम्बन्ध कराये. पाछे श्रीठाकुरजीकों पञ्चामृत स्नान कराई, पाट बैठाय, माधोदासके माथे पधराये. पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप रसोई करि श्रीठाकुरजीकों भोग धरिकें आप भोजन किये. पाछे श्रीआचार्यजी महाप्रभुनने माधोदाससूं कह्यो, जो माधोदास ! या गाममें जितने वैष्णव होई तिन सबनकों महाप्रसाद लेंनकों बुलाई ल्याऊ. तब माधोदासने श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों कह्यो, जो महाराज ! महाप्रसाद तो थोरो है. और या गाममें वैष्णव तो बहोत हैं. सो सबकों कैसे पहोंचेगो ? तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहें, जो तू मूर्ख है, महाप्रसाद कबहूं निघट्यो है ? जा सब वैष्णवनको बुलाई लाव. तब माधोदास वैष्णवनसों कहै, जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु बेगे बुलावत हैं, सो चलो. सो सुनत ही सगरे वैष्णव सब कामकाज छोड़िके दौरे आये. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु सबनके आगे महाप्रसादकी पातरि धरिके सबनको महाप्रसाद लिवाय दियो. और महाप्रसादको थार भर्योको भर्यो ही रह्यो. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुने माधोदाससूं कह्यो, जो माधोदास ! देखि वैष्णवकों दृढ़ विश्वास चहिये. महाप्रसाद कबहूं न घटे. या प्रकारकौ माहात्म्य श्रीआचार्यजीमहाप्रभुने माधोदासकों वा समय वा ठौर दिखायो.

भावप्रकाश : क्यों, जो इनकों अब ही दृढ़ विश्वास नाहीं है, नयो वैष्णव हैं. कछू माहात्म्य देखें तो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको दृढ़ आश्रय होय. आश्रय बिना भगवद् प्राप्ति फल सिद्धि न होई. तातें माहात्म्य दिखायो.

तब माधोदासकों विश्वास दृढ़ भयो. पाछें श्रीआचार्यजी वहां रहि, माधोदासकों सगरी रीति भांति पुष्टिमार्गकी बताय आप कासी पधारे.

भावप्रकाश : यह वार्तामें यह सिद्धान्त भयो, जो भगवदीयके सङ्ग तें कैसोउ दुष्ट होई परन्तु वाको उद्धार होई. और माधादास ठाकुरके आगे भोग धरे सो भूत खाई, यह बात सम्भव नाहीं. काहे तें श्रीठाकुरजीको नाम होई, तहां भूत आदिको प्रवेश न होई. तो श्रीठाकुरजीके आगे भोग धरे सो भूत कैसे खाय ? तातें ऊपर कहि आये, जो माधोदासकों, पिताके सङ्ग तें प्रेतको आश्रय (सिद्ध) भयो हतो. तातें भूत खाई जातो. याते यह जताये, जो खोटे

मनुष्यको सङ्ग किये दुःख होई, सतसङ्ग किये कृतार्थ होई. .... ।।वैष्णव ७७।।

सो सुन्दरदासकें सङ्ग ते माधोदास बढ़े भगवदीय भये. श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावते. तातें सुन्दरदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे. सो इनकी वार्ता कहां तांई कहिये. ....वार्ता ।।७७।।

८५-मावजी पटेल और पत्नी बिरजो

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक मावजी पटेल और इनकी स्त्री बिरजो, ये उज्जनमें रहते, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : और मावजी पटेल और बिरजो, जा प्रकार श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक भये, सो सब पद्मारावल सहित गोपालदासकी वार्तामें ऊपर कहि आये हैं. तातें इहां नाहीं कहे. लीलामें ये श्रीचन्द्रावलीजीकी सखी हैं. इन मावजी पटेलको नाम 'रूपा' है. ओर 'हरखा' बिरजोको नाम है. सो उज्जैनमें जन्मे. सो मावजी पटेलके पास द्रव्य बहोत हतो. सो एक बार बिरजो श्रीगोकुल आई, तब श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! मोकों भगवद् सेवा पधराई दीजें. मैं श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों बिनती करी हती, तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कहें, जो तुम्हारो मनोरथ श्रीगुसांईजी पूर्ण करेंगे. तातें आप अब मोपे कृपा करिये. तब श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजीके खेलवेके ठाकुरमें ते एक लालजी बिरजोके माथे पधराय दिये. तब बिरजोने श्रीगुसांईजी सो बिनती करी, जो महाराज ! श्रीठाकुरजी बेगि कृपा करि अनुभव जतावें, सो उपाय आप कृपा करिके कहिये. तब श्रीगुसांईजी कहें, जैसो भाव हमारे ऊपर राखत हो तेसो भाव पुष्टिमार्गीय वेष्णवनमें राखियो. तुम्हारो सगरो मनोरथ श्रीठाकुरजी पूर्ण करेंगे. तब बिरजो श्रीगुसांईजीसों बिदा होइ श्रीठाकुरजी श्रीठाकुरजीकूं घरमें पधरायके बड़ो उत्सव कियो. गाम गामके वैष्णव बुलाई महाप्रसाद, खरची आदि वस्त्रसों सबको समाधान कियो. उज्जैनमें पद्मारावलके बेटा कृष्णभटटके सङ्ग तें अलौकिक बुद्धि भई. श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे.

वार्ताप्रसङ्ग १ : और बिरजो वर्ष दिनमें दोय बार ब्रजमें श्रीगोकुल, श्रीगुसांईजीके दरसनकों, (तथा) श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों

आवती. सो एक गाड़ा गुढ़को, एक घीको, भरिके सङ्ग ले आवती. सो पन्द्रह दिन श्रीनाथजीद्वारमें रहती. और पन्द्रह दिन श्रीगोकुलमें रहती. तब श्रीगोवर्द्धनधरके सामग्री करावती. महाप्रसाद आवतो सो ढांकि राखती. सो ग्वाल गाय चरायके आवते तब सगरो महाप्रसाद लिवाय गायनके खिड़कमें आवती, ग्वालनकों, गायनकों महाप्रसाद लिबावती. गेहूंनकी थूली करि गायनकों खावावती. सगरे सेवकनकों पहरावनी करती. सबनकों सेवगी देती. श्रीनाथजीकों नित्य नये मनोरथ, आभूषण, वस्त्र करती. सो सगरे सेवक प्रसन्न रहते. और श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजीकी भेंट पधरावनी, सगरे बालक बहू बेटीनकों पहिरावनी नित्य नये मनोरथ करती.

वार्ताप्रसङ्ग २ : और एक समय उत्सवके दिन वैष्णव महाप्रसाद लेत हतें. बिरजो अनसखड़ी परोसत हती. तब बिरजोके मनमें यह मनोरथ भयो, जो सगरे वैष्णवकी मण्डली बैठी हौई, और मैं सखड़ी महाप्रसाद परोसों. पाछें बिरजोनें कृष्णभटटसों कही, मेरे मनमें यह मनोरथ भयो है, जो सगरे गाम गामके वैष्णव बुलाई सखड़ी महाप्रसाद मैं अपने हाथसों सगरे वैष्णवनकों परोसों. तब कृष्णभटट कहें, यह मनोरथ श्रीगुसांईजी आज्ञा करें तो भक्ति भावसों सिद्ध होई. सो सगरे वैष्णवके समाज सहित श्रीगुसांईजी पास श्रीगोकुल जैये. तब आप कहें सो होय. परन्तु यह मनोरथ द्रव्य साध्य है. तब बिरजो आइ मावजी पटेलसों कही, जो मेरो यह मनोरथ है, सो तुम पूरण करो. सगरे वैष्णवनकों महाप्रसाद लिवाऊं, अपने हाथसों. सो मैं कृष्णभटटसों पूछी. तब कृष्णभटट कहें, द्रव्य साध्य है. वैष्णवनकों श्रीगोकुल ले जैये. तब मावजी पटेलनें कही, मो पास लक्ष मोहौर हैं. जो इतनेमें काम होई तो सुकेन कृष्णभटटसों पूछिकें मनोरथ करो. तब बिरजो कृष्णभटटनें कह्यो, अवश्य, तुम्हारो मनोरथ प्रभु पूरण करेंगे. तब बिरजो आइ मावजी पटेलसों कही, कृष्णभटटनें कहीं है इतनेमें मनोरथ पूरण होइगो. तब मावजी द्रव्य भेलो करि लक्ष मोहौर बिरजोकों दियो. तब बिरजो लक्ष मोहौर कृष्णभटटके आगे धरि बिनती करी, अब तुम्हारे हाथ है, मेरो मनोरथ पूरण करो. तब कृष्णभटट गाम गामके वैष्णवनकों पत्र लिखिके असवार गाड़ी, खरची पठाई. प्रीति पूर्वक सगरे वैष्ण गुजरात, हालारके भेले करि सबनकों न्यारों - न्यारो डेरा खर्ची दिये. पाछें उज्जैन तें सगरे वैष्णव सहित कृष्णभटट, बिरजो श्रीगोकुलकों चले. सो श्रीनाथजीद्वार आयके समाज सहित श्रीनाथजीके दरसन करे. श्रीनाथजीकों सामग्री, बागा, वस्त्र, आभूषणको मनोरथ करि श्रीगोकुल आये. श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन करि, श्रीगुसांईजीके दरसन किये. तब श्रीगुसांईजीसों कृष्णभटटनें बिनती करी जो महाराज ! बिरजोको यह मनोरथ भयो है. जो सगरे वैष्णवनकों सखड़ी महाप्रसाद हों अपने हाथसों परोसों. ताके लिये

सगरे वैष्णवनके समाज सहित आपके पास आये हैं. सो आप आज्ञा देहु तब यह मनोरथ पूरण होय. तब श्रीगुसांईजी मनमें विचारे, जो बिरजोके बड़े भाग्य हैं, जो ऐसो मनोरथ उठ्यो. परन्तु अब हम आज्ञा देंह तो या समय तो बाधा नाहीं. यह मनोरथ जगतमें प्रसिद्ध होवे. परन्तु श्रीआचार्यजीनें वेदमर्यादा राखी है, जो हमतें लोग सगरे यह कहेंगे, जो श्रीगुसांईजी वेदमर्यादाके पालन हारे, सगरे ब्राह्मणनकों पटेलके हाथसों सखड़ी महाप्रसाद लिवाये. या प्रकार दोष बुद्धि करि अनेक जीवकों बिगार होई. और वैष्णवको मनोरथ न करीये तो पुष्टि भक्तिको विरोध होय. तातें भक्तनके मनोरथकों तो अवश्य पूरण कर्यो चहिये. पाछें यह विचार्यो, जो जामें मर्यादा रहे, भक्तनको मनोरथ पूरण होई, सगरे वैष्णव प्रसन्न होई, सो करनो. तब श्रीगुसांईजीनें कही, जो यह मनोरथ तो श्रीजगन्नाथरायजी पुरुषोत्तमपुरीमें सिद्ध होई. तामें पूरवके वैष्णव हू सगरे आवेंगे. तब कृष्णभटटनें बिरजोसों कही, जो यह मनोरथ श्रीजगन्नाथजी चलिये, तहां पुरुषोत्तमपुरीमें सिद्ध होइगो. तहां पूरो मनोरथ है, सो सिद्ध होइगो. तब विरजोनें कही, बहोत आछी, पुरुषोत्तमपुरी चलिये. श्रीगुसांईजी हू कृपा करि पधारे तो बहोत सुख होय. तब कृष्णभटटने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! आपहू कृपा करिके पुरुषोत्तमपुरी पधारो तो बहोत सुख होई. तब श्रीगुसांईजी कहे, हमहूं पधारेंगे, वैष्णव प्रसन्न होई सो करनों. पाछें श्रीनन्द, पच्छिमके वैष्णव बुलाये. मथुराके वैष्णव सङ्ग ले श्रीगुसांईजी सहित आगरे आये. आगरेके वैष्णव सङ्ग ले समाज सहित कासी आय कासीके वैष्णव सगरे सङ्ग लिये. या प्रकार गाम गामके वैष्णव सङ्ग लिये. सो जाही गाममें उतरे तहां नित्य नई सामग्रीके मनोरथ गाम गामके वैष्णवके डेरा न्यारे - न्यारे ठाड़े होई. तहां न्यारे - न्यारे कीरतन - वार्ता श्रीगुसांईजीकों नित्य नये मनोरथ. व्यौपारी अपुने गाड़ी सीधा सामानके लिये सङ्ग चले. सो सगरे वैष्णवके हृदयमें आनन्द. नित्य श्रीगुसांईजीको दरसन. नित्य नये उत्सव. जैसे श्रीकृष्णकी असवारी द्वारिकामें निकसे, या प्रकारको. वैष्णव बूढे आदिकों असबारी, भांति भांतिकी. जा गाममें उतरे ता गामके लोग अनेक सुखी भये, द्रव्यादिकसों. या प्रकार गाम गामके वैष्णव सङ्ग ले श्रीपुरुषोत्तमपुरी आये. श्रीजगन्नाथजीके दरसन किये. नाना प्रकारकी सखड़ी, अनसखड़ी सामग्री कराई. पाछें बिरजोने श्रीगुसांईजीकों अपने हाथसों सखड़ी, अनसखड़ीको थार साजिके भोजन करायो. पाछें सगरे वैष्णवनकों बिरजो परोसिके प्रेममें मगन व्हैं गई. आनन्दके आंसू नेत्रनमें भरे. देह सगरीमें पुलकावली भई. मनमें कही, धन्य श्रीगुसांईजी हैं, और कृष्णभटट सरीखे भगवदीय हैं. जो मोकों या सुखको अनुभव कराये. पाछें कछुक दिन पुरुषोत्तमपुरीमें रहिके नित्य नये मनोरथ नाना प्रकारकी सामग्रीके, जा वैष्णवकों जो रुचे सो लिवाए. पाछें पुरुषोत्तपुरीसों सब समाज सहित चले, सो वाही प्रकार प्रति दिन नित्य नई. ऐसे करत श्रीगोकुल आये. कछुक दिन गोकुल

श्रीनाथजीद्वार रहि नाना प्रकारके मनोरथ किये. पाछें द्रव्य बच्यो सो बिरजो ने श्रीगुसांईजीकी भेट कियो. तब श्रीगुसांईजी बिरजोके ऊपर बहोत प्रसन्न भये, जो अलौकिक, वैष्णवको मनोरथ कियो. पाछें बिरजो श्रीगुसांईजीसों बिदा होईके समाज सहित उज्जैन आई. सगरे वैष्णवकों प्रीति पूर्वक महाप्रसाद लिवाइ, खरची न हती तिनकों खरची, वस्त्र पात्र दे, सबनकों प्रसन्न करि विदा किये. सो बिरजो कृष्णभटटके सङ्ग तें भली वैष्णव भई. सगरे वैष्णव और श्रीगुसांईजी उनसों प्रसन्न रहते. श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावते. सो मावजी पटेल और बिरजो ऐसे श्रीआचार्यजीके कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिये. ....वार्ता ।।७८।।

८६-गोपालदास क्षत्री

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, गोपालदास क्षत्री, पश्चिममें रहते, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ये गोपालदास लीलामें श्रीनन्दरायजीके मुख्य खवास हैं. तहां 'जसवन्त' इनको नाम है. सो जसवन्त, नन्दरायजीकों वरुन पकरि ले गयो ता दिन श्रीनन्दरायजीकों घाट पर बैठारि आप अपने घर अपने कार्यकों गयो. पाछे श्रीनन्दरायजी अकेले हते. सो वरुनने पकरे. सो श्रीठाकुरजी सुनिके वरुनलोक तें श्रीनन्दरायजीकों ले आये. तब श्रीबलदेवजी श्रीनन्दरायजीके खवास जसवन्तसों कहे, जो श्रीनन्दरायजीकों ले श्रीनन्दरायजीकों वरुण ले गयो तब तू कहां रह्यो ? तब जसवन्तने कही, मैं अपने घर कछू काम आयो हतो. तब श्रीबलदेवजी शाप दिये. जो जाऊ, भूमि पर परो. इतनो श्रम श्रीनन्दरायजीकों करायो. खवास होई रात्रिकों सङ्ग न रह्यो. सो पश्चिममें गोपालदास नरोड़ामें एक क्षत्रीके घर प्रगटे. सो सात वर्षके भये तब विद्या बहोत पढ़े. और द्रव्य बहुत हतो. दस पांच आदमी आगे पाछे चलते. सो काहूकों बदते नाहीं. जो कोई भले मनुष्य होई तिनकूं एक दोय दोष लगावते. पाछे पश्चिममें एक दूसरो गाम हतो. तहां गोपालदासको विवाह भयो. सो ब्याह करि स्त्रीकों ले गोपालदास आवत हते. सो मार्गमें एक बड़ो पण्डित मिल्यो, तासो वाद करन लागे. सो तीन दिन मार्गमें डेरा करिक रहै. परन्तु उह पण्डितसों जीते नाहीं. पाछे लराई भई. तब गोपालदासको पिता छुडावन गयो. सो पण्डितके मनुष्यने तीर मार्यो. सो गोपालदासको पिता मर्यो, तब गोपालदास हथियार ले दोरे. सो पण्डित अपने मनुष्यन सहित भाजि गयो. गोपालदास बहोत ढूढे, परन्तु कहूं पाये नाहीं. तब पिताकी देहको संस्कार करि घर आये. पाछे गोपालदास द्वारिका श्रीरणछोडजीके दरसनकों गये. तहां श्रीआचार्यजीमहाप्रभु पधारे हते. तब

गोपालदासने सुनी, जो श्रीआचार्यजी बड़े पण्डित हैं, मायामत खण्डन किये हैं. तब गोपालदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों वाद करनकों आये. सो तत्काल चरचामें हारे. तब गोपालदासने श्रीआचार्यमहाप्रभुनसों कह्यो, जो वैष्णव धर्ममें कहा है ? ठाकुरजी तो सबके घटमें बिराजत हैं. सगरो जगत् कृष्णरूप आपहू कहें. तब वैष्णव कुत्ता आदिसों छुई क्यों जात हैं ? सब भगवद् रूप भयो तहां छुई कैसो जाई ? तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कहें. हमारो तो वेद मार्ग है. सो वेद शास्त्र यह कहत हैं, जो जगत् भगवद् रूप और इतने हीनतें छुई जाई. इतने उत्तम. दया सबके उपर करनों. यह कहे सो वेद रीति, वैष्णव कहत हैं. ओर तू निर्गुण व्यापक कहत हैं, संसार सब ब्रह्म रूप है. सों तू सबमें दोष बुद्धि करि जाकी ताकी निंदा क्यों करत है ? कपरा क्यों पहरे हैं ? ब्रह्मको कछू करनो नाहीं. साक्षीवत् व्है रहे. अब तू सोच. या प्रकार सुनिके गोपालदासकों ज्ञान भयो. तब गोपालदासने कही, अब मैं आपकी सरन हों. जन्म सगरो कुटिलता करत मोकों वीत्यो. अब मोकों सरनि लेके कृतार्थ करो. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु गोपालदासकों न्हवाइके नाम सुनाई ब्रह्मसम्बन्ध कराये. तब गोपालदासने कही, कृपा करि आप मेरे घर पधारिये. तब गोपालदासके घर नरोड़ामें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु पधारे. तब गोपालदासको बेटा वर्ष चारको हतो. ताकों नाम सुनाय गोपालदासकी स्त्रीकों नाम सुनाये. तब गोपालदासने श्रीआचार्यजीसों बिनती करी, जो महाराज अब हमकों कहा आज्ञा है ? तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु गोपालदाससों कहें, तुमते भगवद् सेवा तो बनेगी नाहीं. काहें तें, स्त्री पुत्र दैवी नांही हैं. तुम दैवी हो, सो तुमकों विरह बहोत है. विरह वारेकों हृदयमें अनुभव बहोत होई. बाहरकी क्रिया न बने. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु गद्य - श्लोक और पञ्चाक्षर - मन्त्र लिखके गोपालदासकों दिये. और कहे, इनकों भोग धरि खान - पान करियो. और हमारी आज्ञा है, जो जीव आवे तिनकों तुम नाम सुनैयो. जन्मतें स्वामी पदमें रहै. ताते स्वामी पद तुमकों दिये हैं. जो वादी आवे तिनसों वाद करियो. तुमसों कोई न जीतेगो. यह गोपालदाससों कहि श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप अड़ेल पधारे. सो गोपालदास नाम सुनावते. बड़े टेकके वैष्णव भये. वादीसों वाद करे, जों मुखसों बात निकसे सोई करि दिखावें, श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके बलसों इनको यश पश्चिममें फेल्यो.

वार्ताप्रसङ्ग १ : पाछे एक समय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु श्रीद्वारकाजी पधारे, तब मार्गमें नरोड़ा गाम आयो. तब तहां श्रीआचार्यजीमहाप्रभु गोपालदासके घर पधारे. सो गोपालदास तो घर न हते. गोपालदासको बेटा वर्ष चौदहको हतो. सो गोपालदासके बेटासों श्रीआचार्यजीमहाप्रभु पूछे, जो गोपालदास कहां गये हैं ? तब गोपालदासके बेटाने कही, जो महाराज ! श्रीठाकुरजीकी सेवाकों गये हैं. यह बचन सुनि श्रीआचार्यजीमहाप्रभु गोपालदासके बेटा पर बहोत अप्रसन्न भये. कहे, जो गोपालदासको बेटा ऐसो अनुचित क्यों बोल्यो ? अब इहां रहनो उचित नाहीं. पाछे श्रीआचार्यजीमहाप्रभु मनमें विचारे, जो गोपालदासकूं आवन दीजे, देखिये, गोपालदासकी बुद्धि कैसी है

? उह कैसो बोलत है ? इतनेमैं गोपालदास आय श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों दण्डवत् कियो. तब श्रीआचार्यजी कहें, जो गोपालदास ! तू कहां गयो हतो ? तब गोपालदासने कही, महाराज ! पेट लाग्यो है. सो कछू व्याबृतिकों गयो हतो. यह वचन सुनि गोपालदास ऊपर श्रीआचार्यजीमहाप्रभु बहोत प्रसन्न भये. कहे, वैष्णवकों ऐसो बोलनो उचित है. ऐसे बोलनो नाहीं, जा व्याबृति लौकिककों जाई, तहां श्रीठाकुरजीकी सेवाको नाम लेई.

भावप्रकाश : पुष्टिमार्गीकी यह रीत है, जो सेवामें जाई तऊ लौकिकको नाम लेई. भगवद् धर्म प्रकास न करें, सो भगवदीय. आछे जीव न होई सो लौकिकमें हू अपनी बड़ाई अर्थ सबके आगे भगवद् सेवाको नाम लेई.

पाछे गोपालदासनें बिनती करी, जो महाराज ! दोई चारि दिन कृपा करिकें रहिये या प्रकार राखिवेकों बहोत करें. परन्तु श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कहैं, जो हमकों श्रीद्वारिका बेगि जानो है. सो कहिके आप पधारे तहां रहे नाहीं.

भावप्रकाश : सो यातें, गोपालदास तो भगवदीय है. परन्तु गोपालदासकी स्त्री, पुत्रकी बुद्धि ठिकाने नाहीं है. तातें आप पधारे. जो इहां रहे आनन्द न होईगो.

वार्ताप्रसङ्ग २ : सो गोपालदासकों श्रीनाथजीके दरसनको विरह बहोत. सो श्रीनाथजीद्वार आप श्रीनाथजीके दरसन किये. पाछे गोपालदासकों ज्वर आयो. सो दोय लङ्घन किये. पाछे रात्रिकों एक दिन गोपालदासको तृषा बहोत लागी. सो पानी पास न हतो. एक अपनो सेवक सङ्ग लाये हते, सो वाकों पुकारें, सो वह सोई गयो हतो. और गोपालदासको कण्ठ सूखि गयो, सो बचन न निकसे. तब मनमें व्याकुल भये. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी अपनी जलपानकी झारी लैके गोपालदास पास आय, गोपालदासकों जलपान कराय, झारी तहां ही धरि गये.

भावप्रकाश : सो यातें, जो गोपालदासको जस प्रगट करिवेके लिये जारी धरि आये. जो सब कोऊ जाने, जो गोपालदास बड़े भगवदीय हैं. जिनकों श्रीनाथजी जल पिवाये, यह जस होई. काहे तें, जैसे श्रीठाकुरजीको जस गायके जीव कृतार्थ होई. तैसे भगवदीयको जस गायके जीव कृतार्थ होई. और गोपालदास राजसी हते. सो सब कोई इनकी उपरकी क्रिया देखिके केवल, वैष्णव निन्दा करें तो महा अपराध वाकों लगे. तातें गोवर्द्धनधर जारी धरि आये तब गोपालदासकों, सगरे, भवदीय जाने. सो निन्दा कोई न करें, यातै जारी धरे. तामें यह (हू) जताये, यद्यपि राजसी हैं, तोऊ श्रीआचार्यजीको सेवक मोकों बहोत प्रिय हैं. यह श्रीनाथजी सबकों जनायवेके लिये जारी तहां धरि आये. काहेतें श्रीगोवर्द्धनधरको ह्रदय अति कोमल है. सो अपने भक्तनकों दुःख सहि न सकें.

पाछे प्रातःकाल भयो तब सगरे भीतरिया स्नान करि श्रीगोवर्द्धननाथजीके मन्दिरमें आइ, देखें तो झारी नाहीं. सो सगरे चिन्ता करन लागे. तब गोवर्द्धननाथजीने बड़े रामदासजीसों कह्यो. जो गोपालदास रात्रिको बहोत प्यासे भये. तहां मैं उनकों जलपान कराइ झारी धरि आयो हूं. तब रामदासजी आय गोपालदास कहें, मोकों तो ज्वर चढ्यो, और तृषा बहोत लगी. कण्ठ सूख्यो, सो व्याकुल भयो हतो. तातें मोकों कछू खबरि नाहीं जो किन जलपान करायो. तब रामदासजीने गोपालदासों कह्यो, जो तुमकों श्रीगोवर्द्धनधर जलपान कराई झारी इहां ही धरि गये, सो हम झारी इहां ही धरि गये, सो हम झारी लेन आये हैं. तातें तिहारे बड़े भाग्य हैं. तब गोपालदास कहैं, प्रभुनकों इतनो श्रम करनो पड्यो ? अपने मनुष्य पर खीजे, तू पानी मेरे पास क्यों न राख्यो ? और तू सोई गयो ? मोकों प्यास बहोत लागी, सो श्रीठाकुरजीकों श्रम करनो पड्यो. सो बुरी भई. पाछे रामदासजी गोपालदासको समाधान करि झारी ले मन्दिरमें आये. पाछे गोपालदास आछे भये. श्रीनाथजीको दरसन करि अपने घर आये. परन्तू श्रीगोवर्द्धनधरको विरह अष्ट प्रहर इनकों रहे.

वार्ताप्रसङ्ग ३ : और एक दिन विरह बहोत भयो. सो विरहको चोखरा करिके गाये.

केकी सिखण्डी स्याम घन कण्ठ मनोहर हार ।
धन्य ते दिन देखिशुं नैनन नन्दकुमार ।।

वार्ताप्रसङ्ग ४ : और एक समय श्रीगुसांईजी श्रीद्वारिकाकों श्ररणछोडराजीके दरसनकों पधारे. तब मार्गमें नरोड़ा गाममें आये. सो गामके बाहर डेरा करि उतरे. सो उत्थापनके समय गोपालदास श्रीगुसांईजीके दरसनकों चले. तब दोय जने गोपालदासके सङ्ग चले. सो श्रीगुसांईजीके दरसन तहां जाई किये. तब दोऊ जने गोपालदाससों कहें, हमको गुसांईजी पास नाम दिवावो. तब गोपालदासने कही, हमहू नाम देत हैं. सो हम घर चलेंगे तब तुम हमारे घर अईयो, हम तुमकों नाम सुनावेंगे. या प्रकार दोऊ जने तीन बार गोपालदाससों कहै, जो हमारो मनोरथ यह है, जो हमकों श्रीगुसांईजी नाम सुनावें. सो तीनों बार गोपालदासने कही, हमारे घर आइयो, हम तुमकों नाम सुनावेंगे. यह बात सब श्रीगुसांईजीने सुनी. तब श्रीगुसांईजी उन दोऊ जनेनसों पूछे, जो तुम गोपालदाससों कहा कहत हो ? तब उनने कही, जो महाराज ! हमारो मनोरथ यह है, जो हमकों कृपा करिके आप नाम सुनावो. तब श्रीगुसांईजी दोऊनकों नाम सुनाय कृतार्थ किये. पाछें श्रीगुसांईजीने गोपालदाससों कही, जो तुमकों तो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु अङ्गीकार किये हैं, सो तो दृढ़ है. प्रभु तुमकों कबहू न छोड़ेगे. परन्तु जितने सेवक तुम नाम सुनायके किये हो, सो सब हमारे न होइंगे ! पुष्टिमार्ग तै बहिर्मुख होइंगे. सो यह बात सगरे वैष्णव सुनिके श्रीगुसांईजीके सेवक होई कृतार्थ भये. और जो कोंई रहि गये सो पुष्टिमार्ग तें भ्रष्ट भये तिनकों श्रीगुसांईजी 'गङ्गोज' कहते. सो गोपालदास सदा विरह दसामें मगन रहते. ताते इनकी वार्ता कहां तांई कहिये. ....वार्ता ।।७९।।

भावप्रकाश : जैसे श्रीगङ्गाजीकी धारासों जल छूटि न्यारो जल रहै. सो सगरे मनुष्यनको पाय रूप है ताके छूवे तें दोष लागे, तद्वत् भये. यामें यह जताये, जो गोपालदासकों स्वामी पद आयेतें जीवनको बिगार भयो. तातें दैन्यता बड़ो पदार्थ है. सब फलकों सिद्ध करे. और अहङ्कार महाबाधक है यह दिखाये. तातें गोपालदास तो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे जिनकों श्रीगोवर्द्धनधर अनुभव जनावते. जल पान अपनी झारी तें पिवाये. .... ।।वैष्णव ७९।।

८७-बादरायनदास पुष्करना

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, बादरायनदास, पुष्करना ब्राह्मण स्त्री, पुरुष, सो मोरबीमें रहते, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : सो ये लीलामें श्रीललिताजीकी सखी हैं. इनको नाम 'श्रुतिरूपा' है. और इनकी स्त्रीको नाम 'गङ्गा' है.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो मोरबीमें एक पुष्करना ब्राह्मणके घर जन्में. तब माता पितानें इनको नाम बादा धर्यो. पाछें जब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक भये, तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु इनको नाम बादरायनदास धरे. सो वादा बरस तेरहके भये. तब इनको गाम हीमें ब्याह भयो. सो मोरबीमें रहते. और एक वाछ्वभटट (वात्सा भटट) गुजराती ब्राह्मण हते, सो गुजरातमें रहते. श्रीभागवतकी कथा कहि निर्वाह करते. सो वाछ्वभटट श्रीद्वारिका श्रीरणछोडजीके दरसनकों चले. तब मारगमें मोरबी गाम आयो, तहां गये. तब बादराइनने वाछ्वभटटकों राखे, अपने घरमें. सो वाछ्वभटटके सेवक होई नाम पायो. पाछें घरमें भटट पास श्रीभागवत् बादराइनदासने सम्पूर्ण सुन्यो. पाछें वाछ्वभटट तो श्रीद्वारिकाकों गये. पाछें कछुक दिनमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु श्रीद्वारिकाकों पधारे. सो मोरबी गामके बाहर एक बगीचीमें उतरे. तब मोरबीके सगरे वैष्णव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके दरसनकूं आये. तामें वादा हू आये. सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु वा समय श्रीसुबोधिनीजीकी कथा कहे. सो 'भंवर गीत' को प्रसङ्ग ऐसो कहे, जो वादाकों मूर्छा आइ गई. सो एक पहरमें सावधान भयें. तब वादा मनमें कहें, जो वाछ्वभटट पास गये, श्रीभागवत सुन्यो, परन्तु ऐसो आनन्द नाहीं आयो. तब वादाने श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों दण्डवत् करि बिनती करी, जो महाराज ! आप कृपा करि मोकों सेवक करिये. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कहें, जो तू वाछ्वभटटको सेवक तो होई चुक्यो है. अब सेवक क्यों होत हैं ? हम तो तुमकों फेरि सेवक न करेंगे. तब वादा श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों बिनती करि, अपने घर आई, स्त्रीसों कह्यो, जो श्रीचल्लभाचार्यजी पधारे हैं सो तो साक्षात् भगवान् ही हैं. भंवर गीतको प्रसङ्ग कथा ऐसी कहे सो मोकां मूर्छा आई. पाछें मैं सेवक होनकी बिनती करी, सो आपने नाहीं करी. जो तू तो वाछ्वभटटको सेवक हैं, अब सेवक तोकों न करेंगे. सो अब कैसे करिये ? जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु सेवक करें तो कृतार्थ होई. तब स्त्रीने कहि, तुमकों बिनती करते आइ नाहीं. मोको ले चलो, तो मैं बिनती करूं. तब वादाने कहि चलो. सो वादा और वादाकी स्त्री श्रीआचार्यजीमहाप्रभुन पास आये. तब वादाकी स्त्रीने दण्डवत् करिके कह्यो, जो महाराज ! मेरो पति सेवक होनकी बिनती आपुसों कियो. सो आप नाहीं किये. सो आप तो, पतित, अधम हम सरीखे

संसारमें पड़े हैं, तिनके उद्धार करनार्थ पधारे हो. सो सरन लीजे. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कहें, जो हम तो यातें यों नाहीं करी, जो वाछ्वभटटके सेवक व्है चुके हो. फेरि क्यों सेवक होत हो ? तब स्त्रीने कही, जो महाराज ! वाछ्वभटटके सेवक भये तातें हमारो तो कछू अर्छ मर्यो नाहीं. ऐसे ब्राह्मण जीविकाके लिये ठोर - ठोर श्रीभागवतकी कथा कहेत डोलत हैं. सो हमारो उद्धार कहा करेंगे ? तातें आप सरन ले हमारो उद्धार करो. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजी कहें, जो आज तो सांज भई है, सबेरे तुमकों सेवक करेंगे. अब तो तुम घर जाव. तब स्त्री पुरुष दोऊ जने श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों दण्डवत् करि घर आये. पाछें प्रातःकाल दोऊ जने आइ, श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों दण्डवत् करि बिनती किये, जो महाराज ! कृपा करि हमारे घर पधारि रसोई करिये. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु बादाके घर पधारि, स्त्री पुरुष दोऊ जनकों न्हवाइके नाम सुनाये, ब्रह्मसम्बन्ध कराये. पाछें आप रसोई पाक सामग्री करि भोग धरि भोजन किये. बादाको नाम बादराईनदास धरि, श्रीनवनीतप्रियजीके प्रसादी वस्त्र भगवद् सेवा दे, दोय दिन बादरायनदासके घर रहे. पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजी श्रीद्वारिकाकों पांउ धारे. तब स्त्री पुरुष दोऊ जने श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सङ्ग द्वारिकाकों गये. सो श्रीद्वारिकाजीमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजी एक बरस १ महिना तांई रहे. तब बादरायनदास और बादरायनदासकी स्त्री सगरी सेवा किये. जल ल्यावनो, रसोईकी परचारगी, धोवती उपरेना श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके नित्य धोवते. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु प्रसन्न होई, बादरायनदाससों कहे, तुम जाइ स्त्री सहित घरमें भगवद् सेवा करो. पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजी आप पृथ्वी परिक्रमाकों पधारे और बादनारयनदास स्त्री पुरुष दोऊ जने मोरबीमें अपने घर आप वस्त्र सेवा करन लागे. तब श्रीनवनीतप्रियजी सानुभवता जनावन लागे. सो बादरायनदास स्त्री पुरुष दोऊ जने श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय है. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिये ? ...वार्ता ।।८०।।

८८-सूरदासजी सारस्वत ब्राह्मण

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, सूरदासजी सारस्वत ब्राह्मण, दिल्लीके पास सींहीं गाम है तहां रहते, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : सो ये सूरदासजी लीलामें श्रीठाकुरजीके अष्टसखा हैं, सो तिनमें ये 'कृष्णसखा' को प्रागट्य हैं. तहां यह सन्देह होय जो निकुञ्ज

लीलामें तो सखी जनको अनुभव है जो सखा ताहां नाहीं है. सो सूरदासजीने रहस्य लीला बिना अनुभव कैसे गाई ? तहां कहत हैं, जो श्रीभागवतमें कहे हैं, जो जब श्रीठाकुरजी आप बनमें गौचरन लीलामें सखानके सङ्ग पधारत हैं, सो सगरी गोपीजन लीलाको अनुभव करत हैं. सो घरमें सगरी लीला बनकी गान करत हैं. ता पाछें जब श्रीठाकुरजी सन्ध्या समय बन तें घरकूं आवत हैं, ता पाछें रात्रिकों गोपीजनसों निकुञ्जलीलामें लीला करत हैं. सो तब अन्तरङ्गी सखानकों विरह होत है, तब वे निकुञ्जलीलाको गान करत हैं, अनुभव करत हैं. सो काहेंते ? कुञ्जमें सखीजन हैं सो तिनके दोय स्वरूप हैं सो कहत हैं - पुंभावके सखा और स्त्री भावकी सखी. सो दिनमें सखा द्वारा अनुभव और रात्रिकों सखी द्वारा अनुभव है. सो काहेतें ? जो वेदकी ॠऋचा हैं सो गोपी हैं. और वेदके जो मन्त्र हैं सो सखा है. परन्तु गोपीजन देखिवे मात्र स्त्री हैं, सो इनके पति हैं, परन्तु ये स्त्री नाहीं हैं. सो ऐसे - (जैसे) भुज्यो अन्न होय सो धरतीमें बीज नाहीं ऊगे. तेसे ही इनकों लौकिक विषय नाहीं हैं. सो यहां तो रसरूपलीला सदा सर्वदा एक रस हैं सो तेसे ही अन्तरङ्गी सखा श्रीठाकुरजीके अङ्गरूप हैं. सो सखी रूप, सखा रूप, दोय रूपसों रात्रिदिन लीलारस करत हैं. सो तासों सूरदास 'कृष्णसखा' को प्रागट्य हैं और कृष्णसखाको दूसरो स्वरूप सखी है, सो लीला कुञ्जमें हैं तिनको नाम 'चम्पकलता' है. सो तासों सूरदासकों सगरी लीलाको अनुभव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुकी कृपातें होयगो. सो प्रकार कहत हैं. तहां यह सन्देह होय जो लीला सम्बन्धी है सो पहले तें अनुभव क्यों भयो. सो इनको मोह क्यों नाहीं भयो ? सो इनकों मोह क्यों भयो ? तहां कहत हैं, जो श्रीठाकुरजी भूमिके ऊपर प्रगट होयकैं लौकिककी नांइ लीला करत हैं, सो जस प्रकट करनार्थ. सो लीला गाइ जगतमें लौकिक जीव कृतार्थ होत हैं. तैसेई श्रीठाकुरजीके भक्त हू जगतमें लौकिक लीला करि अलौकिक दिखावत हैं. जैसे श्रीरुक्मिनीजी साक्षात् श्रीलक्ष्मीजीको स्वरूप हैं, परन्तु जब जन्मी तब देवी पूजिकैं वर मांग्यो. फेरि श्रीठाकुरजीके पास ब्राह्मण ब्याहके लिये पठायो. सो यह जगतमें लीला प्रगट करनार्थ. जैसे कालिंदीजी सूर्य द्वारा प्रगट होयकैं श्रीयमुनाजीमें मन्दिर करि तपस्या करि. अर्जुनासों कही, जो मैं ठाकुरजीकों वरूंगी. तब श्रीठाकुरजी आपु विवाह कियो. सो यह लीलामात्र, (क्यों जो) ये सदा श्रीठाकुरजीकी प्रिया हैं. सो ब्रजमें श्रीस्वामिनीजी और श्रीठाकुरजी आपु वे दोउ एक रूप हैं, परन्तु ब्रज लीला प्रगट करिवेके लिये श्रीठाकुरजी श्रीनन्दरायजीके घर प्रगटे और स्वामिनीजी श्रीवृषभानजीके घर प्रगट होयके अनेक उपाय मिलिवेको रात्रि दिन किये. सो यह लीला (केवल) जगतमें प्रगट करिवेके लिये (ही). (नांतरु) ये तो सदा एक रस लीला करत हैं. सो तेसेई सूरदास श्रीआचार्यजीके सेवक होयकें भगवल्लीला गाये. सो यामें स्वामीको जस बढ़े. सो जिनके सेवक सूरदास ऐसे भगवदीय, तिनके स्वामी श्रीआचार्यजी आपु तिनकी सरन जैये. सो या प्रकार जगतमें लीला करि जस प्रगट किये, सो आगे लौकिक जीवकों गान करि भगवत्प्राप्ति होय.

सो सूरदासजी जगत् पर अब ही प्रगटे, परन्तु लीलाको ज्ञान नाहीं है. सो सूरदासजी दिल्ली पास चारि कोस उरेमें एक सीहीं गाम है, जहां राजा परीक्षितके बेटा जन्मेजयने सर्प यज्ञ कियो है. सो ता गाममें एक सास्वत ब्राह्मणके यहां प्रगटे. सो सूरदासजीके जन्मत हीं सो नेत्र नाहीं हैं. और नेत्रनको आकार गढ़ेला कछू नाहीं, ऊपर मोंह मात्र है. सो या भांतिसों सूरदासजीको स्वरूप है. सो तीन बेटा या सास्वत ब्राह्मणके आगेके हते, और घरमें बहोत निष्किञ्चन हतो. वा सास्वत ब्राह्मणके घर चौथे सूरदासजी प्रगटे. सो इनके नेत्र न देखे, आकार (ह) नाहीं. सो या प्रकार देखके वा ब्राह्मणने अपने मनमें बहोत सोच कियो, और दुःख पायो. जो देखो एक तो विधाताने हमकों निष्कञ्चन कियो और दूसरे घरमें ऐसे पुत्र जन्मयों. जो अब याकी कौन तो टहल करेंगो ? और कौन याकी लाठी पकरेगों ? सो या ब्राह्मणने अपने मनमें बहोत दुःख पायो. सो काहेतें जो जन्में पाछें नेत्र जांय तिनको आंधरा कहिये, सूर न कहिये. और ये तो सूर हैं, सो माता पिता घरके सब कोई इनसों प्रीति करें नाहीं. जानें, जो नेत्र बिनाको पुत्र कहा ? तासा इनसों कोई बोलतो नाहीं.

सो ऐसे करत सूरदासजी बरस छहके भये. तब पिताकों वा गामके एक द्रव्यपात्र क्षत्री जजमानने दोय मौहोर दानमें दीनी. तब यह ब्राह्मण उन मोहौरनकों लेके अपने घर आये, और मनमें बहोत प्रसन्न भयो, और स्त्री तथा घरमें देह सम्बन्धी बेटा बेटी हते सो तिन सबनसों कही जो भगवानने दोय मौहौर दीनी हैं सो काल्हि इनकों बटायके सीधो सामान लाऊंगो. तातें अपने घरमें दोय चार महिनाकों काम चलेगो. सो या प्रकार सबनकों वे दोय मोहौर दिखाई ता पाछें रात्रिकों एक कपड़ामें बांधिके ताकमें धरिके सोयो. तब रात्रिकों दोय मोहरनको भूसा ले गये. सो घरकी छांतिनमें भिल्लेमें धरि दीनी. तब सवारे उठिके देखे तो मोहौर नाहीं हैं.

सो तब तो सूरदासके मातापिता छाती कूटन लागे और रोवन लागे, और अपने मनमें अति कलेश करन लागे. सो वा दिन खानपान नाहीं कियो. सो या प्रकार घनो विलाप करन लागे. सो देखिके सूरदासजी मातापितासों बोले, जो तुम ऐसो विलाप क्यों करत हो ? जो भगवानको भजन सुमिरन करो तासों सब भलो होय. सो या भांति सूरदास उनसों बोले. तब माता पिताने सूरदाससों कही जो तू एसी घडीको सूर जनम्यो है, सो इनको वाही दिन सो दुःख ही मे जनम बीतत है. जो हमकों काहू दिन सुख नाहीं भयो, और हमकों भर पेट अन्नहू नाहीं मिलत है. जो श्रीभगवानने हमकों दोय मोहौर दीनी हती सोहू योंही गई. तब सूरदासजी बोले, जो तुम मोकों घरमें न राखो तो मै अबही तिहारी मोहौर बताय देउं. परि पाछें मोको घरमें राखियो मति, और

तुम मेरे पीछे मति परियो. तब यह सुनिके माता पिताने सूरदासकों कह्यो जो और हमको काह चहियत है ? जो तूं हमकों मोहौर बताय देउ, और हमारी मोहर पावें फेरि तेरे मनमें आवे तहां तू जइयो. हम तोकों बरजेगे नाहीं. सूरदास बोले जो छातीमें भिल्लो है सो भिल्लेके मोहोडे पर धरी हैं. तब यह ब्राह्मण खोदिके मोहौर पायों.

तब सूरदासजी घरतें चलन लागे. सो माता पिताकों मोह उत्पन्न भयो. सो देखो या सूरदासको सगुन बहोत आछो भयो. याके कहे प्रमान मोकों तुरत ही मोहौर मिली हैं. यह विचारी माता पिता सूरदासकोसों कह्यो जो सूरदास ! अब तुम घरतें क्यों जात हो ? अब ता यह मोहौर पाय गई हैं, तातें जहां तांई यह मोहरनको अनाज रहै तहां तांई तूमही खावो, पाछे जहां जानो होय तहां तुम जैयो. तब सूरदास बोले जो मोकों अब घरमें मति राखो, जो मोकों घरमें राखोगे तो तिहारी मोहौर फेरि जायगी, और तुम दुःख पावोगे. यह सुनिके मातापिता कछु बोले नाहीं, और सूरदासजी तो हाथमें एक लाठि लेकें घरसों निकले. सो सीहीं ते चले, सो चार कोस ऊपर एक गाम हतो, तहां एक तलाब गाम बाहिर हता. सो वहां एक पीपरके वृक्ष नीचे सूरदासजी आय बैठे, और वा तलाबको जल पियो. तहां दोय चार घडी दिन पाछिलो रह्यो हतो. तब ता गामको ब्राह्मण जमींदार तहां आयके सूरदासजीकों पहिचानके कहन लाग्यो जो मेरी १० गाय तीन दिन तें मिलत नाहीं कोई बताबे तो दो गाय वाकों देऊं. तब सूरदासजीने कही जो मोकों तेरी गाय कहा करनी हैं ? परन्तु तू पूछत है तब कहत हूं जो यहां सो कोस ऊपर एक गाम है. सो वा गामके जमीदारके मनुष्य रात्रिकों आयके तेरी दस गाय ले गये है वा जमीदारके घरके भीतर एक दूसरो घर है, सो तहां जमींदारके घोड़ा बंधे है, सो उन घोड़ानके पास तेरी गाय बंधी हैं. तब वे जमीदार दस आदमी सङ्ग ले जाई देखे तो गाय सब बंधी हैं, सो ले आयके सूरदासजीसों कह्यो, जो सूरदास ! तिहारे कहे प्रमान मेरी दस गाय पाय गई हैं, सो ये दोय तुम राखो.

तब सूरदासजीने कहे, जो मैं अपनों ही घर छोडिके श्रीठाकुरजीको आश्रय करिके बैठो हूं, सो मैं तेरी गाय काहेकों लेऊं ? तब वह जमीदार सूरदासकों बालक जानिकें शिक्षाकी बात करन लाग्यो, जो अरे ! तू फलाने सारस्वतको बेटा है, और नेत्र तेरे हैं नाहीं, और कोऊ मनुष्य हू तेरे पास नाहीं है, सो तू अपने घरकों छोड़िके रूठिके यहां क्यों बैठ्यो है ? नेत्र है ? नांहीं, कैसे दिन कटेंगे ? तब सूरदासने कह्यो जो मैं तेरे ऊपर तो घर छोड्यो नाहीं. मैं तो नारायणके ऊपर घर छोड्यो है, सो सगरे जगतको पालन करत हैं सो मेरो हू करेंगे. और जो होनहार होयगी सो होयगी. तब जमीदारने कही, मैं हू ब्राह्मण हौं, दारि रोटी मेरे घर भई हैं, कहे तो लाउं. तब सूरदासने कही, जो मैं तो गैलकी चली रोटी नाहीं खात. तब वह जमींदार अपुने घर जाइ

पूरी कराय और दूध ले जाइ, सूरदासकों जल भरि देके कह्यो, जो सूरदास ! तुम कोई बातको दुःख मति पाइयो. जो जहां तांइ भगवान् मोकों खायबेकों देयगो, तहांतांइ यहां मैं तुमको लाऊंगो. और सबेरे या तलाब पर तथा गाममें जहां कहोगे तहां छपरा डार देऊंगो. पाछे सबेरो भयो, तब यह जमींदारने आयके कह्यो जो तिहारो मन कहां रहेवोको है ? तब सूरदासने कही, जो अब तो याही तलाब पर पीपरा नीचे कछुक दिन रहवेको मन है. तब वा जमींदारने वहां एक झोंपडी छवाय दीनी और टहल करिवेकुं एक चाकर राखि दियो. ता पाछें वा जमींदारने दसपांच जनेके आगे बात करी, जी फलानेको बेटा सूरदास बड़ो ज्ञानी है. हमारी गाय खोय गइ हती सो बताय दीनी. सो वह सगुनमें आछे जाने है. सो मैं वाको तलाबके ऊपर पीपरके नीचे झोंपरी छवाय, वाके पास एक चाकर राखि दियो है. और नित्य पूरी, दहीं, दूध, पठावत हूं. सो तासो काहूको सगुन पूछनो होय तो वाकूं जायके पूछि आइयो.

यह सुनिके सब लोग गामके आवन लागे. सो जो कोइ पूछे तिनकों सगुन बतावे सो होई. तब सूरदासकी बड़ी पूजा चली, भीर लगी रहै. खानपान भली भांतिसों आवन लाग्यो. सो तब कछुक दिनमें सूरदासकों रहिवेके लिये एक बड़ो घर तलाब पर बनाय दियो, और वह झोंपरी हू दूरि कीनी. और वस्त्र, द्रव्य, बहौत वैभव भेलो भयो. सो सूरदास स्वामी कहवाये, बहोत मनुष्य इनके सेवक भये. जाके कण्ठी बांधनी होय सो सूरदासको सेवक होय. सो सूरदास विरहके पद सेवकनकों सुनावते. सो सब गायवेके बाजेको सरञ्जाम सब भेलो होय गयो.

या प्रकार सूरदास तलाब ते पीपरके वृक्ष नीचे बरस अठारेके भये. सो एक दिन, रात्रिकों सोवत हते, ता समय सूरदासकों वैराग्य आयो तब सूरदासजी अपने मनमें विचारे जो देखो, मैं श्रीभगवानके मिलन अर्थ वैराग्य करिके घरसों निकस्यो हतो, सो यहां मायाने ग्रसि लियो. मोकूं अपनो जस काहेकों बढ़ावनो हतो ? जो मैं श्रीप्रभुको जस बढ़ावतो तो आछो. और यामें मेरो बिगार भयो, तासों अब कब सवारो होय और मैं यहांसों कूंच करूं.

सो ऐसे करत सवारो भयो. तब एक सेवककों पठाय मातापिताकों बुलाय सब घर उनकों सोंप दियो. पाछें सूरदास एक वस्त्र पहिरके लाठी लेके उहां ते कूंच किये. सो तब जो सेवक मायाके जंजालमें हते, सो संसारमें लपटे सो उहाई रहे. और कितनके सेवक जो संसारसों रहित हते, सो सूरदासके सङ्ग ही चले. सो सूरदास मनमें विचारे जो ब्रज है सो श्रीभगवानको धाम है, सो उहां चलिये. तब सूरदास उहां तें चले, सो मथुराजीमें आये. तहां विश्रान्त घाट पै रहिके सूरदासने विचार कियो, जो मैं मथुराजीमें रहूंगो. तो यहां हू मेरो माहात्म्य बड़ेगो और यह श्रीकृष्णकी पुरी है, सो यहां मोकों अपनो माहात्म्य

प्रगट करनो नाहीं. और संसारमें अनेक लोग सुख दुःख पावें हैं सो सब पूछिवे आवेंगे. और यहां मथुरिया चोंबे हैं सो यहां माहात्म्य बढ़ेगो तो ये दुःख पावेंगे. तासों यहां रहनो ठीक नाहीं.

सो यह विचारिके सूरदास मथुराके और आगरेके बीचों बीच गऊघाट है तहां आयके श्रीयमुनाजीके तीर स्थल बनायकें रहें.

सूरदासको कण्ठ बहौत सुन्दर हतो. सो गान विद्यामें चतुर, और सगुन बतायवेमें चतुर. सो उहां हू बहोत लोग सूरदासजीके पास आवते. उहां हूं सेवक बहोत भये. सो सूरदास जगतमें प्रसिद्ध भये.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो गऊघाट ऊपर सूरदास रहते, तब कितनेक दिन पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आपु अड़ेल तें ब्रजकूं पधारत हते. सो कछुक दिनमें श्रीआचार्यजी आप गऊघाट पधारे. ता समय श्रीआचार्यजीके सङ्ग सेवकनको बहोत समाज हतो. सो सब वैष्णव सहित श्रीआचार्यजी आपु श्रीयमुनाजीमें स्नान किये. ता पाछें सन्ध्यावन्दन करि पाक करनकों पधारे. और सेवक हू सब अपनी - अपनी रसोई करन लागे. ता समय सूरदासको तहां आयो. सो वाने जायके सूरदासकों खबरि करी, जो सूरदासजी ! आज यहां श्रीवल्लभाचार्यजी पधारे हैं. जो जिनने कासीमें तथा दक्षिणमें मायावाद खण्डन कियो है, और भक्तिमार्ग स्थापन कियो है. तब यह सुनिके सूरदासने अपने सेवकसों कह्यो, जो जब श्रीवल्लभाचार्यजी भोजन करिकें निश्चिन्ततासों गादी तकियानके ऊपर बिराजें ता समय तू हमकों खबरि करियो. जो मैं श्रीवल्लभाचार्यजीके दरसनकों चलूंगो. तब वह सेवक दूरि आयके बैठि रह्यो. सो जब श्रीआचार्यजी आपु भोजन करिके गादी तकियान पै बिराजे, और सेवक हू सब आसपास आय बैठे, तब वा सेवकने जायके खबरि करी. सूरदास वाही समय अपने सङ्ग सगरे सेवकनकों लेकें श्रीआचार्यजीके दरसनकों आये. सो तब आयके श्रीआचार्यजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् करी. तब श्रीआचार्यजी श्रीमुखसों कहें, जो सूर ! कछू भगवत् जस वर्णन करो. तब सूरदासने श्रीआचार्यजीकों दण्डवत् करि कह्यो, जो महाराज ! जो आज्ञा ता पाछें सूरदासने यह पद श्रीआचार्यजी आगे गायो. सो पद -

राग धनाश्री -
हों हरि सब पतितनकौ नायक
को करि सके बराबरि मेरी इते मानकौ लायक ।।१।।

जो तुम अजामिलसों कीनी सो पाती लिख पाऊं ।
होय विश्वास भलो जिय अपने और पतित बुलाऊं ।।२।।

सिमिट जहां तहांतैं सब कोऊ आइ जूरे इकठौर ।
अबके इतने ओर मिलाऊं बेर दूसरी और ।।३।।

होडा होडी मन हुलास करि करे पाप भरि पेट ।
सबकों ले पायन तरि पारों यही हमारी भेट ।
ऐसी कितिक बनाउं प्रानपति सुमिरन व्है भयो आड़ो ।
अबकी बेर निबेर लेउ प्रभु 'सूर' पतितकों टांडो ।।

फेरि दूसरो पद गायो, सो पद -

राग धनाश्री -
प्रभु हों सब पतितनकौ टीको
और पतित सव द्योंस चारिकै हों तो जन्मत ही को ।।

बधिक - अजामिल गनिका तारी और पूतना ही कों ।
मोहि छांडि तुम और उधारे मिटे सूल क्यों जी कौ ।।
कोऊ न समरथ सुद्ध करनकों खेंचि कहत हों लीको ।
मरियत लाज 'सूर' पतितनमें कहत सबै मोहि नीकौ ।।

सो सुनिके श्रीआचार्यजी आपु सूरदाससों कहे, जो सूर व्है कैं ऐसो घिघियात काहकों है ? सो तासों कछु भगवल्लीला वर्णन करि.

भावप्रकाश : ताको आसय यह है, जो जीव श्रीभगवानसों बिछुर्यो, सो तब पतित तो भयो. सो ताकों बहोत कहा कहनो ? तासों भगवल्लीला गावो, जासों शुद्ध होय.

तब सूरदासने श्रीआचार्यजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! मैं कछू भगवल्लीला समुझत नाहीं हूं. तब श्रीआचार्यजी श्रीमुख तें कहे, जो सूर ! श्रीयमुनाजीमें स्नान करि आवो, जो हम तुमकों समुजाय देंगे. तब सूरदास प्रसन्न हायकें श्रीयमुनाजीमें स्नान करिके अपरस ही में श्रीआचार्यजी पास आये. तब श्रीआचार्यजीनें कृपा करिकें सूरदासकों नाम सुनायो, ता पाछें समर्पन करवायो. पाछें आप दसमस्कन्धकी अनुक्रमणिका करी हती सो सूरदासकों सुनाये.

भावप्रकाश : अष्टाक्षर मन्त्र सुनायो तासों सूरदासके सगरे जनमके दोष मिटाये, और सात भक्ति भई. पाछें ब्रह्मसम्बन्ध करवायो, तासों सात भक्ति और नवधा भक्तिकी सिद्धि भई. सो रही प्रेमलक्षणा, सो दसमस्कन्धकी अनुक्रमणिका सुनाये. तब सम्पूरन पुरुषोत्तमकी लीला सूरदासके हृदयमें स्थापन भई, सो प्रेमलक्षणा भक्ति सिद्ध भई.

सो सगरी श्रीसुबोधिनीजीको ज्ञान श्रीआचार्यजीने सूदासके हृदयमें स्थापन कियो. तब भगवल्लीला जस वर्णन करिवेको सामर्थ्य

भयो. तब अनुक्रमणिका तें सगरी लीला हृदयमें स्फुरी. सो कैसे जानिये ? जो श्रीआचार्यजी आप दसमस्कन्धकी सुबोधिनीमें मङ्गलाचरनकी प्रथम कारिका किये हैं, सो कारिका कहत हैं. श्लोक -

नमामि हृदये शेषे लीलाक्षीराब्धि - शायिनं ।
लक्ष्मीसहस्त्र - लीलाभिः सेव्यमानं कलानिधिम् ।।

सो या मङ्गलाचरणके अनुसार सूरदासने श्रीआचार्यजीके आगे यह पद करिके गायो. सो पद -

राग बिलावल -
चकईरी चलि चरन सरोवर जहां नहीं प्रेम वियोग
जहां भ्रमनिसा होति नहीं कबहू सो सायर सुख योग ।।
सनकसे हंस मीनसे मुनिगन नख रवि - प्रभा प्रकास ।
प्रफुल्लित कमल निमिष नही ससि डर गुञ्जत निगम सुवास ।।
जिहिं सर सुभग मुक्ति मुक्ताफल विमल जस पीजे ।
सो सर छांडि कुबुद्धि विहगम यहां रहि कहा कीजे ।।
जहां श्रीसहस्त्र सहित नित क्रीडत सोभित 'सूरदास' ।
अब न सुहाय विषयसा छिल्लर वा समुद्रकी आस ।।

सो यह पद दसमस्कन्धको कारिकाके अनुसार किये हैं.

श्लोक -
लक्ष्मीसहस्त्रलीलाभिः सेव्यमानं कलानिधिम् ।

जैसे श्लोकमें कह्यो है, तैसेही सूरदासने या पदमें कही, जो -

जहां श्रीसहस्त्र सहित नित क्रीडत सोभित सूरदास ।।

सो यामें कहे. तामें जानि परी, जो सूरदासकों सगरी लीला श्रीसुबोधिनीजीकी स्फुरी ! सो सुनिके श्रीआचार्यजी बहोत प्रसन्न भये. और जाने, जो अब लीलाको अभ्यास भयो. सो तब श्रीआचार्यजी आप श्रीमुखतें सूरदाससों आज्ञा किये, जो सूर ! कछू नन्दालयकी लीला गावो. तब सूरदासनें नन्द महोत्सवको कीर्तन वर्णन करिके गायो. पद -

देवगन्धार -
ब्रज भयो महरिके पूत जब यह बात सुनी
सुनि आनन्दे सब लोग गोकुल गनित गुनी ।।
ब्रज पूरव पूरे पून्य रूपी कुल सुथिर थुनी ।
ग्रह लग्न नक्षत्र बलि सोधि कींनी वेदधुनी ।।१।।

सुनि धाईं सबे ब्रजनारि सहज सिंगार किये ।
तन पहरे नौतन चीर काजर नैन दिये ।
कसि कञ्चुकि तिलक लिलाट सोभित हार हिये ।

कर कङ्कन कञ्चन थार मङ्गल साज लिये ।।२।।

वे अपने अपने मेल निकसी भांति भली ।
मानो लाल मुनिनकी पांति पिंजरन चूर चली ।।
वे गावे मङ्गल गीत मिलि दश पांच अली ।
मानो......भयो रवि देखि फूलि कनक कली ।।३।।

उर अञ्चल उडत न जान्यो सारी सुरङ्ग सुही ।
मुख माण्ड्यो रोरीरङ्ग सेन्दुर मांग छुही ।
श्रम श्रवनम तरल तेरोना बेनी सिथिल गुहीं ।
सिर बरखत कुसुम सुदेस मानो मेघ फुहीं ।।४।।

पिय पहेलें पहोंची जाय अति आनन्द भरी ।
लई भीतर भवन बुलाय सब सिसु पांय परी ।
एक बदन उधारि निहारती देति असीस खरी ।
चिरजीयो यसोदानन्द पूरन काम करी ।।५।।

घनि घनि दिवस घनि राति घनि यह पहर धरि ।
घनि घनि महरिजुकी कुखि भाग सुहाग भरी ।
जिन जायो एसो पूत सब सुख फलन फरी ।

थिर थाप्यो सब परिवार मनकी सूल हरी ।।६।।

सुनि ग्वालन गाय बहोरि बालक बोलि लये ।
गुहि गुञ्जा घसि बन धातु अङ्ग अङ्ग चित्र ठये ।
सिर दधि माखनके माट गावत गीत नये ।
डफ जांझ मदङ्ग बजावत सब नन्द भवन गये ।।७।।

एक नाचत करत कोलाहल छिरकत हरद दहीं ।
मानो बरखत भादों मास नदी घृत दूध दही ।।
जाको जहीं जहीं चित्त जाय कौतुक तहीं तहीं ।
रस हूआनन्द मगन गुवालका बदत नहीं ।।८।।

एक धाइ नन्दजू पे जाय पुनि पुनि पांय परे ।
एक आपु आपु हि मांझ हंसि हंसि अङ्क भरे ।।
एक अम्बर सबहि उतारि देत निशङ्क खरे ।
एक दधि रोचन और दूध सबनके सीस धरे ।।९।।

तब नन्द न्हाय भये ठाडे अरु कुश हाथ धरे ।
घसि चन्दन चारु मंगाय विप्रन तिलक करे ।।
नन्दी मुख पितर पुजाय अन्तर सोच हरे ।

वर गुरुजन द्विजन पहराय सबनके पांय परे ।।१०।।

गन गैया गिनी न जाय तरुन सुबच्छ बढ़ी ।
नित चरे जमुनाके काछ दूने दूध चढी ।।
खुर रूपे ताम्बे पीठ सोने सींग मढ़ीं ।
ते दीनी द्विजन अनेक हरखि अशीष पढी ।।११।।

सब अपने मित्र सु बन्धु हंसि हंसि बोलि लिये ।
मथि मृगमद मलयकपूर माथे तिलक किये ।।
उर मनिमाला पहराय वसन विचित्र दिये ।
मानों बरखत मास अषाढ दादुर मोर जिये ।।१२।।

बर बन्दि मागध सूत आंगन भवन भरे ।
ते बोले लेले नाम हित कोउ ना बिसरे ।।
जिन जो जाच्यो सो दीनो रस नन्दराय ढरे ।
अति दान मान परधान पूरन काम करे ।।१३।।

तब रोहिनी अम्बर मंगाइ सारी सुरङ्ग धनी ।
ते दीनी वधुत बुलाय जेसी जाय बनी ।
वे अति आनन्दित बहोरि निज ग्रह गोपधनी ।

मिलि निकसी देति असीस रुचि अपनी अपनी ।।१४।।

तब घरघर भेरि मृदङ्ग पटह निसान बजे ।
वर बांधि बन्दमाल अरु ध्वज कलम सजे ।।
तब ता दिन तें वे लोग सुखसम्पति ना तजे ।
सुनि 'सुर' सबनकी यह गति जिन हरि चरन भजे ।।

सो यह बड़ी बधाई गाई. सो श्रीनन्दरायजीके घरको वर्णन किये, तहां तांई तो श्रीआचार्यजी आप सुने, ता पाछें गोपीजनके घरको वर्णन करन लागे तब श्रीआचार्यजी आपु श्रीमुख तें सूरदाससों कहे जो -

सुन सूर सबनकी यह गति जो हरि चरन भजे ।

सो या भोगकी तुक आपु कहिकें सूरदासकों चुप करि दिये.

भावप्रकाश : सो यातें जो ब्रजभक्तनको आनन्द है सो भगवदीयनके हृदयमें अनुभव योग्य है. सो बाहिर प्रकास होय तांसो सूरदासको थामि दिये. और सूरदासजीके हृदयमें यह भी आयो हतो, जो मैंने सेवक किये हैं जिनकी कहा गति होयगी ? तब श्रीआचार्यजीने कहीः -

सुन सूर ! सवनकी यह गति जिन हरिचरन भजे ।

तब श्रीआचार्यजी आप प्रसन्न होयके कहे, जा मानों सूर नन्दालयकी लीलामें निकट ही ठाड़े हैं. सो ऐसो कीर्तन गायो. ता पाछें

श्रीआचार्यजीने सूरदासकूं 'पुरुषोत्तम सहस्त्रनाम' सुनायो. तब सगरे श्रीभागवतकी लीला सूरदासके हृदयमें स्फुरी. सो सूरदासने प्रथम स्कन्ध श्रीभागवतसों द्वादस स्कन्ध पर्यन्त कीर्तन वर्णन किये. तामें अनेक दानलीला, मानलीला आदि वर्णन किये हैं. ता पाछें गऊघाट ऊपर श्रीआचार्यजी आप तीन दिन रहे. सो तब सूरदासने जितने सेवक किये हते, सो सबकों श्रीआचार्यजीके सेवक कराये. ता पाछें श्रीआचार्यजी आप ब्रजमें पधारे. तब सूरदास हू श्रीआचार्यजीके सङ्ग ब्रजमें आये. सो प्रथम श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप गोकुल पधारे. तब श्रीआचार्यजीने श्रीमुखसों कह्यो जो सूर ! श्रीगोकुलको दरसन करो. तब सूरदासजीने श्रीगोकुलकों साष्टाङ्ग दण्डवत् किये. सो दण्डवत् करत हो श्रीगोकुलकी लीला सूरदासके हृदयमें स्फुरी. तब सूरदासजी अपने मनमें विचारे, जो श्रीगोकुलकी लीला मैं बरनन कैसैं करौं ? सो काहें तें, जो श्रीआचार्यजीको मन श्रीनवनीतप्रियजीके स्वरूपके ऊपर आसक्त है, सो श्रीनवनीतप्रियजीको कीर्तन श्रीगोकुलकी बाललीलाको वरनन, ऐसो पद सूरदासजीने गायो. सो पद -

राग बिलावल -
सोभित कर नवनीत लिये
घुटरुबन चलत रेनु तनु मण्डित मुख दधि लेप किये ।।१।।

चारु कपोल लोल लोचन छबि गोरोचनकौ तिलक दिए ।
लट लटकनि मानों मत्त मधुपगन मादक मधुहिं पिए ।।२।।

कठुला कण्ठ वज्र केहरिनख राजत हैं सखि रुचिर हिए ।
धन्य 'सूर' एको पल यह सुख कहा भयो सतकल्प जिए ।।३।।

सो यह पद सुनिकें श्रीआचार्यजी आप सूरदासके ऊपर बहोत प्रसन्न भये. सो ता पाछें सूरदासने और हू पद बाललीलाके

श्रीआचार्यजीकों सुनाये. ता पाछें श्रीआचार्यजीने विचार्यो जो श्रीगोवर्द्धननाथजीको मन्दिरतो समरायो, और सेवाहूको मण्डान भयो. तातें सूरदासकूं श्रीनाथजीकें पासरखिये. तब समे समेके सगरे कीरतनको मण्डान ओर भयो चाहिये. सो आगे वैष्णवजन सूरदासके पद गायके कृतार्थ बहोत होंयगे, तब यह विचारिके सूरदासकूं सङ्ग लेके श्रीआचार्यजी आप श्रीगोवर्द्धन पधारे, सो ऊपर पधारके श्रीनाथजीके दरसन किये. तब श्रीआचार्यजी आप श्रीमुखसों कहें, ''जो सूर ! श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करो. और कीरतन गावो.'' तब सूरदासजीने श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये. ता पाछें सूरदासजीने प्रथम विज्ञप्तिको पद दैन्यता सहित गायो. सो पद -

राग धनाश्री -
अब हौं नाच्यो बहुत गोपाल
काम क्रोधकौ पहरि चोलना कण्ठ विषयकी माल ।।१।।

महा मोहके नूपुर बाजे निन्दा शब्द रसाल ।
भरम भर्यो मन भर्यो पखावज ऊपर हंसगति चाल ।।२।।

तृष्णा नाद करत घट भीतर नाना विधिके ताल ।
मायाकौ कटि फेंटा बांध्यो लोभ तिलक दियो भाल ।।३।।

कोटिक कला काछि दिखलाई जल थल सुधि नहिं काल ।
'सूरदास' की सबै अविद्या दूरि करहु नन्दलाल ।।४।।

सो यह पद सूरदासजीने श्रीनाथजीकों सुनायो. सो सुनिके श्रीआचार्यजी आप सूरदाससों कहे, जो सूरदास ! अब तो तिहारे मनमें

कछू अविद्या रही नाहीं, जो तिहारी अविद्या तो प्रथम ही श्रीनाथजीने दूरि कीनी है. तासों अब तुम भगवल्लीला गावो जामें माहात्म्य पूर्वक स्नेह होय.

भावप्रकाश : परन्तु भगवदीय जितने हैं सो तितनेनकी यही बोली है जो अपनेको हीन करत हैं. सो यह भगवदीयकों लक्षण है. और जो कोई अपनेको आछो कहै और आपुनी बड़ाई करे, सो भगवान् तें सदा बहिर्मुख है.

तब श्रीआचार्यजी और श्रीगोवर्द्धननाथजीके आगे सूरदासजीने माहात्म्य स्नेह युक्त कीर्तन किये. सो पद -

राग गौरी -
कौन सुकृत इन ब्रजवासिनकौ वदत विरञ्चि शिव सेष
श्रीहरि जिनके हेत प्रगटे मानुष वेष ।। ध्रुव। ।।
ज्योति रूप जग धाम जगतगुरु जगतपिता जगदीस ।
जोग जग्य जप तप व्रत दुर्लभ सो गृह गोकुल इस ।।१।।

जाके उदर लोक त्रय, जल थल पञ्च तत्व चोखान ।
बालक व्है भूलत ब्रज पलना जसुमति भवन निधान ।।२।।

इकइक रोम कूप विराट सम आनन्द कोटि ब्रह्माण्ड ।
लिए उछङ्ग ताहि मात यसोदा अपने भरि भुज दण्ड ।।३।।

रवि ससि कोटि कला सम लोचन त्रिविध तिमिर भजि जात ।
अंजन देत हेत सुतके चख लेकर काजर मात ।।४।।

क्षिति मिति त्रिपद करी करुनामय बलि छलि दियो है पतार ।
देहरि उलङ्घि सकत नहीं सो प्रभु खेलत नन्दके द्वार ।।५।।

अनुदिन स्त्रवत सुधारस पञ्चम चिन्तामनि सी घेनु ।
सो त्यजि जसुमतिकौ पय पीवत भक्तनकों सुख देनु ।।६।।

वेद वेदान्त उपनिषद् षटरस अरपे भुगते नाहिं ।
सो हरि ग्वाल बाल मण्डलमें हंसि - हंसि जूठनि खाहिं ।।७।।

कमलानायक वैकुण्ठ दायक सुख दुःख जिनके हाथ ।
कांध कमरिया हाथ लकुटिया नग्न पद, बिहरत बन बच्छ साथ ।।८।।

करन हरन प्रभुदाता भुक्ता विश्वम्भर जग जानि ।
ताहि लगाइ माखनकी चोरी बांध्यौ नन्दजकी रानि ।।९।।

बकी बकासुर सकट तृणाबर्त अघ धेनुक वृषभास ।
कंस केसीकों यह गति दीनी राखे चरन निवास ।।१०।।

भक्त बछल हरि पतित उद्धारन रहे सकल भरिपूर ।
मारग रोकि पर्यो हरि द्वारे पतित सिरोमनि 'सूर' ।।११।।

सो यह पद सुनिकें श्रीआचार्यजी आप बहोत प्रसन्न भये.

भावप्रकाश : क्यों जो जैसो श्रीआचार्यजी आपु पुष्टिमार्ग प्रगट किये, ताही अनुसार सूरदासजीने यह कीर्तन गायो. श्रीआचार्यजीके मारगको कहा स्वरूप है ? जो माहात्म्य ज्ञान पूर्वक दृढ़ स्नेह सो सर्वोपरि है, सो ठाकुरजीकों बहोत प्रिय हैं. परन्तु जीव माहात्म्य राखे. सो काहेंते ? जो माहात्म्य बिना अपराधको भय मिट जाय. तासों प्रथम दसामें माहात्म्य युक्त स्नेह आवश्यक चाहिये. और ब्रजभक्तनको स्नेह है सो सर्वोपरि है. तासों भक्तनके स्नेहके आगे श्रीठाकुरजीको माहात्म्य रहत नाहीं. सो ठाकुरजी स्नेहके बस होय भक्तनके पाछें - पाछें डोलत है. सो जहां तांई एसो स्नेह नाहीं होय तहां तांई माहात्म्य राखनो. सो जब स्नेहको नाम लेके माहात्म्य छोड़े और श्रीठाकुरजीके आगे बैठे, बात करें और पीठ देय तो भ्रष्ट होय जाय. तासों माहात्म्य बिचारे और अपराधसों डरपे, तो कृपा होय. और जब (सर्वोपरि) स्नेह होयगो तब आपही तें स्नेह एसो पदार्थ हैं, जो माहात्म्यकूं छुड़ाय देयंगो. सो दसम स्कन्धमें वरनन है, जो श्रीभगवानने बारबार माहात्म्य ब्रजभक्तनकों और श्रीयसोदाजीकों दिखायो. सो पूतना वध करि, सकट तुनावर्त करि, यमलार्जुन करि, बकासुर, धेनुक, कालीदमन करिकें लीलामें माहात्म्य दिखायो परन्तु ब्रजभक्तनको स्नेह परम अद्‌भुत अनिवर्चनीय है. तासों माहात्म्य तथा इश्वरभाव न भयो. सो एसो स्नेह प्रभु करि दान करें ताकों आपही तें माहात्म्य छूटि जायगो. और जाको स्नेह पति, पुत्र, स्त्री, कुटुम्बमें तथा द्रव्यमें है, और अपने देह सुखमें है सो भगवानको माहात्म्य छोड़ि लौकिक रीति करे तो श्रीभगवानको अपराधी होय. तासो वेद मर्यादा सहित श्रीठाकुरजीके भय सहित सेवा करे, और सावधान रहे. सो यह श्रीआचार्यजीमहाप्रभुके मारगकी रीति है. तासों माहात्म्य पूर्वक स्नेह करिये. और माहात्म्य पूर्वक स्नेह यह, जो समय - समय ॠतु अनुसार सेवामें सावधान रहै, ताको नाम माहात्म्य पूर्वक स्नेह कहिये.

पाछें श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो सूर ! तुमकों पुष्टिमारगको सिद्धान्त फलित भयो है, तासों तुम श्रीगोवर्द्धनधरके यहां समय

समयके कीर्तन करो. ता समय सेन भोग सरि चुक्यो हतो, सो तब मानके कीर्तन सूरदासने गाये. सो पद -

राग बिहागरो -
बोलति काहे न नागरि बैनां
तोहि मिलनकों बहुत करत हैं गिरिधरलाल कमलदल नैनां ।।१।।

जब तें दृष्टि परी मोहनकी बिसर्यो गृह सुख सेनां ।
रटत 'सूर' राधे राधे कहि कहूं बनमाल कहूं उपरेनां ।।२।

राग बिहागरो -
सुखद सेजमें पोढ़े रसिकवर रसमय अङ्ग अङ्ग जाय रेन जागे हैं ।
सिथिल बसन भृषन अलक छबि सोहे मुख मुखसों लपट उर आगे हैं ।।१।।
झुकझुक आवें नयन आलस झलक रह्यो लटपटी बात कहत अति अनुरागे हैं ।
'सूरदास' नन्दसूवन तुम्हारो यस जानो प्रानप्रिया सुख ही में रस पागे हैं ।।२।।

राग बिहागरी -
पोढे लाल राधिका उर लाय
नवकुसुम अरु नवल सिज्या, नव चतुर दोऊ राय ।।१।।

गान करत सहचरी द्वारें सरस राग जमाय ।

'सूर' प्रभु गिरधरन सङ्ग सुख रह्यो उर लपटाय ।।२।।

सो पाछे या प्रकारसों कीर्तन सूरदासजीनें नित्य प्रातःकालके जगायवे तें लेके सेन पर्यन्तके हजारन किये.

वार्ताप्रसङ्ग २ : और एक समय सूरदासजी पांच सात वैष्णवनके सङ्ग मारगमें चले जात हते. सो तहां दस पांच जने चोपड खेलत हते. सो चोपडके खेलमें ऐसे लीन भये हते सो मारगमें गैलमें कहू आवते जाते मनुष्यकी कछू खबरि नाहीं. सो या प्रकार उनकों मगन देखिके सूरदासजीने अपने-अपने सङ्गके वैष्णवनके आगे एक पद गायो. और उन वैष्णवनसों सूरदासजीने कह्यो, जो देखो यह, प्राणी मनुष्य जन्म वृथा खोवत हैं. जो श्रीभगवानने मनुष्य देह अपने भजन करिवेके लिये दीनी है. सो या देहसों यह प्राणी वृथा हाड कूटत है. सो यामें लौकिकमें तो निंदा है, जो यह जुवारी हैं. और अलौकिकमें भगवानसों बहिमुर्खता है. तासों भगवानने तो एसी जिनकों मनुष्य देह दीनी है, तिनकों एसी चोपड खेलि चाहिये. सो ता समय सूरदासजीने यह पद करिके सङ्गके वैष्णव हते, तिनको सुनायो. सो पद-

राग कदोरो -
मन ! तू समझ सोच विचार
भक्ति बिना भगवान दुर्लभ कहत निगम पुकार ।।
साधु सङ्गति डार पासा पास फेरिरसना सार ।।
दाव अबके पर्यो पूरो, उतरे पेली पार ।।
छांड़ि सत्रह सुन अठारे, पञ्चहीकों मार ।।
दूरि तें तजि तीन काने चमक चोंक विचार ।।
काम क्रोध मद लोभ भूल्यो ठग्यो ठगिनी नारि ।।
'सूर' हरिके पद भजन बिन चल्यो दोउ कर झारि ।।

सो सुनिकें उन वैष्णनवनें सूरदाससों कह्यो, जो सूरदासजी ! या पदमें समझ नाहीं परी है. तासों हमकों अर्थ करिके समुझावो, सो तब समझो जाय. तब सूरदासजी उन वैष्णवासों कहे. जो -

भावप्रकाश : तीन वस्तु चोपड़में चाहियें समुझ सोच और विचार. सो ये तीन्यो वस्तु भगवानके भजनमें हूं चाहिये (क्यों ?) जो जैसे पहले समुझे तब चोपड़ खेलेगो. सो तैसेही भगवानकों जानेगो. तो भजन करेगो और चोपड़में सोच होय, जो एसो फांसा परे तो मैं जीतूं. सो तेसेही या जीवकों कालको सोच होय, तब यह जीव प्रभुकी सरन जाय. और (तीसरी वस्तु जो) विचार, सो यह जो विचारके गोटकों, फांसाके दाबकूं चले, जो यहां नाही मारी जायगी इत्यादि. सो तेसेही विचार वैष्णवकों होय, जो यह कार्य मैं करत हूं सो आछो है, के बुरो है ? तब यह जीव बुरो काम छोड़िकें भगवत धरमकी चालमें चले. और चोपड़में फांसाके दाव परें तब दोऊ औरके मनुष्य पुकारत हैं. सो तेसेही जगतमें निगम जो वेद पुराण सो पुकारिके कहत हैं, जो भक्ति बिना भगवान् दुर्लभ हैं सो तासों कोटि साधन करो. और चोपड़में दूसरो सङ्ग मिले तब चोपड़ खेली जाय, सो तैसेही भगवानकी भक्तिमें भगवदीय वैष्णवकी सङ्गति होय तब भक्ति बढ़े. और चोपड़ खोलिवे बारेके मनमें (जैसे) अपने दावको सुमिरन रहत है, जो यह दाव परे ता मैं जीतूं, सो तेसेही रसनासों यह जीव भगवद् वार्तामें मन लगायकें सब रसको साररूप (एसो भगवन्नाम) कह्यो करे. और (जैसे) चोपडमें सुन्दर पूरो दाव परे तब गोट पार जाय, और तब उतरिके घरमें आवे, और मरवेको भय मिटे. सो तैसेही मनुष्य देह संसारसों पार उतरिवेकों पूरो दाव बड़ी पुन्याईसों मिले है, सो तो या देहसों भगवदाश्रय करि संसार तें पार उतरि जाय. ''राखि सत्रे सुनि अठारे'' चोपरमें सत्रे अठारे बड़े दाव हैं. सों तैसेही जगतमें सब पुराण हैं सो तिनहीको राखि, सुनि अठारे लो श्रीभागवत् सुननकों (और) पुराण हूकों धरि राख. और पांचो जो इन्द्रियं, पञ्चपर्वा अविद्या है, सो इनकूं मार. सो काहेतें ? जो शास्त्रके वचन है जो -

पतङ्ग मातङ्ग कुरङ्ग भृङ्ग मीना हताः पङ्चेभिरेव पङ्च ।
एकःप्रमादी स कथं न हन्यते यः सेवते पङ्चभिरेव पङ्च ।।१।।

१. पतङ्ग नेत्र विषय तें दीपकमें परे. २. हाथी स्पर्श विषय करी मरे. ३. कुरङ्ग श्रवन विषय तें मरे. ४. भृग गन्ध नासिका विषय तें मरे, ५. मिन - जिभ्या विषय तें मरे. सो एक - एक विषय तें मरि परै, तो मनुष्य तो पांचनको सेवन करत है, सो निश्चय काल इनको भक्षण करे. तासों नाद पांचो मारि. सो जैसे चोपड़में गोट मारत हैं. और चोपड़में सबतें छोटो दाव तीनि काने हैं, सो कोऊ नाहीं चाहत है. तेसेही तू तीन तामस, राजस, सात्त्विक यह मायाके गुण हैं. सगरो संसार सोइ चोक है, सो यामें चतुराईसों डार चतुराई यह जो इनको डारे पाछे इनकी और देखे मति. सो जैसे चोपड़में सबकी सूध बूध भूलि जात हैं, सो सब ठग्यो गयो. सो तेसे काम क्रोधादि जंजाल है, और स्त्री रूप भगवद् माया हैं, सो यह सगरे जगतको ठगेगी. सो जैसे चोपड़में खेलिके हारिकें सब दोऊं हाथ झारिके उठें, सो तैसेही श्रीठाकुरजीके पदकमलके भजनके बिना दोऊ हाथ झारिके या मनुष्यने देह खोई. जो कछु भलो परोपकार सङ्ग नाहीं कियो. सो या प्रकार वैष्णव सुनिके सूरदासके ऊपर बहोत प्रसन्न भये.

वार्ताप्रसङ्ग ३ : और सूरदासकों जब श्रीआचार्यजी देखते तब कहते, जो आवो सूरसागर ! सो ताको आसय यह है, जो समुद्रमें सगरो पदार्थ होत हैं. तैसेही सूरदासने सहस्त्राबधि पद किये हैं. तामें ज्ञान वैराग्यके, न्यारे - न्यारे भक्ति भेदके, अनेक भगवद् अवतार, सो तिन सबनकी लीलाको बरनन कियो है. पाछें उनके पद जहां तहां लोग सीखिके गावन लागो. सो तब वे (एक समय) तानसेनने एक पद सूरदासको सीखिके अकबर बादशाहके आगे गायो. सो पद -

राग नट -
यह सब जानो भक्तके लच्छन
कोऊ निन्दो कोऊ वन्दो कोऊ मारि लेहू धन गच्छन ।।१।।

कोऊन आनि लगावत चन्दन डारि धूरि कोऊ देत है मच्छन ।
कोऊ कहे मूरख महा अधर्मी कोऊ कहे यह बडो विच्छन ।।२।।

भली बुरी मनमें नहीं आवे कृष्णदास चरन रटि टरे न एक छिन ।
'सूर' सुख दुःख नहीं व्यापे तिनकों गिरिधर मिले ततछिन ।।३।।

यह सुनि देसाधिपति अकबरने कह्यो, जो ऐसे लक्षन वारे भक्तनसों मिलाप होय तो कहा कहिये ? सो तानसेनने कही, जो जिननें यह कीर्तन कियो है सो ब्रजमें रहत हैं. और सूरदासजी उनको नाम है. यह सुनि देसाधिपतिके मनमें आई, जो कोई उपाय करिके सूरदाससों मिलिये. पाछै देसाधिपति दिल्ली तें आगरा आयो. तब अपने हलकारानसों कह्यो, जो ब्रजमें सूरदासजी श्रीनाथजीके पद गावत हैं, सो तिनकी ठीक पारिके माकों श्रीमथुराजीमें खबरि दीजियों, और (जो) यह बात सूरदास जाने नाहीं. तब उन हलकारानने श्रीनाथजीद्वार आयके खबरि काढ़ी. तब सुनी, जो सूरदासजीतो मथुरा गये हैं. सो तब वे हलकारा मथुरामें आयके सूरदासकों नजरिमें राखे, जो या समय यहां बैठे हैं. तब उन हलकारानने देसाधिपतिकों खबरि करी, जो अजी साहब ! सूरदासजीतो मथुराजीमें हैं. तब सूरदासकूं अकबर बादशाहने दस पांच मनुष्य बुलायवेकों पठाये. सो सूरदासजी ! तुमने विष्णुपद बहोत किये हैं, सो तुम माकों कछु सुनावो. तब सूरदासनें अकबर बादशाह आगे यह पद गायो. सो पद -

राग बिलावन -
मनारे ! तू करि माधौं सौं प्रीति काम क्रोध ।
मद लोभ मोह तू छांडि सफल विपरीति ।
भौंरा भोगी बन भ्रमेरे मोद न माने माप ।
सब कुसुमनकों नीरस करे रे कमल बंधावे आप ।।१।।

सुनि परमित पिय प्रेमकी रे चातक चितवे वारि ।
धन आशा सब दुःख सहेरे अनत न जाचे द्वारि ।।२।।

देखहू करनी कमलकी रे कीनो रविसों हेत ।
प्रान तजे प्रेम न तजे रे सूक्यो सरही समेत ।।३।।

दीपक पीर न जान ही रे पावक परे पतङ्ग ।
तन तो तिहिं ज्वाला जर्यो रे चित न भयो रस भङ्ग ।।४।।

मीन वियोग न सहि सकेरे, नीर न पूछे बात ।
देखि जू तू ताकी गति रे रति न घटे तन जात ।।५।।

परन परेवा प्रेमकी रे चित ले चढत अकास ।
तहां चढि ताहि जू देखि ही रे भू पर लेत उसास ।।६।।

सुमिर सनेह कुरङ्गकौ रे श्रवननि राच्यो राग ।
धरि न सक्यो पग पिछमनो रे सर सन्मुख उर लाग ।।७।।

देखि करनी जड नारिकी रे जरत प्रेतके सङ्ग ।
चिता न चित फीको भयो रे सुराची पियके सङ्ग ।।८।।

लोक वेद बरजे सबेरे नेनन देखे त्रास ।

चोर न जिय चोरी तजे रे सब तन सहत विनास ।।९।।

सब रसकौ रस प्रेम है रे विषई खेले सार ।
तन मन धन जोबन खस्यो रे तोऊ न माने हार ।।१०।।

तें रतन पायो भलो रे जान्यो साधन साध ।
प्रेम कथा अनुदित सुनी रे तोऊ ना उपजी लाज ।।११।।

सदा सङ्गाती आपुनो रे जियके जीवन प्रान ।
सो विसर्यो तू सहज ही रे हरि ईश्वर भगवान ।।१२।।

वेद पुरान सुमरे सबेरे सुर तरु सेवक जाहि ।
महा मोह अज्ञानमें रे क्यों न सम्हारे ताहि ।।।१३।।

खग मृग मीन पतङ्ग लों रे मैं सोधे सब ठौर ।
जलथल जीव जीते किते रे कहीं कहां लगि और ।।१४।।

प्रभु पूरन पावन सखा रे प्राननहूके नाथ ।
परम दयाल कृपाल कृपानिधि जीवन जाके हाथ ।।१५।।

गर्भवास अति त्रासमें रे जहां न एको अङ्ग ।
सुनि सठ तेरे प्रानप्रति रे तहां हु न छांड्यो सङ्ग ।।१६।।

दिन रात पोषत रहे रे जैसे चोली पान ।
वा दुःख तें तोहि काढिके रे गहे दीनो पयपान ।।१७।।

जिहिं जड ते चेतन कियो रे रचि गुन तत्व निधान ।
चरन चिकुर कर नख दिये रे नैन नासिका कान ।।१८।।

असन बसन बहु बिधि दिये रे औसर औसर आन ।
मातापिता भैया मिले रे नइ रुचि नइ पहचान ।।१९।।

सज्जन कुटुम्ब परिकर बढ्यो रे सुतदारा धन धाम ।
महा मोह विषयी भयो रे चित्त आकर्ष्यो काम ।।२०।।

खानपान परिधानमें रे जोबन गयो सब बीत ।
ज्या विधि परतिय सङ्ग बस्यो रे भोर भये भयभीत ।।२१।।

जैसे सुख ही धन बढ्यो रे तैसे तन हि अनङ्ग ।
धूम बढ्यो लोचन खस्यो रे सखा न सूज्यो सङ्ग ।।२२।।

जम जान्यो सब जग मूओ रे बाढ्यो अयस अपार ।
बीच न काहू तब कियो रे जमदूतन दीनी मार ।।२३।।

को जानेके बार मूआ रे ऐसो कुमति कुमीच ।
हरिसों हेत बिसारकै सुख चाहत है नीच ।।२४।।

जो पै जिय लज्जा नहीं रे कहा कहों सौ बार ।
ऐको अङ्ग ते न हरि भाज्यो रे सुनि सठ 'सूर' गंमार ।।२५।।

भावप्रकाश : सो यह पद कैसो है, जो या पदको सुमिरन रहै तब भगवत् अनुग्रह होय, और मनकूं बोध होय. और संसारसों वैराग्य होय, और श्रीभगवानके चरणाविन्दमें मन लगे. तब दुःसङ्गसों भय होय, सत्सङ्गमें मन लगे. सो देहादिकमें ते स्नेह घटे, और लौकिक आसक्ति छूटे. जो भगवानको प्रेम है, सो अलौकिक है सो ताके ऊपर प्रीति बढ़े.

यह सुनि देसाधिपति बहोत प्रसन्न भयो. पाछे देसाधिपतिके मनमें यह आई, जो सूरदासजीकी परीक्षा देखूं. सो भगवानको आश्रय हायगो, तो ये मेरो जस गावेगो नाहीं. सो यह बिचारीके देसाधिपतिनें सूरदाससों कही, जो श्रीभगवानने मोकों राज्य दियो है, सो सगरे गुनीजन मेरो जस गावत हैं, सो तिनकों मैं अनेक द्रब्यादिक देत हौं. तासों तुमहू गुनी हों, सों तुमही मेरो कछू जस गावो. सो तिहारो मनमें जो इच्छा होय सो मांगि लेहू. सो यह देसाधिपति न कह्यो. तब सूरदासने यह पद गायो -

राग केदारो -

हिन रह्यो मनमें ठौर नन्दनन्दन अछत कैसे आनिए उर और ।।१।।

चलत चितवत दिवस जागत सुपन सोवत राति ।
हृदय तें वह मदन मूरति छिन न इत उत जाति ।।२।।

कहत कथा अनेक उधो लाख लोभ दिखाय ।
कहा करों चित्त पेम पूरन घट न सिन्धु समाय ।।३।।

स्याम गात आनन ललित गति मृदु हास ।
'सूर' ऐसे दरसकों ये मरत लोचन प्यास ।।४।।

सो यह पद सुनिके देसाधिपतिने अपने मनमें विचार्यो, जो ते मेरो जस काहेकों गावेंगे ? जो इनकों कछू लेवेको लालच होय तो ये मेरो जस गावें. ये तो परमेश्वरके जन हैं, सो ये तो ईश्वरको जस गावेंगे. सो सूरदासजी या कीर्तनमें पिछले चरनमें कहे हैं जो -

सूर ! ऐसे दरसकों ये मरत लोचन प्यास ।

सो देसाधिपति न सूरदाससों कह्यो, जो सूरदास ! तुम्हारे तो नेत्र नाहीं, सो प्यासे कैसे मरत हैं ? सो यह तुम कहा कहे ? तब सूरदासजीने कही, जा या बातकी तुमकों कहा खबरि है ? जो ये लोचन तो सबके हैं परन्तु भगवानके दरसनकी प्यास काहूकों है ? जो श्रीभगवानके दरसनके जे प्यासे नेत्र हैं, सो तो सदा भगवानके पासही रहत हें. सो स्वरूपानन्दको रसपान छिन छिनमें करत हैं, और सदा प्यासे मरत हैं. यह सुनि अकबर बादशाहने कही, जों इनके नेत्र परमेश्वरके पास हैं, सो परमेश्वरकों देखत हैं, औरकों देखत नाहीं.

तब बादशाहने सूरदासके समाधानकी इच्छा कीनी. दोय चारि गाम तथा द्रव्य बहोत देन लाग्यो, सो सूरदासने कछू नाहीं लियो. तब अकबर बादशाह सूरदासजीसों कहे, जो बावा साहिब ! कछू तो मोकों आज्ञा करिये. तब सूरदासने कहीं, जो आज पाछें हमको कबहू फेरि मति बुलाइयो और मोसों कबहू मिलियो मति.

भावप्रकाश : सो अकबर बादशाह विवेकी हतो. सो काहेंते ? जो ये योगभ्रष्ट तें म्लेच्छ भयो है. सो पहले जन्ममें ये बालमुकुन्द ब्रह्मचारी हतो. सो एक दिन ये बिना छाने दूध पान कियो, तामें एक गायको रोम पेटमें गयो. सो ता अपराध तें यह मलेच्छ भयो है.

सो सूरदासको दण्डवत् करिके बिदा किये.

वार्ताप्रसङ्ग **४ : ता पाछे सूरदास श्रीनाथजीद्वार आये. पाछे देसाधिपतिने आगरेमें आयके सूरदासके पदनकी तलास कीनी. जो कोऊ सूरदासजीके पद लावे तिनकूं रुपैया और मोहौर देय, सो वे पद फारसीमें लिखायके बांचे. सो मोहौरके लालच सो पण्डित कवीश्वर हु सूरदासके पद बनायके लाये. तब अकबर बादसाहने उनसों कह्यो, जो यह पद सूरदासजीको नाहीं. सो ये पैसाके लिये पदकी चोरी करत हैं. तब पण्डित कवीश्वरने कही, जो तुम कैसे जाने जो वह सूरदासकों पद नाहीं ? जो यह तो सूरदासको ही पद है. तब बादसाहने अपने पाससों सूरदासकों पद अपने कागद ऊपर लिखायो. और वे पण्डित कवीश्वर सूरदासको भोग (छाप) को बनायके लाये सो दोऊ कागद जलमें धरिके कह्यो, जो ईश्वर सांचे होय तो या बातको न्याव करि दीजो. सो यह कहि जलमें डारि दिये. सो उन पण्डित कवीश्वरनको पद बनायो हतो सो कागद जलमें भीजि गयो, और सूरदासको पद हतो सो कागद जलमें नाहीं भीज्यो.**

भावप्रकाश : सो या भांतिसों, जो जिन भगवदीयनकों भगवान् मिले हैं, उनके पद जो गायगो सो संसारसों तरेगो. और चतुराई करि लौकिक मनुष्यके काव्यके कीर्तन कवित्त जो गावेगो, सो या प्रकारसों संसारमें डूबेगो.

तब सगरे पण्डित कवीश्वर लज्जा पायके नीचो माथो करके अपने घराकों गये. सो वे सूरदासजी श्रीआचार्यजीके एसे परम कृपापात्र भगवदीय हते.

वार्ताप्रसङ्ग ५ : सो इन सूरदासजीनें श्रीनाथजीके कीर्तनकी सेवा बहोत दिन तांइ करी. सो बीच बीचमें जब कुम्भनदासजी, परमानन्ददासजीके कीर्तनके ओसरा आवते, तब सूरदासजी श्रीगोकुलमें श्रीनवनीतप्रियजीके दरसनकूं आवते. सो एक दिन सूरदासजी श्रीगोकुल आये हते, सो बाललीलाके पद बहोत गाये. सो सुनिकें श्रीगुसांईजी आप प्रसन्न भये. तब श्रीगुसांईजी आप एक पलनाकों कीर्तन करिकें संस्कृतमें सूरदासकों सिखायो, सो ता समय श्रीनवनीतप्रियजी पालनैमें बिराजे तब सूरदासने श्रीगुसांईजी कृत यह पालना गायो. सो पद -

राग रामकली -
प्रेङ्खं पर्यङ्क शयनं
चिर बिरह तापहरमतिरुचिरमीक्षणं प्रकटय प्रेमायनम् ।ध्रु.।

तनुतर द्विजपङ्क्तिमतिललितानि हसितानि तव वीक्ष्य गायकीनाम् ।
यदवधि परमेतदाशयासवभवञ्जीवितम् ताबकीनाम् ।।१।।

तोकता वपुषि तव राजते हृषि तु मदमानिनीमानहरणम् ।
अग्रिमें वयसिकिमुभावि कामेऽपि निजगोपिका भावकरणम्।।२।।

व्रजयुवति हृद्यकनकाचलानारोढुमुत्सुकं तव चरण - युगलम् ।

तत्तमुहुरुन्नमनकाभ्यासमिव नाथ ! सपदि कुरुते मृदुल मृदुलम् ।।३।।

अधिगोरोचनातिलकमलकोदग्रथितविविधमणिमुक्ताफलविरचितम् ।
भूषणं राजते मुग्धताऽमृतभरन्यन्दि वदनेन्दुरसितम् ।।४।।

भ्रूतटे मातृरचिताऽञ्जनविन्दुरतिशयितशोभया दृग्दोषऽमपनयन् ।
स्मर धनुषि मधुपिवन्नलिराज इव राजते प्रणयिसुखमुपनयन् ।।५।।

वचनरचनोदारहाससहजस्मितामृतचयैरार्ति भारमपनयनम् ।
पालय सदाऽस्मानस्मदीय श्रीविटठले निजदास्यमुपनयन् ।।६।।

सो यह पद सूरदासने श्रीनवनीतप्रियजीके आगे गायो. पाछे या पदके अनुसार सूरदासजीने बहोत पद करिके गाये. सो पद -

राग रामकली -
प्रेङ्ख पर्यङ्क गिरिधरन सोहे
प्रेम आनन्दभरी गोपिका कर धरि देति झोटा तहां कामको है ।।१।।

मदनमोहन हसत दन्त कान्ति हि लसत बजत नूपुर मधुर रुणनकारी ।
भाल मसि बिन्दु केसर तिलक तहां लसे नैन अंजन मनसि बान मारी ।।२।।

अलक राजत मुख ही भुज पसारत सुख ही हरत गोपाङ्गना मान तिहिं समै तहां ।
देत सुखसिन्धु सब गोपिका मननकुं 'सूर' शोभा निरखि वारत तन मन जहां ।।३।।

सो यह पालनाको कीर्तन सूरदासजीने गायो. पाछे बाललीलाके पद बहोत गाये. सो पद -

राग बिलावल -
देखि सखी एक अद्‌भुत रूप
एक अम्बुज मधि देखियत बीस दधिसुत जूप ।।१।।

एक अवली दोय जलचर उभय अर्क अनुप ।
पञ्च वारिज ढिंग हि देखियत कहो कहा स्वरूप ।।२।।

सिसुगतिमें भई सोभा करो कोऊ बिचार ।
'सूर' श्रीगोपालकी छबि राखिये उर धार ।।३।।

सोभा आजु भली बन आई.
जलसुत ऊपर हंस बिराजत ता पर इन्द्र बधू दरसाई ।।१।।

दधिसुत लियो दियो दधि सुतकों यह छबि देखि नन्द मुसिक्याई ।
नीरज सुत वाहनकौ भच्छन 'सूरस्याम' ले कीर चुगाई ।।२।।

इत्यादिक पद सूरदासजीने श्रीनवनीतप्रियजीके आगे गाये. तब श्रीगुसांईजी और श्रीगिरधरजी आदि सब बालक कहन लागे जो हम जा प्रकार श्रीनवनीतप्रियजीकों सिंगार करत हैं, सो ताही प्रकारके कीर्तन सूरदासजी गावत हैं. तातें इन सूरदासके ऊपर बहोत ही कृपा है.

वार्ताप्रसङ्ग ६ : ता पाछें श्रीगुसांईजी आपतो श्रीनाथजीद्वार पधारे सो सूरदासजीने हू श्रीनाथजीद्वार जाइवेको बिचारि कियो. तब श्रीगिरधरजी आदि सब बालकनने कह्यो, जो सूरदासजी ! दोय दिन श्रीनवनीतप्रियजीकों और हू कीर्तन सुनावो, पाछे तुम जइयो. तब सूरदासजी श्रीगोकुलमें रहे. सो तब श्रीगिरधरजीसों श्रीगोविन्दरायजी श्रीबालकृष्णजी और श्रीगोकुलनाथजी ये तीनों भाई कहें, जो ये सूरदासजी, जेसो सिंगार श्रीनवनीतप्रियजी को होत है, तेसेही वस्त्र आभूषण वरणन करत हैं. सो एक दिन अद्‌भुत अनोखो सिंगार करो, और सूरदासजीको जनावो मति, सो देखें ये कीर्तन केसो करत हैं ? तब गिरधरजीने कह्यो जो ये सूरदासजी भगवदीय हैं, सो इनके हृदयमें स्वरूपानन्दको अनुभव है. तासों जेसो तुम सिंगार करोगे, सो तेसो ही पद सूरदासजी वरणन करिके गावेंगे. तासों भगवदीयकी परीक्षा नाहीं करनी. तब उन तीनों बालकनने श्रीगिरीधरजीसों कही, जों हमारो मन है, सो यामें कछू बाधा नाहीं है. तब श्रीगिरिधरजी कहे, जो सवारे श्रीनवनीतप्रियजीको सिंगार करेंगे सो अद्‌भूत सिंगार करेंगे. ता पाछे सवारे श्रीगिरधरजी तीनो बालकन सहित श्रीनवनीतप्रियजीके मन्दिरमें पधारे और सेवामें न्हाये. पाछें श्रीनवनीतप्रियजीकों जगाये, ता पाछें भोग धर्यो. फेरि न्हवायके सिंगार धरावन लागे. सो अषाढ़के दिन हते तातें गरमी बहोत. सो नवनीतप्रियजीकों कछु वस्त्र नाहीं धराए. सो मोतीनकी दो लर मस्तक पर मातीके बाजु पहोंची, कटि किंकनी नुपूर, हार सब मोतीनके, तिलक, नकवेसर, करनफूल और कछु नाहीं. सो सूरदासजी जगमोहनमें बेठे हते, सो इनके हृदयमें अनुभव भयो. तब सूरदासजी अपने मनमें विचारे जो आजुतो श्रीनवनीतप्रियजीको अद्‌भुत सिंगार कियो है. एसो सिंगार तो मैंने कबहू देख्यो नाहीं, और सुन्योहू नाहीं, जो केवल मोती धराए हैं, और वस्त्र ता कछू धराए हैं नाहीं, तासों आज मौकों कीर्तन हू अद्‌भुत गायो चहिये. सो जब सिंगारके दरसन खुले, तब श्रीगिरधरजीने सूरदासजीकों बुलाये और कह्यो, जो सूरदासजी ! दरसन करो और कीर्तन गाओ. तब सूरदासजीने बिलावलमें यह कीर्तन श्रीनवनीतप्रियजीकों सुनायो. सो पद -

राग बिलावल -
देखे री हरि नङ्गमनङ्गा
जलसुत भूषन अङ्ग बिराजत वसन हीन छबि उठत तरङ्गा ।।१।।

अङ्ग अङ्ग प्रति अमित माधुरी निरखि लजिजत रति कोटि अनङ्गा ।
किलकत दधिसुत भुख लेपन करि 'सूर' हसत ब्रज युवतिन सङ्गा ।।२।।

सो सुनिके श्रीगिरधरजी आदि सगरे बालक अपने मनमें बहोत प्रसन्न भये. और सूरदाससों कहन लागे, जो सूरदासजी ! यह तुम कहा गायो ? तब सूरदासजीने बिनती कीनी, जो महराज ! जेसो आपने अद्‌भूत सिंगार कियो, तेसो ही मैंने अद्‌भूत कीर्तन गायो है. तब सगरे बालक यह सुनिके सूरदासजीके ऊपर बहोत प्रसन्न भये. सो ए सुरदासजी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुके एसे परम कृपा पात्र भगवदीय है, सो इनकों श्रीठाकुरजीकों नित्य हृदयमें अनुभव करावते. ता पाछे श्रीगिरधरजी आप सूरदासजीकों सङ्ग लेके श्रीनाथजीद्वार आये. तब श्रीगिरधरजीने सब समाचार श्रीगुसांईजीसों कहे, जो या प्रकार अद्‌भुत सिंगार श्रीनवनीतप्रियजीको सगरे बालकनके मनोरथसों कियो. सो सूरदासजीने एसो ही कीर्तन कियो. सो इनके हृदयमें अनुभव है. तब श्रीगुसांईजी आपु गिरधरजीसों कहे, जो सूरदासजीकी कहा बात है ? जो ये पुष्टिमार्गके जहाज हैं. सो भगवल्लीलाको अनुभव इनकों अष्ट प्रहर हैं. सो ये सूरदासजी श्रीआचार्यजीके एसे कृपापात्र भगवदीय हते.

वार्ताप्रसङ्ग ७ : और सूरदासजीके पास एक ब्रजवासीको लरिका हतो, सो सब कामकाज सूरदासजीको करतो. ताको नाम गोपाल हतो. सो एक दिन सूरदासजी महाप्रसाद लेनकों बैठे, तब वा गोपालसों सूरदासजी कहे जो मोकूं तू लोटीमें जल भरि दीजों. तब गोपाल ब्रजवासीने कह्यो, जो तुम महाप्रसाद लेनकों बेठो जो मैं जल भरि देऊंगो. सो यह कहिके गोपालतो गोबर लेवेकों गयो. सो तहां दोय चारि वैष्णव हते सो तिनसों बात करन लाग्यो. तब सूरदासकों जल देनी भूलि गयो. तब सूरदासजीतो महाप्रसाद लेन बैठे, सो गरेमें कौर

अटक्यो. तब बांये हाथसों लोटा इत उत देखन लागे सो पायों नाहीं. तब गरेमें कौर अटक्यो सो बोल्यो न जाय. तब सूरदास व्याकुल भये. सो इतनेमैं श्रीनाथजी सूरदासजीके पास आयके अपनी झारी धरि आए. तब सूरदासजीने झारीमें ते जल पियो. तब गोपाल ब्रजवासीकों सुधि आई, जो सूरदासजीकों मैं जल नाहीं भरि आयो हूं. सो दोर्यो आयो. इतने में सूरदास महाप्रसाद लेकें आये. तब गोपाल ब्रजवासीने आयके सूरदाससों कह्यो, जो सूरदासजी ! तुम महाप्रसाद ले उठे, सो तुमने जल कहां ते पियो ? जो मैं ता गोबर लेन गयो हतो. सो वैष्णवके सङ्ग बात करतमें भूलि गयो. तासो अब मैं दोर्यो आयो हूं. तब सूरदासने ब्रजवासीसों कह्यो, जो तेंनें गोपाल नाम काहेकों धरायो ? जो गोपाल तो एक श्रीनाथजी हैं. तासों आज मेरी रक्षा करी. नांतर गरेमैं एसो कोर अटक्यो हतो सो जल बिना बोल निकसे नाहीं. तब मैं व्याकुल भयो, तब हाथमें जलकी झारी आई सो मैं जल पान कियो. तासों मैंने जान्यो जो तेने धर्यो होयगो. और अब तू कहत हैं, जो मैं नाहीं हतो. सो तातें मन्दिरवारो गोपाल हायगो. जो देखितो झारि कैसी है. तब गोपाल ब्रजवासी जहां सूरदासजी महाप्रसाद लिये हते तहां आयके देखे ता सोनेकी झारी है. सो उठायके गोपाल सूरदासजीके पास आयके कह्यो, जो येह झारी तो मन्दिरकी है. सो तब सूरदासने वा गोपाल ब्रजवासीसों कह्यो, जो तैने बहोत बुरो काम कियो, जो ठाकुरजीकों इतनो श्रम करवायो. जो मेरे लिये झारी लेकें श्रीठाकुरजीकों आनो पर्यो. सो या प्रकार सूरदासजीने गोपालदाससों कह्यो, जो ये झारी तू जतनसों राखियो. और जब श्रीगुसांईजी आपु पोढिके उठें तब उनकों सोंपी आइयो. तब गोपालदासने झारी लेके श्रीगुसांईजीके पास आय, दण्डवत् करि आगे राखि. तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, ये झारी तेरे पास कैसे आई ? जो ये झारी तो श्रीगोवर्द्धनधर की है. तब गोपालदासने श्रीगुसांईजीसों विनती कीनी, जो महाराज ! यह अपराध मोसों पर्यो है. पाछे सब बात कही. तब यह बात सुनिके श्रीगुसांईजी आप तत्काल स्नान करिकें झारीकों मंजवाय, दूसरो वस्त्र लपेटिकें मन्दिरमें बेगि झारी लेके ही पधारे. पाछे श्रीगोवर्द्धनधरकूं जल पान कराइके कहे, जो आज तो सूरदासकी बड़ी रक्षा कीनी. सो तुम बिन कौन वैष्णवकी रक्षा करे ? तब श्रीनाथजीने कही, सो सूरदासके गरेमें कौर अटक्यो सो व्याकुल भये, तासों झारी धरि आयो.

भावप्रकाश : सो काहेते ? जो सूरदास व्याकुल भये, सो मैं ही व्याकुल भयो. सो भगवदीय है सो मेरो स्वरूप है.

ता पाछे उत्यापनके किंवाड़ खोले. सो सूरदासजी आइके उत्थापनके दरसन किये. सो उत्पाथन समेको भोग श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीकों धरि सूरदासके पास आईके कहे, जो आज गोपालने तिहारे ऊपर बड़ी कृपा करी है. तब सूरदासजीने कह्यो, जो महाराज ! यह सब आपकी कृपा है. नाहिं तो श्रीनाथजी मो सरीखे पतितनकों कहा जानें ? जो सब श्रीआचार्यजीकी का'नि तें अङ्गीकार करत हैं. तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो तुम बड़े भगवदीय हो. जो भगवदीय बिना ऐसी दैन्यता कहां मिले ? सो सूरदासजी श्रीआचार्यजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते.

वार्ताप्रसङ्ग ८ : श्रीनाथजीके मन्दिरके नीचे गोपालपुर गाम है. सो तहां एक बनियां रहतो. सो ऐसो गृहकार्यमें और लोभमें आसक्त हतो. जो कबहुं श्रीनाथजीको दरसन नाहीं कियो. और श्रीगुसांईजीकी सरन हूं नाहीं आयो. सो गोपालपुरमें परवतके नीचे वाकी दुकान हती. सो वह बनियां गोपालपुरमें दुकान खोलतो सो पहले जो कोई वैष्णव श्रीनाथजीके दरसन करिके परवतके ऊपरसों आवतो ताकों बुलायके पहेले पूछतो, जो आज श्रीनाथजीकौ कहा सिंगार है ? सो वैष्णव याकों बतावतो. सो ताही प्रकार बनियां सब वैष्णवके आगे श्रीनाथजीके दरसनकी बड़ाई करतो, जो देखो, आज श्रीनाथजीको कैसो सिंगार भयो है. कैसो अलौकिक दरसन भयो है. या भांतिसों सबतें कहतो, आप दरसनकों कबहू नाहीं आवतो, और वैष्णवनकों दिखाइवेके लिये माला पहरि लेतो, और आछो तिलक, आछो छापा लगावतो. और वैष्णव आगे प्रेमकी वार्ता करतो. सो वे वैष्णव प्रसन्न होयके वाकों वैष्णव जानिके सीधो सामग्री लेते. सो या प्रकार पाखण्ड करि विश्वास दे देके सब वैष्णवकों ठगे. सो द्रव्य बहोत भेलो कियो, परन्तु कोडी एक खरचे नाहीं. सो ऐसे करत साठ बरसको भयो. तब एक दिन सूरदासजीसों वा बनियांने कही, जो सूरदासजी ! आज तुम देखो, कैसो सुन्दर सिंगार भयो है. और तुम तो कोई दिन मेरी हाटसों सीधो सामान लेत नाहीं हो, और कोई दिन मेरी हाट ऊपर तुम आवत नाहीं हो. सो तुम ऐसे वैष्णव गुनी हो सो मेरो अपराध कहा, जो मेरी हाट तें सोदा लेत नाहीं ? और यह हाट तिहारी है. मैं तो तुम वैष्णवनको दास हूं तासों मो पर कृपा करो. या भांति बनियांके बचन सुनि सूरदास अपने मनमें बिचारी जो देखो, बनियां कैसो सुन्दर बोलत है, जो ऊपरसों लाभसों कपट करत है. तासों अब याको कपट छुड़ावनो. और बनियांने कोई दिन श्रीनाथजीके दरसन किये नाहींसो याकों दरसन हू करावनो और याकों वैष्णव हू कराय देनो. तब यह बिचारीके सूरदासने वा बनियांसों कही, जो तें जनम भरमें कोई दिन दरसन नाहीं कियो है, सो मैं तोकों जानत

हों. और तू वैष्णव है नाहीं, सो तासों मैं तेरी हाट पर नाहीं आवत हों. तू सांची कहि दे, जो तेनें जनम भरमें कोई दिन श्रीनाथजीके दरसन किये हैं. तब यह वचन सुनिके बनियां अपने मनमें बहोत ही खिस्यानो होय गयो, वह बनियां सूरदासजीसों बोल्यो, जो सूरदासजी ! तुम यह बात और काहूके आगे मति कहियो. जो में यासों दरसनकों नहिं आवत हों, जो हाट छोड़ि दरसनको जाऊं तो यहां वैष्णव सोदाकों फिरि जाय, जो औरकी हाटसों लेन लागें, तब मैं खाऊं कहां ते ? और कोऊ मेरे पास ऐसो मनुष्य नाहिं है, जो जा समय दरसनके किंवाड़ खुलें ता समय मोकों आयके खबर करे, जातें मैं बेगिही दौरिके दरसन करि आऊं. तब वा बनियां तें सूरदासने कही, जो मैं जा समय आइके खबरि करुं सो ता समय तू चलेगो ? तब बनियाने कही, जो तुम आइके खबरि करियो, जो मैं चलूंगो. जो मेरे मनमें दरसनकी बहोत है. तब सूरदासजी कहे, जो मैं उत्थापनको समय आऊंगो. सो यह कहिके सूरदासजी तो गये. पाछे जब उत्थापनको समय भयो तब शङ्खनाद भये, तब सूरदासजीने आइके वा बनियांसों कही, जो अब शङ्खनाद भये हैं तासों दरसनको समय है, सो अब चलो. तब वा बनियांने सूरदासजीसों कह्यो, जो या समय गांवके लोग सौदा लेन आवत हैं, सो भोगके किंवाड़ खुलें ता समय तुम मोकों खबरि करियो. तब सूरदासजीने पर्वत ऊपर आइके श्रीनाथजीके दरसन किये, और कीर्तन किये. ता पाछे श्रीनाथजीके भोगके दरसनको समय भयो, तब सूरदासजी परवतसों नीचे उतरिके वा बनियांसों कहे, जो दरसनको समय है, तासों अब तो दरसनकों चलि ! तब वा बनियांने सूरदाससों कह्यो, जो सूरदासजी ! अब तो बनतें गाय आइवेको समय भयो है, तासों मन्दिरमें चलूं तो गाय आइके मेरो सगरो अनाज खाय जांय. तासों अब तुम सेन आरतीके समय जताइयो सो तहां तांई गाय सब अपने - अपने घर जांयगी. तब सूरदासजी फेरि भोगके समय जायके दरसन किये. ता पाछें सन्ध्याके दरसन किये. पाछें सेन आरतीके दरसनको समय भयो तब सूरदासजीने आइके बनियांकों खबरि कीनी, जो चलि अब सेन आरतीके दरसनको समय है. तब वा बनियांने सूरदाससों कही, जो सूरदासजी ! आप तुमकों बहोत श्रम भयो है. परन्तु अब दीया बारिवेको समय है, सो काहेतें, जो अब या समय लक्ष्मी आवत है, तासों दीया न होयतो लक्ष्मी पाछी फिरि जाय. और कोई मेरी हाटतें अन्न चुराय लेय तो मैं कहा करूं ? तासों अब मैं सवारे प्रातःकाल दरसन करि ता पाछे हाट खोलूंगो. तासों मोकों मङ्गलाके समय आइके खबरि करियो. आज मैंने तुमसों बहोत फेरा खवाये. तब सूरदासजी मन्दिरमें आइके श्रीनाथजीके दरसन किये. ता पाछें सेन समय कीर्तन गाये. पाछें प्रातःकाल भयो. तब न्हायके सूरदासजीने आइके वा बनियांसों कही, जो मङ्गलाको समय है, सो अब तो चलि ! तब वा बनियांने कही, जो सूरदासजी ! अब होतो हाट बुहारिके माण्डनी है. तासों बोहनीके

समय कोई गाहक फिरि जायतो सगरो दिन खाली जाय. तासों हाट लगायके सिंगारके दरसनकों चलूंगो. तासों सिंगारके समय कहियो. तब सूरदासजीने मङ्गला आरतीके दरसन किये. पाछें सूरदासजी सिंगारके समय फेरि आये. तब वा बनियांने कही, जो अब ही मैंने आछो काहूकी बोहनी कीनी नाहीं है, और गाय डोलत हैं. तासों अब राजभोगके दरसन अवश्य करूंगो. सो देखो तुम काल्हि तें मेरे लिये बहोत फिरत हो, जो तुम बड़े भगवदीय हो. सो सूरदासजी फेरि श्रीनाथजीके दरसनकों परवत पर आये. तब श्रीनाथजीके सिंगारके दरसन किये कीर्तन किये. ता पाछें राजभोग आरतीको समय भयो, तब सूरदासजीने वा बनियांसों कह्यो, जो अब चलोगे ? तब वा बनियांने कह्यो, जो या समयमें कैसे चलें ? जो अब वैष्णव राजभोगके दरसन करिके नीचे आवेंगे. सो सब या समय सीधा सामग्री लेत हैं. जो मैं बूढो, कब आऊं परवतसों उतरिकें, कैसे बेगि आयो जाय ? और याही बखत बिक्रीको समय है. जो याहीं समय कछू मिले सो मिले. तासों उत्थापनके समय दरसन करूंगो. या प्रकार सूरदासजी वा बनियांके साथ तीन दिन तांई रहे. परन्तु वह बनियां ऐसो लोभी सो दरसनकों नाहीं गयो. ता पाछें चौथे दिन न्हायके सूरदासजी प्रातःकाल मङ्गलाके दरसनकों चले. तब सूरदासजी अपने मनमें बिचारे, जो देखो, या बनियांकों तीन दिन भये, परन्तु दरसनकों नाहीं गयो. तासों आज जो यह न चले तो याकों भय दिखावनो, और दरसनकों करावनो. यह विचारिके सूरदासजी वा बनियांकी पास आयके कह्यो, जो तीन दिन बीति चुके मोकों फिरते, परि तू दरसनकों नाहीं चल्यो. जो आज तो चलि तब वा बनियांने कह्यो, जो कछू बोहनी करि सिंगारके दरसन करूंगो. तब सूरदासजी वह बनियांसों कही, जो अब तो मैं तेरी बात सगरे वैष्णवमें प्रकट करूंगो. जो यह बनियां झूंठो बहोत है, सो कबहू याने श्रीनाथजीको दरसन नाहीं कियो. और यह वैष्णव हू नाहीं है. अब तेरे पास कोई वैष्णव सोदा लेन आवेगो, तो मैं तेरे दोहा, चोपाई पद, कुटिलताके करिके वैष्णवनकों सुनाऊंगो. सो या भांति कहिके भैरव रागमें एक पद गायो -

राग भैरव -

आज काम काल्हि काम परसों काम करना
पहले दिन बोहोत काम विमुख भए चरना ।।१।।

जागत काम सोवत काम ही में पचि मरना ।
छांडि काम सुमरि स्याम 'सूर' पकरि सरना ।।२।।

सो यह पद सूरदासजीनें वा बनियांकों वाही समय करिके सुनायो. सो तब तो वो बनियां अपने मनमें डरप्यो. पाछे सूरदासजीके पांवन परि वा बनियांने बिनती कीनी, जो तुम मेरे दोहा कवित्त कछू बरनन मति करो, और मेरी बात कोईसों प्रगट मति करो. जा मैं आपही तिहारे सङ्ग चलूंगो. पाछे वह बनियां सूरदासजीके सङ्ग आयो. तब मङ्गलाके किंवाड़ खुले, तब सूरदासजीनें श्रीनाथजीसों कह्यो, जो महाराज ! यह बनियां दैवी जीव है, सो तासों अब याके मनकों आकर्षन करिके याको उद्धार करो. सो काहेंते ? जो यह तिहारी ध्वजाके नीचे रहत है. तब श्रीनाथजी कहें, जो मेरे पास रहत है, सो कहा मोकों जानत है ? तुम सब भगवदीयनकी कृपा होय सो तबही मोकों पावे.

भावप्रकाश : सो काहेते ? जा गङ्गा यमुनामें अनेक जीव हैं सा कहा कृतार्थ हैं ? जा माखी मच्छर चेंटी आदि श्रीप्रभुके बहोत जीव हैं, सो कहा कृतार्थ हैं ? जो भगवदीयनको सङ्ग होय तबही कृतार्थ होय. सों तबही श्रीप्रभुनकों पावे. भगवदीयनके सङ्गसों दासभाव होय तब ही कृपा होय.

पाछे श्रीनाथजीने वा बनियांकों ऐसो दरसन दियो, सो वाको मन हरि लीनो. सो जब मङ्गलाके दरसन होय चुके तब वा बनियांने सूरदासजीके चरन पकरिके बिनती कीनी, जो महाराज ! मेरो जनम सगरो वृथा गयो, द्रव्य जोखे में. मेरे पास द्रव्य बहोत हैं, सो अब तुम चाहो तहां या द्रव्यको खरच करो. और मोकों श्रीगुसांईजीको सेवक करायके वैष्णव करो. तब सूरदासजीने या बनियां सो कह्यो, जो तू न्हायके काहूकों छूइयो मति, यहां आय बैठियो. सो इतनेमें श्रीगुसांईजी आप सिंगार करि चुके, तब सूरदासजीनें श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! या बनियांकों सरन लीजिये. तब श्रीगुसांईजी आप श्रीमुखसों सूरदासजीसों कहे, जो सूरदासजी ! तुमने भलो साठि बरसको बूढ़ो बेल नाथ्यो. तुम बिना या बनियांको सगरो जनम योंही जातो. पाछे श्रीगुसांईजी आप वा बनियांको बुलायकें श्रीनाथजीके सन्निधान बैठायके नाम ब्रह्मसम्बन्ध करवायो. सो वा बनियांकी बुद्धि निरमल होय गई. सो तब सगरे दरसन नित्य नेमसों

करन लाग्यो. और वा बनियांने श्रीगुसांईजीकों बहोत भेट करी. और श्रीनाथजीके वागा वस्त्र सामग्री कराय आभूषण कराये, और अङ्गीकार कराये. ता पाछे एक दिन वा बनियांनें सूरदासजीसों कही, जो सूरदासजी ! तिहारी कृपातें मैं श्रीगोवर्द्धनजीके दरसन पायो, और वैष्णव भयो. तासों अब ऐसी कृपा करो, जो याही जनममें मेरो अङ्गीकार प्रभु करें, और मोकों संसारको दुःख सुख बाधा न करे. तब सूरदासजीने एक पद करिके वा बनियांकों सिखायो -

राग बिलावल -
कृष्ण सुमिर तन पावन कीजे
जोलों जग सुपनासों जीजे ।।१।।

अवधि उसास गिने सब तेरे ।
सो बीतत भये आवत नेरे ।।२।।

जो यह सपनो नाहिं बिचारे ।
कबहू न जनम विषय लगि हारे ।।३।।

गहे विवेक बीज ले बोवे ।
कबहू न जठर अग्निमें सोवे ।।४।।

बार बार तोकों समुझावे ।
जो छिन जायसो बोहोर नहीं आवे।।५।।

ठगिनी विषय ठगोरी लाई ।
घटिका घटत छिन ही छिन जाई ।।६।।

गिनत ही गिनत अवधि नियरानी ।
छांडि चल्यो निधि भई बिरानी ।।७।।

होत कहा अबके पछ्ताने ।
तरुवर पत्र न मिले पुराने ।।८।।

पवन उडे सो बहुरि न आवे ।
कर्ता और अनेक बनावे ।।९।।

जल थल पसु पंछी सुकर क्रमि ।
मानुष तन पायो सब जुग भ्रमि ।।१०।।

सो तन खोवे रति वित्त मनि ।
काच गह्यो बिसरी चिन्तामनि ।।११।।

कबहू नीके नाथ न गायो ।

एक मन दसहू दिस धायो ।।१२।।

मन हि मन माया अवगाहत ।
नायक भयो तिहिं पुर चाहत ।।१३।।

स्वर्ग रसातल भुव रजधानी ।
तोऊ तृपत भयो न अभिमानी ।।१४।।

ऐसे ही करत अवधि सब बीती ।
गह्यो न ज्ञान रह्यो यह रीति ।।१५।।

कबहू सज्जन मिलि करत बडाई ।
कबहूक ललना ललित लजाई ।।१६।।

कबहूक हय हाथी रथ आसन ।
कबहूक दलका सुखद सुवासन ।।१७।।

कबहूक चंवर छत्र सिर ढारे ।
कबहू सुभट पसुन चढि मारे ।।१८।।

कबहू तोरन छत्र बनावे ।
कबहू मद गज जूथ लगावे ।।१६।।

जोवत द्वार दूती सब ठाढी ।
त्यों त्यों तृष्णा सतगुनी बाढी ।।२०।।

दिव्य बसन फलफूल सुवासी ।
नव जोवन अबला सुखरासी ।।२१।।

द्वार कपाट सहस एक लागे ।
सुभट पहरुवा चहुं दिस जागे ।।२२।।

रमनी रमत न रजनी जानी ।
माया मद पियो अभिमानी ।।२३।।

सुत वित वनिता हेत लगायो ।
तब चेत्यो जब काल चेतायो ।।२४।।

जूंठो नाटक सङ्ग न साथी ।
नोवत द्वार हय गज हाथी ।।२५।।

भूप छिनकमें भयो भिखारी ।
क्यों हृदै न सूल न सहे बिकारी ।।२६।।

भयो अनाथ सनाथ न बांध्यो ।
तिर्यक सूर - सर सन्मुख साध्यो ।।२७।।

मनुष्य देह धरि कर्म कमायो ।
ते तिरछे दुःख द्वारे पायो ।।२८।।

जिहि तन काज जीव वध कीने ।
रसना - रस अमि षट - रस लीने ।।२९।।

सो तन छुटत प्रेतकरि डार्यो ।
प्रेत प्रेत कहि नगर निकार्यो ।।३०।।

हिंसा करि पालन करी जाकी ।
विष्टा करम भस्म भई ताकी ।।३१।।

भोग अष्ट अरु वीस भयानक ।

हरिपद विमुख विषय रस पावक ।।३२।।

जागि जागि रे यहांको तेरो ।
माया सुपन कहत सब मेरो ।।३३।।

कृष्ण बिना तोहि कौन छुड़ावे ।
सो करुणामय बिरद बुलावे ।।३४।।

आन देवकौ नहीं भरोसो ।
बातन खटरस लाख परोसो ।।३५।।

जीवन गयो तृषितकी नांई ।
मृग - तृष्णा कबहू न अघाई ।।३६।।

ऐसे आन देव सुखदायक ।
हरि बिनु कौन छुड़ावन लायक ।।३७।।

धर्मराज कहि सुनि कृतहारी ।
तू विषयन - रति सूरति बिसारी ।।३८।।

गर्भ अगिन रक्षा जिहिं कीनी ।
सङ्कट मेटि अभयता दीनी ।।३९।।

हस्त चरन लोचन नासा मुख ।
रुधिर बून्दते लह्यो ऐसो सुख ।।४०।।

सो सुख तू सपने नहीं जान्यो ।
प्राननाथ कहि निकट न आन्यो ।।४१।।

कित ये सूल सहे अपराधी ।
निगम सिख एको नहीं साधी ।।४२।।

कोटिन बार मनुष्य तन पायो ।
हरि - पथ छांड अपथको धायो ।।४३।।

समय गए असमय पछितैये ।
मानुष जन्म बहुर नहीं पैये ।।४४।।

सूजत स्वामी पीठ दे आगे ।
पुनि पुरुषारथ काहे लागे ।।४५।।

पारस पाइ जलधिमें बोरे ।
पुनि गुन सुनत कपार हि फोरे ।।४६।।

चिन्तामणि कोडी लग दीनी ।
सुनि परमित करुणा अति कीनी ।।४७।।

पाइ कल्पतरु मूल खनाबे ।
सो तरु पुनि कैसें सो पावें ।।४८।।

मधु भाजन पूरन विधि दीनो ।
सो तू छांडि हलाहल कीनो ।।४९।।

कामदेनु तजि अज हि बिसाहे ।
गज - बल छांडि स्याम - बल चाहे ।।५०।।

यह नर - देह स्याम बिनु खोई
कपि कोतिक लों बांधिबिगोई ।।५१।।

काहेन करम कियो तू ऐसो ।

सुक सन सनक सनन्दन जैसो ।।५२।।

सुर नर मुनि असुर पुनि देवक ।
हरिपद भजि सब तेरे सेवक ।।५३।।

परदक्षणा दे सीस नंवावे ।
मनसिज तोइ न परसन आवे ।।५४।।

जाकों भजत ऐसो सुख पैये ।
सुनि सठ सो कैसे बिसरैये ।।५५।

अगनित पतित नाम - निस्तारी ।
जनम करम सन्ताप निवारी ।।५६।।

निरभय होइ भक्ति निधि पाई ।
कबहू काल व्याल नहीं खाई ।।५७।।

सर्वसु जीवन कृष्णनाम पद ।
भवजल व्याधि उपाधि परम गद ।।५८।।

श्रीभागवत परम हितकारी ।
द्वारे रटत हरि ‘सूर’ भिखारी ।।५९।।

परम पतित सरनाई लीजे ।
पदरज दान अभयता दीजे ।।६०।।

तब वा बनियांकों दृढ़ भक्ति भई. लौकिककी वासना सब दूरि भई. सो ज्ञान वैराग्य सर्वोपरि भक्ति भई. सो श्रीनाथजीके चरण कमलमें दृढ़ आसक्ति और स्वरूपानन्दको अनुभव भयो. तब रसमें मगन होय गयो. सो या प्रकार सूरदासजीके सङ्ग तें ऐसो लोभी बनियां हू कृतार्थ भयो. सो वे सूरदासजी ऐसे भगवदीय हते.

भावप्रकाश : सो काहेतें ? जो मूलमें दैवी जीव है. सो श्रीललिताजीकी सखी है. सो लीलामें याको नाम ‘विरजा’ है. सो सूरदासको सङ्ग पायके लीलाको अनुभव भयो. तातें भगवदीयनको सङ्ग सर्वोपरि है.

वार्ताप्रसङ्ग ९ : और एक समय श्रीगोकुल तें परमानन्द आदि सब वैष्णव दस पन्द्रह सूरदासजीसों मिलिवेकों और श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों आये. सो सेन आरतीके दरसन करि सूरदासजी पास आये. तब सूसरदासजीने सगरे वैष्णवनको बहोत आदर सन्मान कियो, और ताही समय कीर्तन गाये.

राग कान्हरो -
हरिजन सङ्ग छिनक जो होई
कोटि स्वर्ग सुख कोटि मुक्ति सुख ता सम लहे न कोई ।।१।।

पूरे भाग्य पुन्य सञ्चित कल कृष्ण कृपा व्है जाके ।
'सूरदास' हरिजन पदमहिमा कहत भागवत ताके ।।२।।

राग कान्हरो -
प्रभुभजन पर प्रसन्न जब होई
तब वैष्णवजन दर्शन पाप रहे नहीं कोई ।।१।।

हरि - लीला आवेस होई मन सकल वासना नासे ।
'सूर' यह निश्चै बिचार करि हरि स्वरूप जब भासे ।।२।।

राग कान्हरो -
हरिके जनकी अति ठकुराई
महाराज ऋषिराज देवमुनि देखत रहे लजाई ।।१।।

दृढ विश्वास कियो सिंहासन ता पर बैठे भूप ।
हरि - जस विमल छत्र सिर सोभित राजत परम अनूप ।।२।।

दृढ विश्वास राज तहिको ताकौ लोग बडो उच्छाह ।
काम क्रोध मद मोह लोभ मिलि भये चोर तें साह ।।३।।

हरि पद पङ्कज पियो प्रेमरस ताहिके सङ्ग राते ।
मन्त्री ज्ञान औसर नही पावत कहत बात सङ्काते ।।४।।

अर्थ काम दोऊ रहे दुरि दुरि धर्म मोक्ष सिर नावे ।।
विनय विवेक विचित्र पौरिया समय न कबहू पावे ।।५।।

अष्ट महासिद्धि द्वारे ठाढ़ी कर जोरे उर लीने ।
छडिदार वैराग्य विनोदी झिरकी बाहिर कीने ।।६।।

माया काल कछू नहीं व्यापे जो रस रीति यह जाने ।
'सूरदास' नर तन पाये गुरु प्रसाद पहिचाने ।।७।।

राग हमीर -
जा दिन सन्त पाहुने आवत
तीरथ कोटि स्नान करन फल दरसन ही तें पावत ।।१।।

प्रफुल्लित वदन रहत निसदिन प्रति चरनकमल चित्त लावत ।
मनक्रमबचन और नहीं जानत सुमिरत और सुमिरावत ।।२।।

मिथ्यावाद उपाधि रहित व्है विमल विमल जस गाबत ।
'सूरदास' प्रीति करि उनसों जो हरि सूरत करावत ।।३।।

सो या प्रकार सूरदासजीने अनेक पद वैष्णवनकों सुनाये. तब सब वैष्णव बहोत प्रसन्न भये. पाछें सूरदासजीने उन वैष्णवनसों कह्यो, जो कछू मो पर कृपा करिके आज्ञा करिये. तब सब वैष्णवनने सूरदासजीसों कह्यो, जो ज्ञान, योग, परमतत्त्व और श्रीठाकुरजीको प्रेम, स्नहको स्वरूप सुनाओ. तब सूरदासजीने यह कीर्तन सुनायो. सो पद -

राग बिहागरो -
जोगसों कोऊ नहीं हरि पाए
निज आज्ञा तप कियो विधाता कब रसरास खिलाए ।।१।।

जोग जुगति सङ्कर आराधत परमतत्व चित्त लाए ।
भुज धरि ग्रीव कबहि नन्दनन्दन हिलमिल कल सुर गाए ।।२।।

वगदावल महारिषि कबहु तृन छाया न कराए ।
बरखत बरखत दुःखी जानि नन्दनन्दन कब गिरिवर कर छाये ।।३।।

अति तपपुञ्ज विप्र दुर्वासा दुर्वा तृन नित खाए ।
चक्र सुदर्शन तपत महामुनि कब मुख अनल समाए ।।४।।

बहुत तप कियो मार्कण्डे मुनि आय सिन्धु भरमाये ।
सत कल्प बीतत भये तब हरि वरुन फांस मुसकाए ।।५।।

भक्त विरह कातर करुनामय वेद निरन्तर गाए ।
को है जोग सुनत यहां उधो 'सूर' स्याम मन भाए ।।६।।

सो या भांति अनेक कीर्तन करि वैष्णवनकों समुझाये. तब सगरे वैष्णव प्रसन्न होयकें कहे, जो सूरदासजीके ऊपर बड़ी भगवत् कृपा है. ता पाछे सवारे भये सगरे वैष्णवनने श्रीनाथजीके दरसन किये. ता पाछे सूरदासजी सो विदा होयके गोकुल आये. सो ये सूरदासजी श्रीआचार्यजीके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते.

वार्ताप्रसङ्ग १० : सो या प्रकार सूरदासजीने बहोत दिन तांई भगवद् सेवा कीनी. ता पाछें जानें, जे भगवद् इच्छा मोकों बुलायवेकी है.

भावप्रकाश : सो काहेते ? जो प्रभुनकी यह रीति है, जो जब वैकुण्ठसों भूमि पर प्रगट होयवेकी इच्छा करत हैं, तब वैकुण्ठवासी जो भक्त हैं, सो उनकों पहले भूमि पर प्रगट करत है. ता पाछें आपु श्रीभगवान प्रगट होय भक्तने सङ्ग लीला करत हैं. पाछें अपुने भक्तनकों या जगतसों तिरोधान कराय ता पाछें वैकुण्ठमें लीला करत हैं. सो जैसे नन्द, जसोदा, गोपीजन, सखा, वसुदेव, देवकी, यादव, सब प्रकट ही पहले किये. ता पाछे आप प्रगट होयकें लीला भूमि पर करिकै पाछे जादवनकूं मूसल द्वारा अन्तर्धान करि लौकिक लीला किये. सो श्रीनन्दरायजी, श्रीजसोदाजी, गोपीजनकों अन्तर्धान लौकिक लीला नाहीं दिखाये. सो तैसेही श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी श्रीपूर्णपुरुषोत्तमको प्राकट्य है. सो लीलासम्बन्धी वैष्णव प्रगट किये. अब श्रीआचार्यजी आप अन्तधान लीला किये. और श्रीगुसांईजीकों करनो है. सो पहले भगवदीयनकूं नित्यलीलामें स्थापन करके आप पधारेंगे. सो भगवदीयकों (अपनी) लौकिक अन्तर्धानलीला दिखावत नाहीं. सो जैसे चाचा हरिवंशजीसों कहे, जो तुम गुजरात जावो. सो या प्रकार गुजरात पठायके अन्तर्धान लीला किये.

सूरदासजीकूं नित्यलीलामें बुलायवेकी इच्छा श्रीगोवर्द्धनधरकी है.

सो तब सूरदासजी मनमें विचारे, जो मैं तो अपने मनमें सवा लाख कीर्तन प्रगट करिवेको सङ्कल्प कियो है, सो तामेतें कीर्तन तो प्रगट भये हैं. सो भगवद् इच्छा तें पचीस हजार कीर्तन और प्रकट करने. ता पाछें यह देह छोड़िके अन्तर्धान होय जानो. सो या प्रकार सूरदासजी अपने मनमें विचार करत हते. वाही समय श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु प्रगट होयके दरसन देके कह्यो, जा सूरदासजी !तुमने जो सवा लाख कीर्तनको मनमें मनोरथ कियो है, सो तो पूरन होय चुक्यो है, जो पचीस हजार कीर्तन मैंने पूरन करि दिये हैं. तासों तुम अपने कीर्तननके चोपडा देखो. तब सूरदासजीने एक वैष्णवसों कह्यो जो तुम मेरे कीर्तनके चोपडा देखो. सो तब वह वैष्णव देखे तो सूरदासजीके कीर्तनके बीच बीचमें 'सूरश्याम' को भोग (छाप) है. सो ऐसे कीर्तन सगरी लीलामें हैं. सो पचीस हजार हैं. सो बात वा वैष्णवने सूरदाससों कही जो काल्हि तक तो 'सूरश्याम' के कीर्तन हते नाहीं, और आज सगरी लीलाके बीच बीचमें हैं. तब सूरदासजी श्रीनाथजीकों दण्डवत् करिके कहे, जो अब मेरो मनोरथ आपकी कृपा तें पूरन भयो. तासों अब आपु आज्ञा देउ सो करों. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे जो अब तुम मेरी लीलामें आयके लीलारसरको अनुभव करो. सो यह आज्ञा करिके श्रीनाथजी अन्तर्धान भये. तब सूरदासजी श्रीगोवर्द्धननाथजीकों दण्डवत् करिके मनमें बहोत प्रसन्न भये. परन्तु पास दोय वैष्णव साधारन हते, सो जाने नाहीं, जो श्रीठाकुरजी आपु सूरदासजीके पास पधारे, और कहा आज्ञा दीनी. सो काहेतें, जो ठाकुरजीके स्वरूपको अनुभव भगवदीय बिना और काहूकों नाहीं.

वार्ताप्रसङ्ग ११ : सो तब सूरदासजी अपने मनमें यह बिचार करिके परासोली आये. सो तहां अखण्ड रासलीला ब्रह्मरात्र करि भगवानने रासपञ्चाध्याईकी सगरी लीला उहां करी है. सो जहां उडुराज चन्द्रमा प्रगट्यो है. सो तहां चन्द्रसरोवर है ऐसे अलौकिक स्थलमें आये.

भावप्रकाश : जो ये अष्टसखा हैं. सो गिरिराजमें आठ द्वार हैं. सो तहांके ये अधिकारी हैं. तासों आठों सखा अपने - अपने द्वार पर श्रीगिरिराजमें

ही देह छोडी है. और अलौकिक देह धरिके सदा सर्वदा लीलामें बिराजमान हैं. १. सो गोविन्दकुण्ड ऊपर एक द्वार है. ताके सन्मुख परासोली चन्द्रसरोवर है, तहां सूरदासजी सेवामें मुखिया हैं. २. अप्सराकुण्ड ऊपर एक द्वार है, तहां सेवामें छीतस्वामी मुखिया हैं. ३. सुरभीकुण्ड ऊपर द्वार है, तहां पर परमानन्ददास सेवामें मुखिया हैं. ४. और गोविन्ददासस्वामीकी कदमखण्डी पास एक द्वार है, तहां गोविन्दस्वामी मुखिया हैं. ५. और रुद्रकुण्डके पास एक द्वार है तहां चतुर्भुजदास सेवामें मुखिया हैं. ६. बिलछू सन्मुख एक बारी है, सो ता मारग होयके रासलीलाको पधारत हैं, सो तहांकी सेवाके कृष्णदास अधिकारी मुखिया हैं. ७. और मानसी गङ्गाके पास एक द्वार है सो तहांकी सेवामें नन्ददास मुखिया हैं. ८. और अन्योरके सन्मुख एक द्वार है, सो तहां जमुनावतो एक गाम है, सो ता द्वारके मुखिया कुम्भनदास हैं. या प्रकार श्रीगिरिराजमें नित्य निकुञ्ज - लीला है. सो ता निकुञ्जलीलाके आठ द्वार हैं तहांके आठ सखा, सखी रूप हैं, सो सेवामें सदा तत्पर हैं. तासों सूरदासको ठिकानो परासोली है.

सो श्रीगोवर्द्धननाथजीकी ध्वजाकों साष्टाङ्ग दण्डवत् करिके ध्वजाके सन्मुख मुख करिके सूरदासजी सोये, परन्तु मनमें यह आई, जो श्रीआचार्यजी और श्रीगुसांईजी आपु मेरे ऊपर बड़ी कृपा करी है. श्रीगोवर्द्धननाथजीकी लीलाको याही देहसों अनुभव कराये. परन्तु या समय एक बार श्रीगुसांईजी आपु मेरे ऊपर कृपा करिके दरसन देंय, तो मेरे बड़े भाग्य हैं. श्रीगुसांईजीको नाम कृपासिन्धु हैं, सो भक्तनके मनोरथ पूरन कर्त्ता हैं, सो पूरन करेंगे. सो या प्रकार सूरदासजी श्रीगुसांईजीके स्वरूपको चिन्तवन करत हते. और यहां श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोवर्द्धननाथजीको सिंगार करत हते. सो वा दिन श्रीगुसांईजीने सूरदासकों जगमोहनमें बैठे कीर्तन न देखे. सो ता समय श्रीगुसांईजी आपु सेवकनसों पूछ, जो सूरदासजी कहां है ? तब एक वैष्णवनें बिनती कीनी जो महाराज ! सूरदासजी तो आज मङ्गला आरतीके दरसन करिके परासोलीमें सगरे सेवकनसों भगवत् - स्मरण करिके गये हैं. तब श्रीगुसांईजी आप जाने जो भगवद् इच्छा सूरदासजीको बुलायवेकी भई हैं, तासों आज सूरदासजी परासोलीकों गये हैं. सो तब श्रीगुसांईजी आप श्रीमुखसों सगरे वैष्णवनसों यह आज्ञा किये जो ''पुष्टिमारग को जहाज'' जात है सो जाकों कछू लेनो होय सो लेऊ, और उहां जायके सूरदासजीकों देखो. सो या भांतिसों जो राजभोग आरती उपरान्त रहत हैं तो मैं हू आवत हों. सो तब सगरे वैष्णव सूरदासजीके पास आये.

भावप्रकाश : सो यहां 'जहाज' कहिवेके आसय यह है, जो जैसे कोई जहाजमें काहू व्यौपारीने व्यौपार अर्थ अनेक वस्तु जहाजमें भरी है, सो तैसे

ही सूरदासजीके हृदयमें अलौकिक वस्तु नाना प्रकारकी भरी हैं.

ता समय सूरदासजीने श्रीगुसांईजीके और श्रीगोवर्द्धननाथजीके स्वरूपमें मन लगाईके बोलिवो छोड़ दियो. सो तब श्रीगुसांईजीने पन्द्रह ब्रजवासी दोराये. जो घड़ी - घड़ीके हमसों सूरदासजीके समाचार आय कहियो. तब वे ब्रजवासी आयके श्रीगुसांईजीसों कहे, जो महाराज ! अब तो सूरदासजी काहूसों बोलत नाहीं हैं. सो ऐसे करत - करत राजभोग आरतीको समय भयो. सो राजभोग आरतीको समय भयो तब राजभोग आरती श्रीगोवर्द्धननाथजीकी करिके, श्रीगुसांईजी आपु परोसालीमें जहां सूरदासजी हते तहां पधारे. तब श्रीगुसांईजीके सङ्ग रामदास, कुम्भनदास, गोविन्दस्वामी, चतुर्भजदास, आदि सगरे वैष्णव सूरदासजीके पास आये. तब देखो तो सूरदासजी अचेत होय रहे है, कछू देहको अनुसन्धान नाहीं है. सो श्रीगुसांईजी आप सूरदासजीको हाथ पकरिके कहे जो सूर दासजी ! कैसे हो ? तब सूरदासजी तत्काल उठिके दण्डवत् करिके कहे जो बावा ! आये ? जो मैं आपकी बाट ही देखत हतो. या समय आपने बड़ी कृपा करिके दरसन दियो. जो महाराज ! मैं आपके स्वरूपको ही चिन्तन करत हतो. ताही समय सूरदासजीने यह कीर्तन सारङ्ग रागमें गायो सो पद -

राग सारङ्ग -

देखो देखो हरि जू कौ एक सुभाव
अति गम्भीर उदार उदधि प्रभु ज्ञानि - सिरोमनि राव ।।१।।

राई जितनी सेवाकौ फल मानत मेरु समान ।
समझ दास अपराध सिन्धु सम बून्द न एकौ मान ।।२।।

वदन प्रसन्न कमल पद सन्मुख देखत हो हरि जैसे ।
बिमुख भए कृपा या मुखकी जब देखो तब तैसे ।।३।।

भक्त विरह कातर करुनामय डोलत पाछे लागे ।
‘सूरदास’ ऐसे प्रभुकों क्यों दीजे पीठ अभागे ।।४।।

यह पद सूरदासने श्रीगुसांईजीके आगे गायो. तब श्रीगुसांईजी आपु अपने श्रीमुखसों कहे, जो या प्रकार श्रीठाकुरजी आपु अपने भगवदीयनकों दीनताको दान करत हैं, सो ताकों पूरन कृपा जानिये. सो दैन्यतारसके पात्र यही है. सो ता समय सगरे वैष्णव श्रीगुसांईजीके पास ठाड़े हते. उनमें ते चतुर्भुजदासने कह्यो, जो सूरदासजी परम भगवदीय हैं. और सूरदासजीने श्रीठाकुरजीके लक्षावधि पद किये हैं. परन्तु सूरदासजीनें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको जस बरनन नाहीं कियो. यह सुनिके सूरदासजी कहे जो मैं तो सगरो जस श्रीआचार्यजीको ही बरनन कियो है, जो मैं कछु न्यारो देखतो तो न्यारो करतो. परि तैंने मोसों पूछी है, सो मैं तेरे पास कहत हों, सो या कीर्तनके अनुसार सगरे कीर्तन जानियो. सो पद -

राग बिहागरो -
भरोसो दृढ इन चरनन केरौ
श्रीवल्लभ नख चन्द्र छटा बिनु सब जगमांझ अंधेरो ।।१।।

साधन और नहीं या कलिमें जासों होत निवेरो ।।
‘सूर’ कहा कहे द्विविध आंधरो बिना मोलको चेरो ।।२।।

भावप्रकाश : सो या कीर्तनेमें सूरदासजीने अपने हृदयको भाव खोल दियो. जो भरोसो, सो जीवकों विश्वास, दृढ़ चरनके सरनको. सो मोकों (सूरदासकों) दृढ़ता श्रीआचार्यजीके चरननकी है. सो श्रीआचार्यजीके नख जो दसों चरणारविन्दके अलौकिक मणिरूप नखको प्रकास, सो ता बिना सगरे

त्रिलोकीमें अंधारो दीखे है. सो तब भरोसो दृढ़ जानिये. सो या कलिमें श्रीआचार्यजीके चरणके आश्रय बिना और उपाय फल सिद्धिको नाहीं है. तासोंमें न्यारो कहा वर्णन करों ? जो श्रीगोवर्द्धनधरमें और श्रीआचार्यजीके स्वरूपमें भिन्न, जो द्विविध तामें तो मैं अंध हों. सो जैसे श्रीकृष्ण और स्वामिनीजीमें न्यारो स्वरूप जाने सो अज्ञानी. सो तैंसे श्रीगोवद्धनधर और श्रीआचार्यजी हैं. सो तिनकों मैं बिना मोलको चेरो हों. सो बिना मोल कहा ? जो केवल भाव करिके. जैसें रासपञ्चाध्याईमें ब्रजभक्त गोपिकागीतमें कहे हैं, जो 'अशुल्क दासिका' सो बिना मोलकी दासी, अलौकिक, जाको मोल नाहीं. सो काहे ते ? जो भक्ति करिके प्रभुनसों (अर्थ) चाहै, सो सगरे, मोलके दास कहिये. उनकी भक्ति श्रेष्ठ नाहीं. तासों निष्काम भक्ति सर्वोपरि है. सो ताको अमोलिक दास कहिये. ता भावके प्रभु बस होय. सो जैसें पञ्चाध्याईमें श्रीभगवान् कहे हैं, जो तिहारो भजन ऐसो है, जो मोसों पलटो दियो न जाय. जो मैं सदा तिहारो रिनियां रहूंगो. सो यह अमोलिक दासके लक्षन हैं. जो यह पद गायो. सो यह पद कैसो है ? जो या कीर्तनके भावतें, (पाठतें) सवा लाख कीर्तन सूरदासजीने किये है, सो सबको पाठ होय.

तब चतुर्भुजदास प्रसन्न भये. पाछें सगरे वैष्णव और श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो सूरदासके हृदयको महा अलौकिक भाव है, तासों श्रीआचार्यजी आपु सूरदासजीकों 'सागर' कहते. जैसे समुद्र अगाध है, तैसे सूरदासजीको हृदय अगाध है. सो तब चतुर्भजदास कहे, जो सूरदासजी ! तुम बिना अलौकिक भाव कौन दिखावे ? जो अब थोरेमें श्रीआचार्यजीको यह पुष्टिभक्तिमारग है, ताको स्वरूप सुनावो. सो कौन प्रकारसों पुष्टिमारगके रसको अनुभव करिये. तब वा समय सूरदासजीने यह पद गायो. सो पद -

राग सारङ्ग -
भजि सखी भाव - भाविक देव
कोटि साधन करो कोऊ तोऊ न माने सेव ।।१।।

धुम्रकेतु कुमार मांन्यो कौन मारग रीति ।
पुरुष तें त्रिय भाव उपन्यो सबै उलटि रीति ।।२।।

बसन भूषन पलटि पहेरे भावसों सञ्जोई ।
उलट मुद्रा दई अङ्कन बरन सूधे होई ।।३।।

वेदविधिको नेम नहीं जहां प्रीतिकी पहिचानि ।
व्रजबधू बस किये मोहन 'सूर' चतुर सुजान ।।४।।

सो पद सूरदासजीने सगरे वैष्णवनकों सुनायो.

भावप्रकाश : सो या पदमें यह जताये, जो गोपीजनके भावसों जो प्रभुकों भजे. सो तिनके भाविक जो श्रीगोवर्द्धनधर, सो तिनकों गोपिनके भाव करि सखी भावसों भजिये. कुञ्जलीलामें सखीजनकों अधिकार है. तासों (यहां) सखी कहे. और कोटि साधन वेदके करो, परन्तु एक हू सेवा नाहीं मानत हैं. ताको दृष्टान्त जो सोलह हजार अग्निकुमारिका ऋचा हैं. 'धूम्र - केतु' ऐसी जो अग्नि ताके पुत्र जो सोलह हजार ऋषि, सो वे रामचन्द्रजीके स्वरूप ऊपर मोहित होई दण्डकारण्यमें कहे, जो हमसों बिहार करो. तब उनसों श्रीरामचन्द्रजी यह आज्ञा किये, जो ब्रजमें तुम स्त्री होइ प्रगटोगी तब तिहारो मनोरथ पूरन होयगो. तासों स्त्रीकों वेद कर्ममें अधिकार नाहीं है. और श्रीपूर्णपुरुषोत्तमकी लीलामें मुख्य स्त्रीभावको अधिकार है. यह भक्ति मारगकी वेदसों उलटी रीत है. जैसे रास पञ्चाध्याईमें ब्रजभक्त उलटे आभूषण वस्त्र धारन करे, सो लोकमें उनसों 'बाबरो' कहें, सो स्नेहमें सर्वोपरि कहिये. जेसे जा छापमें उलटे अक्षर होंय, सो सरीरमें सूधे आछे अक्षर होय, तैसे या जगतमें अज्ञानी (और) प्रभुकी लीलामें चतुर होय सो प्रपञ्च भूले, सो ताको प्रेम कहिये. मुख्य भक्तिरसमें वेदविधिको नेम नाहीं है. तासों ऐसो जो प्रेम होय सो श्रीठाकुरजीकों बस करे, जैसे गोपीजनने श्रीठाकुरजी वस किये. सो श्रीठाकुरजी कैसें हैं, जो सब ही कों मोहि डारें. और सूर है, सो काहसों जीते जाय नाहीं. और वेही चतुर सिरोमणि हैं, सो काहूके बस होय नाहीं तोऊ, प्रेमके वस हैं. सबकू भूलि जाय. यह पुष्टिमारगकी भक्ति और पुष्टिमारगको स्वरूप है. सो या भान्तिसों सूरदासजी कहे.

सो तब चतुर्भुजदास आदि सगरे वैष्णव सूरदासजीकों धन्य - धन्य कहे, जो इनके ऊपर बड़ी भगवत् कृपा है, तब सूरदासजी चुप होय रहे. तब श्रीगुसांईजी आप सूरदासजीसों पूछ्यो, जो सूरदासजी ! अब या समय चित्तकी वृत्ति कहां है ? तब वाही समय सूरदासजीने ! एक पद गायो सो पद -

राग सारङ्ग -
बलि हौं कुंवरि राधिका नन्दसुवन जासों रति मानी
वे अतिचतुर चतुरसिरोमनी प्रीति करी कैसे रहे छानी ।।१।।

वे जो धरत तन कनक पीत पट सो तो सब तेरी गति ठानी ।
तें पुनि स्याम सहज यह सोभा अम्बर मिस अपने उर आनी ।।२।।

पुलकित अङ्ग अब ही व्है आयो निरखि सुभग निज देह सयानी ।
'सूर' सुजान सखीके बुझे प्रेम प्रकास भयो विहंसानी ।।३।।

पाछें दूसरो यह पद गायो -

राग बिहागरो -
खञ्जन नैन रूप रस माते
अतिसै चारू चपल अनियारे पल पिंजरा न समाते ।
चलि - चलि जात निकट श्रवनवके उलट फिरत ताटंक फंदाते ।

‘सूरदास’ अंजन गुन अटके नांतर अब उडि जाते।।

सो यह पद सूरदासजीने गायो. पाछें सूरदासजी जुगल स्वरूपको ध्यान करिके यह लौकिक सरीर छोड़ि लीलामें जाय प्राप्त भये. ता पाछे श्रीगुसांईजी आप तो गोपालपुर पधारे. तब सगरे वैष्णवनने मिलिके सूरदासजीकी देहको अग्नि संस्कार कियो. ता पाछें सगरे वैष्णव श्रीगुसांईजीके पास आये.

भावप्रकाश : सो इन सूरदासजीके चारि नाम हैं. श्रीआचार्यजी आपतो ‘सूर’ कहते. जैसे सूर होय सो रणमेंसों पाछो पांव नहिं देय, जो सबसों आगे चले. तैसेई सूरदासजीकी भक्ति दिन - दिन चढ़ती दसा भई. तासों श्रीआचार्यजी आप ‘सूर’ कहते. और श्रीगुसांईजी आप ‘सूरदास’ कहते. सो दासभावमें कबहू घटे नाहीं. ज्यों - ज्यों अनुभव अधिक भयो, त्यों - त्यों ‘सूरदासजी’ को दीनता अधिक भई सो सूरदासजीकों कबहू अहङ्कार मद नाही भयो. सो ‘सूरदास’ इनको नाम कहे. और तीसरो, इनको नाम ‘सूरजदास’ है. जो स्वामिनीजीके ७ हजार पद सूरदासजीने किये हैं, तामें अलौकिक भाव वर्णन किये हैं. तासों श्रीस्वामिनीजी कहते जो ये ‘सूरज’ हैं. जैसे सूरजसों जगतमें प्रकास होय, सो या प्रकार स्वरूपको प्रकास कियो सो जब श्रीस्वामिनीजीने ‘सूरजदास’ नाम धर्यो, तब सूरदासजीने बहोत कीर्तननमें ‘सूरज’ भोग धरे. और श्रीगोवर्द्धननाथजीने पचीस हजार कीर्तन आपु सूरदासजीकों करि दिये. तामें ‘सूरश्याम’ नाम धरे. सो या प्रकार सूरदासजीके चारि नाम प्रकट भये. सो सूरदासजीके कीर्तनमें चारों ‘भोग’ कहे हैं.

या प्रकार सूरदासजी मानसी सेवामें सदा मगन रहते. तातें इनके माथे श्रीआचार्यजीने भगवत् सेवा नाहीं पधराये. सो काहेतें ? जो सूरदासजीकों मानसी सेवामें फल रूप अनुभव है. सो ये सदा लीलारसमें मगन रहत हैं. सो सूरदासजीकी वार्तामें यह सर्वोपरि सिद्धान्त है, जो दैन्यता समान और पदारथ कोंई नाहीं है, और परापकार समान दूसरो धर्म नाहीं है. जो वा बनियांके लिये सूरदासजीने इतनो श्रम कियो. परि वाको अङ्गीकार करवाय वाको उद्धार करि दियो. तासों श्रीआचार्यजी श्रीगुसांईजी आपु और सगरे वैष्णव जीव मात्र सूरदासजीके उपर बहोत प्रसन्न रहते. सो जो कोऊ सूरदासजीसों आयके पूछतो, तिनको प्रीतिसों मारगको सिद्धान्त बतावते, और उनको मन प्रभुनमें लगाय देते. तासों सूरदासजी सरीखे भगवदीय कोटिनमें दुर्लभ हैं. सो वे सूरदासजी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके ऐसे कृपापात्र हते.

तातें इनकी वार्ताको पार नाहीं सो कहां ताई कहिए....वार्ता।।८१।।

८९-परमानन्दस्वामी कनौजिया

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक परमानन्दस्वामी, कनौजिया ब्राह्मण कनौजमें रहते, जिनके पद गाइयत हैं अष्टछापमें, तिनकी वार्ताको भाव कहत है

भावप्रकाश : सो ये परमानन्दजी लीलामें अष्टसखानमें 'तोष' सखाको प्रागट्य हैं. सो तोष सखाको दूसरो स्वरूप निकुञ्जमें सखीरूप है. ता स्वरूपको नाम 'चन्द्रभागा' है. सो सुरभीकुण्डके पास श्रीगिरिराजके एक द्वार है ताके मुखिया हैं. सो ये कनौजमें कनोजिया ब्राह्मणके यहां जन्मे. जा दिन परमानन्दजी जन्मे, वा दिन उनके पिताकों एक सेठने बहोत द्रव्य दान दियो. तब या ब्राह्मणने बहोत प्रसन्न होयके कह्यो, जो श्रीठाकुरजीने मोकों पुत्र दियो और धन हू बहोत दियो. तासों यह पुत्र बड़ो भाग्यवान है, जाके जनमत ही मोकों परम आनन्द भयो है. सो मैं या पुत्रको नाम 'परमानन्ददास' ही धरूंगो. पाछे जब नामकरन करन लागे तब वा ब्राह्मणने कही, जो नामतो मैं पहलेही पुत्रको 'परमानन्द' बिचारि चुक्यो हों. तब सब ब्राह्मण बोले, जो तुमने विचार्यो है सोइ नाम जन्म पत्रिकामें आयो है. तब तो वह ब्राह्मण बहोत ही प्रसन्न भयो. पाछे वा ब्राह्मणने जातकर्म करि दान बहुत कियो. ऐसे करत परमानन्ददास बड़े भये. तब पिताने बडो उत्सव कियो. और इनको यज्ञोपवित कियो. सो ये परमानन्द बड़े कृपापात्र भगवदीय हैं, लीलामध्यवती श्रीठाकुरजीके अत्यन्त (अन्तरङ्ग) सखा हैं. सो जब श्रीआचार्यजी आपु श्रीगोवर्द्धननाथकी आज्ञा तें दैवी जीवनके उद्धारार्थ भूतल पर प्रगट भये, तेसे ही श्रीठाकुरजी सहित सगरो परिकर प्रगट भयो. सो दैवी जीव अनेक देशान्तरमें प्रगट भये. सो गोपालदासजी वल्लभाख्यानमें गाये हैं, जो ''अनेक जीवने कृपा करवा देशान्तर प्रवेश'' सो कनौजमें परमानन्दजी बहोत ही प्रसन्न बालपने तें रहते. पाछें ये बड़े योग्य भये, और कवीश्वर हू भये. वे अनेक पद बनायके गावते. सो 'स्वामी' कहावते और सेवक हू करते. सो परमानन्ददासके साथ समाज बहोत, अनेक गुनीजन सङ्ग रहते एक समय कनौजमें अकाल पर्यो सो हाकिमकी बुद्धि बिगरी. सो या गाममेंसों दण्ड लियो. और परमानन्ददासके पिताको सब द्रव्य लूटि लियो. तब मातापिता बहोत दुःख पायके परमानन्ददाससों कहे, जो तेरो ब्याह हू करन पाये, और सब द्रव्य योंही गयो, तासों अब तू कमायवेको उपाय करि. सो काहेतें ? जो तु गुनी है और तेरे द्रव्य बहोत आवत है सो तू वा द्रव्यकों इकठोरे करे तो हम तेरो ब्याह करें. तब परमानन्ददासने मातापितासों कह्यो, जो मेरे तो ब्याह करनो नाहीं है, और तुमने इतनो द्रव्य भेलो

करिके कहा पुरुषार्थ कियो ? सगरो द्रव्य योंही गयो. तासों द्रव्य आयेको फल यही है, जो वैष्णव ब्राह्मणकों खवावनों. तासों मैं तो द्रव्यको सङग्रह कबहू नाहीं करूंगो और तुम खायवे लायक मोसों नित्य आन लेहू, और बेठे - बेठे श्रीठाकुरजीको नाम लियो करो. जो अब निर्धन भये हो तासों अबतो धनको मोह छोड़ो. तब पिताने परमानन्ददाससों कह्यो, जो तू तो वैरागी भयो. तेरी सङ्गति वेरागीनकी है, तासों तेरी ऐसी बुद्धि भई. और हमतो गृहस्थी हैं. तासों हमारे धन जोरे बिना वैसे चले ? जो कुटुम्बमें ज्ञातिमें खरचें तब हमारी बड़ाई होय. पाछे पिता धनके लिये पूरवकों गयो. तहां जीविका न मिली तब दक्षिनको गयो और तहां द्रव्य मिल्यो सो तहां रह्यो. और परमानन्ददासन अपने घर कीर्तनको समाज कियो. सो गाम गाममें प्रसिद्ध भये. और परमानन्ददास गान विद्यामें चतुर हते.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो एक समय परमानन्ददास कनौज तें मकरस्नानकों प्रयागमें आये, सो तहां रहे. और कीर्तनको समाज नित्य करैं, सो बहोत लोग इनके कीर्तन सुनिवेकों आवते. सो पार अड़ेलमें श्रीआचार्यजी विराजत हते. अड़ेल तें लोग कछू कार्यार्थ गाममें आवते. सो परमानन्दके कीर्तन सुनिके अड़ेलमें जायके श्रीआचार्यजीसों कहते, जो एक परमानन्ददास कनौज तें आयो हैं. सो कीर्तन बहोत आछो गावत है. तब श्रीआचार्यजी कहे, जो परमानन्ददास दैवी जीव है. जो इनको गुन होय सो उचित ही है. सो श्रीआचार्यजीको सेवक एक 'कपूर क्षत्री' जलघरिया हतो, वाकी राग ऊपर बहोत आसक्ति हती. सो यह बात सुनिके वाके मनमें आई, जो मैं श्रीआचार्यजी न जानें ऐसे परमानन्दस्वामीको गान सुनूं. काहेतें जो श्रीआचार्यजी आपु सुनेंगेतो खीजेंगे, जो तू सेवा छोड़िके क्यों गयो ? तासों प्रयाग न जाय सके. परन्तु वा जलघरिया 'क्षत्री कपूर' को मन परमानन्दस्वामीके कीर्तन सुनिवेंकों बहोत हतो.

भावप्रकाश : सो काहेतें ? जो इनको पूर्वको सम्बन्ध है. जो लीलामें यह क्षत्री परमानन्ददासकी सखी है, सो ये चन्द्रभागाकी सखी 'सोनजुही' याको नाम है. सो यह क्षत्री सुदामापुरीमें एक क्षत्रीके घर प्रकटे, इनको पिता महाविषयी हतो. सो जहां तहां परस्त्रीको सङ्ग करतो. और द्रव्य बहोत हतो, सो सब विषयमें खोयो. ता पाछें गामके राजाने सगरो घर लूटि लियो. सो या क्षत्रीके मातापिता पुत्र सहित बन्दीखानेमें दिये. तब याको पिता एक सिपाहीकों कछू देकें रात्रिकों स्त्रीपुरुष और या पुत्रकों ले भाग्यो. सो ये दिन दोय तीन तांई भाजे, सो तहां एक वनमें जाय निकसे. तहां नाहरने याके मातापिताकों मार्यो, और यह पुत्र बरस चौदहको बच्यो. सो वनमें बेठ्यो रुदन करे, सो भूख्यो प्यासो चल्यो न जाय. सो भागिजोग तें पृथ्वी परिक्रमा करत श्रीआचार्यजी

गहवरवन (सघन वन) में आये. तब या क्षत्रीसों पूछी, जो तू कौन है ? जो अकेलो वनमें रुदन करत है. तब इनने दण्डवत् करिके अपनो सब वृत्तान्त कह्यो. तब श्रीआचार्यजी आपु कृष्णदास मेघनसों कहे, जो कछू महाप्रसाद होय तो याकों खवायके बेगि जलपान करावो, जो याके प्राण बचें. तब कृष्णदास मेघनके पास प्रसाद हतो, सो या क्षत्रीकों न्हवायके खवायके जल पिवायो. तब या क्षत्रीको मन ठिकाने आयो. तब या क्षत्रीनें श्रीआचार्यजीसों बिनती कीनी जो महाराज ! मोकों आप पास राखो. जो मैं जनम भरि आपको गुलाम रहूंगो. अब मेरे मातापिता भगवान् आपु हो. तब श्रीआचार्यजी आपु श्रीमुखसों कहे, जो तू चिन्ता मति करे, और तू हमारे सङ्ग ही रहियो. तब यह क्षत्री श्रीआचार्यजीके सङ्ग ही रह्यो. ता पाछें दूसरे दिन श्रीआचार्यजी आपु वा क्षत्रीकों नाम सुनाय, ब्रह्मसम्बन्ध करवायो, और जल लायवेकी सेवा याकों दिये. पाछे कछुक दिनामें श्रीआचार्यजी आपु अड़ेल पधारे तब, वह क्षत्री श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन करिके अपने मनमें बहोत प्रसन्न भयो. और कह्यो, जो मैं अनाथ हतो, सो श्रीआचार्यजी आपु मोकों कृपा करिके सरन लेके सङ्ग लाये, सो मोकों साक्षात् श्रीयशोदोत्सङ्गलालित श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन भये. तब वा क्षत्री कपूर जलघरियाको मन श्रीनवनीतप्रियजीके स्वरूपमें लगि गयो. सो तब या क्षत्रीने अपने मनमें बिचारी, जो अब मोकों श्रीनवनीतप्रियजीकी सेवा कछू मिले, तब मैं सदा सेवा करूं और दरसन करूं. सो श्रीआचार्यजी आप साक्षात् पुरुषोत्तम हैं, सो या क्षत्रीके मनकी जानि याको पास बुलायके कह्यो, जो तेरे मनमें सेवाकी आई, सो तेरे बड़े भाग्य हैं. तासों अब तू श्रीनवनीतप्रियजीके जलघराकी सेवा कियो करि. तब वा क्षत्रीने प्रसन्न होयके श्रीआचार्यजीकों दण्डवत् करिकें बिनती कीनी, जे महाराज ! मेरे हू मनमें ऐसें हती, सो आपु तो परम कृपालु हो, तासों मेरो सर्व मनोरथ पूरन कियो. ता पाछें अति प्रीतिसों वह क्षत्री वैष्णव प्रसन्न होयके खारो तथा मीठो जल भरन लाग्यो. सो कछुक दिनमें श्रीनवनीतप्रियजी आपु सानुभावता जतावन लागे. परन्तु सेवामें अवकास नाहीं, जो ये परमानन्दस्वामीके कीर्तन सुनिवेकों जाय.

सो एक दिन एकादशीको दिन हतो. ता दिन प्रयागसों एक वैष्णव श्रीआचार्यजीके दरसनकों अड़ेलमें आयो. तब वा क्षत्री जलघरियाने वा वैष्णवसों परमानन्दस्वामीके समाचार पूछे. तब वा वैष्णवनें कह्यो, जो नित्य तो चारि घड़ी तथा पहरको समाज होत है रात्रिके समे, और आज तो एकादशी है, जो सगरी रात्रि परमानन्दस्वामीके यहां जागरन होयगो. सो ये बचन सुनिके वह क्षत्री वैष्णव अपने मनमें बहोत प्रसन्न भयो, और विचार कियो, जो आजु परमानन्दस्वामीके कीर्तन सुनिवेको दाव लाग्यो है. तासों जब श्रीआचार्यजी आप रात्रिकों पोढ़ेंगे तब मैं रात्रिकों प्रयागमें जायके परमानन्दस्वामीके कीर्तन सुनूंगो. ता पाछें रात्रि भई. तब वह क्षत्री कपूर जलघरिया अपनी सेवासों पहोंचिके श्रीआचार्यजीके श्रीमुखतें कथा सुनिके रात्रि प्रहर डेढ़ गई, ताही समय अड़ेलसों प्रगायकों चल्यो. तब अपने मनमें

बिचार्यो, जो या समय घाट ऊपर तो नाव मिलनी नाहीं है, तासों पैरिके जाऊं. सो वे पेरिवेमें बड़े निपुन हते. पाछे घाट ऊपर आय परदनी एक छोटीसी पहरिके, धोती उपरना माथेसों बांधे. सो उष्णकाल गरमीके दिन हते सो पैरिके परमानन्दस्वामी कीर्तन करत हते तहां आये. सो इनको पहलें परमानन्दस्वामीसों मिलाप तो कबहू भयो न हतो, तासों दूरि बैठि गये. उहां श्रीआचार्यजीके सेवक प्रयागके वैष्णव बैठे हते सो इनकों जानत हते. सो तहां अपने पास ही इन क्षत्री कपूरकों बैठारि लिये. सो वे जहां परमानन्दस्वामी बैठे हते तिनके पास जाय बैठे. तब और और गुनीनके पद गाये पाछें परमानन्दस्वामीने गाइवैको आरम्भ कियो. सो परमानन्दस्वामी विरहके पद गावते.

भावप्रकाश : सो काहेतें ? जो ऊपर इनको स्वरूप कहि आये हैं, जो ये परमानन्ददास लीलामेंसों बिछुरे हैं, सो अब ही श्रीआचार्यजी और श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन भये नाहीं है. सो जब श्रीआचार्यजी श्रीनाथजीको दरसन करावेंगे तब परमानन्ददासको लीलाको ज्ञान होयगो. श्रीआचार्यजीके मारगको यह सिद्धान्त है, जो भगवदीयको सङ्ग होय तब श्रीठाकुरजी कृपा करें. ताके लिये श्रीआचार्यजी परमानन्दस्वामीके ऊपर कृपा करनके अर्थ अपने कृपापात्र भगवदीय क्षत्री कपूर जलघरियाकों पठाये. सो क्षत्री कपूर जलघरिया कैसे हते, जो जिनकों श्रीठाकुरजी एक क्षण हू नाहीं छोड़त हैं, जो सदा इनके सङ्ग ही रहत हैं. तासों सूरदासजी गाये हैं ''जो भक्तविरहकातर करुणामय डोलत पाछें लागे''. और ऊपर जगन्नाथ जोसीकी वार्तामें कहि आये हैं, जो जब वा रजपूतने तरवार काढी तब श्रीठाकुरजी आपु पाछे तें आयके तरवार सहित हाथ ऊपर ही थांमि दियो, सो हाथ चलन न दियो. तासों श्रीभागवतमें सब ठौर बरनन है जो भगवदीय वैष्णवके सङ्ग ही श्रीठाकुरजी डोलत हैं. सो परमानन्ददासकों अब ही वियोग है. तासों विरहके कीर्तन नित्य गावते.

राग बिहागरो -
ब्रजके विरही लोग विचारे
बिनु गोपाल ठगे से ठाढे अति दुर्बल तनु हारे ।।१।।

माते जसोदा पंथ निहारति निरखत सांझ सवारे ।
जो कोऊ कान्ह कान्ह कहि टेरत अखियन बहत पनारे ।।२।।

यह मथुरा काजरकी रेखा जो निकते सो कारे ।
'परमानन्द' स्वामी विनु ऐसे जैसे चन्द बिनु तारे ।।३।।

राग बिहागरो -
गोकुल सब गोपाल ऊपासी
जो गाहक साधनके उधो वे सब बसत ईस पुरि कासी ।।१।।

जदपि हरि हम तजि अनाथ करी अब छांड़त क्यों रतिकी गांसी ।
अपनी शीतलता तऊ न छांड़त यद्यपि विधु भयो राहु ग्रासी ।।२।।

किहिं आराध जोग लिखि पठयो प्रेम भजन तें करत उदासी ।
'परमानन्द' ऐसीको बिरहनि मांगे मुक्ति छांड़ि गुनरासी ।।३।।

राग कान्हरो -
कौन रसिक है इन बातन कौ
नन्दनन्दन बिनु कासों कहिए सुनिरी सखी मेरे दुःख या तनकौ ।।१।।

कहां वह जमुना पुलिन मनोहर कहां वह खटपट जल जातनकौ ।।२।।

कहां वह सेज पौढिवो बनकौ फूल बिछोना मृदु पातनकौ ।
कहां वह दरस परस 'परमानन्द' कमलनैन कोमल गातनकौ ।।३।।

राग सोरठ -
माईको मिलिवे नन्दकिसोरै
एकबारको नैन दिखावे मेरे मनके चोरै ।।१।।

जागत जाम गिनत नहीं खूटत क्यों पाउंगी भोरै ।
सुनिरी सखी अब कैसे जीजे सुनि तमचर खग रोरै ।।२।।

जो पै सत्य प्रीति अन्तरगति काहुऽव निहोरै ।
'परमानन्द' प्रभु आन मिलेंगे सखी सीस जिनि फोरै ।।३।।

इत्यादि बहोत कीर्तन परमानन्ददासनें गाये सगरी रात्रि. ता पाछें चार घड़ी रात्रि रही तब कीर्तन राखे. सो जो कोई जागरनमें आये हते वे सब अपने - अपने घरकों गये. पाछे यह जलघरिया क्षत्री कपूर परमानन्दस्वामीसों भगवत्स्मर. करिके उठिके तहां ते चल्यो. परमानन्दस्वामीके कीर्तन सुनिके अपने मनमें बहोत प्रसन्न होयके कह्यो, जो जैसो परमानन्दस्वामीको गुन सुनत हते सो तेसेई हैं. सो या प्रकार परमानन्दकी सराहना करत - करत वह क्षत्री कपूर यमुनाके तट पर आइके वाही प्रकारसों पैरकें पार आये, धोवती उपारना परदनी सहित न्हायके अपरस ही में आये. ताही समय श्रीआचार्यजी आपु पोंढ़िके उठे हते. सो श्रीआचार्यजीके दरसन करि, दण्डवत् करि अपने जलघराकी सेवामें तत्पर भये.।

भावप्रकाश : सो या प्रकार ये क्षत्री कपूर परमानन्दस्वामीके ऊपर कृपा करिवेके अर्थ परमानन्दस्वामीके पास गये. नाहीं तो इनकों श्रीठाकुरजी आप सानुभाव हते, सो ऐसे भगवदीय काहेकों काहूके घर जाय ? परन्तु परमानन्दस्वामीके ऊपर कृपा होनहार है, तासों श्रीनवनीतप्रियजी वा क्षत्री कपूर जलधरियाको मन प्रेरिकें याके सङ्ग आपुही पधारि, याहीकी गोदमें बैठिके परमानन्दस्वामीके कीर्तन सुने.

सो या प्रकार वह क्षत्री जलघरिया परमानन्दस्वामीके कीर्तन सुनि जब प्रयागसों अड़ेलकों चले, सो तब परमानन्दस्वामी सगरी रात्रिके श्रमित हते, सो येहू सोये.

भावप्रकाश : सो तहां यह सन्देह होय, जो परमानन्दस्वामी सगरी रात्रि जागरण करिके चारि घढ़ी पिछड़ी रात्रि रही तब सोये. सो सोये तें जागरनको फल जात रहती है. सो परमानन्दस्वामी तो सुज्ञान है, और चतुर हैं तासों वे क्यों सोये ? तहां कहत है, जो परमानन्दस्वामी लीला सम्बन्धी पुष्टिजीव हैं. सो एक श्रीठाकुरजीकों चाहत हैं और जागरनके फलकों चाहत नाहीं हैं. सो ये परमानन्दस्वामी एकादसीके जागरनको मिस मात्र लेकें भगवन्नाम अधिक लियो जाय ताके लिये जागरन करत हते. सो इनकों विधि रीतिसों कछू जागरन करिवेके फलको कारन नाहीं है. तासों परमानन्ददास चारि घड़ी रात्रि पिछली रही तब सोये. सों यातें जो जागरनको फल जायगो, परन्तु भगवन्नाम लियो, सो गुन तो कोई कालमें जायगो नाहीं. तासों भगवन्नाम लेयवेके अर्थ चारि घड़ी रात्रि पाछिलीकों सोये सो काहेतें ? जो सोवे नाहीं तो द्वादसीके दिन आलस सरीरमें रहे. फेरि द्वादसीकी रात्रिकों डेढ़ पहर रात्रि तांई कीरतन करने हैं. तासों जागरनको आश्रय छोडिकें भगवन्नामको आश्रय करिके सोये.

सो नींद आवत ही परमानन्दस्वामीकों स्वप्न आयो. सो स्वप्नमें देखे तो श्रीआचार्यजीके सेवक क्षत्री जागरनमें बैठे हैं. और इनकी गोदमें श्रीनवनीतप्रियजी बैठे देखे. और श्रीनवनीतप्रियजी स्वप्नमें मुसिक्यायके परमानन्दस्वामीकों आज्ञा किये, जो आज मैंने तेरे कीर्तन सुने हैं. सो श्रीआचार्यजीके कृपापात्र सेवक कपूर क्षत्री जलघरिया तेरे यहां रात्रिकों जागरनमें आये. तासों इनके साथ मैं हू आयो. सो इतने दिननमें आजु तेरे कीर्तननको सुन्यो.

भावप्रकाश : सो यह कहे, तहां यह सन्देह होय, जो श्रीठाकुरजी तो सदा सुनत हैं, और सब ठौर व्यापक हैं. सो कहे, जो ''आज मैं सुन्यो'' ताको कारन कहा ? तहां कहत हैं, जो इतने दिनसों अङ्गीकारमें ढील हती, सो अन्तर्यामी साक्षि रूपसों सुने. तासों अब अङ्गीकार करनो है और कृपा करनी है, सो बेगि कृपा करनको लक्षन बताये. तासों कहे, जो आजु हौं तेरे कीर्तन सुन्यो हों. सो आज मैं तोपर पूरन कृपा करी. तासों अब बेगि माकों पावोगे. सो यह आसय जाननो.

तब परमानन्दस्वामीकी नींद खुली. सो नेत्रनमें श्रीनवनीतप्रियजीको स्वरूप कोटिकन्दर्पलावण्य, ऐसो स्वप्नमें दरसन भयो. तासों नेत्रनमें हृदयमें ज्ञान भयो. तब परमानन्दस्वामीके मनमें बड़ी चटपटी लगी, और आर्ति भई, जो अब मैं कब श्रीनवनीतप्रियजीको दरसन करों ? ता पाछें परमानन्दस्वामीने अपने मनमें विचार कियो, जो मैं इतने दिन तें जागरन कियो और कीर्तन हू गाये, परन्तु मोकों ऐसो दरसन कबहू न भयो. जो आज भयो है. सो श्रीआचार्यजीको सेवक जलघरिया क्षत्री कपूर आयो, तासों उनकी गोदमें भयो. सो क्षत्री कपूर बिना श्रीनवनीतप्रियजीको दरसन न होयगो, तासों उनके पास चलिये, और उनसों मिलिये, तब अपनो कार्य सिद्ध होय. सो यह विचार मनमें करिके परमानन्दस्वामी तत्काल उठिके अड़ेलकों चले. इतनेमें प्रातःकाल भयो. सो श्रीयमुनाजीके तीर पे आये, सो प्रथम ही नाव पार चली, तामें बैठिके परमानन्दस्वामी पार आये. ता समय श्रीआचर्यजी श्रीयमुनाजीमें स्नान करिके प्रातःकालकी सन्ध्या करत हते. परमानन्दस्वामीके श्रीआचर्यजीके दरसन अत्यद्‌भुत अलौकिक साक्षात् श्रीकृष्णके स्वरूपसों भये. सो श्रीगुसांईजी श्रीवल्लभाष्टकमें वर्णन किये है, जो 'वस्तुतः कृष्णएव' ऐसो दरसन करिके परमानन्दस्वामी चकित होय रहे. सो कछू बोल न निकस्यो. तब परमानन्दस्वामी अपने मनमें बिचार कियो, श्रीआचार्यजीके सेवक कपूर क्षत्रीकी गोदमें बैठिके श्रीनवनीतप्रियजी मेरे कीर्तन क्यों न सुनें ? जिनके माथे श्रीआचार्यजी आपु ऐसे धनी विराजत हैं. तासों मैं हू इनको सेवक होऊंगो. परि मेरी सामर्थ्य नाहीं है, जो मैं इनकों सेवक होंनकी बिनती करों. तासों वह क्षत्री फेर मिले तो उनसों सगरी बात कहिके सेवक होंनकी बिनती करों. यह बिचार परमानन्दस्वामी अपने मनमें करत हते, इतनेमें श्रीआचार्यजी आपु श्रीमुखतें परमानन्दस्वामीसों आज्ञा किये, जो परमानन्ददास ! कछु भगवल्लीला गावो. तब परमानन्ददासजीने श्रीआचार्यजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् करिके ये पद गाये -

राग सारङ्ग

कौन बेर भई चलेरी गोपालैं
हों ननसार गई ही न्योंते बार - बार बूझति ब्रजबालैं ।।१।।

तेरे तनको रूप कहां गयो भामिनी और मुखकमल सुकाइ रह्यो ।
सब सौभाग्य गयो हरिके सङ्ग हृदौ सुकोमल बिरह दह्यो ।।२।।

को बालैको नैन उघारेको उत्तर देहि बिकल मन ।
सो सरवसु अक्रुर चुरायो 'परमानन्दस्वामी' जीवन धन ।।३।।

राग सारङ्ग

जियकी साधि जिय ही रही री
बहुरि गोपाल देखन नहीं पाए बिलपति कुञ्ज अहीरी ।।१।।

इक दिन सो जु सखी यह मारगु वेचत जाति दहीं री ।
प्रीतिके लिए दान मिस मोहन मेरी बांह गही री ।।२।।

बिनु देखे छिन जात कलप भरि विरहा अनल दही री ।
'परमानन्दस्वामी' बिनु दरसन नैननि नदी बहीरी ।।३।।

राग सारङ्ग

वह बात कमल दल नैनकी
बार - बार सुधि आवत सजनी वह दुरि दैनी सेनकी ।।१।।

वह लीला वह रास सरदकौ गौरज रञ्जित आवनी ।
अरू वह उंची टेर मनोहर मिस करि मोहि बुलावनी ।।२।।

वे बातें सालति उर अन्तरको पर पीर हिं पावे ।
'परमानन्द' कह्यो न परे कछु हियो सुंरून्ध्यो आवे ।।३।।

राग सारङ्ग

सुधि करति कमलदल नैनकी
भरि भरि लेत नीर अति आतुर रति वृन्दावन चैनकी ।।१।।

दे दे गाढे आलिङ्गन मिलती कुञ्जलता द्रुम ऐनकी ।
वे बातें कैसेकै बिसरति बांह उनींदे सेनकी ।।२।।

बसि निकुञ्ज रास खिलाए व्यथा गंवाई मेनकी ।
'परमानन्द प्रभु' सो क्यों जीवहि जो पोखी मृदु बेनकी ।।३।।

या भांतिसों परमानन्ददासने विरहके पद श्रीआचार्यजीके आगे गाये. सो सुनिके श्रीआचार्यजी श्रीमुखसों कहे, जो परमानन्ददास ! कछु बाललीलाके पद गावो. तब परमानन्ददासने हाथ जोरिके श्रीआचार्यजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! मैं बाललीलामें कछु समुझत नाहीं हों. तब श्रीआचार्यजी आपु श्रीमुखसों परमानन्ददाससों आज्ञा किये, जो तुम श्रीयमुनाजीमें स्नान करि आवो, जो हम तुमकों समुझाय देयंगे. पाछें परमानन्ददासने श्रीआचार्यजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! आपुको सेवक क्षत्री कपूर कहां है ? सो तब श्रीआचार्यजी आप कहे, जो कछु सेवा टहलमें होयगो. तब परमानन्ददास श्रीयमुनाजीमें स्नान करनकों चले, और श्रीआचार्यजी तो सेवाको समय हते सो वेगि ही उहां ते मन्दिरमें पधारे. और श्रीनवनीतप्रियजीकों जगाये. इतने ही में वह क्षत्री जलघरिया श्रीयमुना जल भरिवेकों गागर लेके श्रीयमुनाजीके पार आयो. सो उनकों देखिके परमानन्दस्वामी परम आनन्दसों दोऊ हाथ जोरिके भगवत् स्मरन करिके कह्यो, जो रात्रिकों तुम कृपा करिकें जागरनमें पधारे हते, सो श्रीनवनीतप्रियजी तिहारी गोदिमें बैठिके मेरे कीर्तन सुने. सो मैं सोयो तब श्रीनवनीतप्रियजीने दरसन दियो, और कृपा करिके आज्ञा किये, जो आज मैं तेरे कीर्तन सुन्यो हूं. तासों तुमने मेरे ऊपर बड़ी कृपा करी. सो अब तिहारे दरसनकों आयो हों. तासों अब आप जा प्रकार श्रीआचार्यजी आपु मोकों सरन लेंइ और श्रीठाकुरजी कृपा करिके मोकों नित्य दरसन देंइ, सो प्रकार कृपा करिके बतावो. और मोकों श्रीआचार्यजी आपु कृपा करिके श्रीकृष्णजीके स्वरूपको दरसन दियो है, सो यह तिहारे सत्सङ्गको प्रताप हैं. तब यह बात सुनिके क्षत्री कपूरने उनसों कह्यो, जो तिहारे ऊपर श्रीआचार्यजीकी कृपा भई है. तासों तुमकों ऐसो दरसन भयो है. और तुमसों आपने आज्ञा करी है, सरन लेवेके लिये, जासों तुम बेगिही न्हायके अपरस ही में श्रीआचार्यजीके पास चलो. सो तुमकों प्रभु कृपा करिके सरन लेंयके, तब तिहारो सब मनोरथ सिद्ध होयगो. और रात्रिकों मैं जागरनमें तिहारे पास गयो, सो बात तुम श्रीआचार्यजीके आगें मति करियो. नाहिं तो आपु मेरे ऊपर खीजेंगे, जो तू सेवा छोड़िके क्यों गयो हतो ? यह वचन परमानन्दस्वमीसों कहिके वा स्त्री वैष्णवने तो श्रीयमुनाजलकी गागर भरी, और परमानन्ददास स्नान करिके अपरस ही में श्रीआचार्यजीके पास उन जलघरिया क्षत्रीके पाछे आये. ता समय श्रीआचार्यजी श्रीनवनीतप्रियजीकों सिंगार करिके श्रीगोपीवल्लभ भोग धरिकें बिराजत हते. ता समय परमानन्ददास न्हायके आये. तब श्रीआचार्यजी आपु परमानन्ददाससों कहे, जो परमानन्ददास बेठो. तब परमानन्ददास श्रीआचार्यजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् करिके बेठे. पाछें श्रीआचार्यजी आपु भीतर पधारि भोग सरायकें परमानन्ददासकों बुलायके श्रीनवनीतप्रियजीकी सन्निधान कृपा करिके नाम सुनायो. ता पाछे ब्रह्मसम्बन्ध करवायो. पाछे श्रीभागवत् दशमस्कन्धकी अनुक्रमणिका

सुनाये.

भावप्रकाश : सो ताको हेतु यह, जो प्रथम परमानन्ददाससों श्रीआचार्यजीने कही जो कछु भगवद् लीला वर्णन करो. तब परमानन्ददासने बिरहके पद गाये. पाछें श्रीआचार्यजी आपु परमानन्ददासकों कहे, जो बालालीला गावो. सो ताको हेतु यह है, जो बाललीला श्रीनन्दरायजीके घरकी लीला है, सो संयोग रस है. सो एकवार संयोग होय ता पाछे विरह फलस्वरूप होय. सो काहेतें ? जो रास पञ्चाध्यायीमें ब्रजभक्तनकों बुलायके लीला किये. ता पाछें अन्तर्धानमें विरह फल स्वरूप भयो. तासों भगवान् कहे -

यथाऽधनो लब्धधने विनष्टे तच्चिन्तया ।

जैसे धन पायके धन जाय, तब धनको चिन्तन बहोत होय. सो पहले श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो बाललीला गावो. क्यों ? जो - जो अनुभव करिके विरहको गान बेगि फले. परि परमानन्ददासने बिनती कीनी, जो महाराज ! मैं कछू समझत नाहीं हों. याको आसय यह है, जो संयोग रस अब ही है नाहीं. जो मूल लीलामें हतो सो विस्मृत भयो है. परि लीलामें तें बिछुरे हैं, और दैवी जीव हैं, तासों विरह जनम ही तें गाये. सो अब नाम समर्पण करायके अज्ञान प्रतिबन्ध दूरि कियो, ता पाछें श्रीभागवत् दशमस्कन्धकी अनुक्रमणिका सुनाये. सो तब साक्षात् श्रीनवनीतप्रियजीके स्वरूपको अनुभव भयो और दशमकी सगरी लीला स्फुरी. परमानन्ददासकों दशमकी अनुक्रमणिका सुनाये ताको कारन यह है, जो सर्वोत्तम ग्रन्थ श्रीगुसांईजी प्रगट किये हैं. तामें श्रीआचार्यजीको नाम कहे हैं, जो ‘‘श्रीभागवत - पीयूषसमुद्र - मथन क्षमः’’. सो श्रीभागवतको श्रीगुसांईजी अमृतको समुद्र करिके वर्णन किये, सो श्रीआचार्यजी आपु अनुक्रमणिका द्वारा श्रीभागवत् रूपी समुद्र परमानन्दासके हृदयमें स्थापन कियो हतो. तैसें ही प्रथम सूरदासके हृदयमें अनुक्रमणिका द्वारा श्रीभागवत् रूपी समुद्र स्थापन कियो हतो. तासों वैष्णव तो अनेक श्रीआचार्यजीके कृपापात्र हे, परन्तु सूरदास और परमानन्ददास ये दोऊ ‘सागर’ भये. इन दोउनके कीर्तनकी सङ्ख्या नाहीं, सो दोऊ सागर कहवाये. सो श्रीआचार्यजीने आज्ञा करी जो बाललीला गावो. अब संयोग रसको अनुभव भयो.

तब परमानन्ददासजीने श्रीआचार्यजीके आगे बाललीलाके पद गाये. सो पद -

राग आसावरी -

माईरी कमल नैंन स्यामसुन्दर जूलत हैं पलना ।
बाललीला गावति सब गोकुलकी ललना।।१।।

लालके अरुन तरुन चरन कमल नख - मनि ससि - ज्योति ।
कुञ्चित कच भंवराकृति लर लटकै गज - मोती ।।२।।

लाल अंगुठा गहि कमल पानि मेलत मुख मांहीं ।
अपनो प्रतिबिम्ब देखि पुनि पुनि मुसिकाहीं ।।३।।

रानी जसुमतिके पुन्य पुञ्ज निरखि लालैं ।
'परमानन्दस्वामी' गोपाल सुत सनेह पालैं ।।४।।

राग बिलावल -

जसोदा ! तेरे भाग्यकी कहीय न जाइ
जो मूरति बृह्मादिक दुर्लभ सो प्रगटे हैं आइ ।।१।।

सिव नारद सनकादि महामुनि मिलिवे करत उपाई ।
ते नन्दलाल धूरिधूसर वपु रहत कण्ठ लपटाई ।।२।।

रतन जटित पौढाय पालने वदन देखि मुसिकाई ।
जूलो मेरे लाल जाऊं बलिहारी 'परमानन्द' बलि जाई ।।३।।

राग बिलावल -
मनि मै आङ्गन नन्दके खेलत दोऊ भैया
गौर स्याम जोरी बनी कुंवर कन्हैया ।।१।।

नूपुर कंकन किंकनी रुनजुन बाजे ।
मोहि रही ब्रज सुन्दर मनसिज सुनि लाजे ।।२।।

सङ्ग जसुमति रोहिणी हितकारिनी मैया ।
चुटकी दे दे नचावही सुत जानि नन्हैया ।।३।।

नीलपीत पट ओढनी देखत मोहि भावे ।
बाल विनोद प्रमोदसों 'परमानन्द' गावे ।।४।।

राग कान्हरो -
प्यारे हरिकौ जस गावति गोपाङ्गना
मनिमय आनन्द नन्दरायके बाल विनोद करत हैं रिंगना ।।१।।

गिरि गिरि उठत घुटुरुवन टेकत जानुपानि मेरो छगनकौ मगना ।
धूसर धूरि उठाय गोद ले मात यसोदाके प्रेमको भजना ।।२।।

त्रिपद पहुमि नापी तब न आलस भयो अब जो कठिन भयो देहरी उल्लङ्घना ।
'परमानन्द प्रभु' भक्तवत्सल हरि रुचिर हार वरकण्ठ सोहे बधना ।।३।।

सो ऐसे पद परमानन्ददासने बाललीलाके बहोत ही गाये. सो सुनिके श्रीआचार्यजी आपु बहोत ही प्रसन्न भये. ता पाछें परमानन्ददास अड़ेलमें श्रीआचार्यजीके पास रहे. तब श्रीआचार्यजी परमानन्ददाससों कहे, जो अब समय - समयके पद नित्य श्रीनवनीतप्रियजीकों सुनायो करो, सो यह सेवा तुमकों दीनी. तब परमानन्ददास नित्य नये पद करिके समय - समयके श्रीनवनीतप्रियजीकों सुनावते. और जब श्रीनवनीतप्रियजीकों अनोसर होय, तब परमानन्ददास श्रीआचार्यजीके आगे अनेक ब्रजलीलाके कीर्तन करते. और श्रीआचार्यजी आपु श्रीसुबोधिनीकी कथा कहते. सो जा समय (जा) प्रसङ्गकी कथा श्रीआचार्यजीके श्रीमुख तें सुनते ताही प्रसङ्गके कीर्तन कथा भये पाछे परमानन्ददास श्रीआचार्यजीकों सुनावते.

वार्ताप्रसङ्ग २ : एक दिन परमानन्ददासनें श्रीठाकुरजीके चरणारविन्दको माहात्म्य कथामें श्रीआचार्यजीके श्रीमुखतें सुन्यो. सो ता समय परमानन्ददासने श्रीठाकुरजीके चरणारविन्दको माहात्म्य सहित कीर्तन श्रीआचार्यजीके आगे गायो. सो पद -

राग कान्हरो -
चरनकमल वन्दों जगदीस जे गोधनके सङ्ग धाये
जे पदकमल धूरि लपटाने कर गहि गोपिन उर लाए ।।१।।

जै पदकमल युधिष्ठिर पूजित राज सूय मैं चलि आए ।
जे पदमकमल पितामह भीषम भारतमें देखन पाए ।।२।।

जे पदकमल सम्भु चतुरानन हृदै कमल अन्तर राखे ।
जे पदकमल रमा - उर भूषन वेद भागवत मुनि साखे ।।३।।

जे पदकमल लोकत्रय पावन बलराजाके पीठ धरे ।
सो पदकमल 'दास परमानन्द' गावत प्रेम पीयूष भरे ।।४।।

ता पाछे श्रीआचार्यजीके आगे प्रार्थनाको पद गायो. सो पद -

राग कान्हारो -
यह मांगों गोपीजनवल्लभ
मानुस जनम और हरिकी सेवा ब्रज वासिवो दीजे मोहि सुलभ ।।१।।

श्रीवल्लभकुलकौ हों चेरो वैष्णवजनकौ दास कहाऊं ।
श्रीयमुनाजल नितप्रति न्हाऊं मन क्रम वचन कृष्ण गुन गाऊं ।।२।।

श्रीमद्भागवत श्रवन सुनों नित्य इन तजि चित्त कहूं अनन्त न लाऊ ।

परमानन्ददास यह मांगत नित निरखों कबहू न अघाऊं ।।३।।

सो यह पद परमानन्ददासने गायो. सो सुनिक श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप जानें, जो या पदमें ब्रजके दरसनकी प्रार्थना कीनी है. तासों परमानन्ददासकों ब्रजके दरसन अवश्य करवावने. तब श्रीआचार्यजी आपु ब्रजमें पधारिवेको उद्यम किये. सो तब दामोदरदास हरसानी, कृष्णदास मेघन, परमानन्ददास और यादवेन्द्रदास आदि सब वैष्णवनकों सङ्ग लेके श्रीआचार्यजी आप अड़ेल तें ब्रजकों पधारे. सो ब्रजकों आवत मारगमें परमान्ददासको गाम कनौज आयो. तब परमान्ददासने श्रीआचार्यजीसों बिनती करि अपने घर पधराये. पाछें परमानन्ददास अपने भाग्य मानिके परम प्रीतिसों अपने घर पधरायकें सब सामग्री बजारतें लाये. और जो वैष्णव हते सो तिनसों बहोत बिनती दैन्यता करिके सबनकों सीधो सामान देके रसोई करवाई. पाछें श्रीआचार्यजी आपु सखड़ी अनसखड़ी पाक सामग्री सिद्ध करिके श्रीठाकुरजीकों भोग सराय आपु भोजन किये. ता पाछे परमानन्ददास आदि सब वैष्णवनकों महाप्रसाद देके आपु गादी तकीयानेके ऊपर बिराजे. पाछे परमानन्ददास महाप्रसाद ले श्रीआचार्यजीके पास आय दण्डवत् करिके बैठे. तब आपु आज्ञा किये जो परमानन्ददास ! कछू भगवद् जस गावो. तब परमानन्ददास अपने मनमें बिचारे, जो या समय श्रीआचार्यजीको मन तो ब्रजलीलामें श्रीगोवर्द्धननाथजीके पास है. तासो विरहको पद गाऊं, जामें एक क्षण कल्प समान जाय. सों पद -

राग सोरठ

हरि तेरी लीलाकी सुधि आवे
कमलनैन मनमोहन मूरति मन मन चित्र बनावे ।।१।।

एकवार जाहि मिलत मया करि सो कैसे बिसरावे ।
मुख मुसक्यान बङ्क अवलोकन चाल मनोहर भावे ।।२।।

कबहु निविड तिमिर आलिङ्गत कबहुकपिकसुर गावे ।
कबहुक सम्भ्रम क्वासि क्वासि कहि सङ्गहि सङ्ग उठि धावे ।।३।।

कबहुक नैन मून्दि अन्तर गति मणिमाला पहरावे ।
'परमानन्द - प्रभु' स्याम ध्यान करि ऐसे विरह गंवावे ।।४।।

यह पद परमानन्ददासने गायो. सो यामें यह कहें, जो ''हरि तेरी लीलाकी सुधि आवे''. सो ताही समय श्रीआचार्यजी आपु लीलामें मग्न होय गये.

भावप्रकाश : सो तहां श्रीगुसांईजी श्रीआचार्यजीको स्वरूप 'श्रीवल्लभाष्टक' में वरनन कियो है, जो -

श्रीमद् वृन्दावनेन्दुः प्रकटित रसिकानन्द - सन्दोहरूप - स्फूर्जद्रासादिलिलामृत ।

ऐसेसों भरे हैं. और 'सर्वोत्तम' में श्रीगुसांईजी श्रीआचार्यजीको नाम कहे ''रासलीलैकतात्पर्याय नमः'' सो श्रीआचार्यजीको कार्य कहियत हैं, जो - जो ग्रन्थ किये सो तामें रासलीला ही तात्पर्य है. और कछु काहू बातमें आपुको तात्पर्य नाहीं है. सो तासों रासलीलामें मगन होय गये.

सो ऊपर सरीरको देहको - अनुसन्धान हू रह्यो नाहीं. सो तीन दिनलों श्रीआचार्यजीकों मूर्छा रही. सो नेत्र मूंदिके गादी तकियान पें बिराजे हते, और दामोदरदास हरसानी आदि वैष्णव (जो) श्रीमहाप्रभुजीके स्वरूपकों जानत हते सो जाने. सो कोई वैष्णव बोले नाहीं, बैठे - बैठे चुप हायके श्रीआचार्यजीको दरसन कियो करैं.

भावप्रकाश : सो काहेतें ? जो श्रीआचार्यजी आप पूरन पुरुषोत्तम हैं सो इनको सरीरधर्म बाधक नाहीं. जो मनुष्य देह धारन कियो है तासों मनुष्य - क्रिया जगतमें दिखावत हैं, परि इनकों देहको धर्म बाधक नाहीं है. तासों सेवक तीन दिनलों बैठे रहे.

सो पाछें चौथे दिन सावधान होयकें श्रीआचार्यजीने नेत्र खोले, तब सब वैष्णव प्रसन्न भये.

भावप्रकाश : सो तहां यह पूर्वपक्ष होय, जो रासादिक लीलामें मगन तीन दिन तांई क्यों रहे ? सो तहां कहत हैं, जो रासादिक लीलामें तीन ही ठौर मुख्य हैं. जो श्रीगिरिराज, श्रीवृन्दावन और श्रीयमुनाजी. १. श्रीगिरिराज स्वरूप होय सगरी लीलाकी सामग्री सिद्ध करत हैं. २. श्रीवृन्दावनकी लीला रसात्मक कुञ्जबिहारमें. ३. और श्रीयमुनाजी सब रासको मूल या प्रकार जल स्थलकी लीला हैं. सो एक दिन श्रीगिरिराज सम्बन्धी लीलाको अनुभव किये, जो कन्दरामें नाना प्रकारके बिलास, चतुर्भुजदासजी गाये हैं -

श्री गोवर्द्धनगिरि सघन कन्दरा ।

आदि. दूसरे दिन वृन्दावन लीला, और तीसरे दिन श्रीयमुनाजीकी पुलिन (में) रास जल विहारादि. या प्रकार तीन दिनलों तीनों रसको अनुभव किये. ता पाछें भूमि पर भक्तिमारग प्रगट करिकें अनेक जीवनकों सरन लेकें लीलारसको अनुभव करवावनो है, सो चौथे दिन श्रीआचार्यजी आपु नेत्र खोलिके सावधान भये.

तब परमानन्ददासजी अपने मनमें डरपे, जो ऐसे पद फेरि कबहुं नाहीं गाऊंगो.

भावप्रकाश : सो परमानन्ददासजी यासों डरपे, जो श्रीआचार्यजी आपु रसको अनुभव करिके कदाचित् लीलारसमें मगन होइ जांय. सो भूमि पर पधारिवेको मन न करें तो यह दैवीजीवनकौ उद्धार कौन भांतिसों होयगो ? तासों परमानन्ददासने अपुने मनमें विचार कियो, जो अब मैं फेरि बिरहको पद

श्रीआचार्यजी आगे नाहीं गाऊंगो. सो काहेंते ? जो श्रीआचार्यजी आपु विरहात्मक स्वरूप हैं. सर्वोतममें श्रीगुसांईजी आपु श्रीआचार्यजीको नाम कहे हैं जो ''विरहानुभवैकार्थ सर्वत्यागोपदेशकः'' सो विरहरसके अनुभवके अर्थ सर्व लौकिकमें त्याग किये, सो उपदेश करत हैं. यामें विरहको स्वरूप बताये. विरहरसमें लौकिक वैदिककी कछू सुधि न रहे सो तब विरह भयो जानिये.

ता पाछें परमानन्ददासने सूधे पद गाये. सो पद -

राग रामकली -
माईरी ! हों आनन्द मङ्गल गाऊं
गोकुलकी चिन्तामणि माधौ जों मांगों सो पाऊं ।।१।।

जब तें कमल नैन व्रज आए सकल सम्पदा वाढी ।
नन्दरायके द्वारे देखो अष्ट महासिद्धि ठाढी ।।२।।

फूले फूले सदा वृन्दावन कामधेनु दुहि लीजे ।
मांग्यो मेह ईन्द्र बरसावे कृष्ण कृपा तें जीजे ।।३।।

कहत जसोदा सखियन आगे हरि उत्कर्ष जनावे ।
'परमानन्द' कौ ठाकुर मुरली मनोहर भावे ।।४।।

ता पाछे श्रीआचार्यजी आपु भोजन करिके पोढ़े, तब सब वैष्णव महाप्रसाद लियो. ता पाछे परमानन्ददास महाप्रसाद लेके

श्रीआचार्यजी आगे यह पद गाये -

राग गोरी -
बिमल जस वृन्दावनके चन्दकौ
कहा प्रकास सोम सूरजकौ जो मेरे गोविन्दकौ ।।१।।

कहति जसोदा औरन आगे वैभव आनन्द - कन्दकौ ।
खेलत फिरत गोप - बालक सङ्ग ठाकुर 'परमानन्द'कौ ।।२।।

ता पाछे परमानन्ददासने यह पद गायो. सो पद -

राग सारङ्ग -
चलि सखी नन्दगाम जाइ बसिए
खारिक - खेलत ब्रजचन्द जु सों हरिए ।।१।।

बसि वेठन सबै सुख भाई ।
एक कठिन दुख दूर कन्हाई ।।२।।

माखन चोरत दुरि दुरि देखों ।
सजनी जनम सुफल कर लेखों ।।३।।

जलचर लोचन छिनु छिनु प्यासा ।
कठिन प्रीति परमानन्ददासा ।।४।।

यह पद सुनिके श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो अब ब्रजकों चलिये. पाछें परमानन्ददासने जो सेवक किये हते, तिन सबनकों श्रीआचार्यजीके पास लाय बिनती कीनी, जो महाराज ! इन जीवनकों तुम नाम सुनायके सेवक किये हैं, तातें अब हम पास तुम इनकों सेवक क्यों करावत हो ? तब परमानन्ददास कहे, जो महाराज ! यह तो पहली दसामें स्वामीपनो हतो, तासों सेवक किये हते. और अब तो मैं आपको दास हों. 'स्वामीपद' तो जी स्वामी हैं तिनहीकों सोहत है. दास होय स्वामीपद चाहे सो मूरख है. तासों मैं अज्ञान दसामें सेवक किये, सो अब आप इनकों सरन लेके उद्धार करिये. तब सबनकों श्रीआचार्यजीने नाम सुनाय सेवक किये. ता पाछे सब वैष्णवनकों सङ्ग ले कनौजसों ब्रजमें पधारे. सो कछुक दिनमें श्रीगोकुल पधारे. सो गोविन्दघाट ऊपर स्नान करिके छोंकरके नीचे श्रीआचार्यजी आप अपनी बैठकमें आय विराजे. सो एक भीतर बैठक श्रीद्वारकानाथजीके मन्दिरके पास है, तहां रात्रिकों श्रीआचार्यजीके विश्राम करिवेकी ठोर है. सो आपु जब श्रीगोकुल पधारते, तब आप उहां उतरते. सो यह भीतरकी बैठक है. सो श्रीआचार्यजी आपु श्रीनवनीतप्रियजीकों पालने जुलाय दधिकादो जन्माष्टमीको उत्सव किये हैं. सो ऊपर गज्जनधावनकी वार्तामें वरनन करि आये हैं. सो श्रीआचार्यजी आपु स्नान करि छोंकरके नीचे अपनी बैठकमें बिराजे हते. तब सब वैष्णव परमानन्ददास सहित स्नान करि प्रभुनके (श्रीआचार्यजीके) पास बैठे हते. पाछें श्रीआचार्यजीने श्रीयमुनाष्टकको पाठ परमानन्ददासकों सिखाये तब परमानन्ददासके हृदयमें श्रीयमुनाजीको स्वरूप स्फुर्यो. सो श्रीयमुनाजीको जस बरनन कियो. सो पद -

राग रामकली -
श्रीयमुनाजी ! यह प्रसाद हों पाऊं
तिहारे निकट रहों निसवासर रामकृष्ण गुन गाऊं ।।१।।

मजन करों विमल जल पावन चिन्ता कलह बहाऊं ।
तिहारी कृपा तें भानुकी तनया हरि पद प्रीत बढाऊं ।।२।।

बिनती करों यही वर मांगो अधम सङ्ग बिसराऊं ।
'परमानन्द' चारि फलदाता मदनगोपाल लडाऊं ।।३।।

राग रामकली -
श्रीयमुनाजी दीनि जानि मोहि दीजे
नन्दको लाल सदा वर मांगो गोपिनकी दासी मोहि कीजे ।।१।।

तुम हो परम उदार कृपानिधि चरन सरन सुखकारी ।
तिहारे बस सदा लाडिलीवर वर्तत नित गिरिवरधारी ।।२।।

व्रजनारी सब खेलत हरिसङ्ग अद्‌भुतरास बिलासी ।
तिहारे पुलिन मधि कुञ्ज द्रुम कमल पुहूप सुखरासी ।।३।।

श्रमजल भरि भरि न्हात ब्रजसुन्दरि जयक्रीडा सुखकारी ।
मनहु तारा मध्य चन्द विराजत भरि भरि छिरकत नारी ।।४।।

रानी जूके षांइ परों नित्य गृह - कारज सब कीजै ।
'परमानन्ददास' दासी व्है चरन कमल सुख दीजे ।।५।।

राग रामकली -
कालिन्दी कलि कल्मष हरनी
रवितनया जम - अनुजा स्यामा महासुन्दरी गोविन्द घरनी ।।१।।

जै जमुने श्रीकृष्णवल्लभा पतितनकों पावन भव तरनी ।
सरनागतकों देति अभय पद जननी तजत जैसे सुतकी करनी ।।२।।

सीतल मन्द सुगन्ध सुधानिधि धारा धरि वपु उतरी धरनी ।
'परमानन्द प्रभु' परम पावनी जुग जुग साखि निगम नित बरनी ।।३।।

ऐसे पद परमानन्ददासनें श्रीआचार्यजीके आगे श्रीयमुनाजीके तट पैं गाये. तब श्रीआचार्यजी आपु प्रसन्न होयके परमानन्ददासकों श्रीगोकुलकी बाललीलाके दरसन करवाये. सो बाललीला विशिष्ट परमानन्ददासकों ऐसे दरसन भये, जो ब्रजभक्त श्रीयमुनाजल भरत हैं, और श्रीठाकुरजी आप ब्रजभक्तनसों नाना प्रकारकें ख्याल लीला करि सुख देत हैं. सो परमानन्ददास लीलाके दरसन करि ऐसे पद श्रीआचार्यजीके आगे गाये. सो पद -

राग बिलावल -
श्रीयमुनाजल घट भरि ले चली श्रीचन्द्रावलि नारि

मारगमें खेलत मिले श्रीघनस्याम मुरारि ।।१।।

नेंननसों नैना मिले मन रह्यो हैं लुभ्याई ।
मोहन मूरति मन बसी पग धर्यो न जाई ।।२।।

मनकी प्रीति प्रगट भई यह पहेली भेट ।
'परमानन्द' ऐसें मिली जैसें गुडमें चेंट ।।३।।

राग सारङ्ग -
लाल नेक टेको मेरी बहियां
औघट घाट भर्यो नहीं जाई रपटत हौं कालिन्दी महियां ।।१।।

सुन्दरस्याम कमल दल लोचन देखि स्वरूप ग्वालिनि अरुझानी ।
उपजी प्रीति काम अन्तरगति तब नागरी पहचानी ।।२।।

हंसि ब्रजनाथ गह्यो कर पल्लव जैसे गगरी गिरन न पावे ।
'परमानन्द' ग्वालि सयानी कमल नैन परसोई भावे ।।३।

ता पाछे परमानन्ददासने श्रीगोकुलकी बाललीलाके पद बहोत किये. सो जामें श्रीगोकुलको स्वरूप जान्यो परे. सो पद -

राग कान्हरो -

गावति गोपी मधु मृदुवानी
जाके भवन बसत त्रिभुवन पति राजानन्द जसोदा रानी ।।१।।

गावत वेद भारती गावति गावत नारदादि मुनि ज्ञानी ।।२।।

गावत चतुरानन जग नायक गावत सेस सहस्त्र मुखरास ।
मन क्रम बचन प्रीति पद अम्बुज अब गावत 'परमानन्ददास' ।।३।।

राग कान्हरा -

रानी जसुमति गृह आवति गोपीजन
वासर ताप निवारन कारन बारबारके मलमुख निरखन ।।१।।

चाहत पकरि देहरी उल्लङ्घन किलकि किलकि हुलसत मन हि मन ।
राई लौंन उतारि दुहूंकर वार फेरि डारत तन मन धन ।।२।।

लेति उठाय चांपति हियो भरि प्रेम विवस लागे दृग ढरकन ।
चली ले पलना पोढावनकों अरकसाय पोढे सुन्दरघन ।।३।।

देति असीस सकल गोपीजन चिरजीयो जोंलों गङ्ग यमुन ।

'परमानन्ददास' कौ ठाकुर भक्तवच्छल भक्तन मनरञ्जन ॥४॥

राग हमीर -
गिरिधर सब ही अङ्गकौ बांकौ
बांकी चाल चलत गोकुलमें छेल छबीलो कहां कौ ॥१॥

वांकी भोंह चरन गति वांको वांकौ हृदय है ताकौ ।
'परमानन्ददास' कौ ठाकुर कियो खौर ब्रज सांकौ ॥२॥

या भांति परमानन्ददासने बहोत कीर्तन किये. सो श्रीगोकुलके दरसन करिके परमानन्दकों श्रीगोकुल पै बहोत आसक्ति भई. तब श्रीआचार्यजीके आगे ऐसे प्रार्थनाके पद गाये, जो मोकों श्रीगोकुलमें आपके चरणारविन्दके पास राखो, जासों नित्य श्रीठाकुरजीके दरसन करों और सगरी लीलाको अनुभव होय.

राग सारङ्ग -
यह मांगों जसोदानन्दन
चरन कमल मेरो मन मधुकर यह छबि नैनन पाऊं दरसन ॥१॥

चरनकमलकी सेवा दीजे दौऊ तन राजत विज्जुलता घन ।
नन्दनन्दन बृषभाननन्दिनी मेरे सर्वसु प्रानजीवन धन ॥२॥

ब्रज बसिवो जमुनाजल अचवो श्रीवल्लभकौ दास यह पन ।
महाप्रसाद पाऊं हरिगुन गाऊं 'परमानन्ददास' दासीजन ।।३।।

राग कान्हरो -
यह मांगों सङ्कर्षन वीर
चरन कमल अनुराग निरन्तर भावत हैं भक्तनकी भीर ।।१।।

सङ्ग देहो तो हरिभक्तनकौ बास वृन्दावन जमुना तीर ।
श्रवण हेतु तो कृष्णकथारस ध्यान देउ तो स्याम सरीर ।
मनकामना सकल परिपूरन मज्जन बिमल कालिन्दी नीर ।
'परमानन्ददास' कौ ठाकुर गोकुल नायक सब विधि धीर ।।

सो ऐसे कीर्तन परमानन्ददासने प्रार्थनाके गाये सो सुनिके श्रीआचार्यजी आपु परमानन्ददासके ऊपर बहोत प्रसन्न भये.

वार्ताप्रसङ्ग ३ : पाछें श्रीआचार्यजी आपु परमानन्ददास सहित सब वैष्णव समाज लेके श्रीगोकुल तें श्रीगोवर्द्धन पधारे. सो उत्थापनके समय श्रीआचार्यजी आपु श्रीगिरिराज पधारे. तहां स्नान करि श्रीआचार्यजी श्रीगिरिराज ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजीके मन्दिर पधारे. तब परमानन्ददास न्हायके श्रीगिरिराजकों साष्टाङ्ग दण्डवत् करिके पर्वतके ऊपर मन्दिरमें आय, उत्थापनके दरसन किये. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करत ही परमानन्ददासजी आसक्त होय रहे. तब श्रीआचार्यजी आप श्रीमुखतें परमानन्ददाससों कहे, जो परमानन्ददास ! कछू भगवल्लीलाके कीर्तन श्रीगोवर्द्धननाथजीकों सुनावो. तब परमानन्ददास अपने मनमें विचार किये, जो मैं कहा गाऊं ? क्यों जो रसना तो एक है, और श्रीगोवर्द्धननाथजीको स्वरूप तो अपार है, और इनकी लीला हू अपार है. जो वस्तु स्मरन करों सो ताहीमें बुद्धि विक्षिप्त

होय जात है. परन्तु श्रीआचार्यजीकी आज्ञा है, तासों कछू गावनो तो सही. सो ऐसो पद गाऊं जामें प्रथम तो अवतारलीला, पाछें कुञ्ज - लीला, पाछें चरणारबिन्दकी वन्दना, पाछें स्वरूपको वर्णन, ता पाछें माहात्म्य सहित श्रीठाकुरजीकी लीला होय. सो ऐसो पद गायो. सो पद -

राग बिलावल -
मोहन नन्दराइ कुमार
प्रकट ब्रह्म निकुञ्ज - नायक भक्त हित अवतार ।।१।।

प्रथम चरन - सरोज वन्दों स्यामघन गोपाल ।
मकर कुण्डल गण्ड मण्डित चारु नैन बिसाल ।।२।।

बलराम सहित विनोद लीला सेस सङ्कर हेत ।
''दास परमानन्द प्रभु'' हरि निगम बोलत नेति ।।३।।

सो यह प्रार्थनाको पद गायके पाछें आसक्तिके पद गाये.

राग आसावरी -
भाई मेरो माधौसों मन मान्यो
अपनो मन और वा ढोटाकौ एक - मेक करि सान्यो ।।१।।

लोक वेदकी कानि तजी मैं न्योति आपुने आन्यो ।
एक गोविन्दचन्दके कारन बैर सबनसों ठान्यो ।।२।।

अब क्यों भिन्न होहि मेरी सजनी दूध मिल्यौ ज्यों पान्यौ ।
'परमानन्द' मिले हैं गिरिधर है पहलो पहचान्यौ ।।३।।

राग गोरी -
मैं अपुनो मन हरिसों जोर्यो
हरिसों जोरि सबनसों तोर्यो ।।१।।

आगे पाछेकौ सोच मिट्यो अव बाट मांज मटुका ले फोर्यो ।
कहनो होइ सो सखीरी कहा भयो काहू मुख मोर्यो ।।२।।

नवल लाल गिरिधर पिया सङ्ग प्रेम रङ्गमें यह तन बोर्यो ।
'परमानन्दप्रभु' लोक हंसन दै विधि - निषेधकौ नांतौ तोर्यो ।।३।।

राग कान्हरो -
तिहारी वात मोहि भावति, लाल
बार - बार जसोमतिके भवनमें यह सनुत हों आवति जाति ।।१।।

पार परोसी अनख करत हैं और कछुक लगावति लाल ।
ताकी साखि बिधाता जाने जिहिं लालच उठि धावति लाल ।।२।।

दधिकौ मथन अरु गृहकौ कारज तिहारे प्रेम विसरावति लाल ।
'परमानन्द प्रभु' कुंवर भांमतो तुम देखे सचु पावत लाल ।।३।।

ता पाछें श्रीआचार्यजी श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेन आरती किये. ता समय परमानन्ददासने यह पद गायो. सो पद -

राग केदारों -
पौढे रङ्गमहल गोविन्द
राधिका सङ्ग सरद - रजनी उदित पूरनचन्द ।।१।।

विविध विचित्र चित्र चित्रित कोक कोटिक फन्द ।
निरखि निरखि बिलास विलसत दम्पति रसकन्द ।।२।।

मलयचन्दन अङ्ग लेपन परस्पर आनन्द ।
कुसुम बिंजना ब्यार ढोरे सजनी 'परमानन्द' ।।३।।

सो ऐसे पद परमानन्ददासजीने बहोत गाये. सो सुनिके श्रीआचार्यजी आपु बहोत प्रसन्न भये. ता पाछें श्रीआचार्यजी श्रीगोवर्द्धननाथजीकों पोढ़ायके अनोसर करि पर्वत नीचे पधारे. तब श्रीआचार्यजीने रामदास भीतरियासों कह्यो, जो परमानन्ददासकों प्रसादी

दूध पठाय दीजो ! तब रामदासने वह प्रसादी दूध पठायो सो परमानन्ददास प्रसादी - दूध लेंन लागे, सो तातो लाग्यो. तब सीरो करिके लियो. पाछें परमानन्ददास श्रीआचार्यजी पास आय दण्डवत् करिके बैठे. तब श्रीआचार्यजी आप परमानन्ददाससों पूछे, जो परमानन्ददास ! महाप्रसादी दूध लियो सो कैसो हतो ? तब परमानन्ददासनें श्रीआचार्यजीसों कह्यो, जो महराज ! दूध तो तातो हो. तब श्रीआचार्यजीने सब भीतरियानसों बुलायके पूछ्यो, जो दूध तातो क्यों भोग धरत हो ? सो आछो सुहातो होय तब भोग धरनो. तब सगरे भीतरियानने कही, जो महाराज ! अब ते सुहातो सीरो करिके भोग धरेंगे.

भावप्रकाश : सो परमानन्ददासकों श्रीआचार्यजी आपु प्रसादी दूध यासों दिवायो, जो श्रीठाकुरजीकों दूध बहोत प्रिय है. तासों सेवककों दूध यासों निकुञ्ज - लीला सम्बन्धी रसके दान करनकों, और सामग्री बिगरी सुधरी वैष्णवन द्वारा श्रीठाकुरजी कहत हैं. जो सामग्री वैष्णव सराहें तब जानिये, जो श्रीठाकुरजी भली भांतिसों अनुभव किये. सो या भावतें दूध दिये.

ता पाछें परमानन्ददासको दूध अधरामृत पिये तें सगरी रात्रि लीलारसको अनुभव भयो. तब रात्रिकी लीलामें मगन होयके ये पद गाये. सो पद -

राग कान्हरो -
आनन्दसिन्धु बढ्यो हरितनमें
श्रीराधा पूरन ससि मुख निरखत उमगि चल्यो ब्रज वृन्दावनमें ।।१।।

इत रोक्यो यमुना उत गोपी कछु इक फैल पर्यो त्रिभुवनमें ।
ना परस्यो कर्मठ अरू ज्ञानी अटकि रह्यो रसिकनके मनमें ।।२।।

मन्द मन्द अवगाहत बुद्धिबल भक्त हेत लीला छिन छिनमें ।
कछु एक लह्यो नन्दसुवन कृपातें सो देखियत 'परमानन्द' जनमें ।।३।।

राग कान्हरो -
पिय मुख देखत ही रहिये
नैननको सुख कहत न आवे जा कारन दुःख सब हि सहिए ।।१।।

सुनो गोपाललाल पांइ लागों भली पोच ले बहिए ।
हों आसक्त भई या रूप हि बड़े भागि तें लहिए ।।२।।

तुम बहुनायक चतुरसिरोमनी मेरी बांह दृढ गहिए ।
'परमानन्दस्वामी' मनमोहन तुमहि पें निरबहिए ।।३।।

राग गोरी -
कौन रस गोपिन लीनो घूंट
मदन गोपाल निकट कर पाए प्रेम कामकी लूंट ।।१।।

निरखि रूप नन्दनन्दनकौ लोकलाज गई छूटि ।
'परमानन्द' वेद सागरकी मर्यादा गई तूट ।।२।।

राग गोरी -

यातें माई भवन छांडि बन जैए

अखि - रस कन रस बत - रस सव रस नन्दनन्दन पें पैये ।।१।।

कर पल्लव गहि कण्ठ बांह धरि सङ्ग मिले गुन गैये ।

रास विलास विनोद अनूपम माधौके मन भैये ।।२।।

यह सुख सखी कहत नहिं आवे देखत दुःख बिसरैये ।

'परमानन्दस्वामी' को सङ्गम भाग्य बडे तें पैये ।।३।।

राग हमीर -

अमृत निचोय कियो इकठौर

तेरो बदन सुधारि सुधानिधि तब तें बिधना रचि न और ।।१।।

सुनि राधे उपमा कहा दीजे स्याम मनोहर भए हैं चकोर ।

सादर पान करत तुव आनन तृषित काम बस नन्द किसोर ।।२।।

कौन कौन अङ्ग करोंरी निरूपन नवगुन सील रूपकी रासि ।

'परमानन्द प्रभु' को चित्त चोरयो लोचन बंधे प्रेमकी प्यास ।।३।।

राग बिहागरो -
यह तन नवल कुंवर परवारों
नव निकुञ्जमें गौरस्याम तन वारंवार निहारों ।।१।।

इतनी टहल कृपा करि दीजे सङ्ग मिलि जीव उधारों ।
'परमानन्द स्वामी' के मिले बिनु और काज सब वारों ।।२।।

सो या भांति परमानन्ददासने सगरी रात्रि लीलाको अनुभव कियो, सो बहूत कीर्तन गाये. ता पाछे प्रातःकाल भयो तब श्रीआचार्यजी आपु स्नान करिके पर्वत ऊपर पधारे, सो श्रीगोवर्द्धननाथजीकों जगाये. तब परमानन्ददासने यह पद गायो. सो पद -

राग रामकली -
जागो गोपाललाल देखों मुख तेरौ
पाछें गृहकाज करों नित्य नेम मेरो ।।१।।

बिगसत निसा अरुन दिसा उदित भयो भान ।
गुञ्जत अली पङ्कज बन जागिए भगवान ।।२।।

द्वारें ठाढे बन्दीजन करत हैं उच्चार ।
बस प्रसंस गावत है हरि - लीला अवतार ।।३।।

‘परमानन्दस्वामी’ गोपाल जगत मङ्गल रूप ।
वेद पुरान पढत ज्ञान महिमा अनूप ।।४।।

राग रामकली -
लालको मुख देखन हों आई
कान्हि मुख देखि गई दधि बेचन जात हि गयो है विकाई ।।१।।

दिनतें दूनो लाभ भयो घर काजर बछिया जाई ।
आई हों धाय थंमाय साथकीन मोहन देहु जगाई ।।२।।

सुनि त्रिय बचन वे हंसि बैठे नागरी निकट बुलाई ।
‘परमानन्द’ सयानि ग्वालिन सेन सङ्केत बताई ।।३।।

राग रामकली -
ग्वालिन पिछवारे व्है बोल सुनायो
कमल नैन प्यारो करत कलेऊ कोर न मुख लों आयो ।।१।।

अरी मैया एक ब ब्याई गैया बछरा उहांई बसायो ।
मुरली न लीनी लकुटिया न लीनी अरबराय कोऊ सखा न बुलायो ।।२।।

चकृत भई नद जूकी रानी सत्य आइ कैंघो सुपनो आये ।
फूले अङ्गन माय रसिकवर त्रिभुवनराय सिरछत्र जु छायो ।।३।।

बैठे जाइ निकुञ्ज सदनमें विविध भांति कियो मन भायो ।
'परमानन्द' सयानी ग्वालिन उलटि अङ्क गिरिधर पिय पायो ।।४।।

सो या प्रकारके पद परमानन्ददासने बहोत गाये. ता पाछे श्रीआचार्यजीने परमानन्ददासकों श्रीगोवर्द्धननाथजीके कीर्तनकी सेवा दीनी. सो नित्य नये पद करिके परमानन्ददास श्रीनाथजीकों सुनावते.

वार्ताप्रसङ्ग ४ : एक दिन एक राजा अपनी रानीकों सङ्ग लेके ब्रजमें यात्रा करिवे आयो. तब वह राजा श्रीआचार्यजीको सेवक हतो. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करिके डेरानमें आइके वा राजानें अपनी रानीसों कह्यो, जो श्रीगोवर्द्धननाथजीको दरसन बहुतर सुन्दर है, सो तू गिरिराज पर जायके श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करि आव. तब रानीनें राजासों कह्यो, जो जैसे हमारी रीत है, तैसे परदानमें दरसन होय तो मैं करूं. तब राजानें रानीसों कही, जो ये ब्रजके श्रीठाकुरजीके दरसनमें परदाको कहा काम है ? सो ये ठाकुर ब्रजके हैं सो काहूको परदा राखत नाहीं. या प्रकार राजाने रानीकों बहोत समजाई, पर रानीने राजाको कह्यो मान्यो नाहीं. तब राजाने श्रीआचार्यजीसों विनती कीनी, जो महाराज ! मैंने रानीकों बहोत समुझायो, परन्तु वह मानत नाहीं, जो वह परदामें दरसन कियो चाहत है. तब श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो वाको परदामें ही ले आव, जो सबतें पहले दरसन करवाय देंगे. तब रानी परदानमें आई और श्रीनाथजीके दसन करन लागी. तब श्रीनाथजी (भक्तोद्धारक स्वरूपसों) सिंहासनसों उठिके सिंहपौरिके किंवाड़ खोलि दिये सो भीड़ वा रानीके ऊपर परी. सो वाके देहके वस्त्र निकसि गये. तब रानी बहोत लजिजत भई. सो जब राजासों रानीने डेरानमें आयके सब समाचार कहे. तब राजाने रानीसों कही, जो मैं तोसों पहले ही कह्यो हतो, जो ये श्रीनाथजी ब्रजके ठाकुर हैं, सो इनने काहूको परदा राख्यो नाहीं है. ता समय परमानन्ददास यह पद गावत हते, सो वाकी एक तुक कही हती. सो पद -

कौन यह खेलिवेकी बानि ।
मदन गोपाललाल काहूकी राखत नाहिन कानि ।।

सो यह सुनिके श्रीआचार्यजी परमानन्ददासकों बरजे, जो ऐसे न कहिये यासों ऐसे कहो, जो ''भली यह खेलिवेकी वानि ।''

भावप्रकाश : सो काहेंते ? जो अब ही परमानन्ददासकों दास पदवी दिये हैं. सो दासभावसों रहे, और बोले, तो प्रभु आगे कृपा करें. जब सख्य भाव दृढ़ होय, तब बराबरीसों वार्ता होय. तासों बिना अधिकार अधिक भाव नाहीं है. जो करे तो नीचे गिरे. सो जब श्रीठाकुरजी सरल भावको दान करें, तब ही बने. दूसरो आसय, श्रीआचार्यजी आपु आपनो स्नेह श्रीगोवर्द्धननाथजीमें राखे सो सर्वोपरि दिखाये, जो स्नेहीसों ऐसे न बोले. जो कार्य सनेही प्रीतिसों न करे सो तासों हू कहिये, जो भलो कार्य किये. ऐसी सनेहकी रीति है. तासों श्रीआचार्यजी आपु परमानन्ददासकों बरजे - ''कौन यह खेलिवेकी बानि ।'' या भांतिसों कबहू न कहिये. कहिवे, बरजिवे लायक तो ब्रजभक्त हैं, सो तासों चाहै तैसें बोलें. तासों तुम ऐसे कहो जो -

'भली यह खेलिवेकी बानि ।''

तब परमानन्ददासने ऐसे ही पद गायो. सो पद -

राग सारङ्ग -
भली यह खेलिवेकी बानि
मदनगुपाललाल काहूकी राखत नाहीन कांनि ।।१।।

अपने हाथ ले देत बनचरन हि दूध भात घृत सानि ।
जो बरजो तो आंक दिखावे पर घर कूदन - दानि ।।२।।

सुनरि जसोदा सुतके करतब यह ले माट मथानि ।
फोड़ि ढ़ोरि दधि डारि अजिरमें कौन सहे नित हानि ।।३।।

ठाढी हंसति नन्दजूकी रानि मूदि कमल मुख पानि ।
'परमानन्ददास' इह जाने बालि बूझि धों आनि ।।४।।

सो यह पद सुनिकें श्रीआचार्यजी आपु बहोत प्रसन्न भये.

भावप्रकाश : या प्रकार सहस्त्रावधि कीर्तन परमानन्ददासने किये. तासों परमानन्ददासके पदनमें बाल लीला भाव, (और) रहस्य हू जलकत हे. सो जा लीलाको अनुभव परमानन्ददासकों भयो, ताही लीलाके पद परमानन्ददास गाये. परन्तु श्रीआचार्यजी आपु परमानन्ददासकों बाललीला रसको दान हृदयमें कियो है, तासों बाललीला गूढ़ पदनमें हू जलकत है.

वार्ताप्रसङ्ग ५ : और एक दिन सगरे भगवदीय सूरदासजी, कुम्भनदासजी तथा रामदासजी आदि वैष्णव मिलिके जहां परमानन्ददास रहत हते तहां इनके घर आये. सो सब भगवदीयकों अपने घर आये देखिके परमानन्ददास अपने मनमें बहोत प्रसन्न भये, जो आज मेरो बड़ो भाग्य है. सो सब भगवदीय मेरे ऊपर कृपा करिके पधारे, ये भगवदीय कैसे हैं, जो साक्षात् श्रीगोवर्द्धननाथजीको स्वरूप ही हैं, तासों आज मो ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजीने बड़ी कृपा करी है.

भावप्रकाश : सो काहेतें ? लो अनेक रूप होयके श्रीठाकुरजी मेरे घर पधारे हैं. सो भगवदीयके हृदयमें श्रीठाकुरजी आपु बिराजत हैं, तासों मेरे बड़े भाग्य हैं. अब मैं कृतकृत्य होय गयो, जो सब भगवदीय कृपा किये हैं. सो प्रथम तो इन भगवदीयनकी न्यौछावरि करी चाहिये. सो ऐसी कहा वस्तु है ? जासों सब भगवदीयनकी न्योछावरि होय ?

पाछें परमानन्ददासने भगवदीय वैष्णवनसों मिलिकें ऊंचे आसन बैठारिके यह पद गयो. सो पद -

राग बिहागोर -
आए मेरे नन्दनन्दनके प्यारे
माला तिलक मनोहर वानो त्रिभुवनके उजियारे ।।१।।

प्रेम सहित उर वसत निरन्तर नेक हू टरत न टारे ।
हृदै कमलके मध्य बिराजत श्रीव्रजराज दुलारे ।।२।।

कहा जानों कौन पुन्य उदय भयो मेरे घर जु पधारे,
'परमानन्द' करत न्योछावरि वारि वारि बहो वारे ।।३।।

ता पाछें दूसरो पद गायो. सो पद -

राग बिहागरो -
हरिजन सङ्ग छिनक जो होई

करें कृपा गिरिधरन जीव पर पातक रहे न कोई ।।१।।

सकल कुतर्क वासना नासे हरि सुमरे सुमरावे ।
जड व्है चतुर मंद बुद्धि निरमल मनमोहन मन भावे ।।२।।

माया काल कछू नहीं व्यापे जो हरिजनकों जाने ।
'परमानन्द' यही मन निश्चय हरिजन गुन हि वखाने ।।३।।

सो ऐसे पद परमानन्ददासने गाये. सो सुनिके सब भगवदीय परमानन्ददासके ऊपर बहोत प्रसन्न भये. तब परमानन्ददासने सङ्ग वैष्णवनसों बिनती कीनी, जो आजु कृपा करिके मेरे घर पधारे सो कछू आज्ञा करिये. तब रामदासजीने पूछी, जो परमानन्ददास ! ब्रजमें सगरो प्रेम ब्रज - भक्तनको है, सो श्रीनन्दरायजी, गोपीजन, ग्वाल, सखानको. तामें सब तें श्रेष्ठ प्रेम किनको है ?

भावप्रकाश : सो काहतें ? जो तिहारी बाललीलामें लगन बहुत है. और तुम कृपापात्र भगवदीय हो, तासो यह सन्देह है सो दूरि करो. सो या प्रकार रामदासजीने परमानन्ददाससों ये पूछी, जो श्रीआचार्यजीके अभिप्रायमें तो गोपीजनको प्रेम बहोत है. और परमानन्ददासने नन्दालयकी लीला और बाललीला बहोत वर्णन किये हैं, तासों श्रीआचार्यजीके हृदयके अभिप्रायकी खबरि परीके नाहीं ? तासों परमानन्ददासकी परीक्षा लेनी.

ता समय परमानन्ददासने यह पद गायो. सो पद -

राग नायकी -
गोपी प्रेमकी ध्वजा

जिन गोपाल कियो बस अपने उर धरि स्याम भुजा ।।१।।

सुक मुनि व्यास प्रसंसा कीनी उद्धव सन्त सराही ।
भूरि भागि गोकुलकी वनिता अति पुनित जगमांही ।।२।।

कहा भयो जू विप्रकुल जन्म्यो जो हरि सेवा नाहीं ।
सोई पुनित दास 'परमानन्द' जो हरि सन्मुख जाहीं ।।३।।

राग कान्हरो -
ब्रजनन सम धर पर कोऊ नाहीं
जिन सब तन मन हरि अर्पन करि मोहन धरे उर मांहीं ।।१।।

सदा सङ्ग डोलत मन मोहन गोपी धरि उर ध्यान ।
गोपी गोपी रटत निरन्तर भूलि गये सब ज्ञान ।।२।।

जा गोपीकी पदरज उद्धव ब्रह्मादिक सब जाचें ।
ता गोपी गृह माखन काजें सब दिन गिरिधर नाचे ।।३।।

गोपीजन मैं कौन बताऊं हरि हू पार न पावे ।
तो हों मन्द बुद्धि कहा जानों 'परमानन्द' गुन गावें ।।४।।

सो यह पद परमानन्ददासने गाये तब सगरे वैष्णव कहे, जो परमानन्ददास ! तुम धन्य हो. या प्रकार सगरे वैष्णव प्रसन्न होयके परमानन्ददासकी सराहना करत बिदा होय अपने घर आये. ता पाछे परमानन्ददासने बहोत दिन तांई श्रीगोवर्द्धननाथजीके कीर्तनको सेवा कीनी.

वार्ताप्रसङ्ग ६ : ता पाछे एक दिन परमानन्ददास श्रीगुसांईजीके और श्रीनवनीतप्रियजीके दरसनकों गोपालपुर तें श्रीगोकुल आये, सो दरसन करिके रात्रि तहां रहे. पाछे प्रातःकाल श्रीगुसांईजी स्नान करिके श्रीनवनीतप्रियजीके मन्दिरमें पधारे तब परमानन्ददासकों बुलाये ? परमानन्ददास आगे आय आप दण्डवत् किये. सो तब श्रीगुसांईजी आपु परमानन्ददाससों कहे, जो श्रीठाकुरजीकों सगरी लीला ब्रजकी बहोत प्रिय है. सो नित्य लीला ब्रजकी श्रीठाकुरजीकों सुनावे, सो तो कोई कालमें हू पार पावे नाहीं. काहेतें ? जो एक लीलाको पार न पैये, तो सगरी लीला कौन गावे. परन्तु मैं एक कीर्तन करि देत हों, तामें सगरी ब्रजकी लीलाको अनुभव है. सो तुम या समय नित्य गाईयो. तब परमानन्ददास कहे, जो महाराज ! वह पद कृपा करिके बताइये. सो श्रीगुसांईजी तो मारगके चलायवे बारे हैं सो भाषाके पद करे नाहीं. तासों संस्कृतमें कीर्तन गायो. सो पद -

राग रामकली -
मङ्गल मङ्गलं व्रजभुवि मङ्गलम्
मङ्गलमिह श्रीनन्दयसोदा नामसुकीर्तनमेतद्रुचिरोत्सङ्गसुलालितपालितरूपम् ।।१।।

श्रीश्रीकृष्ण इति श्रुतिसारं नाम स्वात;जनाशयतापापहमिति मङ्गलरावम् ।
ब्रजसुन्दरीवयस्यसुरभिवृन्द मृगीगणनिरूपमभावा मङ्गलसीन्धुचया ।।२।।

मङ्गलमीषत्स्मितयुतमीक्षणभाषण मुन्नतनासापुटगतमुक्ताफल चलनम् ।

कोमलचलदङ्गुलिदल सङ्गत वेणुनिनाद विमोहतिवृन्दावनभुवि जाताः ।।३।।

मङ्गलमखिलं गोपी शितुरतिमन्थरगति विभ्रम मोहितरासस्थितगानम् ।
त्वं जय सततं श्रीगोवर्द्धनधर पालय निजदासान् ।।४।।

सो यह पद श्रीगुसांईजी आपु गायके परमानन्ददासकों गवाये. सो परमानन्ददास 'मङ्गल मङ्गलं' गाये. तब मङ्गल रूप परमानन्ददासने और हू पद गाये. सो पद -

राग भैरव -
मङ्गल माधौ नाम उचार
मङ्गल बदन कमलकर मङ्गल वदन ।
कमलकर मङ्गल मङ्गलजनकी सदा सम्हार ।।१।।

खेलत मङ्गल पूजत मङ्गल गावत मङ्गल गीत उदार ।
मङ्गल श्रवन कथारस मङ्गल मङ्गल तन वसुदेव कुमार ।।२।।

गोकुल मङ्गल मधुवन मङ्गल मङ्गल रुचि वृन्दावनचन्द ।
मङ्गल करन गोवर्द्धनधारी मङ्गल भेख जसोदानन्द ।।३।।

मङ्गलधेनु रेनु भुवमङ्गल मधुर बजावत वेनु ।

मङ्गल गोपवधू परिरम्भन मङ्गल कालिन्दी पय फेनु ।।४।।

मङ्गल चरनकमलदल मङ्गल मङ्गल कीरति जगत निवास ।
अनुदित मङ्गल ध्यान धरत मुनि मङ्गल मति 'परमानन्ददास' ।।५।।

सो यह पद परमानन्ददासने गायो, ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु मङ्गलभोग सरायके मङ्गला - आरती किये. ता समय परमानन्ददासने यह पद गायो. सो पद -

राग भैरव -
मङ्गल आरती करि मन मोर
भरन निसा बीती भयो भोर ।।१।।

मङ्गल बाजत जालर ताल ।
मङ्गल रूप उठे नन्दलाल ।।२।।

मङ्गल बाजत बीन मृदङ्ग ।
मङ्गल बांसुरी सरस उपङ्ग ।।३।।

मङ्गल गावत सब मिलि कोर ।
मङ्गल धूपदीप करि जोर ।।४।।

मङ्गल उदयो मङ्गल रास ।
मङ्गल मति 'परमानन्ददास' ।।५।।

सो या प्रकार श्रीगुसांईजी कृत 'मङ्गल मङ्गलं' के अनुसार परमानन्ददासने बहोत कीर्तन किये, और श्रीगुसांईजी कृत 'मङ्गल मङ्गलं' पद नित्य गावते.

भावप्रकाश : यामें सगरी ब्रजलीला है, सो ठाकुरजीकों नित्य सुनावत हैं. और 'मङ्गल मङ्गलं' के पाठ तें ब्रजलीलाको सब पाठ होय. सो तहां मङ्गलाको पद परमानन्ददासने कियो सो तामें कहे - ''मङ्गल तन वसुदेवकुमार ।'' सो तहां यह सन्देह होय, जो परमानन्ददास तो नन्दनन्दनके उपासक हैं. सो वासुदेवकुमार ब्रजलीलामें कहे, ताको कारन कहा ? तहां कहत हैं, जो वेणुगीत और युगलगीतमें 'देवकीसुत' गोपिकानने कहे, सो ये कुमारिकाके भावतें. सो काहेतें ? जो कुमारिका श्रीयशोदाजीकों माता कहते, तासों श्रीठाकुरजीमें पतिभाव है. याहीसों वसुदेव - सुत कहि पतिभाव दृढ करत हैं. जो यशोदा सुत कहें, तो भाई बहनको भाव होय.

पाछे परमानन्ददास श्रीगोवर्द्धनधरके दसरनकों श्रीगोकुल तें श्रीगिरिराज आये. सो तहां मङ्गला आरती पहलै 'मङ्गल मङ्गलं' पद परमानन्ददासने गायो. सो श्रीगोवर्द्धनधरके यहां 'मङ्गल मङ्गलं' की रीति भई. सो वे परमानन्ददास ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते.

वार्ताप्रसङ्ग ७ : और जब जन्माष्टमी आवती तब श्रीगुसांईजी आपु श्रीनवनीप्रियजीकों पञ्चामृत स्नान करवायके सिंगार करि श्रीगिरिराज पर्वत ऊपर पधारिके श्रीगोवर्द्धननाथजीके सिंगार करते. ता पाछे राजभोगसों पहोंचिके फेरि श्रीगिरिराज तें श्रीगोकुल आवते. सो तहां श्रीनवनीतप्रियजीकों मध्यरात्रिकों जन्मकी रीति करिके पलना जुलाय श्रीनाथजीके यहां नन्दमहोत्सव करते. सो जब जन्माष्टमी आई, तब श्रीगुसांईजी आप परमानन्ददासजीकों सङ्ग लेयके गिरिराजसों श्रीगोकुल पधारें. सो जन्माष्टमीके दिन श्रीगुसांईजी आपु नवनीतप्रियजीकों

अभ्यङ्ग कराये. ता समय परमानन्ददासने यह बधाई गाई. बधाई -

राग धनाश्री -
मिलि मङ्गल गावहु माई, सबे मिलि
आजु लालकौ जन्म दिवस है बाजत रङ्ग बधाई ।।१।।

आंगन लींपो चोक पुरावो विप्र पढन लागे वेद ।
करहु सिंगार स्यामसुन्दरकों चोवा चन्दन मेद ।।२।।

आनदभरी बावा नन्दजूकी रानी फूली अङ्ग न समाई ।
''परमानन्ददासकौ ठाकुर'' बहुत न्योछावरि पाई ।।३।।

ता पाछे श्रीगुसांईजीने श्रीनवनीतप्रियजीके सिंगार करिके तिलक कियो. ता समय परमानन्ददासने यह पद गायो. सो पद -

राग सारङ्ग -
आज बधाईको दिन नीकौ
नन्दघरनी जमुमति जायो है लाल भांवतोजीकौ ।।१।।

पञ्च शब्द बाजे बाजत हैं घर - घर तें आयो टाको ।
मङ्गल कलश लिए व्रजसुन्दरि ग्वाल बनावत छीकौ ।।२।।

देति असीस सकल गोपीजन जीवो कोटि बरीसो ।
'परमानन्ददासकौ ठाकुर'' गोप भेख जगदीसो ।।३।।

राग सारङ्ग -
घर घर ग्वाल देत हैं हेरी
बाजत तालमृदङ्ग बासुंरी ढोल दमामा भेरी ।।१।।

लूटत झटपत खात मिठाई कही न सकत कोऊ फेरी ।
उनमद ग्वाल बदत नहीं काहू ब्रजवनिता सब घेरी ।।२।।

ध्वजा पताका तोरन माला सबे सिंगारी सेरी ।
जै जै कृष्ण कहत 'परमानन्द' प्रगट्यो कंस बैरी ।।३।।

या प्रकार परमानन्ददासने बहोत पद गाये. ता पाछें अर्द्ध रात्रिके समय श्रीगुसांईजी आपु जन्म करायके श्रीनवनीतप्रियजीकों पालनेमें पधराये, श्रीनन्दरायजी श्रीयसोदाजी, गोपी ग्वालको भेख धराये. ता समय परमानन्ददासने यह पद गायों. सो पद -

राग धनाश्री -
जसोदा रानी सोवन फूले फूली
तुम्हारे पुत्र भयो कुलमण्डन वासुदेव समतूली ।।१।।

देति असीस बिरध जे ग्वालिनि गाम - गाम तें आई ।
ले ले भेट सवै मिलि निकसी मङ्गल चार बधाई ।।२।।

ऐसे दसक होइ जो औरे तो सब कोऊ सचुपावे ।
बाढौ बंस नन्द बाबाकौ 'परमानन्द' जीय भावे ।।३।।

भावप्रकाश : सो या पदमें परमानन्ददासजी यह कहे, जो ''ऐसे दसक होय जो औरे तो सब कोऊ सचु पावे''. सो भगवदीयनके वचन सत्य करिवेके लिये श्रीगुसांईजीके बालक सातों और श्रीगुसांईजी तथा श्रीआचार्यजी तथा श्रीगोवर्द्धननाथजी सो ये दस स्वरूप प्रगट होयके सबकों सुख दिये हैं. सो 'सब' माने सगरे दैवी पुष्टिमार्गीय. सो या प्रकारसों भाव सहित परमानन्ददासजीने कीर्तन गाये.

पाछें श्रीनन्दरायजी और गोपी ग्वाल, वैष्णवनके जूथ, अपने लालजी सब (कों) लेके दधिकांदो किये. तब परमानन्ददासको चित्त आनन्दमें विक्षिप्त होय गयो. वा सयम परमानन्ददास नाचन लागे और यह पद गायो. सो वा प्रेममें परमानन्ददास रागको हू क्रम भूलि गये. सो रात्रिको तो समय और सारङ्गमें गाये. सो पद -

राग सारङ्ग
आज नन्दरायके आनन्द भयो
नाचत गोपी करति कोलाहल मङ्गल चार ठयो ।।१।।

राती पीयरी चोली पहेरे नौतम जूमक सारी ।

चोवा चन्दन अङ्ग लगाये सेन्दुर मांग संवारी ।।२।।

माखन दूख दह्यो भरि भाजन सकल ग्वालले आए ।
बाजत बेनु पखान महुवरि गावत गीत सुहाये ।।३।।

हरद दूब अक्षत दधि कुमकुम आंगन बाढी कीच ।
हसत परस्पर प्रेम मुदित मन लागि लागि भुज बीच ।।४।।

चहुं वेद ध्वनि करत महामुनि पञ्च शब्द ढम ढोल ।
'परमानन्द' बढ्यो गोकुलमें आनन्द हृदै कलोल ।।५।।

यह पद गाये पाछे परमानन्ददास प्रेममें मूर्छा खाय भूमिमें गिर पड़े. तब श्रीगुसांईजी आपु अपने हस्तकमलसों परमानन्ददासकों उठायके अञ्जुलिमें जल लेके वेदमन्त्र पढ़िके आपु परमानन्ददासके ऊपर छिरके. सो तब उच्छलित प्रेम जो विकल करतो, सो हृदयमें स्थिर भयो. सो परमानन्ददास सगरी लीलाको अनुभव किये, और गान किये. या प्रकार परमानन्ददासके ऊपर श्रीगुसांईजीनें कृपा करी. ता पाछें यह पलनाको पद परमानन्ददासने गायो.

राग बिलावल
हालरो हुलरावति माता ।
बलि बलि जाय घोष सुख दाता ।।१।।

अति लोहितकर चरन सरोजे ।
जे ब्रह्मादिक मनसा खौजे ।।२।।

जसुमति अपनो पुन्यविचारे ।
वारंवार मुख कमल निहारे ।।३।।

अखिल भुवन पति गरूडागामी ।
नन्द सुवन 'परमानन्दस्वामी ।।४।।

भावप्रकाश : सो या भांतिसों ''अखिल भुवनपति गरुडागामी'' ऐसे परमानन्दजीने कह्यो. सो अखिल भुवन - पति यातें, जो श्रीभगवान् गरुड पैं बिराजमान सो (तो) सब जगतके पति हैं. और नन्दसुवन ठाकुर, सो परमानन्ददासने कही, जो ये मेरे स्वामी हैं.

सो यह कीर्तन सुनिके श्रीगुसांईजी आपु परमानन्दकी ऊपर बहोत प्रसन्न भये. ता पाछे परमानन्ददासने यह पद कान्हरो रागमें करिके गायो. सो प्रेममें रागको क्रम नाहीं - लीलाको क्रम. सो जेसी लीला करी, सो स्फुरी. सो तैसे परमानन्ददास गाये. सों पद -

राग कान्हरो -
रानीजु तिहारो घर सुबस बसो
सुनहु जसोदा तिहारे ढोटाकौ न्हात हु जिनि बार खसो ।।१।।

कोऊ करत वेद मङ्गल धुनि कोऊ गावो कोऊ हसो ।

निरखि निरखि मुख कमल नयनकौ ।
आनन्द प्रेम हिये हुलसो ।।२।।

देति असीस सकल गोपीजन कोऊ अति आनन्द लसौ ।
'परमानन्द' नन्द घर आनन्द पुत्रजन्म भयो जगत जसो ।।३।।

सो यह असीसको पद परमानन्दने गायो. तब श्रीगुसांईजी आपु अपने पुत्र श्रीगिरिधरजीकों श्रीनवनीतप्रियजीके पास राखिके दधिकादों किये. ता पाछे परमानन्ददासकों सङ्ग लेके श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये. सो दधिकादों देखिके परमानन्ददास लीलारसमें मगन होय गये. ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोवर्द्धननाथजीकों राजभोग धरिके बाहिर आये. तब श्रीगुसांईजी आपु परमानन्ददासकी अलौकिक दसा देखके कहे, जो जैसे कुम्भनदासको किसोर लीलामें निरोध भयो, सो तैसे बाललीलामें परमानन्ददासको निरोध भयो है. पाछें परमानन्ददास श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करि, पर्वत तें नीचे उतरे. सो गोवर्द्धननाथजीकी ध्वजाकों दण्डवत् करि, सुरभी कुण्ड ऊपर आयके अपने ठिकाने कुटीमें आय बोलिवो छोड़ि दियो. सो नन्दमहोत्सवके रासमें मगन होयके परमानन्ददास अपनी देह छोड़िवेको विचार करिके सुरभी कुण्ड ऊपर आयके सोये. और यहां श्रीगुसांईजी आपु श्रीनाथजीकी राजभोग आरती करिके अनोसर करवाये. पाछें श्रीगुसांईजी आपु सेवकनसों पूछै, जो आज राजभोग आरतीके समय परमानन्ददासको नाहीं देखे, सो कहां गये ? तब एक वैष्णवने श्रीगुसांईजीसों आय बिनती कीनी, जो महाराज ! परमानन्ददास तो आजु विकल से दीसत हैं, और काहूसों बोलत नाहीं, और सुरभी कुण्ड पें जायके सोये हैं. तब श्रीगुसांईजी आपु वा वैष्णवकों सङ्ग ले सुरभी कुण्ड ऊपर पधारिके परमानन्ददासके पास आये. परमानन्ददासके माथे पर श्रीहस्त फेरिके श्रीगुसांईजी आपु परमानन्ददाससों कहें, जो परमानन्ददास ! हम तुम्हारे मनकी जानत हैं. जो अब तिहारो दरसन दुर्लभ भयो. तब परमानन्ददासने उठिके श्रीगुसांईजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् किये. ता समय यह पद परमानन्ददासने गायो. सो पद -

राग सारङ्ग -
प्रीति तो नन्दनन्दनसों कीजे
सम्पति बिपति परे प्रतिपाले कृपा करें तो जीजे ।।१।।

परम उदार चतुर चिन्तामनि सेवा सुमरन माने ।
चरन कमलकी छाया राखे अन्तरगतिकी जानें ।।२।।

वेद पुर न भागवत भाखे कियो भक्तन मन भायो ।
'परमानन्द' इन्द्रकौ वैभव विप्र सुदामा पायो ।।३।।

सो यह पद परमानन्ददासने श्रीगुसांईजीकों सुनायो.

भावप्रकाश : सो परमानन्दजीने या पदमें श्रीगुसांईजीसों प्रार्थना कीनी, जो प्रीति हू तुमसों करनी सो सदा कृपा एकरस करो. सो परम कृपालु, अपने हस्त कमलकी छाया तें जनकों राखत हैं. या समय हू मोकों दरसन दे मेरे मस्तक ऊपर श्रीहस्तकमल धरे. सो मेरे अन्तःकरणमें, जो मेरो मनोरथ हतो सो पूरन कियो. सो वेद पुरान सब ही कहत हैं, जो सदा भक्तनको भायो करि आनन्द दिय हैं. जैसे एक समें इन्द्रकी पदवी लायक जीव कोई न देखे तब भगवान् ही इन्द्र होयके इन्द्रको कार्य चलाये. सो प्रसाद वैष्णव सुदामा भक्तकों दिये. तामें सुदामाकों वैभव पाये हू मोह न भयो. सो तेसें आपु जो ब्रजमें लीला करत हैं सो परमानन्दरूपसों कृपा करके मोकों दान दिये. सो आपके गुन मैं कहां तांई कहौं. ऐसी प्रार्थना परमानन्ददासजी श्रीगुसांईजीसों किये.

यह पद सुनिके श्रीगुसांईजी आप बहुत प्रसन्न भये. ता समय एक वैष्णवने परमानन्ददाससों कह्यो. जो मोकों कछू साधन बतावो

सो मैं करों. तातें श्रीठाकुरजी आप मेरे ऊपर प्रसन्न होयके कृपा करें. तब परमानन्ददास वा वैष्णवसों प्रसन्न होंयके कहे, जो तुम मन लगायके सुनो. जो सुगम उपाय है सो मैं कहूं. या बातकों मन लगायके सुनोगे तो फलसिद्धि होयगी. सो या प्रकार प्रीतसों समाधान करिके परमानन्ददासने एक पद वा वैष्णवकों सुनायो. सों पद -

राग भैरव -
प्रात समै उठि करिए श्रीलक्ष्मन सुत गान
प्रगट भये श्रीवल्लभ प्रभु देत भक्ति दान ।।१।।

श्रीविटठलेस महाप्रभु रूप ही सुहान ।
श्रीगिरिधर श्रीगिरिधर उदय भयो भान ।।२।।

श्रीगोविन्द आनन्दकन्द कहा बरनों गुनगान ।
श्रीबालकृष्ण बालकेलि रूप ही सुहान ।।३।।

श्रीगोकुलनाथ प्रगट कियो मारग बखान ।
श्रीरघुनाथलाल देख मन्मथ ही लजान ।।४।।

श्रीयदुनाथ महाप्रभु पूरन भगवान ।
श्रीघनश्याम पूरन काम पोथीमें ध्यान ।।५।।

पाण्डुरङ्ग विटठलेस करत वेद गान ।
'परमानन्द' निरखि लीला थके सुर विमान ।।६।।

सो या प्रकार यह कीर्तन परमानन्ददासने गायो. यह सुनिके श्रीगुसांईजी और सगरे वैष्णव प्रसन्न भये. ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु परमानन्ददाससों पूछे, जो परमानन्ददास ! अब तिहारो मन कहां है ? तब परमानन्दादसने यह कीर्तन सारङ्ग रागमें गायो. सो पद -

राग सारङ्ग -
राधे बैठी तिलक संवारति
मृगनैनी कुसुमाकर धरि नन्दसुवनकौ रूप बिचारति ।।१।।

दरपन हार सिंगार बनावति बासर सम जुग ढारति ।
अन्तर प्रीति स्यामसुन्दरसों हरि सङ्ग केलि सम्हारति ।।२।।

बासर गत रजनी ब्रज आवत मिलत गोवर्द्धनधारी ।
'परमानन्दस्वामी' के सङ्गम मुदित भई ब्रजनारी ।।३।।

सो या प्रकार जुगल स्वरूपकौ लीलामें मन लगायके परमानन्ददास देह छोड़िके श्रीगोवर्द्धननाथजीकी लीलामें जायके प्राप्त भये. पाछें श्रीगुसांईजी गोपालपुरमें आयके स्नान करिके पर्वतके ऊपर श्रीगोवर्द्धनाथजीकों उत्थापन कराये. पाछें सेन पर्यन्त सेवासों पहोंचिके अनोसर करवाय पर्वतें उतरि अपनी बैठकमें आय बिराजे. तब सब वैष्णवननें परमानन्ददासकी देहको अग्निसंस्कार कियो और पाछें गोपालपुरमें आयके श्रीगुसांईजीके आगे बहोत बड़ाई करन लागे. सो ता समय श्रीगुसांईजी आपु उन वैष्णवनके आगे यह बचन श्रीमुखसों कहे, जो

ये पुष्टिमारगमें दोइ 'सागर' भये. एक तो सूरदास और दूसरे परमानन्ददास. सो तिनको हृदय अगाधरस, भगवल्लीला रूप जहां रत्न भरे हैं. सो या प्रकार श्रीगुसांईजी आपु श्रीमुखसों परमानन्ददासकी सराहना किये. सो वे परमानन्ददासजी श्रीआचार्यजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते. जिनके ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सदा प्रसन्न रहते. तातें इनकी वार्ताको पार नाहीं. सो अनिर्वचनीय है, सो कहां तांई कहिये.... ।।८२।।

९०-कुम्भनदासजी गोरवा क्षत्री

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक कुम्भनदासजी गोरवा क्षत्री, जमुनावतेमें रहते, जिनके पद अष्टछापमें गाइयत है, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : ये कुम्भनदासजी लीलामें श्रीठाकुरजीके 'अर्जुन' सखा अन्तरङ्ग तिनको प्रागट्य हैं. सो दिवसकी लीलामें तो अर्जुन सखा हैं और रात्रिकी लीलामें विसाखा सखी हैं, सो श्रीस्वामिनीजीकी. सो तिनको (विसाखाजीको) दूसरो स्वरूप कृष्णदास मेघन, सदा पृथ्वी परिक्रमामें श्रीआचार्यजीके सङ्ग रहते, और कुम्भनदासजी सदा श्रीगोवर्द्धननाथजीके सङ्ग रहते. सो या भावतें कुम्भनदासजी सखाभावमें अर्जुन सखारूप, और सखी भावमें विसाखारूप हैं. सो गिरिराजमें आठ द्वार हैं. तामें एक द्वार अन्योर पास है. सो तहांकी सेवाके ये मुखिया हैं. और गामको नाम 'जमुनावता' यासों कहत हैं, जो श्रीयमुनाजीके प्रवाह, सारस्वत कल्पमें दोय हते. एक तो जमुनावता होयकें आगरेके पास जात हतो, और एक चीरघाट होय श्रीगोकुल होयकें. आगें दोऊ धारा एक मिलि सारस्वत कल्पमें बहती. और ता समय आगरा आदि गाम नाहीं हतो. दोऊ धारा एक मिलिके आगेको गई हती. सो चीर घाट तें धार होयके गिरिराज आवती, तासों पञ्चाध्याईको रास 'परासोली' में चन्द्रसरोवर ऊपर किये. सो ब्रजभक्त, अन्तरधानके समय चन्द्रसरोवरसों द्रुमलतानसों पूछत चली सो गोविन्दकुण्डके पास होयके अप्सराकुण्ड ऊपर आयके श्रीठाकुरजीके चरणारविन्दके दरसन भये, तासों अप्सराकुण्ड ऊपर चरनचिन्ह हैं. तहां ते आगे चलिके राधा सहचरीकी बेनी गुही, सो सिन्दूर, काजर सगरो सिंगार कियो तासों वहां सिन्दूरी, कजली और बाजनी सिला है. ता पाछें जब रुद्रकुण्ड ऊपर आयके राधा सहचरीकों मान भयो. सो श्रीठाकुरजीसों कह्यो, जा मोसों तो चल्यो नाहीं जात है. तब श्रीठाकुरजी कांधे चढन (की कहिके ता) के मिष वृक्ष तरे ही अन्तर्धान भये. तब राधा सहचरी रुदन कियो, जो -

हा नाथ रमणप्रेष्ठ क्वासि - क्वासि महाभुज !
दास्यास्ते कृपणया मे सखे दर्शय सन्निधिम् ।

तासों वा कुण्डको नाम 'रुद्रकुण्ड' है. सो अब तांई लोग वासों रुद्रकुण्ड कहत हैं. पाछें तहां सब गोपी आय मिली. पाछें आगे चलिके 'जान' 'अजान' वृक्षसों पूछते - पूछते जमुनावता श्रीजमुनाजीकी पुलिनमें गोपीका गीत ('जयति तेऽधिकं') गायके सब भक्तनने रुदन कियो. तब श्रीठाकुरजी आय प्रगट हायके फेरि 'परासोली' चन्द्रसरोवर पें रास किये, सो श्रम भयो. तब श्रीयमुनाजीके जलमें जलविहार किये. सो या प्रकार सारस्वत कल्पकी पञ्चाध्याईको रास श्रीगिरिराजके पास है. और ब्रजभक्त ढूढत - ढूढत श्रीठाकुरजीके मिलनार्थ दूरि गई. सो अंधियारो देखिके उहांते फिरे. -

तमः प्रविष्टमालक्ष्य ततो निववृतुर्हरेः । इति.

सो यह अंधियारो श्यामढाकके आगे 'सामई' गाम हैं. सो तहां स्याम - वन है, सो महासघन. तातें वहां पञ्चाध्याईके अनुसार सगरे स्थल दरसन देत हैं. और कालीदह घाटतें हू श्रीवृन्दावन कहत हैं. तहां हू श्रीवृन्दावन कहत हैं. तहां हू बंसीबट है. तहां अनेक श्वेतवाराहकल्पमें पञ्चाध्याईको रास उहां ही किये हैं. और सारस्वतकल्पमें शरदऋतु किए, सो 'परासोली' श्रीगिरिराज ऊपर किये. पाछे वसन्त चैत्र वैसाखको रास केसीघाट पास बंसीबट नीचे किये. सो या प्रकार रास दोऊ ठिकाने. परन्तु मुख्य पञ्चाध्याई सारस्वतकल्पको रस गिरिराजको. या प्रकार लीलाके भेद हैं. तासों 'जमनावता' में एक धारा श्रीयमुनाजीकी सारस्वतकल्पमें बहती, तासों वा गामको नाम 'जमुनावता' है, सो नन्दगाम बरसानेके मध्य सङ्केत पास धारा होयके श्रीजमुनावता आई. तासों सङ्केतके पास श्रीयमुनावता आई. तासों सङ्केतके पास श्रीयमुनाजीके पधारिवेकी चिन्ह है. सो या प्रकार यातें कह्यो, जो अबके जीवको विश्वास दृढ होत नाहीं है. सो सब चिन्हनकों देखे, सुने तब विश्वास होय. और जब फल सिद्ध होय, तब भाव बढ़े, तासों खोलिके कहे.

वार्ताप्रसङ्ग १ : सो जमुनावतामें कुम्भनदास रहते. सो परासोली चन्द्र सरोवरके ऊपर कुम्भनदासके बापदादाके खेत हते. तहां

कुम्भनदास खेती करते. सो परासोलीमें कुम्भनदास खेत अर्थ बहोत रहत हते. उन कुम्भनदासकों बालपन तें गृहासक्ति नाहीं, और जूठ बोलते नाहीं, और पापादिक कर्म नाहीं करते. सूधे ब्रजवासीकी रीतिसों रहते. जो जब कुम्भनदास बड़े भये. तब 'जेत' (गांव) के पास बहुलावन हैं तहां कुम्भनदासको ब्याह भयो, सो स्त्री सधारन आई, लीला सम्बन्धी तो नाहीं, सो उद्धार होयगो. परन्तु अब ही श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीगिरिराज ऊपर प्रगटे नाहीं. जब श्रीगोवर्द्धननाथजी अपने पास बुलावेंगे, तब श्रीआचार्यजी आपु सरन लेयगें, और तब ये भगवदीय प्रसिद्ध होयगें. सो एक समय श्रीआचार्यजी आपु पृथ्वी - परिक्रमा करत दक्षिनमें जारखण्डमें पधारे. सो तब श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीआचार्यजीसों कहे, जो हम श्रीगोवर्द्धनमें प्रगटे हैं, सो आपु यहां आयके हमकों बाहिर पधारायके हमारी सेवा जगतमें प्रगट करि प्रकास करो. तब श्रीआचार्यजी आपु पृथ्वी परिक्रमा उहां झारखण्डमें राखिके सूधे ब्रजकों पधारे. तब दामोदरदास हरसानी, कृष्णदास मेघन, भाधव भटट, नारायनदास और रामदास सिकन्दरपुर वारे ये पांच सेवक श्रीआचार्यजीके सङ्ग हते. सो तब श्रीआचार्यजी श्रीगोवर्द्धन पर्वतके नीचे अन्योरमें सदू पाण्डेके द्वारपे आय बिराजे. पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजीके प्रागट्यको प्रकार श्रीआचार्यजी सदू पाण्डे, और उनके भाई मणिकचन्द पाण्डे, नरो भवानी, ये सब सेवक भये हते तिनसों पूछ्यो. सो सब प्रकार ऊपर सदू पाण्डकी वार्तामें कहि आय हैं. पाछें रामदास चौहान पूछरी पास गुफामें रहते सो सेवक भये, तिनकों श्रीआचार्यजीने श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवा सोंपी. सो रामदास ब्रजवासी आदि और हू सेवक भये. सो कुम्भनदास 'जमुनावता' गाममें रहते. तहां ये समाचार सुने जो एक बड़े महापुरुष आन्योरमें आये हैं. सो श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीठाकुरजी श्रीगोवर्द्धन पर्वतमेंसों प्रगट करे हैं, और सदू पाण्डे आदि ब्रजवासी बहोत लोग सेवक भये हैं. तब कुम्भनदास सुनिके अपनी स्त्रीसों कहे, जो अन्योरमें चलिके श्रीआचार्यजीके सेवक हूजिये, सो इनकी कृपा तें श्रीठाकुरजी कृपा करेंगे. सो तब स्त्रीने कही, जो मैं चलूंगी, जो मेरे कोई सन्तति बेटा नहीं है, सो वे महापुरुष देंय तो होय. सो या प्रकार बिचारि करिके दोऊ जनें श्रीआचार्यजीके पास आयके दण्डवत् करी. सो तब श्रीआचार्यजी आपु पूछे, जो कुम्भनदास ! आये ? सो तब कुम्भनदास दण्डवत् करि बिनती करी, जो महाराज ! बहोत दिन तें भटकत हतो, सो अब आपु मो ऊपर कृपा करो. सो कुम्भनदास तो दैजीजीव हैं, सो श्रीआचार्यजीके स्वरूपको ज्ञान होय गयो. तब श्रीआचार्यजी आपु कुम्भनदाससों कहे, जो तुम स्त्री पुरुष दोउ जने न्हाय आवो. तब दोऊ जने सङ्कर्पणकुण्डमें न्हायके श्रीआचार्यजीके पास आये. तब श्रीआचार्यजी आपु कुम्भनदास और उनकी स्त्रीकों नाम सुनाये. तब वा स्त्रीने श्रीआचार्यजीसों बिनती करी, जो महाराज ! आपु बड़े महापुरुष हो, मेरे बेटा नाहीं है, तासों आपु

कृपा करिके देऊ. तब श्रीआचार्यजी आपु कृपा करिके प्रसन्न होयके कहे, जों तेरे सात बेटा होयगें, तू चिन्ता मति करे. सो तब वह स्त्री अपने मनमें बहोत प्रसन्न भई. तब कुम्भनदास अपनी स्त्रीसों कही, जो यह कहा तेनें श्रीआचार्यजीके पास मांग्यो. जो श्रीठाकुरजी मांगती तो श्रीठाकुरजी देते. तब वा स्त्रीने कही, जो मोकों चहियत हतो सो मैंने मांग्यो, और जो तुमकों चाहिये सो तुम मांगि लेहु. तब कुम्भनदास चुप होय रहे. ता पाछें श्रीआचार्यजी आपु श्रीगोवर्द्धनधरको छोटो सो मन्दिर बनवायके ता मन्दिरमें श्रीगोवर्द्धनधरकों पधरायके रामदास चौहानकों सेवाकी आज्ञा दीनी. सो रामदास, सदू पाण्डे आदि ब्रजवासी सब सीधो सामग्री ले आवते. सो दूध दहीं माखन श्रीगोवर्द्धननाथजीकों भोग धरिके ता महाप्रसादसों रामदास निर्वाह करते. और ब्रजवासी, जो सेवक कुम्भनदास आदि भक्त, तिनकों श्रीआचार्यजीने आज्ञा दीनी, जो ये श्रीगोवर्द्धननाथजी हमारो सर्वस्व हैं, तासों इनकी सेवामें तुम तत्पर रहियो, और श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवा सावधानीसों करियो. सो कुम्भनदास कीर्तन बहुत सुन्दर गावते. कण्ठहू इनको बहोत सुन्दर हतो. तासों कुम्भनदाससों श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो तुम समय - समय के कीर्तन नित्य श्रीगोवर्द्धननाथजीकों सुनाइयो. सो प्रातःकाल श्रीआचार्यजी श्रीगोवर्द्धननाथजीकों जगायके कुम्भनदासकों कहे, जो कछु भगवल्लीला वरणन करो. तब कुम्भनदास श्रीगोवर्द्धननाथजीकों दण्डवत् करिके पहले यह पद गायों. सो पद -

राग बिलावल -
सांजके सांचे बोल तिहारे
रजनी अनत जगे नन्दनन्दन आए निपट सवारे ।।१।।

आतुर भए नीलपट ओढे पीयरे बसन बिसारे ।
'कुम्भनदास प्रभु' गोवर्द्धनधर भले बचन प्रतिपारे ।।२।।

सो यह कीर्तन कुम्भनदासके मुखतें सुनिके श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो कुम्भनदास ! निकुञ्ज - लीला सम्बन्धी रसको अनभुव

भयो ? तब कुम्भनदासने दण्डवत् कीनी और कह्यो, जो महाराज ! आपुकी कृपातें. तब श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो तिहारे बड़े भाग्य हैं. जो प्रथम प्रभु तुमकों प्रमेय बलकों अनुभव बताये, तासों तुम सदा हरिरसमें मगन रहोगे. तब कुम्भनदासने बिनती कीनी जो महाराज ! मोकों तो सर्वोपरि याही रसको अनुभव कृपा करिके दीजिये. सो कुम्भनदास सगरे कीर्तन युगल स्वरूप सम्बन्धी किये. सो बधाई, पलना, बाललीला गाई नाहीं. सो ऐसे कृपा पात्र भगवदीय भये. या प्रकार कुम्भनदासजी आदि वैष्णव ऊपर कृपा करि श्रीआचार्यजी दक्षिके झारखण्डमें पृथ्वी - परिक्रमा छोडिके पधारे हते, सो फेरि जीवनकी ऊपर कृपा करनके अर्थ परिक्रमा करन पधारे हते, सो फेरि जीवनकी ऊपर कृपा करनके अर्थ परिक्रमा करन पधारे.

वार्ताप्रसङ्ग २ : और यहां कुम्भनदासजी नित्य सवारे 'जमुनावता' तें श्रीगिरिराज ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों आवते सो समय - समय के कीर्तन करते. श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु कुम्भनदाससों सानुभावता जनावते, सो सङ्ग खेलन लागे. और खेलकी वार्ता करते. पाछें कछुक दिनमें एक म्लेच्छको उपद्रव भयो सो सगरे गामकों लूटत मारत पश्चिम तें आयो. ताके डेरा श्रीगिरिराजतें पांच कोस आगे भये. तब सदू पाण्डे, माणिकचन्द पाण्डे, रामदासजी, कुम्भनदासजी ये चारि वैष्णवननें अपने मनमें विचार कियो, जो यह म्लेच्छ बुरो आयो है, जो भगवद् धर्मको द्वेषी है. तासों कहा विचार करनो ? सो ये चारों वैष्णव श्रीनाथजीके अन्तरङ्ग हते, सो इनसों श्रीगोवर्द्धननाथजी वार्ता करते. तासों इन चार्यों वैष्णवननें मन्दिरमें जायके श्रीनाथजीसों पूछी, जो महाराज ! अब कैसी करें ? जो धर्मको द्वेषी म्लेच्छ लूटत आवत है. तासों आपु कृपा करिके आज्ञा करो सो करैं. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी यह आज्ञा किये, जो हमकों तुम टोंडके घनेमें पधरायके ले चलो. हमारो मन वहां पधारिवेको है. तब चार्यों वैष्णवननें बिनती कीनी, जो महाराज ! या समय असवारी कहा चहिये ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो सदू पाण्डेके घर भैंसा है, सोई ले आवो, तापे चढ़िके चलूंगो. पाछें सदू पाण्डे वा भैंसाकों ले आये. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी वा भैंसा ते चढ़िके पधारे.

भावप्रकाश : सो यह भैंसा दैवी जीव हतो. सो वह लीलामें श्रीवृषभानजीके घरकी मालिन है. सो नित्य फूलनकी माला श्रीवृषभानजीके घर करिके ले आवती. सो लीलामें 'वृन्दा' याको नाम है. एक दिन श्रीस्वामिनीजी बगीचीमें पधारी. ता समय वृन्दाके पास एक बेटी हती, सो ताकों खावाबती हती.

सो याने उठिके न तो दण्डवत् कीनी और न समाधान कियो. तब हू श्रीस्वामिनीजीने यासों कछु कह्यो नाहीं. ता पाछें श्रीस्वामिनीजीने वृन्दासों कही, जो तू श्रीनन्दरायजीके घर जायके श्रीठाकुरजीसों समस्यासों हमारो यहां पधारिवो कहियो. तब श्रीस्वामिनीजीके बचन सुनिके वृन्दाने कही, जो अबही मेरे माला करिके श्रीवृषभावनजीको पठावनी है, तासों मैं तो जात नाहीं. यह वचन सुनिके श्रीस्वामिनीजीने यासों कही, जो मैं आई तब तेने उठिके सन्मान हू न कियो, और एक कार्य कह्यो सोऊ तोसों नाही बन्यो. तासों तू या बगीचीमें रहिवे योग्य नाहीं है. और तू यहांसों गिरिके भैंसाको जन्म लेहु. सो यह शाप श्रीस्वामिनीजीनें वा मालिनकों दियो. तब तो यह मालिन श्रीस्वामिनीजीके चरणारविन्दमें जाय परी, और बहोत ही विनती स्तुति करन लागी. और कही, जो अब ऐसी कृपा करो, जो फेरि मैं यहां आऊं. तब श्रीस्वामिनीजीने यासों कही, जो अब तेरे ऊपर चढिके श्रीठाकुरजी वनमें पधारेंगे, तब तेरो अङ्गीकार होयगो. सो भैंसाको देह छोडिकें सखी - देह धरिके फेरि या वागकी मालिन होयगी. सो या प्रकार वह मालिन सदूपाण्डेके घरमें भैंसा भई.

सो वाही भैंसाके ऊपर श्रीनाथजी आपु चढ़िके ''टोंडके घने'' में पधारे, सो तब श्रीगोवर्द्धननाथजीकों एक ओर तो रामदासजी पकड़े चले, और एक ओर तें सदू पाण्डे पकड़े रहे. और कुम्भनदास और मानिकचन्द पाण्डे बीचमें थांमे जाय. सो मारगमें कांटा बहोत लागे, वस्त्र सब फाटि गये, बहोत दुःख पायो. मारग आछो न हतो. सो वा ''टोंडके घना'' में बीचमें एक निकुञ्ज है. तहां नदी (१) है, सो कुम्भनदास और मानिकचन्द पाण्डे ये दोऊ जने श्रीनाथजीके आगे मारग बतावें, लता कांटा टारत जांय. सो या प्रकार ''टोंडके घने'' में भीतर एक चौंतरा है तहां छोटो सो सरोवर है, और एक गोल चौक मण्डलाकार हैं. तहां रामदासजी और कुम्भनदासजी श्रीनाथजीसों पूछे, जो आपु कहां बिराजोगे ? तब श्रीनाथजी आप आज्ञा किये, जो याही चौंतरा पे बिराजेंगे. सो तब श्रीनाथजीके नीचे भैंसाके ऊपर गादी डारे हते सो वही गादी चौंतरा ऊपर डारि बिछाई, तापें श्रीनाथजीकों पधराये. पाछें श्रीनाथजी रामदासजीसों आज्ञा किये, जो तुम कछू भोग धरिके न्यारे ठाड़े होउ. तब रामदासजी तथा कुम्भनदासजी मनमें बिचारे, जो कोई ब्रजभक्तनके मनोरथ पूरन करिवेके लिये तहां लीला करी है. पाछें रामदासजी थोड़ी सामग्री भोग धरे. सो तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहें, जो सब सामग्री धरि देउ. सो रामदासजी उतावलीमें दोय सेर चूनको सीरा कर लाये हते, सो सगरो भागे धरे. पाछें रामदासजी श्रीगोवर्द्धननाथजी तें कहे, जो सगरी सामग्री भोग धरी, परि यहां रहनो होय तब कहा करेंगे ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो यहां रहनो नाहीं है. जो इतनो ही काम हतो. पाछें कुम्भनदास सहित सदू पाण्डे माणिकचन्द पाण्डे, और रामदासजी ये चारों जन एक वृक्षकी ओटमें जाय बैठे. सो तब निकुञ्जके

भीतर श्रीस्वामिनीजी अपने हाथसों मनोरथकी सामग्री करी हती सो लेके श्रीगोवर्द्धननाथजीके पास पधारी. पाछें मिलिके भोजन करनो विचार कियो. सो सामग्री करत रञ्चक श्रीस्वामिनीजीकों श्रम भयो. तासों श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु श्रीमुखतें कुम्भनदाससों आज्ञा किये, जो कुम्भनदास ! तू कछू या समय कीर्तन गावे तो मन प्रसन्न होय. और मैं सामग्री अरोगत हौं, तासों तू कीर्तन गाउ. सो कुम्भनदास अपने मनमें विचारे, जो प्रभुनको मन कछू हास्य प्रसङ्ग सुनिवेको है. और कुम्भनदास आदि चार्यो वैष्णव भूखे हते और कांटा हू लगे हते, सो ता समय कुम्भनदासने एक पद गायो सो पद -

राग सारङ्ग -
भावत है तोहि टोंडकौ घनो
कांटा लागे गोखरू भागे फट्यो जात यह तन्यो ।।१।।

सिंहै कहा लोंकरीकौ डर यह कहा बानिक बन्यो ।
'कुम्भनदास' तुम गोवर्द्धनधर वह कौन रांड ढ़ेढ़नीको जान्यो ।।२।।

सो यह कीर्तन सुनिके श्रीगोवर्द्धननाथजी और श्रीस्वामिनीजी बहोत प्रसन्न भये. और सब वैष्णव हू प्रसन्न भये. ता पाछें मालाके समय कुम्भनदासने यह पद गायो. सो पद -

राग मालकोस -
बोलत स्याम मनाहर बेठे कमल खण्ड और कदमकी छैयां
कुसुमित द्रुम अलि पीक गूञ्जत कोकिला कल गावत तहियां ।।१।।

सुनत दूतिकाके बचन माधुरी भयो हुलास तन मन महियां ।
'कुम्भनदास प्रभु' व्रज जुवति मिलन चली रसिक कुंवर गिरधर पहियां ।।२।।

यह पद कुम्भनदासने गयो, सो सुनिके श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु बहोत प्रसन्न भये. तब स्वामिनीजीनें श्रीगोवर्द्धनधरसों पूछी, जो तुम कौन प्रकार पधारे ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजीने कही, जो सदूपाण्डेके घर भैंसा हतो सा वा ऊपर चढ़िके पधारे हैं. तब श्रीगोवर्द्धननाथजीके वचन सुनिके श्रीस्वामिनीजी आपु वा भैंसाकी ओर देखिके कृपा करिके कहे, जो यह तो मेरे बागकी मालिन है, सो मेरी अवज्ञा तें भैंसा भई परन्तु आज याने भली सेवा करी, तासों अब याको अपराध निवृत्त भयो. सो या प्रकार कहि, नाना प्रकारकी केलि टोंडके घनमें करिके श्रीस्वामिनीजी तो बरसानेमें पधारे.

भावप्रकाश : सो तहां कांटा बहोत हते, सो श्रीस्वामिनीजी ऊहां कैसे पधारे ? यह शङ्का होय तहां कहत हैं. जो ये ब्रजके वृक्ष परम स्वरूपात्मक हैं, सो जहां जैसी कुञ्जलता फल फूल होय जात हैं. सो कबहू सकल कांटा तो यह लौकिक लोगनकों दीसत हैं. सो तहां कुञ्जमें सब ब्रजभक्तन सहित श्रीठाकुरजी आप लीला करत हैं. सो तहां गोपालकों और मर्यादा वारेनकों यह कांटनकी आड़ होत है, (नांतर) सघन बन होत है. सो ब्रजके भक्त सदा सेवामें तत्पर रहत हैं, सो तासों यह सन्देह नाहीं है. और श्रीगोवर्द्धननाथजी भैंसा ऊपर चढ़िके टोंडके घनामें पधारे. सो ता समय चार वैष्णव सङ्ग हते. सो मारगमें ब्रजवासी लोग बहोत मिलते, सो श्रीगोवर्द्धननाथजीकों देखते नाहीं, जाने जो भैंसा लिये चारिजन जात हैं. सो कांटा न होय तो सगरे ब्रजवासी तहां आवे. या प्रकार केवल ब्रजभक्तनकों सुख देनार्थ श्रीठाकुरजीकी लीला रस है. सो लौकिकमें डरिके छिपिके पधारनो, सो यह रस है. ईश्वरताको भाव नाहीं बिचारनो है. ईश्वरतामें कहे तो भजनो कहा ? डर, जहां माधुर्य रसमें है सो प्रेमसों, ईश्वरतामें डर नाहीं है. या प्रकार रसिक जन नेत्रनसों जो देखत हैं, सो तिनकों आनन्द उपजत है, सो ज्ञान नेत्रन - अलौकिक नेत्रन - सों लीलारसको अनुभव होत है.

सो जब श्रीस्वामिनीजी बरसाने पधारे, तब चार्यो भगवदीयनकों श्रीगोवर्द्धननाथजीने अपने पास बुलाये.

भावप्रकाश : सो तहां यह सन्देह होय जो यह भगवदीय तो अन्तरङ्ग हैं. सो जब लीलाको अनुभव है तो फेरि श्रीगोवर्द्धननाथजी इनकों न्यारे ओटमें क्यों विदा किये ? तहां कहत हैं, जो ये - भगवदीय यद्यपि सखी रूपसों लीलाको दरसन करत हैं, तोऊ श्रीस्वामिनीजीकीं अपने हस्तसों हास्यविनोद करत अरोगावनो है, सो पास सखी होय तो लज्जा, सङ्कोच रहे. सो ताहीसों निकुञ्जमें जब दोऊ स्वरूप लीला करत हैं, तब सखी सब जालरन्ध्र व्हेके लतानकी ओट लीलाको सुख अवलोकन करत हैं. सो तासों श्रीगोवर्द्धननाथने भगवदीयकों नेक ओटमें बैठाये हते, सो बुलाये.

सो जब चार्यों वैष्णव आये, तब गोवर्द्धननाथजी सदू पाण्डेसों कह्यो, जो अब देखो उपद्रव मिट्यो ? तब सदू पाण्डे टोंडके घनेसों बाहिर आये, सो इतनेमें श्रीगोवर्द्धनसों समाचार आये, जो वह म्लेच्छकी फौज आई हती सो पाछी गई हैं. तब सदू पाण्डेने आयके श्रीगोवर्द्धननाथजीसों कह्यो, जो वह फौज तो म्लेच्छकी भाजि गई. तब गोवर्द्धनधर कहे, जो अब तुम मोकों गिरिराज ऊपर मन्दिरमें पधरावो. तब श्रीगोवर्द्धननाथजीकों भैंसा ऊपर बेठाये. पाछें चार्यों वैष्णवनने श्रीनाथजीकों श्रीगिरिराज पर्वत ऊपर मन्दिरमें पधराये. तब भैंसा पर्वतासों उतरिके देह छोड़िके फेरि लीलामें प्राप्त भयो. पाछे सगरे ब्रजवासी श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करिके बहोत हरषित भये, और कहन लागे, जो धन्य है, देवदमन ! जो इनके प्रतापसों, ऐसो उपद्रव भयो हतो सो एक क्षणमें मिटि गयों, सो कछू जान्यो हू न पर्यो. तब कुम्भनदासने श्रीनाथजीके आगे यह पद गायो. सो पद -

राग श्रीराग -
जयति हरिदासवर्य धरने
बारि वृष्टि निवारि, घोख आरति टारि देवपति मान भङ्ग करने ।।१।।

जयति पट पीत दामिनी रुचिर वर मृदुल अङ्ग सांवल ललद बरने ।
कर अदर बेनु धरि गान कल - रव शब्द सहज ब्रज युवती जन चित्त हरने ।।२।।

जयति वृन्दा विपिन भूमि डोलनि अखिल लोकवन्दनि अम्बुरुज चरने ।
तरनि - तनया - तीर विहार नन्दगोप - कुमार 'दास कुम्भन' नावित तुव शरने ।।३।।

राग श्रीराग -

कृष्ण तरनी तनया तीर रासमण्डल रच्यो अधर कर मधुर सुर बेनु बाजे
जुवती जन जूथ सङ्ग निर्तत अनेक रङ्ग निरखि अभिमान तजि काम लाजे ।।१।।

श्यामतन पीत कौशेय सुभ पद - नखचन्द्रिका सकल भुव तिमिर भाजे ।
ललित अवतंस भ्रुव भु धनुष लोचन चपल चितवनि मनों मदनबाज साजे ।।२।।

मुखर मञ्जीर कटि किंकनी कुनीत रव वचनगम्भीर मनु मेघ गाजे ।
'दास कुम्भन' नाथ हरिदासवर्यधरन नखसिख स्वरूप अद्भुत बिराजे ।।३।।

ऐसे कीर्तन कुम्भनदासने श्रीगोवर्द्धननाथजीकों बहुत सुनाये. सो सुनिके श्रीगोवर्द्धननाथजी कुम्भनदासके ऊपर बहोत प्रसन्न भये. सो कुम्भनदासजीके पद जगतमें प्रसिद्ध भये.

वार्ताप्रसङ्ग ३ : सो कुम्भनदासने बहोत पद बनाये, सो जहां तहां लोग गावन लागे. ता पाछें एक कलावतने एक पद कुम्भनदासजीको सीख्यो, सो देसाधिपतिके आगे गायो. सो सीकरी फतेपुरमें देसाधिपतिके डेरा हते सो तहां यह पद गायो. सो पद -

राग धनाश्री -

देखरी आवनी मदन गोपालकी
सक्रवाहन - गति निरख लाजत गजपति अनूप लटक चालकी ।।१।।

स्याम तन कटि बसन मन हरन सुन्दरता उर श्रीमालकी ।
भोंह धनुस सजि मनहु मदन सर चितवनी लोचन विसालकी ।।२।।

रेनुमण्डित कुन्तल - अटक सोभा केसरकौ तिलक भालकी ।
(य) 'दास कुम्भन' चारु रास मोह जगत गोवर्द्धनधर कुंवर रसालकी ।।३।।

सो यह कीर्तन सुनिके देसाधिपतिको मन वा पदमें गडि गयो. सो माथो धुन्यो और कह्यो, जो ऐसे महापुरुष भूमि पर होय गये, सो जिनकों ऐसे दरसन परमेश्वरके होते. तब वा कलावतने दसाधिपतिसों कही, जो साहिब ! वे महापुरुष पद करिवे बारे यहां हो हैं. सो तब यह देसाधिपति वा कलावतके ऊपर बहोत प्रसन्न होयके पूछ्यो, जो वे महापुरुष कहां हैं ? तब कलावतने कही, जो श्रीगोवर्द्धनके पास 'जमुनावतो' गाम है, सो तहां वे महापुरुष रहत हैं, और कुम्भनदासजी उनको नाम है. तब देसाधिपतिने कही, जो उनकों यहां ही बुलावो, जो हम उनसों मिलेंगे. पाछें देसाधिपतिने अपने मनुष्य और सब तरहकी असवारी कुम्भनदासकों लेवेकों पठाई. सो जमुनावता गाममें भेजी. तब वे मनुष्य असवारी लिवाये, जमुनावता गाममें आये. ता समय कुम्भनदासजी तो जमुनावतामें हते नाहीं, परासोली चन्द्रसरोवरिमें अपने खेत ऊपर बैठे हते. सो तब उन मनुष्यनने जमुनावतामें आयके पूछी. पाछें खबरि पायके गाममें तें एक मनुष्यको सङ्ग लेके वे लोग कुम्भनदासजीके पास आये. तब देसाधिपतिके मनुष्यनने आयके कुम्भनदाससों कह्यो, जो तुमकों देसाधिपतिने बुलाये हैं. तब कुम्भनदासने कही, जो हम तो गरीब ब्रजवासी हैं, सो काहूके चाकर नाहीं हैं. तासों हमारो देसाधिपतिसों कहा काम है ? जो मैं चलूं. तब देसाधिपतिके मनुष्यने कह्यो, जो बाबा साहिब ! हम तो कछु समुझत नाहीं हैं. सो हमकों तो देसाधिपतिको हुकम है, जो तुम कुम्भनदासजीकों ले आवो, सो ये घोड़ा पालकी तिहारी असवारीके लिये आये हैं. सो तिनके ऊपर तुम असवार होयके चलिये. हम आये

हैं जो देसाधिपतिने भेजे हैं, सो हम तुमकों लेके जायेंगे. और जो हम न ले जाय तो देसाधिपतिको हुकम टरें, तो देसाधिपति हमकों मरवाय डारे. तासों आपु चलिये, और उनसों मिलिके चले आईये. तब कुम्भनदास अपने मनमें बिचार कियो, जो यह आपदा जो आई है, तासों अब गये बिना चले नाहीं. तासों आपदा होय सो भुगतनो. सो कुम्भनदासकों देसाधिपतिने असवारी पठाई हती, सो तिनके सङ्ग मनुष्य आये हते सो उनने कह्यो, जो बाबा साहिब ! घोड़ा तथा पालकी पर चढ़िके बेगि चलिये. तब कुम्भनदासने उन मनुष्य सो कह्यो, जो मैं तो कबहू असबारीमें बैठ्यो नाहीं. हमसों तुम कछू बोलो मति, जो हम जोड़ा पहरिके पांयन चलेंगे. तब उन मनुष्यने बहोत बिनती कीनी, परि कुम्भनदास तो असवारीमें बैठे नाहीं, सो जोड़ा पहरिके पांयन चले. सो फतेपुर सीकरीमें देसाधिपतिकों खबरि करवाई, जो कुम्भनदास महापुरुष आये हैं. तब देसाधिपतिने कुम्भनदासकों भीतर बुलावाये, तब भीतर गये. पाछें देसाधिपतिने कही. जो बाबा साहिब ! आगे आवो. तब कुम्भनदासजी तनिया पहरे, फटी मेली पाग, पिछोरा, टूटे जोड़ा सहित देसाधिपतिके आगे जाय ठाडे भये तब देसाधिपतिने कही, जो बाबा साहिब ! बैठो. सो तहां जड़ाउ रावटी ही, तामें मोतिनकी जालरी लगि रही है, और सुगन्धकी लपट आवत है. परन्तु कुम्भनदासजीके मनमें महादुःख, जो जीवते मानो नरकमें बैठ्यो हूं. (ओर बिचारे जो) यासो तो मेरे ब्रजके रूख आछे हैं. जहां साक्षात् श्रीगोवर्द्धनधर खेलत हैं. सो या प्रकार कुम्भनदासजी अपने मनमें बिचार करत हते, इतनेमें देसाधिपति बोल्यो, जो बाबा साहिब ! तुमने विष्णुपद बहोत किये हैं. तासों तिहारे मुखतें मैं कछू विष्णुपद सुनूंगो, तासों आप कोई विष्णु - पद गावो. तब देसाधिपतिके बचन सुनिके एक तो कुम्भनदास मनमें कुढि रहे हते और दूसरे देसाधिपतिने गायवेकी कही. तब कुम्भनदासके मनमें बहोत बुरी लागी. तब कुम्भनदास अपने मनमें बिचार कियो, जो गाये बिना छुटकारो होयगो नाहीं. म्लेच्छके आगे तो श्रीठाकुरजीकी लीलाके पद गाये जांय नाहीं. सो तासों मैं कहा गाऊं ? जो मेरीबानीके सुनिवेवारे तो श्रीगोवर्द्धननाथजी हैं, और या म्लेच्छने मोकों बुलाइके श्रीगोवर्द्धननाथजीसों बिछोयो करायो है. तासों याकों कछू ऐसो सुनाऊं जो यह बुरो माने तो आछौ. और बुरो मानिके मेरो कहा करेगो ? तब कुम्भनदासके मनमें यह बात आई - ''जाकों मनमोहन अङ्गीकार करें, एको केस खसै नहीं सिरतैं जो जग बैर परे.'' सो यह बिचारके एक नयो पद करिके कुम्भनदासने देसाधिपतिके आगे गायो. सो पद -

राग सारङ्ग -

भक्तनकों कहा सिकरी काम
आवत जात पन्हैया टूटी बिसर गयो हरि नाम ।।१।।

जाको मुख देखे दुःख उपजे ताकों करनों परयो प्रनाम ।
'कुम्भनदास' लाल गिरिधर बिनु यह सब जूंठो धाम ।।२।।

सो यह पद कुम्भनदासने गायो सो सुनिके देसाधिपति अपने मनमें बहोत कुढ्यो. सो पाछें उनने अपने मनमें बिचारी, जो इनकों कछु लेवेको लालच होय तो ये मेरी खुसामद करें. जो इनको तो अपने इश्वरसों काम हैं. यह बिचारिके अकबर बादशाहने कुम्भनदाससो कह्यो, जो बाबा साहिब ! मोकों कछु आज्ञा फरमावो सो मैं करूं. तब कुम्भनदासने कही, जो आज पाछें मोकों कबहुं बुलाइयो मति. तब देसाधिपतिने कुम्भनदासकों बिदा किये. सो तब कुम्भनदास उहां ते चले, सो मारगमें आवत कुम्भनदासके मनमें श्रीगोवर्द्धननाथजीको विरह कलेश (भयो) जो अब मैं श्रीगोवर्द्धननाथजीको मुख कब देखौं ? सो ऐसें बिचार करत मारगमें आवत कुम्भनदासने विरहको पद गायो. सो पद -

राग धनाश्री -
कब हौं देखि हों इन नैननु
सुन्दरि स्याम मनोहर मूरति अङ्ग अङ्ग सुख दैननु ।।१।।

वृन्दावन बिहार दिन दिन प्रति गोप वृन्द सङ्ग लेननु ।
हंसि हंसि हरखि पतौवनि पीवनु बांटि पय फेननु ।।२।।

'कुम्भनदास' केते दिन बिते किए रेन सैननु ।
अब गिरिधर बिनु निसि अरु बासर मन न परत कछु चैननु ।।३।।

सो ऐसे पद मारगमें गावत कुम्भनदास श्रीगिरिराज ऊपर आय श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरशन किये. सो दोय प्रहर बीते, सो कुम्भनदासकों मानों दोय जुग बीते. ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजीको श्रीमुख देखत ही सगरो दुःख बिसरी गयो. ता समय कुम्भनदासने एक पद गयो. सो पद -

राग धनाश्री -
नैन भरि देख्यो नन्दकुमार
ता दिनतें सब भूलि गई हौं बिसर्यो पति - परिवार ।।१।।

बिनु देखे हौं बिबस भई री अङ्गअङ्ग सब हारि ।
तातें सुधि है सांवरी मूरति लोचन भरि भरि वारि ।।२।।

रूपरासी परिमित नहीं मानों कैसे मिले कन्हाई ।
'कुम्भनदास प्रभु' गोवर्द्धनधर मिली बहुर उर लाई ।।३।।

राग धनाश्री -
हिलगन कठिन है या मनकी -
जाके लिये देखि मेरी सजनी लाज गई सब तनकी ।।१।।

धरम जाउ और लोग हंसौ सब, अरु आवो कुल - गारी ।
सो क्यों रहे ताहि बिनु देखे जो जाकौ हितकारी ।।२।।

रस - लुब्ध एक निमिष नहीं छांडत ज्यों अधीन मृग गाने ।
'कुम्भनदास' यह सनेह मरमकौ श्रीगोवर्द्धनधर जाने ।।३।।

सो ऐसे पद कुम्भनदासने बहोत ही गाये. सो सुनिके श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु कहे, जो कुम्भनदास ! तू धन्य है. जो मेरे बिना एक छिन तोकों कल नाहीं है. तासों मोहूकों तो बिना कछू सुहात नाहीं है. सो या प्रकार कुम्भनदासजी और श्रीगोवर्द्धननाथजीकी परस्पर प्रीति हती.

वार्ताप्रसङ्ग ४ : और एक समय मानसिंह देस - देसमें दिग्विजय करिके जीतिके आगरेमें देसाधिपतिके पास आयो. तब देसाधिपतिसों सीख मांगिके अपने देसकों चल्यो. तब राजा मानसिंह अपने मनसों बिचार्यो, जो बहोत दिनमें आयो हूं. सो श्रीमथुराजीमें न्हायके अपने देस जाऊं तो आछो है. सो राजा मानसिंह यह बिचारिके श्रीमथुराजीमें आयो. तहां विश्रान्त घाट ऊपर न्हायो. तब चोबेनने मिलिके कह्यो, जो श्रीकेसोरायजी श्रीठाकुरजीके दरसनकों चलो. सो गरमी ज्येष्ठ मासके दिन और मथुरिया चोबेनने राजाकों आवत जानिके श्रीकेसोरायजीकों जरीकी ओढनी, बागा, पिछ्वाई, चन्दोवा सब जरीके किये. सोनेके आभूषण पहिराये. सो दरसन करिके राजा मानसिंहने अपने मनमें कह्यो, जो इनने मेरे दिखायवेके लिये श्रीठाकुरजीकौ इतनी जरी लपेटी है. पाछें जी भेट धरिके चले. पाछें उनने कही, जो वृन्दावनमें श्रीठाकुरजीके मन्दिर हैं, सो तहां दरसनकों चलेंगे. पाछें राजा मानसिंह श्रीवृन्दावनमें आयो. सो श्रीवृन्दावनके सन्त महन्तनने सुनिके मनमें बिचारी, जो यहां राजा मानसिंह दरसनकों आवेगो. यह जानिके अपने श्रीठाकुरजीके लिये भारी - भारी जरीके चीरा, बागा, पटका, सूथन, जरीकी ओढ़नी भारी - भारी उढ़ाई, और सोनेके आभूषण पहराये. पाछें राजा मानसिंह आयके दोय चार ठिकाने बड़े - बड़े मन्दिरमें दरसन करि भेट किये. गरमी बहोत लगी सो डेरान पें आयो और कह्यो, जो ये मोकों दिखायवेके लिये

कियो है. ता पाछें राजा मानसिंह वृन्दावनसों चल्यो, सो तीसरे प्रहर श्रीगोवर्द्धनमें आयो. तब काहूने कही, जो श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों चलोगे ? तब राजा मानसिंहने कह्यो, जो श्रीगोवर्द्धननाथके दरसन तो अवश्य करने हैं. सो तब गोपालपुरमें आयके दरसनको समय पूछ्यो, तब काहूने कही, जो उत्थापनके दरसन होय चुके है. और भोगके दरसनकी तैयारी है. तब यह सुनिके राजा मानसिंह पर्वतकी ऊपर चढ्यो, सो महा गरमी पड़ै. सो उघारे पांव राजा गरमीमें व्याकुल होय ऊपर गयो. सो तब ही भोगके किंवाड़ खुले हते. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करत ही राजा मानसिंहके नेत्र सीरे होय गये. सो ऊन दिननमें श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवा बड़े वैभवसों होत ही. सो ऊष्णकालके दिन हते, तातें गुलाबके जलसों छिरकाव भयो हतो, और अरगजाकी लपट आवत है, और सुगन्ध आवत है, और दोहरो पंखा होत है. सुपेद पाग परदनीको सिंगार, श्रीकण्ठमें मोतीनकी माला, मोतीनके करन फूल और मोतीनके सूक्ष्म आभूषन. सो सुगन्ध सहित सीरी व्यारि लागी. सो राजा मानसिंहको रोम - रोम सीतल भयो. सेवा रीति देखिके राजा मानसिंहने कह्यो, जो सेवा तो यहां है. जो श्रीठाकुरजी सुखसों बिराजे हैं. सो साक्षात् श्रीकृष्ण प्रगट भये सुने हते श्रीभागवतमें. सो श्रीगोवर्द्धननाथजी यही हैं. तासों आजु मेरे बड़े भाग्य हैं. जो मैंने ऐसो दरसन पायो है. ता समय श्रीगोवर्द्धननाथजीके आगे कुम्भनदासजी पद गावत हते. सो जैसे श्रीगोवर्द्धनधर कोटि कन्दर्प लावण्य स्वरूप मन हरन, और तैसे रसरूप कुम्भनदासजीने पद गाये. सो पद -

राग नट -

रूप देखि नैनां पलक लगे नहीं
गोवर्द्धनधरके अङ्ग अङ्ग प्रति निरखि नैन मन रहत तहीं ।।१।।

कहा री कहों कछु कहत न आवे चित्त चोर्यो वे मांग दह ।
'कुम्भनदास' प्रभुके मिलिवेकी सुन्दर बात सखियनसों जु कही ।।२।।

राग नट -

पूतरी पोरिया इनके भए री माई
को रोके या मग आवत खञ्जन छोरि दए पलक न कपाट दिये री माई ।।१।।

ठाढ़े रहत प्रेमके बाढ़े निसबासर सब सुख चितए री माई ।
'कुम्भनदास' लाल गिरिधरन मनके भाजन फेरि ढंढोरि लिये री माई ।।२।।

राग श्रीराग -
आवत गिरिधर मन जू हर्यो हो
हों अपने घर सचुसों बैठी निरखि वदन अचरा बिसर्यो हो ।।१।।

रूप निधान रसिक नन्दनन्दन निरखि नैन धीरज न धर्यो हो ।
'कुम्भनदास' प्रभु गोवर्द्धनधर अङ्ग अङ्ग प्रेम पीयूष मर्यो हो ।।२।।

सो ऐसे पद कुम्भनदासजीने गाये. ता पाछें भोगको समय हाय चुक्यो तब टेरा आयो. पाछें राजा मानसिंह दण्डवत् करिके अपने डेरानमें आयो. ता पाछें सेन आरतीके समे कुम्भनदासजीने यह पद गायो. सो पद -

राग केदारो -
लालके बदन पर आरती वारों
चारु चितवनि करों साज नीकी युक्ति बीती अगनित घृत कपूरसों बारों ।।१।।

संख धुनि भेरी - मृदङ्ग झालर जांझ ताल घंटा बाजे बहुत विस्तारों ।
गाऊं सामल सुजस रसना सुख स्वाद रस परम हरख तन चमर कर डारों ।।२।।

कोटि उद्योग रविकान्ति अङ्ग छबि सकल भूलोकको तिमिर टारों ।
'दास कुम्भन' पिय लाल गिरिधरनको रूप देखि नयनन भरि भरि निहारों ।।३।।

सो या प्रकार सनेहके कीर्तन गाय अपनी सेवासों पहोंचिके कुम्भनदासजी अपने घर जमुनावतामें आये. सो ऊहां राजा मानसिंह अपने डेरानमें जायके अपने मनुष्यके आगे श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवा सिंगारकी वार्ता कहन लाग्यो. और कह्यो, जो श्रीगोवर्द्धननाथजीके आगे विष्णु पद गावत हते, सो कौन हतो ? जो ऐसे पद गाये, जो मनमें पेंठि गये हैं. ऐसे पद आज तांई मैंने कबहू सुने नाहीं. तब एक ब्रजवासीने कह्यो, जो ए गोरवा हैं और कुम्भनदासजी इनको नाम हैं. जो अपनी खेतीमें अन्न होय सो ताहीसों निर्वाह करत हैं. जो तुमने सुने ही होयंगे, जो आगे देसाधिपतिने बुलाये हते, परन्तु कुम्भनदासजी कछू लिये नाहीं. जो ये महापुरुष हैं ! सो तब राजा मानसिंहने कह्यो, जो आज तो रात्रि भई हैं यातें काल सकारे हमहू इनसों मिलेंगे. सो तब प्रातःकाल राजा मानसिंह उठिके श्रीगिरिराजकी परिक्रमा करत परासोलीमें आयो. सो परासोलीमें चन्द्रसरोवर हैं. तहां कुम्भनदासजी न्हायके खेत ऊपर बैठे हते. सो इतने ही में श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु कुम्भनदासके पास पधारे. सो श्रीमुख देखत ही कुम्भनदासजी श्रीनाथजीसों कहे, जो बाबा ! आगे आवो. तब श्रीनाथजी आपु कुम्भनदासजीकी गोदमें बैठिके कहे, जो कुम्भनदास ! मैं तोसों एक बात कहन आयो हूं. सो या प्रकार कहत हते, इतनेमें राजा मानसिंह कुम्भनदासके पास आयो. सो ताही समय श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु भाजिके डरिके एक वृक्षकी ओटमें जायके ठाढ़े गये. सो ताही समय कुम्भनदासजीकी दृष्टि तो एक श्रीगोवर्द्धननाथजीके सङ्ग भई. सो जहां श्रीगोवर्द्धननाथजी ठाड़े हते सो ताही औरकों देख्यो करें. तब राजा मानसिंह कुम्भनदासकों प्रणाम करिके पास बैठ्यो, परन्तु कुम्भनदासजी तो राजा मानसिंहकी ओर दृष्टि हू नाहीं किये. सो कुम्भनदासजीको एक भतीजी हती. सो जमुनावतेसों बेझरिको चूंन कठोटीमें करि, लेके कुम्भनदासकों रसोई करिवेके लिये लावत हती. सो या भतीजीसों एक ब्रजवासीने कह्यो, जो तू बेगि जा. जो कुम्भनदासजी पास राजा गयो है सो वह कछू देवे तो तू

लीजियो. क्यों, जो कुम्भनदासजी तो छूवेंगे हू नाहीं. तब यह भतीजी बेगि ही कुम्भनदासजीके पास आई. तब कुम्भनदासजीकी दृष्टि एक वृक्षके ओर देखिके कहे, जो बाबा ! राजा बैठ्यो है. सो कछू इनको समाधान करो. तब कुम्भनदासजी कहे, जो मैं कहा करूं जो बैठ्यो है तो. जो कछू बात कहत हते सोऊ भाजि गये. सो अब बात कहेंगे के, नाहीं कहेंगे ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु सेन ही में कुम्भनदासजीसों कहे, जो मैं तिहारे ऊपर बहोत प्रसन्न हूं. जो मैं बात कहूंगो तू चिन्ता मति करे. तब कुम्भनदासजीको चित्त ठिकाने आयो. सो कुम्भनदासजी और श्रीगोवर्द्धननाथजीकी वार्ता राजा आदि काहूने जानो नाहीं. पाछे कुम्भनदासजीने भतीजीसों कह्यो, जो बेटी ! आसन और आरसी लावे, तो मैं तिलक करि लेऊं. तब भतीजोने कह्यो, जो बाबा ! आसन (घासको) पडिया (भेंसकी पाडी) खायके आरसी (कठोटीको जल) पी गई. तब कुम्भनदासजीने कह्यो, जो आरसी करि ले आऊ तो आछो. यह बात सुनिके राजा मानसिंहने अपने मनमें कह्यो, जो आसन खायके आरसी पडिया पी गई ! (सो कहा ?) सो इतने ही में भतीजी एक पूरा घासको और एक कठोटीमें पानी भरिके ले आई. सो पूराको आसन बिछाय दियो सो ता पूरा पर कुम्भनदासजी बैठिके कठोटीमें पानीमें मुख देखिके तिलक करन लागे. तब राजा मानसिंहने अपने मनमें जान्यो, जो कुम्भनदासजीके द्रव्यको बहोत सङ्कोच हैं, जो आसन आरसी तिलक करिवेकी नाहीं है. सो कुम्भनदासजी त्यागी सुनत हते सो देखे. तब राजा मानसिंहने आरसी सोनेकी जड़ाऊ घरमें जडी ऐसी मनुष्यसों मंगाई. और पाछे वह आरसी कुम्भनदासजीके आगे धरिके कह्यो, जो बाबा साहिब ! यामें मुख देखिके तिलक करिये. तब कुम्भनदासजी कहे, जो अरे भैया ! मैं याकों धरूंगों कहां ? हमारे तो यह छानिके घर हैं. सो यह आरसी हमारे घरमें होय तो याके पीछे कोई हमारो जीव लेय, तासों हमारे नांहीं चहियत है. तब राजा मानसिंहने मनमें विचारी जो ये आरसी लेके कहा करेंगे ? जो कहा याकों बेचन जांयगे ? यह तो इनके कामकी नाहीं है. तासों कछू ऐसो द्रव्य देऊं जो जनमादि भरिके खायो करें. तब हजार मोहौरकी थेली कुम्भनदासजीके आगे धरी. तब कुम्भनदासजीने कही, जो यह हमारे कामकी नाहीं है. हमारे तो खेती होत है, तामें जो धान उपजत हैं सो हम खात हैं. और कछू हमकों चहियत नाहीं तब राजा मानसिंहने कह्यो, जो तिहारो गाम जमुनावता है, सो ताको तुमकों लिख्यो करि देऊं. तब कुम्भनदासजीने राजा मानसिंहसों कह्यो, जो मैं ब्राह्मण तो नाहीं. जो तेरो उदक लेऊं. और जो तेरे देनो होय तो और काहू ब्राह्मणकों दीजियो, मोकों तिहारो कछू नाहीं चहियत है. तब राजा मानसिंहने कह्यो, जो तुम मोकों अपनो मोदी बतावो, सो ताके पाससों सीधो सामान लियो करो. तब कुम्भनदासजीने कही, जो जैसे हम हैं सो तैसे ही हमारो मोदी है. तब राजा मानसिंहने कह्यो, जो बातवो

तो सही, जो मैं वाकों देऊंगो. तब कुम्भनदासजीने एक करीलको वृक्ष दिखायो, और एक बेरको बृक्ष दिखायके कह्यो, जो उष्णकालमें तो मोदी करील है, सो फूल और टेंटी देत है. और सीतकालको मोदी बेरको जाड़ है. सो बेर बहोत देत हैं. सो ऐसे काम चल्यो जात है. तब राजा मानसिंहने कही, जो धन्य है. जिनके वृक्ष मोदी है, जो मैंने आज तांई बड़े - बड़े त्यागी वैरागी देखे, परन्तु ये गृहस्थ, सो ऐसे त्यागी हैं ! सो ऐसे धरती पर नाहीं हैं. सो तब राजा मानसिंह कुम्भनदासजीकों प्रणाम करिके कह्यो, जो बाबा साहिब ! मोसों कछू तो आज्ञा करो. तब कुम्भनदासजी कहे जो हम कहेंगे सो करोगे ? तब राजा मानसिंहने कही, जो तुम आज्ञा करो सोई मैं अपनो परम भाग्य मानिके करूंगो. तब कुम्भनदासजीने कही, जो आज पाछें तुम हमारे पास कबहू मति आइयो, और हमसों कछु कहियो मति. तब राजा मानसिंहने दण्डवत् करिके कही, जो तुम धन्य हो, मायाके भक्त तो मैं सगरी पृथ्वीमें फिर्यो, सो बहोत देखे, परन्तु श्रीठाकुरजीके सांचे भक्त तो एक तुम ही देखे. सो यह कहिके राजा मानसिंह चल्यो गयो. तब भतीजीने पास आयके कुम्भनदासजीसों कही, जो घरमें तो कछू हतो नाहीं, सो राजा देत हतो सो क्यों न लियो ? तब कुम्भनदासजी कहे, जो बेठि रांड ! गोवर्द्धननाथजी सुनेंगे, तो खीजेंगे, जो कुम्भनदासकी भतीजी बड़ी लोभिन है. तब भतीजीने कह्यो, जो मैंने तो हंसिके कह्यो हतो, जो मोकों तो कछू नाहीं चहियत है. तब कुम्भनदासजी कह्यो, जो बेटी ! काहूसों लेवेकी वार्ता हांसीमें हू कबहू न कहिये. सो तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आयके कुम्भनदासजीकी गोदमें बैठिके कहे, जो तू एक छिन पें ऐसो क्यों होय गयो ? तेरे मनमें कहा है ? सो तू मोसों कहि ? तब कुम्भनदासजीने यह पद गायो सो पद -

राग सारङ्ग -
परम भांवते जियके मोहन नैनन तें मति टरो
जो लों जीऊं तो लों देखों बार बार पाइ लागों चित्त अनत न धरों ।।१।।

तब सुख चिन्तत तोहि लों ले ले अङ्ग भरों ।
रसिकन मांज रसिक - नन्दनन्दन तुम पिय मेरे सकल दुःख हरो ।।२।।

आवहु सदा रहो घर मेरे स्याम मनोहर सङ्ग किन करो ?
'कुम्भनदास' प्रभु गोवर्द्धनधर तुम बिनु अंजन कासों करों ।।३।।

सो यह कीर्तन कुम्भनदासजीको सुनिके श्रीगोवर्द्धननाथजी गरेसों लपटिके कहे, जो कुम्भनदास ! मैं तोसों एक बात कहनकों आयो हूं. तब कुम्भनदासजीने कही, जो कहिये. आपु वा समय बात कहत हते सो ता समय तो राजा अभागिया आय गयो, सो आपु भाजि गये. सो तबसों मेरो मन वा बातमें लागि रह्यो है सो यह बात आपु कृपा करिके कहिये. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु कुम्भनदाससों कहे, जो कुम्भनदास ! आज सखानमें होड परी है, जो भोजन सबके घरको न्यारो - न्यारो देखिये. तामें सुन्दर कौनके घरको है ? सो तुमहू कछु मनोरथ करोगे ? सो मैं यह बता तोसों कहिवे आयो हूं. तब कुम्भनदासजी पूछे, जो आपकी रुचि काहे पे है ? तब श्रीगोवर्द्धननाजी कहे, जो ज्वारकी महेरी, दहीं, दूध, बेजरिकी रोटी और टेंटीको साग संधानो. तब कुम्भनदासजी कहे, जो यह तो घरमें सिद्ध है. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो बेगि मंगावो. सो तब कुम्भनदासजी भतीजीसों कहे, जो घरतें बेजरिको चून, टेंटीको साग, संधानो, दहीं दूध बेगि ले आउ. तब भतीजीने कही, जो बेजरिको चून टेंटीको साग, संधानो, दही इतनो तो में ले आई हूं और दूध जमायवेके तांई तातो होत है, तब कुम्भनदासजी कहे, जो आज दूध जामवे मति. दूधकी हांडी और ज्वार घर तें दरिके ले आव, सो तहां तांई मैं रसोई करत हौं. सो न्हायके तो कुम्भनदासजी बैठे ही हते. तासों बेझरिकी रोटी नोंन डारिके ठीकरा पे किये. इतनेमें भतीजो जमुनावता गाममें जायके ज्वार दरिके दूधको हांडी ले आई. तब कुम्भनदासजी हांडीमें पानी डारिके ज्वारकी सामग्री सिद्ध किये. इतनेमें घरतें सखानकी छाक आई, सो कुम्भनदासकी सामग्री श्रीगोवर्द्धननाथजी पास राखे. पाछें घरके सखानकों चखाय आपु अरोगे.

भावप्रकाश : कुम्भनदासजीकी सामग्री विसाखाजीने दूधमें मिश्री डारि श्रीस्वामिनीजकों अरोगाय अति मधुर कर दीनी. सो काहेतें ? जो विसाखाजीको प्रागट्य कुम्भनदासजी हैं.

और जब श्रीठाकुरजीकों कुम्भनदासजीकी सामग्री बहोत स्वाद लगी, ता समय कुम्भनदासजीने कीर्तन गाये. सो पद -

राग सारङ्ग -
ब्रजमें बडो मेवा यह टेंटी
जाकौ होत है साग संधानो और बेजरकी रोटी ।।१।।

ले ले डलिया बीनन निकसी बडे गोपकी बेटी ।
'कुम्भनदास' लाल गिरिधरसों व्है गई भेटा भेटी ।।२।।

राग सारङ्ग -
घर घर तें आई है छाक
खाटे मीठे और सलोने विविध भांतिके पाक ।।१।।

मण्डल रचना करी जमुना तट सघन लताकी छांहि ।
गोपी - ग्वाल सकल मिलि जेंमत मुख हि सराहत जाहि ।।२।।

बांटत बल मोहन दोउ भैया कर दोना अति सोहे ।
चाखत आपुन सखन मुखन दे के गोपीजनन मन मोहे ।।३।।

टेटी, साग, संधानो रोटी, गोरस, सरस महेरी ।

'कुम्भनदास' गिरिधर रस - लंपट नाचत दे दे फेरी ।।४।।

सो यह कुम्भनदासजी अति आनन्द पायके गाये. और अपने मनमें कहे, जो श्रीगोवर्द्धननाथजीने भली एक बात कही, जो यामें लीलाको अनुभव भयो. या प्रकार श्रीगोवर्द्धननाथजी कुम्भनदासजीकी ऊपर कृपा करते. वा दिन कुम्भनदासजी रसमें मग्न होय गये. सो सांझ लों सरीरकी सुधि नाहीं. तब परासोली तें दौरे, जो आज मैं श्रीगोवर्द्धनथाजीके दरसन नाहीं पायो. विरह मनमें उठि आयो सो भोग सरत हतो ता समय कुम्भनदासजी मन्दिरमें आये. मनमें यह, जो कब दरसन पाऊं. इतनेमें सेनके किंवाड़ खुले. तब कुम्भनदासजी श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करि नेत्र इकटक लगायके यह कीर्तन गाये. सो पद -

राग बिहाग -
लोचन मिलि गये जब चार्यो
हों व्है रही ठगी सी ठाढी उर अचरा न संवार्यो ।।१।।

अपने सुभाई नन्द जूके आइ सुन्दर स्याम निहार्यो ।
इक टक लगी चरन गति थाकी क्यों हू टरत नहीं टार्यो ।।२।।

उपजी प्रीति मदन मोहनसों गृहकौ काज बिसार्यो ।
'कुम्भनदास' गिरिधर रस लोभी चलो आरज पंथ पार्यो ।।३।।

राग बिहागरो -
नन्दनन्दनकी बलि जैये

सावल मृदुल कलेवरकी छबि देखि सुख पैये ।।१।।

सकल लोकपति ठाकुर रसना रसिक बिमल जस गैये ।
'कुम्भनदास प्रभु' गिरिधरको तन मन सर्वस्य दैये ।।२।।

राग केदारो -
छिनु छिनु बानिक और ही और
जब देखों तब नौतन सखीरी दृष्टि न रहे इकठौर ।।१।।

कहा कहों परमित नहीं पावत बोहोत करों चित दौर ।
'कुम्भनदास प्रभु' सौभग सींवा गिरिधर रसिकराय सिर मोर ।।२।।

सो या प्रकार रसके कीर्तन कुम्भनदासने बहोत गाये. सो वे कुम्भनदासजी ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते.

वार्ताप्रसङ्ग ५ : और एक समय वृन्दावनके सन्त महन्त कुम्भनदासजीसों मिलिवेकों श्रीगिरिराजपे आये. सो यासों आये, जो जाने जो इनसों श्रीठाकुरजी साक्षात् बोलत हैं. और कुम्भनदासजी श्रीस्वामिनीजीकी बधाई गाये हैं, तासों इनसों मिलिके पूछें, जो श्रीस्वामिनीजीको वर्णन हमहू किये हैं. और देखें, जो कुम्भनदासजी कैसो वर्णन करत हैं ? सो यह विचारिके हरिवंश, हरिदास प्रभृति महन्त, स्वामी आय कुम्भनदासजीसों मिलिके पूछे, जो कुम्भनदासजी तुमने जुगल स्वरूपके कीर्तन किये हैं, सो हमने तिहारे कीर्तन बहोत सुने परि कोई श्रीस्वामिनीजीको कीर्तन नाहीं सुन्यां, तासों आपु कृपा करिके कोई पद श्रीस्वामिनीजीको सुनावो. तब कुम्भनदासजीने श्रीस्वामिनीजीको एक पद करिके उनको सुनायो. सो पद -

राग रामकली -

कुंवरि राधिके तुव सकल सौभाग्य सींवा या बदन पर कोटि सत चन्द वारि डारों
खञ्जन कुरङ्ग सति कोटि नैनन उपर वारने करत जियमें बिचारें ।।१।।

कदली सत कोटि जंघन ऊपर सिंघ सत कोटि कटि पर न्योछावर करि उतारों ।
मत्त गज कोटि सत चाल पर कुम्भ सत कोटि इन कुचन पर वारि डारों ।।२।।

कीर सत कोटि नासिका ऊपर कुन्द सत कोटि दरसन ऊपर काहे न वारों ? ।
पक्व किन्दूर बन्धूक सत कोटि अधरन ऊपर वारि रुचि गर्व टारों ।।३।।

नाग सत कोटि बेनी ऊपर कपोत सत कोटि ग्रीवा दूरि सारों ।
कमल सत कोटि कर जुगल पर वारने नाहिन कोऊ उपमा जु धारों ।।४।।

'दासकुम्भन' स्वामिनी सुनख - सिख अद्‌भुत सुठान कहां लों सम्भारों ।
लाल गिरिधर कहत मोहि तोहि लों सुख जो लोंये रूप छिनु छिनु निहारें ।।५।।

यह पद कुम्भनदासजीने गायो सो सुनिके श्रीवृन्दावनके सन्त महन्त बहोत प्रसन्न भये. और कहे, जो हमने श्रीस्वानिजीके पद बहोत किये हैं, तामें चन्द्रमा आदिकी उपमा बहोत दीनी हैं. परि कुम्भनदास ! तुमने तो शतकोटि चन्द्रमा वारि डारें हैं. तासों कुम्भनदासजीकों श्रीस्वामिनीजी आगे जगतमें कोऊ उपमो देवे योग्य नाहीं (दीसत). सो या प्रकार अद्‌भुत स्वरूपको वरणन किये हैं. पाछें

कुम्भनदासजीसों विदा हायके सिगरे वृन्दावनमें आये. सोये कुम्भनदासजी किशोर भावना, लीला रसमें मग्न रहते. सो ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे.

वार्ताप्रसङ्ग ६ : और एक समय श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुलमें श्रीनवनीतप्रियजीसों विदा मांगिके श्रीद्वारिकाजी पधारिवेको विचार किये, सो परदेसमें दैवी जीवनके उद्धारार्थ. सो श्रीगोकुल तें श्रीनाथजीद्वार आयके श्रीगोवर्द्धननाथजीके सेवा सिंगार किये. ता पाछें अनोसर करायके आपु भोजन करिके अपनी बैठकमें गादी तकियानके ऊपर बिराजे हते, सो तहां सिगरे वैष्णव आयके पास बैठे हते. सो बात चलतमें कुम्भनदासजीकी बात चली. तब काहू वैष्णवनें श्रीगुसांईजीके आगे यह बात कही जो महाराज ! कुम्भनदासजीके घर आजकल द्रव्यको बहोत सङ्कोच है, सो काहेतें ? जो घर आजकाल द्रव्यको बहोत सङ्कोच है, सो काहेतें ? जो घरमें परिवार बहोत है, जो सात बेटा हैं, और सातों बेटानकी बहू हैं. और आपु स्त्रीपुरुष और एक भतीजी. सो ताहूमें आये गये वैष्णवनको समाधान करत हैं, और आमदनी तो थोरीसी है. जो परासोलीमें खेती है, तामें निर्वाह टेंटी फूलनसों करत हैं. यह बात सुनिके श्रीगुसांईजीने अपने मनमें राखी. ता पाछें (जब) कुम्भनदासजी श्रीगुसांईजीके दरसनकूं आये, तब दण्डवत् करिके ठाड़े होय रहे. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो कुम्भनदासजी ! बैठो. तब कुम्भनदासजी बैठे ! पाछें श्रीगुसांईजी सिगरे वैष्णवनकों बिदा करिके कुम्भनदासजीसों कहे, जो कुम्भनदासजी ! हम श्रीद्वारिकाके मिस परदेसकों जात हैं, तहां अनेक वैष्णवनसों मिलाप होयगो. सो वैष्णवननें बहोत विनती भरे पत्र लिखे हैं, तासों अवश्य जानो है. सो तुम हमारे सङ्ग चलो. सो भगवदीयनको विरहको क्लेश वाधा न करे, और भगवदीयनको काल आछें व्यतीत होय. सो तिहारे सङ्ग तें कछू जान्यो न परे. और हमने सुन्यो है, जो तिहारे घर द्रव्यको सङ्कोच है, सोऊ कार्य सिद्ध होयगो. तासों तुमकों सर्वथा चल्यो चहिये. तब कुम्भनदासजीने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! आपुके साम्हें हमसों बहोत बोल्यो नहीं जात है, जो आपु आज्ञा करो सोई हमकों करनो. इतनेमें उत्थापन समय भयो. तब श्रीगुसांईजी स्नान करिके, श्रीगोवर्द्धननाथजीकों उत्थापन करायकें, सेन पर्यन्तकी सेवासों पहोंचिके आपु बैठकमें पधारे. तब श्रीगुसांईजी आपु कुम्भनदाससों कहे, जो अब तुम घर जाऊ, जो सवारे घरसों विदा होयके आइयो, राजभोग आरती पाछें परदेसकों चलेंगे. पाछें कुम्भनदासी श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करिके अपुने घर जमुनावतामें आये. ता पाछें सवारे घरतें श्रीगुसांईजीके पास आये. तब श्रीगुसांईजी आपु स्नान करिके परवत ऊपर पधारिके श्रीनाथजी जों जगाये. पाछें सेवा

सिंगार करि राजभोग धरि समयानुसार भाग सरायके, राजभोग आरती करि श्रीगोवर्द्धननाथजी सो बिदा होय परवतसों नीचे पधारे. सो अप्सराकुण्ड ऊपर डेरा अगाऊ भये हते. तब कुम्भनदाससों कहें, जो अब हम अप्सराकुण्ड ऊपर डेरानमें जायकें सोवेंगे. सो तब सब वैष्णव तथा कुम्भनदासजी अप्सराकुण्ड ऊपर आये तब कुम्भनदासजी अपने मनमें विचार करन लागे, जो हे मन ! ''अब कहा करिये ? कहिये कहा कहिवेकी होय ? प्राणनाथ बिछुरनकी वेदन जानत नाहिं न कोय ।।१।।'' या प्रकार विचार करत श्रीगोवर्द्धननाथजीको विरह हृदयमें बढ़ि गयो. तब श्रीगुसांईजी आपु डेरानके भीतर जागे. सो जब उत्थापनको समय भयो, तब कुम्भनदासजीकों श्रीनाथजीके दरसनकी सुधि आई, नेत्रनमेंसों आंसुनकी धारा चली, सो सगरे सरीरमें पुलकावलो होंन लागी. पाछें कुम्भनदासजी डेरानके पास ही एक वृक्ष तरें ठाड़े - ठाड़े धीरे - धीरे गावन लागे. सो पद -

राग सारङ्ग -

किते दिन व्है जु गए बिनु देखे
तरून किसोर रसिक नन्दनन्दन कछुक उठत मुख रेखे ।।१।।

वह सोभा वह कान्ति बदनकी कोटिक चन्द बिसेखे ।
वह चितवनि वह हास्य मनोहर वह नटवर वपु भेखे ।।२।।

स्यामसुन्दर सङ्ग मिलि खेलनकी आवत जिय अपेखें ।
'कुम्भनदास' लाल गिरिधर बिनु जीवन जन्म अलेखें ।।३।।

यह कीर्तन कुम्भनदासजीनें अत्यन्त विरह क्लेशसों गायो. सो श्रीगुसांईजी आपु डेरानके भीतर बेठिके कुम्भनदासजीको सगरो कीर्तन सुने. सो कुम्भनदासजीको क्लेश श्रीगुसांईजी आपु सहि नाहीं सके. सो आपु डेरानतें बाहिर पधारिके कुम्भनदासजीकी यह दसा देखे, जो

नेत्रनसों जल वह्यो जात हैं, महा विरह करिके दुःखी होय रहे हैं. तब श्रीगुसांईजी आपु श्रीमुखतें कुम्भनदासजीसों कहे, जो कुम्भनदास ! तुम मन्दिरमें जायके श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करो, जो तिहारो विदेश होय चुक्यो.

भावप्रकाश : सो काहेतें ? जा जैसी तिहारी दसा यहां है, सो जैसी उहां श्रीगोवर्द्धननाथजीकी होयगी. सो कैसे जानिये ? जो जैसे 'गज्जनधावन' कों श्रीअक्काजीने पान लेवेकों पठायो सो गज्जनकों तो श्रीनवनीतप्रियजीके विरहको एक क्षन सह्यो न जातो, सो पान लेवेकों द्वारसों बाहिर जात ही विरह ज्वर चढ्यो. सो द्वार पास ही दुकानमें परि रह्यो, मूर्छा खाइके. और यहां मन्दिरमें श्रीआचार्यजी श्रीनवनीतप्रियजीकों राजभोग धरे. तब श्रीनवनीतप्रियजीने महाप्रभुनसों कही, जो मेरो गज्जन आवेगो तब में अरोगूंगो. तब श्रीआचार्यजी सबनसों पूछे, जो गज्जन कहां गयो है ? तब श्रीअक्काजी कहे, जो पान न हते तासों तासों गज्जनकों पान लेवे पठायो है. तब श्रीआचार्यजी कहे, जो तुम जानत नाही, जो गज्जन बिना श्रीनवनीतप्रियजी एक छिन नाहीं रहत हैं ? तासों गज्जनकों पान लेनकों क्यों पठायो ? ता पाछें गज्जनकों बुलायवेकों ब्रजावासी पठायो, सो गज्जनकों बुलायके ले आयो. तब गज्जनने श्रीनवनीतप्रियजीके पास आयके कह्यो, जो बाबा ? अरोगो. तब श्रीनवनीतप्रियजी अरोगे. सो गज्जन बिना आपु विरह करिकें बैठि रहे. सो यह श्रीआचार्यजीके मार्गकी मर्यादा है. जो जैसो सेवकको एक चित्तसों स्वामीके ऊपर (अनन्य) भाव होय, तेसे ही स्वामीको भाव दास विषे (विशेष) सेवकके ऊपर होय. सो श्रीभगवान् अर्जुन प्रति कहे हैं, जो -

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्हम् ।

तासों श्रीगुसांईजी आपु कुम्भनदासजीसों कहे, जो जैसो तुम यहां श्रीगोवर्द्धननाथजीके लिये विरह दुःख करत हो. तैसे उहां श्रीगोवर्द्धननाथजी तिहारे लिये विरह दुःख करत हैं. तासों तुम बेगि जायकें श्रीगोवर्द्धनानथजीके दरसन करो, तिहारो विदेश होय चुक्यो.

या प्रकार श्रीगुसांईजीने कुम्भनदासकों आज्ञा दीनी. तब कुम्भनदासको रोम - रोम सीतल होय गयो. तब मनमें प्रसन्न होय श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करि बेगि अप्सराकुण्डनतें दोरिके श्रीगोवर्द्धनाथजीके मन्दिरमें आये ता समय उत्थापनके दरसनको समय हतो, सो

किंवाड खुले. तब कुम्भनदासजीने यह पद गायो. सो पद -

राग नट -
जोपें चोंप मिलनकी होंई तो क्यों रह्यो ।
परे सुन सजनी लाख करे किन कोई ।।१।।

जोपे विरह परस्पर व्यापे तो कछु जीय बने ।
लोक लाज कुलकी मर्यादा ऐको चित्त न गिने ।।२।।

'कुम्भनदास जिहिं तन लागी और कछु न सुहाय ।
गिरिधरलाल तोय बिनु देखे छिन छिन कल्प बिहाय ।।३।।

यह पद सुनिके श्रीगोवर्द्धननाथजी प्रसन्न होयके कुम्भनदाससों कहे, जो कुम्भनदास ! मैं तेरे मनकी बात जानत हूं. जो तू मेरे बिना रहि नाहीं सकत है. तैसें मैं हू तो बिना रहि नाहीं सकत हों. तासों अब तू सदा मेरे पास ही रहेगो. तब कुम्भनदासजीने बहोत प्रसन्न होयके साष्टाङ्ग दण्डवत् कीनी, और हाथ जोरिके कुम्भदासजीने श्रीगोवर्द्धननाथजीसों बिनती कीनी, जो महाराज मोकों यही चहियत हतो, और यही अभिलाषा हती, जो तुमसों बिछोयो न होय. सो कुम्भनदासजी ऐसे कृपापात्र भगदीय हते.

वार्ताप्रसङ्ग ७ : और एक समय श्रीगुसांईजीके पास कुम्भनदास बैठे हते और सगरे वैष्णव हू बैठे हते. सो श्रीगुसांईजी आपु हंसिके कुम्भनदासजीसों पूछे, जो कुम्भनदास ! तिहारे बेटा कितने हैं ? तब कुम्भनदासजीने श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो महाराज ! बेटा तो मेरे डेढ़ हैं. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो हमने तो सात बेटा सुने हैं, और तुम डेढ़ बेटा कहे, ताको कारन कहा ? तब कुम्भनदासजीने कह्यो, जो

महाराज ! यों तो सात बेटा हैं, तामें पांच तो लौकिकासक्त हैं, वे बेटा काहेके हैं ? और पूरो एक बेटा तो चतुर्भजदास है. और आधो बेटा कृष्णदास है. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीकी गायनकी सेवा करत है.

भावप्रकाश : सो तहां सन्देह होय - गायनकी सेवा तो सर्वोपरि है. और गायनकी सेवा किये तें बहोत वैष्णव श्रीठाकुरजीकों पाये है, और कुम्भनदासजी कृष्णदासकों आधो बेटा क्यों कहे ? तहां कहत हैं, जो श्रीआचार्यजी आपु यह पुष्टिमार्ग प्रगट किये हैं. सों पुष्टिमार्ग ब्रजजनको भावरूप मार्ग है. सो भगवदीय गाये हैं, जो -

सेवा रीति प्रीति ब्रजजनकी जनहित जग प्रगटाई ।

सो ब्रजभक्तनकी कहा रीति है ? जो श्रीठाकुरजीके सन्निधानमें तो सेवा करें, सो स्वरूपानन्दको अनुभव करि संयोग रसमें मग्न रहैं. और श्रीठाकुरजी गोचारन अर्थ ब्रजमें पधारें तब ब्रजभक्त विरह रसको अनुभव अरि गान करें. सो या प्रकार संयोग रस और विप्रयोग रसको अनुभव जाकों होय सो पूरो वैष्णव होय. ओर (जामें) एक न होय सो आधो वैष्णव है. सो कृष्णदास तो गायनकीं सेवा करत है. और श्रीगोवर्द्धननाथजीको दरसन हू होत है. परन्तु ब्रजभक्तनकी रहस्य लीलाको अनुभव नाहीं है. तासों ये आधो है. और चतुर्भुजदास संयोग और विप्रयोग दोऊ रसके अनुभवयुक्त सेवा करत हैं, सो लीलासम्बन्धी कीर्तन हू गान करत हैं. तासों कुम्भनदास चतुर्भुजदासकों पूरो बेटा कहे.

यह कुम्भनदासजीके बचन सुनिके श्रीगुसांईजी आपु प्रसन्न होयके कहे, जो कुम्भनदास ! तुम सांची बात कही. जो भगवदीय है सोई बेटा है. और बहोत भये तो कौन कामके ? सो चतुर्भजदासजीकी वार्ता तो श्रीगुसांईजीके सेवकनमें लिखी है, और अब कृष्णदासकी वार्ता कहत हैं -

वार्ताप्रसङ्ग ८ : सो ये कृष्णदास श्रीगोवर्द्धननाथजीके गायनकी सेवा करते, सो गायनके ग्वाल हते. सो श्रीगुसांईजी आपु

कृष्णदासकों गायनकी सेवा दीनी हती. सो सगरे खिरककी सेवा करिकें आछें झारि बुहारिके सङ्ग बनमें जाते, सो सगरे दिन गाय चरावते. सो सन्ध्या समय गायनकों घेरिके ले आवते. एक दिन कृष्णदास गाय चरायके घर आवत हते सो पूंछरीके पास आये. सो सगरी गाय तो खिरकमें गई, और एक गाय बहुत बड़ी हती, ताको एन बहोत भारी हतो. सो दूध हू बहोत देती, और थन हू बड़े हते. सो वह गाय हरुवे - हरुवे चलती. वा गायके पाछें कृष्णदास आवत हते सो पूंछरीके पास श्रीगरिराजकी कन्दरामें ते एक नाहर निकर्यो. सो वह सगरी गाय तो भाजिके खिरकमें आई. और वह गाय धीरे - धीरे चलती, सो वा गायके ऊपर नाहर दोर्यो. तब कृष्णदासने नाहरसों ललकारिके कह्यो, जो अरे अधर्मी ! यह श्रीगोवर्द्धननाथजीकी गाय है, और तू भूख्यो होय तो मेरे ऊपर आव. सो नाहरकी यह रीति है, जो ललकारे सो ताही पे आवे. तब नाहर निकट आयो. सो जब कृष्णदासने वा गायकों हांकी, सो वह डरपिके भाजी सो खिरकमें आई. और कृष्णदासकों नाहरने मार्यो. ओर सब गाय भाजिके खिरकमें आई हतीं सो गायनको गोपीनाथ आदि ग्वाल दुहन लागे. सो गोपीनाथ ग्वाल बड़े कृपापात्र भगदीय हते सो देखे तो श्रीगोवर्द्धननथाजी वा बड़ी गायको दुहत हैं. और कृष्णदास वा गायको बछरा पकरें ठाड़े हते. सो कुम्भनदासजी हू ठाड़े हते. सो गाय बछराकों चाटत है. सो कुम्भनदासजीकों खिरकमें एसो दरसन भयो. ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी वा बड़ी गायकों दुहिके आपु तो मन्दिरमें पधारे. तब श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोवर्द्धननाथजीकों सेन भोग धरे. सो कुम्भनदास हू खिरकमें ते मन्दिरमें चले, सो दण्डोती सिलाके पास आये. इतनेमें सब समाचार आये, जो कृष्णदास ग्वालकों नाहरने मार्यो. तब कृष्णदासकी बात काहूने कुम्भनदाससों कही जो तिहारे बेटा कृष्णदासकों नाहरने मार्यो है. यह बता सुनिके कुम्भनदासजी मूर्छा खाइके गिर पड़े. सो ऐसे गिरे जो कछू देहानुसन्धान न रह्यो. सो कुम्भनदासकों ब्रजवासी वैष्णव बहोतेरो बुलावें सो कुम्भनदासजी बोले नाहीं. तब ये समाचार काहूने श्रीगुसांईजीसों जायके कहे, जो महाराज ! कुम्भनदासको बेटा कृष्णदास ग्वाल नाहरने मार्यो है, और कृष्णदासने गाय बचाई. आपु नाहरके आड़े परि देह छोड़ी, सो कृष्णदास पूंछरीकी ओर परे हैं. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो ऐसे मति कहो. क्यों ? जो गाय कृष्णदासकों कबहू छोडि आवे नाहीं.

भावप्रकाश : सो काहेतें जो अन्त समय गाय सङ्कल्प करत हैं, सो ताकों गाय उत्तम लोकमें ले जात है. और कृष्णदासने तो श्रीगोवर्द्धननाथजीकी गाय बचाई है, सो श्रीगोवर्द्धननाथजीकी गाय कृष्णदासकों कबहू न छोड़ेगी.

तब श्रीगुसांईजी आपु पुछे, जो कुम्भनदासजी कहां है ? तब काहू वैष्णवने बिनती कीनी, जो महाराज कुम्भनदासकों तो पुत्रको सोक बहोत व्याप्यो है, सो दण्डोती सिलाके पास मूर्छा खायके गिर परे हैं. सो कितनेक लोग पुकारत हैं, परि कुम्भनदासजी काहूसों बोलत नाहीं. जो अचेत परे हें, तब श्रीगुसांईजी आपु श्रीनाथजीकी सेवासों पहोंचिके अनोसर कराय परवत तें नीचे पधारि दण्डोती सिलाके पास कुम्भनदासजी परे हते तहां पधारे. ता समय वैष्णवनने सब समाचार कहे. सो श्रीगुसांईजी आपु देखें तो कुम्भनदासजीके पास सब लोग ठाड़े हैं. ता समय लोगननें कही, जो महाराज ! कुम्भनदासजी बड़े भगवदीय हैं, परन्तु पुत्रको सोक महा बुरो होत है, सो या पीड़ासों कोई बच्यो नाहीं है. तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो इनकों पुत्रको सोक नाहीं है, जो इनकों और दुःख है. सो तुम कहा जानो ? इनकों यह दुःख है जो सूतकमें श्रीनाथजीके दरसन कैसें होयंगे ? सो या दुःखसों गिरे हैं. सो अब तुम्हारो सन्देह दूर होयगो. तब श्रीगुसांईजी आपु भगवदीयनको स्वरूप प्रगट करिवेके लिये कुम्भनदासकों पुकारिके कहे, जो कुम्भनदास ! सवारे श्रीनाथजीके दरसनकों आइयो, जो तुमकों श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करवावेंगे. तब श्रीगुसांईजीके यह बचन सुनिके कुम्भनदासजीने तत्काल उठिके श्रीगुसांईजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् कीनी, और बिनती कीनी. जो महाराज ! आपु बिना मेरे अन्तःकरणकी कौन जाने ? तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो हम जानत हैं, तुमको संसार सम्बन्धी दुःख लगे नाहीं. जो कोई वैष्णव तिहारो एक क्षण सङ्ग करे तो वाको लौकिक दुःख न लागे. तो तुमकों कहा ? तासों जावो, जो कृष्णदासके सरीरको संस्कार करो. पाछें सवारे दसनकों आइयो. तब कुम्भनदासजी श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करिके जायके कृष्णदासके सरीरको क्रिया कर्म किये. और श्रीगुसांईजीकों आप बैठकमें जायके बिराजे, तब सगरे वैष्णव बैठकमें आयके बैठे. सो इतनमें गोपीनाथदास ग्वाल (नें) आयके कह्यो, जो महाराज ! कृष्णदासकों तो पूछरी पास नाहरने मार्या, और मैं खिरकमें गोदोहन करत हतो, सो ता समय श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु वा बड़ी गायकों दुहत हते और कृष्णदास वा गायको बछरा थांमे हते. सो गाय बछराकों चाटत हती. सो ऐसो दरसन खिरकमें मोकों भयो. तब श्रीगुसांईजी श्रीमुखसों कहे, जो यामें आश्चर्य कहा ? ये कृष्णदास ऐसे भगदीय हैं, जो आपु नाहरके आडे परे और श्रीगोवर्द्धननाथजीकी गायकों बचाई. सो कृष्णदासके ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु प्रसन्न हायके अपनी लीलामें कृष्णदासकों प्राप्त किये. सो तुम भगवदीय हो, तासों तुमकों दरसन भयो. औरकों तो लीलाके दरसन दुर्लभ हैं. यह बात सुनिके सगरे वैष्णव ब्रजवासी बहोत प्रसन्न भये जो सेवा पदार्थ ऐसो है. ता पाछें प्रातःकाल

कुम्भनदासजी दरसनकों आये. तब श्रीगुसांईजीने सेवकनसों आज्ञा कीनी, जो सब तें पहले कुम्भनदासजीकों दरसन करवाय देउ, ता पाछें और सगरे लोग दरसन करेंगे. पाछें श्रीगुसांईजीने सबतें पहले कुम्भनदासजीकों दरसन करवाय दियो. सो या प्रकार कुम्भनदासजीके ऊपर श्रीगुसांईजी आपु अनुग्रह किये.

भावप्रकाश : सो काहेतें ? जो सूतकीकों भगवत् - मन्दिरमें कौन आयवे देतो ? सो कुम्भनदासकों सूतकमें दरसन कराये. सो यह रीति वा दिनतें राखीं. जो सूतक जाकों होय सो हू दरसन पावे. सो या प्रकार कुम्भनदासजीकी कृपातें सूतकीनकों दरसन होंन लागे. सो यह रीति श्रीगुसांईजी आपु यासों किये, जो वैष्णवके हृदयमें स्नेह है, सो आगे कोई जानेगो नाहीं. तासों आगेके वैष्णवकों दरसनकी छुटटी रहे. तब वैष्णव हू सुख पावें, और श्रीगोवर्द्धननाथजी हु सुख पावें. तासों आगे दरसनकी छुटटी राखे.

सो कुम्भनदासजी भोग पर्यन्त दरसन करि पाछे परासोलीमें जायके विरहके पद गावते. सो पद -

राग बिहागरो -
तिहारे मिलन बिनु दुखित गोपाल
अति आतुर कुलबधू ब्रज - सुन्दिर प्यारे - विरह बेहाल ।।१।।

सीतल चन्द तपत दहत किरननि कमलपत्र जल - जनु ब्याल ।
चन्दन कुसुम सुहाय न बाढी है तन ज्वाल ।
'कुम्भनदास' नव तन स्याम तुम बिनु कनकलता सुकी मानों ग्रीष्म काल ।।२।।

राग बिहागरो -

अब दिन रात पहार से भए
तब तें निघटत नाहिन जब तें हरि मधुपुरी गए ।।१।।

यह जो नियत बिधाता जुग सम कीने जाम नए ।
जागत जात बिहात न क्यों हू ऐसे मीत ठए ।।२।।

ब्रजवासी सब परम दीन अति व्याकुल सोच लए ।
ज्यों बिनु प्रान दुखित जलरुह गन दारुन हृदे हए ।
'कुम्भनदास' बिछुरि नन्दनन्दन बहु सन्ताप दए ।
अब गिरिधर बिनु रहत निरन्तर लोचन नीर छए ।।३।।

राग केदारो -
औरनकों समीप विछुरनो आयो मेरे ही हिसा
सब कोऊ सोवे अपुने सुख आली मोकों चाहत जाय चहुं दिसा ।।१।।

ना जानों या बिधाताकी गति मेरे आंक लिखे ऐसे कौन रिसा ।
'कुम्भनदास' प्रभु गिरिधर कहेत निसदिन ही रटे ज्यों चातक घन त्रिसा ।।२।।

सो या प्रकार विरहके पद गायके कुम्भनदासजीने सूतकके दिन व्यतीत किये. ता पाछें शुद्ध होयके कुम्भनदासजी अपनी सेवामें आये, सो जैसे नित्य नेमसों सेवा करतें ताही प्रकारकी सेवा करन लागे. सो या प्रकारको स्नेह कुम्भनदासीको श्रीगोवर्द्धननाथजीमें हतो.

वार्ताप्रसङ्ग ९ : और एक दिन श्रीगोकुलनाथजी और श्रीबालकृष्णजी ये दोऊ भाई मिलिके श्रीगुसांईजीसों कहे, जो कुम्भनदासजी कबहू श्रीगोकुल नाहीं गये हैं सो ये कोई प्रकार श्रीगोकुल तांई जांय तब श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन कुम्भनदासजी करें. तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो कुम्भनदासजी तो श्रीगोवर्द्धननाथजीकी रहस्य लीलामें मगन हैं, सो इनसों श्रीगोवर्द्धननाथजी हिलै हैं. तब श्रीगोकुलनाथजी कहे, जो इनकों ले जायवेको उपाय तो करिये. पाछे न आवें तो भगवद् इच्छा. तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो उपाय करो, परन्तु कुम्भनदासजी श्रीयमुनाजी पार कबहू न उतरेंगे. पाछे कछुक दिनमें श्रीगुसांईजी आप श्रीगोकुल पधारे हते, और श्रीबालकृष्णजी और श्रीगोकुलनाथजी श्रीनाथद्वारमें हते. सो वैशाख सुदि ११ के दिन श्रीगोकुलनाथजी श्रीबालकृष्णजीसों कहे, जो श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजी हैं और आपुन दोऊ जने यहां हैं. तासों कुम्भनदासजीकों श्रीगोकुल ले चलिये. तब श्रीबालकृष्णजीने कह्यो, जो कैसे ले चलोगे? जो कुम्भनदासजी तो असवारी पर बैठत नाहीं हैं. सो तब श्रीगोकुलनाथजीने कह्यो, जो कुम्भनदासजी असवारी पें तो बैठेंगे नाहीं, और दिनमें श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन छोड़िके कहूं जायेंगे नाहीं. तासों रात्रि उजियारी है, सो हमहू पांवनसों चलेंगे सो चले चलेंगेसों देखें कहा कौतुक होत है? जो कुम्भनदासजी सरीखे भगवदीयको सङ्ग तो या मिष तें हायगो, सो यही बड़ो लाभ होयगो. पाछें दोनो भाई श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेन आरती तांई सेवासों पहोंचिके श्रीनाथजीकों पोढ़ाय अनोसर करवाय बाहिर आये. और कुम्भनदासजीको हाथ पकरिके भगवद् वार्ता लीलाको भाव कहन लागे. सो कुम्भनदासजी लीला रसमें मगन होय गये, सो कछु सुधि न रही जो हम कहां हैं? तब श्रीगोकुलनाथजी भगवद् वार्ता करत कुम्भनदासजीको हाथ पकरिके अन्योरकी ओर परवतसों उतरिके श्रीगोकुलकों चले. सो रहस्य वार्तामें मगन हैं. और श्रीबालकृष्णजी दोय चारि वैष्णव सङ्ग चुपचाप होयके कुम्भनदासजीकी और श्रीगोकुलनाथजीकी वार्ता सुनत श्रीगोकुलकों चले. तब मारगमें श्रीगोकुलनाथजी वार्ता करिके कुम्भनदासजीसों पूछे. जो श्रीस्वामिनीजीकों सिंगार कबहू श्रीगोवर्द्धनधर हू करत हैं? तब कुम्भनदासजी प्रेममें मगन हायके कहे, जो हां, हां, करत हैं. जो एक दिन आश्विन महिनामें श्रीनाथजी और स्वामिनीजी ललितादिक सखी सङ्ग रात्रिकों बनमें फूल बीने. ता पाछें समाज सहित रासमण्डलके पास सिंगारको चौंतरा हैं सो ता ऊपर आपु बिराजे. तब विसाखाजी सिंगार करन लागी. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो आजु सिंगार मैं करूंगो. सो तब श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीस्वामिनीजीके पास ठाड़े भये. सो मुखादिकके दरसन बिना रह्यो न जाय दोउनसों. तब विसाखाजी परम चतुर दोउनके हृदयको अभिप्राय जानि

श्रीस्वामिनीजीके आगे एक दर्पन धर्यो. तब वा दर्पनमें दोउनके श्रीमुख सन्मुख भये, सो अवलोकन लागे. सो श्रीठाकुरजी बड़े लम्बे बार श्याम सचिकन श्रीहस्तमें कांकसीसों सम्हारि, एक - एक बारमें झाने मोती परम चतुराईसों पिरोयके श्रीस्वामिनीजीके मुखचन्द्रशोभा दरपनमें देखिके प्रसन्न होय गये. सो हाथसों केस छूटि गये, तब सगरे मोती बारमेंसों निकसि सिंगारको चौंतरा है रतन खचित, तहां फेलि गये. तब बड़ो हास्य भयो. जो इतनी बारलों सिंगार किये सो एक छिनमें बड़ो होय गयो. सो यह सखीने कही. तब श्रीठाकुरजीने विसाखाजीसों कह्यो, जो तुम बेनी पकरे रहो, मैं पिरोऊं. तब विसाखाजीने बेनी पकरी. सो तब फेरि बेनी मोतीनसों सिंगार करि मोतीनसों मांग संवारी. पाछें फूलनके आभूषण सखीजनने बनायके श्रीठाकुरजीकों दिये. सो श्रीठाकुरजी पहरावत जांय और छिन - छिनमें मुखचन्दकी शोभा देखिके रोम - रोम आनन्द पावें. सो या प्रकार सब सिंगार श्रीगोवर्द्धननाथजी करिके काजर बेंदी, तिलक और चरणमें महाबर किये. पाछें श्रीस्वामिनीजी श्रीगोवर्द्धनधरको सिंगार किये. ता पाछे रासविलास आदि अनके लीला करी. सो या प्रकार वार्ता करत श्रीगोकुल साम्हे श्रीयमुनाजीके तीरलों कुम्भनदासजी आये. पाछे पार श्रीगोकुल तें नाव पर चढ़िके श्रीगुसांईजी आपु या पार आये. सवारे हू भयो. सो कुम्भनदासजीकों सरीरकी सुधि नाहीं, लीला रसमें मगन हते. तब कुम्भनदासजी सावधान हायके देखे तो सवारो भयो है. सो इतनेमें श्रीगुसांईजीको देखिके श्रीगोकुलनाथजीसों हाथहू छूटि गयो. सो कुम्भनदासजी महा उतावलसों भाजे जो श्रीगोवर्द्धननाथजीके यहां कीर्तन कौन करेगो? जो हाय - हाय मेरी सेवा गई. सो या प्रकार मनमें कहत दौरे, सो अति बेगि दोरे. तब श्रीगोकुलनाथजी और श्रीबालकृष्णजी और सब वैष्णव कुम्भनदासजीकों पकरिवेकों पीछे ते दौरे. सो कुम्भनदास तो भाजे दोरई गये. इन कोईकों पाये नाहीं. पाछे श्रीगुसांईजीके पास आये. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो अब कहा कुम्भनदासकों पावोगे? जो इनकों यहां काहेंकों लें आये हो? जो ये श्रीजमुनाके पार कबहू न उतरेंगे. सो हमने तुमसों पहले ही कह्यो हतो. तब श्रीगोकुलनाथजी श्रीगुसांईजीसों कहे, जो पार न उतरे तो कहा भयो? परन्तु सगरी रात्रि भगवद् वार्ताके भाव महा अलौकिक सिद्धि मिले तें भई. सो वह बड़ो लाभ भयो है, जो भगवदीयनको सत्सङ्ग एक क्षन हू दुर्लभ हैं. यह सुनिके श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो यह तो तुम ठीक कहे, परन्तु अब या समय तो कुम्भनदासकों दोरनो पर्यो. और जहां तांई कुम्भनदास श्रीगिरिराज ऊपर न जांयगे, तहां तांई श्रीगोवर्द्धननाथजी जागेंगे नाहीं. जो कुम्भनदास जगायवेके कीर्तन गावेंगे तब जागेंगे. सो ऐसे भक्तके आधीन श्रीगोवर्द्धननाथजी हैं. तासों तुमकों भगवद् वार्ता सुननी होय तो परासोलीमें जमुनावतामें जायके कुम्भनदाससों पूछियो. सो तहां कुम्भनदासजी तुमसों कहेंगे. ता पाछे श्रीगोकुलनाथजी, श्रीबालकृष्णजी, सब वैष्णव सहित श्रीगोकुल पधारे.

श्रीगुसांईजीको घोड़ा जीन सहित पार बंध्यो हतो, सो ता पर आप श्रीगुसांईजी बेगि ही असवार हायके घोड़ा दोरायके चले. और कुम्भनदासजी तो दोरे जात हते, सो तहां आयके श्रीगुसांईजी कुम्भनदासजीसों कहे, जो तुमने कबहू यह मारग देख्यो नाहीं, सो तुम भूलि जाओगे. तासों घोड़ाके पीछे - पीछे दौरे आवो. तब कुम्भनदासजी श्रीगुसांईजीके पीछे दौरे - दौरे चले जांय. सो यहां रामदास भीतरिया आदि जो न्हायके पर्वत ऊपर आवें सो (ये) छुय जांय. सो ऐसें करत चार घड़ी दिन चढ्यौ. तब श्रीगुसांईजी आपु श्रीगिरिराज पधारिके घोड़ा पर तें उतरिके तत्काल स्नान करि पर्वत ऊपर मन्दिरमें पधारे. तब देखें तो सगरे भीतरिया रामदास सहित न्हायके मन्दिरमें आये हैं. तब गुसांईजी आपु पूछे, जो रामदास ! आज इतनी अवार क्यों भई है? तब रामदासने बिनती कीनी, जो महाराज! आज न जानिये कहा भयो है? जो चारि बेर न्हाये और चार्यौ बेर सगरे भीतरिया छुवाने. सो अब पांचमी बेर न्हायके आये हैं, सो कारन जान्यो न पर्यो? तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो यह कुम्भनदासजीके लिये श्रीगोवर्द्धननाथजी कौतुक किये हैं. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप शङ्खनाद करवायके श्रीगोवर्द्धननाथजीकों जगाये. ता समय कुम्भनदासजीने जगायवेके पद गाये. सो श्रीगोवर्द्धननाथजी उठे. तब कुम्भनदासजीने अपने मनमें बहोत हरष मान्यो. जो मेरी कीर्तनकी सेवा मिली. ता पाछे राजभोग पर्यन्त श्रीगुसांईजी सेवासों पहोंचे. सवारे नृसिंह चतुर्दशी हती. सो केसरी पिछोड़ा, कुलह सिद्ध कियो. ता पाछें सेन पर्यन्त सेवामें पहोंचे. सो या प्रकार कुम्भनदासजी कबहू श्रीगोकुलकों न गये. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीकी लीलामें मग्न रहते. सो वे कुम्भनदासजी ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते.

वार्ताप्रसङ्ग १० : और एक समय परासोलीमें कुम्भनदासजी खेत ऊपर बैठे हते, और श्रीगोवर्द्धननाथजी कुम्भनदासके आगे खेतमें खेलत हते. इतनेमें उत्थापनको समय भयो तब कुम्भनदासजी उठिके श्रीगिरिराज चलिवेकों कियो. तब श्रीनाथजीने कुम्भनदासजीसों कही, जो तू कहां जात है ? सो तब इन (ने) कही, जो उत्थापनको समय भयो है, सो गिरिराज ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों जात हों. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो मैं तो तिहारे पास खेलत हों, तासों तू उहां क्यों जात है ? तब कुम्भनदासजीनें कही, जो महाराज ! यहां तुम खेलत हो और दरसन देत हो सो तो अपनी ओर तें कृपा करिके, और अबही तुम भाजि जाव तो मेरी तुमसों कछू चले नाहीं. और मन्दिरमें तो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके पधराये हो सो उहांसों कहूं जावो नाहीं, और ऊहां सबकों दरसन देत हो. और मन्दिरमें दरसनकी आसक्ति जो मोकों है, सो तासों तुम घर बैठेहू मोकों कृपा करि दरसन देत हो. या समय तुम कृपा करि दरसन न दे अनुभव जतावत

हो, सो मन्दिरकी सेवा दरसनके प्रतापसों. तासों उहां गये बिना न चले. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी हंसिके कहे, जो कुम्भनदास ! तेरो भाव महा अलौकिक है तासों मैं तोकों एक छिन नाहीं छोड़त हों. ता पाछें श्रीनाथजी और कुम्भनदासजी परासोलीसों सङ्ग चले. सो गोविन्दकुण्ड ऊपर आये, तब शङ्खनाद भये. तब गोवर्द्धननाथजी मन्दिरमें आये, और कुम्भनदासजी आन्योर तांई सङ्ग आये. सो तहां तें पर्वत ऊपर आप चढि मन्दिरमें श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये. सो कुम्भनदासजी ऐसे भगवदीय हते.

वार्ताप्रसङ्ग ११ : और एक दिन माली दोयसे आम बड़े - बड़े महासुन्दर टोकरामें लेके परासोली चन्द्रसरोवर है तहां आयो, पाछें टोकरा उतारिके कुण्डके पास सगरे आम भूमिमें धरिकें कपड़ा तें पोंछि - पोंछि मेल छुडावन लाग्यो. ता समय कुम्भनदासजी राजभोग आरतीके दरसन करिके श्रीगिरिराज तें चले सो चन्द्रसरोवर ऊपर जल पीवनकों आये. सो आम बहुत सुन्दर श्रीगोवर्द्धननाथजीके लायक देखिके कुम्भनदास वा मालीसों पूछें, जो आम तूं कहां ले जायगो ? तब वा मालीने कह्यो, जो मथुरा ले जाऊंगो, वहां इनके दस रुपैया लेऊंगो. सो कुम्भनदासके पास तो कछू पैसा हू न हते. सो कहा करें ? तब मनमें श्रीगोवर्द्धननाथजीको स्मरण करिकें कहे, जो महाराज ! यह सामग्री परम सुन्दर है, और आपु लायक है, (क्यों ?) जो उत्तम वस्तुके भोक्ता आपुही हो. तासों ये आम अरोगो. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी सगरे आम आयके अरोगे. सो वा मालीकों खबरि नाहीं. सो यह माली टोकरोमें आम भरिके मथुरा गयो. सो सांझ होय गई. सो एक रजपूत माट गाममें तें मथुरा कछू कार्यार्थ आयो हतो, सो वाने आम देखिके कह्यो, जो कहा लेयगो ? तब मालीने कही, जो दस रुपैया तें घाट न लेऊंगो. तब वह रजपूत दस रुपैया देके आम सगरे लेके श्रीयमुनाजीके तट पर आयो. सो वा रजपूतके सङ्ग एक सनोढ़िया ब्राह्मण हतो सो वाकों सौ आम दिये. सो दोऊ जनेनने पचास - पचास आम घरके लिये धरिके पचास - पचास आम दोउनने श्रीयमुनाजीके किनारे बैठिके चूसे. ता पाछें श्रीमथुरामें एक हाट ऊपर दोऊ जने सोये. सो दोउनकों स्वप्नमें श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन भये. सो ये जागे तब वा रजपूतने कही, जो ब्राह्मण देव ! तुमने कछू देख्यो. तब वा ब्राह्मणने कह्यो, जो श्रीगोवर्द्धननाथजी ठाकुरको दरसन भयो है. तब वा रजपूतने वा ब्राह्मण सो पूछी, जो श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु कहां बिराजत हैं ? तब वा ब्राह्मणने कही, जो यहां ते सात कोस ऊपर श्रीगोवर्द्धनपर्वत है, तहां बिराजत हैं. तब वा रजपूतने ब्राह्मणसों कही, जो तू महा मूरख है, जो ऐसे स्वरूपको साक्षात् दरसन करि पाछें और ठोर क्यों भटकत है ? सो मैंने स्वरूपके दरसन स्वप्नमें पाये. सो मोसों रह्यो नाहीं

जात हैं. जो सवारे तू सगरे आम ले और मैं ताको रुपैया पांच देऊंगो. जो मोकों श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन कराय दे. तब वा ब्राह्मणने कही, जो आछो. ता पाछें सवेरो भयो. तब वा रजपूतने पचास आम वा ब्राह्मणकों दीने. तब वह ब्राह्मण मथुराजीमें अपने घर आयके अपने पासके हू आम सौ देके वा रजपूतके पास आयके दोऊ जने चले. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेन आरतीके दरसन दोउ जनेनने किये. सो श्रीनाथजीने वा रजपूतको मन हर लीनो. ता पाछे दरसन होय चुके. तब रजपूतने अपने हथियार, कपड़ा, पांच रुपैया वा ब्राह्मणकों दिये और दस रुपैया और हते सो पास राखे. तब वह ब्राह्मणने कही, जो मैं घर जाऊंगो. सो वह ब्राह्मण तो मथुरा अपने घर आयो. पाछे वह रजपूत एक धोवती पहरे दण्डोती सिलाके पास ठाड़ो होय रह्यो. सो इतनेमें ही श्रीगोवर्द्धननाथजीकों अनोसर करायके श्रीगुसांईजी आप पर्वत तें नीचे पधारे. तब रजपूतनें दण्डवत् करिके कही, जो महाराज ! मैं बहोत दिनन तें भटकत हतो, सो मेरो अङ्गीकार करि मोकों अपने चरण पास राखिये. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो तुम पर कुम्भनदासजीकी कृपा भई है, तासों तिहारी यह दसा है. जो तेरे बड़े भाग्य हैं. सो तब श्रीगुसांईजी आपु अपनी बेठकमें पधारि वा रजपूतकों नाम सुनायो. तब वा रजपूतने दस रुपया श्रीगुसांईजीकी भेट किये. तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो तू अपने पास रहन दे. क्यों जो तेरे पास खरची नाहीं हैं, (तेंने) सब वा ब्राह्मणकों दीनी. तब वा रजपूतने दण्डवत् करिके बिनती कीनी, जो महाराज ! अब मेरे रुपयानसों कहा काम है ? मैं तो अब आपुकी सरन हूं, जो टहल बतावेगे सो मैं करूंगो. पाछे वा रजपूतने बिनती कीनी, जो महराज ! पूर्व जन्मको मैं कौन हूं. और कौन पुन्य तें मोकों आपको दरसन भयो है. तब श्रीगुसांईजी आपु कृपा करि वासों कह, जो तुम पहले ब्रजमें गोप हते. सो तुम शस्त्र बांधिके श्रीनन्दरायजीकी गायनके सङ्ग जाते, सो एक दिन तुमने सर्प मार्यो, सो अपराध तें तुमने संसारमें बहोत जन्म पाये. पाछे ये आम कुम्भनदासजीने देखे सो मन करिके श्रीगोवर्द्धननाथजीकों समर्पन किये. सो वा मालीके सगरे आम कुम्भनदासजीने श्रीनाथजीकों अङ्गीकार करवाये. ता पाछे वा मालीके पासतें दस रुपया देके तुमने आम लिये, सो पचास तुमने आम लिये, सो पचास तुमने राखे. तुमने वे महाप्रसादी आम लिये, और तुम दैवी जीव हते, सो तिहारे मन फेरिके श्रीनाथजीने स्वप्नमें श्रीनाथजीने दरसन दियो. और वह ब्राह्मण दैवी जीव न हतो, सो वाकों स्वप्नमें श्रीनाथजीने दरसन दियो, परन्तु तोहू वाकों ज्ञान न भयो. सो लीलामें तेरो नाम 'नेना' हतो. अब तुम श्रीनाथजीकी गायनके सङ्ग शस्त्र बांधिके जायो करो. और श्रीनाथजीकी रसोईमें महाप्रसाद लेऊ. जो शस्त्र कपड़ा हम तुमकों देंयगे. और आज तुम ब्रत करो, जो काल्हि तुमकों समर्पन करवावेंगे. तब वा रजपूतने दण्डवत् कीनी. ता पाछे दूसरे दिन श्रीगुसांईजी आपु

श्रीनाथजीको सिंगार करि वा रजपूतकों न्हवायके श्रीनाथजीके साम्हे ब्रह्मसम्बन्ध करवाये. तब वा राजपूतकी बुद्धि निर्मल हाय गई. ता पाछे वा रजपूतकों जूठिनकी पातरि धरी. पाछे शस्त्र देके श्रीगुसांईजी आपु बाकों प्रसादी कपड़ा दिये, सो लेकें घोड़ा ऊपर चढ़िके गायनके सङ्ग गयो. सो वाको मन श्रीगोवर्द्धननाथजीके स्वरूपमें लग्यो, सो कछुक दिनमें श्रीनाथजी गायनमें वा रजपूतकों दरसन देन लगे. ता पाछे वह रजपूत बड़ो कृपापात्र भगवदीय भयो.

भावप्रकाश : सो यामें यह जताये, जो कुम्भनदासजी मानसी सेवामें भोग धरे, सो श्रीगोवर्द्धननाथजी अरोगे. सो महाप्रसादी आम लिये तें वा रजपूतके ऊपर भगवद् अनुग्रह भयो. तासों जो भगवदीय अपने हाथसों भोग धरत हैं, सो तो सर्वथा ही श्रीठाकुरजी प्रीतिसों अरोगत हैं. सो महाप्रसाद अलौकिक होय तामें कहा कहनो ?

ता पाछे वा रजपूतके दोय बेटा हते सो वा रजपूतके पास आये. तब वा रजपूतने अपने दोय बेटानसों कह्यो, जो बेटा ! आपुन तो सिपाही हैं. सो कहुं लराईमें वृथा प्रान जाते, तासों मो पर प्रभु कृपा करी है, तासों अब तुम यह जानियो, जो मेरो पिता मरि गयो. तासों अब तुम जायके अपनो घर सम्हारो, हमारी बाट मति देखियो. हम तो नाहीं आवेंगे. पाछे वा रजपूतके दोउ बेटा अपने घर आये, और सब समाचार कहे, जो हमारो पिता वैरागी भयो है. तासों अब हमारे कहा काम है ? पाछें सब घरके मोह छांडिके बैठि रहे.

भावप्रकाश : या प्रकार महाप्रसाद तथा भगवदीयनको दरसन (जो) दैवी जीव होंय तिनकों फलित होय. सो यह सिद्धान्त जताये.

सो वे कुम्भनदासजी ऐसे भगवदीय हे, जो सहजमें आमन द्वारा रजपूत ऊपर कृपा किये. तासों भगवदीय, जो कृत्य करत हैं सो अलौकिक जानिये. क्यों ? जो श्रीगोवर्द्धननाथजी भगवदीयके बस हैं. और कुम्भनदासजीकी स्त्री और पांचों बेटा नाम मात्र पाये. सो कुम्भनदासजीके सङ्ग तें उद्धार भयो. और कुम्भनदासकी भतीजी, (जो) भाईकी बेटी हती, सो ब्याह होत ही विधवा भई. सो लौकिक सम्बन्ध यासों न भयो.

भावप्रकाश : क्यों ? जो मूलमें दैवी जीव है. सो श्रीविसाखाजीकी सखी है. सो लीलामें याको नाम 'सरोवरि' है. याके माता - पिता मरि गये यासों ये कुम्भनदासके घरमें रहती. लीलामें विसाखाजीकी सखी है. सो यहां (हू) कुम्भनदासजी (जैसे) भगवदीयको सङ्ग. तातें भतीजीकों हू श्रीगोवर्द्धननाथजी दरसन देते, और सानुभाव जनावते.

वार्ताप्रसङ्ग १२ : और एक समय श्रीगुसांईजीको जन्म दिवस आयो. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी अपने मनमें बिचारे, जो मेरो जन्म दिवस श्रीगुसांईजी सब वैष्णवन सहित जगतमें प्रगट किये. तासों मैं हू अब श्रीगुसांईजीको जनम दिवस प्रगट करूं. सो यह विचारिके जब पूस वदी ८ कूं रामदासजी श्रीनाथजीको सिंगार करत हते, ता समय कुम्भनदासजी सिंगारके कीर्तन करत हते. और श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुलमें हते. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी रामदासजीसों कहे, जो मेरे जनम दिवसकों श्रीगुसांईजी आपु बड़ो उत्साह करत हैं. तसों मोकों श्रीगुसांईजीको जनम दिवस माननो है. सो तुम सगरे मिलिके श्रीगुसांईजीके जनम - दिनको मण्डान करो, जो मोकों सामग्री अरोगावो. सो काल्हि जनम - दिन है. तब रामदासने बिनती कीनी, जो महाराज ! कहा सामग्री करें ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो जलेबी रसरूप करो. तब रामदास, कुम्भनदासजीने कह्यो, जो बहोत आछे. पाछें रामदासजी सेवासों पहोंचिके सगरे सेवकनकों भेले करिके कह्यो, जो सवारे श्रीगुसांईजीको जनम - दिवस है, सो श्रीगोवर्द्धननाथजीकों सामग्री करनी. तब सदू पाण्डने कही, जो घी चून चहिये इतनो मेरे घरसों लीजियो. पाछें कुम्भनदासजी तत्काल घर आये. तब घरतो कछु हतो नाहीं, सो दोय पाडा ओर दोय पडिया एक ब्रजवासीके पास बेचिके पांच रुपैया लायके कुम्भनदासजीने रामदासजीकों दिये. और सब सवेकनने एक रुपैया, कोई ने दोय रुपैया ऐसे दिये, सो ताकी खांड मंगाये. और घी मेंदा सदू पाण्डे लाये. सो सगरी रात्रि जलेबी किये. ता पाछें प्रातःकाल भयो. तब रामदासी अभ्यङ्ग करायके केसरी पाग, केसरी वस्त्र, वागा कुलह, श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुलसों अपने श्रीहस्तसों सिद्ध करिके पठाये हते सो धराये. पाछें भोग धरे. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कुम्भनदासजीसों कहे, जो तुम श्रीगुसांईजीकी बधाई गावो. तब कुम्भनदासजी बधाई गाये. सो पद -

राग देवगन्धार -

आज बधाई श्रीवल्लभद्वार
प्रगट भये पूरन पुरुषोत्तम पुष्टि करन विस्तार ।।१।।

भागि उदै सब दैवी जीवनके निःसाधन जन किये उद्धार ।
'कुम्भनदास' गिरिधरन जुगल वपु निगम अगम सब साधन सार ।।२।।

राग सारङ्ग -
प्रकट भए श्रीवल्लभ आय
सेवा रस विस्तार करनकों गूढ ज्ञान सब प्रकट दिखाय ।।१।।

निजजन सकल किये पावन घर घर बन्दनबार बंधाय ।
'कुम्भनदास' गिरिधर गुन महिमा बन्दीजन चारन गुन गाय ।।२।।

सो या भांतिसों कुम्भनदासजीने बहोत बधाई गाई, सो सुनिके श्रीगोवर्द्धननाथजी बहोत प्रसन्न भये. और यहां श्रीगुसांईजी आपु श्रीनवनीतप्रियजीकों अभ्यङ्ग कराय, केसरी वाघा कुलह धराय राज भोग धरिके श्रीनाथजीद्वार पधारे. तब रामदास कहे, जो राजा भोग आये हैं. तब श्रीगुसांईजी आपु स्नान करिके परवतके ऊपर मन्दिरमें पधारे. तब समय भये भोग सरायवेके जायके देखेते. जलेबीके अनेक टोकरा धरे हैं. तब श्रीगुसांईजी आपु रामदासजीसों पूछे, जो आज कहा उत्सव है, जो यह सामग्री इतनी अरोगाये हो ? तब रामदासजीने कही, जो आज आपुको जनम दिन श्रीगोवर्द्धनधर माने हैं, और सब सेवकनसों सामग्री कराई हैं. तब श्रीगुसांईजी आपु भोग सराय आरती किये ता पाछें अनोसर करायके आप अपनी बैठकमें पधारे और बिराजे. तहां रामदासजीसों बुलायके श्रीगुसांईजी आपु पूछे, जो सामग्री बहोत है, और सेवक (मन्दिरके) तो थोरे हैं, और निष्कञ्चन हैं, सो सामग्री कौन प्रकारसों भई है ? तब रामदासजी कहे जो

महाराज ! घी मेंदा तो सदू पाण्डे दिये, और पांच रुपैया कुम्भनदासजी दिये हैं. और ये वैष्णव कोई एक, कोई दोय, जो जासों बनि आयो सो दियो. सो ऐसो रुपैया २१) भये. ताकी खांड आई. सो श्रीप्रभुजीने अङ्गीकार कीनी. इतनेमें कुम्भनदासजी आयके श्रीगुसांईजीको दण्डवत् कीनी. तब कुम्भनदासजीसों श्रीगुसांईजी पूछे, जो कुम्भनदास ! तुम पांच रुपैया कहांसों लाये ? जो तिहारो घरकी बात तो हम सब जानत हैं. तब कुम्भनदासजी कहे, जो महाराज ! मेरो घर कहां है. मेरो घर तो आपके चरणारविन्दमें है, जो यह तो आपको हैं. दोय पाडा और दोय पडिया अधिक हती सो बेचि दीनी हैं. अपनो सरीर, प्रान, घर, स्त्री, पुत्र बेचिके आपके अर्थ लागे, तब वैष्णव धर्म सिद्धि होय. जो महाराज ! हम संसारी गृहस्थ हैं, सो हमसों वैष्णव धर्म कहा वने ? यह तो आपकी कृपा, दीन जानके करत हो. सो यह कुम्भनदासजीके बचन सुनि श्रीगुसांईजीको हृदो भरि आयो. तब आपु कहे, जो श्रीआचार्यजी आप जाकों कृपा करिके ऐसी दैन्यता देंय सो पावे. सो तब श्रीगोवर्द्धननाथजी सदा इनके पास रहें. सो या प्रकार श्रीगुसांईजी आपु कुम्भनदासजीकी बहोत सराहना करे. सो वे कुम्भनदासजी ऐसे कृपापात्र हते.

वार्ताप्रसङ्ग १३ : और एक समय कुम्भनदासजीने श्रीआचार्यजीसों पुष्टिमारगको सिद्धान्त पूछ्यो. तब श्रीआचार्यजी आपु कृपा करिके चौरासी अपराध, राजसी, तामसी, सात्विकी भक्तनके लक्षण और प्रातःकाल तें सने पर्यन्तकी सेवाको प्रकार कहे, बाललीला किशोरलीलाको भाव कहे. पाछें कहे, जो जा पर श्रीगोवर्द्धननाथजीकी कृपा होयगी सो या कालमें पूछेंगे और करेंगे. जो तुम सरीखे भगवदीय पूछेंगे और करेंगे. आगे काल महाकठिन आवेगो, और न कोई पूछेगो और न कोई कहेगो. सो या प्रकारसों श्रीआचार्यजी आपु कुम्भनदासजीसों कहे.

भावप्रकाश : सो काहेतें ? जो सिंघिनीको दूध सोनेके पात्र बिना रहे नाहीं. तैसे हीं भगवद्लीलाको भाव और भगवद्धर्म भगवदीय बिना औरके हृदयमें रहे नाहीं.

वार्ताप्रसङ्ग १४ : और एक दिन कुम्भनदासजीने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! मेरे घरमें स्त्री है और सातमें तें पांच

बेटा हैं, और सातों बेटानकी बहू हैं. परन्तु भगवद्भाव काहूकों दृढ़ नाहीं है. और एक भतीजी है सो तोकों भगवद्भाव दृढ़, ताकों कारन कहा ? तब श्रीगुसांईजी आपु सगरे वैष्णवनकों सुनायके कुम्भनदासजीसों कहे, जो कुम्भनदास ! तुम मन लगायके सुनियो जो सावधान होउ. मैं एक पुरानको इतिहास कहत हों. तब सगरे वैष्णव सावधान भये. पाछें श्रीगुसांईजी कहे, जो एक ब्राह्मण हतो, ताके एक कन्या हती. सो जब वह कन्या ब्याह लायक भई तब ब्राह्मणने एक और ब्राह्मणकों बुलायके कह्यो, जो मेरी कन्याको वर ठीक करिके आछो ठिकानो देखिके सगाई करि आवो. तब वह ब्राह्मण तो सगाई करिवेकों गयो ता पाछें दूसरो ब्राह्मण आयो, सो वाहूसों ऐसे ही कह्यो. तब दूसरो ब्राह्मण हू सगाई करिवेकों गयो. पाछें तीसरो ब्राह्मण आयो, सो वाहूसों ऐसे ही कह्यो. सो तीसरो हू ब्राह्मण सगाई करिवे गयो. पाछें चोथो ब्राह्मण आयो, सो बाहूसों ऐसे ही कह्या. सो तब चारों ब्राह्मण चार दिसानमें भगवद् - इच्छा तें गये. सो दोय - दोय तीन - तीन कोस ऊपर एक गाम हतो, तहां न्यारे - न्यारे गांवनमें चोरों ब्राह्मणने सगाई करी. सो एक महीना पीछे सगाई ठेराई. पाछें वरनकों तिलक करिके चारों ब्राह्मण या ब्राह्मणके आगे आयके कही, जो सगाई करि तिलक करि आये हैं. सो एक महीना पीछे प्रातःकालकी लगन है. या प्रकार चारों ब्राह्मननने कही. तब बेटीके पिताने कह्यो, जो यह तुमने कहा कियो. जो बेटी तो मेरी एक है. सो तुम चारों जन चार बर करि आये सो कैसे बनेगी ? तब उन चारों ब्राह्मननने कही, जो तेनें कह्यो तब हमने सगाई करी है. जो महीना पीछे बेटीको ब्याह न करेगो तो हम तेरे ऊपर जीव देंयगे. जो हम तिलक करि सगाई करी, सो कबहू छूटे नाहीं. तब वा ब्राह्मणनें कह्यो, जो भलो, महीना है सो ता बखतकी दीखेगी, जो कहा होनहार है ? तब चारों ब्राह्मणने कही, जो जब एक दिन ब्याहको रहेगो, सो तब हम ब्याह करावन आवेंगे. सो यह कहिके चारों ब्राह्मण अपने घरकों गये. पाछें या बेटीके पिताको महा चिन्ता भई. जो अब मैं कहां निकसि जाऊं ? जो प्रान छूटे तोऊ कन्याकी खराबी है. तासों अब मैं कहा करूं ? सो मारे चिन्ताके खानपान सब छूटि गयो, सो ऐसे चारि दिन भूखे गये. ता पाछे पांचमे दिन नदी ऊपर यह सन्ध्यावन्दन करत हतो. सो एक भगवदीय फिरत - फिरत आय निकस्यो, सो नदीमें न्हायो. इतने हीमें यह ब्राह्मण महादुःखसों पुकारिके रोयो. सो भगवद्भक्तको हृदय कोमल, सो वा ब्राह्मणको दुःख सहि नांहीं सके. तब उन भगवद्भक्तने वा ब्राह्मण सो पूछी, जो ब्राह्मण ! तुमकों ऐसो कहा दुःख है ? जो तेने पुकारिके रुदन कियो है. तब वा ब्राह्मणने अपनी सब बात कही. यह सुनिके वा भगवद्भक्तने कही, जो मैं तो एक ठिकाने रहत नांही हो, परन्तु तेरे लिये या नदी पे बैठ्यो हूं. जो मोकों प्रगट मति करियो. और जा दिनको ब्याह होय तासों एक दिन पहलें मोकों आयके

कहियो, जो श्रीठाकुरजी भली करेंगे. और अब तुम घर जायके खानपान करो. तब वा ब्राह्मणने कह्यो, जो भलो. पाछें जब ब्याहको एक दिन रह्यो सो प्रातःकालको समय हतो. तब वह ब्राह्मण वा भगवद्भक्तके पास आयो और बिनती कीनी, जो प्रातःकालको ब्याह है, तातें अब कछू उपाय बतावो. तब वा वैष्णवने कही, जो सन्ध्याकों आइयो. पाछे सांजकों ब्राह्मण वा भगवद्भक्तकी पास गयो. तब वा भक्तने कही, जो तिहारे आगे जो पशु पक्षी आवें सो तिनकों तुम पकरि लीजो. तब वह ब्राह्मण नदीके ऊपर बैठ्यो. सो बिलाई आई सो पकरी. पाछें एक कुतिया आई सो पकरी. ता पाछे एक गदही आई, सो पकरी. सो तब वा भक्तने कही, जो इन तीन्योंनकों एक कोठामें मूंदि देऊ. सो कोठामें मूंदि दिये. तब वा भक्तने कही, जो बेटी सोय जाय तब बाहूकों वामें मूंदि दिजियो. ता पाछें बेटी सोई, तब वा बेटीकों खाट सहित कोठामें मूंदिके ताला लगायके कहे, जो ब्याहकी तैयारी करो. सो तब प्रहर रात्रि गये चारों बर आये. पाछें सगाई करिवे वारे चारों ब्राह्मणने समाधान करिके उनकों बैठाये. इतनेमें ब्याहको समय भयो तब वा ब्राह्मणने भगवद्भक्तसों कही, जो अब व्याहको समय भयो है. तब भक्तने कह्यो, जो कोठरी खोलिके चारों बरनकों चारों कन्या देऊ, और ब्याह करि देउ. पाछें वह ब्राह्मण तारो खोलिके देखे तो चारों कन्या एक रूप, एक वय, बरोबरी, पहिचान न परे. सो चारों कन्या चारों बरनकों ब्याह, बिदा करि दीनी. पाछें चारों ब्राह्मणकों दक्षिणा दे बिदा किये. पाछें भगवद्भक्तने कही, जो हम चलेंगे. तब ब्राह्मणने पांयन परिके कह्यो, जो तुमने मोकों जीवनदान है सो यह घर तिहारो है. तातें आपकों जो चहिये सो लेउ. तब भक्तने कही, जो हमकों कछू चहियत नाहीं है. तेरो दुःख श्रीठाकुरजीने दूरि कियो है सो यही बड़ी बात भई है. तब वा ब्राह्मणने पूछी, जो चारों कन्या एक सरखी भई हैं, सो मोकों खबरि कैसे परे, जो मेरी बेटी कौनसे वरकों ब्याही है ? सो वा बेटीकों बुलावनी होय तो कैसे खबरि परेगी ? तब भक्तने कही, जो तेरे चारों जमाई हैं सो उन ही सों बेटीनके लक्षन पूछि लिजियो. तब ताकों खबरि परेगी. जो मनुष्यके लक्षन होय सोई तेरी बेटी जानियो. सो यह कहिके भगवद् भक्त तो चले गये. सो तब ब्राह्मणने कछुक दिन पीछे चारों जमाईनकों घर बुलाये, और चारों जमाईनकों रसोई करवाई. सो एक जनेकों भोजनकों बैठायो. तब भोजन करतमें वासों पूछी, जो मेरी बेटी अनुकूल है के नाहीं ? वामें कैसे लक्षन हैं ? तब उनने कही, जो सब गुन हैं परि कुतियाकी नांई भूसत है. जो जीभ ठिकाने नाहीं, और आचार क्रिया नाहीं है, सो तासों प्रिय नाहीं है. ता पाछे दूसरे जमाईकों बुलायो. वासों पूछी, जो कहो, मेरी बेटीके लक्षन कैसे हैं ? तब वाने कही, जो तिहारी बेटीमें आछे लक्षन है परन्तु चटोरी है, जो ठाकुरके लिये जो वस्तु आवे सोई वह चोरिके खाय जाय. बिलाईकी दसा है, जो पांच घरको खाये बिना चैन नाही परे.

ता पाछे तीसरी जमाईकों बुलाइके पूछी, जो मेरी बेटीके लक्षन आछे हैं ? तब वाने कही, जो तिहारी बेटीमें सब लक्षन आछे हैं, परन्तु घरमें आवे जाय, तब गदहीकी नांई भूसे, सदा मलीन रहे और जाकों ताकों तथा मोहूकों गदहीकी नांई दोउ पावनसों लात मारे है. पाछें चौथे जमाईको बुलायके पूछी, जो मेरी बेटीके लक्षन कहो ? तब उनने कही, जो तिहारी बेटीकी कहा बात है ? जो मानो लक्ष्मी है कोऊ देवता है. जो सबकों प्रिय वचन, मीठो बोलनो, उत्तम क्रिया, अचार बिचार, पति, गुरु, ठाकुर और वैष्णवमें प्रीति सो तब ब्राह्मननें जानी, जो यही मेरी बेटी है. ता पाछें वाही बेटी जमाईकों बुलावतो. सो तासों कुम्भनदास ! जा मनुष्यमें वैष्णवके लक्षन हैं सोई मनुष्य है. और कहा भयो जों मनुष्य देह भई ? जो रावण, कुम्भकरण खोटी क्रिया तें राक्षस कहाये. यासों जाकी जैसी क्रिया, वाको तैसो ही रूप जाननो. जो भतीजी बड़ी भगवदीय है. तासों तिहारे सङ्गते कृतार्थ होयगी. सो या प्रकार श्रीगुसांईजी आपु कुम्भनदासजी आदि सब वैष्णवनकों समुझाये. सो ये कुम्भनदासजी श्रीआचार्यजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते.

वार्ताप्रसङ्ग १५ : पाछें कुम्भनदासजीकी देह बहोत असक्त भई. सो तहां आन्योरके पास सङ्कर्षणकुण्ड ऊपर कुम्भनदासजी आयके बैठि रहे. तब चतुर्भुजदासने कही, जो गोदिमें करिके तुमकों जमुनावता गाममें ले चलें ? तब कुम्भनदासजी कहे, जो अब तो दोय चार घड़ीमें देह छूटेगी. तासों अब तो में इहांई रहुंगो. तब चतुर्भुजदासजीने श्रीगोवर्द्धननाथजीके राजभोग आर्तिके दरसन किये. तब श्रीगुसांईजी आपु चतुर्भुजदाससों पूछे, जो कुम्भनदास कैसे हैं ? और कहां हैं ? तब चतुर्भुचदासने कही, जो सङ्कर्षण कुण्ड ऊपर बैठे हैं. तब श्रीगुसांईजी आपु कुम्भनदासजीके पास पधारे. पाछें श्रीगुसांईजी आपु पधारिके कुम्भनदासजीसों कहे जो कुम्भनदास समय कौन लीलामें मन है ? सो कहो. तो समय कुम्भनदासजीसों उठ्यो तो गयो नाहीं, सो माथो नंवाय मनसों दण्डवत् करि यह कीर्तन गाये. सो पद -

राग सारङ्ग -
बिसरि गयो लाल करत गो - दोहन
निरखि अनूप चन्द मुख इकटक रह्यो है सांवरो मोहन ।।१।।

नव नागरी विचित्र चतुर गुन अङ्ग - अङ्ग रूप सुठोहन ।
'कुम्भनदास' लाल गिरिधर मन सर्यो कटिली भोंहन ।।२।।

राग सारङ्ग -
लाल तेरी चितवनि चित ही चुरावति
नन्दगाम वृषभानपुरा बीच मारग चलन न पावति ।।१।।

हों भरि हों डरि हों नहीं काहू ललिता दृगन चलावति ।
'कुम्भदास' प्रभु गोवर्द्धनधर धर्यो सो क्यों न बतावत ।।२।।

सो ये पद कुम्भनदासजी न गाये. तब श्रीगुसांईजी आपु पूछे, जो कुम्भनदास ! यह लीला तुम सुनाये तिहारे अन्त:करणको मन जहां है सो बतावो. तब कुम्भनदासजीने श्रीगुसांईजीके आगे यह पद गाये. सो पद -

राग बिहागरो -
तोय मिलनकों बोहोत करत है मोहनलाल गोवर्द्धनधारी
उत्तर मोहि देऊ किन भामिनि कहा कहों हो बात तिहारी ।।१।।

देखी तू जो जरोखनके मग तन सोहत जूमक सारी ।
तन मन बसीरी लाल गिरिधरके एक चित तें टरत न टारी ।।२।।

कहिरी सखी हों किहिं मग आऊं तू बताइ दे ठौर सुचारी ।
'कुम्भनदास' प्रभु बैठे तहां देखियत हें जहां उंची चित्रसारी ।।३।।

राग बिहागरो -
रसिकनी रसमें रहती गढ़ी
कनक बेलि वृषभान नन्दिनी स्याम तमाल चढ़ी ।।१।।

विहरत श्रीगिरिधरनलाल सङ्ग कौन पाठ पढ़ी ।
'कुम्भनदास' प्रभु श्रीगोवर्द्धनधर रति रस केलि बढ़ी ।।२।।

यह पद गायके कुम्भनदासजी देह छोड़ि लीलामें जायके प्राप्त भये. पाछें श्रीगुसांईजी आपु गोपालपुर पधारे. सो चतुर्भुजदासजी आदि सब बेटानने कुम्भनदासजीको संस्कार कियो. सो कुम्भनदासजी लीलामें आन्योरके पास गाम है, तहां द्वार पर प्राप्त भये. पाछे श्रीगुसांईजी उत्थापन तें सेन पर्यन्तकी सेवासों पोहोंचे. परन्तु काहू वैष्णवनसों बोले नाहीं, उदास रहे. तब रामदासजीने श्रीगुसांईजीसों कह्यो जो महाराज ! ऐसे क्यों हो ? तब श्रीगुसांईजी आपु श्रीमुखसों कहे, जो एसे भगवदीय अन्तर्धान भये. अब भूमिमें भक्तनको तिरोधान भयो. सो या प्रकार श्रीगुसांईजी श्रीमुखसों कुम्भनदासजीकी सराहना किये. सो वे कुम्भनदासजी श्रीआचार्यजीके एसे भगवदीय हते, जिनके ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजी तथा श्रीगुसांईजी सदा प्रसन्न रहते. तातें इनकी वार्ताको पार नाहीं. इनकी वार्ता अनिर्वचनीय है, सो कहां तांई कहिए.....वार्ता ।।८३।।

९१-कृष्णदास अधिकारी

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, कृष्णदास अधिकारी, सो ये अष्टछापमें जिनके पद गाइयत हैं, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं -

भावप्रकाश : सो ये कृष्णदासजी लीलामें ऋषभसखा श्रीठाकुरजीके अन्तरङ्ग, तिनको यह प्रागट्य हैं. सो दिनकी लीलामें तो 'ऋषभ' सखा हैं, और रात्रिकी लीलामें श्रीललिताजी अन्तरङ्ग सखी हैं. सो ललिता हू चारि रूप, आपु तो मध्या और श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीस्वामिनीजीकी लीला निकुञ्ज सम्बन्धी अनुभव करें. और श्रीललिताजीको दूसरो स्वरूप ऋषभ सखा होयके वनमें सङ्ग जाय, दिवसकी लीला रसको अनुभव करें. और तीसरो स्वरूप दामोदरदास हरसानी होयके श्रीआचार्यजीके सङ्ग सदा रहते. तिनसों श्रीआचार्यजी आपु दमला कहते. सो तो दामोदरदासजीकी वार्तामें भाव विस्तार करिके कह्यो है. और ललिताजीको चोथो स्वरूप कृष्णदास. सो गोवर्द्धनधरके पास रहिके अधिकार किये. सो श्रीगिरिराजके आठ द्वार हैं तामें 'बिलछू' बरसाने सन्मुख द्वार एक बारी है. सो ता मारग होयके श्रीगोवर्द्धननाथजी रास करनकों पधारते. सो ता द्वारके मुखिया हैं. सो ये कृष्णदास गुजरातमें एक 'चिलोतरा' गांव है. तहां एक कुनबीके घर जन्मे. सो वह कुनबी वा गामको मुखी हतो. सो वा गाममें हाकिमी करतो. जा समय कृष्णदास या कुनबी पटेलके घर जन्मे, सो ता समय या कुनबीने अनेक पण्डित ब्राह्मण गाम - गाम में तें बुलायके भेले करि उनसों पूछयो, जो मेरे यह बेटा भयो है, सो याके सगरे लक्षन कहो. और या बेटाकी आरवल कहो, सो मैं वाकों जनम भरिमें जीवे तहां तांई खरची देऊं. तब सगरे ब्राह्मणने या कुनबीसों कह्यो. जो हमकों चाहे तू कछू देय, चाहे मति देय. जो यह तेरो बेटा तो श्रीभगवानको भक्त होयगो. जो कृष्णदास याको नाम होयगो. और वह तिहारे घरमें न रहेगो. यह सुनिके वह पटेल कुनबी बहोत उदास भयो. और दान पुन्य बहोत कियो और कृष्णदास नाम धर्यो. पाछे कृष्णदास पांच बरसके भये तब ही तें भगवद्वार्ता कथामें जान लागे. सो मातापिता न जाने देंय तो रोवें, खानपान नाहीं करें. तब मातापिताने कही जो याकों जान देऊ. जो यह अबही तें बैरागीनसों प्रीति करत है, सो यह बैरागी होयगो जो मोसों ब्राह्मणननें आगे कह्यो हतो. तासो या बेटामें प्रीति करि मोह मति लगावो. सो यह सबको दुःख देयगो. पाछे कृष्णदास जहां तहां कथा सुनते. ऐसे करत कृष्णदास बरस बारह तेरहके भये. तब एक बनजारा एक दिन गामके बाहिर आयके उतर्यो, सो किरानो माल सब 'चिलोतरा' गाममें बेंचिके रुपैया चौदह हजार कियो. सो रात्रिकों चोर (ने) कृष्णदासके पिताके भेदमें, बनजाराके सब चौदह हजार रुपया लूटे. सो चौदह हजारमें ते तेरह हजार रुपैया कृष्णदासके पिताने राखे. सो यह बात कृष्णदासने जानी. तब कृष्णदासने अपने पितासों कह्यो, जो तुमने बुरो काम कियो है. क्यों ? जो तुमने रुपया पराये बनजाराके लुटायके लिये. सो तुम वाकों दे डारोगे तब तिहारो कल्याण होयगो. तब पिताने कृष्णदासकों मार्यो, और कह्यो, जो तू काहूके आगे मति कहियो. जो हम गामके हाकिम हैं, सो हाकिमको यही काम है. तब कृष्णदासनें कह्यो, जो अब तुम खराब होउगे. सो यह कहिके चुप

होय रहे. जब सवारो भयो, तब वह बनजारा चोंतरा ऊपर रोवत आयो. सो आयके कृष्णदासके पितासों कह्यो, जो हमकों चोरनने लूट्यो है. तब कृष्णदासके पिताने कह्यो, जो तू गाममें क्यों न रह्यो ? जो अब हमसों कहा कहत है ? सो ऐसे कहिके वा हाकिमनें अपने मनुष्यनसों कही, जो या बनजाराकों गाम तें बाहिर काढि देउ, जो सवारे ही रोवत आयो है. तब मनुष्यननें काढि दियो. सगरी पूंजी गई, सो यह महाविलाप करे. जो जहां यह महाविलाप करे. ताही कृष्णदास दूरितें दौरिके वाके पास आये. तब कृष्णदासकों दया आइ गई. तब कृष्णदास मनमें बिचारे, जो पिताको बुरो होयतो सुखेन होउ, परन्तु या बनजारा परदेसीको भलो करनो. पाछे कृष्णदास बनजाराके पास आयके कहे, जो तू एकान्तमें चलिके बैठ, जो मैं तोसों एक बात कहूं. पाछे एकान्तमें बनजाराकों ले जायके कृष्णदासने कह्यो, जो तेरो माल रुपैया सब गयो, मेरे पिता यहां को हाकिम है, सो ताने चोरी कराई है. सो हजार रुपैया चोरनकों देके सगरो माल मेरे पिताने राख्यो है. तासों या गाममें तेरी न चलेगी. तासों तू जायके राजनगर (अहमदाबाद) राजाके यहां फरियाद करियो. सो मोको तू साक्षीमें बुलाय लीजियो. परन्तु मेरे पिताके प्रान हू न जाय, और चोरनके हू प्रान न जांय, और तेरो भलो होय जाय, सो ऐसो तू करियो. सो या भांति राजा पास मोकों बुलाइयो मैं सब बताय देउंगो. तासों तेरो माल रुपैया सब या भांतिसों मिलेंगे. पाछे वा बनजारा राजनगरमें जाइके राजाके पास सब बात कही. और कह्यो, जो पिताने तो चोरी कराई और बेटानें बतायो. परन्तु कोईके प्राण न जाय. और मेरी वस्तु मिले, ऐसो उपाय करो. तउ राजाने कह्यो धन्य वह बेटा जो पिताकी चोरी बताई. सो वाकूं तो मैं राखूंगो. सो यह कहिके पचास मनुष्य और सिपाई बुलायके कह्यो, जो तुम 'चलोतरा' में जायके उहांके हाकिमकों बेटा सहित पकरि लावो. सो या भांतिसों जावो, जो कोई जानें नाहीं. सो ये पचास मनुष्य आये, सो लगे रहे. सो एक दिन सन्ध्या समय वह हाकिम घरके द्वार पर ठाड़ो हतो और वाको बेटाहू ठाड़ो हतो. सो राजाके मनुष्य वा हकिमकों पकरिके राजनगरमें ले आये. तब राजानें यासों पूछी, जो तू हाकिम होय परदेसीकों लूटत है ? जो या बनजारेको माल रुपैया देउ. तब वा हाकिमने कही, जो तुमसों कोईने जूठेहीं लगाई होयगी. मैं तो या बातमें जानत नाहीं हूं. तब वा राजाने कह्यो, जो तेरो बेटा सोंह खायके कहे सो सांचो. तब पिताने कही, जो बेटा कहि देय सो सांच है. तो राजाने कृष्णदाससों पूछी, जो तू सांच बोलियो. तब कृष्णदासने वा राजासों कह्यो, जो जीव है, तासों चूक्यो तो सही. जो हजार रुपैया चोरनकों दिये और तेरह हजार रुपैया मेरे पिताने राखे हैं. तासों मैंने वाही समय पिताकों समुझायो, परन्तु मान्यो नाहीं, सो ताको फल पायो. परन्तु यासों माल रुपैया ले लेहु और यासों कछु कहो मति. तब कृष्णदासके पितासों राजाने कही, जो अबहू चेत, नांतर तेरे प्राण जायंगे. तब कृष्णदासको पिता बोल्यो, जो काम तो बुरो भयो है. परन्तु या बनजाराकों मेरे सङ्ग करि देउ. सो याकों सब रुपैया घरतें दै देउंगो. तब राजाने दोइसे मनुष्य सङ्ग करिके बनजाराकों और कृष्णदासके पिताकों घर पठायो. और कृष्णदाससों वा राजाने कह्यो, जो तुम मेरे पास रहो, जो तुम सतवादी हो. तब कृष्णदास कहे, जो मोकों राखिके तुम कहा करोगे ? मैं सांच

कहूंगो, सबकों बूरो लगूंगो. जो आजुको समय तो ऐसो है, तासों मैं तो बैरागी होउंगो. जो मैं पिताके कामको नाहीं रह्यो. सो या प्रकार वा राजाने कृष्णदासके राखिवेको बहोत जतन कियो. परि कृष्णदास रहे नाहीं, पाछे पिताके सङ्ग घर आये. तब पिताने चोरनकों बुलायके सब पुत्रके समाचार कहे, जो या पुत्रने हमारी खराबी करी है, तासों हजार रुपैया लावो. नांतर तिहारे और हमारे प्राण जांयगे. तब उन चोरनने हजार रुपैया लाय दिये. सो तेरह हजार घरमेंसों लेके वा बनजाराकों चौदह हजार रुपैया दिये, और माल लूटिको देके वा बनजाराकों बिदा कियो. ता पाछे वा राजाने दूसरो हाकिम ‘चिलोतरा’ गाममें पठायो. तब कृष्णदासके पिताने कह्यो, जो पुत्र ! तेरो ऐसो बुरो कर्म भयो सो हाकिमी हू गई, और आयो कर्यो द्रव्य हू गयो. तब कृष्णदासने पितासों कही, जो पिता ! तेनें ऐसो बुरो कर्म कियो हतो जो येहू लोक जातो और परलोक हू बिगरतो, जो जीव तो बच्यो. सो हाकिमी छूटी सो आछो भयो. जो हाकिमी होती तो और पाप कमावते. तब पिताने कह्यो, जो तू वा जनमको फकीर है. तासों तैने हमकों हू फकीर कियो है. अब तेरे मनमें कहा है ? तब कृष्णदासने कही जो अब तुम मोकों घरमें राखोगे तो फकीर होउगे, याते मोकों विदा ही करो. तब पिताने कही, जो तू कछू खरचि ले घरमें ते कहूं दूरि चल्यो जा. न ताकों देखेंगे न दुःख होयगो. तब कृष्णदास पिताकूं नमस्कार करिके उठि चले. पाछे मनमें विचारे, जो ब्रज होय सगरे तीरथ करनो. तब कछुक दिनमें कृष्णदास श्रीमथुराजीमें आयके विश्रान्त घाट न्हायके व्रजमें निकसे, तब फिरते - फिरते श्रीगोवर्द्धन आये. सो तहां सुनी, जो देवदमनको मन्दिर बन्यो है, जो अब दोय चार दिनमें बिराजेंगे तो ब्रजवासीनकों बड़ो आनन्द होयगो. देवदमन जब तें बाहिर प्रगटे, जो श्रीगिरिराज गोवर्द्धनमें ते, तब तें सबनकों सुखकों सुख दियो है. और सबनके मनोरथ पूरन करत हैं. तब यह सुनिके कृष्णदासजी अपने मनमें विचारे, जो मैं हूं देवदमनको दरसन करूं. सो तब आयके कृष्णदासने देवदमनके दरसन किये. सो श्रीआचार्यजी आपु राजभोग आरती किये. सो दरसन करत ही कृष्णदासको मन श्रीगोर्द्धनधरने हरि लीयो. सो कृष्णदासकी ओर श्रीगोवर्द्धनधर देखि रहे. पाछे श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुसों कहे, जो यह कृष्णदास आयो है. सो बहोत दिनको बिछुर्यो है, सो मैं याकों देखत हों. तब कृष्णदासके पास आयके श्रीआचार्यजी कहे, जो कृष्णदास ! तू आयो ! तब कृष्णदासने दण्डवत् करिके बिनती कीनी, जो महाराज ! आपुकी कृपा तें आयो हूं. तासों अब मोकों सरन राखो. तब श्रीआचार्यजी कहे, जो जाऊ, बेगि न्हाय आवो जो तेरे साम्हें श्रीगोवर्द्धननाथजी देखि रहे हैं. तासों बेगि आय जावो. तब कृष्णदास दौरिके रुद्रकुण्डमें न्हाय आये. पाछे कृष्णदास श्रीआचार्यजीके पास मन्दिरमें आये. तब श्रीआचार्यजी आपु कृष्णदासकों श्रीगोवर्द्धननाथजके सन्निधान बैठायके नाम समर्पन कराये. सो कृष्णदास दैवी जीव हैं, सो तत्काल सगरी लीलाको अनुभव भयो. सो ताही समय कृष्णदासने यह कीर्तन गायो. सो पद -

राग सारङ्ग -
वल्लभ पतित - उद्धारन जानो
सरनि लेत लीला दरसावत ता पर ढरत गोवर्द्धनरानो ।।१।।

साधन वृता करत दिन खोवत श्रीवल्लभकौ रूप न जाने ।
जाकी कृपा कटाक्ष सफल फल 'कृष्णदास' तीनों जनम न माने ।।२।।

सो यह पद कृष्णदासने गायो, सो सुनिके श्रीआचार्यजी आपु बहोत प्रसन्न भये. ता पाछे श्रीआचार्यजी आपु श्रीगोवर्द्धननाथजीकों अनोसर कराये. ता पाछें मन्दिर सिद्ध भयो. सो तब सुन्दर अक्षयतृतीयाकों दिन देखिके श्रीगोवर्द्धननाथजीकों नये मन्दिरमें पाट बैठाये. तब पूरनमलके सब मनोरथ सिद्ध किये. तब श्रीआचार्यजी आपु सदू पाण्डेकों बुलायके कहे, जो मन्दिर तो बड़ो भयो, जो श्रीगोवर्द्धननाथजी बिराजे. परन्तु अब इनकी सेवाकों मनुष्य ठीक कर्यो चाहिये, तातें तुम सेवा करो. तब सदू पाण्डेने बिनती कीनी, जो महाराज ! हम तो ब्रजवासी हैं, जो आचार विचार सेवाकी रीति कछू समुजत नाहीं है. और घरके अनेक काम हैं, तासों आपु आज्ञा देउ तो राधाकुण्ड ऊपर बंगाली रहत हैं, सो अष्ट प्रहर भजन करत हैं. तासों उनकों राखे तो बुलाय लाऊं. तब श्रीआचार्यजी आपुक कहे, जो बुलाय लावो. सो सदू पाण्डे बंगाली बीस - पचीस बुलाय लाये. तब उनकों रुद्रकुण्ड ऊपर जोंपरी बनवाय दीनी, और श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवा दीनी. और कृष्णदासकों भेटिया किये. जो तुम परदेस तें भेटलायके बंगालीनकों दीजो, सो या भांतिसों सेवा करोगे. या प्रकार सब बंगालीनकों रीति भांति बतायके सेवा सोंपी. और कृष्णदास परदेस तें भेट ले आवते सो बंगालीनकों देते. सो रामदास चौहान रजपूत जब नयो मन्दिर बन्यो, तब देह छोड़िके लीलामें जायके प्राप्त भये. तब सगरी सेवा बंगाली करते.

वार्ताप्रसङ्ग १ : पाछें एक समय कृष्णदास श्रीद्वारिकाजीकी और भेट लेनको गये. सो श्रीद्वारिका श्रीरनछोडजीके दरसन करिके वैष्णवनसों भेट लेके आवत हते. सो एक वैष्णव कृष्णदासके सङ्ग हतो. सो मारगमें मीराबाईको गाम आयो, सो कृष्णदासजी मीराबाईके घर गये, तहां सन्त महन्त अनेक स्वामी और मारगके बैठे हते. सो काहूकों आये दस दिन काहूकों आये बीस दिन भये हते, परन्तु

काहूकी बिदा न भई हती और भेटके लिये बैठे हते. और कृष्णदास तो आवत ही कह्यो, जो मैं तो चलूंगी. तब मीराबाईने कह्यो, जो कछूक दिन कृपा करिके रहो. तब कृष्णदासने कही, जो हमारे तो जहां हमारे वैष्णव श्रीआचार्यजीके सेवक होंयगे सो तहां रहनो, अन्यमार्गीयके पास हम नांहीं रहत हैं. तब मीराबाई ११ मोहौर श्रीनाथजीकी भेट देन लागी सो कृष्णदास नाहीं लिये. और कृष्णदासने मीराबाई सो कह्यो, जो तू श्रीआचार्यजीकी सेवक नाहीं है, सो हम तेरी मोहौर हाथ तें न छुवेंगे. सो ऐसे कहिके उठि चले. तब सङ्गके वैष्णवने कृष्णदाससों कही, जो तुमने श्रीगोवर्द्धननाथजीको भेट क्यों फेरि दीनी ? तब कृष्णदासने वा वैष्णवसों कही, जो भेटकी कहा है ? जो बहोतेरी भेट वैष्णवनसों लेंयगे. श्रीगोवर्द्धननाथजीके यहां कोई बातको टोटा नाहीं है. परन्तु सगरे मारगके स्वामी महन्त इतने इकठौरे कहां मिलते ? तासों सबकी नाक नीची तो करी, जानेंगे जो हम भेटके लिये इतने दिनसों बैठे हैं, और श्रीआचार्यजीको एक सेवक शूद्र इतनी मोहौर भेट न लीनी सो जिनके सेवक ऐसे टेकी है, तिनके गुरुकी कहा बात होयंगी ? सो ये सब या भांतिसों जानेंगे. और आपुन अन्यमार्गीयकी भेट काहेकों लेंय ?

भावप्रकाश : तातें शिक्षापत्रमें कह्यो है -

''तदीयानां महद्दुःखं विजातीयेन सङ्गमः

तदीय जो भगवदीय है, तिनकों दुःख कछु नाहीं है. सो जेसो अन्यमार्गीय विजातीयके सङ्गको दुःख होय. तासों श्रीठाकुरजी तो निवाहें. जो विजातीयसों बोलनो नाहीं तब ही सुख है. और जो वार्ता करे तो रसको तिरोधान रसाभास निश्चय होय. तासों कृष्णदासजी मीराबाईके घर गये इतनो कहनो पर्यो. तासों मुख्य सिद्धान्त यह जताये, जो स्वमार्गीय बिना काहूतें मिलनो नाहीं. और कदाचित् मिलनो परे तो अपने धर्मकों गोप्य राखे. सो श्रीगुसांईजी आपु चतुःश्लोकीमें कहे हैं -

विजातीयनाकीर्णे निजधर्मस्य गोपनं ।

देशे विधाय सततं स्थेयमित्येव मे मतिः ।।१।।

सो ऐसे देशमें जाय जहां कोई वैष्णव नाहीं होय, तहां अपने धर्मकों प्रगट न करें, तो अपनो धर्म रहे. सो काहेतें ? जो लौकिक हू में पनारो है. सो तासों, न्हायो होइ सो बचिके चले. तासों उत्तम जनकों सब प्रकारसों बचनो परे. जैसे उत्तम सामग्री है ताकों अनेक जतनसों बचावे, तब श्रीठाकुरजीके भोग जोग रहे. तैसे ही वैष्णव धर्म है. तासों या धर्मकी रक्षा राखे तो रहै. यह सिद्धान्त प्रगट कियो.

सो वे कृष्णदास ऐसे टेकी परम कृपापात्र भगवदीय हते.

वार्ताप्रसङ्ग २ : और श्रीगोवर्द्धननाथजीको सिंगार बंगाली करते सो श्रीश्रीआचार्यजी श्रीगोवर्द्धननाथजीकों मीनाके आभरन समराय दिये हते. और मोरपक्षको मुकुट, काछिनी, बागा सब बनाय दिये हते. बंगाली श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवा करते. जो भेट श्रीगोवर्द्धननाथजीके आवती सो बंगाली जोरिके सब अपने गुरुनके यहां पठावन लागे. सो जब श्रीआचार्यजीने श्रीगोवर्द्धननाथजीके मन्दिरमें कृष्णदासकों अधिकारी किये, तब कृष्णदास मथुरा आगरे तें सामग्री लाय देते.

भावप्रकाश : और अवधूतदास श्रीआचार्यजीके सेवक हते सो ब्रजमें फिर्यो करते, सो वे बड़े कृपापात्र भगवदीय हते, सो अडीङ्गके वासी हते. अवधूतदासजी कुमारिकाके जूथमें है. सो रासपञ्चाध्याईमें जब श्रीठाकुरजी प्रगट भये, तब ये भक्त सगरे, स्वरूपको दरसन करिके नेत्र मूंदिके योगीकी नांई मगन हाय गये. सो ये भक्तको प्रागट्य अवधूतदासजीको है. सो लीलामें इनको नाम 'केतिनी' है. सो अडीङ्गमें एक सनोढ़िया ब्राह्मणके घर जन्मे. जब ब्रजमें अकाल पर्यो, तब मां बाप बनियाकों बेटा देके आपु तो पूरबकों गये. पाछें अवधूतदास बरस पन्द्रहके भये. तब वह बनियाको घर छोड़िके मथुरामें आयके श्रीआचार्यजीके दरसन करि बिनती कीनी. जो महाराज ! मोकों सरन लीजिये. तब श्रीआचार्यजी आपु कहे जो हमारे सङ्ग श्रीगोवर्द्धनकों चलो, जो श्रीनाथजीके सान्निध्य सरन लेयंगे. तब अवधूतदास श्रीआचार्यजीके सङ्ग श्रीगिरिराज आये पाछे श्रीआचार्यजी आप अवधूतदास तें कहे, जो तुम गोविन्दकुण्डमें न्हाय लेहु. तब अवधूतदास गोविन्दकुण्डमें न्हाय आये. पाछे श्रीआचार्यजी आपु गोविन्दकुण्डमें स्नान करिके मन्दिरमें पधारे. ता समय श्रीगोवर्द्धनधरकों राजभोग

आयो हतो. तब समय भये भोग सराय अवधूतदासकों बुलायकें श्रीगोवर्द्धनधरके सन्निध्य बैठाय नाम निवेदन करवायो. तब अवधूतदासने श्रीआचार्यजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! मेरे मनमें तो यह है जो मैं गोवर्द्धननाथजीकों हृदयमें धरिंके व्रजमें फिरों. तब श्रीआचार्यजी आपु हाथमें जल लेकें अवधूतदासके ऊपर छिरके. तब अवधूतदासजीकी अलौकिक देह होय गई. सो भूख प्यास कछू देहाध्यास बाधा नाहीं करे, सो मानसी सेवामें मगन होय गये. पाछे श्रीआचार्यजीने राजभोग आरती कीनी. सो वे श्रीगोवर्द्धनधरको स्वरूप अपने हृदयमें नख तें सिख पर्यन्त धरिके ब्रजमें सदा फिरते. सो स्वरूपानन्दमें सदा मगन रहते.

सो एसे करत बहुत दिन बीते. तब एक दिन श्रीगोवर्द्धननाथजीने अवधूतदासकों जताई, जो तुम कृष्णदास अधिकारीसों कहो, जो इन बंगालीनकों निकासो. जो मोकों अपनो वैभव बढ़ावनो है. और ये बंगाली मोकों भोग धरत हैं. सो इनकी चुटियामें एक देवीको स्वरूप है सो मेरे पास बैठावत हैं. तासों इन बंगालीनको बेगि काढ़ो. तब अवधूतदासने यह बात अपने मनमें राखी. सो एक दिन कृष्णदास श्रीगोवर्द्धनसों मथुराकों जात हते, सो मारगमें अवधूतदासनें कृष्णदाससों पूछी, जो तुम कहां जात हो ? तब कृष्णदासने अवधूतदाससों कह्यो, जो मथुरा जात हों, जो कछू सामग्री चहियत है. तब अवधूतदासने पूछी, जो श्रीनाथजीकी सेवा कौन करत है ? तब कृष्णदासने कही, जो बंगाली सेवा करत हैं. तब अवधूतदासने कृष्णदाससों कह्यो जो श्रीगोवर्द्धननाथजीकी इच्छा बंगालीकों काढ़िवेकी है. सो तुम बंगालीनकों काढ़ो. जो बंगालीनकी चुटियामें एक देवीको स्वरूप है. सो जब बंगाली श्रीनाथजीकों भोग धरत हैं, तब चुटियामें ते निकासिके देवीकों पास बैठावत हैं. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीकों सुहात नाहीं है. तासों बंगालीनको बेगि काढ़ो. जो मोसों आपुन आज्ञा करी है. तब मैं तुमसों कह्यो है. तब कृष्णदासने कह्यो, जो बंगाली श्रीआचार्यजीने राखे हैं. तातें श्रीगुसांईजी आज्ञा करें, तब काढ़े जांय. तब अवधूतदास कहें, जो तुम अड़ेलमें जायके श्रीगुसांईजीकी आज्ञा ले आवो. तासों जैसे बने तैसे इन बंगालीनको काढ़ो. तब कृष्णदास मथुरा जात हते सो अडीङ्ग तें फिरिके श्रीगोवर्द्धन आये. सो आयके सगरे बंगालीनसों कही, जो मैं अड़ेलमें श्रीगुसांईजीके पास जात हों, सो कछू काम है. पाछें सगरे सेवक, पोरिया, ब्रजवासिनसों कहे, जो तुम सावधान रहियो. मैं श्रीगुसांईजीके पास अड़ेल जात हों. ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजीसों बिदा होयके कृष्णदास अड़ेलको चले सो दिन पन्द्रहमें कृष्णदास अड़ेलमें श्रीगुसांईजीके पास आये. तब श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् किये. पाछें श्रीगुसांईजी पूछे, जो कृष्णदास ! तुम श्रीनाथजीकी सेवा छोड़िके क्यों आये ? तब कृष्णदासने कही, जो श्रीगोवर्द्धननाथजीकों अपनो वैभव बढ़ावनो है, और बंगालीनकी चुटियामें एक देवी है, सो राजभोगके समें बेठावत हैं. और जो

भेट आवत है सो सब वृन्दावनमें अपने गुरुनकों पठाय देत हैं. सो अबही तें काहूको मानत नाहीं हैं सो आगे बहोत दिन तांई बंगाली रहेंगे तो झगड़ो बढ़ेगो. तासों बंगालीनकों आपु काढ़िवेकी आज्ञा दीजिये, सो मैं जायके काढूंगो. तब श्रीगुसांईजी आपु कृष्णदाससों कहे, जो श्रीगोपीनाथजी पहेला परदेस पूरवको कियो हतो, सो एक लक्ष रुपया पूरवसों भेट आई हती. सो गोपीनाथजी प्रथम अड़ेलमें आयके कहे. जो यह पहले परदेसकी भेट श्रीगोवर्द्धननाथजीकी है. सो यह कहीके एक लक्ष रुपया लेके श्रीगोपीनाथजी श्रीजीद्वार पधारे, सो तहां रूपे सोनेके थार, कटोरा श्रीनाथजीकों कराये. ता पाछें सेवा सिंगार करि श्रीगोपीनाथजी अड़ेलमें आये. तब बंगाली सब मिलिकें सगरे थार कटोरा द्रव्य वृन्दावनमें अपने गुरुनके यहां पठाय दिये. सो सब समाचार हमारे पास आये परि हम कहा करें ? जो बंगालीनकों श्रीआचार्यजीने राखे हैं. सो तासों बंगाली कैसे निकसेंगे. तब कृष्णदासने कह्यो, जो महाराज ! श्रीगोवर्द्धननाथजीकी इच्छा ऐसी है, जो बंगालीनकों निकासिवेकी. तासों आपु या बातमें बोलो मति. तासों मैं जैसे बनेगी वैसे बंगालीनकों काढूंगो. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो अवश्य, बंगालीनकों निकास्यो चहिये. जो बहुत दिन रहेंगे तब झगरो करेंगे. तब कृष्णदासने कही, जो महाराज ! मोकों दोय पत्र लिखि दीजिये. सो एक राजा टोडरमलके नामको, और एक राजा बीरबलके नामको. तब श्रीगुसांईजी आपु दोय पत्र लिखि दिये. जो कृष्णदास श्रीगोवर्द्धनमें है सो ये तुमसों कहें, सो करि दीजो. जो हमकों बंगाली काढ़ने हैं, और सेवक राखने हैं. और कृष्णदास श्रीगोवर्द्धननाथजीके अधिकारी हैं. तासों ये करें सो हमकों प्रमाण है. सो यह लिखिके कृष्णदासकों दोऊ पत्र दिये. तब कृष्णदास श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करिके चले, सो कछुक दिनमें आगरेमें आये. तब राजा टोडरमलकों और बीरबलकों दोऊ पत्र श्रीगुसांईजीके हस्ताक्षरके दिखाये, तब उन कह्यो, जो तुम कहो सो हम करें. तब कृष्णदासनें कही, जो अब तो में श्रीनाथद्वार बंगालीनकों काढ़िवेकों जात हूं. जो कदाचित् बंगालीनके गुरु श्रीवृन्दावनमें हैं सो देसाधिपतिके आगे पुकारें तब उनको ठीक राखियो. तब उन दोऊ जनेनने कही, जो तुम जाउ. तुमकों श्रीगुसांईजीकी आज्ञा होय सो करो. जो हम ठीक राखेंगे. पाछें कृष्णदास आगरे तें चलेसों मथुरा आये. पाछें मथुरा तें श्रीगोवर्द्धन आये. तहां मारगरमें अवधूतदास मिले. तब अवधूतदासने कही, जो कृष्णदास ! ढील क्यों करि राखी है ? जो श्रीनाथजीकों अपुनो वैभव बढ़ावनो है. तासों बंगालीनकों बेगि काढ़ो. जो श्रीगोवर्द्धनधरकी इच्छा है. तब कृष्णदासने कही, जो मैं श्रीगुसांईजीकी आज्ञा ले आयो हूं. और अब जातही बंगालीनकों काढ़त हूं. सो यह कहिके कृष्णदास चले, सो श्रीनाथजीद्वार आये. सो रुद्रकुण्ड ऊपर आय बंगालीनकी जोंपरीमें आंच लगवाय दीनी. तब सोर भयो सो सगरे बंगाली श्रीनाथजीकी सेवा छोड़िके परवत तें नीचे

उतरिके अपनी - अपनी जोंपरीमें आये, सो अग्नि बुझावन लागे तब कृष्णदासने श्रीगोवर्द्धननाथजीके मन्दिरमें सब ठौर अपने मनुष्य ब्रजवासी दोयसे राखे (हते) सो बैठार दिये. और कह्यो, जो बंगाली पर्वत ऊपर चढ़े ताको चढ़न मत दीजो. और ब्राह्मण सेवक भीतरियानसो कहे, जो तुम श्रीनाथजीकी सेवामें सावधान रहियो. तब यह कहिके कृष्णदास परवततें नीचे हाथमें लकुटी लेके ठाड़े भये. पाछें बंगाली अग्नि बुझायके सगरे आये, सो पर्वत ऊपर मन्दिरमें चढ़न लागे. तब कृष्णदासने उन बंगालीनसों कह्यो, जो अब तिहारो काम सेवा नाहीं है. जो हमने चाकर राखे हैं, सो सेवा करनको गये हैं. तब बंगालीनने लरिवेकी तैयारी करी, और कह्यो जो हमारे ठाकुर हैं, जो हमकों श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें राखे हैं. सो तब लराई भई. पाछें कृष्णदासने बंगालीनकों भजाय दिये. तब सगरे बंगाली भाजे तब मथुरामें आयके रूपसनातनसों सगरी बात कही, जो कृष्णदास जातिको शूद्र, सो सगरेनकी झोंपरी जराय दीनी. और सेवनकों मारिके सेवा ते बाहिर काढ़ि दिये हैं. सो या प्रकार बात करत हते, इतनेमें कृष्णदास हू रथ पर चढ़िके पचास व्रजवासी हथियारबन्ध सङ्ग ले श्रीमथुराजीमें आये, सो पहले रूपसनातनके पास आये. तब रूपसनातनने कृष्णदाससों खीजिके कह्यो, जो क्योंरे ! शूद्र ! तैने इन ब्राह्मणनकों क्यों मार्यो है ? जो यह बात देसाधिपति सुनेगो, तब तू कहा जुबाव देयगो ? तब कृष्णदासने कह्यो, जो हूं तो शूद्र हौं. परि मैं ब्राह्मणनको सेवक तो नाहीं करत हों. तुमहू तो अग्निहोत्री ब्राह्मण नाहीं हो. तुमहू तो कायस्थ हो, कायस्थ होयके इन ब्राह्मणनकों दण्डवत् करात सेवक करत हो, सो तुमहू जबाब देतमें बहोत दुःख पावोगे. जो तुमसों जुवाब न बनेगो. और मैं तो जुवाब दे लेउंगा, जो तिहारो मन होय तो चलो. देखो तो सही, जो तुमसों जुवाब होत है ? जो मैं कैसे करत हों ? सो यह कृष्णदासके बचन सुनिके रूपसनातनने कही, जो तुम जानो और ये जाने. जों हमतो कछू जानत नाहीं हैं. सो या प्रकार रूपसनातन सगरे बंगालीनके गुरु हते सो तिनने यह बात कही. तब सगरे बंगाली निरास होयके मथुराके हाकिमके पास जायके यह बात कही. जो कृष्णदासने हमकों श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवामें ते काढ़ि दिये हैं. तासों तुम कोई प्रकारसों हमकों रखाय देउ. यह बात करत हते, इतने ही में कृष्णदास हाकिमके पास आये. सो कृष्णदासको तेज देखत ही वह हाकिम उठिके कृष्णदासकों पूछि, पास बैठायके कही, जो तुम बड़े हो, और श्रीगोवर्द्धननाथजीके अधिकारी हो. तासों तुम इन बंगालीनको गुन्हा माफ करो. अब भई सो तो भई. परि अब इनकों फेरि राखो, जो सेवा करें. तब कृष्णदासने कही, जो अब तो हम इनकों नाहीं राखेंगे, अब ये हमारे चाकर नाहीं. ये चाकर होय लरिवेकों तैयार भये. इनकी झोंपरी जरि गई तो हम इनकी झोंपरी और बनवाय देते. परन्तु ये सगरे श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवा छांड़ि पर्वततें नीचे क्यों उतरि

आये ? तासों अब इनको सेवामें काम नाहीं है. और आपु कहत हो, जो इनकों राखो. सो अब हम या बातको पत्र श्रीगुसांईजीकों लिखेंगे. सो वे कहेंगे, तैसो करेंगे. तब वा हाकिमने कही, जो आछी बात है, जो तुम श्रीगुसांईजीकों लिखो, तब कृष्णदास श्रीनाथजीद्वार आये. ता पाछें वे बंगाली वृन्दावनमें रहे. सो ता पाछे फेरि एक दिन सगरे बंगाली भेले होय देसाधिपतिके पास आगरेमें आयके कृष्णदासकी चुगली करी. तब देसाधिपति अकबर बादशाहने कही, जो कृष्णदास कौन है ? जो इन ब्राह्मणनकों पूजामें ते काढ़े, सों उनकों बुलावो. तब राजा टोडरमलने और बीरबलने अकबर बादशाहसों कह्यो, जो श्रीगोवर्द्धननाथजी ठाकुर श्रीविटठलनाथजी श्रीगुसांईजीके हैं. सो पहले ये बंगाली सेवामें राखे हते सो इनकों खरची देते. जो अब इनकों काढ़ि दिये हैं. तब देसाधिपतिने कही, जो बंगाली झूठि चुगली करत हैं. जो चाकरको कहा है ? तासों कृष्णदासकों बुलायके कहो, जो उनको मन हाय तो राखें. तब देसाधिपतिके मनुष्य कृष्णदासकों लेवेकों श्रीगिरिराज आये. सो कृष्णदासने तो पहले ही सुनी हती, सो रथ ऊपर चढ़िके दस बीस आदमी लेके देसाधिपतिके मनुष्यके सङ्ग आगरेमें आये. तब कृष्णदास राजा टोडरमल और बीरबलसों मिले. तब राजा टोडरमल और बीरबलने कह्यो जो बंगालीनने चुगली करी हती, सो हमने कहि दीनी है. और फेरि हू आज कहि देंयगे जो आजुको दिन तुम यहां रहो. तब कृष्णदास उहां रहे. तब राजा टोडरमल और बीरबल दरवारके समय देसाधिपतिके पास आ अकबरसों कहे, जो कृष्णदास श्रीगोवर्द्धननाथजीके अधिकारी आये हैं, और उनको मन बंगालीनकों राखिवेको नाहीं है. जो और चाकर राखे हैं, और ये तो काढ़े हैं. तब देसाधिपतिने कही, जो आछो, उनको मन होय तो ताकों चाकर राखें. यामें झूठो जगरो कहा है ? तासों बंगालीनकों काढ़ि देउ. तब राजा टोडरमल और बीरबलने आयके बंगालीनसों कही, जो देसाधिपतिको हुकम तुमकों काढ़ि देवेको भयो है, तासों तुम चुप होयके चले जाउ. जो झगरो करोगे तो दुःख हावोगे. तासों हमने तुमकों समुझाय दियो है. तब सगरे बंगाली निरास होयके चले आये. सो वृन्दावनमें रहे. और कृष्णदास राजा टोडरमल और बीरबलसों विदा होयके चले आये, सो श्रीगिरिराज ऊपर आये. ता पाछें दोय कासिद बुलायके श्रीगुसांईजीकों बिनती पत्र लिख्यो, तामें यह लिख्यो, जो बंगालीनकों आपुकी आज्ञा तें काढ़े, ताको देसाधिपतिसों जुवाब होय चुक्यो है, जो अब झगरो मिटि गयो है. और बंगाली झूठे राजद्वार तें परि चुके हैं. तासों अब कृपा करिके पधारिये. सो दोय जोड़ी कासिदकी श्रीगुसांईजीके पास गई. तब श्रीगुसांईजी आपु पत्र बांचि अड़ेल तें वेगि ही पधारे, सो श्रीनाथजीद्वार आयके कृष्णदासकों बुलाय श्रीगोवर्द्धननाथजीके सन्मुख अधिकारीको दुसालो उढ़ायो. और श्रीगुसांईजी आपु श्रीमुखतें कहें, जो कृष्णदास ! तुमने बड़ी सेवा करी है, जो यह काम तुमही तें बने

जो बंगालीनकों काढ़े. तासों अब सगरो अधिकार श्रीगोवर्द्धननाथजीको तुमही करो. हमहू चूकें तो कहियो, जो कोई बातको सङ्कोच मति राखो. जो सगरे सेवक टहलुवानके ऊपर तिहारो हुकुम, औरकी कहा है ? जो ऐसी सेवा तुम ही करी, जो तुम श्रीगोवर्द्धननाथजीसों कहोगे सोई करेंगे. तुम श्रीआचार्यजीके कृपापात्र हो, सो तिहारी आज्ञामें (जो) चलेंगे तिन सबनको भलो होयगो. तासों अब तुम श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवा भली भांतिसों करियो. सो सावधान रहियो. पाछें कृष्णदास श्रीगुसांईजी (और) श्रीगोवर्द्धननाथजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् करिके अधिकारकी सगरी सेवा करन लागे. ता दिनतें श्रीनाथजीके अधिकारकी गादी बिछवे लगी. श्रीगुसांईजीकी आज्ञा तें कृष्णदास गादी ऊपर बैठते. ता पाछें बंगालीनने सुनी, जो श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धन पधारे हैं, और सिंगार करत हैं. सो सगरे बंगाली मिलिके श्रीगुसांईजीके पास आये. पाछे बिनती करिके कहे, जो हमकों श्रीआचार्यजीने श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवामें राखे हते, सो कृष्णदासनें काढ़े हैं, तासों आपु फेरि हमकों सेवामें राखो. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो तुम सगरे श्रीनाथजीकी सेवा छोड़िके परवत तें नीचे उतरि आये, सो दोष तिहारो है. और अब श्रीगोवर्द्धननाथजीकी इच्छा तुमकों राखिवेकी नाहीं हैं, तासों अब तुमकों राखे न जाय. पाछें सगरे बंगाली बहोत विनती करन लागे, जो तुम हमसों सेवा मति करावो, परन्तु अब हम खांय कहा ? जो श्रीनाथजीकी सेवा पीछे हमारो खानपानको सब सुख हतो, तासों हमकों कछू और सेवा टहल बतावो. तथा कोई और श्रीठाकुरजी बतावो, जासों हमारो निर्वाह चल्यो जाय. तब श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोपीनाथजीके सेव्य श्रीमदनमोहनजीकों देके कहे, जो इनकी सेवा तुम करो. सो तब बंगाली श्रीमदनमोहनजीकों लेके श्रीवृन्दावनमें आयके सेवा करन लागे.

भावप्रकाश : सो काहेतें ? जो बलदेवी मर्यादारूप. सो तिनके सेव्य ठाकुर हू मर्यादारूप. सो बंगालीनकों मर्यादाकी पूजा है, तासों दिये. और श्रीगुसांईजीने जगरो मिटाय दियो.

ता पाछें श्रीगुसांईजीने सांचोरा गुजराती ब्राह्मण भीतरिया सेवामें राखे. सो मुखिया भीतरिया रामदासकों किये.

भावप्रकाश : सो रामदास ब्राह्मण सांचोरा गुजरातमें रहते. ये लीलामें श्रीचन्द्रावलीकी सखी हैं. सो लीलामें इनको नाम 'मनोरमा' है. सो सात्विक

भाव. श्रीचन्द्रावलीजीकी आज्ञाकारी. जैसे श्रीस्वामिनीजी श्रीठाकुरजीकी लीलामें ललिता मध्याजी परम चतुर. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीके कृपापात्र ललितारूप कृष्णदास सब ठोर हुकम करें, तैसे मनोरमा रूपसों रामदास मुखिया भीतरिया श्रीगुसांईजीके आगे सब टहल करें. सो (मनोरमा) रामदास गुजरातमें एक सांचोरा ब्राह्मणके यहां जनमे. सो बरस बीसके भये तब माता पिताने देह छोड़ि. ता पाछें रामदास श्रीरनछोडजीके दरसनकों गये. सो श्रीआचार्यजीके दरसन भये, ता समय श्रीआचार्यजी कथा कहत हते. सो कथा श्रीआचार्यजीके श्रीमुखसों सुनिके रामदासकों जान भयो, जो श्रीआचार्यजी आपु साक्षात् ईश्वर हैं, इनकी सरन रहिये तो कृतारथ होय. सो यह मनमें निश्चय कियो. ता पाछे श्रीआचार्यजी आपु कथा कहि चुके. तब रामदासने दण्डवत् करिके बिनती कीनी, जो महाराज ! मोकों सरन लीजे. तब श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो जाओ न्हाय आवो. तब रामदास न्हाय आये. तब श्रीआचार्यजीने रामदासकों नाम निवेदन करवायो. ता पाछे रामदाससों कहे, जो अब तुम भगवत् सेवा करो. तब रामदासने कही, जो मेरे पिताके ठाकुर मेरे पास है, सो आपु आज्ञा देउ तैसे मैं सेवा करूं. तब श्रीआचार्यजी आपु रामदासके श्रीठाकुरजीकों पञ्चामृत स्नान कराय, दिये. ता पाछे रामदास कछुक दिन श्रीआचार्यजीके पास रहे, सो सेवाकी रीति भांति सीखे. ता पाछे रामदासने श्रीआचार्यजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! शास्त्र तो मैं कछु पढ्यो नाहीं हो, परन्तु आपके ग्रन्थ पढ़िवेकी इच्छा अभिलाषा है. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें रामदासकों अपने ग्रन्थ पढ़िवेकी इच्छा अभिलाषा है. तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनने रामदासकों अपने ग्रन्थ पढ़ाये तब रामदासजीके हृदयमें ब्रजकी लीला स्फुरी, सो रामदासने यह कीर्तन श्रीआचार्यजीके आगे गायो. सो पद -

राग गौरी -

चलि सखी चलि अहो ब्रज पेंठ लगी है जहां बिकात हरि - रस प्रेम
सूठ सोंघो प्राननके पलटे उलट धरो जिय नेम ।।१।।

और भांति पाइवौ अति दुर्लभ कोटिक खर्चो हेम ।
'रामदास प्रभु' रत्न अमोलिक सखी पैयत है एम ।।२।।

या प्रकारके रसरूप पद रामदासने बहोत गाये, सो सुनिके श्रीआचार्यजी आप बहुत प्रसन्न भये. तब रामदास श्रीआचार्यजीसों बिदा होयके दण्डवत् करि

गुजरातमें अपने घर आयके बहोत दिन तांई सेवा कीनी. ता पाछें एक दिन एक वैष्णव रामदासके घर आयो. तब रामदासनने प्रीतिसों वैष्णवकों अपने घरमें राख्यो. पाछें रामदासने कही, जो वैष्णवकी सङ्ग दुर्लभ है. सो तुमने बड़ी कृपा करी, जो तुम मेरे घर पधारे. सो तब वैष्णवने कही, जो सङ्ग करिवे लायक तो पद्मनाभदासजी है, जो एक क्षण हू सङ्ग होय तो भगवत् कृपा होय. सो सुनत ही रामदासजीके मनमें यह आई, जो पद्मनाभदासको सङ्ग करूं. ता पाछे चारि दिन रहिके वह वैष्णव तो गयो. तब रामदासजी श्रीठाकुरजीकों पधरायके पद्मनाभदासके घर कनौजमें आये. सो पद्मनाभदास प्रीतिसों रामदासकों महिना एक राखे, सो भगवद् वार्तामें मगन होय गये. तब रामदासजीने कही, जो जैसी तिहारी बड़ाई सुनी हती, तैसेही तिहारे सङ्ग तें सुख पायो. सो अब मैं श्रीगोवर्द्धनाथजीके दरसन करि आऊं. तासों मेरे ठाकुरकौ तुम राखो. तब पद्मनाभदासजीने रामदासके ठाकुर, श्रीमथुरेशजीकी सय्याजीके पास बैठारे. और इहां श्रीगुसांईजी आपु प्रसन्न होयके रामदासकों मुखिया किये, सो जनम भरि श्रीनाथजीकी सेवा रामदासने मन लगायके कीनी. सो या प्रकार रामदासजी रहे. ता पाछे (जब) पद्मनाभदासजीकी देह छूटी तब श्रीगोवर्द्धननाथजीके पास श्रीठाकुरजीकों बैठारे. सो सदा श्रीनाथजीके पास रहे.

ता पाछें श्रीगुसांईजीने श्रीगोवद्र्धननाथजीकी सेवाको विस्तार बढ़ायो. सो राजसेवा करन लागे, जो भोग सामग्रीको नेग कियो, सेवक बहोत राखे, सो दरजी, सुनार, खाती सगरेनको नेग करि दियो. और भण्डारी (अधिकारी) राखे सो भण्डारीकों गादी तकिया. या प्रकार श्रीगोवर्द्धननाथजीको ईश्वरता बढ़ाये. और सगरे सेवकनकी ऊपर कृष्णदास अधिकारीकों मुखिया किये, सो जो काम होय सो पूछनो. सो श्रीगुसांईजी तो सेवा सिंगार करि जांये, और काहूसों कछु कहे नाहीं. कोई बात कोई सेवक श्रीगुसांईजीसों पूछे तब श्रीगुसांईजी आप कहें, जो कृष्णदास अधिकारीके पास जावो. जो हम जांने नाहीं. सो या प्रकार मर्यादा राखी. या भांतिसों कृष्णदासको वैभव भारी और हुकम भारी. सो जहां चलें तहां रथ, घोड़ा, बैल, ऊंट, गाड़ी, सौ पचास मनुष्य सङ्ग. सो कृष्णदास अधिकारी सब देसनमें प्रसिद्ध भये. सो कृष्णदास नित्य नये पद करिके श्रीगोवर्द्धनधरकों सुनावते. सो ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते.

वार्ताप्रसङ्ग ३ : और एक दिन श्रीगोवर्द्धननाथजीने कृष्णदासकों आज्ञा दीनी, जो स्यामकुम्हारकों मृदङ्ग समेत सङ्ग लेके परासोली सेन आरती पीछे जैयो तहां रासलीला करेंगे. तब श्रीगोवर्द्धननाथजीकों दण्डवत् करिके कृष्णदास परवत तें नीचे आये. ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी स्यामकुम्हारसों कहे, जो तुमकों जहां कृष्णदास कहें, तहां मृदङ्ग लेके जैयो सो या प्रकार स्यामकुम्हारकों श्रीनाथजी

आपु आज्ञा किये.

भावप्रकाश : सो या प्रकार स्यामकुम्हारकों श्रीनाथजी आपु आज्ञा किये सो यातें, जो लीलामें श्यामकुम्हार विसाखाजीकी सखी है. तहां लीलामें इनको नाम 'रसतरङ्गिनी' है. सो इनकी मृदङ्गकी सेवा है. सो एक समय रसतरङ्गिनी सेन किये हते, सो विसाखाजीको मन गान करिवेको भयो. तब रसतरङ्गिनीकों जगायके कहे, जो तू मृदङ्ग बजाव, सो तब मृदङ्ग बजायो. तब विसाखाजी गान करन लागी. सो अलासतें रसतरङ्गिनी चूकि जाय. तब विसाखाजी क्रोध करके कहे, जो आज कैसें बजावत है ? तब रसतरङ्गिनीने कह्यो, जो मोकों नींद आवत है. और तिहारो मन तो गान करिवेको है, सो कैसे बने ? तब विसाखाजी मृदङ्ग आपुही लीये और क्रोध करिके विसाखाजीने रसतरङ्गिनीसों कह्यो, जो तू मेरी सखी नाहीं है. सो जायके तू भूमिमें जनम लेउ. अहङ्कार करिके बोली सो ताको यही दण्ड है. तब ये महावनमें एक कुम्हारके घर जनमें. सो स्यामकुम्हार नाम पर्यो. सो सगरे समाजमें चतुर हते. श्रीगुसांईजी आपु इनकों बुलायके श्रीनवनीतप्रियजीके पास राखे. तब इन स्यामकुम्हारकों नाम निवेदन करवायो. जब श्रीगोवर्द्धननाथजीको वैभव बढ्यो तब कृष्णदासके मनमें आई मृदङ्गी चाहिये. तब श्रीगोवर्द्धनधर कहे, जो गोकुलमें स्यामकुम्हार है, सो मृदङ्ग आछी बजावत है. ताकों श्रीगुसांईजीकों कहिके यहां राखो. तब कृष्णदासने श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो स्यामकुम्हारकों श्रीगोवर्द्धनधरकी सेवामें राखो. जो यह इच्छा प्रभुनकी है. तब श्रीगुसांईजी आपु स्यामकुम्हारकों श्रीगोकुलतें बुलायके श्रीनाथजीकी सेवामें राखे. सो ता दिन तें स्यामकुम्हार श्रीनाथजीके आगे मृदङ्ग बजावतो. या प्रकार स्यामकुम्हार श्रीगिरिराज रह्यो.

तब कृष्णदासने स्यामकुम्हारकों बुलायके कह्यो, जो श्रीगोवर्द्धननाथजीकी इच्छा आजु परासोलीमें रास करिवेकी है, सो मृदङ्ग ले आवो, सेन आरती पाछे चलेंगे. तब स्यामकुम्हारने कह्यो, जो मोहूकों आज्ञा दीनी है, तासों मृदङ्ग लेके तिहारे पास आयो हूं. सो जब सैन आरती श्रीगोवर्द्धननाथजीकी होय चुकी, तब कृष्णदास स्यामकुम्हारकों लेके परासोलीमें चन्द्रसरोवर है, तहां आये. तहां देखे तो श्रीगोवर्द्धनधर और श्रीस्वामिनीजी सगरी सखीन सहित बिराजे हैं. तब श्रीगोवर्द्धनधरने स्यामकुम्हारसों कही, जो तू तो मृदङ्ग बजाव, और कृष्णदाससों कह्यो, जो तू कीर्तन गाव. सो चैत्र सुद १५ पून्योके दिन रात्रि प्रहर डेढ़ गई, उजियारी फैल गई सो अलौकिक रात्रि भई. तब स्यामकुम्हारने मृदङ्ग बजायो. सो बसन्त ऋतुके सुन्दर फूल लतानसों फूलि रहे. सो श्रीगोवर्द्धनधर श्रीस्वामिनीजी सहित नृत्य करन लागे. ता समय कृष्णदासने यह पद गायो. सो पद -

राग केदारो -

श्रीवृषभानन्दनी नाचत लाल गिरिधरन सङ्ग, लाग डाट उरप तिरप रास रङ्ग राच्यो ।
जप ताल मिल्यो राग केदरो सप्त सुरन अवघट अवघट सुघरतान गान रङ्ग राच्यो ।।१।।

पाई सुख सुरति सिद्धि भरत काम विविध रिद्धि अभिनव वदन सम सुहाग हुलास रङ्ग राच्यो ।
बनिता सत - जूथप पिय निरखि थक्यो सघन चन्द बलिहारी 'कृष्णदास' सुघर रङ्ग राख्यो ।।२।।

सो यह पद सुनिके श्रीगोवर्द्धधर प्रसन्न होयके अपने श्रीकण्ठकी प्रसादी कुन्द कुसुमनकी माला दीनी. सो कृष्णदास अपने परम भाग्य माने सो रोमरोममें आनन्द भरि गयो. सो तब रसमें मगन होयके यह पद गायो सो पद -

राग मालव -

(१) अलग लागन उपर तिरप गति नटवत् ब्रजललना रासें
उघटत शब्द ततथेइ तथतेइ मृगनयनी इषद हासे ।।१।।

भाल चन्द्र लजावत गावत बांधत मदन भ्रोंह पासे ।
चलत उरज कटि किंकिनी कुण्डल श्रमजल - कन सोभित आसे ।।२।।

नूपुर कुनित क्वणित कटिमेखला कटितय काछे नील सु वासे ।
अघवट तानमान वंधाने मोहित विश्व चरन न्यासे ।।३।।

मोहन लाल गोवर्द्धनधारी रिझवत छेल सुघर लासे ।
अपने कण्ठकी श्रमजल दलमति माला देति 'कृष्णदासे' ।।४।।

(२) ततथेई रासमण्डलमें वने नाचत पियके सङ्ग प्रीतमप्यारी
गावत सरस सुजात मिलवत चपल कुटिल भ्रोंह अनियारी ।।१।।

मालव राग अलापति भामिनी लेति उरप नागर नारी ।
प्यारीके सङ्ग वेनु बजावत सुघरराय श्रीगोवर्द्धनधारी ।।२।।

'कृष्णदास' प्रभु सौभग सींवा सब युवतिनमें सुकुमारी ।
जोरी अद्‌भूत प्रगटित भूतल केलिकलारस मनुहारी ।।३।।

(३) चन्द गोविन्द गोपी तारा गन बने रासमें बनवारी
मुख प्रताप रञ्जित वृन्दावन नवल युवतिजन सुखकारी ।।१।।

कमलनयन कमनीय मनोहर मनहरनी गोकुलनारी ।
हस्तकमल पर गलित कुसुमदल नृत्यमान् प्रीतम प्यारी ।।२।।

रसमयरासरसिकनि भामिनी अतिरसाल बने विहारी ।

'कृष्णदास' प्रभु रसिक शिरोमनि रसिकराय गिरिवरधारी ।।

(४) सिखवति हरिकों मुरली वजावत
सप्त रन्ध्र पर धरत अंगुली दल कुंध बाहू धरि मधुरे गावत ।।१।।

सरसभेद गति राग कान्हरो गलि बिलासवर नयन नचावत ।
कृष्णदास बलि बलि वैभवकी गिरिधर पिय प्यारी मन भावत ।।२।।

सो या प्रकार बहोत कीर्तन कृष्णदासजी गाये. तब स्यामकुम्हार मृदङ्ग बहोत सुन्दर बजायो. सो श्रीगोवर्द्धनधर, श्रीस्वामिनीजी सगरे ब्रजभक्तन सहित पास अद्भुत नृत्य किये. सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी का'नि तें कृष्णदास पर श्रीगोवर्द्धनधर ऐसी कृपा करते. ता पाछें श्रीगोवर्द्धनधर श्रीस्वामिनीजी सहित सगरे ब्रजभक्त अन्तर्धान भये. तब कृष्णदास और स्यामकुम्हार मृदङ्ग लेके गोपालपुर आये, सो कृष्णदासने समे - समेके कीर्तन किये.

वार्ताप्रसङ्ग ४ : और एक दिन सूरदासजीनें कृष्णदाससों कही, जो कृष्णदास ! तुमने जितने कीर्तन किये तामें मेरी छाया आवत है. तब कृष्णदासने कही, जो अबके ऐसो पद करूं सो तामें तिहारी छाया न आवे. पाछें कृष्णदास एकान्तमें बेठिके बिचार किये एकाग्र मन करिके, जो सूरदास जो वस्तु न गाये होय सो गावनो, यह विचार किये. सो जा लीलाको विचार कियो ताही लीलाके पद सूरदासजी (नें) गाये हैं. सो दान, मान और गायनको वर्णन सब लीलाके पद सूरदासजीने गाये हते. सो कृष्णदासजी विचार करत हारे. मनमें महाचिन्ता भई. सो कृष्णदासजीकों प्रहर एक गयो, सो हारिके उठि बैठे. जो कागज लेखनी द्वारा कलम धरिके महाप्रसाद लेन गये. तब श्रीगोवर्द्धनधर आयके पद पूरो करि गये. सो पद -

राग गोरी -

आवत बने कान्ह गोप - बालक सङ्गने चुकी खुर - रेनु छुरति अलकावली
भ्रोंह मन्मथ - चाप वक्रलोचन बान सीस सोभित मत्त मयूर - चन्द्रावली ।।१।।

उदित उडुराज सुन्दर सिरोमनि वदन निरखि फूली नवल जुवति कुमुदावली ।
अरुन सकुचित अधरबिम्ब फल हसत कछू प्रगट होत कुन्द दसनावली ।।२।।

श्रवन कुण्डल भाल तिलक बेसरि नाक, कण्ठ कौस्तुभमनि सुभ त्रिवलावली ।
रत्न हाटक खचित, उरसि पदिकनि पांति, बीच राजति सुभ्र जलक मुक्तावली ।।३।।

वलय कंकन बाजूबन्द आजानुभुज मुद्रिका कर - दल बिराजति नखावली ।
कुनित कर मुरलिका मोहित अखिल विश्‍व गोपिका जन - मनसि ग्रथित प्रेमावली ।।४।।

कटि छुद्र घंटिका जटित हीरामनि नाभि अम्बुज बलित भ्रङ्ग रोमावली ।
धाइ कबहुक चलत भक्त हित जानि पिय गण्ड मण्डित रुचिर श्रमजल - कणावली ।।५।।

पीत कौशेय परिधान सुन्दर अङ्ग चलत नुपूर गीत सब्दावली ।
हृदय 'कृष्णदास' गिरिधरनलालकी चरन - नख - चन्द्रिका हरति तिमिरावली ।।६।।

यह पद लिखिके आपु तो पधारे. सो 'नेचुकी' गायनको वर्णन सूरदासजीने नाहीं कियो हतो. जो 'नेचुकी' गाय, वासों कहिये, जो

पहले ब्यान्त होय, ताको स्नेह बछरा ऊपर बहोत होय. सो ऐसी नेचुकी गाय काहू सखा ग्वालसों धिरत नाहीं हैं, सो बारंबार अपने वछराकें तांई घरकों ही भाजत है. जो ऐसी नेचुकीके जूथमें श्रीठाकुरजी आपु पधारे हैं. तब नेचुकी गायकी खुर रेनु मुख पर अलकन पर लगी हैं. सो यह श्रीठाकुरजी आपु एक कीर्तन कागजके ऊपर लिखिके पधारे. ता पाछें कृष्णदास महाप्रसाद आनन्दसों लेके आये सो कीर्तन लिख्यो पायो सो पद -

राग गोरी -
आवत बने ।

सो या प्रकार कीर्तन बाचिके कीर्तन बाचिके कृष्णदासजी प्रसन्न होयके सूरदासजीके पास आये, हंसत - हंसत. तब सूरदासजीने पूछी, जो आज बहोत प्रसन्न हंसत आवत हो, सो कहा नौतन पद किये ? तब कृष्णदासनें कह्यो, जो आजु ऐसो पद कियो है, तामें तिहारे पदनकी छाया नाहीं है. जो वस्तु तुमने गाई नाहीं है. तब सूरदासजी कहे, जो तुम मोकों बांचिके सुनावो तो सुनो. तब कृष्णदास (ने) पहली ही तुक कही, जो ताहीकों सुनिके कृष्णदाससों सूरदासजी बोले, जो कृष्णदास ! मेरे तिहारे वाद है. कछू तिहारे बापसों विवाद नाहीं है. सो यामें तिहारो कहा है ? जो मैंने नेचुकी नाहीं गाई सो प्रभु कहि दिये. और तो श्रीअङ्गके बरननके मेरे हजारन पद हैं, सोई तुमने गायके पूरन किये हैं. यह सूरदासजीके बचन सुनिके कृष्णदास चुप होय रहे.

भावप्रकाश : सो तहां यह सन्देह होय, जो कृष्णदासजी तो ललिताजीको स्वरूप हैं, और श्रीगोवर्द्धननाथजी कृष्णदासकी पक्ष किये, सो पद बनाये. तोहू सूरदासजीसों न जीते. ताको कारन कहा है ? तहां कहत हैं, जो कृष्णदासजी ललितारूप हैं. सो तैसे ही सूरदासजी चम्पकलारूप है. परन्तु अपनो अधिकार - भेद है. सो लीला हू में श्रीललिताजीकी सेवा श्रेष्ठ है. तैसेही यहां ''सेवाकी भांत ते'' कृष्णदास श्रेष्ठ. सो सगरे सेवकनी सेवामें चोकसी, सगरी वस्तु समारनी, सेवाको मण्डान विस्तार करनो. तामें कृष्णदास परम चतुर. जैसे सुनारसों दरजीकी सेवा न होय और दरजीसों सुनारके आभूषनको काम न होय. सो सब अपनी - अपनी सेवामें चतुर हैं. और श्रीस्वामिनीजीकी सखी दोऊ प्रिय हैं. तासों श्रीगोवर्द्धननाथजीकी प्रीति तो दोउनके ऊपर है. परन्तु

कृष्णदासके मनमें रञ्चक अहङ्कार आयो, जो मैं हू कीर्तन बहोत किये हैं.

सो वे कृष्णदास श्रीआचार्यजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते.

वार्ताप्रसङ्ग ५ : और एक समय श्रीगोवर्द्धननाथजीके मन्दिरमें सामग्री चहियत हती, सो तब कृष्णदास गाड़ा लिवाय आपु रथ पर असवार होयके श्रीगोवर्द्धनसों, आगरे आये. सो जब आगरेके बजारमें गये, तहां एक वेस्या अपनी छोरीकों नृत्य सिखावत हती. सो वह छोरी परम सुन्दर बरस वारहकी हती, कण्ठ हु परम सुन्दर हतो. सो गाननृत्यमें चतुर बहोत हती. सो वह वेस्या ख्याल टप्पा गावत हती. सो वा छोरीको गान कृष्णदासके कानमें पर्यो हतो. सो कृष्णदासके मनमें बैठि गयो, सो प्रसन्न होय गये. तब कृष्णदासने तहां अपनो रथ ठाड़ो कियो. सो भीड़ सरकायके वा छोरीको रूप देखे, सो तहां गान सुनिके मोहित गये.

भावप्रकाश : तहां यह सन्देह होय, जो कृष्णदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके कृपापात्र सेवक वेस्याके गान पर मोहित क्यों भयो ? जो ये तो श्रीठाकुरजीके ऊपर मोहित हैं. सो उनकों अप्सरा देवाङ्गना तुच्छ दीसत हैं. और श्रीआचार्यजी आपु जलभेद ग्रन्थमें कहे हैं जो -

वेश्यादिसहिता मत्ता गायका गर्तसंज्ञिताः ।
जलार्थमेव गर्तास्तु नीचा गानोपजीविनः ।

वेस्यादि सहित गायक भाट, डोम, नीचको गान सूकरके गड़ेलाके जलवत है. सो वामें न्हाय, पीवे, सो जैसें नीचको गानरस पीवे. या प्रकारके दोष श्रीआचार्यजी कहे हैं. सो कृष्णदास परमज्ञानवान मर्यादाके रक्षक. सो ये वेस्याके गानपें रीजे ? सो इनकी देखा - देखी करे सो बहिर्मुख होय. ये तो सबकों शिक्षा देवेकों उद्धार करनको प्रगटे हैं, तोसों ये कृष्णदास वेस्याके ऊपर क्यों रीजे ? यह सन्देह होय तहां कहत हैं, जो यहां कारन और है. जो यह वेस्याकी छोरी लीला सम्बन्धी दैवी जीव ललिताजीकी सखी हैं, सो लीलामें इनको नाम 'बहुभाषिनी' है. सो एक दिन ललिताजी श्रीठाकुरजीके लिये

सामग्री करत हती, तब ललिताजीने बहुभाषिनीसों कही, जो तू मिश्री पीसिके ले आउ. सो बहुभाषिनी मिश्रीको डबरा भरिके चली. सो दूसरी सखीसों बात करते - करते छांटा उड्यो, सो मिश्रीमें पर्यो. सो बहुभाषिनीकों खबरि नाहीं पाछे मिश्रीको डबरा लेके ललिताजीके पास आई, तब ललिताजी परम चतुर हती, सो जानि गई. पाछे बहुभाषिनीसों कही, जो यह सामग्री छुइ गई, जो तेरे मुख तें छांटा पार्यो है. सो भगवद् इच्छा होनहार. तब बहुभाषिनीने कही, जो तुम जूठ कहत हों छींटा तो नाहीं पर्यो. और श्रीठाकुरजी सखामण्डलीमें सबकी जूठनि हू लेत है. सो तब ललिताजीने कह्यो, जो प्रभुनकी लीला तू कहा जाने ? प्रभु प्रसन्न होय चाहे सो कर सोई छाजे. जो अपने मन तें कछू हीन क्रिया करे सोई भ्रष्ट. तासों तू हीन ठिकाने जनमेगी. तब बहुभाषिनीने कही, जो तुमहू शूद्रके घर जनम लेके मेरो उद्धार करो. जो तुमकों छोड़िके मैं कहां जाऊं ? सो या प्रकार परस्पर शाप भयो. तब कृष्णदास शूद्रके घर जन्मे, और बहुभाषिनीको जनम वेस्याके घर मात्र भयो, सो लौकिक पुरुषको मुंह नाहीं देख्यो. सो कृष्णदासकों श्रीगोवर्द्धनधर प्रेरिके आगरेमें वा वेस्याके अङ्गीकारके लिये पठाये. तासों कृष्णदासके हृदयमें वेस्याको गान प्रिय लाग्यो.

सो ठाड़े होयके गान नृत्य सुनिके मनमें विचारे, जो यह सामग्री तो अति उत्तम है, और दैवी जीव है, सो श्रीगोवर्द्धननाथजीके लायक है. तासों श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु वाकों अङ्गीकार करें तो आछो है. सो यह कृष्णदासजी अपने मनमें बिचार करिके दस रुपैया वा वेस्याकों देके कहे, जो हमारे डेरान पर रात्रिकों आइयो. यह कहिके कृष्णदासजी जहां हवेलीमें हमेस उतरते ताही हवेलीमें उतरे, और सामग्री जो लेनी हती सो गाड़ा लदाय दिये. ता पाछें रात्रि प्रहर एक गई, तब वह वेस्या समाज सहित आई, सो तब नृत्य गान कियो. सो कृष्णदास बहोत प्रसन्न भये. तब वा वेस्याकों रुपैया १००) सौ दिये. और वा वेस्यासों कहे, जो तेरो रूप गान, नृत्य सब आछे हैं. तासों सवारे हम श्रीगोवर्द्धन जायगें, और हमारो सेठ तो उहां हैं, जो तेरो मन होय तो तू चलियो. तब वा वेस्याने कही, जो हमकों तो यही चहिये. पाछें वह वेस्या अपने मनमें बहोत प्रसन्न भई, जो ये इतने रुपैया दिये तो सेठ न जाने कहा देयगो ? सो तब वेस्याने घर आयके अपनी गाड़ी सिद्ध कराई, सो गायवेको साज सब आछे बनाय गाड़ी ऊपर धरि राख्यो. तब सवारे भये कृष्णदासके पास आई. पाछें कृष्णदास वा वेस्याकों लिवायके ले चले, सो मथुरा आय रहे. तब दूसरे दिन मथुरा तें चले, सो मध्यान्ह समय गोपालपुरमें आये. पाछें वा वेस्याकों न्हवायके नवीन वस्त्र पहेरवेको दियो, सो वाने पहर्यो. तब कृष्णदास अपने मनमें विचारे, जो यह ख्याल टप्पा गायगी सो श्रीगोवर्द्धनधर सुनेंगे. तासों मैं याकों एक पद सिखाऊं. तब कृष्णदासने वा वेस्याकों एक पद सिखायो, और कह्यो, जो ये पद तू

पूरबी रागमें गाइयो. सो पद -

राग पूर्वी -
मेरो मन गिरिधर छबि पर अटक्यो
ललित त्रिभङ्गी अङ्गन ऊपर चलि गयो तहां ही ठठक्यो ।।१।।

सजल स्यामघन नील वरन है फिरि चित्त अनत न भटक्यो ।
'कृष्णदास' कियो प्रान न्योछावरि यह तन जग सिर पटक्यो ।।२।।

यह पद कृष्णदासने वा वेस्याकों सिखायो. ता पाछें उत्थापनके दरसन होय चुके, तब भोगके दरसनके समय वा वेस्याकों समाज सहित कृष्णदास परवतके ऊपर ले गये.

भावप्रकाश : सो भोगके समय यातें ले गये, जो उत्था पनके समय निकुञ्जमें जागिके (श्रीठाकुरजी) उठत हैं. तातें उत्थापन भोग वेगि आयो चाहिये और भोगके दरसन ब्रजके मारगमें पधारत हैं, सो अनेक भक्तनकों अङ्गीकार हैं. तासों याहूको अङ्गीकार करनो है. तासों भोगके समय कृष्णदास वेस्याकों परवत ऊपर ले गये.

पाछें भोगके किवाड़ खुले. तब वा वेस्याने पहले नृत्य कियो, ता पाछें गान करन लागी. सो कृष्णदासने पद करिके सिखायो सो हतो गायो. सो गाबत - गाबत जब छेली तुक आई, जो ''कृष्णदास कियो प्रान न्योछावरि यह तन जग सिर पटक्यो'' या पदको गान करत ही वा वेस्याकी देह छूटि गई, सो दिव्य देह होय लीलामें प्राप्त भई सो तब सगरे समाजी तथा वा वेस्याकी माता रोवन लागी. जो हम यासों कमाय खाते, अब हम कहा करेंगे ? तब कृष्णदासने उनकों नीचे ले जायके कह्यो, जो अब तो भई सो भई, जो याकी

इतनी आरबल हती. सो या बातको कोऊ कहा करे ? अब तुम कहो सो तुमकों देऊं. तब उन कही, जो हजार रुपैया देऊ जो कछुक दिन खांय. पाछें जो होनहार होयगी सो सही. तब कृष्णदासने हजार रुपैया देके उन सबनकों बिदा किये. सो या प्रकार वा वेस्याकी छोरीकों श्रीगोवर्द्धननाथजी कृष्णदासकी का'नितें आपु अङ्गीकार किये.

भावप्रकाश : तहां यह सन्देह होय, जो श्रीआचार्यजीके सम्बन्ध बिना लीलाकी प्राप्ति कैसे भई ? तहां कहत है, जो कृष्णदासके हृदयमें श्रीआचार्यजी बिराजत हैं. सो कृष्णदासने पद वेस्याकी छोरीकों सिखायो, सो देखिवे मात्र है. या पद द्वारा श्रीआचार्यजीको सम्बन्ध कराये. तासों यह पहिली तुकमें कहे, जो ''मेरो मन गिरिधर - छबि पर अटक्यो'' सो सगरो धरम मन लगायवेकी रीति करी है. जीव अपनी सत्ता मानि स्त्री, पुत्र, देहमें मन लगायो (है) तासों समर्पन करावत हैं. तहां कोऊ कहे, जो जीव सब दे चुक्यो है, जो अपनी सत्ता छोड़िके प्रभुनकी सत्ता सब है. तासों मोकों तो एक श्रीकृष्ण ही गति हैं. तासों या पदमें कहे, जो मेरो मन श्रीगोवर्द्धनधरकी छबि पर अटक्यो, सो सब छोडिके. या प्रकार कृष्णदास द्वारा श्रीआचार्यजी आपु सम्बन्ध कराये, यह जाननो. तोहू सन्देह होय, जो गुरु बिना लीलामें कैसे प्राप्ति भई ? सो अलीखानको प्रभु दरसन दिये. पाछे अलीखानकी बेटीकों सेवक होयवेकी कही, सो सेवक कराये. यहां नाहीं कराये, यह सन्देह होय. सो काहेते ? जो ब्रह्मसम्बन्धमें श्रीगोवर्द्धनधरकी हू यही आज्ञा है, जो जाको तुम ब्रह्मसम्बन्ध करवावोगे, ताकूं मैं अङ्गीकार करूंगो. तासों इनकों श्रीआचार्यजीमहाप्रभु, श्रीगुसांईजी द्वारा ब्रह्मसम्बन्ध न भयो और लीलाकी प्राप्ति कैसे भई ? उद्धार होय परन्तु लीलाकी प्राप्ति अत्यन्त दुर्लभ. सो ब्रह्म सम्बन्धको दान करिवेके लिये श्रीआचार्यजीके कुलको विस्तार भयो. सो काहेतें ? जो सेवकनकों श्रीआचार्यजी आपु नाम सुनायवेकी आज्ञा दीनी, परि ब्रह्मसबम्बन्धकी नाहीं. तासों ब्रह्मसम्बन्धको दान वल्लभकुल ही तें होय. सो औरतें फलित नाहीं है. यह सन्देह होय. तहां कहत हैं, जो वेस्याकी छोरि देह तजिके लीलामें गई. तहां लीलामें ललिता, श्रीस्वामिनीजी सदा बिराजत हैं. सो कृष्णदासजी लीलामें ललिता रूप होय जगत् तें काढिके लीलामें पठाये, सो लीलामें श्रीललिताजीने श्रीस्वामिनीजी द्वारा ब्रह्मसम्बन्ध कराय अपनी सेवामें राखे. सो काहेतें ? जो ललिताजीकी सखी है. या प्रकार ब्रह्मसम्बन्ध भयो. सो जैसे मथुरामें नागरकी बेटीकों लीलामें ब्रह्मसम्बन्ध श्रीगुसांईजी कराये, यह भाव जाननो.

सो वे कृष्णदास ऐसे भगवसदीय हते. जो वेस्याकों अङ्गीकार करायो.

वार्ताप्रसङ्ग ६ : और एक समय सगरे वैष्णव मिलिके कुम्भनदासके पास आये. सो उनकों प्रीतिसों बैठारिके पूछे, जो आजु बड़ी कृपा करी, जो कछु आज्ञा करिये. तब वैष्णवनने कही, जो तुमसों कछु मारगकी रीति सुनिवेकों आये हैं. तब कुम्भनदासजी कह्यो, जो मारगकी रीतिमें तो कृष्णदास अधिकारी निपुण हैं, सो उनसों पूछो. तब उन वैष्णवनने कही, जो हमारी सामर्थ्य नाहीं है, जो कृष्णदाससों पूछि सकें. तब कुम्भनदासजीने कह्यो, जो तुम मेरे सङ्ग चलो, जो तिहारी ओर तें हम पूछेंगे. तब सगरे वैष्णव कुम्भनदासजीके सङ्ग गये.

भावप्रकाश : सो कुम्भनदासजी यातें नाहीं कहे, जो कुम्भनदासजीको मन रहस्य लीलामें मगन है. सो कहा जानिये जो प्रेममें कहा वस्तु निकसि पडे ? और कीर्तनमें गूढ रीतिसों लीला वरनन करत हैं. तासों जाको जैसो अधिकार है, ताको जैसो कीर्तनमें भासत है. और वैष्णवनसों परे सो खोलिके समुझावनो परे. तासों कुम्भनदासजी कृष्णदासके पास आगरे वैष्णवनकों सङ्ग लेके आये.

सो तब सब वैष्णवनकों देखिके कृष्णदास बहोत प्रसन्न भये, और सबनको आदर करिके बैठारे. ता समय कृष्णदासनें यह कीर्तन गायो. सो पद -

राग सारङ्ग -
गिरिधर जब अपुनो करि जाने
ताकौ मन भक्तनकी सेवा भक्त चरनरज सदा लुभाने ।।१।।

भक्तनमें मति भक्तनमें गति हरिजन हरि एक करि माने ।
'कृष्णदास' मन बच क्रम करि हरिजन सङ्गे हरि उर आने ।।२।।

यह पद कृष्णदासने कह्यो. पाछें कृष्णदासने पूछी, जो आज मो पर सगरे भगवदीय कृपा करे, सो मेरे पास पधारे. तासों अब जो

प्रसन्न होयके आज्ञा करो सो मैं करूं. तब कुम्भनदासजीने कह्यो, जो सगरे वैष्णवनको मन पुष्टिमागरकी रीति सुनिवेकी है. सो कहा कहिये ? कहा सुमिरन करिये ? जासों ऐसे पुष्टिमारगको अनुभव होय, सो कृपा करिके सुनावो. तब कृष्णदासने कह्यो, जो कुम्भनदासजी ! तुम सगरे प्रकार करिवे योग्य हो, जो श्रीआचार्यजीके कृपापात्र भगवदीय हो सो उचित है. तुम बड़े हो, जो तिहारे आगे मैं कहा कहूं ? तुमसों कछू छानी नाहीं है. तब कुम्भनदासजी कृष्णदाससों कहे, जो तुम कहो, हमारी आज्ञा है. जो सगरे सेवकनेमें तुम मुख्य हो. सेवकनको कार्य तिहारे हाथ है, जो यह पुष्टिमारगके अधिकारी तुम हो, तातें तुम कहो. तब कृष्णदासने पहले अष्टाक्षरको कीर्तनमें कह्यो, सो पद -

राग सारङ्ग -

कृष्ण श्रीकृष्णः शरणं मम उच्चरे
रेन दिन नित्य प्रति सदा पल छिन घडी करत विध्वंस जल अखिल अध परिहरे ।।१।।

होत हरिरूप ब्रजरूप भावे सदा अगम भवसिन्धुकों विना साधन तरे ।
रहत निसदिवस आनन्द उरमें भरे पुष्टि लीला सकल सार उरमें धरे ।।२।।

रमा अज सिब सेष सनकादि सुक सारदा व्यास नारद रटे पल मुख ना टरे ।
लाल गिरिधरनकी महिमा अतुल जगमगे सरन 'कृष्णदास' निगम नेति नेति करे ।।३।।

सो यह अष्टाक्षरको भाव कहिके अब पञ्चाक्षरको भाव कीर्तनमें गाये. सो पद -

राग सारङ्ग -

कृष्ण ये कृष्ण मन मांह गति जानिए
देह इन्द्रिय प्रान दारागारादि वित्त आत्मा सकल श्रीकृष्णकी मानिए ।।१।।

कृष्ण मम स्वामी हों दास मन वच क्रम, कता येही सदा जिय आनिए ।
'कृष्णदासनिनाथ' हरिदासवर्यधर चरनरज वल्लभाधीश मन सानिए ।।२।।

सो ये दोय कीर्तन कृष्णदासने गाय सुनाये. तब सगरे वैष्णव प्रसन्न होयके कहे, जो कृष्णदास ! तुम धन्य हो, जो दोय कीर्तनमें सन्देह दूरि कियो. और मारगको सब सिद्धान्त बातायो. ता पाछें कृष्णदाससों विदा होयके सगरे वैष्णव अपने घरकों गये. सो वे कृष्णदास श्रीआचार्यजीके ऐसे कृपापात्र भगदीय हते.

वार्ताप्रसङ्ग ७ : और कृष्णदासको गङ्गाबाई क्षत्रानीसों बहोत स्नेह हतो.

भावप्रकाश : सो काहेतें ? जा लीलामें गङ्गाबाई श्रुतिरूपाके जूथमें तामसी भक्त हैं. सो मथुराके एक क्षत्रीके घर जन्मी. पाछे बरस ११ की भई. तब गङ्गाबाईको मथुरामें एक क्षत्रीके बेटासों ब्याह भयो. पाछे गङ्गाबाई क्षत्राणीके जो बेटा हाय सो मरि जाय, सो नौ बेटा भये. ता पाछे एक बेटी भई. सो बेटीको विवाह गङ्गाबाई क्षत्राणीने कियो. सा गङ्गाबाईकी बेटीके गहना बहोत हतो. सो वह बेटीको गहनो लाख रुपया को दाबि राख्यो, सो कछू मथुराके हाकिमकों देके गहनो सब राख्यो. ता पाछे वरस ५५ की भई तब जगडाके लिये श्रीनाथजीद्वार आयके रही. सो कृष्णदाससों मिलिके श्रीआचार्यजीसों सेवक होयवेकी कही. तब कृष्णदासने श्रीआचार्यजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! गङ्गाबाई क्षत्राणीकों सरन लीजिये. तब श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो जीव तो दैवी है, परन्तु अभी मन श्रीठाकुरजीमें नाही है. तब कृष्णदासने बिनती कीनी, जो महाराज ! आपकी कृपा तें श्रीगोवर्द्धननाथजी कृपा करेंगें. पाछे श्रीआचार्यजी आपु कृष्णदासके आग्रहसों गङ्गाबाईको नामनिवेदन करवायो. सो कृष्णदास पहले श्रीगोवर्द्धननाथजीके भेटिया होयके परदेसकों जाते, तब गङ्गाबाई क्षत्राणी मथुराकों आवतीं. पाछे कृष्णदास श्रीनाथजीद्वार आवते तब गङ्गाबाई क्षत्राणी हू मथुरासों सगरी वस्तु ले श्रीजीद्वार आवती. सो कृष्णदासजी गङ्गाबाईको

मन भगवद्धर्ममें लगायवेके तांई दोऊ समेको महाप्रसाद श्रीनाथजीकों वाके घर पठावते. क्यों ? जा गङ्गाबाईकी खानपानमें प्रीति बहोत हती. सो कृष्णदास बहोत सुन्दर सामग्री श्रीनाथजीकों अरोगावते, और गङ्गाबाईकों भगवद् धर्म समुझावते. पाछे कृष्णदास गङ्गाबाईकों श्रीनाथजीके दरसन हू करावते. सो कृष्णदासके सङ्ग तें गङ्गा क्षत्राणीको मन अलौकिक भयो.

सो एक दिन श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोवर्द्धननाथजीकों राजभोग समर्पत हते, सो सामग्रीके ऊपर गङ्गाबाईकी दृष्टि परी. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु राजभोग अरोगे नाहीं. ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु भोग सरायो. पाछें राजभोग आरती करि अनोसर करि आपु परवत तें नीचे पधारे. सो सेवक भीतरिया महाप्रसाद लिये. और श्रीगुसांईजी आपहू महाप्रसाद लेके पोंढ़े. ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी आय रामदास भीतरियाकों लात मारिके जगाये. तब रामदासजी जागे. सो देखे तो श्रीगोवर्द्धननाथजी हैं. सो रामदासजी दण्डवत् करिके हाथ जोड़िके ठाड़े भये. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु रामदाससों कहे, जो मैं तो भूख्यो हूं. पाछें रामदासजीने श्रीगोवर्द्धननाथजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! श्रीगुसांईजीने राजभोग समर्प्यो हतो, और तुम भूखे क्यों रहे ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजीने कही, जो राजभोगमें तो सामग्री ऊपर गङ्गाबाईकी दृष्टि परी, तासों मैं नाहीं अरोग्यो हूं. तब रामदासजी भीतरिया श्रीगुसांईजीके पास जाय चरणारविन्द दाबिके जगाये, और बिनती कीनी, जो महाराज ! श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु भूखे हैं. सो राजभोगमें गङ्गाबाईकी दृष्टि परी है, तासों श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु राजभोग नाही अरोगे हैं. सो यह सुनत ही श्रीगुसांईजी आपु तत्काल उठिके स्नान करिके श्रीगोवर्द्धननाथजीके मन्दिरमें पधारे. पाछे रामदासजी न्हायके आये, इतनेमें सब भीतरिया हू स्नान करिके आये. तब श्रीगुसांईजी आपु सीतकाल देखिके भीतरियासों कहे, जो बड़ी और भात करो. सो बेगि सिद्ध होय जायगो, तातें तैयार करो. तब भीतरियाने बड़ी और भात कियो. सो श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोवर्द्धननाथजीकों भोग धरे. ता पाछें राजभोगकी सगरी सामग्री सिद्ध भई, और सेन भोगीकी हू सगरी सामग्री सिद्धि भई. सो राजभोग, सेनभोग दोउ भोग सङ्ग हो श्रीगुसांईजीने धरे. पाछें समय भये भोग सरायो ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजीकों पोढ़ायके अनोसर करवायके बाहिर पधारे. सो एक डबरामें बड़ीभात श्रीगुसांईजी अपुने श्रीहस्तमें लेके परवत तें नीचे पधारे. पाछें सगरे सेवकनकों बड़ीभात अपने हाथसों रञ्च - रञ्च दियो और रञ्चक श्रीगुसांईजी आपु श्रीमुखसो बहोत सरहायो. पाछें रामदास आदि सब सेवकनने श्रीगुसांईजीसों कह्यो, महराज ! यह सामग्री तो सीतकालमें कितनीक बार करी है, परन्तु आजु बहोत स्वाद भयो. तब श्रीगुसांईजी आपु

कहे, जो श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु भुखे हते सो प्रीतिसों अरोगे, तासों स्वाद अद्भुत भयो. ता समय कृष्णदास पास ठाड़े हते. सो कृष्णदासने कही, जो महाराज ! आपुही करनहारे और आपुही अरोगन हारे, सो स्वाद क्यों न होय ? तब श्रीगुसांईजी आपु वा समय श्रीमुखसों कहे, जो ये तिहारे ही किये भोग भोगत हैं.

भावप्रकाश : तहां यह सन्देह होय, जो श्रीगोवर्द्धननाथजी अरोगे नाहीं. सो श्रीगुसांईजी आपु भोग सराये, आचमन मुख वस्त्र करायो. पाछे श्रीगोवर्द्धनधरकों बीरी अरोगाये. सो भूखे श्रीगुसांईजीने न जानें ? और बीरी अरोगत श्रीगोवर्द्धनधर श्रीगुसांईजीसों न कहे, जो मैं राजभोग नाहीं अरोग्यो ? ताको कारन कहा ? जो रामदास भीतरियासों क्यों कहे ? सो यह सन्देह होय तहां कहत हैं, जो श्रीगोवर्द्धननाथजी वा दिना श्रीगोकुलमें श्रीनवनीतप्रियजीके यहां श्रीगिरिधरजीने बड़ीभात करायो हतो, श्रीसोभाबेटीजी किये. सो तब श्रीगिरिधरजी और श्रीसोभाबेटीजीके मनमें आई, जो श्रीगोवर्द्धनधर आपु पधारे और नौतन सामग्री अरोगें. तासों उहां वह दूसरो स्वरूप (भक्तोद्धारक) श्रीगिरिराजतें पधारिके श्रीगोवर्द्धनधर बड़ीभात अरोगे. और श्रीगिरिधरजी, श्रीसोभाबेटीजीको तो मनोरथ, सो भक्तनकों अनुभव करावत हैं. सो स्वरूप तों अरोगि पाछें श्रीगिरिराज पर्वतके ऊपर पधारे. सो उहां (गिरिराज पें) सगरे सेवक महाप्रसाद ले चुके. और श्रीगुसांईजी आपु पोढ़े. ता समय मन्दिरमें श्रीस्वामिनीजीने पूछो, जो कहो, कहां होय आये हो ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो बड़ीभात श्रीगोकुलमें श्रीगिरिधरजी श्रीसोभाबेटीजीको मनोरथ (हतो) सो अरोगके आयो हूं. यह सुनिके श्रीस्वामिनीजी हू बड़ीभात अरोगावेको मनोरथ कियो, जो बड़ीभात अरोगें तो आछोर सो यहां (तो) (राजभोग) होय चुके. तब स्वामिनीजीने श्रीनाथजीसों कह्यो, जो जायके रामदाससों कहो, जो सामग्री पें गङ्गाबाई क्षत्राणीकी दृष्टि परी है. सो काहेतें ? जो लीलासृष्टिके वचन हू सिद्ध करने है. सो श्रीगुसांईजीकों छै महिनाको विप्रयोग है. सो यातें, जो लीलामें एक समय श्रीठाकुरजी ललिताजीसों कहे, जो मैं तेरी निकुञ्जमें पधारूंगो. यह बात श्रीचन्द्रावलीने सुनी. सो श्रीचन्द्रावलीजीने श्रीठाकुरजीकों विविध चतुराई करि सेवा द्वारा ललिताजीके यहां छै मास तक पधारवेसों बरजे. सो ललिताजी विरह करि महा कृष होय गईं पाछें यह बात श्रीस्वामिनीजीने जानी, सो श्रीस्वामिनीजी ललिताजीकों सङ्ग लेके श्रीठाकुरजीके पास वाही समय आईं. और श्रीठाकुरजीसों कह्यो, जो तुम (नें) छै महिना लों मेरी सखीकों विरह दियो, अब तुम छै महिना लों ललितासखीके बसमें रहोगे. और जाने मेरी सखीकों दुःख दियो हैं सो छै महिना लों दुःख पावो, और वाकों तिहारो दरसन हू न होय. सो यह बात सुनिके श्रीठाकुरजी आपु चुप होय रहे. यह बात एक सखीने श्रीचन्द्रावलीजीसों कही. सो सुनिके श्रीचन्द्रावलीजी कहे, जो श्रीस्वामिनीजी श्रीठाकुरजी तो बड़े हैं. तासों इनसों तो कछू कही जाय नाहीं. परन्तु ललिता सखी होय ऐसो खोटो कियो, जो श्रीस्वामिनीजीकी सखी, सो मेरी

सखी बराबरि है. सो इन (नें) मोकों शाप दिवायो, जो छै महीना लों मोकों प्रभुनको दरसन हू नाहीं ? सो ललिताने श्रीस्वामिनी - द्रोह कियो. सो काहेतें ? जो श्रीठाकुरजी तें श्रीस्वामिनीजी प्रगटी हैं. और स्वामिनीजीके मुखचन्द्र तें श्रीचन्द्रावली प्रगटी. श्रीचन्द्रावली तें सगरी स्वामिनी सखी प्रगटी हैं. तासों श्रीठाकुरजीके दक्षिण भाग श्रीचन्द्रावलीजी बिराजत हैं. यातें, जो सगरी सखीनके स्वामिनीरूप, श्रीचन्द्रावलीजी (सो सबमें) श्रेष्ठ हैं. तासों श्रीचन्द्रावलीजीने कही, जो ललिताने स्वामिनी - द्रोह कियो है. तासों ललिताकी अकाल मृत्यु होऊ और प्रेतयोनिकूं पावो. सो श्रीठाकुरजी हू, श्रीस्वामीनी हू रक्षा न करि सके. और काहूतें प्रेतयोनि निवृत्त न होय. जो मोकों शाप दिवायो ताको यह फल भोगो. यह बात काहू सखीने ललितासों कही. सो सुनत ही ललिता महा कंपायमान होयके तत्काल दोरिके श्रीस्वामिनीजीके चरननमें आयके गिरि परी ! पाछे अपनी सब बात ललिताने कही. तब श्रीस्वामिनीजीने श्रीठाकुरजीकों बुलायके कह्यो, जो ललिताजी अपने हाथसों गई तासों अब कछू उपाय करो. पाछें श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजीकों सङ्ग ले ललितादि समाज सहित श्रीचन्द्रावलीजीके यहां पधारे. सो ललिताजी तत्काल उठिके श्रीठाकुरजीकों श्रीस्वामिनीजीको नमस्कार करिके ऊंचे आसन पधराये. पाछे परम प्रीतिसों दोउ स्वरूपनकी पूजा करिके सुन्दर सामग्री अरोगाये. ता पाछे बीरी अरोगाय श्रीचन्द्रावलीजीको हाथ जोरिके ठाड़ी भई. सो तब दोऊ स्वरूपने प्रसन्न होयके श्रीचन्द्रावलीजीको हाथ पकरिके पास बैठारी. ता पाछे श्रीस्वामिनीजी कहे, जो सुनो श्रीचन्द्रावलीजी ! तिहारी प्रीति तो महा अलौकिक है, और हमारे तिहारेमें कछू भेद नाहीं. और यह ललिता अपनी सखी है, सो यह तिहारी है. तासों अब याको शाप भयो है, सो ताको छुटकारो करो. तब श्रीचन्द्रावलीजी कहे, जो ललिता अपनी है. तासें यह जो कछू भयो है सो यह जगत् पर लीला करन अर्थ भयो है. सो यह ललिता प्रेत होयगी ताको मैं ही उद्धार करूंगी. जो यह मेरो निश्चय बचन है. तब ललिता श्रीचन्द्रावलीजीके चरननमें गिरिके कह्यो, जो मैं तिहारो अपराध कियो सो पायो है. तब श्रीस्वामिनीजीनें कही, जो यह सगरो परिकर, कलियुगमें श्रीगिरिराज ऊपर लीला करनी है, तहां सब प्रगट होयगो. सो श्रीस्वामिनीजीके यह बचन सुनिके श्रीठाकुरजी श्रीचन्द्रावलीजी ललिता आदि सब प्रसन्न भये. सो लीलासृष्टिमें अलौकिक स्नेह है और अलौकिक शाप है, और अलौकिक ही ईर्षा है, जो मायाकृत तहां नाहीं है. सो उहां ही करिके है. सो भूमि पर जस प्रगटके अर्थ ईर्षा शापको मिष मात्र. भूमिके जीव लीलागान करि प्रभुनकों पावें, सो यही अलौकिक करनो. सो लौकिक ईर्षा शाप जाने ताको बुरो होय, और अपराधी होय सो लीलासृष्टिमें सब अलौकिक क्रिया है. यह जाननो. या प्रकार श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजीकी इच्छा तें श्रीगोवर्द्धन गिरिराजमें प्रगट भये, और श्रीस्वामिनीजी रूप श्रीआचार्यजीमहाप्रभु श्रीगोवर्द्धनधरकों प्रगट किये. सो लीलामें श्रीस्वामिनीजी तें चन्द्रावलीजीको प्रागट्य. ताही भांतिसों यहां श्रीआचार्यजीसों श्रीगुसांईजीको प्रागट्य, और ललिता सो कृष्णदास अधिकारी भये. और श्रीगोवर्द्धनधरके अनेक स्वरूप हैं, परन्तु दोय रूप सदा रहत हैं. सो एक तो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुने उहां पधराय सो तहां विराजमान हैं, और एक स्वरूप (भक्तोद्धारक) सों

सगरे भक्तनकों सुख देत हैं. जो कुम्भनदास, गोविन्दस्वामीके सङ्ग खेलते. सो जहां तहां भगदीय हैं, तिनको अनुभव करावत हैं तातें जा समय श्रीगुसांईजी आपु भोग समर्पते हते और गङ्गाबाई क्षत्राणीकी दृष्टि परी, ता समय श्रीगुसांईजी राजभोग धरे हैं सो अरोगे (क्यों) जो श्रीगोवर्द्धनधर अरोगे नाहीं, सो असमर्पित खायके सगरे सेवक भ्रष्ट होय जाय ? तातें श्रीआचार्यजीके मन्दिरमें पधराये सो स्वरूप न अरोग्यो. यातें श्रीस्वामिनीजीने श्रीगोवर्द्धननाथजीसों कह्यो, जो श्रीगुसांईजीकों छै महीनाको वियोग होय, तासों गङ्गाबाईको नाम लीजियो. सो कृष्णदासकी और गङ्गाबाईकी प्रीति है सो गङ्गाबाईसों श्रीगुसांईजी कहेंगे. और कृष्णदासकों बोली मारेंगे. तब कृष्णदासकों बुरी लगेगीं. सो काहेतें ? जो यह कार्य करनो, जो कृष्णदासके मनमें बुरी लागे, तब श्रीगुसांईजीकों वियोग होय. तासों तुम जायके कहो, जो मैं भूख्यो हूं. तब श्रीनाथजीने रामदाससों जाय कही. परि रामदास यह भेद जाने नाहीं. सो रामदासने श्रीगुसांईजीसों जाय कह्यो, तब श्रीगुसांईजी मनमें जाने जो सामग्री ऊपर गङ्गाबाई दृष्टि परी. अब हमसों और कृष्णदाससों लीलामें बात भई हती सो पूरन करिवेकी श्रीनाथजीकी इच्छा है सो निश्चय होयगी, यह जानि परत है. तासों अब जो सेवा बने सो प्रीतिसों करनी. क्यों ? जो सेवा अब दुर्लभ है. यह बिचारिके तत्काल न्हाय बड़ीभात यहां नाहीं भयो हतो और श्रीगोकुल तें अरोगिके आये, तासों गिरिराजके ठाकुरको हू धरनो, सो बेगि सिद्ध करि धरे. ता पाछे सेन भोग आरती करि अनोसर करायके मनमें बिचारे, जो अब श्रीगोवर्द्धननाथजीको दरसन महाप्रसाद सब ही दुर्लभ भयो. सो बड़ीभातको डबरा उठाय मृतिकाके पात्र ही में ठलायके परवत तें उतरि रञ्चक - रञ्चक सबनकों दिये, सो आप ही लिये, बहोत सराहे तब कृष्णदासने भगवद् इच्छा तें बोली मारो (व्यङ्ग) जो आप ही करन हारे, और आप ही अरोगन हारे. सो क्यों न स्वाद होय ? सो यामें यह जताये जो हमसों न पूछे, जो तुम ही जाय सामग्री किये, और तुमही जायके अरोगे. ऐसो सौभाग्य तिहारो ही है. यह बोली कृष्णदास मारे. तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो यह तिहारो ही कियो भोग भोगत हैं. सो यह कहिके दोऊ बात जताये, जो गङ्गाबाई क्षत्राणीसों प्रीति करि वाकों बैठारि राखे, सो बाकी राजभोगकी सामग्री पे दृष्टि परी. सो यहू तिहारो कार्य है. नाहीं तो गङ्गाबाई ऊहां केसे जाय ? और तुमने लीलामें श्रीस्वामिनीजीसों शाप दिवायो, सोहू तिहारो कार्य है. सो तिहारे ही भोग भोगत हैं. यामें यह जताये, जो हमकों खबरि परि गई, जो अब तिहारो भाग्य खुल्यो, सो तुम करो सो भोगोगे. जो मनमें तो आय चुकी है. अब ऊपर तें करनो है, सो करोगे.

सो यह बात सुनिके कृष्णदासके मनमें बहोत बुरी लगी. तब कृष्णदास मनमें विचारे, जो श्रीगुसांईजीके दरसन बंद करने. सो या बातको कौन प्रकारसों उपाय करनो. तब श्रीगोपीनाथजी श्रीगुसांईजीके बड़े भाई तिनके पुत्र पुरुषोत्तमजी हते. सो तिनसो कृष्णदास मिलिके कहे, जो तुम श्रीआचार्यजीके बड़े पुत्र श्रीगोपीनाथजी हैं, तिनके पुत्र हो. सो तुम क्यों चुप बैठि रहे हो ? जो

श्रीगोवर्द्धननाथजीको सेवा सिंगार सब करो. जो श्रीगुसांईजीने अपनो सब हुकम करि राख्यो है. टीकेत तो तुम हो. तब श्रीपुरुषोत्तमजीने कही, जो हमारी सामर्थ्य नाहीं है, जो श्रीगुसांईजीसों बिगारें. तब कृष्णदासने कह्यो, जो हमारे सङ्ग न्हायके चलो, जो परवतके ऊपर मन्दिरमें जायके श्रीनाथजीको सेवा सिंगार करो, जो हम सब करि लेंइगे. पाछें श्रीपुरुषोत्तमजी उत्थापन तें दोय घड़ी पहले न्हाये, सो कृष्णदासके सङ्ग परवत ऊपर जायके मन्दिरमें बैठि रहे. और कृष्णदास दण्डोती सिला पै जायके बैठि रहे. इतनेमें श्रीगुसांईजी आपु स्नान करिकें दण्डोती सिलाके पास आये. तब कृष्णदासने श्रीगुसांईजीसों कही, जो श्रीपुरुषोत्तमजी न्हायके मन्दिरमें पधारे हैं. टीकेत तो वे हैं, तासों जब वे आपकों बुलावेंगे, तब आपु परवत ऊपर आइयो. तासों अब आपु परवत ऊपर मति चढ़ो, जो श्रीगोवर्द्धनधरके दरसन न होंयगे तब श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीकी ध्वाजाकों दण्डवत् करि लीलाकी बात सुमरन करिके परासोलीकूं पधारे, तहां रहे. सो तहां विप्रयोगको अनुभव करन लागे.

भावप्रकाश : सो श्रीगोकुल हू श्रीनवनीतप्रियजीके यहां याते नहीं पधारे, जो श्रीस्वामिनीजीके बचन हैं. जो हमहूंकों और श्रीठाकुरजीकों हू विप्रयोग होयगो. तासों श्रीगोकुल जायेंगे तो कहा जानिये कैसी होय ? तासों अब छ महिना लों मिलाप श्रीठाकुरजीसों दुर्लभ हैं, तासों परासोलीमें बैठि रहे.

वार्ताप्रसङ्ग ८ : और श्रीगोवर्द्धननाथजीके मन्दिरमें परासोलीकी ओर एक बारी हती, सो जा पर श्रीगोवर्द्धननाजी आयके श्रीगुसांईजीकों दरसन देते. सो श्रीगुसांईजी आपु सगरे दिन परासोली तें बारीकों देखते. सो कृष्णदास मन्दिरमें ते नीचे जांय तब श्रीगोवर्द्धननाथजी बारी पर आय बैठते. सो कृष्णदास एक दिन आन्योरमें आये, तब बारी पर श्रीगोवर्द्धननाथजीकों बैंठे देखे. तब कृष्णदास प्रातःकाल मन्दिरमें आयके वारी चिनवायके श्रीगोवर्द्धननाजीसों कह्यो, जो मैं तो श्रीगुसांईजीके दरसनकी मने कियो हूं, सो तुम बारी पर क्यों बैठे ? और अब उनकी ओर मति जैयो. सो कृष्णदास परासोलीकी ओर श्रीनाथजीकों खेलिवेकों हू न जान देते. सो श्रीगोवर्द्धनधरकों श्रीगुसांईजी बैठि बैठिके विज्ञप्ति करते. सो रामदास मुखिया भीतरिया जब श्रीगुसांईजीके पास राजभोग आरतीसों पहोंचिके जाते, सो आपुकों श्रीनाथजीको चरणोदक देते. तब श्रीगुसांईजी आपु फूलकी माला करि राखते, सो मालाके भीतर विज्ञप्तिको श्लोक लिखि देते. सो रामदासजी ले जाते. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीकों माला पहिरावते, तब मालामें ते विज्ञप्तिको कागज निकसिके

श्रीनाथजी बांचते. पाछें वाको प्रतिउत्तर श्रीनाथजी बीड़ाके पानकी ऊपर अपनी पीकसों सींकते लिखि देते. सो रामदासकों देते. सो रामदास दूसरे दिन राजभोगसों पहोंचिके जाते, तब श्रीनाथजीको लिख्यो पत्र श्रीगुसांईजीकों देते. सो श्रीगुसांईजी आपु बांचिके पाछें जलमें घोरिके पान करते. यातें श्रीनाथजीके किये श्लोक जगतमें प्रगट न भये. श्रीगुसांईजी आपु विज्ञप्ति किये सो श्रीनाथजी आपु बांचिके रामदासजीकों देते, तासों विज्ञप्ति प्रगटी है. सो एक दिन श्रीगुसांईजीकों बहोत विरह भयो, सो यह लिखे.

श्लोक -
त्वद्दर्शनविहीनस्य त्वदीयस्य त्वदीयस्य तु जीवितम् ।
व्यर्थमेव यथा नाथ ! दुर्भगाया नवं वयः ।।

सो यह श्लोक लिखिके पठाये, जो तिहारे भक्त हैं सो तिहारे बिना जीवत हैं सो वृथा ही जीवत हैं. सो दुर्भागवत्. सो यह श्रीगोवर्द्धननाथजी बांचिके यह लिखे, जो मेघको लक्षण यह है, जो समय होय वर्षाको, आयके वर्षे. सो सगरो जगत् जानत है. सो ऐसे अबही कृष्णदासको समय होय चुकेगो तब मिलाप होयगो. सो यह तुमहू जानत हो, और हमहू जानत हैं. तासों धीरज धरि समय होन देउ, जो इतनो विरह क्यों करत हो ? सो यह पत्र रामदासजी लेके आये. तब श्रीगुसांईजी आपु बांचिके यह लिखे जो -

अम्बुदस्य स्वभावोऽयं समये वारि मुञ्चति ।
तथापि चातकः खिन्नो रटत्येव न संशयः ।।

सो मेघको यह स्वभाव है, जो समय होयगो, तब ही बरसेगो (मिलाप होयगो) परन्तु चातकने मेघसों प्रीति करी है. सो ऐसे भक्त हैं सो तो तिनकों (मेघरूप श्रीकृष्णकों) रटत है, सो चेन नाहीं है. सो (आपु) चाहो तब समय होय. तुम बिना धीरज हमकों नाहीं है. सो भक्तनको यही धर्म है, जो चातककी नांई सदा तिंहारी चाह करिवो करें. सो यह लिख पठाये. या प्रकार रामदासजी नित्य

आवते, सो श्रीगुसांईजीके पास सब सेवक आवते, सो कृष्णदासजी जानते. परन्तु सेवकनसों कछू चलती नाहीं. रामदासजीकों वरजेहू सही, जो तुम श्रीगुसांईजीके पास पत्र ले जात हो, और पत्र ले आवत हो सो यह बात ठीक नाहीं है. तब रामदासजी कहे, जो हम तो नित्य श्रीगुसांईजीके दरसनकों जांयेंगे, चाहे हमकों सेवामें राखो चाहे मति राखो. तब कृष्णदास चुप होय रहे. सो काहेतें ? जो ऐसे सेवक फेरि कहां मिलें ? तासों कृष्णदास कछू बोले नाहीं. सो पौष सुदी ६ तें आषाढ़ सुदी ५ तांई श्रीगुसांईजीने विप्रयोग कियो. पाछें आषाढ़ सुदी ५ आई, ता दिन राजा बीरबल श्रीगोकुल आयो. सो श्रीगुसांईजी तो परासोली हते, और श्रीगिरिधरजी घर हते. तब बीरबल श्रीगिरिधरजीके पास आयके दण्डवत् करिके पूछे, जो श्रीगुसांईजी कहां है ? हमकों दरसन किये बहोत दिन भये. हमने उनके दरसन पाये नाहीं. तब श्रीगिरिधरजी बीरबलसों कहे जो श्रीगुसांईजी तो परासोलीमें बैठि रहे हैं, जो कृष्णदास अधिकारीने श्रीगुसाईजीके दरसन बन्द किये हैं. सो श्रीगुसांईजी छै महिना तें बड़ो खेद करत हैं. तब बीरबलने कह्यो, जो अवही मैं जायके कृष्णदासकों निकासत हों. सो यह कहिके बीरबल श्रीमथुराजी आयो. सो मथुराकी फौजदारी बीरबलकी हती, सो मथुरातें पांचसौ मनुष्य बीरबलने पठाये और बीरबलने उनसों कह्यो, जो श्रीगोवर्द्धनमें जायके कृष्णदासकों पकरि लावो. तब मनुष्य गये, सो सांझके समय श्रीगोवर्द्धनमें आये. पाछें कृष्णदासकों पकरिके वे मनुष्य मथुरा ले आये. तब बीरबलने अर्द्धरात्रि ही कों मनुष्य श्रीगोकुल पठायके कह्यो, जो कृष्णदासकों पकरिके बन्दीखानेमें दिये हैं, जो तुम श्रीगुसांईजीकों लेके श्रीगोवर्द्धननाथजीके मन्दिरमें जावो. तब ये समाचार मनुष्यननें श्रीगिरिधरजीसों कहे. सो रात्रिहीकों घोड़ा ऊपर असवार होयके परासोलीकूं पधारे, सो प्रातःकाल ही आषाढ़ सुदी ६ आई. सो श्रीगिरिधरजी जायके श्रीगुसांईजीकों नमस्कार करिके कही, जो आपु श्रीगोवर्द्धनधरके मन्दिरमें पधारो, और सेवा सिंगार करो. तब श्रीगुसांईजी आपु श्रीगिरिधरजसों कहे, जो कृष्णदासकी आज्ञा होय तो चलें. तब श्रीगुसांईजीसों श्रीगिरिधरजीने कही, जो कृष्णदासकूं तो मथुरामें बन्दीखानेमें दियो है. यह सुनिके श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो हाय - हाय ! श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके कृपापात्र सेवक भगवदीय कृष्णदासकों इतनो दुःख, और इतनो कष्ट. सो श्रीगुसांईजीने श्रीगिरिधरजीसों कही, जो तुमने बीरबलसों कह्यो होयगो. तब श्रीगिरिधरजीने कही, जो हम तो सहज ही बीरबलसों कह्यो हतो, जो श्रीगुसांईजीके दरसन कृष्णदासने बन्द किये हैं, इतनो कह्यो हतो. और तो कछू नाहीं कह्यो. तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो कृष्णदास आवेगो, तब ही भोजन करूंगो. सो इतनो सुनत ही श्रीगिरिधरजी तत्काल घोड़ा ऊपर असवार होयकें श्रीमथुराजी आये. तब बीरबल तें जायके श्रीगिरिधरजीने कह्यो, जो काकाजी तो भोजन तब करेंगे जब कृष्णदास वहां जायेंगे. तासों कृष्णदासकों छोड़ि देउ. तब

बीरबलने कृष्णदासकों बन्दीखानेमें तें बुलायके कह्यो, जो देखि, श्रीगुसांईजीकी कृपा, जो तेरे बिना भोजन नाहीं करत हैं और तैनें उनसों ऐसी करी. तासों अब तोकूं छोड़त हूं, और आजु पाछें जो तू श्रीगुसांईजीसों बिगारेगो, तब मैं तोकों फेरि कबहू नाहीं छोडूंगो. सो या प्रकार बीरबलने कहिके कृष्णदासकों श्रीगिरिधरजीके हवाले करि दिये. तब श्रीगिरिधरजी कृष्णदासकों लेके परासोलीमें पधारे. तब श्रीगुसांईजी आपु कृष्णदासकों देखिके श्रीगोवर्द्धननाथजीको अधिकारी जानिके उठि ठाड़े भये. तब कृष्णदास दीन होयके श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करि चरन परस करिके यह पद गायो. सो पद -

राग सारङ्ग -
ताहीको सिर नांइए जो श्रीवल्लभसुत पदरज रति होइ
कीजे कहा आन ऊंचे पद तिनसों कहा सगाइ मोइ ।।१।।

जाके मनमें उग्र भरम है श्रीविटठल श्रीगिरिधर दोइ ।
ताकौ सङ्ग विषम विष हू ते भूले चतुर करो जिनि कोइ ।।२।।

सारासार विचार मतो करि श्रुति - वच गोधन लियो निचोइ ।
तहां नवनीत प्रगट पुरुषोत्तम सहजई गोरस लियो है बिलोइ ।।३।।

उग्र प्रताप देखि अपने चख अस्मसार ज्यों भिदे न तोय ।
'कृष्णदास' सुर तें असुर भए असुर तें सुर भए चरनन छोय ।।४।।

यह पद सुनिके श्रीगुसांईजी आपु बहोत प्रसन्न भये. तब कृष्णदासने बिनती कीनी, जो महाराज ! मेरो अपराध क्षमा करिये, और

अब आप श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवामें पधारिये. तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो तिहारी आज्ञा भई है, सो अब चलेंगे. तब कृष्णदासकों सङ्ग लेके श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोवर्द्धननाथजीके मन्दिरमें पधारे. और श्रीगोवर्द्धनधरकों दण्डोत् करी. पाछें सिंगारको समय हतो और आषाढ़ सुदी ६ को दिन हतो सो कसूंमल कुलह पिछोड़ा धराये. तब राजभोगसों पहोंचे. पाछें उत्थापन तें सेन पर्यन्तकी सेवासों पहोंचिके सेन आरती करि श्रीगुसांईजी आपु श्रीनाथजीके सन्मुख कृष्णदासकों दुसाला उढ़ाये. और कहे, जो श्रीगोवर्द्धनधरको अधिकार करो. तुम धन्य हो. तब वा समय कृष्णदासने यह पद गायो. सो पद -

राग कान्हरो -
परम श्रीकृपाल श्रीवल्लभनन्दन करत कृपा निज हाथ दे माथै
जे जन सरनि आए अनुसर ही गहि सोंपत श्रीगोवर्द्धननाथै ।।१।।

परम उदार चतुर चिन्तामनि राखत भवधारा तें साथै ।
भजि 'कृष्णदास' काज सब सरहीं जो जानें श्रीविटठलनाथै ।।२।।

सो यह पद कृष्णदासने गायो और बिनती कीनी, जो महाराज ! मेरो अपराध क्षमा करिये. तब श्रीगुसांईजी आपु श्रीमुखसों कहे, जो तिहारो अपराध श्रीनाथजी क्षमा करेंगे. ता पाछें श्रीगुसांईजी अनोसर करायके सबनको समाधान कियो, तब सगरे वैष्णव सेवक प्रसन्न भये. पाछें जैसें नित्य सेवा सिंगार आप श्रीगोवर्द्धनधरको करते, वैसेही करन लागे. और कृष्णदास श्रीगुसांईजीकी आज्ञा तें अधिकारकी सेवा करन लागे. सो वे कृष्णदास ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते.

वार्ताप्रसङ्ग ९ : और एक समय श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुलमें हते, सो कृष्णदास श्रीगोवर्द्धन तें श्रीगोकुल आये. तब श्रीगुसांईजी उठिके श्रीगोवर्द्धननाथजीको अधिकारी जानि कृष्णदासको बहोत प्रसन्नता पूर्वक समाधान कियो, और अपने पास बैठाये. पाछें

श्रीगोवर्द्धनधरने कुशल समाचार पूछे और कृष्णदासकों अपने श्रीहस्तसों श्रीनवनीतप्रियजीको महाप्रसाद धरे. ता पाछें सेन भोगको महाप्रसाद लिवायके रात्रिकों सुन्दर सेज पर सेन करायो. सो जब प्रातःकाल भयो तब कृष्णदास चलन लागे. ता समय कृष्णदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! मेरो मन वृन्दावन देखिवेकी बहोत है. तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो आछे जावो, परन्तु दुःख पावोगे. तब कृष्णदास श्रीयमुनाजी पार गये, जो श्रीगुसांईजीके मन किये तोऊ मन न मान्यो, श्रीवृन्दावनकों चले. सो मध्यान्ह समय वृन्दावन आये. तब वृन्दावनके सन्त महन्त कृष्णदाससों मिलन आये, सो कृष्णदासकों वा समय ज्वर चढ्यो, सो प्यास लागी. तब कण्ठ सूखन लाग्यो. सो कृष्णदासनें कही, जो प्यास बहोत लागी है, सो कण्ठ सूखत जात है. तब सन्त महन्तने कही, जो बेगि जल लावो. सो कृष्णदास अकेले ही रथ पर बैठिके गये हते. सो कृष्णदासनें कही, जो श्रीगोकुलको बल्लभी वैष्णव होय सो वासों कहो, जो वह जल लावे तो मैं पीऊं. तब सगरे सन्त महन्तने कृष्णदाससों तर्क करिके कह्यो, जो यहां कोई वैष्णव नाहीं है, जो श्रीगोकुलकों भङ्गी यहां ब्याहो है, सो यहां आयो है. सो वाकों तुम कहो तो बुलावें. तब कृष्णदासने कही, जो वह गोकुलको भङ्गी सब तें श्रेष्ठ हैं. सो वासों कहियो, जो कुम्हाके घर तें कोरो बासन लेके श्रीयमुनाजीमें न्हायके जल भरि लावे. सो तब उनने जायके वा भङ्गीसों कह्यो, जो कृष्णदासकों ज्वर चढ्यो है, वह प्यासे हैं. सो कहत हैं, सो तू उनको जल ले जा. तब वह भङ्गी उहांसों दोर्यो. सो श्रीगुसांईजी आपु श्रीनवनीतप्रियजीकी राजभोग आरती करि श्रीनाथजीद्वार पधारिवेकूं घाट ऊपर आये हते. सो इतनेमें वा भङ्गीने कपड़ाकी आड़ करिके मुख तें कह्यो, जो महाराज ! कृष्णदास श्रीबृन्दावनमें हैं. तहां उनको ज्वर चढ्यो है, सो प्यासे हैं. जल मोसों मांग्यो है, सो मैं बृन्दावन तें यहां दोर्यो आयो हूं. तब श्रीगुसांईजी खवाससों झारी जलकी लेके, घोड़ा ऊपर असवार होयके बेगि ही आपु वृन्दावन पधारे. सो तब कृष्णदासकों रथ ऊपर ते उठायके जल प्याये. पाछें कृष्णदास सावधान भये. सो ज्वर हू उतरि गयो. तब कृष्णदास श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करिके पद गाये. सो पद–

राग कान्हरो –

श्रीविटठलजुके चरननिकी बलि

हमसे पतित उद्धारन परम कृपालु आपु आए चलि ।।१।।

उज्जवल अरुन दया रङ्ग रञ्जित नव नखचन्द्र विरहतम निर्दलि ।
सेवत सुखकर सोभा पावत भक्त मुदित पद अंगुलि ।।२।।

अतिसें मृदुल सुगन्ध सु सीतल परसत त्रिविध ताप डारत मलि ।
कहे 'कृष्णदास' बार एक सुधि करि तेरो कहा करेगो रिपु कलि ।।३।।

सो यह पद गायके कृष्णदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! मैंने आपको कह्यो न मान्यो तासों इतनो दुःख पायो. ता पाछें श्रीगुसांईजीके सङ्ग कृष्णदास श्रीगोवर्द्धन आये, तब सेन आरतीको सय भयो, तब श्रीगुसांईजी न्हायके सेन आरती किये. तब कृष्णदासने यह पद गायो. सो पद -

राग कान्हरो -
आजुकौ दिन धनि धनिरी माई नैनन भरि देखे नन्दनन्दन
परम उदार मनोहर मूरति ताप हरत लखि, पूजत चन्दन ।।१।।

नवलराय श्रीगोवर्द्धनधारी रूप रासि युवती मन फन्दन ।
ध्वजा वज्राकुंस जब विराजत 'कृष्णदास' कीनो पद वन्दन ।।२।।

पाछें श्रीगुसांईजी अनोसर करायके परवत तें नीचे पधारे. सो या प्रकार कृष्णदासने बहोत दिन लों श्रीगोवर्द्धननाथजीको अधिकार कियो.

पाछें एक दिन एक वैष्णवने आयके कृष्णदाससों कही, जो मोकूं यहां एक कुंआ बनवावनो है, और मोकों अपुने देस जानो है, सो मैं तो अपने देसकों जाउंगो. तासों तुम या द्रव्यकों राखो. सो ऐसे कहिके वह वैष्णव तीनसौ रुपैया देके आपुने देशकों गयो. तब कृष्णदास वा वैष्णवके रुपैयानमें ते एक सौ रुपैया एक कुल्हरामें धरिके बागमें एक आंवके वृक्ष नीचे गाड़ि राखे. ता पाछें आछो महूरत देखिके पूछरीके पास बागमें कुंआको आरम्भ कियो. तब कितनके दिन पाछें कुंआ बनके तैयार भयो, और दोयसौ रुपैया लगे. पाछें कुंआको मोहड़ो बनवाबनो रह्यो, सो कृष्णदासजी मनमें बिचारे, जो सौ रुपैयामें मोहड़ो आछो बनेगो. ता पाछें श्रीगोवर्द्धनधरके उत्थापनके दरसन करिके कृष्णदास वा कुंआ देखवेकूं गये, सो वा कुंआकों देखन लागे. सो कृष्णदासके हाथमें आसा (लकड़ी) हतो, सो आसा टेकके कृष्णदास वा कुंआ पर ठाड़े भये. इतनेमें आसा सरक्यो, सो कृष्णदास आसा सहित वा कुंआमें जाय परे. तब सगरे मनुष्य पास ठाड़े हते, सो तिनने सोर कियो. जो कृष्णदास कुंआमें गिरे पाछें कितेक मनुष्य दौरे, सो रस्सा टोकरा लाये, और दाय मनुष्य कुंआके भीतर उतरे. सो बहोत ढूंढ़े परि कृष्णदासको सरीर हू न पायो. तब वे मनुष्य पाछे फिरि आये. ता समय श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धनधरको सेनभोग धरिके बाहिर बिराजे हते, सो रामदास भीतरिया श्रीगुसांईजीके पास बैठे हते. ता समय मनुष्यने जायके कही, जो महाराज ! कृष्णदास कुंआकों देखत हते, सो आसा सरक्यो. सो कुंआमें गिरे. पाछें मनुष्य कुंआमें ढूंढ़िवेकों उतरे. सो कृष्णदासको सरीर हू पायो नाहीं है. ता समय रामदासजी उहां ठाड़े हते, सो कहे, 'तामसानामधोगतिः' तब यह सुनिके श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो रामदासजी ऐसे न कहिये. जो कृष्णदास तो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके कृपापात्र वैष्णव हते, जो यह लीला है. कूपमें गिरे तो कहा भयो ? कहा जानिये कहा है ?

भावप्रकाश : सो याको कारन श्रीगुसांईजी आपु तो जानत हते, जो प्रेतयोनिको शाप है. तासों आपु प्रगट न किये. सो कृष्णदास या देह समेत प्रेत भये. सो पूछरीके पास एक पीपरको वृक्ष है. ताके ऊपर जायके बैठे.

वार्ताप्रसङ्ग १० : और श्रीगुसांईजी आपु श्रीमुखसों कहे, जो कृष्णदास श्रीगोवर्द्धनधरको अधिकार भलो ही किये और अब ऐसे

सेवक कहां मिलें ? और अधिकारी बिना काम चलेगो नाहीं सो बिचार करनो. सो या भांति कहे. तब रामदासजीने बिनती कीनी, जो महाराज ! जाकों तुम आज्ञा करोगे, सोई करेगौ. जो गोवर्द्धननाथजीकी सेवा भाग्यसों मिलत है ! तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो हम कौन से जीवकों कहें, जो कौन से जीवको बिगार करें. सुधारनो तो बहोत कठिन हैं. और बिगारनो तो तत्काल है.

भावप्रकाश : सो याहीसों श्रीआचार्यजी श्रीसुबोधिनीजीमें कहे हैं. जो श्रीभागवत् नारायणने ब्रह्मासों कह्यो है, परि ब्रह्मा सृष्टि करनको अधिकारी है. तासों श्रीभागवत् फलित न भयो. पाछे ब्रह्मा नारदजीसों कही, सो नारदजीकों सगरे देसनमें फिरवेको अधिकार है तासों फलित न भयो. तब नारदने वेदव्यासजीसों कह्यो, सो वेदव्यासजी सास्त्र करनके अधिकारी हैं, तासों व्यासजीकों हू फलित न भयो. पाछे व्यासजीने श्रीशुकदेवजीसों कह्यो. सो शुकदेवजी सर्वत्याग कियो है. सो यही त्यागमें लगे. पाछे परीक्षितको सर्वत्याग भयो. तब अधिकारी भागवतके भये. (जब) श्रीशुकदेवजी रात दिन तांई कथा कहे. तब सातमें दिन भगवत् प्राप्ति भई. सो तैसे ही यह श्रीभागवत् रूप पुष्टिमारग है. सो याके अधिकारी निरपेक्ष होय, ताहीके माथे यह मारग होय. और जाको अधिकार पाये अहङ्कार बढ़े, सो ताकों कछू फल सिद्ध न होय.

तासों श्रीगोवर्द्धनधरको अधिकार हम कौनकों देंय ? कौनको बिगार करें. तब रामदासी सुनिके चुप होय रहे. इतनेमें सेनभोगको समय भयो, सो सेनभोग श्रीगुसांईजी सरायें. सो सेन आरती करे पाछें श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोवर्द्धनधरसों पूछे, जो महाराज ! कृष्णदासकी तो देह छूटी और अधिकारी विना चलेगी नाहीं, सो हम कौनकों अधिकार देके बिगार करे ? तासों आपु कहो ताकों अधिकारी करें. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो हमहू कौन जीवको बिगार करें ? जो कोई अधिकार लेयगो ताको बिगार होयगो. तासों तुम एक काम, जो अधिकारको दुसाला ले सबके आगे कहो, जाकों अधिकार करनो होय सो दुसाला ओढ़ो. तब जो आयके कहे ताकों देऊ. सो जाकों गिरनो होयगो सो आपुही आवेगो. ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु प्रसन्न होयके श्रीगोवर्द्धननाथजीकों सेन कराये. पाछें दूसरे दिन राज भोग आरतीके समय सगरे ब्रजवासी वैष्णव भेले करिके श्रीगुसांईजी आपु दुसाला हाथमें लियो. पाछें सबनकों सुनायके कह्यो, जो जाकों श्रीनाथजीके घरको अधिकार करनो होय सो या दुसालाकों ओढ़ो. यह सुनिके कितनेक कही, जो हम करेंगे. सो पहले एक क्षत्री बोल्यो हतो, सो ताकों दुसाला उढ़ायो. ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजीकी आरती करि अनोसर कराय श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुल पधारे.

पाछें कछुक दिन बीते तब एक समय श्रीगोवर्द्धननाथजकी भैंस खोय गई, सो बरहेमें निकसि गई. तब भैंस ढूंढिवेके लिये गोपीनाथदास ग्वाल और पांच सात ग्वाल पूछरीकी ओर गये. वे सब परम कृपापात्र भगवदीय हते. सो तब देखे तो श्रीगोवर्द्धननाथजी सखान सहित पूछरी पास एक पीपरके नीचे खेलत हैं. और पीपरके ऊपर कृष्णदास अधिकारी प्रेत हायके बैठे हैं. तब कृष्णदास अधिकारीने गोपीनाथदास ग्वालसों जैश्रीकृष्ण किये और कह्यो, जो अरे भैया ! गोपीनाथदास ग्वाल ! तू मेरी बिनती श्रीगुसांईजीसों करियो और कहियो, जो आपके अपराध तें मेरी यह अवस्था भई है. और श्रीगोवर्द्धनधर दरसन देत हैं सो आपकी कृपा ते देत हैं.

भावप्रकाश : सो जब श्रीगोवर्द्धननाथजीके आगे अधिकारको दुसाला श्रीगुसांईजीने कृष्णदासकों (दुवारा) उढ़ायो. तब कृष्णदासने यह पद गायो -

परम कृपाल श्रीवल्लभनन्दन करत कृपा निज हाथ दे माथे ।

सो यह पद गायके कृष्णदासने श्रीगुसांईजीसों कही, जो महाराज ! मैं छ महिना लों आपकों विप्रयोग करायो, सो आपु मेरो अपराध क्षमा करिये. तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो तिहारो अपराध श्रीनाथजी क्षमा करेंगे. सो यह श्रीगुसांईजी आपु कहे, तासों श्रीगोवर्द्धनधर दरसन देत हैं और बोलत हैं बातें करत हैं. परन्तु श्रीगुसांईजी आपु अपराध क्षमा न किये है, तासों प्रेतयोनि छूटत नाहीं है. और कृष्णदास श्रीगोवर्द्धनधरसों हू कहते, जो महाराज ! मोकों दरसन देत हो, सो प्रेतयोनि क्यों नाहीं छुड़ावत हो ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो यह हमारे हाथ है नाहीं, उद्धार तो तेरो श्रीगुसांईजीके हाथ है. सो काहेतें ? जो लीलामें श्रीचन्द्रावलीजीको शाप है, जो प्रेतयोनि होय. सो कौन छुड़ावे ? तासों यद्यपि श्रीस्वामिनीजीकी सखी ललिता रूप (कृष्णदास) हैं. परन्तु आगेको बचन बिचारि नाहीं छुडावत हैं. तासों कृष्णदासने गोपीनाथदास ग्वालसों कह्यो जो तू मेरी बिनती श्रीगुसांईजीसों करियो, जो श्रीगुसांईजीकी कृपा बिना मेरी गति नाहीं है. **और बिलछूकी और बागमें आमके वृक्षके नीचे रुपया सौ एक कुलरामें भरिके गाड़े हैं, सो निकासिके कूपके ऊपरको मोहड़ो बनवाय दीजियों. यह श्रीगुसांईजीसों कहियो. और श्रीनाथजीकी भैंस तुम ढूंढिवेको आये हो सो उह घनामें चरत है. पाछे गोपीनाथदास ग्वाल घनामें तें भैंस लेके गोपालपुर आये. सो भैंस बांधि गोदोहन गाय भैंसकी किये. ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु**

श्रीनाथजीकी सेन आरती करिके अनोसर कराय परवत तें उतरे और अपनी बैठकमें आयके बिराजे. तब गोपीनाथदास ग्वालने श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करिके कह्यो, जो महाराज ! आज श्रीनाथजीकी भैंस खोय गई हती सो ढूढ़नकों पूछरीकी ओर गये हते. तहां कृष्णदास अधिकारी प्रेत भये देखे हैं सो कृष्णदास पीपरके वृक्षके ऊपर बैठे हैं. कृष्णदासने मोकों भगवत् स्मरण कियो हतो. और कृष्णदासने आपसों यह बिनती करी हैं, जो मैं प्रेत हूं, मैंने आपको अपराध कियो है, तासों मोकों प्रेत योनि भई है. आपुकें हाथ मेरो उद्धार है. और बागमें आमके वृक्षके नीचे कुलरामें रुपया सौ गड़े हैं. सो निकासिके कुंआको मोहड़ो बनवायको कह्यो है. ओर भैंस हू कृष्णदासने बताय दीनी है, सो हम ले आये हैं. तब श्रीगुसांईजी आप अपने मनमें विचारे जो कृष्णदासकों बड़ो दुःख है. सो अब याकों प्रेतयोनिमेंसों छुड़ावनो, यह कहिके तत्काल उठिके बागमें पधारे. तब रुपया १००) निकासिके नयो अधिकारी कियो हतो, सो वाकों देके कह्यो, जो ये रुपयानको कृष्णदास बारे कूंआको मोहड़ो बनवाइयो. ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु वाही रात्रिकों असवार होयके मथुराजी पधारे. पाछे प्रातःकाल भये श्रीगुसांईजी आपु अपने श्रीहस्तसों कृष्णदासको क्रिया - कर्म करि, ध्रुवघाट ऊपर श्राद्ध कियो, और कृष्णदासकों प्रेतयोनि छुटायके दिव्य सरीर करिके लीलामें प्राप्त किये. सो बिलछू साम्हे गिरिराजमें बारी, ता द्वारके मुखिया कृष्णदास हैं, सो तहां जायके बिराजे. सो या प्रकार कृष्णदासकी लीला - प्राप्ति श्रीगुसांईजी आपु किये.

भावप्रकाश : तहां यह सन्देह होय, जो श्रीगुसांईजीकी कृपा तें उद्धार न भयो ? सो आपु मथुराजी पधारे और ध्रुवघाट ऊपर श्राद्ध किये ? सों कृपातें (कहा) श्राद्ध अधिक है ? तहां कहत हैं जो गोपीनाथदास ग्वाल कृष्णदासकों प्रेत भये देखिके आये. सगरे सेवक ब्रजवासीके आगे गोपीनाथदास ग्वालनें श्रीगुसांईजी तें कह्यो, जो कृष्णदास प्रेत भये हैं. सो आपुसों बिनती करी है, जो आप मोकों प्रेतयोनिसों छुड़ावो. जो श्रीगुसांईजी चाहें ता रञ्चक मनमें बिचारे तें छुटकारो होय. परन्तु पाछे जो सेवक ब्रजवासी कोई प्रेत होय सो श्रीगुसांईजीसों कहे, जो आपु छुड़ावो. सो तब न छुड़ावें तो दोषबुद्धि होय, तब जीवको बिगार होय. तासों श्रीगुसांईजी आपु श्रीमथुराजीमें पधारिके ध्रुवघाट ऊपर श्राद्ध कियो, सो या मिष तें छुड़ाये. सो सबनने जानी, जो ध्रुवघाटको श्राद्ध एसो ही है, सो यह महिमा बढ़ाये. सो आपुनो माहात्म्य कालकठिनता जानि छिपाये. सो याको कारन यह है. और दूसरो कारन यह है, जो कृष्णदास ऐसे भगवदीय हते जो इनके कोटानकोटि पुरुषानको उद्धार होय, सो काहेतें ? जो श्रीभागवतमें श्रीनृसिंहजी तें प्रहलादमें कह्यो है, जो महाराज ! मेरे पिताको उद्धार होय, तब श्रीनृसिंहजी कहे, जो जा कुलमें भगवद् भक्त होइ सो बाके इक्कीस पुरुषा तरें. तासों तुम सन्देह क्यों करत हो. सो प्रह्लादजी

तो मर्यादाभक्त भये, और कृष्णदासजी पुष्टिमार्गीय भगवदीय भये. सो इनके तों कोटानकोटि पुरुषानको उद्धार है. परन्तु श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सम्बन्ध बिना लीलामें प्रवेस न होय. तासों कृष्णदासके मिष करि सृष्टिमें मुक्त किये. सो काहे तें ? जो कृष्णदासजी, श्रीगुसांईजी, सगरो श्रीगोवर्द्धनधरको परिकर अलौकि है. सो यहां ईर्षा नाहीं है. सो भूमि पर हू भगवद् लीला जानि कहनों, सुननों. ... ।।वैष्णव ८४।।

सो या प्रकार कृष्णदासकी वार्ता महा अलौकिक है. तासों श्रीगुसांईजी कहे, जो कृष्णदासने रासादिक कीर्तन ऐसे अद्‌भुत किये सो काई दूसरेसों न होय. और श्रीआचार्यजीके सेवक होयके सेवा हू ऐसी करी, जो दूसरेसों न बनेगी, और श्रीनाथजीको अधिकार हू ऐसो कियो जो दूसरेसों न होयगो ! सो या प्रकार श्रीगुसांईजी आपु श्रीमुखसों कृष्णदासकी सराहना किये. सो वे कृष्णदास अधिकारी श्रीआचार्यजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते. जिनके ऊपर श्रीगोवर्द्धधर सदा प्रसन्न रहते. तातें इनकी वार्ताको पार नाहीं तातें इनकी वार्ता अनिर्वचनीय है सो कहां तांई कहिए. ...वार्ता ।।८४।।

।। इति श्रीचौरासी वैष्णवनकी वार्ता श्रीगोकुलनाथजी प्रगट किये ताकों भाव श्रीहरिरायजी कह्यो, सो सम्पूरणम् ।।

राग विहाग -
द्रढ इन चरनन केरो भरोसो, द्रढ. ।।टेक।।
श्रीवल्लभ नखचन्द्र छटा, बिन सब जग मांज अंधेरो ।।१।।

साधन और नहीं या कलिमें, जासों होत निवेरो ।
'सूर' कहा कहे द्विविध आंधरो बिना मोलको चेरो ।।२।।